माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं ४

माओ त्सेतुङ
की
संकलित रचनाए

ग्रन्थ ४

★

माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं

ग्रन्थ ४

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह
पेकिङ १९७६

पहला संस्करण १९७६

यह ग्रन्थ जन प्रकाशन-गृह, पेकिङ द्वारा १९६८ में प्रकाशित "माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ ४ के चीनी संस्करण का हिन्दी अनुवाद है। विदेशी भाषा संस्करण की आवश्यकता के अनुसार नोटों में कुछ फेर-बदल किए गए हैं।

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

विषय-सूची

तृतीय क्रान्तिकारी गृहयुद्ध का काल

तृतीय क्रान्तिकारी गृहयुद्ध
का काल

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की विजय के बाद की परिस्थिति और हमारी नीति*

१३ अगस्त १९४५

ये दिन दूरपूर्व की परिस्थिति में बेहद भारी परिवर्तन के दिन हैं। जापानी साम्राज्यवाद का आत्मसमर्पण अब अवश्यम्भावी है। जापान के आत्मसमर्पण का निर्णायक तत्व सोवियत संघ का युद्ध में शामिल होना है। लाल सेना के दस लाख सैनिक चीन के उत्तर-पूर्व में प्रवेश कर रहे हैं; यह शक्ति अदम्य है। जापानी साम्राज्य-वाद अब लड़ाई जारी नहीं रख सकता।[1] चीनी जनता को अपने कठिन और कठोर जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में विजय प्राप्त हो गई है। एक ऐतिहासिक मंजिल के तौर पर, अब जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध समाप्त हो चुका है।

---

*यह भाषण कामरेड माओ त्सेतुङ ने येनान में कार्यकर्ताओं की एक बैठक में दिया था। इस भाषण में उन्होंने वर्ग-विश्लेषण के मार्क्सवादी-लेनिनवादी तरीके के अनुसार, जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की विजय के बाद की चीन की बुनियादी राजनीतिक परिस्थिति का गहरा विश्लेषण किया और सर्वहारा वर्ग की क्रान्तिकारी कार्यनीतियां पेश कीं। जैसा कि कामरेड माओ त्सेतुङ ने अप्रैल १९४५ में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस में अपने

ऐसी परिस्थिति में इस समय चीन के विभिन्न वर्गों के सम्बन्ध कैसे हैं तथा क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के सम्बन्ध कैसे हैं? भविष्य में वे कैसे होंगे? हमारी पार्टी की नीति क्या है? इन सवालों पर समूचे देश की जनता और समूची पार्टी के साथी बहुत ध्यान देते हैं।

क्वोमिन्ताङ का क्या हाल है? उसके अतीत पर नजर डालकर आप उसका वर्तमान बता सकते हैं; उसके अतीत और वर्तमान पर नजर डालकर आप उसका भविष्य बता सकते हैं। अतीत काल में इस पार्टी ने पूरे दस साल तक प्रतिक्रान्तिकारी गृहयुद्ध जारी रखा। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान उसने १९४० में, १९४१ में और १९४३ में, बड़े पैमाने के तीन कम्युनिस्ट-विरोधी हमले[2] किए और हर बार के हमले को देशव्यापी गृहयुद्ध में विकसित करने की कोशिश की। चूंकि हमारी पार्टी ने सही नीति अपनाई और

उद्घाटन-भाषण में बताया था, जापानी साम्राज्यवाद को परास्त करने के बाद भी चीन के सामने दो भाग्य और दो भविष्य मौजूद थे – नया चीन बनना या पुराना चीन बने रहना। चीन के बड़े जमींदारों का वर्ग और बड़े पूंजीपतियों का वर्ग, जिनका प्रतिनिधि च्याङ काई-शेक था, जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की विजय के फल जनता के हाथ से छीनना चाहते थे और चीन को बड़े जमींदारों के वर्ग और बड़े पूंजीपतियों के वर्ग की तानाशाही वाला अर्ध-औपनिवेशिक और अर्ध-सामन्ती देश बनाए रखना चाहते थे। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने, जो सर्वहारा वर्ग और आम जनता के हितों का प्रतिनिधित्व करती है, एक तरफ तो शान्ति प्राप्त करने और गृहयुद्ध का विरोध करने की भरपूर कोशिश की है तथा दूसरी तरफ उसे च्याङ काई-शेक की देशव्यापी गृहयुद्ध छेड़ने की प्रतिक्रान्तिकारी साजिश के खिलाफ पूरी तरह तैयार रहना चाहिए और सही नीति अपनानी चाहिए। इसका मतलब है, साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादियों के बारे में कोई भ्रम न रखना,

समूचे देश की जनता ने उसका विरोध किया, सिर्फ इसीलिए उसकी कोशिशें नाकाम रहीं। हर आदमी जानता है कि च्याङ काई-शेक, जो चीन के बड़े जमींदारों के वर्ग और बड़े पूंजीपतियों के वर्ग का राजनीतिक प्रतिनिधि है, बेहद खूंखार और चालबाज है। उसकी नीति रही है हाथ बांधे टुकुर-टुकुर ताकते रहना, बैठे-बैठे जीत की बाट जोहते रहना, अपनी शक्तियों को सुरक्षित रखना और गृहयुद्ध की तैयारी करना। सचमुच, जिस विजय की वह प्रतीक्षा कर रहा था, वह आ गई है और अब यह "जनरलिज्मो" "पहाड़ से नीचे उतरने"[3] ही वाला है। पिछले आठ वर्षों में हम च्याङ काई-शेक के साथ जगह बदलते रहे हैं – पहले हम पहाड़ पर थे और वह पानी के किनारे था;[4] जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान हम दुश्मन के पृष्ठभाग में थे और वह पहाड़ पर चला गया था। अब वह पहाड़ से नीचे उतर रहा है, जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की विजय के

उनकी धमकियों से न डरना, जनता के संघर्ष के फलों की दृढ़ता के साथ रक्षा करना और एक नया चीन – सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में आम जनता का नव-जनवादी चीन – कायम करने की कोशिश करना। चीन के दो भाग्यों और दो भविष्यों की हार-जीत का निर्णायक संघर्ष, जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की समाप्ति से चीन लोक गणराज्य की स्थापना तक के ऐतिहासिक काल की, यानी चीनी जन-मुक्ति युद्ध या तीसरे क्रान्तिकारी गृहयुद्ध के ऐतिहासिक काल की अन्तर्वस्तु है। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध खत्म होने के बाद, च्याङ काई-शेक ने अमरीकी साम्राज्यवाद की मदद से बार-बार शान्ति-समझौतों को फाड़ फेंका और जनता की शक्तियों को नेस्तनाबूद करने की चेष्टा में एक अभूतपूर्व रूप से बड़ा प्रति-क्रान्तिकारी गृहयुद्ध छेड़ दिया। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सही नेतृत्व के कारण चीनी जनता ने केवल चार साल संघर्ष करके ही महान देशव्यापी विजय प्राप्त कर ली – च्याङ काई-शेक का तख्ता उलट दिया और नया चीन कायम कर लिया।

फल हथियाने के लिए नीचे उतर रहा है।

पिछले आठ सालों में हमारे मुक्त क्षेत्रों की जनता और सेना ने बाहर से कोई मदद प्राप्त किए बिना और पूरी तरह अपनी ही कोशिशों के भरोसे विशाल इलाकों को मुक्त कराया, हमलावर जापानी फौजों की बहुसंख्या और लगभग सभी कठपुतली फौजों का मुकाबला किया तथा उन पर प्रहार किया। सिर्फ हमारे अटल प्रतिरोध और वीरतापूर्ण संघर्ष के कारण ही बड़े पृष्ठभागीय क्षेत्र[1] की २० करोड़ जनता को जापानी हमलावरों के पांव तले रौंदे जाने से बचाया जा सका और जिस इलाके में यह २० करोड़ जनता बसी हुई थी, उसे जापानी हमलावरों के कब्जे में फंसने से बचाया जा सका। च्याङ काई-शेक अमेइ पर्वत पर जा छिपा, जहां सामने पहरेदार मौजूद थे – ये पहरेदार थे मुक्त क्षेत्र, मुक्त क्षेत्रों की जनता और सेना। बड़े पृष्ठभागीय क्षेत्र की २० करोड़ जनता की रक्षा करते समय हमने इस "जनरलिज्मो" की भी रक्षा की तथा उसे हाथ पर हाथ धरकर विजय की प्रतीक्षा करने के लिए समय और स्थान दोनों दिए। समय – आठ साल एक महीना। स्थान – २० करोड़ आबादी वाला क्षेत्र। उसके लिए ये स्थितियां हमने तैयार कीं। अगर हम न होते, तो वह खड़ा-खड़ा तमाशा नहीं देख पाता। तो क्या "जनरलिज्मो" हमारा एहसानमन्द है? नहीं, वह नहीं है। एहसान-मन्द होना तो इस आदमी ने कभी सीखा ही नहीं! च्याङ काई-शेक सत्तारूढ़ कैसे हुआ? उत्तरी अभियान के जरिए, क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के सहयोग के पहले काल के जरिए, उस जनता के समर्थन के जरिए जिसे तब तक उसकी असलियत मालूम नहीं थी। ज्योंही सत्ता हाथ में आई, च्याङ काई-शेक ने, जनता का एहसानमन्द

होना तो दूर रहा, उल्टे उस पर धावा बोल दिया और उसे दस साल तक गृहयुद्ध के खून की नदी में डुबो दिया। इतिहास के इस अंश से आप सब साथी परिचित हैं। वर्तमान जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में चीनी जनता ने च्याङ काई-शेक की फिर रक्षा की। अब यह युद्ध विजय के साथ समाप्त हो रहा है और जापान आत्मसमर्पण करने ही वाला है, लेकिन च्याङ काई-शेक जनता का एहसानमन्द बिलकुल नहीं है। उल्टे, १६२७ के रिकार्ड को दोहराते हुए, वह फिर उसी पुराने ढंग से काम करना चाहता है। वह कहता है कि चीन में कभी कोई "गृहयुद्ध" नहीं हुआ, सिर्फ "डाकुओं का सफाया" हुआ है। वह इसे चाहे जो कहना पसन्द करे, तथ्य यह है कि वह जनता के खिलाफ गृहयुद्ध छेड़ना चाहता है, जनता का कत्लेआम करना चाहता है।

जब तक देशव्यापी गृहयुद्ध नहीं छिड़ जाता, तब तक जनता में बहुत से लोग और पार्टी में बहुत से साथी इस सवाल को स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाएंगे। चूंकि गृहयुद्ध अभी बड़े पैमाने पर नहीं छिड़ा, चूंकि वह अभी चारों तरफ नहीं फैला या खुले तौर पर शुरू नहीं हुआ और चूंकि लड़ाइयों की तादाद अभी ज्यादा नहीं हुई, इसलिए बहुत से लोग सोचते हैं, "यह जरूरी नहीं कि गृहयुद्ध हो!" बहुत से दूसरे लोग गृहयुद्ध से डरते हैं। उनका डरना अकारण नहीं है। दस साल तक लड़ाई रही और उसके बाद आठ साल तक जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध चलता रहा; अगर लड़ाई जारी रही, तो इसे कैसे बरदाश्त कर सकेंगे? ऐसे डर पैदा होना बिलकुल स्वाभाविक है। च्याङ काई-शेक की गृहयुद्ध छेड़ने की साजिश के बारे में हमारी पार्टी की नीति स्पष्ट और अविचल रही है, यानी गृहयुद्ध

का दृढ़ता के साथ विरोध करना, गृहयुद्ध के पक्ष में न होना और गृहयुद्ध की रोकथाम करना। आगामी काल में, हम गृहयुद्ध की रोकथाम करने में अत्यन्त प्रयत्नपूर्वक और अत्यन्त धीरज के साथ जनता का नेतृत्व करते रहेंगे। फिर भी ठण्डे दिमाग से इस बात के प्रति सजग रहना जरूरी है कि गृहयुद्ध का बेहद गम्भीर खतरा मौजूद है, क्योंकि च्याङ काई-शेक की नीति पहले ही तय हो चुकी है। च्याङ काई-शेक की नीति है गृहयुद्ध छेड़ना। हमारी नीति यानी जनता की नीति है गृहयुद्ध का विरोध करना। गृहयुद्ध का विरोध करने वालों में सिर्फ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी जनता हैं, कितनी बदकिस्मती की बात है कि उनमें च्याङ काई-शेक और क्वोमिन्ताङ नहीं हैं! यहां एक पक्ष लड़ना नहीं चाहता और दूसरा पक्ष लड़ना चाहता है। अगर दोनों पक्ष न लड़ना चाहते, तो लड़ाई न होती। अब, चूंकि सिर्फ एक पक्ष लड़ाई नहीं चाहता और यह पक्ष अभी इतना मजबूत नहीं है कि दूसरे पक्ष को रोक दे, इसलिए गृहयुद्ध का बेहद गम्भीर खतरा मौजूद है।

हमारी पार्टी ने ठीक समय पर यह बताया कि च्याङ काई-शेक तानाशाही और गृहयुद्ध की अपनी प्रतिक्रियावादी नीति पर अड़ा रहेगा। सातवीं पार्टी कांग्रेस के पहले, उसके दौरान और उसके बाद, हमने जनता का ध्यान गृहयुद्ध के खतरे की ओर आकर्षित करने के लिए काफी काम किया, ताकि समूची जनता, हमारे पार्टी-सदस्य और हमारी सेना काफी समय पहले से ही मानसिक रूप से तैयार हो जाएं। यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है, और ऐसी तैयारी है या नहीं, इससे बहुत बड़ा फर्क पड़ जाता है। १९२७ में हमारी पार्टी अभी शैशवावस्था में ही थी और च्याङ काई-शेक के आकस्मिक

प्रतिक्रान्तिकारी प्रहार के लिए मानसिक रूप से बिलकुल तैयार नहीं थी। नतीजे के तौर पर जनता द्वारा प्राप्त विजय के फल जल्दी ही हाथ से निकल गए, जनता को लम्बे समय तक मुसीबतें सहनी पड़ीं और उज्ज्वल चीन अन्धकार में डूब गया। इस बार की स्थिति भिन्न है; हमारी पार्टी तीन क्रान्तियों के समृद्ध अनुभव और काफी ऊंचे दर्जे की राजनीतिक परिपक्वता प्राप्त कर चुकी है। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी बार-बार गृहयुद्ध के खतरे को स्पष्ट रूप से समझा चुकी है और इसलिए समूची जनता, समूची पार्टी के साथी और पार्टी के नेतृत्व में काम करने वाली समस्त फौजें तैयार हैं।

च्याङ काई-शेक हमेशा एक-एक रत्ती सत्ता को और एक-एक रत्ती उपलब्धि को जनता से ऐंठने की कोशिश करता है। और हम? हमारी नीति है शठे-शाठ्यम का रुख अपनाना और एक-एक इंच जमीन के लिए लड़ना। जो तरीका च्याङ काई-शेक अपनाता है, वही तरीका हम भी अपनाते हैं। वह हमेशा एक तलवार बाएं हाथ में लेकर और एक तलवार दाएं हाथ में लेकर जनता पर युद्ध थोपना चाहता है। हम भी उसी की तरह तलवार उठाते हैं। यह तरीका हमने जांच-पड़ताल और अध्ययन के बाद ही निकाला है। ऐसी जांच-पड़ताल और अध्ययन का बड़ा महत्व है। जब हम दूसरे आदमी के हाथ में कोई चीज देखते हैं, तो हमें कुछ जांच-पड़ताल करनी चाहिए। उसके हाथ में क्या है? तलवार। यह तलवार किसलिए है? कत्ल करने के लिए। अपनी तलवार से वह किसे कत्ल करना चाहता है? जनता को। इन बातों का पता लगाने के बाद आगे जांच-पड़ताल करनी चाहिए – चीनी जनता के भी हाथ हैं और वह भी तलवार उठा सकती है, तथा अगर तलवार न हो, तो उसे

बना भी सकती है। चीनी जनता ने इस सच्चाई का पता काफी लम्बे समय की जांच-पड़ताल और अध्ययन के बाद लगाया है। युद्ध-सरदारों, जमींदारों, स्थानीय निरंकुश तत्वों व बुरे शरीफजादों और साम्राज्यवादियों, इन सबके हाथ में तलवार है और ये कत्ल करने वाले हैं। जनता इस बात को समझ गई है और इसलिए वैसा ही तरीका अपनाती है। हममें कुछ लोग अक्सर इस तरह की जांच-पड़ताल और अध्ययन की उपेक्षा करते हैं। मिसाल के लिए, छन तू-श्यू यह नहीं समझ सका कि तलवार से लोगों का खून किया जा सकता है। कुछ लोग कहते हैं, यह बिलकुल सीधी-सादी रोजमर्रा की सच्चाई है; यह कैसे हो सकता है कि कम्युनिस्ट पार्टी का नेता इसे न समझ सके? लेकिन यह जरूरी नहीं। छन तू-श्यू ने कोई जांच-पड़ताल और अध्ययन नहीं किया, इसलिए वह इस बात को नहीं समझ सका। यही वजह है कि हमने उसे अवसरवादी कहा। जो आदमी जांच-पड़ताल और अध्ययन नहीं करता, उसे बोलने का कोई हक नहीं है और इसी वजह से हमने उसे इस हक से वंचित कर दिया। हमने छन तू-श्यू के रास्ते से अलग रास्ता अपनाया है तथा उत्पीड़न और कत्ल से पीड़ित जनता को तलवार उठाने लायक बना दिया है। अगर किसी ने फिर कभी हमें कत्ल करना चाहा, तो हम भी वैसा ही तरीका अपनाएंगे। ज्यादा समय नहीं हुआ जब क्वोमिन्ताङ ने हमारे क्वानचुङ उपक्षेत्र पर हमला करने के लिए छै डिवीजनों को भेजा और उनमें तीन डिवीजनों ने अन्दर घुसकर २० ली लम्बे और १०० ली चौड़े इलाके को हथिया लिया। हमने भी वैसा ही तरीका अपनाया तथा २० ली लम्बे और १०० ली चौड़े इस क्षेत्र में क्वोमिन्ताङ फौजों का समग्र रूप से, सर्वांगीण रूप से और सम्पूर्ण

रूप से सफाया कर दिया।[६] हमारी नीति है शठे-शाठ्यम का रुख अपनाना और एक-एक इंच जमीन के लिए लड़ना; क्वोमिन्ताङ को हम आसानी से अपनी जमीन कभी नहीं हथियाने देंगे और अपने लोगों का खून कभी नहीं करने देंगे। बेशक, एक-एक इंच जमीन के लिए लड़ने का मतलब यह नहीं है कि "आधार-क्षेत्र की एक भी इंच जमीन को न छोड़ने" की पुरानी "वामपंथी" कार्यदिशा का अनुसरण किया जाए। इस बार हमने २० ली लम्बे और १०० ली चौड़े क्षेत्र को छोड़ा। इसे जुलाई के अन्त में छोड़ा गया और अगस्त के शुरू में फिर ले लिया गया। १९४१ की दक्षिणी आनह्वेइ घटना के बाद क्वोमिन्ताङ के सम्पर्क स्टाफ-अफसर ने एक बार मुझसे पूछा था कि हमारा क्या करने का इरादा है। मैंने जवाब दिया था: हर वक्त येनान में रहते हुए भी क्या तुम नहीं जानते? "अगर हो हम पर धावा बोलेगा, तो हम भी उस पर धावा बोल देंगे। अगर हो रुक जाएगा, तो हम भी रुक जाएंगे।"[७] उस समय च्याङ काई-शेक का नाम नहीं लिया गया था और सिर्फ हो इङ-छिन का नाम लिया गया था। आज हम कहते हैं: "अगर च्याङ हम पर धावा बोलेगा, तो हम भी उस पर धावा बोल देंगे। अगर च्याङ रुक जाएगा, तो हम भी रुक जाएंगे।" जो तरीका वह अपनाएगा, वैसा ही तरीका हम भी अपनाएंगे। चूंकि अब च्याङ काई-शेक अपनी तलवारें पैनी कर रहा है, इसलिए हमें भी अपनी तलवारें पैनी कर लेनी चाहिए।

जिन अधिकारों को जनता ने जीता है, उन्हें आसानी से हरगिज नहीं छोड़ना चाहिए, बल्कि लड़कर उनकी रक्षा करनी चाहिए। हम गृहयुद्ध नहीं चाहते। लेकिन अगर च्याङ काई-शेक चीनी जनता पर गृहयुद्ध थोपने पर अड़ा रहा, तो हमारे सामने एकमात्र उपाय

यह रह जाएगा कि आत्मरक्षा के लिए तथा मुक्त क्षेत्रों की जनता के जान-माल, अधिकारों और सुख-चैन की रक्षा के लिए हथियार उठाएं और उससे लड़ें। यह एक गृहयुद्ध होगा, जिसे वह हम पर थोपेगा। अगर हम विजयी नहीं होंगे, तो हम न तो ईश्वर को दोष देंगे और न संसार को, बल्कि सिर्फ अपने को ही दोष देंगे। फिर भी यह किसी को नहीं सोचना चाहिए कि जनता द्वारा जीते गए अधिकारों को छीनना या धोखा देकर हथियाना आसान काम है ; यह नामुमकिन है। पिछले साल एक अमरीकी पत्रकार ने मुझसे पूछा – "आपको कार्यवाही करने का हक किसने दिया है ?" मैंने जवाब दिया – "जनता ने।" अगर जनता ने नहीं दिया तो किसने दिया है ? सत्ताधारी क्वोमिन्ताङ ने तो नहीं दिया है। वह हमें मान्यता नहीं देती। जन राजनीतिक परिषद में हम "सांस्कृतिक संगठन" की हैसियत[८] से हिस्सा लेते हैं, जैसा कि उसके नियमों में निर्धारित किया गया है। हम कहते हैं कि हम "सांस्कृतिक संगठन" नहीं हैं, हमारे पास सेना है और हम "सैनिक संगठन" हैं। इस साल १ मार्च को च्याङ काई-शेक ने कहा कि कम्युनिस्ट पार्टी को कानूनी हैसियत पाने के लिए अपनी सेना सौंपनी पड़ेगी। च्याङ काई-शेक की यह बात आज भी कायम है। हमने अपनी सेना को नहीं सौंपा, इसलिए हमारी कोई कानूनी हैसियत नहीं है और हम "इस लोक और परलोक के कानूनों का उल्लंघन" कर रहे हैं। हमारा कर्तव्य है जनता के प्रति उत्तरदायी होना। हर शब्द, हर कार्यवाही और हर नीति को जनता के हितों के अनुकूल होना चाहिए, और अगर गलतियां हों तो उन्हें जरूर सुधारना चाहिए – जनता के प्रति उत्तरदायी होने का मतलब यही है। साथियो ! जनता मुक्ति चाहती है और इसलिए वह सत्ता

उन्हीं को सौंपती है जो जनता का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं और उसके लिए वफादारी के साथ काम कर सकते हैं, यानी हम कम्युनिस्टों को सौंपती है। जनता के प्रतिनिधि की हैसियत से हमें उसका प्रतिनिधित्व अच्छी तरह करना चाहिए, छन तू-श्यू की तरह नहीं। छन तू-श्यू ने जन-विरोधी प्रतिक्रान्तिकारी प्रहारों का सामना होने पर शठे-शाठ्यम का रुख अपनाने और एक-एक इंच जमीन के लिए लड़ने की नीति नहीं अपनाई ; नतीजे के तौर पर, १९२७ में, चन्द महीनों के अन्दर ही जनता वे सब अधिकार खो बैठी जिन्हें उसने प्राप्त किया था। इस बार हमें सतर्क रहना चाहिए। हमारी नीति छन तू-श्यू की नीति से बिलकुल भिन्न है ; हमें किसी भी चालबाजी से बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता। हमें अपना दिमाग ठण्डा रखना चाहिए और सही नीति अपनानी चाहिए ; हमें गलतियां नहीं करनी चाहिए।

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की विजय के फल किसे मिलने चाहिए ? यह बिलकुल साफ है। एक आड़ू के पेड़ की मिसाल लीजिए। जब इस पेड़ पर आड़ू लगते हैं, तो ये विजय के फल होते हैं। इन आड़ुओं को तोड़ने का हक किसे है ? जरा यह तो पूछिए कि इस पेड़ को किसने लगाया और सींचा है। च्याङ काई-शेक पालथी मार कर पहाड़ पर बैठा रहा और एक भी बाल्टी पानी नहीं लाया, फिर भी वह आड़ू तोड़ने के लिए दूर से ही अपनी बांहें पसार रहा है। वह कहता है : ये आड़ू मेरे यानी च्याङ काई-शेक के हैं, मैं जमींदार हूं और तुम मेरे भूदास हो, मैं तुम्हें कोई आड़ू नहीं तोड़ने दूंगा। हमने प्रेस में उसका खण्डन किया है।[९] हम कहते हैं : तुम पानी कभी नहीं लाए, इसलिए आड़ू तोड़ने का तुम्हें कोई हक नहीं है। हम

मुक्त क्षेत्रों के लोगों ने इस पेड़ को हर रोज सींचा है और इसके फल तोड़ने का सबसे ज्यादा हक हमें है। साथियो ! जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की विजय जनता ने अपना खून बहाकर और बलिदान देकर प्राप्त की है, यह विजय जनता की होनी चाहिए और जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के फल जनता को ही प्राप्त होने चाहिए। जहां तक च्याङ काई-शेक का ताल्लुक है, वह जापान के खिलाफ लड़ने में तो निष्क्रिय था, लेकिन कम्युनिस्टों के खिलाफ लड़ने में सक्रिय था। जनता के जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में वह राह का रोड़ा था। यह राह का रोड़ा अब विजय के फलों पर अपना इजारा कायम करने के लिए आगे आ रहा है, विजय के बाद चीन को युद्ध के पहले की पुरानी स्थिति में फिर से पहुंचाना चाहता है और रत्तीभर तब्दीली बरदाश्त नहीं करता। इससे संघर्ष पैदा होता है। साथियो ! यह बहुत भारी संघर्ष है।

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की विजय के फल जनता को मिलने चाहिए, यह एक बात है ; लेकिन अन्त में उन्हें कौन प्राप्त करेगा और क्या जनता प्राप्त करेगी या नहीं, यह दूसरी बात है। यह नहीं समझना चाहिए कि विजय के सभी फल जरूर जनता को प्राप्त हो जाएंगे। बहुत से बड़े आड़ुओं को, जैसे शांघाई, नानकिङ, हाङचाओ और अन्य बड़े शहरों को, च्याङ काई-शेक हड़प लेगा। उसने अमरीकी साम्राज्य-वाद के साथ सांठगांठ कर ली है और इन स्थानों में उसका पलड़ा भारी है, जबकि क्रान्तिकारी जनता अब तक मुख्य रूप से सिर्फ देहाती इलाकों पर ही कब्जा कर सकी है। आड़ुओं के अन्य गुच्छे के लिए दोनों पक्षों में कशमकश होगी। ये हैं वे मझोले और छोटे शहर, जो ताथुङ-फूचाओ रेलवे पर थाएय्वान के उत्तर में फैले भाग में, पेफिङ-

स्वेय्वान रेलवे के मध्य भाग में, पेफिङ-ल्याओनिङ रेलवे पर, पेफिङ-हानखओ रेलवे पर चङचओ के उत्तर में फैले भाग में, चङतिङ-थाएय्वान रेलवे पर, पाएक्वेइ-चिनछङ रेलवे [१०] पर, तचओ-शच्या-च्वाङ रेलवे पर, श्येनचिन-फूखओ रेलवे पर, छिङताओ-चीनान रेलवे पर, और लुङहाए रेलवे पर चङचओ के पूर्व में फैले भाग में हैं। इन मझोले और छोटे शहरों के लिए जरूर कशमकश करनी चाहिए ; ये मझोले और छोटे आड़ू हैं, जिन्हें मुक्त क्षेत्रों की जनता ने अपने खून-पसीने से सींचा है। आज यह कहना मुश्किल है कि ये स्थान जनता को प्राप्त होंगे या नहीं। आज सिर्फ ये शब्द कहे जा सकते हैं : कठोर संघर्ष करो। क्या ऐसे स्थान भी हैं जो जनता को निश्चित रूप से प्राप्त होंगे ? हां, हैं। वे हैं हपे प्रान्त, छाहाड़ प्रान्त और जेहोल प्रान्त [११] के, तथा शानशी प्रान्त के ज्यादातर भाग के, शानतुङ प्रान्त और उत्तरी च्याङसू प्रान्त के विशाल देहाती इलाके और बहुत से शहर, जिनमें गांव आपस में जुड़े हुए हैं और एक इलाके में लगभग एक सौ शहर हैं तो दूसरे इलाके में सत्तर-अस्सी शहर और तीसरे इलाके में चालीस-पचास शहर – ऐसे इलाके, छोटे और बड़े, कुल मिलाकर तीन, चार, पांच या छै हैं। ये शहर कैसे हैं ? मझोले और छोटे। हमें उनके बारे में यकीन है, विजय के इन फलों को तोड़ने की शक्ति हमारे पास है। चीनी क्रान्ति के इतिहास में यह पहला मौका है जब हमें फलों का ऐसा गुच्छा प्राप्त होगा। इतिहास में, हमने दुश्मन की "घेरा डालने और विनाश करने" की तीसरी मुहिम को १९३१ की दूसरी छमाही में चकनाचूर करने के बाद ही च्याङशी प्रान्त के अपने केन्द्रीय आधार-क्षेत्र में काउन्टी-केन्द्रों की कुल तादाद इक्कीस तक पहुंचा दी। [१२] लेकिन उनमें से एक भी मझोला शहर

नहीं था। इक्कीस छोटे शहरों को मिलाकर कुल आबादी ज्यादा से ज्यादा २५,००,००० तक पहुंची थी। इन पर निर्भर रहकर चीनी जनता इतने लम्बे अरसे तक संघर्ष जारी रख सकी, इतनी बड़ी जीतें हासिल कर सकी तथा "घेरा डालने और विनाश करने" की इतनी बड़ी मुहिमों को चकनाचूर कर सकी। बाद में हम हार गए, जिसके लिए हमें च्याङ काई-शेक को नहीं, बल्कि अच्छी तरह न लड़ने के कारण अपने को ही दोष देना चाहिए। इस बार अगर बीसियों बड़े-छोटे शहरों को मिलाकर एक क्षेत्र बना दिया जाता है और ऐसे क्षेत्रों की तादाद तीन, चार, पांच या छै हो जाती है, तो चीनी जनता के तीन, चार, पांच या छै क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्र हो जाएंगे, जिनमें हर आधार-क्षेत्र च्याङशी प्रान्त के केन्द्रीय क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्र से बड़ा होगा। इस तरह चीनी क्रान्ति की परिस्थिति बड़ी आशाजनक हो जाएगी।

अगर परिस्थिति को समूचे रूप में देखा जाए, तो जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की मंजिल खत्म हो गई है तथा नई परिस्थिति और नया कार्य है घरेलू संघर्ष। च्याङ काई-शेक "राष्ट्रीय निर्माण" की बातें करता है। अब से संघर्ष इस बात का होगा कि किस किस्म के देश का निर्माण किया जाए? क्या सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में आम जनता के नव-जनवादी देश का निर्माण किया जाए? या बड़े जमींदारों के वर्ग और बड़े पूंजीपतियों के वर्ग की तानाशाही वाले अर्ध-औपनिवेशिक और अर्ध-सामन्ती देश का निर्माण किया जाए? यह बहुत जटिल संघर्ष होगा। मौजूदा संघर्ष यह रूप ले रहा है कि च्याङ काई-शेक जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की विजय के फलों को हड़पने की कोशिश कर रहा है, और हम इन्हें हड़पने की उसकी

कोशिश का विरोध कर रहे हैं। अगर इस काल में कोई अवसरवाद प्रकट हुआ, तो वह कठोर संघर्ष न करने और इन फलों को, जो जनता को मिलने चाहिए, स्वेच्छा से च्याङ काई-शेक को भेंट करने के रूप में प्रकट होगा।

क्या खुले तौर पर देशव्यापी गृहयुद्ध छिड़ेगा? यह घरेलू और अन्तरराष्ट्रीय तत्वों पर निर्भर है। घरेलू तत्व मुख्य रूप से हैं हमारी शक्ति और हमारी राजनीतिक चेतना का दर्जा। अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू परिस्थिति की आम प्रवृत्ति तथा जनता की भावनाओं की दिशा के कारण, क्या हम अपने ही संघर्षों से गृहयुद्ध का पैमाना सीमित कर सकते हैं या देशव्यापी गृहयुद्ध के विस्फोट को टाल सकते हैं? यह सम्भावना मौजूद है।

च्याङ काई-शेक ने अगर बेलगाम होकर गृहयुद्ध छेड़ना चाहा, तो उसे बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। पहली बात यह है कि मुक्त क्षेत्रों में १० करोड़ आबादी है, १० लाख सैनिक हैं और २० लाख से ज्यादा मिलिशिया के सदस्य हैं। दूसरी बात यह है कि क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्र की राजनीतिक दृष्टि से जागृत जनता गृहयुद्ध के खिलाफ है और यह च्याङ काई-शेक पर एक किस्म की रोक है। तीसरी बात यह है कि क्वोमिन्ताङ के अन्दर भी एक भाग ऐसे लोगों का है जो गृहयुद्ध के पक्ष में नहीं हैं। आज की परिस्थिति १९२७ की परिस्थिति से बहुत भिन्न है। और खास तौर पर हमारी पार्टी की आज की स्थिति १९२७ की स्थिति से बहुत भिन्न है। उन दिनों हमारी पार्टी अभी अपने शैशव में थी। न तो उसका दिमाग ठण्डा था, न उसे सशस्त्र संघर्ष करने का अनुभव था तथा न उसके पास शठे-शाठ्यम का रुख अपनाने की नीति ही थी। आज हमारी

पार्टी में राजनीतिक चेतना का स्तर पहले से कहीं ज्यादा ऊंचा हो गया है।

हमारी अपनी, यानी सर्वहारा वर्ग के हिरावल दस्ते की राजनीतिक चेतना के अलावा आम जनता की राजनीतिक चेतना का सवाल भी आता है। जब तक जनता में राजनीतिक चेतना नहीं पैदा होती, तब तक यह बिलकुल सम्भव है कि उसकी क्रान्ति के फल दूसरों को सौंप दिए जाएं। यह बात इतिहास में हो चुकी है। आज चीनी जनता की राजनीतिक चेतना का स्तर भी पहले से बहुत ऊंचा हो चुका है। जनता में हमारी पार्टी की जितनी ज्यादा प्रतिष्ठा आज है, उतनी पहले कभी नहीं रही। फिर भी, जनता में और मुख्य रूप से उन लोगों में जो जापान-अधिकृत और क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों में रहते हैं, आज भी काफी लोग च्याङ काई-शेक पर विश्वास करते हैं तथा क्वोमिन्ताङ और अमरीका के बारे में भ्रम रखते हैं, ऐसे भ्रम, जिन्हें फैलाने की च्याङ काई-शेक भरपूर कोशिश कर रहा है। इस तथ्य से कि चीनी जनता के एक भाग में अभी राजनीतिक चेतना पैदा नहीं हुई, यह जाहिर होता है कि हमारे प्रचार और संगठन के काम में अभी बहुत कुछ करना बाकी है। जनता में राजनीतिक चेतना पैदा करना आसान नहीं है। उसके दिमाग से गलत विचारों को दूर करने के लिए हमें बहुत से ठोस काम करने होंगे। चीनी जनता के दिमाग से पिछड़े विचारों को उसी तरह बुहार देना चाहिए, जिस तरह हम अपने कमरों को झाड़ते-बुहारते हैं। बिना झाड़ू लगाए गर्द अपने आप कभी गायब नहीं होती। हमें जनता के बीच व्यापक रूप से प्रचार और शिक्षा का काम करना चाहिए। इससे वह चीन की सच्ची स्थिति और प्रवृत्ति को समझ जाएगी और उसे अपनी शक्ति पर विश्वास हो जाएगा।

जनता को संगठित करना हम पर निर्भर है। जहां तक चीन के प्रतिक्रियावादियों का सवाल है, उन्हें उखाड़ फेंकने के लिए जनता को संगठित करना हम पर निर्भर है। हर प्रतिक्रियावादी चीज एक जैसी होती है ; अगर आप उस पर प्रहार नहीं करेंगे तो वह गिरेगी नहीं। यह भी फर्श को झाड़ने-बुहारने के ही समान है ; यह निश्चित है कि जहां झाड़ू नहीं पहुंचेगा, वहां से गर्द अपने आप गायब नहीं हो जाएगी। शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के दक्षिण में एक नदी है, जिसका नाम है च्येचि नदी। इस नदी के दक्षिण में लोछ्वान काउन्टी है और उत्तर में फ़ूश्येन काउन्टी। नदी के उत्तर में और दक्षिण में दो बिलकुल अलग दुनिया हैं। दक्षिण का इलाका क्वोमिन्ताङ के शासन में है ; चूंकि हम वहां नहीं पहुंचे, इसलिए जनता असंगठित है तथा वहां बहुत गन्दगी और सड़ांध है। हमारे कुछ साथी सिर्फ राजनीतिक प्रभाव पर विश्वास करते हैं, यह कल्पना करते हैं कि समस्याओं को सिर्फ प्रभाव से हल किया जा सकता है। यह एक अन्धविश्वास है। १६३६ में हम पाओआन[11] में थे। वहां से चालीस-पचास ली दूर किलेबन्दी वाला एक गांव था, जिस पर एक निरंकुश जमींदार का कब्जा था। उन दिनों पार्टी की केन्द्रीय कमेटी पाओआन में थी और हमारा राजनीतिक प्रभाव सचमुच काफी भारी समझा जा सकता था, लेकिन उस गांव के प्रतिक्रान्तिकारियों ने आत्मसमर्पण करने से हठपूर्वक इनकार कर दिया। हमने उसके दक्षिण में झाड़ू लगाया, हमने उसके उत्तर में झाड़ू लगाया, लेकिन सब व्यर्थ गया। जब तक हमारे झाड़ू ने सीधे उस गांव के

अन्दर पहुंचकर नहीं बुहारा, तब तक जमींदार यह नहीं चिल्लाया – "ओह, अब मैं ऐसा नहीं करूंगा !"[१४] दुनिया के सब काम ऐसे ही होते हैं। घंटियां तब तक नहीं बजतीं जब तक उन्हें बजाया न जाए। मेजें तब तक नहीं हटतीं जब तक उन्हें हटाया न जाए। जापान ने तब तक आत्मसमर्पण नहीं किया जब तक सोवियत संघ की लाल सेना ने उत्तर-पूर्वी चीन में प्रवेश नहीं किया। दुश्मन ने और कठपुतली फौजों ने तब तक अपने हथियार हमें नहीं सौंपे जब तक हमारी फौजों ने उनके खिलाफ लड़ाई नहीं की। राजनीतिक प्रभाव सिर्फ वहीं अपना पूरा असर दिखाता है जहां झाड़ू पहुंचता है। हमारा झाड़ू है कम्युनिस्ट पार्टी, आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना। आपको झाड़ू हाथ में लेकर बुहारने का तरीका सीखना चाहिए; बिस्तर में मत पड़े रहो, यह कल्पना करते हुए कि आंधी का झोंका किसी न किसी तरह आएगा और समूची गर्द को उड़ा ले जाएगा। हम मार्क्सवादी, क्रान्तिकारी यथार्थवादी हैं और कोरे सपने कभी नहीं देखते। चीन में एक पुरानी कहावत है: "पौ फटते ही उठो और आंगन को बुहार दो।"[१५] पौ फटने के बाद नया दिन शुरू हो जाता है। हमारे पुरखों ने हमें बताया है कि पौ फटते ही उठ जाना चाहिए और झाड़ू लगाना शुरू कर देना चाहिए। उन्होंने हमें एक काम सौंपा है। सिर्फ ऐसा ही सोचकर और करके हमें फायदा होगा तथा हम काम में जुट सकेंगे। चीन का क्षेत्रफल बहुत विशाल है और यह हम पर निर्भर है कि इसे एक-एक इंच करके बुहारें।

हमारी नीति को किस आधार पर टिकना चाहिए? इसका आधार होना चाहिए हमारी अपनी ही शक्ति, जिसका मतलब है स्वावलम्बन। हम अकेले नहीं हैं; दुनिया के तमाम साम्राज्यवाद-

विरोधी देश और जनता हमारे मित्र हैं। फिर भी हम स्वावलम्बन पर जोर देते हैं। हम अपने ही द्वारा संगठित शक्तियों पर निर्भर रहकर, सभी चीनी और विदेशी प्रतिक्रियावादियों को परास्त कर सकते हैं। इसके विपरीत च्याङ काई-शेक पूरी तरह अमरीकी साम्राज्यवाद की मदद पर निर्भर है, जिसे वह अपना मुख्य सहारा समझता है। तानाशाही, गृहयुद्ध और वतनफरोशी, ये तीनों हमेशा उसकी नीति का आधार रहे हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद च्याङ काई-शेक को गृहयुद्ध छेड़ने में मदद देना चाहता है और चीन को अमरीका का अधीन देश बनाना चाहता है तथा उसकी यह नीति भी काफी समय पहले तय की गई थी। लेकिन अमरीकी साम्राज्यवाद बाहर से मजबूत है, जबकि अन्दर से खोखला है। हमें अपना दिमाग ठण्डा रखना चाहिए, यानी हमें न तो साम्राज्यवादियों की चिकनी-चुपड़ी बातों पर विश्वास करना चाहिए और न उनकी धमकियों से ही डरना चाहिए। एक बार एक अमरीकी ने मुझसे कहा, "आपको हर्ले की बात सुननी चाहिए और क्वोमिन्ताङ सरकार में अफसर बनने के लिए कुछ आदमियों को भेज देना चाहिए।"[१६] मैंने जवाब दिया, "ऐसा अफसर बनना आसान काम नहीं जिसके हाथ-पांव बंधे हुए हों; हम ऐसा नहीं करेंगे। हम अफसर तभी बनेंगे जब हमारे हाथ-पांव बन्धन-मुक्त हो जाएंगे, आजादी से काम कर सकेंगे, यानी जनवादी आधार पर एक मिलीजुली सरकार कायम हो सकेगी।" उसने कहा, "अगर आप ऐसा नहीं करेंगे, तो बुरा होगा।" मैंने पूछा, "बुरा क्यों होगा?" उसने कहा, "पहले, अमरीकी आपको कोसेंगे; दूसरे, अमरीकी च्याङ काई-शेक को सहारा देंगे।" मैंने जवाब दिया, "भरपेट रोटी खाने वाले और भरपूर नींद लेने वाले तुम अमरीकी,

अगर जनता को कोसना चाहते हो और च्याङ काई-शेक को सहारा देना चाहते हो, तो यह तुम्हारा मामला है और मैं दखल नहीं दूंगा। इस वक्त हमारे पास कोदों और बन्दूक का योग है और तुम्हारे पास रोटी और तोप का। अगर तुम्हें च्याङ काई-शेक को सहारा देने की इच्छा है, तो उसे सहारा दो, जब तक जी चाहे तब तक सहारा दो। लेकिन एक बात याद रखना। चीन किसका है? चीन च्याङ काई-शेक का हरगिज नहीं है, चीन चीनी जनता का है। वह दिन जरूर आएगा जब च्याङ काई-शेक को सहारा देना तुम्हारे लिए असम्भव हो जाएगा।" साथियो! वह अमरीकी व्यक्ति लोगों को डराने की कोशिश कर रहा था। साम्राज्यवादी ऐसी बातों में माहिर हैं, और उपनिवेशों में बहुत से लोग उनसे डर जाते हैं। साम्राज्यवादी यह सोचते हैं कि उपनिवेशों के सब लोगों को डराया जा सकता है, लेकिन वे यह नहीं समझते कि चीन में ऐसे लोग मौजूद हैं जो ऐसी बातों से नहीं डरते। अतीत काल में हमने च्याङ काई-शेक को कम्युनिस्टों के खिलाफ लड़ने में मदद देने की अमरीकी नीति की खुलेआम आलोचना की है और उसका पर्दाफाश किया है; यह जरूरी था और भविष्य में हम इसे जारी रखेंगे।

सोवियत संघ ने अपनी फौजें भेज दी हैं, हमलावरों को बाहर खदेड़ने में चीनी जनता की मदद करने के लिए लाल सेना आ गई है; ऐसी घटना चीन के इतिहास में पहले कभी नहीं हुई। इस बात का अकूत प्रभाव पड़ा है। अमरीका और च्याङ काई-शेक की प्रचार संस्थाओं को यह उम्मीद थी कि दो परमाणु-बमों से लाल सेना के राजनीतिक प्रभाव को मिटाया जा सकेगा।[१७] लेकिन इसे नहीं मिटाया जा सकता; यह इतना आसान नहीं है। क्या परमाणु-बम युद्धों का फैसला कर सकते हैं? नहीं, वे नहीं कर सकते। परमाणु-बम जापान से आत्मसमर्पण नहीं करा सके। जनता के संघर्षों के बिना, अकेले परमाणु-बम व्यर्थ हैं। अगर परमाणु-बम ही इस युद्ध का फैसला कर सकते, तो सोवियत संघ से अपनी फौज भेजने के लिए कहने की क्या जरूरत थी? जब जापान पर दो परमाणु-बम गिराए गए, तो उसने आत्मसमर्पण क्यों नहीं किया और ज्योंही सोवियत संघ ने अपनी फौजें भेजीं, आत्मसमर्पण क्यों कर दिया? हमारे कुछ साथियों का भी यह विश्वास है कि परमाणु-बम सर्वशक्तिमान है; यह एक बड़ी भूल है। इन साथियों की विवेचन-शक्ति एक अंग्रेज कुलीन से भी कम है। एक अंग्रेज लार्ड है, जिसका नाम है माउन्टबैटन। उसने कहा है, सबसे भारी भूल यह सोचना है कि परमाणु-बम युद्ध का फैसला कर सकता है।[१८] हमारे ये साथी माउन्टबैटन से भी ज्यादा पिछड़े हुए हैं। वह कौन सा प्रभाव है जिसकी वजह से ये साथी परमाणु-बम को कोई चमत्कारी चीज समझते हैं? पूंजीवादी प्रभाव। यह कहां से आता है? पूंजीवादी स्कूलों की शिक्षा से, पूंजीवादी प्रेस और समाचार-एजेन्सियों से। दो विश्व-दृष्टिकोण हैं और दो विचार-प्रणालियां हैं, सर्वहारा विश्व-दृष्टिकोण और विचार-प्रणाली तथा पूंजीवादी विश्व-दृष्टिकोण और विचार-प्रणाली। ये साथी अक्सर पूंजीवादी विश्व-दृष्टिकोण और विचार-प्रणाली से चिपके रहते हैं और अक्सर सर्वहारा विश्व-दृष्टिकोण और विचार-प्रणाली को भूल जाते हैं। "हथियार ही सब कुछ तय करते हैं" का सिद्धान्त, विशुद्ध सैनिक दृष्टिकोण, जनता से अलग होकर नौकरशाहाना तरीके से काम करना, व्यक्तिवादी विचार, और इसी तरह की अन्य बातें — ये सब हमारी पांतों में पूंजीवादी

प्रभाव हैं। इन पूंजीवादी चीजों को हमें अपनी पांतों से हमेशा झाड़ते-बुहारते रहना चाहिए, ठीक उसी तरह, जैसे हम गर्द को झाड़ते-बुहारते हैं।

सोवियत संघ के युद्ध में शामिल होने की वजह से जापान के आत्मसमर्पण का फैसला हो गया है और चीन की परिस्थिति एक नए काल में विकसित हो गई है। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध और नए काल के बीच एक संक्रमण की मंजिल है। संक्रमण की इस मंजिल का संघर्ष च्याङ काई-शेक को जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की विजय के फलों को हड़पने से रोकने का संघर्ष है। च्याङ काई-शेक देशव्यापी गृहयुद्ध छेड़ना चाहता है और उसकी नीति तय हो चुकी है; हमें इसके लिए तैयार रहना चाहिए। यह देशव्यापी गृहयुद्ध चाहे जब भी छिड़े, हमें अच्छी तरह तैयार रहना चाहिए। अगर यह पहले हो जाए, मान लो कल सुबह हो जाए, तो भी हमें तैयार रहना चाहिए। यह पहली बात है। मौजूदा अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू परिस्थिति में यह सम्भव है कि कुछ समय तक गृहयुद्ध का पैमाना सीमित रहे और उसका रूप स्थानीय रहे। यह दूसरी बात है। पहली बात में वह बताया गया है जिसकी हमें तैयारी करनी चाहिए, दूसरी बात में वह बताया गया है जो लम्बे अरसे से मौजूद है। संक्षेप में, हमें तैयार रहना चाहिए। तैयार रहकर, हम हर तरह की जटिल परिस्थिति से अच्छी तरह निपट सकेंगे।

नोट

[1] ८ अगस्त १९४५ को सोवियत संघ की सरकार ने जापान के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। १० अगस्त को, मंगोलिया सरकार ने जापान के खिलाफ युद्ध का ऐलान कर दिया। सोवियत लाल सेना ने स्थल मार्ग से और समुद्री मार्ग से उत्तर-पूर्वी चीन में और कोरिया में प्रवेश किया तथा जापानियों की क्वानतुङ सेना को तेजी के साथ परास्त कर दिया। सोवियत संघ और मंगोलिया की संयुक्त सेनाओं ने भीतरी मंगोलिया के रेगिस्तान को पार किया तथा जेहोल प्रान्त और छाहाड़ प्रान्त में प्रवेश किया। १० अगस्त को जापान सरकार ने मजबूर होकर एक नोट भेजा, जिसमें आत्मसमर्पण की याचना की गई थी। १४ अगस्त को उसने औपचारिक रूप से बिनाशर्त आत्मसमर्पण का ऐलान कर दिया। क्वानतुङ सेना जापानी स्थलसेना की मुख्य शक्ति का बेहतरीन हिस्सा थी और रणनीति की दृष्टि से जापान की प्रधान सुरक्षित सेना थी। इसी फौज पर निर्भर रहकर जापानी साम्राज्यवादी उत्तर-पूर्वी चीन और कोरिया के अपने अनुकूल रणनीतिक मोर्चे से फायदा उठाते हुए लम्बे समय तक युद्ध करने के सपने देखा करते थे। सोवियत संघ के युद्ध में शामिल होने की वजह से जापानी साम्राज्यवाद की यह योजना बिलकुल धूल में मिल गई तथा जापान सरकार को हार माननी पड़ी और आत्मसमर्पण करना पड़ा।

[2] विस्तृत जानकारी के लिए देखिए "क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन और तीसरी जन राजनीतिक परिषद के दूसरे अधिवेशन के बारे में टिप्पणी", ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ ३)।

[3] यहां "पहाड़" से मतलब है सछ्वान प्रान्त का अमेइ पहाड़ तथा ज्यादा व्यापक रूप में इसका मतलब है दक्षिण-पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी चीन के पहाड़ी इलाके। १९३८ में जापानी फौज द्वारा ऊहान पर कब्जा कर लिए जाने के बाद, च्याङ काई-शेक ने और उसकी कमान में मुख्य फौज ने इन्हीं पहाड़ी इलाकों में शरण ली थी और दुश्मन के पृष्ठभाग में जापानी हमलावरों के खिलाफ मुक्त क्षेत्रों की सेना और जनता द्वारा किए गए कठिन संघर्ष को यहीं बैठकर देखा था।

४ जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध से पहले, ज्यादातर क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्र, जिनका नेतृत्व चीनी कम्युनिस्ट पार्टी कर रही थी, पहाड़ी इलाकों में थे। उस समय च्याङ काई-शेक का शासन बड़ी नदियों और समुद्रतट के आसपास के बड़े शहरों में केन्द्रित था। इसीलिए कामरेड माओ त्सेतुङ ने यहां कहा है: "हम पहाड़ पर थे और वह पानी के किनारे था।"

५ जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान अग्रिम मोर्चे उत्तरी, पूर्वी, मध्य और दक्षिणी चीन में थे। दक्षिण-पश्चिमी चीन और उत्तर-पश्चिमी चीन के उन क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों को, जिन पर जापानी हमलावर सेना का कब्जा नहीं हुआ था, लोग आम तौर पर "बड़े पृष्ठभागीय क्षेत्र" के नाम से पुकारा करते थे।

६ २१ जुलाई १९४५ को क्वोमिन्ताङ के पहले युद्ध क्षेत्र के कमाण्डर हू चुङ-नान के अधीन ५९वीं अस्थाई डिवीजन और दूसरी घुड़सवार डिवीजन ने शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के क्वानचुङ उपक्षेत्र की छुनह्वा काउन्टी के येथाए पहाड़ पर अचानक हमला कर दिया। २३ तारीख को, हू चुङ-नान ने अपनी तीसरी सुरक्षित डिवीजन को भी इस हमले में हिस्सा लेने भेजा। २७ जुलाई को हमारी सेना येथाए पहाड़ और उसके पश्चिम में फैले इकतालीस गांवों से खुद ही पीछे हट गई। क्वोमिन्ताङ सेना ने श्युनई, याओश्येन आदि स्थानों पर अपना धावा जारी रखा। ८ अगस्त को हमारी सेना ने अतिक्रमणकारी क्वोमिन्ताङ सेना पर जवाबी हमला किया और येथाए क्षेत्र को फिर वापिस ले लिया।

७ जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान क्वोमिन्ताङ सरकार ने येनान में सम्पर्क कायम करने के लिए एक स्टाफ-अफसर नियुक्त किया था। यहां "हो" से मतलब है हो इङ-छिन। १९ अक्तूबर और ८ दिसम्बर १९४० को च्याङ काई-शेक ने क्वोमिन्ताङ सेना के चीफ आफ जनरल स्टाफ हो इङ-छिन और डिप्टी चीफ आफ जनरल स्टाफ पाए छुङ-शी के नाम से दो तार भेजे, जिनमें उसने आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना पर, जो जापानी हमलावरों के पृष्ठभाग में डटकर लड़ रही थीं, मनमाने लांछन लगाए और पीली नदी के दक्षिण में कार्यवाही करने वाली जापान-विरोधी सशस्त्र जन-सेनाओं को मनमाने ढंग से

यह आज्ञा दी कि वे निश्चित समय से पहले पीली नदी के उत्तर में हट जाएं। इसके तुरन्त बाद क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने नई चौथी सेना की यूनिटों पर, जो आनह्वेइ के दक्षिणी भाग से उत्तर की ओर कूच कर रही थीं, अचानक धावा बोल दिया और इस तरह दक्षिणी आनह्वेइ घटना घटी। उस समय चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने हो इङ-छिङ के बारे में यह कहा था कि वह कम्युनिस्ट-विरोधी मुहिम बड़े पैमाने पर छेड़ने वाले क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों का प्रतिनिधि है, लेकिन वास्तव में संकेत च्याङ काई-शेक की ओर था।

८ "जन राजनीतिक परिषद" एक ऐसी संस्था थी जिसे जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध शुरू होने के बाद क्वोमिन्ताङ सरकार ने राजनीतिक मामलों पर सलाह-मशवरा करने के लिए स्थापित किया था। परिषद के सभी सदस्यों को क्वोमिन्ताङ सरकार ने "छांटा" था; उनमें अधिकांश लोग क्वोमिन्ताङ के सदस्य थे तथा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और अन्य राजनीतिक पार्टियों के सदस्यों की संख्या बहुत कम थी। यही नहीं, क्वोमिन्ताङ सरकार ने विभिन्न जापान-विरोधी राजनीतिक पार्टियों को समान और कानूनी दर्जा नहीं दिया था तथा उन्हें अपनी-अपनी पार्टी के प्रतिनिधि की हैसियत से "जन राजनीतिक परिषद" में भाग नहीं लेने दिया था। क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा घोषित तथाकथित "जन राजनीतिक परिषद के संगठन सम्बन्धी नियमों" में एक नियम ऐसा था जिसमें यह तय किया गया था कि "जो लोग विभिन्न महत्वपूर्ण सांस्कृतिक या आर्थिक संगठनों में तीन साल से ज्यादा समय तक सेवा कर चुके हैं और प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके हैं, या जो लोग देश-सेवा करने के कारण काफी समय से प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके हैं", उन्हें जन राजनीतिक परिषद का सदस्य बनाया जा सकेगा। इसी नियम के अनुसार उस समय क्वोमिन्ताङ ने "जन राजनीतिक परिषद" के कुछ सदस्यों को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी से भी "छांटा" था।

९ देखिए इसी ग्रन्थ में कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के लिए लिखी गई "च्याङ काई-शेक गृहयुद्ध भड़का रहा है" शीर्षक टिप्पणी।

१० दक्षिण-पूर्वी शानशी प्रान्त की छीश्येन काउन्टी के पाएक्वेइ से चिनछङ तक जाने वाली अधूरी रेलवे।

११ छाहाड़ प्रान्त को १९५२ में और जेहोल प्रान्त को १९५५ में तोड़ दिया

गया और इनके इलाकों को हुपे प्रान्त, शानशी प्रान्त और ल्याओनिङ प्रान्त में शामिल कर दिया गया।

१२ जिन इक्कीस काउन्टी-केन्द्रों का हवाला यहां दिया गया है, उनके नाम ये हैं: च्याङशी प्रान्त का रुइचिन, ह्वेइछाङ, श्युनऊ, आनयुआन, शिनफ़ङ, य्वीतू, शिङक्वो, निङतू, क्वाङछाङ, शछङ और लीछ्वान तथा फ़ूच्येन प्रान्त का च्येननिङ, थाएनिङ, निङह्वा, छिङल्यू, क्वेइह्वा, लुङ्येन, छाङतिङ, ल्येनछङ, शाङहाङ और युङतिङ।

१३ पाओआन शेनशी प्रान्त के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एक काउन्टी थी। आजकल यह चतान काउन्टी कहलाती है। जुलाई १९३६ के शुरू से जनवरी १९३७ तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का सदर मुकाम यहीं था। बाद में वह यहां से येनान चली गई।

१४ जिस किलेबन्दी वाले गांव का हवाला यहां दिया गया है, वह पाओआन काउन्टी के दक्षिण-पश्चिम का तानपाचाए गांव है। इस गांव में दो सौ से ज्यादा परिवार रहते थे। इसकी भौगोलिक स्थिति बेहद दुर्गम थी। एक मुकामी निरंकुश जमींदार और स्थानीय हथियारबन्द दल के नेता छाओ च्युन-चाङ के नेतृत्व में सौ से ज्यादा हथियारबन्द प्रतिक्रियावादी लम्बे अरसे से इस गांव पर कब्जा किए हुए थे। लाल सेना ने इसे कई बार घेरा और इस पर प्रहार किया, लेकिन वह इस पर कब्जा करने में नाकामयाब रही। अगस्त १९३६ में, लाल सेना ने तानपाचाए को स्थानीय फौजी शक्ति से घेरने के साथ-साथ इस गांव की आम जनता को एकजुट करने और दुश्मन को अन्दर से तितर-बितर करने की कोशिश भी की। उसी साल दिसम्बर में डाकू छाओ अपने मुट्ठीभर आदमियों के साथ गांव छोड़कर भाग गया और तानपाचाए मुक्त हो गया।

१५ १७वीं शताब्दी के लेखक चू पो-लू द्वारा लिखी गई "आदर्श परिवार के नियम" नामक पुस्तक से उद्धृत।

१६ यहां जिस अमरीकी का हवाला दिया गया है, वह अमरीकी सेना द्वारा येनान भेजे गए प्रेक्षक-दल का नेता कर्नल डेविड डी० बेरेट है। इस प्रेक्षक-दल को, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की रजामन्दी से, १९४४ में, जापान के खिलाफ लड़ने वाली अमरीकी फौज ने भेजा था। पैट्रिक जे० हर्ले अमरीकी रिपब्लिकन पार्टी का एक प्रतिक्रियावादी राजनीतिबाज था। सितम्बर १९४४ में वह अमरीकी प्रेसीडेन्ट के निजी प्रतिनिधि की हैसियत से चीन आया था और उसी साल के अन्त में अमरीका सरकार ने उसे चीन स्थित अमरीकी राजदूत नियुक्त कर दिया था। देखिए: "एक मूर्ख बूढ़ा आदमी, जिसने पहाड़ों को हटा दिया", नोट २, ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ ३)।

१७ अमरीका ने ६ अगस्त १९४५ को जापान के हिरोशिमा पर पहला परमाणु-बम गिराया था और ९ अगस्त १९४५ को नागासाकी में दूसरा परमाणु-बम गिराया था। अमरीका और क्वोमिन्ताङ की प्रचार संस्थाओं ने इसके प्रभाव को बढ़ा-चढ़ा कर बताने के लिए जीभर प्रचार किया और कहा कि जापान सरकार ने आत्मसमर्पण इसलिए किया है कि वह अमरीकी परमाणु-बम से डर गई है। ऐसा प्रचार करके, वे जापान को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर करने में सोवियत संघ द्वारा युद्ध में शामिल होकर अदा की गई निर्णयात्मक भूमिका के महत्व को घटाना चाहते थे।

१८ माउन्टबैटन उस समय दक्षिण-पूर्वी एशिया की संश्रयकारी राष्ट्रीय फौजों का सर्वोच्च सेनापति था। ९ अगस्त १९४५ को उसने एक बयान दिया, जिसमें उसने जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में सोवियत संघ के शामिल होने का स्वागत किया। उसने यह भी कहा: "सबसे भारी भूल यह सोचना है कि परमाणु-बम दूरपूर्व के युद्ध का अन्त कर सकता है।"

च्याङ काई-शेक गृहयुद्ध भड़का रहा है

१३ अगस्त १९४५

येनान के जनरल हेडक्वार्टर से अठारहवीं ग्रुप-सेना के कमाण्डर-इन-चीफ चू तेह ने शत्रु और कठपुतलियों के हथियार डालने की मियाद तय करते हुए १० अगस्त को जो आदेश[1] जारी किया था, उसे "एक धृष्टतापूर्ण और अवैध कार्यवाही" करार देते हुए क्वो-मिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के प्रचार विभाग के एक प्रवक्ता ने एक बयान जारी किया है। उसकी यह टिप्पणी बिलकुल ही असंगत है। इसकी राय के अनुसार इसका तर्कसंगत मतलब यह होता है कि पोट्सडम घोषणा[2] तथा शत्रु और कठपुतलियों द्वारा हथियार डालने के ऐलानिया इरादे के मुताबिक उनसे हथियार डलवाने का काम पूरा करने का आदेश अपनी सेनाओं को देकर कमाण्डर-इन-चीफ चू तेह ने गलती की और यह कि इसके विपरीत सही और वैध काम यह होता कि वे शत्रु और कठपुतलियों को हथियार डालने से इनकार कर देने की सलाह देते। ऐसे में यह कोई अचम्भे की बात नहीं कि शत्रु द्वारा असली तौर पर हथियार डालने के पहले ही चीनी फासिस्टों के सरगना, तानाशाह और देशद्रोही च्याङ

---

*यह टिप्पणी कामरेड माओ त्सेतुङ ने शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के लिए लिखी थी।

काई-शेक ने यह जुर्रत की कि उसने मुक्त क्षेत्रों की जापान-विरोधी सेनाओं को "अगला आदेश मिलने तक जहां भी हों वहीं बनी रहने" का "आदेश" दिया, जिसका मतलब था खुद ही अपने हाथ बांध लेना और अपने ऊपर शत्रु को हमले करने देना। ऐसे में यह कोई अचम्भे की बात नहीं कि फासिस्टों के ठीक इसी सरदार ने तथाकथित भूमिगत सेनाओं को (जो असल में "टेढ़ेमेढ़े रास्ते से राष्ट्र को बचाने"[1] वाली कठपुतली सेनाएं तथा जापानियों और कठपुतलियों से सांठगांठ करने वाली ताए ली की खुफिया पुलिस[2] ही हैं) और साथ ही अन्य कठपुतली सेनाओं को भी "स्थानीय व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी सम्भालने" का "आदेश" देने की जुर्रत की और इधर मुक्त क्षेत्रों की जापान-विरोधी सेनाओं को शत्रु और कठपुतली सेनाओं के खिलाफ "अपनी मर्जी से कोई धृष्टतापूर्ण कार्यवाही कर बैठने" से मना किया। सच पूछिए तो शत्रु और चीनियों की यह जगह-बदल दरअसल च्याङ काई-शेक द्वारा अपने मुंह से अपने जुर्म का इकबाल करना है; इससे उसकी मनोवृत्ति का पूरा चित्र उभरकर सामने आ जाता है और यह चित्र है शत्रु और कठपुतलियों के साथ सदैव सांठगांठ करना और पराए तत्वों का बहिष्कार करना। लेकिन उसके इस नीचतापूर्ण कपट-जाल में चीन के मुक्त क्षेत्रों की जनता की जापान-विरोधी सेनाएं हरगिज नहीं फंसेंगी। उन्हें इस बात का पता है कि कमाण्डर-इन-चीफ चू तेह के आदेश में पोट्सडम घोषणा के अनुच्छेद २ की इस धारा का दृढ़ संकल्प के साथ पालन किया गया है कि "जापान-विरोधी युद्ध तब तक चलाते रहो जब तक कि जापान अपना प्रतिरोध समाप्त न कर दे"। और उधर च्याङ काई-शेक के तथाकथित "आदेश" ने ठीक उस पोट्सडम घोषणा

का उल्लंघन किया है जिस पर च्याङ काई-शेक ने खुद हस्ताक्षर किए थे। तुलना करते ही साफ दिखाई दे जाता है कि "संश्रयकारी देशों के आम समझौतों की धाराओं का वफादारी से पालन" कौन नहीं कर रहा।

क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के प्रचार विभाग के प्रवक्ता की टिप्पणी और च्याङ काई-शेक के "आदेश" दोनों ही आदि से अन्त तक गृहयुद्ध के लिए उकसावे ही हैं; इस समय जबकि देश-विदेश में सभी का ध्यान जापान के बिनाशर्त आत्मसमर्पण करने पर केन्द्रित है, उक्त टिप्पणी और उक्त "आदेशों" का मकसद प्रतिरोध-युद्ध के समाप्त होते ही गृहयुद्ध छेड़ देने का बहाना ढूंढ़ना ही है। सच तो यह है कि क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी इतने मूर्ख हैं कि उन पर तरस आता है। बहाना उन्होंने चुना भी तो शत्रु और कठपुतली सेनाओं से हथियार डलवाकर उन्हें निहत्था कर देने के कमाण्डर-इन-चीफ चू तेह के आदेश को। क्या इसे चतुराईभरा बहाना माना जा सकता है? नहीं। उनका यों बहाना ढूंढ़ना बस यही साबित करता है कि क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों को शत्रु और कठपुतलियां अपने देशबन्धुओं से भी ज्यादा प्रिय हैं, और उन्हें अपने देशबन्धुओं से शत्रु और कठपुतलियों से भी ज्यादा घृणा है। छुनह्वा घटना[3] स्पष्टतः शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र पर हू चुङ-नान की सेनाओं द्वारा गृहयुद्ध भड़काने के लिए की गई चढ़ाई थी, मगर क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने इसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का "अफवाह अभि-यान" बताया। क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी एक लम्बे अरसे से जिस बहाने की तलाश में थे वह उन्हें छुनह्वा घटना के रूप में मिल गया, मगर चीनी और विदेशी लोकमत ने असलियत को फौरन भांप

लिया। इसलिए अब वे यह कह रहे हैं कि शत्रु और कठपुतली सेनाओं से हथियार सौंपने की मांग आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना को नहीं करनी चाहिए। प्रतिरोध-युद्ध के आठ वर्षों में आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना च्याङ काई-शेक और जापानियों की चढ़ाइयों और घेरेबन्दियों के कारण काफी मुसीबतें झेल चुकी हैं। और अब, जबकि प्रतिरोध-युद्ध समाप्त होने ही वाला है, च्याङ काई-शेक जापानियों को (और अपनी चहेती कठपुतली सेनाओं को) यह इशारा दे रहा है कि वे अपने हथियार आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना को न सौंपें बल्कि सिर्फ "मुझे ही, मुझ च्याङ काई-शेक को ही" सौंपें। लेकिन एक बात च्याङ काई-शेक ने अनकही छोड़ दी, "... ताकि इन हथियारों के जरिए मैं कम्युनिस्टों की हत्या कर दूं और चीन और दुनिया की शान्ति का बेड़ा गर्क कर डालूं"। क्या सच्चाई ठीक यही नहीं है? जापानियों को अपने हथियार च्याङ काई-शेक के हवाले करने को कहने और कठपुतली सेनाओं को "स्थानीय व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी सम्भालने" को कहने का नतीजा क्या होगा? नतीजा बस यही हो सकता है कि "चीन-जापान सहयोग" की और जापानियों व कठपुतलियों के आपसी सहयोग की जगह नानकिङ शासन और छुङकिङ शासन का आपसी विलय[१] और च्याङ काई-शेक व कठपुतलियों का आपसी सहयोग ले लेगा तथा जापानियों और वाङ चिङ-वेइ के "कम्युनिस्ट-विरोध और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण" की जगह च्याङ काई-शेक का "कम्युनिस्ट-विरोध और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण" ले लेगा। यह क्या पोट्सडम घोषणा का उल्लंघन नहीं है? इसमें क्या किसी शक की गुंजाइश है कि प्रतिरोध-युद्ध की समाप्ति के क्षण से ही समूचे देश की जनता

के सामने गृहयुद्ध का गम्भीर खतरा आ खड़ा होगा? अब हम अपने तमाम देशबन्धुओं और संश्रयकारी देशों से अपील करते हैं कि वे चीन के गृहयुद्ध को, जो विश्वशान्ति को भी खतरे में डाल देगा, दृढ़ता से रोकथाम करने के लिए मुक्त क्षेत्रों की जनता के कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्यवाही करें।

जापानियों और कठपुतलियों के आत्मसमर्पण को स्वीकार करने का अधिकार आखिर है किसका? चीन के मुक्त क्षेत्रों की जापान-विरोधी सेनाओं ने, जिन्हें क्वोमिन्ताङ सरकार ने रसद और मान्यता कुछ भी देने से इनकार कर दिया था, खुद अपनी ही कोशिशों और जनता के समर्थन के भरोसे विशाल भूभाग को और १० करोड़ से अधिक जनता को मुक्त कराने में अकेले ही सफलता हासिल की है और चीन पर आक्रमण करने वाली शत्रु-सेनाओं के ५६ फीसदी भाग और कठपुतली सेनाओं के ६५ फीसदी भाग का प्रतिरोध किया है तथा उन्हें शिकस्त दी है। अगर ये सेनाएं न होतीं तो चीन की जो स्थिति आज है, वह हरगिज न होती! स्पष्ट शब्दों में कहें, तो चीन में सिर्फ मुक्त क्षेत्रों की जापान-विरोधी सेनाओं को ही शत्रु और कठपुतली सेनाओं के आत्मसमर्पण को स्वीकार करने का अधिकार है। जहां तक च्याङ काई-शेक का ताल्लुक है, उसकी नीति हाथ बांधे टुकुर-टुकुर ताकते रहने और बैठे-बैठे जीत की बाट जोहते रहने की ही रही है; सचमुच, शत्रु और कठपुतलियों के आत्मसमर्पण को स्वीकार करने का हक उसे जरा भी नहीं है।

अपने तमाम देशबन्धुओं के सामने और समूची दुनिया की जनता के सामने हम ऐलान करते हैं: छुङकिङ की सर्वोच्च कमान चीनी जनता का और उन चीनी सेनाओं का, जो सचमुच जापान से लड़ी

हैं, प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती ; चीनी जनता मांग करती है कि कमाण्डर-इन-चीफ चू तेह की कमान में मौजूद मुक्त क्षेत्रों की जापान-विरोधी सेनाओं को चार संश्रयकारी देशों द्वारा जापान का आत्म-समर्पण स्वीकार करने और जापान पर सैनिक नियंत्रण लागू करने के काम में भाग लेने के लिए तथा साथ ही भावी शान्ति-सम्मेलन में भाग लेने के लिए अपने प्रतिनिधि सीधे भेजने का अधिकार प्राप्त हो। अगर ऐसा नहीं किया गया, तो चीनी जनता इसे एक बिलकुल बेजा बात समझेगी।

नोट

[1] १० अगस्त १९४५ को येनान के जनरल हेडक्वार्टर के कमाण्डर-इन-चीफ चू तेह ने जापानी हमलावरों के आत्मसमर्पण के बारे में मुक्त क्षेत्रों की तमाम सशस्त्र सेनाओं के नाम एक आदेश जारी किया। आदेश का पूरा मजमून इस प्रकार था :

जापान ने बिनाशर्त आत्मसमर्पण का ऐलान किया है और संश्रयकारी देश पोट्सडम घोषणा के आधार पर उसके इस आत्मसमर्पण को स्वीकार करने के तरीके पर विचार-विमर्श करेंगे। इसलिए मैं मुक्त क्षेत्रों की तमाम सशस्त्र सेनाओं के नाम यह आदेश जारी करता हूं :

(१) पोट्सडम घोषणा की धाराओं के अनुसार मुक्त क्षेत्रों की कोई भी जापान-विरोधी सशस्त्र सेना पास-पड़ोस के नगरों, कस्बों और मुख्य संचार-पंक्तियों पर स्थित शत्रु-सेनाओं और उनके हेडक्वार्टरों के नाम नोटिस जारी करके उनसे साधिकार मांग कर सकती है कि वे निर्धारित समय के भीतर अपने तमाम हथियार लड़ाई में शरीक हमारी सेनाओं के हवाले कर दें ; जब वे अपने हथियार सौंप चुकेंगे तो हमारी सेनाएं युद्धबन्दियों के साथ नरमी का बरताव करने के अपने नियम के अनुसार उनकी जान की हिफाजत करेंगी।

(२) मुक्त क्षेत्रों की कोई भी जापान-विरोधी सशस्त्र सेना पास-पड़ोस की तमाम कठपुतली सेनाओं और कठपुतली सरकार की संस्थाओं के नाम नोटिस जारी करके उनसे साधिकार मांग कर सकती है कि जापानी हमलावरों द्वारा हथियार डालने के लिए दस्तखत करने से पहले ही वे अपनी फौज के साथ हमारी ओर आ मिलें और पुनर्गठन व विघटन की प्रतीक्षा करें ; निर्धारित समय के अन्दर इस हुक्म की तामील न करने वालों को अपने तमाम हथियार हमारे हवाले कर देने होंगे।

(३) मुक्त क्षेत्रों की तमाम जापान-विरोधी सशस्त्र सेनाओं को चाहिए कि वे हथियार डालने और हथियार सौंपने से इनकार करने वाली तमाम शत्रु और कठपुतली सेनाओं का दृढ़ता से सफाया कर डालें।

(४) हमारी सशस्त्र सेनाओं को इस बात का पूरा अधिकार है कि वे शत्रु और कठपुतलियों के कब्जे में मौजूद किसी भी नगर, कस्बे या मुख्य संचार-पंक्ति को अपने वश में कर लेने और उस पर अधिकार करने के लिए अपनी यूनिटें भेज सकती हैं तथा सैनिक नियंत्रण लागू कर सकती हैं, व्यवस्था बनाए रख सकती हैं और वहां के सारे प्रशासनिक मामलों का कार्यभार सम्भाल लेने के लिए कमिश्नर नियुक्त कर सकती हैं ; किसी तरह की कोई भी तोड़फोड़ या प्रतिरोध होने पर ऐसा करने वाले अपराधियों को गद्दार के रूप में दंडित किया जाएगा।

इसके बाद ११ अगस्त को येनान के जनरल हेडक्वार्डर ने एक के बाद एक छै अन्य आदेश जारी किए, जिनके अनुसार शानशी-स्वेय्वान मुक्त क्षेत्र की सशस्त्र सेना (कामरेड हो लुङ के नेतृत्व में), शानशी-छाहाड़-हपे मुक्त क्षेत्र की सशस्त्र सेना (कामरेड न्ये रुङ-चन के नेतृत्व में), और हपे-जेहोल-ल्याओनिङ मुक्त क्षेत्र की सशस्त्र सेना को भीतरी मंगोलिया और उत्तर-पूर्वी चीन की ओर कूच करना था ; शानशी मुक्त क्षेत्र की सशस्त्र सेना को तायुङ-फूचओ रेलवे के साथ वाले इलाकों से और फ़नहो नदी की घाटी से जापानी और कठपुतली सेनाओं का सफाया कर डालना था ; और सभी मुक्त क्षेत्रों की सशस्त्र सेनाओं को शत्रु के अधीन रह गई तमाम मुख्य संचार-पंक्तियों पर प्रबल आक्रमण करके जापानी और कठपुतली सेनाओं को हथियार डालने पर मजबूर करना था। सभी मुक्त क्षेत्रों में जन-

मुक्ति सेना ने दृढ़ता के साथ इन आदेशों का पालन किया और भारी जीतें हासिल कीं।

[२] यहां उस घोषणा का उल्लेख किया गया है जो २६ जुलाई १९४५ को चीन, बरतानिया और अमरीका ने पोट्सडम सम्मेलन में की थी और जिसमें जापान से हथियार डाल देने की साधिकार मांग की गई थी। घोषणा के प्रमुख मुद्दे इस प्रकार थे : जापानी सैन्यवाद को सदा के लिए समाप्त कर दिया जाए ; जापान की सैन्य-शक्तियों को पूरी तरह निःशस्त्र कर दिया जाए ; जापानी युद्ध-उद्योगों को विघटित कर दिया जाए ; जापानी युद्ध-अपराधियों के खिलाफ अदालती कार्यवाही की जाए ; काहिरा घोषणा को लागू किया जाए यानी जापान ने जिन प्रदेशों को छीनकर हथिया लिया था, जैसे कोरिया तथा चीन के मंचूरिया, थाइवान और फङहू द्वीप-समूह, उन्हें वह छोड़ दे, और जापान का भू-प्रदेश होनशू, हक्काइदो, क्यूशू और शिकोकू द्वीपों और दूसरे छोटे-छोटे द्वीपों तक ही सीमित रखा जाए ; और एक जनवादी जापानी सरकार के कायम हो जाने तक संश्रयकारी देशों की सशस्त्र सेनाएं जापान पर अपना कब्जा बनाए रखें। ८ अगस्त को जापान के खिलाफ युद्ध की घोषणा करने के बाद, सोवियत संघ ने भी पोट्सडम घोषणा पर हस्ताक्षर कर दिए।

[३] यहां जापान के आगे घुटने टेकने और कम्युनिस्टों से लड़ने की उस नीचतापूर्ण चाल का जिक्र किया गया है जो जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों द्वारा चली गई थी। क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने अपनी सेनाओं के कुछ हिस्सों और अपने कुछ सरकारी अफसरों को यह निर्देश दिया कि वे जापानी हमलावरों के आगे घुटने टेक दें और कठपुतली सेनाओं व सरकारी अफसरों के रूप में जापानी सेनाओं के साथ मिलकर मुक्त क्षेत्रों पर आक्रमण कर दें ; इसी चाल को उन्होंने "टेढ़ेमेढ़े रास्ते से राष्ट्र को बचाने" का मक्कारीभरा नाम दे रखा था।

[४] ताए ली क्वोमिन्ताङ की फौजी परिषद के जांच-पड़ताल व आंकड़ा ब्यूरो का मुखिया था, जो क्वोमिन्ताङ के विशाल खुफिया विभागों में से एक था।

[५] इस घटना का तात्पर्य जुलाई १९४५ में शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के क्वानचुङ उपक्षेत्र में छुनह्वा, श्युनई और याओश्येन आदि स्थानों पर क्वोमिन्ताङ सेनाओं द्वारा किए गए हमले से है। देखिए इसी ग्रन्थ में "जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की विजय के बाद की परिस्थिति और हमारी नीति" शीर्षक रचना का नोट ६।

[६] उस समय वाङ चिङ-वेइ गुट का कठपुतली शासन नानकिङ से और च्याङ काई-शेक का शासन छुङकिङ से चलता था। "नानकिङ शासन और छुङकिङ शासन का आपसी विलय" एक राजनीतिक षड्यंत्र था, जिसे जापानी साम्राज्यवाद ने और क्वोमिन्ताङ के भीतर मौजूद जापान-परस्त तत्वों ने मिलकर रचा था।

अठारहवीं ग्रुप-सेना के कमाण्डर-इन-चीफ की तरफ से च्याङ काई-शेक के नाम दो तार*

अगस्त १९४५

१. १३ अगस्त का तार

छुङकिङ रेडियो से हमें केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी के दो संवाद मिले हैं, एक में वह आदेश है जिसे आपने हमारे पास भेजा है और दूसरे में वह आदेश है जो विविध युद्ध-क्षेत्रों के अफसरों और सैनिकों के नाम है। हमें आपका आदेश है कि "अठारहवीं ग्रुप-सेना की तमाम फौजी टुकड़ियां, वे अगला आदेश मिलने तक जहां भी हों वहीं बनी रहें"। इसके अलावा उसमें शत्रु के हथियार डलवाने की मनाही करने जैसी बातें भी कही गई हैं। विविध युद्ध-क्षेत्रों के अफसरों

---

*ये दो तार कामरेड माओ त्सेतुङ ने अठारहवीं ग्रुप-सेना के कमाण्डर-इन-चीफ के लिए लिखे थे। उस समय जबकि जापानी हमलावरों ने अपने हथियार डालने का ऐलान तो कर दिया था मगर हथियार अभी अमली तौर पर डाले नहीं थे, अमरीकी साम्राज्यवाद की सशस्त्र सहायता पाकर च्याङ काई-शेक सरकार ने जापान से हथियार डलवाने का अधिकार अकेले खुद ही हड़प लिया और जापान से हथियार डलवाने के बहाने विशाल सेनाओं को मुक्त क्षेत्रों की ओर कूच करने के लिए भेजकर प्रतिक्रान्तिकारी गृहयुद्ध की बड़ी सरगरमी से

और सैनिकों के नाम आपके आदेश का ब्यौरा केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी की छुङकिङ से भेजी गई ११ अगस्त की खबर में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है : "आज सर्वोच्च कमान ने विविध युद्ध-क्षेत्रों के अफसरों और सैनिकों के नाम तार भेजकर उन्हें आदेश दिया है कि वे अपने युद्ध-प्रयास में तेजी लाएं और पहले से मौजूद फौजी योजनाओं और आदेशों के अनुसार सरगरमी के साथ आगे बढ़ने में जरा भी ढिलाई न आने दें।" हमारा मत है कि ये दोनों आदेश आपस में अन्तरविरोधपूर्ण हैं। पहले आदेश के अनुसार हमारी फौजी टुकड़ियों को कहा गया है कि वे "अगला आदेश मिलने तक जहां भी हों वहीं बनी रहें" और अब से न तो कोई चढ़ाई करें और न लड़ें। एक ऐसे समय जबकि जापानी हमलावरों ने वास्तव में अभी हथियार नहीं डाले हैं, जबकि हर घंटे और हर मिनट वे चीनी जनता की हत्या कर रहे हैं, चीनी सेना से लड़ रहे हैं और सोवियत, अमरीकी और बरतानवी सेनाओं से भी लड़ रहे हैं, तथा जबकि इसके जवाब में सोवियत, अमरीकी और बरतानवी सेनाएं भी हर घंटे और हर मिनट जापानी हमलावरों से लड़ रही हैं, भला आप हमें

तैयारियां शुरू कर दीं। कामरेड माओ त्सेतुङ के पहले तार का मकसद च्याङ काई-शेक के प्रतिक्रान्तिकारी चेहरे को बेनकाब कर डालना और गृहयुद्ध के उसके कुचक्र से सतर्क रहने के लिए सारे देश की जनता को शिक्षा देना था। दूसरे तार में गृहयुद्ध की तैयारी के च्याङ काई-शेक गुट के षड्यंत्र को एक कदम आगे बढ़कर बेनकाब कर दिया गया तथा गृहयुद्ध की रोकथाम करने के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का छःसूत्री प्रस्ताव पेश किया गया। ठीक इसी मकसद से कामरेड माओ त्सेतुङ ने शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के लिए दो टिप्पणियां भी लिखीं ; एक थी : "च्याङ काई-शेक गृहयुद्ध भड़का रहा है" और दूसरी थी :

लड़ने से मना क्यों कर रहे हैं? रहा दूसरा आदेश, जिसे हम एक बहुत अच्छा आदेश मानते हैं। "युद्ध-प्रयास में तेजी लाएं और सरगरमी के साथ आगे बढ़ने में जरा भी ढिलाई न आने दें" – यह हुआ, आदेश जैसा आदेश! लेकिन कितने खेद की बात है कि यह आदेश आपने सिर्फ अपनी ही सेनाओं को दिया है, हमें नहीं दिया ; जो चीज हमें दी है, वह इससे सर्वथा भिन्न है। चू तेह ने चीन के मुक्त क्षेत्रों की तमाम जापान-विरोधी सेनाओं के नाम १० अगस्त को एक आदेश[१] ठीक इसी आशय से जारी किया था कि वे "युद्ध-प्रयास में तेजी लाएं"। उनके उस आदेश में साथ ही यह भी कहा गया था कि वे अपने युद्ध-प्रयास में तेजी लाने के साथ-साथ जापानी हमलावरों को आत्मसमर्पण करने का आदेश भी दें तथा शत्रु और कठपुतली सेनाओं के हथियारों व दूसरे साज-सामान को अपने अधिकार में ले लें। क्या यह एक बहुत अच्छा आदेश नहीं है? बेशक, यह एक बहुत अच्छा आदेश है, बेशक यह चीनी राष्ट्र के हित में है। लेकिन "अगला आदेश मिलने तक जहां भी हों वहीं बनी रहना" निश्चय ही राष्ट्रीय हित में नहीं है। हमारा मत है कि आपने गलत आदेश

"च्याङ काई-शेक के प्रवक्ता के एक वक्तव्य के बारे में" ; ये दोनों रचनाएं इसी ग्रन्थ में हैं। च्याङ काई-शेक की प्रतिक्रियावादी हेकड़ी से न डरकर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा सुदृढ़ और संकल्पबद्ध दृष्टिबिन्दु अपनाए जाने के परिणाम-स्वरूप मुक्त क्षेत्रों और मुक्ति सेना दोनों का विस्तार बड़ी तेजी से हुआ ; और देश-विदेश में चीन के गृहयुद्ध का विरोध करने वाले प्रबल राजनीतिक दबाव के कारण च्याङ काई-शेक को अपनी कार्यनीति बदलनी पड़ी, शान्ति का मुखौटा पहनना पड़ा और छुङकिङ में शान्ति-वार्ता के लिए कामरेड माओ त्सेतुङ को निमंत्रण देना पड़ा।

दिया है, इतना गलत कि हमें आपको यह सूचित करना पड़ रहा है कि हम इसे मजबूती से ठुकरा रहे हैं। कारण, हमारे नाम आपका यह आदेश न सिर्फ एक अन्यायपूर्ण आदेश है, बल्कि चीनी राष्ट्र के हितों के विपरीत भी है, और इससे सिर्फ जापानी हमलावरों तथा हमारी मातृभूमि के साथ गद्दारी करने वालों का ही भला होगा।

२. १६ अगस्त का तार

एक ऐसे समय जबकि हमारी मुश्तरका दुश्मन जापान सरकार ने पोट्सडम घोषणा की शर्तें मानकर अपने हथियार डालने का ऐलान तो कर दिया है मगर उसने अपने हथियार वास्तव में अभी डाले नहीं हैं, मैं चीन के मुक्त क्षेत्रों और जापान-अधिकृत क्षेत्रों की तमाम जापान-विरोधी सैन्य-शक्तियों और २६ करोड़ जनता की ओर से निम्नलिखित वक्तव्य और मांगें विशेष रूप से आपके सामने पेश कर रहा हूं।

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के विजयपूर्वक लगभग समाप्त होने के मौके पर मैं चीन की वर्तमान रणभूमि के इस तथ्य की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि जिन विशाल भूखण्डों को आपने छोड़ दिया था और जिन पर शत्रु और कठपुतलियों ने अपना अधिकार जमा लिया था, उनमें से लगभग १०,००,००० वर्ग-किलोमीटर भू-प्रदेश पर, आपकी इच्छा के विपरीत, हमने आठ वर्ष की घमासान लड़ाई की बदौलत फिर से अधिकार कर लिया है; १०,००,००,००० से अधिक जनता को मुक्त करा लिया है; १०,००,००० से अधिक नियमित सेना और २२,००,००० से

अधिक मिलिशिया को संगठित कर लिया है; ल्याओनिङ, जेहोल, छाहाड़, स्वेय्वान, हपे, शानशी, शेनशी, कानसू, निङश्या, हनान, शानतुङ, च्याङसू, आनह्वेइ, हुपे, हुनान, च्याङशी, चच्याङ, फूच्येन और क्वाङतुङ इन उन्नीस प्रान्तों में उन्नीस बड़े मुक्त क्षेत्र[१] स्थापित कर लिए हैं; और ७ जुलाई १९३७ की घटना के बाद शत्रु और कठपुतलियों ने जितने भी नगरों, कस्बों, मुख्य संचार-पंक्तियों और समुद्रतटों के हिस्सों पर कब्जा कर लिया था उनमें से सिर्फ कुछ ही क्षेत्रों को छोड़कर लगभग सभी को हमने घेर लिया है। इसके अलावा चीन के (१६ करोड़ आबादी वाले) जापान-अधिकृत क्षेत्रों में हमने शत्रु और कठपुतली सेनाओं पर चोट करने के लिए व्यापक भूमिगत सेनाएं संगठित की हैं। लड़ाई में हम आज भी (उत्तर-पूर्व को छोड़कर) चीन पर चढ़ाई करने वाली जापानी सेनाओं के ६९ फीसदी भाग का और कठपुतली सेनाओं के ९५ फीसदी भाग का मुकाबला कर रहे हैं और उन्हें घेरे हुए हैं। इसके विपरीत आपकी सरकार और सेनाओं ने सदैव हाथ बांधे टुकुर-टुकुर ताकते रहने, बैठे-बैठे जीत की बाट जोहने, अपनी शक्तियों को सुरक्षित रखने और गृहयुद्ध की तैयारी करने की नीति को ही अपनाया है और हमारे मुक्त क्षेत्रों और सेनाओं को न सिर्फ मान्यता देने और रसद-सप्लाई करने से इनकार किया है, बल्कि इससे भी आगे बढ़कर ९,४०,००० की विशाल सैन्य-शक्ति लेकर हम पर घेरा डाला है और चढ़ाई की है। चीन के मुक्त क्षेत्रों के सभी सैनिक और असैनिक लोग उधर शत्रु और कठपुतली सेनाओं के और इधर आपकी सेनाओं के हमले झेलकर काफी मुसीबतें उठा चुके हैं, मगर फिर भी हमने प्रतिरोध-युद्ध, एकता और जनवाद पर अविचल रहने के अपने संकल्प

में कभी रत्तीभर भी कमजोरी नहीं आने दी। चीन के मुक्त क्षेत्रों की जनता और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने आपके और आपकी सरकार के आगे अनेक बार यह प्रस्ताव रखा है कि देश के अन्दरूनी झगड़े समाप्त करने, सारे देश की जनता की जापान-विरोधी शक्तियों को गोलबन्द और एकीकृत करने, प्रतिरोध-युद्ध का नेतृत्व करके उसे जीत की मंजिल तक पहुंचाने और युद्ध के बाद शान्ति की गारन्टी करने के लिए विभिन्न पार्टियों का सम्मेलन बुलाया जाए और एक ऐसी जनवादी मिलीजुली सरकार जिसे राष्ट्रव्यापी समर्थन प्राप्त हो कायम कर ली जाए, लेकिन आपने और आपकी सरकार ने हर बार हमारे प्रस्ताव को मानने से इनकार कर दिया। इन सारी बातों से हमें बेहद असन्तोष है।

शत्रु-देश अब जल्दी ही अपने हथियार डालने के शर्तनामे पर दस्तखत करने वाला है, मगर आप और आपकी सरकार अब भी हमारी राय की उपेक्षा ही किए जा रहे हैं तथा आप और आपकी सरकार ने ११ अगस्त को मेरे नाम एक निहायत अन्यायपूर्ण आदेश जारी किया है और साथ ही अपनी सेनाओं को शत्रु से हथियार डलवाने के बहाने बड़े पैमाने पर मुक्त क्षेत्रों पर दबाव डालने का आदेश दिया है ; इसलिए गृहयुद्ध का खतरा आज पहले से कहीं ज्यादा गम्भीर हो उठा है। इन सारी बातों से मजबूर होकर हमें आपसे और आपकी सरकार से ये मांगें करनी पड़ रही हैं :

१. मैं मांग करता हूं कि जापानियों और कठपुतली सैनिकों का आत्मसमर्पण स्वीकार करने और आत्मसमर्पण के बाद कोई समझौता या सन्धि करने से पहले आप और आपकी सरकार तथा आपकी सर्वोच्च कमान हमसे सलाह कर लें ताकि हम दोनों पक्ष एकमत

हो सकें। कारण, आपने और आपकी सरकार ने जनता के असन्तोष को जागृत कर दिया है और आप और आपकी सरकार चीन के मुक्त क्षेत्रों और जापान-अधिकृत क्षेत्रों की व्यापक जनता और तमाम जापान-विरोधी जन सैन्य-शक्तियों का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते। पहले से हमारी सहमति प्राप्त किए बिना चीन के मुक्त क्षेत्रों और जापान-अधिकृत क्षेत्रों की तमाम जापान-विरोधी जन सैन्य-शक्तियों से सम्बन्ध रखने वाली कोई भी बात अगर उन समझौतों या सन्धियों में रखी गई, तो हम बोलने के अपने अधिकार को सुरक्षित रखेंगे।

२. चीन के मुक्त क्षेत्रों और जापान-अधिकृत क्षेत्रों की तमाम जापान-विरोधी जन सैन्य-शक्तियों को यह अधिकार है कि वे पोट्सडम घोषणा के अनुसार और शत्रु का आत्मसमर्पण स्वीकार करने के सवाल पर संश्रयकारी देशों द्वारा निर्धारित तरीकों[३] के अनुसार, अपने द्वारा घेरी गई जापानी सेनाओं और कठपुतली सेनाओं का आत्मसमर्पण स्वीकार कर लें, उनसे हथियार और फौजी साज-सामान ले लें और जापान का आत्मसमर्पण स्वीकृत हो जाने पर संश्रयकारी देशों द्वारा निर्धारित सभी नियमों को लागू करने की जिम्मेदारी सम्भाल लें। १० अगस्त को मैंने चीन के मुक्त क्षेत्रों की सशस्त्र सेनाओं को यह आदेश दिया कि वे शत्रु-सेनाओं पर चढ़ाई करने का भरसक प्रयास करें और शत्रु का आत्मसमर्पण स्वीकार करने की तैयारी करें। १५ अगस्त को मैंने शत्रु के कमाण्डर-इन-चीफ यासूजी ओकामूरा को यह आदेश दिया कि वह अपनी फौज समेत आत्मसमर्पण कर दे ;[४] लेकिन यह आदेश सिर्फ मुक्त क्षेत्रों की सशस्त्र सेनाओं की कार्यवाही के दायरे के भीतर ही लागू होता है, उनसे बाहर के किसी क्षेत्र पर नहीं। अपने इन आदेशों को मैं

बहुत ही न्यायसंगत समझता हूं और यह मानता हूं कि ये आदेश चीन और संश्रयकारी देशों के समान हितों के बिलकुल अनुकूल हैं।

३. चीन के मुक्त क्षेत्रों और जापान-अधिकृत क्षेत्रों की व्यापक जनता को और तमाम जापान-विरोधी सैन्य-शक्तियों को यह हक हासिल है कि वे शत्रु के आत्मसमर्पण को संश्रयकारी देशों के साथ स्वीकार करने और आत्मसमर्पण के बाद के कार्य से निपटने में संश्रयकारी देशों के साथ काम करने के लिए अपने प्रतिनिधि भेजें।

४. चीन के मुक्त क्षेत्रों और तमाम जापान-विरोधी सैन्य-शक्तियों को यह हक हासिल है कि जापान सम्बन्धी भावी शान्ति-सम्मेलन में और संयुक्त राष्ट्र संघ की सभी बैठकों में भाग लेने के लिए वे अपने प्रतिनिधिमण्डल आप चुनें।

५. आपसे मेरी मांग यह है कि आप गृहयुद्ध की रोकथाम करें। गृहयुद्ध की रोकथाम करने का उपाय यह है कि जिन शत्रु-सेनाओं और कठपुतली सेनाओं को मुक्त क्षेत्रों की सशस्त्र सेनाओं ने घेर रखा है, उनका आत्मसमर्पण मुक्त क्षेत्रों की सशस्त्र सेनाएं ही स्वीकार करें और आपकी सेनाएं सिर्फ उन्हीं शत्रु-सेनाओं और कठपुतली सेनाओं का आत्मसमर्पण स्वीकार करें जिन्हें आपकी सेनाओं ने खुद घेर रखा है। यह सभी युद्धों का सर्वमान्य दस्तूर है, और सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि गृहयुद्ध की रोकथाम करने के लिए ऐसा करना खास तौर से अनिवार्य है। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे, तो नतीजा खराब होगा। इस मामले में आपको मैं एक गम्भीर चेतावनी दे रहा हूं और आपसे मांग करता हूं कि इस चेतावनी की उपेक्षा न करें।

६. मैं आपसे मांग करता हूं कि आप बिना किसी विलम्ब के अपनी एकदलीय तानाशाही को समाप्त कर दें, जनवादी मिलीजुली

सरकार स्थापित करने के लिए सभी पार्टियों का सम्मेलन बुलाएं, भ्रष्ट अफसरों और तमाम प्रतिक्रियावादियों को उनके पदों से बर्खास्त कर दें, चीनी गद्दारों को दण्ड दें, खुफिया विभागों को भंग कर दें, विविध पार्टियों की कानूनी हैसियत को मान्यता दें (आपने और आपकी सरकार ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और तमाम जनवादी पार्टियों को आज तक गैरकानूनी ही माना है), जनता की आजादियों का दमन करने वाले तमाम प्रतिक्रियावादी कानूनों और फरमानों को रद्द कर दें, चीन के मुक्त क्षेत्रों की जनता की निर्वाचित सरकारों और जापान-विरोधी सेनाओं को मान्यता दें, मुक्त क्षेत्रों की घेरेबन्दी करने वाली सेनाओं को हटा लें, राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दें और आर्थिक व अन्य जनवादी सुधारों को लागू करें।

इसके अलावा, एक तार मैंने आपके नाम १३ अगस्त को भेजा है, जो मेरे नाम आपके ११ अगस्त के आदेश के जवाब में है, और शायद वह तार आपको मिल गया होगा। अब मैं एक बार फिर ऐलान करता हूं कि आपका आदेश बिलकुल गलत था। ११ अगस्त को आपने मेरी सेनाओं को आदेश दिया कि वे "अगला आदेश मिलने तक जहां भी हों वहीं बनी रहें" और शत्रु पर अब कोई हमला न करें। मगर यह बात न सिर्फ ११ अगस्त को सही थी बल्कि आज (१६ अगस्त को) भी सही है कि जापान सरकार ने केवल कथनी में ही हथियार डाले हैं, करनी में नहीं; आत्मसमर्पण के दस्तावेज पर दस्तखत अभी नहीं हुए, वास्तव में हथियार अभी डाले नहीं गए। मेरा यह विचार संश्रयकारी देशों यानी बरतानिया, अमरीका और सोवियत संघ के विचारों से पूरी तरह मेल खाता है। ११ अगस्त को, यानी जिस दिन आपने मेरे नाम वह आदेश जारी किया था, ठीक

उसी दिन, बर्मा के मोर्चे की बरतानवी सेना की कमान ने ऐलान किया : "जापान के खिलाफ युद्ध अब भी जारी है।" अमरीकी सेनाओं के कमाण्डर निमित्ज[1] ने ऐलान किया : "न सिर्फ युद्ध की अवस्था बनी हुई है बल्कि समूचे विनाशकारी युद्ध को लगातार जारी रखना होगा।" सोवियत संघ की लाल सेना की दूरपूर्व कमान ने ऐलान किया : "शत्रु को निर्मम होकर पूरी तरह कुचल डालना होगा।" १५ अगस्त को लाल सेना के चीफ आफ जनरल स्टाफ कर्नल-जनरल आंतोनोव ने यह बयान दिया :

> जापान के हथियार डालने के मामले में जापानी सम्राट ने जो वक्तव्य १४ अगस्त को जारी किया है वह बिनाशर्त आत्म-समर्पण करने के सवाल पर महज एक आम ऐलान है। सशस्त्र सेनाओं को अपनी ओर से शत्रुतापूर्ण कार्यवाही करना बन्द कर देने का आदेश अभी जारी नहीं किया गया और जापानी सेनाएं अब भी प्रतिरोध करती जा रही हैं। इसलिए जापान की सशस्त्र सेनाओं का वास्तविक आत्मसमर्पण अभी नहीं हुआ। जापान की सशस्त्र सेनाओं का आत्मसमर्पण तभी माना जाएगा जब जापानी सम्राट अपनी सशस्त्र सेनाओं को अपनी ओर से शत्रुतापूर्ण कार्यवाही करना बन्द करने और अपने हथियार डाल देने का आदेश दे चुका होगा और जब उसके इस आदेश पर सचमुच अमल किया जा चुका होगा। ऊपर कही गई बात को देखते हुए, सोवियत संघ की दूरपूर्व में तैनात सशस्त्र सेनाएं जापान के खिलाफ अपनी आक्रमणात्मक कार्यवाहियां जारी रखेंगी।

इस प्रकार साफ तौर पर देखा जा सकता है कि संश्रयकारी देशों की सेनाओं के सभी सर्वोच्च कमाण्डरों में से सिर्फ आपने ही एक बिलकुल गलत आदेश दिया है। मेरा विचार है कि आपकी यह गलती आपकी खुदगर्जी का ही परिणाम है और यह एक अत्यन्त गम्भीर स्वरूप वाली गलती है; मतलब यह कि आपका आदेश शत्रु के हितों की सेवा करता है। इसलिए, चीन और संश्रयकारी देशों के समान हितों के दृष्टिबिन्दु पर कायम रहकर मैं तब तक आपके आदेश का दृढ़ता से और पूर्ण रूप से विरोध करता रहूंगा जब तक आप अपनी गलती को खुलेआम कबूल नहीं कर लेंगे और इस गलत आदेश को खुलेआम वापिस नहीं ले लेंगे। फिलहाल मैं अपनी कमान के अधीन सेनाओं को यही आदेश दे रहा हूं कि वे सोवियत संघ, अमरीका और बरतानिया की सशस्त्र सेनाओं के साथ तालमेल कायम करके शत्रु पर तब तक जोरदार हमले करते रहें जब तक कि शत्रु अपनी ओर से सचमुच शत्रुतापूर्ण कार्यवाही करना बन्द न कर दे और अपने हथियार न सौंप दे, तथा जब तक मातृभूमि की समूची प्रादेशिक भूमि पूरी तरह पुनः प्राप्त न की जाए। आपके सामने मैं ऐलान करता हूं : मैं एक देशभक्त सिपाही हूं, मैं अपनी कार्यवाही में कोई और रास्ता नहीं अपना सकता।

मेरा अनुरोध है कि ऊपर कही गई बातों के बारे में आप अपना उत्तर जल्दी से जल्दी भेज दें।

नोट

[1] देखिए इसी ग्रन्थ में "च्याङ काई-शेक गृहयुद्ध भड़का रहा है" शीर्षक रचना का नोट १।

[2] उन्नीस मुक्त क्षेत्र ये थे : शेनशी-कानसू-निङश्या, शानशी-स्वेय्वान, शानशी-छाहाड़-हुपे, हुपे-जेहोल-ल्याओनिङ, शानशी-हुपे-हनान, हुपे-शानतुङ-हनान, शानतुङ, उत्तरी च्याङसू, मध्य च्याङसू, दक्षिणी च्याङसू, ह्वाए नदी का उत्तरी इलाका, ह्वाए नदी का दक्षिणी इलाका, मध्य आनह्वेइ, चच्याङ, क्वाङतुङ, हाएनान द्वीप, हूनान-हूपे-च्याङशी, हूपे-हनान-आनह्वेइ, और हनान।

[3] १० अगस्त १९४५ को जापान सरकार ने आत्मसमर्पण करने के अपने इरादे की सूचना सोवियत संघ, चीन, अमरीका और बरतानिया को दी। ११ अगस्त को चारों देशों की सरकारों ने यह जवाब दिया कि "जापानी स्थलसेना, नौसेना और वायुसेना के तमाम अधिकारियों को और उनके अधीन जो भी सेनाएं जहां कहीं भी हों", उन सबको "अपनी सक्रिय फौजी कार्यवाहियां बन्द कर देनी होंगी और अपने हथियार सौंप देने होंगे"।

[4] उन दिनों यासूजी ओकामूरा चीन पर आक्रमण करने वाली जापानी सेनाओं का कमाण्डर-इन-चीफ था। यासूजी ओकामूरा के नाम कमाण्डर-इन-चीफ चू तेह का आदेश इस प्रकार था :

(१) जापान सरकार ने पोट्सडम घोषणा की शर्तें औपचारिक रूप से मान ली हैं और आत्मसमर्पण का ऐलान कर दिया है।

(२) तुम्हें अपनी कमान के अधीन तमाम सेनाओं को सभी फौजी कार्यवाहियां बन्द करने का आदेश देना होगा ; उनमें से जो सेनाएं क्वोमिन्ताङ सरकार की सेनाओं से घिरी हों उन्हें छोड़कर बाकी तमाम सेनाओं को चाहिए कि वे चीन के मुक्त क्षेत्रों की आठवीं राह सेना, नई चौथी सेना और दक्षिणी चीन की जापान-विरोधी कालम के आदेशानुसार हमारे सामने आत्मसमर्पण कर दें।

(३) उत्तरी चीन की जापानी सेनाओं के आत्मसमर्पण के मामले में तुम्हें जनरल सादाश्री शीमोमूरा को यह आदेश देना होगा कि वह अपना एक प्रतिनिधि आठवीं राह सेना के फ़ूफिङ क्षेत्र में भेजकर जनरल न्ये रुङ-चन से आदेश प्राप्त कर ले ; पूर्वी चीन की जापानी सेनाओं के आत्मसमर्पण के सिलसिले में तुम्हें खुद अपना एक प्रतिनिधि थ्येनछाङ क्षेत्र में नई चौथी सेना के सदर मुकाम में भेजकर जनरल छन ई से आदेश प्राप्त करने होंगे ; हूपे और हनान प्रान्तों की जापानी सेनाओं के आत्मसमर्पण के मामले में तुम्हें अपना ऊहान स्थित प्रतिनिधि नई चौथी सेना की पांचवीं डिवीजन के ताप्ये पहाड़ी क्षेत्र में भेजकर जनरल ली श्येन-न्येन से आदेश प्राप्त करने होंगे ; क्वाङतुङ की जापानी सेना के आत्मसमर्पण के मामले में तुम्हें अपना क्वाङचओ स्थित प्रतिनिधि दक्षिणी चीन की जापान-विरोधी कालम के तुङक्वान क्षेत्र में भेजकर जनरल चङ शङ से आदेश प्राप्त करने होंगे।

(४) उत्तरी, पूर्वी, मध्य और दक्षिणी चीन में जो भी जापानी सेनाएं हैं (क्वोमिन्ताङ सेनाओं से घिरी हुई सेनाओं को छोड़कर), उन तमाम सेनाओं को अपने सारे के सारे हथियारों व फौजी साज-सामान को तब तक सुरक्षित रखना होगा जब तक हमारी सेना उनके आत्मसमर्पण को स्वीकार नहीं कर लेती; साथ ही उन्हें आठवीं राह सेना, नई चौथी सेना और दक्षिणी चीन की जापान-विरोधी कालम को छोड़कर किसी और से आदेश प्राप्त नहीं करना होगा।

(५) उत्तरी चीन और पूर्वी चीन में जितने भी विमान और नौपोत हैं, वे जहां कहीं भी हों वहीं पड़े रहें ; लेकिन पीत सागर और पोहाए सागर के चीनी तट पर लंगर डालकर खड़े तमाम जहाजों को बटोरकर ल्येनयुनकाङ, छिङताओ, वेइहाएवेइ और थ्येनचिन में इकट्ठा कर दिया जाए।

(६) किसी भी फौजी साज-सामान या संस्थान को हरगिज नष्ट न किया जाए।

(७) इस आदेश को अमली रूप देने की पूरी जिम्मेदारी तुम पर और उत्तरी, पूर्वी, मध्य और दक्षिणी चीन में तुम्हारी कमान के अधीन जापानी सेना के कमाण्डरों पर होगी।

[5] चेस्टर डब्ल्यू० निमित्ज उन दिनों अमरीकी प्रशान्त नौबेड़े और प्रशान्त रणक्षेत्र का कमाण्डर-इन-चीफ था।

च्याङ काई-शेक के प्रवक्ता के एक वक्तव्य के बारे में*

१६ अगस्त १९४५

कमाण्डर-इन-चीफ चू तेह् के नाम जनरलिज्मो च्याङ काई-शेक के आदेश का उल्लंघन करने का जो आरोप कम्युनिस्ट पार्टी पर लगाया गया है उसके बारे में अपना मत प्रकट करते हुए च्याङ काई-शेक के एक प्रवक्ता ने १५ अगस्त को तीसरे पहर छुङकिङ के एक संवाददाता-सम्मेलन में कहा कि "जनरलिज्मो के आदेशों का पालन करना अनिवार्य है" और "उनका उल्लंघन करने वाले लोग जनता के शत्रु हैं"। शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के एक संवाददाता का कहना है : यह एक व्यापक गृहयुद्ध छेड़ने के लिए च्याङ काई-शेक का खुला संकेत है। ११ अगस्त को यानी एक ऐसी नाजुक घड़ी में जबकि जापानी हमलावरों का अन्तिम रूप से सफाया किया जा रहा था, च्याङ काई-शेक ने राष्ट्रीय विश्वासघात से भरा आदेश जारी करके, आठवीं राह् सेना, नई चौथी सेना और जनता की तमाम दूसरी सैन्य-शक्तियों को जापानियों और कठपुतली सेनाओं का मुकाबला करने की मनाही कर दी। बेशक, इस आदेश को मानना कतई मुमकिन

---

*यह टिप्पणी कामरेड माओ त्सेतुङ ने शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के लिए लिखी थी।

और मुनासिब नहीं है। उसके तुरन्त बाद, च्याङ काई-शेक ने अपने प्रवक्ता के मुंह से यह ऐलान कराया कि चीनी जनता की सैन्य-शक्तियां "जनता की शत्रु" हैं। इससे जाहिर हो जाता है कि च्याङ काई-शेक ने चीनी जनता के खिलाफ गृहयुद्ध की घोषणा कर दी है। निस्सन्देह, गृहयुद्ध छेड़ने का च्याङ काई-शेक का यह कुचक्र उसके ११ अगस्त के आदेश के साथ ही आरम्भ नहीं हुआ; यह तो प्रतिरोध-युद्ध के आठ वर्ष के दौरान शुरू से अन्त तक उसकी योजना में शामिल रहा है। आठ वर्ष की इस अवधि में च्याङ काई-शेक ने १९४०, १९४१ और १९४३ में बड़े पैमाने के तीन कम्युनिस्ट-विरोधी हमले[१] किए और हर बार यह कोशिश की कि उसका हमला विकसित होकर देशव्यापी गृहयुद्ध का रूप धारण कर ले; और केवल चीनी जनता और संश्रयकारी देशों के सार्वजनिक नेताओं के विरोध की वजह से ही यह नहीं हो पाया, जिससे च्याङ काई-शेक को इस बात का बड़ा ही मलाल रहा। इस तरह मजबूर होकर उसे देशव्यापी गृहयुद्ध को प्रतिरोध-युद्ध के समाप्त होने तक के लिए टालना पड़ा और इसीलिए उसने अब ११ अगस्त का आदेश और १५ अगस्त का वक्तव्य जारी किया है। गृहयुद्ध छेड़ने के मकसद से च्याङ काई-शेक ने "दुश्मन-पार्टी", "गद्दार पार्टी", "गद्दार सेना", "विद्रोही सेना", "गद्दार क्षेत्र", "लुटेरे क्षेत्र", "फौजी आदेशों और सरकारी फरमानों की अवज्ञा", "सामन्ती पृथकतावाद", "प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ करने", और "राज्य के लिए खतरा पैदा करने" जैसे फिकरों का पहले ही से आविष्कार कर रखा था; और उसने दलील यह पेश की थी कि पिछले दिनों चूंकि चीन में कोई "गृहयुद्ध" नहीं हुआ और सिर्फ "कम्युनिस्टों का दमन" ही किया गया है, इसलिए आगे भी

कोई "गृहयुद्ध" नहीं होगा, वगैरह-वगैरह। इस बार हल्का सा फर्क यह हुआ है कि "जनता के शत्रु" का एक नया फिकरा और जुड़ गया है। मगर लोगों को यह महसूस हो जाएगा कि यह एक मूर्खता-पूर्ण आविष्कार है। कारण, चीन में जब भी "जनता के शत्रु" का प्रयोग होता है, तो हर कोई यह समझ जाता है कि मतलब किससे है। चीन में एक ऐसा शख्स है जिसने सुन यात-सेन के तीन जन-सिद्धान्तों के प्रति गद्दारी की और फिर १९२७ की महान क्रान्ति के प्रति गद्दारी की। उसने चीनी जनता को दस वर्ष तक गृहयुद्ध के रक्त-सागर में डुबोया और इस प्रकार जापानी साम्राज्यवाद के हमले को न्योता दिया। और हमला हो जाने पर घबराहट के मारे उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई और वह सिर पर पांव रखकर भाग खड़ा हुआ तथा अपने साथ भगोड़ों की एक जमात को भी हेलुङच्याङ प्रान्त से क्वेइचओ प्रान्त तक ले गया। वहां वह हाथ बांधे टुकुर-टुकुर देखता रहा और बैठे-बैठे जीत की बाट जोहता रहा। और आज जबकि विजय सचमुच प्राप्त हो गई है, तो वह जन-सेनाओं को कह रहा है कि वे "अगला आदेश मिलने तक जहां भी हों वहीं बनी रहें" तथा शत्रु और गद्दारों को कह रहा है कि वे "व्यवस्था बनाए रखें", ताकि वह खुद ऐंठता-इतराता हुआ नानकिङ लौट सके। इन तथ्यों का उल्लेखभर कर देने से चीनी जनता यह समझ जाती है कि वह शख्स च्याङ काई-शेक ही है। जो कुछ उसने किया है, उसे देखते हुए क्या इसके बारे में कोई विवाद हो सकता है कि च्याङ काई-शेक जनता का शत्रु है या नहीं? यों विवाद तो है। जनता कहती है: हां। जनता का शत्रु कहता है: नहीं। और बस, विवाद सिर्फ यही है। जनता के बीच यह मामला विवाद से अधिकाधिक दूर होता

जा रहा है। समस्या अब यह है कि जनता का यह शत्रु गृहयुद्ध छेड़ना चाहता है। ऐसी सूरत में जनता क्या करे? शिनह्वा समाचार-एजेन्सी का संवाददाता कहता है : च्याङ काई-शेक के गृहयुद्ध छेड़ने के सवाल पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नीति स्पष्ट और अविचल है, और वह है गृहयुद्ध का विरोध करना। चीन पर जापानी साम्राज्य-वाद का हमला शुरू होने के समय से ही चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने मांग की है कि गृहयुद्ध को समाप्त कर दिया जाए और विदेशी आक्रमण का मुकाबला करने के लिए एकता कायम की जाए। १९३६-३७ में पार्टी ने जबरदस्त प्रयास किए, अपना प्रस्ताव मानने पर च्याङ काई-शेक को मजबूर किया और इस तरह जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध चलाया। प्रतिरोध-युद्ध के आठ वर्षों में एक बार भी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने गृहयुद्ध का खतरा रोकने के लिए जनता को सतर्क करने के अपने प्रयत्नों में ढिलाई नहीं आने दी। पिछले साल से कम्युनिस्ट पार्टी जनता को बार-बार उस बेहद बड़ी साजिश से आगाह करती आ रही है जिसे प्रतिरोध-युद्ध समाप्त होते ही देश-व्यापी गृहयुद्ध छेड़ देने के लिए च्याङ काई-शेक ने रचा है। कम्यु-निस्ट पार्टी का भी, चीनी जनता और दुनिया के उन तमाम व्यक्तियों की ही तरह, जो चीन में शान्ति कायम करने के लिए व्यग्र हैं, यही मत है कि नया गृहयुद्ध घोर विपत्ति सिद्ध होगा। लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी यह समझती है कि गृहयुद्ध को अब भी छिड़ने से रोका जा सकता है और ऐसा ही करना भी होगा। गृहयुद्ध को छिड़ने से रोकने के लिए ही कम्युनिस्ट पार्टी ने मिलीजुली सरकार कायम करने का पक्षपोषण किया है। अब च्याङ काई-शेक ने इस प्रस्ताव को रद्द कर दिया है और इसलिए गृहयुद्ध के किसी भी क्षण छिड़ जाने की

अवस्था आ पहुंची है। मगर फिर भी च्याङ काई-शेक की इस चाल को रोकने का उपाय निश्चित रूप से मौजूद है। जनता की जनवादी शक्तियों का दृढ़ता के साथ और तेजी के साथ विस्तार करने की कोशिश करनी चाहिए; जनता को चाहिए कि वह शत्रु के कब्जे वाले बड़े शहरों को मुक्त करा ले तथा शत्रु और कठपुतली सेनाओं को निहत्था कर दे; और अगर किसी तानाशाह और देशद्रोही ने जनता पर हमला करने की जुर्रत की, तो जनता को आत्मरक्षात्मक कार्यवाही करनी चाहिए और दृढ़ता से जवाबी प्रहार करके गृहयुद्ध भड़काने वालों के मनसूबे धूल में मिला देने चाहिए। इसका यही उपाय है, और एकमात्र उपाय बस यही है। शिनह्वा समाचार-एजेन्सी का संवाददाता पूरे राष्ट्र का और पूरी दुनिया का आवाहन करता है कि वे उस निहायत पाखण्डपूर्ण व शर्मनाक झूठ का खण्डन करें जो उल्टे यह दावा करता है कि चीन में गृहयुद्ध को छिड़ने से तभी रोका जा सकता है जब च्याङ काई-शेक जनता को इस बात की मनाही कर दे कि वह शत्रु के कब्जे वाले बड़े शहरों को मुक्त करा ले, इस बात की मनाही कर दे कि वह शत्रु और कठपुतली सेनाओं को निहत्था कर दे, इस बात की मनाही कर दे कि वह जनवाद की स्थापना करे, तथा जब शत्रु व कठपुतली शासन का "उत्तराधिकार ग्रहण करने" के लिए (उन्हें मिटा डालने के लिए नहीं) इन बड़े शहरों में खुद च्याङ काई-शेक पहुंच जाए। शिनह्वा समाचार-एजेन्सी का संवाददाता यह बता देता है कि यह एक झूठी बात है, और यह झूठी बात न केवल जाहिरा तौर पर चीनी जनता के राष्ट्रीय और जनवादी हितों के ठीक विपरीत है बल्कि साथ ही चीन के आधुनिक इतिहास के तमाम तथ्यों का सीधा उल्लंघन भी करती है। यह बात

सदा याद रखनी चाहिए कि च्याङ काई-शेक द्वारा १९२७ से १९३७ तक दस वर्ष की अवधि में गृहयुद्ध चलाए जाने का कारण यह नहीं था कि बड़े नगर उसके अपने हाथ में होने के बजाय कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में थे ; इसके ठीक विपरीत १९२७ से अब तक कोई भी बड़ा नगर कभी कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में नहीं रहा, बल्कि सारे के सारे बड़े नगर या तो च्याङ के हाथ में रहे या च्याङ के हाथ से जापानियों व गद्दारों के हवाले कर दिए गए, और ठीक इसी कारण गृहयुद्ध देशव्यापी पैमाने पर दस वर्ष तक चलता रहा तथा स्थानीय पैमाने पर आज तक जारी है। यह बात सदा याद रखनी चाहिए कि अगर दस वर्ष के उस गृहयुद्ध को बन्द किया जा सका और प्रतिरोध-युद्ध के दौरान बड़े पैमाने के तीन कम्युनिस्ट-विरोधी हमलों तथा अनगिनत दूसरे उकसावों को (शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के दक्षिणी भाग पर च्याङ काई-शेक के हाल ही के हमले [२] तक) दबाया जा सका, तो इसलिए नहीं कि च्याङ काई-शेक शक्तिशाली था, बल्कि इसके ठीक विपरीत इसलिए कि च्याङ सापेक्ष रूप से उतना शक्तिशाली नहीं था जबकि कम्युनिस्ट पार्टी और जनता सापेक्ष रूप से शक्तिशाली थी। दस वर्ष से चला आया गृहयुद्ध अगर बन्द किया जा सका तो इसलिए नहीं कि शान्ति चाहने वाले और युद्ध से डरने वाले देशभर के सार्वजनिक व्यक्तियों ने इसके लिए अपील की थी, (जैसे भूतपूर्व "गृहयुद्ध प्रतिबन्ध संघ" [३] और उसके समान अन्य संगठनों की अपील), बल्कि इसलिए बन्द किया जा सका कि इसके लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने हथियार के जोर से मांग की, इसलिए कि चाङ श्वे-ल्याङ के मातहत उत्तर-पूर्वी सेना और याङ हू-छङ के मातहत उत्तर-पश्चिमी सेना ने इसके लिए हथियार के जोर से मांग की।

अगर बड़े पैमाने के तीनों कम्युनिस्ट-विरोधी हमलों और अनगिनत दूसरे उकसावों को मात किया जा सका तो इसलिए नहीं कि कम्युनिस्ट पार्टी ने बेहद रियायतें दीं और आज्ञापालन किया, बल्कि इसलिए कि कम्युनिस्ट पार्टी आत्मरक्षा के एक न्यायसंगत और कठोर रुख पर अविचल रूप से कायम रही – "जब तक हम पर हमला न हो, तब तक हम हमला नहीं करेंगे ; अगर हम पर हमला किया गया, तो हम जरूर जवाबी हमला करेंगे।" [४] अगर कम्युनिस्ट पार्टी बिलकुल बलहीन और संकल्पहीन होती तथा राष्ट्र और जनता के हितों के लिए अन्त तक न लड़ती, तो भला दस वर्ष से चले आए गृहयुद्ध को समाप्त कैसे किया जा सकता? जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध कैसे शुरू होता? और वह शुरू हो भी जाता तो उसे दृढ़ता के साथ आज की इस विजय की घड़ी तक कैसे पहुंचाया जा सकता? च्याङ काई-शेक और उसके गिरोह के लोग आज सुरक्षित रूप से कैसे जीवित रहते और मोर्चे से इतनी दूर किसी पहाड़ी शरण-स्थल में बैठकर आदेश पर आदेश और बयान पर बयान कैसे जारी करते? चीनी कम्युनिस्ट पार्टी दृढ़ता के साथ गृहयुद्ध का विरोध करती है। क्रीमिया में सोवियत संघ, अमरीका और बरतानिया ने घोषणा की है कि "आन्तरिक शान्ति के हालात पैदा करो" तथा "ऐसे अन्तरिम सरकारी सत्ताधिकरण कायम कर लो जिनमें आबादी में मौजूद तमाम जनवादी तत्वों के प्रतिनिधि व्यापक रूप से शामिल हों और जो स्वतंत्र चुनावों के जरिए जनता के संकल्प के लिए उत्तरदायी होने वाली सरकारें जल्द से जल्द बनाने का बीड़ा उठा लें।" [५] चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अविचल रूप से ठीक इसी चीज की, यानी "मिलीजुली सरकार" की स्थापना की पैरवी करती रही है।

इस प्रस्ताव पर अमल करके गृहयुद्ध को छिड़ने से रोका जा सकता है। लेकिन इसके लिए एक पूर्वशर्त भी है और वह है : ताकत। अगर समूची जनता एक हो जाए और अपनी ताकत बढ़ा ले, तो गृहयुद्ध को छिड़ने से रोका जा सकता है।

नोट

[1] च्याङ काई-शेक द्वारा चलाए गए बड़े पैमाने के तीन कम्युनिस्ट-विरोधी हमलों के बारे में देखिए : "क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन और तीसरी जन राजनीतिक परिषद के दूसरे अधिवेशन के बारे में टिप्पणी" ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ ३)।

[2] यहां शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के क्वानचुङ उपक्षेत्र के छुनह्वा, श्युनई और याओश्येन पर क्वोमिन्ताङ सेनाओं द्वारा जुलाई १९४५ में की गई चढ़ाई का उल्लेख किया गया है। देखिए इसी ग्रन्थ में "जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की विजय के बाद की परिस्थिति और हमारी नीति" शीर्षक रचना का नोट ६।

[3] "गृहयुद्ध प्रतिबन्ध संघ" की स्थापना अगस्त १९३२ में शांघाई में की गई थी। इसमें मुख्यतया पूंजीपति वर्ग के सदस्य थे। इस संघ ने "गृहयुद्ध का अन्त करो और विदेशी हमले का प्रतिरोध करने के लिए एक हो जाओ" का आवाहन करने के हेतु एक ऐलान जारी किया था।

[4] देखिए : "केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी, 'साओताङ पाओ' और 'शिनमिन पाओ' के तीन संवाददाताओं को इन्टरव्यू" शीर्षक रचना ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ २)।

[5] सोवियत संघ, अमरीका और बरतानिया के ११ फरवरी १९४५ के क्रीमिया (याल्टा) सम्मेलन की विज्ञप्ति से।

क्वोमिन्ताङ के साथ शान्ति-वार्ता के बारे में – चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का सरकुलर*

२६ अगस्त १९४५

जापानी हमलावरों के तेजी से आत्मसमर्पण करने की वजह से समूची परिस्थिति बदल गई है। च्याङ काई-शेक ने आत्मसमर्पण को स्वीकार करने के अधिकार पर अपना इजारा कायम कर लिया है और कुछ समय के लिए (एक खास दौर में) बड़े शहरों और महत्वपूर्ण संचार-पंक्तियों पर हमारा कब्जा नहीं रहेगा। तो भी उत्तरी चीन में हमें अब भी पूरी कोशिश करनी चाहिए, अपनी पूरी शक्ति लगाकर उन तमाम स्थानों को हस्तगत कर लेना चाहिए

*यह अन्तःपार्टी सरकुलर कामरेड माओ त्सेतुङ ने च्याङ काई-शेक के साथ शान्ति-वार्ता करने के लिए छुङकिङ जाने से दो दिन पहले चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए लिखा था। चूंकि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और व्यापक चीनी जनता ने च्याङ काई-शेक के गृहयुद्ध के षड्यंत्र का दृढ़ता से विरोध किया तथा चूंकि अमरीकी साम्राज्यवाद अब भी विश्वव्यापी जनवादी लोकमत का, जो च्याङ काई-शेक की गृहयुद्ध और तानाशाही की नीति की एक स्वर से भर्त्सना कर रहा था, कुछ न कुछ लिहाज करता था, इसलिए च्याङ काई-शेक ने १४ अगस्त, २० अगस्त और २३ अगस्त १९४५ को कामरेड माओ त्सेतुङ के नाम तीन तार भेजे, जिनके जरिए उन्हें शान्ति-वार्ता करने के लिए छुङकिङ

जिन्हें हम हस्तगत कर सकते हैं। पिछले दो सप्ताह में हमारी सेना ने छोटे-बड़े ५६ शहरों और विशाल देहाती इलाकों पर फिर से अधिकार कर लिया है और जो स्थान हमारे अधिकार में पहले से ही थे उन्हें मिलाकर अब तक १७५ शहरों पर हमारा अधिकार हो गया है, तथा इस प्रकार हमने महान विजय प्राप्त की है। उत्तरी चीन में, हमने वेइहाएवेइ, येनथाए, लुङखओ, ईतू, चिङ्वान, याङ-ल्यूछिङ, पीखछी, पोआए, चाङच्याखओ, चीनिङ और फ़ङचन पर फिर से अधिकार कर लिया है। हमारी सेना ने अपनी शोहरत से उत्तरी चीन को हिला दिया है। इसके और लम्बी दीवार की ओर सोवियत व मंगोलियाई फौजों के तेज अभियान के फलस्वरूप हमारी

जाने का निमंत्रण दिया गया, और २७ अगस्त को इसी उद्देश्य से तत्कालीन चीन स्थित अमरीकी राजदूत पैट्रिक जे० हर्ले भी येनान गया था। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने फैसला किया कि कामरेड माओ त्सेतुङ, कामरेड चओ ऐन-लाइ और कामरेड वाङ रो-फ़ेइ को क्वोमिन्ताङ से शान्ति-वार्ता करने के लिए छुङकिङ भेजा जाए, ताकि शान्ति स्थापित करने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया जा सके, तथा साथ ही शान्ति स्थापित करने के संघर्ष की प्रक्रिया के दौरान अमरीकी साम्राज्यवाद और च्याङ काई-शेक का असली चेहरा बेनकाब कर दिया जाए और इस प्रकार व्यापक जनता को एकताबद्ध और शिक्षित करने में मदद दी जाए। इस सरकुलर में, जिसे कामरेड माओ त्सेतुङ ने लिखा था, जापान द्वारा आत्म-समर्पण का ऐलान किए जाने के बाद दो हफ्ते में चीन के परिस्थिति-विकास का विश्लेषण किया गया है। इसमें शान्ति-वार्ता के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की नीति को, उन कुछ रियायतों को जिन्हें देने के लिए समझौता-वार्ता के दौरान पार्टी तैयार थी, तथा समझौता-वार्ता के दो सम्भावित परिणामों का सामना करने से ताल्लुक रखने वाली नीतियों को घोषित किया गया। इसमें उत्तरी और पूर्वी चीन के मुक्त क्षेत्रों तथा मध्य और दक्षिणी चीन के मुक्त क्षेत्रों

पार्टी के लिए अनुकूल परिस्थिति पैदा हो गई है। आने वाले समय में हमें अपना प्रहार जारी रखना चाहिए तथा पेफिङ-स्वेय्वान रेलवे, ताथुङ-फूचओ रेलवे के उत्तरी भाग और चङतिङ-थाएय्वान रेलवे, तचओ-शच्याच्वाङ रेलवे, पाएक्वेइ-चिनछङ रेलवे और ताओखओ-छिङह्वा रेलवे पर कब्जा करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए; साथ ही हमें पेफिङ-ल्याओनिङ रेलवे, पेफिङ-हानखओ रेलवे, थ्येनचिन-फूखओ रेलवे, छिङताओ-चीनान रेलवे, लुङहाए रेलवे और शांघाई-नानकिङ रेलवे को भी विच्छिन्न करने की कोशिश करनी चाहिए। हम जहां कहीं भी अपना कब्जा जमा सकें, जमा लें, चाहे उस पर अस्थाई रूप से ही क्यों न पांव जमाया जाए। साथ ही आवश्यक

के अन्दर चलाए जाने वाले संघर्षों से सम्बन्धित उसूलों के बारे में दिए गए निर्देश भी शामिल किए गए। इसमें समूची पार्टी को सचेत कर दिया गया कि वह च्याङ काई-शेक के खिलाफ अपनी सतर्कता में और अपने संघर्ष में महज इसलिए हरगिज ढील न आने दे क्योंकि समझौता-वार्ता होने जा रही है। कामरेड माओ त्सेतुङ और उनके सहकर्मी २८ अगस्त को छुङकिङ पहुंचे तथा उन्होंने ४३ दिन तक क्वोमिन्ताङ के साथ समझौता-वार्ता की। हालांकि इस समझौता-वार्ता के परिणामस्वरूप केवल "क्वोमिन्ताङ और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों के बीच हुई बातचीत का सारांश" (जो "१० अक्तूबर समझौता" भी कहलाता है) ही प्रकाशित किया जा सका, लेकिन फिर भी वह वार्ता इस दृष्टि से सफल रही कि उसने राजनीतिक पहलकदमी काफी हद तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में दे दी तथा क्वोमिन्ताङ को निष्क्रियता की स्थिति में डाल दिया। कामरेड माओ त्सेतुङ ११ अक्तूबर को येनान लौट गए। कामरेड चओ ऐन-लाइ और कामरेड वाङ रो-फ़ेइ समझौता-वार्ता जारी रखने के लिए छुङकिङ में ही रहे। इस वार्ता के परिणामों के लिए देखिए इसी ग्रन्थ में "छुङकिङ समझौता-वार्ता के बारे में" शीर्षक रचना।

सैन्य-शक्ति लगाकर यथासम्भव अधिक से अधिक गांवों, काउन्टी-केन्द्रों और उनसे ऊंचे प्रशासनिक केन्द्रों तथा छोटे कस्बों पर कब्जा कर लेना चाहिए। मिसाल के लिए, अब एक अत्यन्त अनुकूल परि-स्थिति पैदा हो गई है, क्योंकि नई चौथी सेना ने बहुत से ऐसे काउन्टी-केन्द्रों पर कब्जा कर लिया है जो नानकिङ, थाएह झील और थ्येनमू पर्वतशृंखला के बीच और याङत्सी नदी व ह्वाए नदी के बीच स्थित हैं, क्योंकि शानतुङ में हमारी फौजों ने पूरे पूर्वी शानतुङ प्रायद्वीप पर कब्जा कर लिया है, तथा क्योंकि शानशी-स्वेय्वान सीमान्त क्षेत्र में हमारी फौजों ने पेफिङ-स्वेय्वान रेलवे के उत्तर और दक्षिण में बहुत से शहरों और कस्बों पर कब्जा कर लिया है। आक्रमणात्मक युद्ध का एक अन्य दौर समाप्त होने पर, हमारी पार्टी के लिए याङत्सी नदी के निचले भाग के उत्तर में और ह्वाए नदी के उत्तर में अधिकांश इलाकों पर, शानतुङ, हपे, शानशी और स्वेय्वान प्रान्तों के अधि-कांश हिस्सों पर, पूरे जेहोल और छाहाड़ इन दो प्रान्तों पर और ल्याओनिङ प्रान्त के एक हिस्से पर कब्जा करना सम्भव हो जाएगा।

इस समय सोवियत संघ, अमरीका और बरतानिया सभी चीन में गृहयुद्ध का विरोध कर रहे हैं;[१] साथ ही हमारी पार्टी ने शान्ति, जनवाद और एकता के तीन महान नारे[२] पेश कर दिए हैं और वह कामरेड माओ त्सेतुङ, कामरेड चओ ऐन-लाइ और कामरेड वाङ रो-फ़ेइ को एकता और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के भारी मसलों के बारे में च्याङ काई-शेक से विचार-विमर्श करने के लिए छुङकिङ भेज रही है; इस प्रकार यह सम्भव है कि चीनी प्रतिक्रियावादियों की गृहयुद्ध की साजिश नाकाम हो जाए। क्वोमिन्ताङ ने शांघाई, नानकिङ और दूसरी जगहों पर फिर से कब्जा करके, समुद्री यातायात

को फिर से चालू करके, दुश्मन के शस्त्रों पर कब्जा करके और कठपुतली सैनिकों को अपनी फौजों में शामिल करके अब अपनी स्थिति को मजबूत बना लिया है। फिर भी वह हजारों बड़े-बड़े घावों से ग्रस्त है, अनगिनत अन्दरूनी अन्तरविरोधों से विच्छिन्न हो चुकी है और भारी कठिनाइयों में उलझी हुई है। यह सम्भव है कि समझौता-वार्ता के बाद, क्वोमिन्ताङ घरेलू और वैदेशिक दबाव के कारण हमारी पार्टी के दर्जे को सशर्त मान ले। हो सकता है कि हमारी पार्टी भी क्वोमिन्ताङ के दर्जे को सशर्त मान ले। इससे दोनों पार्टियों के बीच (साथ ही जनवादी संघ[३] इत्यादि के बीच भी) सहयोग का तथा शान्तिपूर्ण विकास का एक नया दौर शुरू हो जाएगा। अगर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाए तो हमारी पार्टी को चाहिए कि वह कानूनी संघर्ष के सभी तरीकों में महारत हासिल कर ले और क्वोमिन्ताङ इलाकों में तीन मुख्य क्षेत्रों, यानी शहरों, गांवों और सेना में (ये सब हमारे काम की कमजोर कड़ियां हैं) अपना काम मजबूत बना ले। समझौता-वार्ता के दौरान, क्वोमिन्ताङ अवश्य यह मांग करेगी कि हम मुक्त क्षेत्रों के विस्तार को बेहद घटा दें, मुक्ति सेना की संख्या को बेहद कम कर दें और मुद्रा जारी करना बिलकुल बन्द कर दें। हम अपनी तरफ से ऐसी रियायतें देने को तैयार हैं जो जरूरी हों और जो जनता के बुनियादी हितों को नुकसान न पहुंचाती हों। ऐसी रियायतें दिए बिना हम क्वोमिन्ताङ की गृहयुद्ध की साजिश का भण्डाफोड़ नहीं कर सकते, राजनीतिक पहलकदमी अपने हाथ में नहीं ले सकते, विश्व-लोकमत की और अपने देश के मध्यममार्गियों की सहानुभूति प्राप्त नहीं कर सकते तथा इसके बदले में अपनी पार्टी के लिए कानूनी दर्जा और शान्तिपूर्ण स्थिति प्राप्त नहीं कर

सकते। लेकिन इस प्रकार की रियायतों की भी एक सीमा होती है; उसूल यह है कि जनता के बुनियादी हितों को नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए।

यदि हमारी पार्टी द्वारा उपरोक्त कदम उठाए जाने के बाद भी क्वोमिन्ताङ गृहयुद्ध शुरू करना चाहेगी, तो वह खुद अपने आपको समूचे राष्ट्र और समूची दुनिया की निगाहों में एक अन्यायी की स्थिति में पहुंचा देगी और उसके हमलों को चकनाचूर कर देने के लिए हमारी पार्टी द्वारा आत्मरक्षात्मक युद्ध किया जाना बिलकुल वाजिब कहलाएगा। यही नहीं हमारी पार्टी एक शक्तिशाली पार्टी है, और अगर कोई हम पर हमला करेगा और परिस्थिति लड़ाई के लिए अनुकूल होगी, तो यह निश्चित है कि हम दृढ़तापूर्वक, सर्वांगीण रूप से, समग्र रूप से और सम्पूर्ण रूप से उसका सफाया करने के लिए आत्मरक्षात्मक कार्यवाही करेंगे (हम जल्दबाजी से प्रहार नहीं करते और जब भी प्रहार करते हैं, तो विजय निश्चित रूप से प्राप्त करते हैं)। प्रतिक्रियावादियों के बाहरी खूंखारपन से हमें हरगिज नहीं डरना चाहिए। लेकिन हमें निम्नलिखित उसूलों पर हमेशा दृढ़ता से डटे रहना चाहिए और उन्हें हरगिज नहीं भूलना चाहिए : एकता, संघर्ष और संघर्ष के जरिए एकता कायम करना; न्यायोचित आधार पर, अपना फायदा देखते हुए और संयत रूप से संघर्ष करना; तथा अन्तरविरोधों का फायदा उठाना, बहुसंख्यक लोगों को अपने पक्ष में कर लेना, मुट्ठीभर लोगों का विरोध करना और अपने दुश्मनों को एक-एक करके कुचल देना।[४]

क्वाङतुङ, हुनान, हुपे, हनान और अन्य प्रान्तों में हमारी पार्टी की शक्ति उत्तरी चीन और याङत्सी नदी व ह्वाए नदी के बीच के

क्षेत्रों से ज्यादा कठिन स्थिति में है। इन जगहों के साथियों पर केन्द्रीय कमेटी बहुत तवज्जो देती है। लेकिन क्वोमिन्ताङ की बहुत सी कमजोर कड़ियां हैं और उसका इलाका बहुत विशाल है; हमारे साथियों में इस स्थिति का मुकाबला करने की पूरी सामर्थ्य मौजूद है, बशर्ते कि वे फौजी नीति (सैन्य-संचालन और फौजी कार्यवाही) में और जनता के साथ एकता कायम करने की नीति में कोई भारी गलती न करें, तथा बशर्ते कि वे नम्र और विवेकपूर्ण हों, अहंकारी या उतावले न हों। केन्द्रीय कमेटी से जरूरी निर्देशन प्राप्त करने के अलावा इन क्षेत्रों के साथियों को चाहिए कि वे परिस्थिति का विश्लेषण करने में अपनी निर्णयात्मक बुद्धि का इस्तेमाल करें, अपनी समस्याओं को खुद सुलझाएं, कठिनाइयों पर काबू पा लें, अपनी शक्ति को बनाए रखें तथा उसका विस्तार करें। जब क्वोमिन्ताङ आपके खिलाफ कुछ भी करने में असमर्थ हो जाएगी, तो हो सकता है कि वह मजबूरन दोनों पार्टियों के बीच समझौता-वार्ता के दौरान आपकी शक्तियों को मान्यता दे डाले तथा दोनों पक्षों के लिए लाभदायक व्यवस्था को मंजूर कर ले। लेकिन आपको समझौता-वार्ता पर हरगिज निर्भर नहीं रहना चाहिए, यह उम्मीद हरगिज नहीं करनी चाहिए कि क्वोमिन्ताङ दयालु-हृदय हो जाएगी, क्योंकि वह हरगिज दयालु-हृदय नहीं हो सकती। आपको अपनी शक्ति पर, अपनी गतिविधियों के सही मार्गदर्शन पर, पार्टी के भीतर बिरादराना एकता पर और जनता के साथ अच्छे सम्बन्धों पर निर्भर रहना चाहिए। जनता पर दृढ़ता से निर्भर रहो, यही आपके लिए इस कठिन स्थिति से निकलने का रास्ता है।

संक्षेप में, हमारी पार्टी बहुत सी ऐसी कठिनाइयों का सामना कर

रही है जिनकी हम अवहेलना नहीं कर सकते, तथा सभी पार्टी-कामरेडों को मानसिक रूप से अच्छी तरह तैयार रहना चाहिए। लेकिन अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू परिस्थिति का आम रुझान हमारी पार्टी और जनता के लिए अनुकूल है। जब तक पूरी पार्टी एकताबद्ध है, तब तक हम कदम-ब-कदम सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करते रहेंगे।

नोट

[1] जापान के आत्मसमर्पण से पहले और इसके बाद के कुछ समय में सोवियत संघ, अमरीका और बरतानिया सभी ने चीन में गृहयुद्ध के बारे में अपनी असहमति प्रकट की। लेकिन घटनाओं ने जल्दी ही साबित कर दिया कि चीन में गृहयुद्ध के बारे में अपनी असहमति प्रकट करने के लिए अमरीका द्वारा दिया गया वक्तव्य महज एक आवरण था, जिसकी आड़ लेकर उसने प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार को प्रतिक्रान्तिकारी गृहयुद्ध की तैयारी करने में सक्रियता से मदद दी।

[2] शान्ति, जनवाद और एकता के ये तीन महान नारे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने २५ अगस्त १९४५ को "वर्तमान परिस्थिति के बारे में घोषणापत्र" में पेश किए थे। इस घोषणापत्र में बताया गया कि जापानी साम्राज्यवाद के आत्मसमर्पण के बाद "हमारे समूचे राष्ट्र के सामने यह महत्वपूर्ण कार्य मौजूद है कि देश में एकता को सुदृढ़ बनाया जाए, घरेलू शान्ति की रक्षा की जाए, जनवाद को कार्यान्वित किया जाए और जनता के रहन-सहन में सुधार किया जाए, ताकि शान्ति, जनवाद और एकता के आधार पर राष्ट्रीय एकीकरण किया जा सके तथा एक स्वाधीन, स्वतंत्र, समृद्ध और शक्तिशाली नए चीन का निर्माण किया जा सके"।

[3] "जनवादी संघ" की स्थापना १९४१ में "चीनी जनवादी राजनीतिक ग्रुपों का संघ" के नाम से की गई थी। १९४४ में इसे "चीनी जनवादी संघ" के नाम से पुनर्गठित किया गया।

[4] देखिए: "जापान-विरोधी संयुक्त मोर्चे में कार्यनीति सम्बन्धी मौजूदा समस्याएं" और "नीति के बारे में" शीर्षक दो रचनाएं ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ २)।

छुङकिङ समझौता-वार्ता के बारे में*

१७ अक्तूबर १९४५

आइए, अब हम वर्तमान परिस्थिति की चर्चा करें। यही वह विषय है जिसमें हमारे साथी दिलचस्पी रखते हैं। इस बार छुङकिङ में क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच समझौता-वार्ता ४३ दिन तक चली। इसके नतीजे अखबारों में पहले ही शाया हो चुके हैं।[१] दोनों पार्टियों के प्रतिनिधियों के बीच समझौता-वार्ता अभी जारी है। समझौता-वार्ता के कुछ नतीजे निकले हैं। क्वोमिन्ताङ ने शान्ति और एकता के उसूलों को स्वीकार कर लिया है, जनता के कुछ जनवादी अधिकारों को मान लिया है और यह स्वीकार कर लिया है कि गृहयुद्ध की रोकथाम करनी चाहिए और नए चीन के निर्माण के लिए दोनों पार्टियों को शान्तिपूर्वक एक दूसरे से सहयोग करना चाहिए। इन बातों के बारे में समझौता हो गया है। कुछ अन्य बातें भी हैं, जिनके बारे में समझौता नहीं हुआ। मुक्त क्षेत्रों का सवाल अभी हल नहीं हुआ, और न वास्तव में सशस्त्र सेनाओं का सवाल ही हल हुआ है। जो समझौते हुए भी हैं वे अभी केवल कागज पर ही मौजूद हैं। कागज पर लिखे गए शब्द वास्तविकता के बराबर नहीं

---

*यह रिपोर्ट कामरेड माओ त्सेतुङ ने छुङकिङ से लौटने के बाद येनान में कार्यकर्ताओं की एक बैठक में प्रस्तुत की थी।

होते। तथ्यों से यह साबित हो चुका है कि उन्हें वास्तविकता में बदलने से पहले अब भी बहुत कोशिश करने की जरूरत है।

एक तरफ तो क्वोमिन्ताङ हमारे साथ समझौता-वार्ता कर रही है और दूसरी तरफ वह मुक्त क्षेत्रों पर जोरशोर से हमले भी कर रही है। शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र पर घेरा डालने वाली क्वोमिन्ताङ फौजों को छोड़कर, इन हमलों में ८,००,००० क्वोमिन्ताङ सैनिक प्रत्यक्ष रूप से भाग ले रहे हैं। जहां कहीं भी मुक्त क्षेत्र मौजूद हैं वहां लड़ाई हो रही है अथवा उसकी तैयारियां की जा रही हैं। "१० अक्तूबर समझौते" की पहली ही धारा "शान्तिपूर्ण राष्ट्रीय निर्माण" के बारे में है। क्या कागज पर मौजूद ये शब्द वास्तविकता के विपरीत नहीं हैं? हां, हैं। यही वजह है कि हम कहते हैं कागज पर मौजूद चीज को वास्तविकता में बदलने के लिए अब भी हमें कोशिश करनी होगी। क्वोमिन्ताङ हम पर आक्रमण करने के लिए इतनी ज्यादा फौजों को क्यों जुटाती है? इसकी वजह यह है कि काफी समय पहले ही वह इस बात का संकल्प कर चुकी है कि वह जनता की शक्ति को नेस्तनाबूद कर देगी, हमें नेस्तनाबूद कर देगी। उसके विचार में बेहतरीन बात यह है कि वह हमें जल्दी ही खत्म कर दे, और यदि इस मकसद में कामयाब न हो सके तो हमारी स्थिति बिगाड़ने और अपनी स्थिति सुधारने की कोशिश करे। हालांकि समझौते में शान्ति का उल्लेख किया गया है, लेकिन वास्तव में उसे प्राप्त नहीं किया गया है। शानशी प्रान्त के शाङताङ क्षेत्र जैसे स्थानों में काफी बड़े पैमाने की लड़ाई हो रही है। शाङताङ क्षेत्र, जिसके चारों ओर थाएहाङ, थाएय्वे और चुङथ्याओ पर्वतशृंखलाएं फैली हुई हैं, एक टब की तरह है। इस टब में मछली और मांस मौजूद हैं

तथा येन शी-शान ने उसे हड़पने के लिए तेरह डिवीजनें भेजी हैं। हमारी नीति भी काफी पहले ही निर्धारित हो चुकी है – यानी शठे-शाठ्यम का रुख अपनाना, एक-एक इंच जमीन के लिए लड़ना। इस बार हमने शठे-शाठ्यम का रुख अपनाया, लड़ाई लड़ी और काफी कामयाबी हासिल की। दूसरे शब्दों में, हमने दुश्मन की तेरह की तेरह डिवीजनों का सफाया कर दिया। उसकी आक्रमणकारी फौजों में ३८,००० सैनिक थे जबकि हमने ३१,००० सैनिक लगाए। उसके ३८,००० सैनिकों में से ३५,००० को नष्ट कर दिया गया, २,००० भाग खड़े हुए और १,००० तितर-बितर हो गए।[२] इस प्रकार की लड़ाई बाद में भी जारी रहेगी। वे लोग हमारे मुक्त क्षेत्रों को हड़पने की जीतोड़ कोशिश कर रहे हैं। इसकी व्याख्या करना कठिन जान पड़ता है। आखिर वे लोग इन्हें हड़पने के लिए इतने उत्सुक क्यों हैं? क्या मुक्त क्षेत्रों का हमारे हाथ में रहना, जनता के हाथ में रहना, अच्छा नहीं है? अच्छा है, लेकिन यह बात सिर्फ हम सोचते हैं, सिर्फ जनता सोचती है। अगर वे लोग भी ऐसा ही सोचें, तो हमारे और उनके बीच मतैक्य कायम हो जाएगा तथा हम सब लोग "साथी" बन जाएंगे। लेकिन वे लोग इस तरह नहीं सोचते, वे बड़ी हठधर्मी के साथ हमारा विरोध करते हैं। वे इस बात को नहीं समझते कि उन्हें हमारा विरोध क्यों नहीं करना चाहिए। यह बिलकुल स्वाभाविक है कि वे हम पर हमला करें। जहां तक हमारा ताल्लुक है, हम भी इस बात को नहीं समझते कि हमें अपने मुक्त क्षेत्रों पर उन्हें कब्जा क्यों जमाने देना चाहिए। यह भी बिलकुल स्वाभाविक है कि हम उन पर जवाबी हमला करें। जब न समझने वाले दो पक्ष एक दूसरे के सामने आते हैं तो वे लड़ने लगते हैं। जब यहां न समझने वाले दो

पक्ष मौजूद हैं, तो फिर भला ये दोनों पक्ष समझौता-वार्ता क्यों कर रहे हैं? और इन दोनों ने "१० अक्तूबर समझौता" आखिर क्यों किया है? इस दुनिया में वस्तुओं का स्वरूप बड़ा जटिल होता है और उसका निर्णय अनेक तत्व करते हैं। हमें समस्याओं पर अलग-अलग पहलुओं से विचार करना चाहिए, केवल एक ही पहलू से नहीं। छुङकिङ में कुछ लोग यह समझते हैं कि च्याङ काई-शेक विश्वास करने योग्य नहीं है और धोखेबाज है तथा उसके साथ समझौता-वार्ता करने से कोई भी नतीजा नहीं निकल सकता। यह बात मुझसे उन बहुत से लोगों ने कही जिनसे मैंने मुलाकात की तथा जिनमें कुछ लोग क्वोमिन्ताङ के सदस्य भी हैं। मैंने उन्हें बताया कि जो कुछ वे कहते हैं वह सही है और उसका आधार पुख्ता है, तथा पिछले १८ वर्षों के अनुभव[१] से हम यह बात पक्के तौर पर समझते हैं कि बात ऐसी ही है। क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी की समझौता-वार्ता अवश्य असफल रहेगी, इन दोनों में अवश्य लड़ाई शुरू हो जाएगी, तथा इन दोनों का अवश्य सम्बन्ध-विच्छेद हो जाएगा। लेकिन यह मामले का सिर्फ एक पहलू है। इसका एक अन्य पहलू यह है कि बहुत से अन्य तत्व च्याङ काई-शेक के मन में अनिवार्य रूप से आशंकाएं पैदा करते हैं। इन तत्वों में तीन मुख्य तत्व ये हैं: मुक्त क्षेत्रों की शक्तिशालिता, बड़े पृष्ठभागीय क्षेत्र की जनता द्वारा गृहयुद्ध का विरोध, तथा अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति। हमारे मुक्त क्षेत्रों में १० करोड़ लोग हैं, १० लाख सैनिक हैं और २० लाख मिलिशिया के सदस्य हैं – यह एक ऐसी शक्ति है जिसे तुच्छ समझने की जुर्रत कोई नहीं कर सकता। राष्ट्र के राजनीतिक जीवन में हमारी पार्टी का स्थान अब न तो १९२७ जैसा है और न १९३७ जैसा ही। क्वो-

मिन्ताङ को, जिसने कम्युनिस्ट पार्टी को समान दर्जा देने से हमेशा इनकार किया है, अब मजबूर होकर ऐसा करना पड़ रहा है। मुक्त क्षेत्रों में हमने जो काम किया है उसका प्रभाव समूचे चीन पर और सारी दुनिया पर पड़ा है। बड़े पृष्ठभागीय क्षेत्र की जनता शान्ति की उम्मीद करती है और जनवाद चाहती है। व्यापक जनता से हमें जो हार्दिक समर्थन प्राप्त हुआ है उसका मुझे छुङकिङ प्रवास के दौरान गहरा एहसास हुआ। वे लोग क्वोमिन्ताङ सरकार से असन्तुष्ट हैं और हम पर आशाएं केन्द्रित किए हुए हैं। मैं अनेक ऐसे विदेशियों से, जिनमें अमरीकी भी शामिल थे, मिला जो हमारे प्रति हमदर्दी रखते हैं। विदेशों की व्यापक जनता चीन की प्रतिक्रियावादी शक्तियों से असन्तुष्ट है और चीनी जनता की शक्तियों से हमदर्दी रखती है। वह भी च्याङ काई-शेक की नीतियों को नामंजूर करती है। देश के सभी भागों और दुनिया के सभी भागों में हमारे बहुत से मित्र हैं; हम अलगाव की स्थिति में नहीं हैं। जो लोग चीन में गृहयुद्ध का विरोध करते हैं और शान्ति व जनवाद का पक्षपोषण करते हैं, उनमें न सिर्फ हमारे मुक्त क्षेत्रों की जनता है, बल्कि बड़े पृष्ठभागीय क्षेत्र और समूची दुनिया की व्यापक जनता भी है। च्याङ काई-शेक की मनोगत इच्छा यह है कि वह अपनी तानाशाही कायम रखे और कम्युनिस्ट पार्टी को नष्ट कर दे; लेकिन उसके रास्ते में बहुत सी वस्तुगत कठिनाइयां मौजूद हैं। इसीलिए उसे कुछ यथार्थवादी बनना पड़ता है। वह यथार्थवादी बनने जा रहा है और हम भी यथार्थ-वादी हैं। उसने हमें समझौता-वार्ता के लिए निमंत्रित करके यथार्थ-वादी होने का परिचय दिया है और हमने समझौता-वार्ता में शरीक होकर यथार्थवादी होने का परिचय दिया है। हम २८ अगस्त को

छुङकिङ पहुंचे। २६ अगस्त की रात को मैंने क्वोमिन्ताङ प्रतिनिधियों से कहा कि १८ सितम्बर १६३१ की घटना से ही शान्ति और एकता की जरूरत रही है। हमने शान्ति और एकता कायम करने का अनुरोध किया था, लेकिन उसे कार्यान्वित नहीं किया गया। शीआन घटना के बाद, ७ जुलाई १६३७ को जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की शुरुआत से पहले ही शान्ति और एकता कायम हो सकी। इस युद्ध के आठ वर्षों में हमने जापान के खिलाफ एक साथ मिलकर युद्ध किया। लेकिन गृहयुद्ध कभी बन्द नहीं हुआ; छोटी-बड़ी मुठभेड़ें लगातार होती रहीं। यह कहना कि इस दौरान कोई गृहयुद्ध नहीं हुआ, महज एक धोखा है और यह बात तथ्यों से मेल नहीं खाती। पिछले आठ वर्षों में हमने बार-बार यह जाहिर किया कि हम समझौता-वार्ता करने को तैयार हैं। हमारी पार्टी की सातवीं कांग्रेस में हमने ऐलान किया था कि "ज्योंही क्वोमिन्ताङ अधिकारी यह जाहिर करेंगे कि वे अपनी वर्तमान गलत नीतियों को छोड़ने को तैयार हैं और जनवादी सुधार लागू करने पर सहमत हैं, तो हम उनके साथ फिर से समझौता-वार्ता शुरू करने को तैयार हो जाएंगे।"[४] समझौता-वार्ता में हमने ऐलान किया, पहली बात तो यह है कि चीन को शान्ति की जरूरत है, और दूसरी बात यह है कि चीन को जनवाद की जरूरत है। च्याङ काई-शेक को एतराज करने का कोई सबब नहीं सूझ पाया और उसे हमारी बात माननी पड़ी। एक तरफ तो "बातचीत के सारांश" में प्रकाशित शान्ति की नीति और जनवाद सम्बन्धी समझौते केवल कागज पर मौजूद शब्दमात्र हैं और अभी वास्तविकता नहीं बन पाए; दूसरी तरफ उनका निर्णय अनेक प्रकार की शक्तियों द्वारा किया गया है। मुक्त क्षेत्रों की जनता की शक्तियां, बड़े पृष्ठ-

भागीय क्षेत्र की जनता की शक्तियां, अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति – इन सबके आम रुझान ने क्वोमिन्ताङ को इन बातों को मंजूर करने के लिए बाध्य कर दिया है।

"शठे-शाठ्यम" का बरताव कैसे किया जाए, यह परिस्थिति पर निर्भर होता है। कभी समझौता-वार्ता के लिए न जाना शठे-शाठ्यम होता है, तो कभी समझौता-वार्ता के लिए जाना भी शठे-शाठ्यम होता है। पहले न जाकर हमने सही काम किया था और इस बार जाकर भी हमने ठीक काम किया है; इन दोनों ही मामलों में हमने शठे-शाठ्यम का बरताव किया है। इस बार समझौता-वार्ता के लिए जाकर हमने बहुत अच्छा काम किया, क्योंकि इस तरह हमने क्वोमिन्ताङ द्वारा फैलाई हुई इस अफवाह का भण्डाफोड़ कर डाला कि कम्युनिस्ट पार्टी शान्ति और एकता नहीं चाहती। उन्होंने हमें आमंत्रित करने के लिए एक के बाद एक तीन तार भेजे, और हम वहां गए। लेकिन वे लोग बिलकुल तैयार नहीं थे और सभी प्रस्ताव हमें ही पेश करने पड़े। समझौता-वार्ता के परिणामस्वरूप, क्वोमिन्ताङ ने शान्ति और एकता के उसूल स्वीकार कर लिए हैं। यह एक अच्छी बात है। अगर क्वोमिन्ताङ ने फिर एक बार गृहयुद्ध छेड़ा, तो वह समूचे राष्ट्र और सारी दुनिया की नजरों में गुनहगार साबित हो जाएगी, तथा हमें इस बात का और भी अधिक बड़ा कारण मिल जाएगा कि हम आत्मरक्षात्मक युद्ध के जरिए उसके हमलों को चकनाचूर कर दें। अब जबकि "१० अक्तूबर समझौता" हो चुका है, हमारा कार्य यह है कि इस समझौते पर कायम रहें, यह मांग करें कि क्वोमिन्ताङ इस समझौते का पालन करे, तथा शान्ति के लिए प्रयत्न करते रहें। अगर वे हमसे लड़ेंगे, तो हम उन्हें पूरी तरह नेस्तनाबूद

कर देंगे। मामला ऐसा ही है : अगर उन्होंने हम पर हमला किया और हमने उनका सफाया कर डाला, तब कहीं उन्हें चैन मिलेगा ; अगर हमने उनकी थोड़ी तादाद का सफाया किया तो उन्हें थोड़ा चैन मिलेगा ; अगर ज्यादा तादाद का सफाया किया तो ज्यादा चैन मिलेगा ; अगर उन सबका सफाया कर डाला तो फिर उन्हें पूरा चैन मिल जाएगा। चीन की समस्याएं बड़ी पेचीदा हैं और हमारे दिमाग को भी कुछ इस किस्म का बन जाना चाहिए कि वह इन पेचीदा समस्याओं से निपट सके। अगर वे लड़ाई शुरू करेंगे, तो फिर उनके जवाब में हम भी लड़ेंगे, शान्ति कायम करने के लिए लड़ेंगे। शान्ति तब तक कायम नहीं हो सकेगी जब तक हम उन प्रतिक्रियावादियों पर, जो मुक्त क्षेत्रों पर आक्रमण करने की जुर्रत करते हैं, जोरदार प्रहार नहीं करेंगे।

कुछ साथी यह पूछते हैं कि भला हम अपने आठ मुक्त क्षेत्रों को क्यों छोड़ दें ? [५] इन आठ क्षेत्रों को छोड़ देना सचमुच बड़े दुख की बात है, लेकिन ऐसा करना बेहतर है। यह दुख की बात क्यों है ? क्योंकि इन मुक्त क्षेत्रों को जनता ने अपना खून-पसीना बहाकर कायम किया है और इनका बड़ी मेहनत से निर्माण किया है। इसलिए जिन इलाकों को हम छोड़ने जा रहे हैं वहां की जनता को हमें सारी बात साफ-साफ समझानी होगी तथा वहां समुचित व्यवस्था करनी होगी। हमें उन इलाकों को भला क्यों छोड़ देना चाहिए ? क्योंकि अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो क्वोमिन्ताङ को चैन नहीं मिलेगा। वे लोग नानकिङ वापस जा रहे हैं, लेकिन दक्षिण के कुछ मुक्त क्षेत्र ठीक उनकी शय्या की बगल में अथवा उनके अपने ही बरामदे में हैं। जब तक हम लोग वहां रहेंगे, तब तक वे चैन से सो नहीं पाएंगे और

इसलिए उन जगहों के लिए हर सूरत में लड़ेंगे। इस सिलसिले में हम जो रियायत दे रहे हैं, उससे क्वोमिन्ताङ की गृहयुद्ध की साजिश को नाकाम करने में और देश-विदेश के असंख्य मध्यवर्ती तत्वों की सहानुभूति प्राप्त करने में मदद मिलेगी। शिनह्वा समाचार-एजेन्सी को छोड़कर अब चीन में तमाम प्रचार-साधन क्वोमिन्ताङ के नियंत्रण में हैं। वे सभी अफवाहें गढ़ने वाले कारखाने हैं। मौजूदा समझौता-वार्ता के बारे में उन्होंने यह अफवाह उड़ाई कि कम्युनिस्ट पार्टी केवल प्रदेश चाहती है तथा वह कोई रियायत नहीं देगी। हमारी नीति है जनता के बुनियादी हितों की हिफाजत करना। जनता के बुनियादी हितों को नुकसान न पहुंचाने के उसूल का पालन करते हुए, इस बात की इजाजत है कि शान्ति और जनवाद के बदले में, जिनकी समूचे देश की जनता को जरूरत है, कुछ रियायतें दे दी जाएं। च्याङ काई-शेक से निपटते समय अतीत काल में भी हमने रियायतें दी हैं, यहां तक कि आज के मुकाबले अधिक बड़ी रियायतें भी दी हैं। १९३७ में राष्ट्रव्यापी प्रतिरोध-युद्ध को साकार रूप देने के लिए ही हमने स्वेच्छा से "मजदूर-किसानों की क्रान्तिकारी सरकार" का नाम छोड़ दिया था और अपनी लाल सेना का नाम बदलकर "राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सेना" रख दिया था, तथा जमींदारों की जमीन जब्त करने की अपनी नीति को बदलकर लगान और सूद कम करने की नीति का रूप दे दिया था। इस बार दक्षिण के कुछ क्षेत्रों को रियायत के तौर पर देकर हमने सारे देश और समूची दुनिया की जनता के सामने क्वोमिन्ताङ की अफवाहों का पूरी तरह भण्डाफोड़ कर डाला। सशस्त्र सेनाओं की समस्या के बारे में भी यही बात लागू होती है। क्वोमिन्ताङ यह प्रचार कर रही है कि

कम्युनिस्ट पार्टी केवल बन्दूकों के लिए छीना-झपटी कर रही है। लेकिन हम कह चुके हैं कि हम रियायत देने को तैयार हैं। पहले, हमने अपनी कमान में मौजूद सशस्त्र शक्ति को घटाकर ४८ डिवीजनों तक रखने का प्रस्ताव पेश किया। चूंकि क्वोमिन्ताङ की २६३ डिवीजनें हैं, इसका मतलब यह हुआ कि हमारी शक्ति कुल शक्ति का छठा हिस्सा रह जाएगी। बाद में हमने उसमें और अधिक कटौती करके उसे केवल ४३ डिवीजनों तक रखने का प्रस्ताव पेश किया, जो कुल शक्ति का लगभग सातवां हिस्सा बनती है। इसके बाद क्वोमिन्ताङ ने कहा कि वह अपनी शक्ति घटाकर १२० डिवीजनों तक कर देगी। हमने कहा कि उसी अनुपात से हम भी अपनी शक्ति घटा कर २४ अथवा २० डिवीजनों तक कर देंगे, जो फिर भी कुल शक्ति का केवल सातवां हिस्सा होगी। क्वोमिन्ताङ सेना में अफसरों की संख्या सैनिकों की संख्या के मुकाबले अनुचित रूप से बड़ी है तथा एक डिवीजन के सैनिकों की संख्या ६,००० से कम है। उनके प्रतिमान के मुताबिक हम अपने १२,००,००० सैनिकों से २०० डिवीजनें बना सकते हैं। लेकिन हम ऐसा नहीं करते। इसलिए क्वोमिन्ताङ अब कुछ भी नहीं कह सकती तथा उसके द्वारा उड़ाई गई तमाम अफवाहें दिवालिया साबित हो चुकी हैं। क्या इसका मतलब यह है कि हम अपनी बन्दूकें क्वोमिन्ताङ के हवाले करने जा रहे हैं? नहीं, ऐसा भी नहीं है। अगर हम अपनी बन्दूकें उसके हवाले कर दें, तो क्या क्वोमिन्ताङ के पास बहुत ज्यादा बन्दूकें नहीं हो जाएंगी? जनता के हथियारों को, उसकी हर बन्दूक और हर गोली को, सम्भाल कर रखना होगा, उन्हें दूसरों के हवाले नहीं करना होगा।

ये हैं वे बातें जिन्हें मैं वर्तमान परिस्थिति के बारे में अपने साथियों को बताना चाहता हूं। इसके विकास से अनेक अन्तरविरोध जाहिर होते हैं। क्वोमिन्ताङ और हमारी पार्टी के बीच जो समझौता-वार्ता हुई है, उसमें कुछ प्रश्नों के बारे में समझौता क्यों हुआ है और कुछ अन्य प्रश्नों के बारे में समझौता क्यों नहीं हो सका है? आखिर "बातचीत के सारांश" में शान्ति और एकता की बात क्यों कही गई है, जबकि लड़ाई वास्तव में अभी जारी है? कुछ साथी इस प्रकार के अन्तरविरोधों को नहीं समझ पाते। जो कुछ मैंने कहा है वह इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए है। कुछ साथी इस बात को नहीं समझ पाते कि हमें च्याङ काई-शेक के साथ, जो हमेशा ही कम्युनिस्ट-विरोधी और जन-विरोधी रहा है, समझौता-वार्ता करने के लिए क्यों तैयार हो जाना चाहिए। क्या हमारी पार्टी द्वारा अपनी सातवीं कांग्रेस में यह फैसला करना सही था या गलत कि अगर क्वोमिन्ताङ अपनी नीति बदल दे तो हम उसके साथ समझौता-वार्ता करने को तैयार हैं? यह फैसला एकदम सही था। चीनी क्रान्ति एक दीर्घकालीन क्रान्ति है और विजय केवल कदम-ब-कदम ही हासिल की जा सकती है। चीन का भविष्य हमारे प्रयत्नों पर निर्भर है। परिस्थिति कोई ६ महीने तक परिवर्तनशील रहेगी। इसे समूचे देश की जनता के हित में विकास करने की दिशा में मोड़ने के लिए हमें दुगुना प्रयत्न करना होगा।

अब हमारे काम के बारे में चन्द बातें बताना चाहता हूं। यहां उपस्थित कुछ साथी मोर्चे पर चले जाएंगे। बहुत से साथी उत्साह से भरपूर होकर मोर्चे पर जाकर काम करने के लिए एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं; सक्रियता और जोश की यह भावना बहुत कीमती है। लेकिन कुछ साथी ऐसे भी हैं जो गलत विचार रखते

हैं, जो उन अनेक कठिनाइयों की ओर ध्यान नहीं देते जिन्हें हल करना है, तथा यह समझते हैं कि मोर्चे पर हर काम बड़ा आसान होगा तथा वहां येनान के मुकाबले ज्यादा अच्छा वक्त गुजरेगा। क्या ऐसा सोचने वाले लोग भी मौजूद हैं ? मैं समझता हूं जरूर मौजूद हैं। ऐसे साथियों को मैं सलाह देना चाहता हूं कि वे अपने गलत विचारों को सुधार लें। अगर कोई कहीं जाना है तो काम करने के लिए जाता है। आखिर काम क्या चीज है ? काम भी एक संघर्ष है। उन जगहों में कठिनाइयां और समस्याएं मौजूद हैं, जिन्हें हमें दूर करना है और हल करना है। हम कठिनाइयों को दूर करने के लिए वहां काम करने और संघर्ष करने जाते हैं। एक अच्छा कामरेड वह है जो उन जगहों में जाने के लिए ज्यादा उत्सुक रहता है जहां ज्यादा बड़ी कठिनाइयां मौजूद हैं। ऐसे स्थानों में काम करना बहुत कठिन है। कठोर कार्य एक ऐसे वजन की तरह हमारे सम्मुख प्रस्तुत है जो हमें इस बात की चुनौती देता है कि हममें उसे अपने कन्धों पर उठा लेने की हिम्मत है या नहीं। कुछ वजन हल्के होते हैं और कुछ भारी। कुछ लोग भारी वजन के मुकाबले हल्का वजन उठाना पसन्द करते हैं ; वे हल्का वजन खुद उठा लेते हैं और भारी वजन दूसरों के मत्थे मढ़ देते हैं। यह एक अच्छा रुख नहीं है। कुछ अन्य साथी दूसरी तरह के होते हैं ; वे लोग सुख-सुविधाओं को दूसरों के लिए छोड़ देते हैं और खुद भारी वजन उठा लेते हैं ; ऐसे लोग कठिनाइयों को झेलने में सबसे आगे रहते हैं और सुख-सुविधाओं का उपभोग करने में सबसे पीछे रहते हैं। ऐसे लोग अच्छे कामरेड हैं। उनकी कम्युनिस्ट भावना से हम सबको सीखना चाहिए।

बहुत से स्थानीय कार्यकर्ता अपने जन्म-स्थानों को छोड़कर मोर्चे पर जाएंगे। और दक्षिण के रहने वाले बहुत से कार्यकर्ता भी, जो येनान आए हुए हैं, मोर्चे पर जाएंगे। मोर्चे पर जाने वाले सभी साथियों को इस बात के लिए मानसिक रूप से तैयार रहना चाहिए कि एक बार वहां पहुंचने पर वे अपनी जड़ें जमा लें और फलें-फूलें। हम कम्युनिस्ट बीज के समान होते हैं और जनता भूमि के समान होती है। हम लोग जहां कहीं भी जाएं, वहां हमें जन-समुदाय के साथ एकता कायम करनी चाहिए, उसके बीच अपनी जड़ें जमा लेनी चाहिए और उसके बीच फलना-फूलना चाहिए। हमारे साथियों को चाहिए कि वे जहां कहीं भी जाएं, वहां जन-समुदाय के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करें, हर तरह से उसका खयाल रखें और उसकी मुश्किलों को हल करने में मदद करें। हमें जन-समुदाय के साथ एकता कायम कर लेनी चाहिए ; जितने ज्यादा लोगों के साथ हम एकता कायम करेंगे उतना ही अच्छा होगा। साहस के साथ जन-समुदाय को गोलबन्द किया जाए और जनता की शक्ति का विस्तार किया जाए, जिससे वह हमारी पार्टी के नेतृत्व में आक्रमणकारियों को पराजित करे और एक नए चीन की स्थापना करे। यही वह नीति है जिसे हमारी पार्टी की सातवीं कांग्रेस ने निर्धारित किया है।[१] इसे कार्यान्वित करने की हमें भरपूर कोशिश करनी चाहिए। चीन अपने मामलों का संचालन करने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी और जनता पर निर्भर रहता है। शान्ति और जनवाद की प्राप्ति के लिए हमारे पास संकल्प और उपाय दोनों मौजूद हैं। यदि हम समूची जनता के साथ और अधिक घनिष्ठता से एकताबद्ध हो जाएं, तो चीन के मामलों को सुचारु रूप से चलाया जा सकता है।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद की दुनिया का भविष्य उज्ज्वल है। यह

एक आम रुझान है। लन्दन में आयोजित पांच शक्तियों के विदेश मंत्रियों का सम्मेलन असफल होने [५] का मतलब क्या यह है कि तीसरा विश्वयुद्ध छिड़ने ही वाला है? ऐसा नहीं है। जरा सोचो तो, दूसरे विश्वयुद्ध के फौरन बाद भला तीसरा विश्वयुद्ध कैसे छिड़ सकता है? पूंजीवादी और समाजवादी देश अभी अनेक अन्तरराष्ट्रीय मसलों के बारे में समझौते करेंगे, क्योंकि समझौते करना उनके लिए फायदेमन्द साबित होगा। [६] समूची दुनिया के सर्वहारा वर्ग और जनगण सोवियत-विरोधी और कम्युनिस्ट-विरोधी युद्ध का दृढ़ता से विरोध करते हैं। पिछले तीस वर्षों में दो विश्वयुद्ध हो चुके हैं। प्रथम विश्वयुद्ध और दूसरे विश्वयुद्ध के बीच २० वर्ष से ज्यादा समय का अन्तर था। मानव जाति के इतिहास के पांच लाख वर्षों में केवल पिछले ३० वर्षों के अन्दर ही विश्वयुद्ध हुए हैं। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद दुनिया ने भारी तरक्की की। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद यह निश्चित है कि दुनिया और अधिक तेजी से तरक्की करेगी। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद सोवियत संघ का जन्म हुआ और सारी दुनिया में बीसियों कम्युनिस्ट पार्टियों की स्थापना की गई—ये सब पहले नहीं थे। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद सोवियत संघ पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली हो गया है, योरप की शकल बदल गई है, दुनिया के सर्वहारा वर्ग और जनता की राजनीतिक चेतना का स्तर पहले से कहीं अधिक ऊंचा हो गया है, तथा समूची दुनिया की प्रगतिशील शक्तियां पहले से कहीं अधिक घनिष्ठता से एकताबद्ध हो गई हैं। हमारा चीन भी बड़ी तेजी के साथ और प्रचण्ड रूप से बदल रहा है। चीन के विकास का आम रुझान निश्चय ही बेहतरी की ओर है, बदतरी की ओर नहीं। दुनिया प्रगति कर रही है, उसका भविष्य उज्ज्वल है, तथा

इतिहास के इस आम रुझान को कोई नहीं बदल सकता। हमें चाहिए कि जनता के बीच दुनिया की तरक्की से सम्बन्धित तथ्यों तथा दुनिया के उज्ज्वल भविष्य के बारे में लगातार प्रचार करते रहें, ताकि उसके अन्दर विजय का विश्वास पैदा हो जाए। साथ ही, हमें जनता को और अपने साथियों को यह भी बता देना चाहिए कि हमारा रास्ता एक टेढ़ामेढ़ा रास्ता है। क्रान्ति के रास्ते में अब भी बहुत सी बाधाएं और कठिनाइयां मौजूद हैं। हमारी पार्टी की सातवीं कांग्रेस का यह विचार था कि हमें बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि हमने यह सोचना ज्यादा बेहतर समझा कि हमें कम नहीं बल्कि ज्यादा कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। कुछ साथियों को कठिनाइयों के बारे में ज्यादा सोचना पसन्द नहीं है। लेकिन कठिनाइयां भी तथ्य होती हैं; जितनी कठिनाइयां मौजूद हों उन सबको हमें मानना चाहिए तथा "न मानने की नीति" नहीं अपनानी चाहिए। हमें कठिनाइयों को मानना चाहिए, उनका विश्लेषण करना चाहिए और उनके खिलाफ संघर्ष करना चाहिए। दुनिया में सीधे रास्ते कहीं नहीं हैं; हमें टेढ़ेमेढ़े रास्ते तय करने के लिए तैयार रहना चाहिए तथा मुफ्त में कामयाबी हासिल करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। यह नहीं सोचना चाहिए कि किसी दिन सुबह तमाम प्रतिक्रियावादी अपने आप घुटने टेक देंगे। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हमारा भविष्य उज्ज्वल है लेकिन हमारा रास्ता टेढ़ामेढ़ा है। अब भी हमारे सामने बहुत सी कठिनाइयां मौजूद हैं, जिनको हमें नजरअन्दाज नहीं करना चाहिए। समूची जनता के साथ एकता कायम करके, अपनी मुश्तरका कोशिशों के

जरिए हम अवश्य ही तमाम मुश्किलों पर काबू पा सकते हैं और विजय प्राप्त कर सकते हैं।

नोट

[1] यहां "बातचीत के सारांश" का उल्लेख किया गया है, जो "१० अक्तूबर समझौता" भी कहलाता है। इस सारांश पर क्वोमिन्ताङ और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों ने १० अक्तूबर १९४५ को हस्ताक्षर किए थे। इस सारांश में च्याङ काई-शेक को "शान्तिपूर्ण राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की बुनियादी नीति" को, जिसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने पेश किया था, स्वीकार करने का दिखावा करना पड़ा और "शान्ति, जनवाद, एकता और एकीकरण के आधार पर. . . दीर्घकालीन सहयोग करने, गृहयुद्ध की दृढ़ता के साथ रोकथाम करने तथा एक स्वाधीन, स्वतंत्र, समृद्ध और शक्तिशाली नए चीन का निर्माण करने" की बात को मंजूर करना पड़ा, तथा "राजनीतिक जीवन के जनवादीकरण, सेनाओं के राष्ट्रीयकरण और राजनीतिक पार्टियों की समानता व वैधता को शान्तिपूर्ण राष्ट्रीय पुन-र्निर्माण के लिए अत्यन्त अनिवार्य उपाय" मानना पड़ा। उसे यह भी मानना पड़ा कि क्वोमिन्ताङ की राजनीतिक अभिभावकता को जल्दी ही खत्म कर दिया जाएगा, एक राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाया जाएगा, "व्यक्ति, विश्वास, भाषण, प्रेस, सभा व संगठन की आजादियों की, जिनका उपभोग सभी जनवादी देशों की जनता शान्ति-काल में करती है, गारन्टी की जाएगी तथा इसी उसूल के अनुरूप वर्तमान कानूनों और आदेशों को रद्द कर दिया जाएगा अथवा उनमें संशोधन कर दिया जाएगा", खुफिया विभागों को खत्म कर दिया जाएगा, "न्याय-पालिका और पुलिस को छोड़कर बाकी सभी संगठनों को, जनता को गिरफ्तार करने, उसके मुकदमों की सुनवाई करने और उसे सजा देने की सख्त मनाही कर दी जाएगी", "राजनीतिक बन्दियों को रिहा कर दिया जाएगा", "सक्रियता से स्थानीय स्वायत्त शासन पर अमल किया जाएगा तथा नीचे के स्तरों से ऊपर

के स्तरों की ओर आम चुनाव कराए जाएंगे", वगैरह-वगैरह। लेकिन च्याङ काई-शेक सरकार ने जन-सेना की कानूनी हैसियत को और मुक्त क्षेत्रों की जनवादी सरकारों की कानूनी हैसियत को मान्यता देने से कतई इनकार कर दिया, तथा "फौजी कमान का एकीकरण करने" और "सरकारी प्रशासन का एकीकरण करने" का बहाना बनाकर, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में काम करने वाली जन-सेना को और मुक्त क्षेत्रों को जड़मूल से खत्म कर डालने की नाकाम कोशिश की; परिणामस्वरूप इस मसले के बारे में कोई समझौता नहीं हो सका। "बात-चीत के सारांश" के कुछ अंश नीचे दिए जा रहे हैं, जिनमें मुक्त क्षेत्रों की सशस्त्र सेनाओं और राजनीतिक सत्ता से सम्बन्धित सवालों के बारे में हुई समझौता-वार्ता की चर्चा की गई है; "सारांश" में आए तथाकथित "सरकार" शब्द का तात्पर्य च्याङ काई-शेक की क्वोमिन्ताङ सरकार से है।

"सेनाओं के राष्ट्रीयकरण के बारे में। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने प्रस्ताव रखा कि फौजी कमान का एकीकरण करने के उद्देश्य से सरकार को चाहिए कि वह समूचे देश की सशस्त्र सेनाओं का न्यायोचित और युक्तियुक्त ढंग से पुनर्गठन कर दे, इस कार्य को मंजिल-दर-मंजिल पूरा करने का एक कार्यक्रम बनाए, फौजी क्षेत्रों को नए सिरे से निर्धारित करे, तथा अनिवार्य भरती और क्षतिपूर्ति की व्यवस्था कायम करे। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने बताया कि यदि इस प्रकार का कार्यक्रम बनाया गया, तो वह अपनी कमान में मौजूद जापान-विरोधी फौजों को घटाकर चौबीस डिवीजनों तक या कम से कम बीस डिवीजनों तक सीमित करने, तथा क्वाङतुङ, चच्याङ, दक्षिणी च्याङसू, दक्षिणी आनह्वेइ, मध्य आनह्वेइ, हूनान, हुपे और हनान (जिसमें उत्तरी हनान शामिल नहीं है) के इन आठ क्षेत्रों में फैली हुई अपनी फौजों का विसैन्यीकरण करने के लिए तुरत कार्यवाही करने को तैयार है। जिन फौजों को पुनर्गठित किया जाना है उन्हें कदम-ब-कदम उक्त क्षेत्रों से हटा लिया जाएगा तथा लुङहाए रेलवे के उत्तर में स्थित मुक्त क्षेत्रों में और उत्तरी च्याङसू व उत्तरी आनह्वेइ के मुक्त क्षेत्रों में एकत्रित कर लिया जाएगा। सरकार ने बताया कि देशव्यापी पैमाने पर फौजों के पुनर्गठन के कार्यक्रम को अमली रूप दिया जा रहा है, तथा सरकार चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलने वाली जापान-विरोधी फौजों को घटाकर बीस डिवीजनों में पुनर्गठित

किए जाने के मामले पर विचार करने को तैयार है, बशर्ते कि वर्तमान समझौता-वार्ता में उठाए गए तमाम सवालों को हल कर लिया जाए। जहां तक इन फौजों को तैनात करने का सवाल है, इसके बारे में सरकार ने कहा कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी विचार करने और निर्णय करने के लिए अपनी योजनाएं पेश कर सकती है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने प्रस्ताव रखा कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और उसके स्थानीय फौजी कर्मचारियों को राष्ट्रीय फौजी परिषद और उसके विभिन्न विभागों के कार्य में भाग लेना चाहिए, सरकार को वर्तमान कर्मचारी व्यवस्था को बनाए रखना चाहिए और वर्तमान कर्मचारियों को पुनर्गठित यूनिटों में विभिन्न पदों पर नियुक्त कर देना चाहिए, तथा जिन अफसरों की पुनर्गठन के बाद नियुक्ति न की गई हो उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में ट्रेनिंग देने के लिए भेज दिया जाना चाहिए, रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए एक न्यायोचित और युक्तियुक्त व्यवस्था कायम की जानी चाहिए और राजनीतिक शिक्षा देने की एक योजना निश्चित की जानी चाहिए। सरकार ने बताया कि उसे इन प्रस्तावों पर कोई एतराज नहीं है और वह इन पर विस्तार से विचार-विमर्श करने को तैयार है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने प्रस्ताव रखा कि मुक्त क्षेत्रों के सभी मिलिशियामैनों को स्थानीय आत्मरक्षा कोर के रूप में संगठित किया जाना चाहिए। सरकार ने बताया कि इस प्रकार के संगठन केवल वहीं समुचित मात्रा में स्थापित किए जाएं जहां की परिस्थिति ऐसा करने की मांग करती हो अथवा इजाजत देती हो। इस अनुच्छेद में उल्लिखित सभी प्रश्नों के बारे में ठोस योजना बनाने के उद्देश्य से, दोनों पक्षों ने यह मंजूर किया कि तीन व्यक्तियों का एक ग्रुप बना दिया जाए, जिसमें राष्ट्रीय फौजी परिषद के फौजी कार्यवाही बोर्ड, युद्ध मंत्रालय और १८वीं ग्रुप-सेना का एक-एक प्रतिनिधि मौजूद हो।"

"मुक्त क्षेत्रों की स्थानीय सरकारों के बारे में। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने प्रस्ताव रखा कि सरकार को मुक्त क्षेत्रों की आम जनता द्वारा चुनी गई सभी स्तरों की सरकारों की कानूनी हैसियत को मान्यता देनी चाहिए। सरकार ने बताया, चूंकि जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया है, इसलिए मुक्त क्षेत्र जैसी शब्दावली अब पुरानी पड़ चुकी है, तथा समूचे देश के सरकारी प्रशासन का एकीकरण करना चाहिए। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा शुरू में पेश किया गया

फार्मूला यह था कि अठारह मुक्त क्षेत्रों के अस्तित्व की रोशनी में प्रान्तीय और प्रशासनिक क्षेत्रों को नए सिरे से निर्धारित किया जाना चाहिए तथा सरकारी प्रशासन का एकीकरण करने के लिए वह आम जनता द्वारा चुनी गई विभिन्न स्तरों की तमाम स्थानीय सरकारों के कर्मचारियों की सूची पेश करेगी, जिन्हें केन्द्रीय सरकार फिर से नियुक्त कर देगी। सरकार ने बताया कि केन्द्रीय सरकार, जैसा कि अध्यक्ष च्याङ ने श्री माओ को बताया है, समूचे देश में फौजी कमान और सरकारी प्रशासन का एकीकरण कर देने के बाद, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा नामजद प्रशासनिक कर्मचारियों के मामले पर गौर करेगी। सरकार इस बात पर गौर करेगी कि उन प्रशासनिक कर्मचारियों को, जिन्होंने प्रतिरोध-युद्ध के दौरान दुश्मन से पुनः प्राप्त किए गए क्षेत्रों में काम किया है, उनकी योग्यता और सेवा के रिकार्ड को ध्यान में रखते हुए समुचित मात्रा में अपने पदों पर बने रहने दिया जाए, चाहे वे किसी भी पार्टी के सदस्य क्यों न हों। इसके बाद, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने एक अन्य फार्मूला पेश किया, जिसमें केन्द्रीय सरकार से कहा गया था कि वह शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र तथा जेहोल, छाहाड़, हपे, शानतुङ और शानशी इन पांच प्रान्तों की प्रान्तीय सरकारों के अध्यक्षों व सदस्यों के पद पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा नामजद किए गए व्यक्तियों को नियुक्त कर दे, तथा स्वेय्वान, हनान, च्याङसू, आनह्वेइ, हूपे और क्वाङतुङ इन छै प्रान्तीय सरकारों में उपाध्यक्षों व सदस्यों के पद पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा नामजद व्यक्तियों को नियुक्त कर दे (कारण, उपर्युक्त ग्यारह प्रान्तों में विशाल मुक्त क्षेत्र अथवा उनके हिस्से फैले हुए हैं)। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने यह प्रस्ताव भी रखा कि पेफिङ, थ्येनचिन, छिङताओ और शांघाई इन चार विशेष म्युनिसिपलटियों में उप-मेयरों के पद पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा नामजद किए गए व्यक्तियों को नियुक्त किया जाए, तथा उत्तर-पूर्वी प्रान्तों के प्रशासन में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा नामजद किए गए व्यक्तियों को शामिल किया जाए। इस मामले पर काफी बहस होने के बाद, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने उक्त प्रस्तावों में फेरबदल करके यह प्रस्ताव रखा कि उसके द्वारा नामजद किए गए व्यक्तियों को शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र तथा जेहोल, छाहाड़, हपे और शानतुङ इन चार प्रान्तों की प्रान्तीय सरकारों के अध्यक्ष और सदस्य नियुक्त कर दिया

जाए, शानशी और स्वेय्वान इन दो प्रान्तीय सरकारों के उपाध्यक्ष और सदस्य नियुक्त कर दिया जाए, तथा पेफिङ, थ्येनचिन और छिङताओ इन तीन विशेष म्युनिसिपलटियों के उप-मेयर नियुक्त कर दिया जाए। इसके जवाब में सरकार ने कहा कि जहां एक ओर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अपने उन सदस्यों को नियुक्तियों के लिए सरकार के पास नामजद कर सकती है जिन्होंने प्रतिरोध-युद्ध के दौरान उल्लेखनीय कार्य किया है तथा जिनके पास प्रशासनिक योग्यता मौजूद है, वहां यदि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने किसी प्रान्तीय सरकार के अध्यक्ष व सदस्य अथवा उपाध्यक्ष के रूप में अपना आदमी नामजद करने पर जोर दिया, तो यह फौजी कमान और सरकारी प्रशासन का एकीकरण करने के लिए सच्चे दिल से कोशिश करना नहीं कहलाएगा। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने तब यह कहा कि वह अपना दूसरा प्रस्ताव वापस लेती है तथा उसने तीसरा फार्मूला पेश किया। उसने सुझाव दिया कि मुक्त क्षेत्रों में जनता द्वारा चुनी गई सभी स्तरों की वर्तमान सरकारों के मातहत फिर से आम चुनाव कराए जाएं, तथा सभी राजनीतिक पार्टियों के सदस्यों और विभिन्न व्यवसायों के उन लोगों का स्वागत किया जाए जो अपने जन्म-स्थानों को लौटकर राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन द्वारा नामजद व्यक्तियों की देखरेख में चुनावों में हिस्सा लें। जिस किसी काउन्टी में आधे से ज्यादा जिलों और श्याङों की जनता पहले ही आम चुनाव सम्पन्न करा चुकी हो, वहां काउन्टी स्तर का आम चुनाव करा दिया जाए। इसी प्रकार जिस किसी प्रान्त अथवा प्रशासनिक क्षेत्र में आधे से ज्यादा काउन्टियों की जनता पहले ही आम चुनाव सम्पन्न करा चुकी हो, वहां प्रान्तीय अथवा प्रशासनिक क्षेत्रीय स्तर का आम चुनाव करा दिया जाए। सरकारी प्रशासन के एकीकरण के हित में, उन तमाम अफसरों के नाम जो इस प्रकार प्रान्तीय, प्रशासनिक क्षेत्रीय और काउन्टी सरकारों के लिए चुने जाएं, उनकी नियुक्तियों की पुष्टि करने के लिए केन्द्रीय सरकार के पास भेज दिए जाएं। सरकार ने जवाब दिया कि प्रान्तों और क्षेत्रों में की जाने वाली नियुक्तियों की सरकार द्वारा पुष्टि किए जाने का यह फार्मूला सरकारी प्रशासन के एकीकरण के हित में नहीं है। सरकार काउन्टी अफसरों का तो आम जनता द्वारा चुनाव कराने पर विचार कर सकती है, लेकिन प्रान्तीय सरकारों का आम जनता द्वारा चुनाव सिर्फ तभी कराया जा सकता है जब राष्ट्रीय संविधान

की घोषणा की जा चुकी हो, जब प्रान्तों की हैसियत निर्धारित की जा चुकी हो। फिलहाल प्रान्तीय सरकार के केवल वही अफसर अपने पद सम्भालें जिनकी नियुक्ति केन्द्रीय सरकार ने की हो, ताकि पुनः प्राप्त किए गए क्षेत्रों में जल्दी से जल्दी सामान्य स्थिति कायम की जा सके। इस पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने चौथा फार्मूला पेश किया, यानी जब तक आम जनता द्वारा प्रान्तीय सरकारों का चुनाव कराने के लिए वैधानिक व्यवस्था नहीं कर दी जाती और उस पर अमल नहीं कर लिया जाता, तब तक सभी मुक्त क्षेत्रों में यथापूर्व स्थिति बनाए रखी जाए, तथा फिलहाल शान्तिपूर्ण व्यवस्था की पुनर्स्थापना की गारन्टी करने के लिए अस्थाई तौर पर इन्तजाम कर लिया जाए। साथ ही चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने बताया कि इस विशिष्ट समस्या को हल करने के लिए इसे राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के सुपुर्द कर दिया जाए। सरकार ने इस बात पर जोर दिया कि सरकारी प्रशासन के एकीकरण पर पहले अमल किया जाए, क्योंकि अगर इस समस्या को हल किए बिना छोड़ दिया गया तो यह शान्तिपूर्ण पुनर्निर्माण के लिए बाधक बन जाएगी, तथा सरकार ने यह आशा व्यक्त की कि इस मामले के बारे में जल्दी ही एक ठोस फार्मूला मंजूर कर लिया जाएगा। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने और अधिक विचार-विमर्श करना मंजूर कर लिया।"

२ शाङताङ शानशी प्रान्त के दक्षिण-पूर्वी हिस्से का, जिसका केन्द्र छाङचि था, प्राचीन नाम है। इसके पहाड़ी इलाकों में जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान आठवीं राह सेना की १२९वीं डिवीजन का आधार-क्षेत्र था तथा यह शानशी-हपे-शानतुङ-हनान मुक्त क्षेत्र का एक भाग था। सितम्बर १९४५ में क्वोमिन्ताङ युद्ध-सरदार येन शी-शान ने तेरह डिवीजनें केन्द्रित करके, जापानी और कठपुतली फौजों के तालमेल से, दक्षिण-पूर्वी शानशी मुक्त क्षेत्र के श्याङ-य्वान, थुनल्यू और लूछङ पर आक्रमण करने के लिए लिनफ़न, फ़ूशान और ईछङ से तथा थाएय्वान और य्वीछि से एक के बाद एक कूच किया। अक्तूबर में इस मुक्त क्षेत्र की सेना और जनता ने हमलावर सेना पर जवाबी प्रहार कर दिया, उसके ३५,००० हमलावर सैनिकों का सफाया कर डाला तथा अनेक उच्च अफसरों को, जिनमें कोर व डिवीजन कमाण्डर भी शामिल थे, बन्दी बना लिया।

३ यहां उस अनुभव का उल्लेख किया गया है जिसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी

ने १९२७ से, जब क्वोमिन्ताङ ने क्रान्ति के साथ विश्वासघात किया था, १९४५ तक क्वोमिन्ताङ के खिलाफ संघर्ष में प्राप्त किया।

४ "मिलीजुली सरकार के बारे में" शीर्षक रचना के भाग ४ में "हमारा ठोस कार्यक्रम" नामक परिच्छेद के दूसरे अनुच्छेद से उद्धृत ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ ३)।

५ यहां जन-सेना के उन आधार-क्षेत्रों का हवाला दिया गया है जो क्वाङतुङ, चच्याङ, दक्षिणी च्याङसू, दक्षिणी आनहवेइ, मध्य आनहवेइ, हुनान, हुपे और हनान (जिसमें उत्तरी हनान शामिल नहीं है) में फैले हुए थे।

६ देखिए : "चीन के दो सम्भावित भाग्य" और "एक मूर्ख बूढ़ा आदमी, जिसने पहाड़ों को हटा दिया" ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ ३)।

७ ११ सितम्बर से २ अक्तूबर १९४५ तक सोवियत संघ, चीन, अमरीका, बरतानिया और फ्रांस के विदेश मंत्रियों की लन्दन में एक मीटिंग हुई, जिसमें इटली, रूमानिया, बलगारिया, हंगरी और फिनलैण्ड के साथ, जिन्होंने फासिस्ट जर्मनी द्वारा शुरू किए गए आक्रमणकारी युद्ध में भाग लिया था, शान्ति सन्धियां करने के बारे में तथा इटालवी उपनिवेशों का निपटारा करने के बारे में विचार-विमर्श किया गया। इस मीटिंग में कोई समझौता नहीं हो सका, क्योंकि अमरीका, बरतानिया और फ्रांस ने आक्रमण की अपनी साम्राज्यवादी नीति पर अड़े रहकर, फासिस्ट-विरोधी युद्ध की विजय के बाद रूमानिया, हंगरी और बलगारिया में स्थापित जन-सरकारों को उलट देने की नाकाम कोशिश की और सोवियत संघ द्वारा पेश किए गए युक्तिसंगत प्रस्तावों को ठुकरा दिया।

८ देखिए इसी ग्रन्थ में "वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति के मूल्यांकन के बारे में कुछ बातें" शीर्षक रचना।

क्वोमिन्ताङ के हमलों की असलियत*

५ नवम्बर १९४५

छुङकिङ से ३ नवम्बर के अपने एक समाचार में यूनाइटेड प्रेस ने बताया है कि क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के प्रचार विभाग के निर्देशक ऊ क्वो-चन ने ऐलान किया है कि "इस युद्ध में सरकार पूरे तौर पर रक्षात्मक कार्यवाही ही करती रही है", और उसने "संचार-व्यवस्था को फिर से चालू करने"[१] के लिए उपाय पेश किए हैं। शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के एक संवाददाता ने इस बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता से पूछताछ की।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता ने संवाददाता को यह जवाब दिया : "रक्षात्मक कार्यवाही करने" की जो बात ऊ क्वो-चन ने कही है, वह सरासर झूठ है। पूर्वी चच्याङ, दक्षिणी च्याङसू, मध्य व दक्षिणी आनह्वेइ और हुनान के जिन पांच मुक्त क्षेत्रों से हमारी सेनाएं हटी हैं, उन पर अधिकार जमा लेने और उनकी जनता को रौंदने के अलावा क्वोमिन्ताङ ने क्वाङतुङ, हुपे, हनान, उत्तरी

*कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा तैयार किया गया यह वक्तव्य चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता के नाम से जारी किया गया था। उस समय तक च्याङ काई-शेक "१० अक्तूबर समझौते" को फाड़ चुका था और मुक्त क्षेत्रों के विरुद्ध गृहयुद्ध दिनोंदिन फैलता जा रहा था।

च्याङसू, उत्तरी आनह्वेइ, शानतुङ और हुपे के मुक्त क्षेत्रों जैसे अन्य अधिकतर मुक्त क्षेत्रों में या उनके बिलकुल पास तक अपनी नियमित सेना की सत्तर से अधिक डिवीजनें पहुंचा दी हैं ; वह उन क्षेत्रों की जनता का उत्पीड़न कर रही है और हमारी सेनाओं पर हमले कर रही है अथवा हमले करने की तैयारियों में लगी हुई है। इतना ही नहीं, बीसियों दूसरी क्वोमिन्ताङ डिवीजनें मुक्त क्षेत्रों की ओर बढ़ रही हैं। क्या इसे रक्षात्मक कार्यवाही ही कहा जाएगा? चाङते से उत्तर की ओर बढ़ती हुई आठ क्वोमिन्ताङ डिवीजनें जब हानतान पहुंचीं, तो उनमें से दो ने गृहयुद्ध का विरोध किया और शान्ति की हिमायत की, जबकि बाकी छै डिवीजनों (इनमें तीन डिवीजनें अमरीकी साज-सामान से लैस थीं) को, मुक्त क्षेत्रों की सेनाओं और जनता द्वारा आत्मरक्षा के लिए किए गए जवाबी हमले के बाद मजबूर होकर अपने हथियार डाल देने पड़े। युद्ध-क्षेत्र के उप-कमाण्डरों, कोर कमाण्डरों, उप-कोर कमाण्डरों आदि समेत इन क्वोमिन्ताङ सेनाओं के कितने ही अफसर अब मुक्त क्षेत्रों में मौजूद हैं,[९] और इस बारे में वे सारी असलियत साबित कर सकते हैं कि वे कहां से आए और उन्हें हमले करने के आदेश कैसे दिए गए। इसे भी क्या रक्षात्मक कार्यवाही ही कहा जाएगा? हनान और हुपे प्रान्तों के मुक्त क्षेत्रों में हमारी सेनाएं इस समय क्वोमिन्ताङ के पहले, पांचवें और छठे युद्ध-क्षेत्रों की बीस से अधिक क्वोमिन्ताङ डिवीजनों से पूरी तरह घिरी हुई हैं, और ल्यू च "कम्युनिस्टों के विनाश" का इनचार्ज प्रधान कमाण्डर है। पश्चिमी व मध्य हनान और दक्षिणी, पूर्वी व मध्य हुपे में हमारे तमाम मुक्त क्षेत्रों पर क्वोमिन्ताङ सेनाओं ने हमले किए हैं और उन पर अधिकार कर लिया

है ; उन्होंने बेलगाम होकर इतने बड़े पैमाने पर आगजनी और हत्याएं की हैं कि ली श्येन-न्येन और वाङ शू-शङ की कमान में हमारी सेनाओं को कहीं आश्रय नहीं मिला और उन्हें अपनी जान बचाने के लिए हनान-हुपे सीमान्त पर पड़ाव डालने के लिए ठिकाने ढूंढ़ने पड़े। लेकिन क्वोमिन्ताङ सेनाओं ने वहां भी उनका पीछा किया और उन पर हमले किए।[३] इसे भी क्या रक्षात्मक कार्यवाही ही कहा जाएगा? शानशी, स्वेइय्वान और छाहाड़ इन तीनों प्रान्तों में भी यही हालत है। अक्तूबर के शुरू में येन शी-शान के आदेश पर तेरह डिवीजनों ने हमारे शाङताङ मुक्त क्षेत्र के श्याङय्वान-थुनल्यू इलाके पर चढ़ाई की। आत्मरक्षा के लिए लड़ती हुई वहां की हमारी सेनाओं और जनता ने उन सबको निहत्था कर दिया, और बन्दी बनाए गए लोगों में कई कोर कमाण्डर और डिवीजनल कमाण्डर भी थे। फिलहाल वे हमारे थाएहाङ मुक्त क्षेत्र में हैं, सबके सब जीवित हैं और इस बारे में सारी असलियत साबित कर सकते हैं कि वे कहां से आए और उन्हें चढ़ाई करने का आदेश कैसे दिया गया। अभी हाल में येन शी-शान ने छुङकिङ में तरह-तरह की झूठी बातों का सहारा लेकर यह बताना चाहा कि कैसे उस पर हमला हुआ था और कैसे उसने महज "रक्षात्मक कार्यवाही" की। शायद वह इस बात को भूल बैठा था कि उसके जनरल – १९वीं फौजी कोर का कमाण्डर श त्से-पो, अस्थाई ४६वीं डिवीजन का कमाण्डर क्वो रुङ, अस्थाई ४९वीं डिवीजन का कमाण्डर चाङ हुङ, ६६वीं डिवीजन का कमाण्डर ली फेङ-इङ, ६८वीं डिवीजन का कमाण्डर क्वो थ्येन-शिङ और अस्थाई ३७वीं डिवीजन का कमाण्डर याङ वन-छाए[४] – फिलहाल हमारे मुक्त क्षेत्रों में मौजूद हैं और ये लोग ऊ क्वो-चन, येन शी-

शान और गृहयुद्ध भड़काने वाले तमाम दूसरे प्रतिक्रियावादियों के किसी भी झूठे कथन का खण्डन कर सकते हैं। अपने ऊपर वालों के आदेश पर जनरल फू च्वो-ई पिछले दो महीने से भी ज्यादा समय से स्वेय्वान, छाहाड़ और जेहोल के हमारे मुक्त क्षेत्रों पर हमले करता रहा है और एक मौके पर तो वह चाङच्याखग्रो के ऐन दरवाजे तक घुसा चला आया और उसने हमारे पूरे स्वेय्वान मुक्त क्षेत्र और पश्चिमी छाहाड़ पर कब्जा कर लिया। इसे भी क्या रक्षात्मक कार्यवाही करना और "पहली गोली" न दागना ही कहेंगे? छाहाड़ और स्वेय्वान स्थित हमारी सेनाएं और जनता आत्मरक्षा के लिए उठ खड़ी हुई और अपने जवाबी हमलों के दौरान उन्होंने भी बड़ी तादाद में अफसरों और सिपाहियों को गिरफ्तार किया, जो सबके सब इस बात को साबित कर सकते हैं कि वे कहां से आए, उन्होंने हमले कैसे किए, वगैरह-वगैरह।[5] आत्मरक्षा की विविध लड़ाइयों में हमने "डाकू-विनाश" और कम्युनिस्ट-विरोधी दस्तावेजों के गट्ठर के गट्ठर पकड़े हैं, जिनमें "डाकू-विनाश निर्देशन पुस्तिका", "डाकू-विनाश" के लिए आदेश[6] और कई अन्य कम्युनिस्ट-विरोधी दस्तावेज शामिल हैं, जो सभी उच्चतम क्वोमिन्ताङ अधिकारियों द्वारा जारी किए गए हैं, मगर जिन्हें ऊ क्वो-चन ने "दिल्लगी" कहकर टाल दिया है; इन दस्तावेजों को अब येनान भेजा जा रहा है। ये सभी दस्तावेज इस बात के अकाट्य प्रमाण हैं कि क्वोमिन्ताङ सेनाओं ने मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाइयां की हैं।

शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के संवाददाता ने इसके बाद चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता से यह पूछा कि संचार-व्यवस्था को फिर से चालू करने के बारे में ऊ क्वो-चन के प्रस्तावित उपायों के सम्बन्ध

में आपके विचार क्या हैं? प्रवक्ता ने जवाब दिया कि ये उपाय और कुछ नहीं, अपने दांव खेलने का मौका आने तक के लिए टक्कर को टाले रखने के दांवपेंच भर हैं। क्वोमिन्ताङ के अधिकारी बड़ी-बड़ी फौजें जमा कर रहे हैं और फौजों की भारी बाढ़ के एक ही बहाव में हमारे तमाम मुक्त क्षेत्रों को डुबो देना चाहते हैं। सितम्बर और अक्तूबर में एक के बाद एक उनके कई हमलों के नाकाम हो जाने के बाद वे अब नए सिरे से और ज्यादा बड़े पैमाने पर हमले करने की तैयारियां कर रहे हैं। इन हमलों को रोकने, अर्थात गृहयुद्ध टालने के उपायों में एक कारगर उपाय यह है कि उन्हें रेलगाड़ी से अपनी फौजें न पहुंचाने दिया जाए। संचार-पंक्तियों को शीघ्रतापूर्वक फिर से चालू करने की पैरवी जैसे हर कोई कर रहा है वैसे ही हम भी कर रहे हैं, लेकिन यह काम जापान का आत्मसमर्पण स्वीकार करने, कठपुतली सेनाओं को ठिकाने लगाने और मुक्त क्षेत्रों में स्वायत्त शासन लागू करने के बाद, यानी इन तीनों समस्याओं के हल हो जाने पर ही हो सकेगा। कौन सी समस्या पहले हल की जानी चाहिए, संचार की समस्या अथवा ये तीन समस्याएं? मुक्त क्षेत्रों की सेनाओं ने पूरे आठ वर्ष तक जापान के खिलाफ जोरदार और कठोर लड़ाई की है, ऐसी हालत में उन्हें भला जापान का आत्मसमर्पण स्वीकार करने के मामले में अयोग्य कैसे करार दिया जा सकता है? और जापान का आत्मसमर्पण स्वीकार करने के लिए दूर-दूर से आने की तकलीफ दूसरी सेनाएं क्यों उठाएं? कठपुतली सेनाओं को सजा देने का अधिकार तो हर नागरिक को है; उन सब सेनाओं को "राष्ट्रीय सेना" का अंग क्यों बनाया जा रहा है और उन्हें मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाई करने का आदेश क्यों दिया जा रहा है? "१० अक्तूबर

समझौते" में स्थानीय स्वायत्त शासन की व्यवस्था बिलकुल स्पष्ट रूप से की गई है ; और बहुत पहले डा० सुन यात-सेन ने भी जनता के मतदान के जरिए प्रान्तीय गवर्नरों के चुने जाने की पैरवी की थी ; फिर क्या कारण है कि क्वोमिन्ताङ सरकार स्थानीय अधिकारियों को भेजने के बारे में जिद पकड़े हुए है ? संचार की समस्या को तो तेजी के साथ सुलझाया ही जाना चाहिए, मगर जो तीन बड़ी समस्याएं हैं उन्हें और भी अधिक तेजी के साथ सुलझाया जाना चाहिए। इन तीन बड़ी समस्याओं को पहले सुलझाए बिना संचार-व्यवस्था को फिर से चालू करने की बातें करना गृहयुद्ध का और अधिक प्रसार करने तथा उसे और अधिक दीर्घकालीन बनाने में ही सहायक होगा और गृहयुद्ध छेड़ने वालों के इस उद्देश्य के पूरा होने में मदद करेगा कि मुक्त क्षेत्रों को एक असहाय स्थिति में डाल दिया जाए। जन-विरोधी और जनवाद-विरोधी गृहयुद्ध को, जो आज देशभर में फैल गया है, जल्द से जल्द रोक देने के लिए हम इन बातों की पेशकश करते हैं :

(१) जापान का आत्मसमर्पण स्वीकार करने और मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाई करने के लिए उत्तरी चीन, उत्तरी च्याङसू, उत्तरी आनह्वेइ और मध्य चीन के मुक्त क्षेत्रों तथा उनके आस-पास के इलाकों में क्वोमिन्ताङ सरकार की जो सेनाएं घुस चुकी हैं, उन्हें वहां से अविलम्ब हटाकर उनके मूल ठिकानों पर वापस भेज दिया जाना चाहिए ; मुक्त क्षेत्रों की सेनाओं को वहां जापान का आत्मसमर्पण स्वीकार करना चाहिए और वहां के नगरों और संचार-पंक्तियों पर गैरिजन का काम अंजाम देना

चाहिए ; और जिन मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाई करके अधिकार कर लिया गया है, उन्हें फिर से मुक्त क्षेत्रों की स्थिति में लौटा दिया जाना चाहिए।

(२) समूची कठपुतली सेनाओं को अविलम्ब निश्शस्त्र करके भंग कर दिया जाना चाहिए और उत्तरी चीन, उत्तरी च्याङसू और उत्तरी आनह्वेइ में उन्हें निश्शस्त्र और भंग करने का यह काम मुक्त क्षेत्रों को अंजाम देना चाहिए।

(३) सभी मुक्त क्षेत्रों में जनता के जनवादी स्वायत्त शासन को मान्यता दी जानी चाहिए ; केन्द्रीय सरकार को स्थानीय अधिकारी न तो नियुक्त करने चाहिए और न ही भेजने चाहिए ; "१० अक्तूबर समझौते" में निर्धारित व्यवस्थाओं को अमल में लाया जाना चाहिए।

प्रवक्ता ने कहा : गृहयुद्ध टालने का बस एक यही उपाय है ; इसके अलावा गृहयुद्ध से बचने का कोई अन्य उपाय नहीं हो सकता। स्वेय्वान, शाङताङ और हानतान में आत्मरक्षा के लिए जो तीन लड़ाइयां हमने लड़ी हैं उनके दौरान पकड़े गए दस्तावेजों से तथा बड़ी संख्या में सेनाओं को भेजने और बड़े पैमाने पर चढ़ाई करने की ठोस कार्यवाहियों से यह बात पूरी तरह साबित हो जाती है कि क्वोमिन्ताङ अधिकारियों का यह दावा सरासर झूठा है कि संचार-व्यवस्था को फिर से चालू करना गृहयुद्ध के वास्ते नहीं बल्कि जनता के वास्ते है। चीनी जनता को काफी लम्बे समय से धोखे में रखा गया है, अब उसे और अधिक धोखे में नहीं रखा जा सकेगा।

इस समय केन्द्रीय समस्या यह है कि समूचे देश की जनता गोलबन्द होकर हर उपाय से गृहयुद्ध को रोक दे।

नोट

[१] जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के समाप्त होने के समय चीन के अधिकतर रेलमार्ग या तो मुक्त क्षेत्रों की सेना और जनता के नियंत्रण में थे अथवा उनसे घिरे हुए थे। "संचार-व्यवस्था को फिर से चालू करने" का बहाना बनाकर क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने मुक्त क्षेत्रों को एक दूसरे से काटकर अलग-थलग कर देने के लिए इन रेलमार्गों का उपयोग करने की कोशिश की और इनके जरिए दसियों लाख क्वोमिन्ताङ सेनाओं को मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाई करने और बड़े नगरों को हड़प लेने के लिए उत्तर-पूर्वी, उत्तरी, पूर्वी और मध्य चीन में पहुंचाने की कोशिश की।

[२] सितम्बर १९४५ में क्वोमिन्ताङ सेनाएं चङचओ और शिनश्याङ के इलाके से शानशी-हपे-शानतुङ-हनान मुक्त क्षेत्र पर चढ़ाई करने के लिए पेफिङ-हानखओ रेलवे के साथ-साथ आगे बढ़ीं। अक्तूबर के अन्त में उनकी तीन अग्रिम फौजी कोरों ने छिश्येन और हानतान के इलाके पर चढ़ाई की। मुक्त क्षेत्र की सेना और जनता आत्मरक्षा के लिए उठ खड़ी हुई और एक सप्ताह की घमासान लड़ाई के बाद क्वोमिन्ताङ के ग्यारहवें युद्ध-क्षेत्र के उप-कमाण्डर और साथ ही नई आठवीं फौजी कोर के कमाण्डर जनरल काओ शू-श्युन ने हानतान में क्वोमिन्ताङ के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और नई आठवीं फौजी कोर तथा एक अन्य कालम के कुल दस हजार से अधिक सिपाही अपने साथ लेकर वह हमारे पक्ष में आ मिला। बाकी दो फौजी कोरें घबराहट में पीछे की ओर भाग खड़ी हुईं, मगर उन्हें घेरकर निश्शस्त्र कर डाला गया। अनेक उच्च पदों के सेनाधिकारी हथियार डाल देने को मजबूर कर दिए गए, जिनमें ये शामिल थे: क्वोमिन्ताङ के ग्यारहवें युद्ध-क्षेत्र का एक अन्य उप-कमाण्डर और साथ ही ४०वीं फौजी कोर का कमाण्डर

मा फ़ा-ऊ, उसी फौजी कोर का उप-कमाण्डर ल्यू श-रुङ, चीफ आफ स्टाफ ली श्वी-तुङ और एक डिवीजन का उप-कमाण्डर ल्यू शू-सन।

[३] जापान के आत्मसमर्पण के बाद क्वोमिन्ताङ ने हूनान और हुपे प्रान्तों के मुक्त क्षेत्रों पर बड़े पैमाने पर चढ़ाई करने के लिए अपने तीन युद्ध-क्षेत्रों से बीस से भी अधिक डिवीजनें इकट्ठी कर लीं। क्वोमिन्ताङ के पहले युद्ध-क्षेत्र के कमाण्डर हू चुङ-नान की सेनाओं का एक भाग पश्चिमी हनान के मुक्त क्षेत्र पर चढ़ाई करने के लिए लुङहाए रेलवे के दोनों ओर से साथ-साथ उत्तर-पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ा; पांचवें युद्ध-क्षेत्र के कमाण्डर ल्यू च की सेनाएं मध्य हनान, तथा मध्य व पूर्वी हुपे के मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाई करने के लिए पेफिङ-हानखओ रेलवे के दोनों ओर से साथ-साथ उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ीं; उनके साथ तालमेल बैठाने के लिए छठे युद्ध-क्षेत्र की सेनाएं दक्षिणी हुपे से उत्तर की ओर बढ़ीं। इनमें से अधिकतर क्वोमिन्ताङ सेनाएं ल्यू च की कमान में थीं। हमलावरों के खिलाफ हनान और हुपे के मुक्त क्षेत्रों की जन-सेना ने जमकर लड़ाई की, साथ ही अपनी शक्ति को भी बरकरार रखा और वह १९४५ के अक्तूबर महीने के अन्त में हनान-हुपे सीमान्त पर ताहुङ पहाड़, थुङपो पहाड़ और चाओयाङ इलाके में चली गई। बाद में चूंकि क्वोमिन्ताङ ने वहां तक भी उसका पीछा करना और उस पर चढ़ाइयां करना जारी रखा, इसलिए वह सेना वहां से भी हटकर पेफिङ-हानखओ रेलवे के पूर्व में श्वेनह्वाल्येन इलाके में चली गई।

[४] शाङताङ की मुहिम के बारे में जानकारी के लिए देखिए इसी ग्रन्थ में "छुङकिङ समझौता-वार्ता के बारे में" शीर्षक रचना का नोट २। बन्दी बनाए गए जिन क्वोमिन्ताङ सेनाधिकारियों का उल्लेख यहां किया गया है, वे सबके सब येन शी-शान की सेना में उच्च पदों पर नियुक्त जनरल थे।

[५] स्वेय्वान एक प्रान्त था, जिसे ६ मार्च १९५४ को तोड़कर भीतरी मंगोलिया स्वायत्त-प्रदेश में मिला दिया गया। जनरल फ़ू च्वो-ई १९४५ में क्वोमिन्ताङ के बारहवें युद्ध-क्षेत्र का कमाण्डर था। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान उसकी सेनाएं पश्चिमी स्वेय्वान स्थित ऊय्वान और लिनहो में और इन दोनों जगहों के आसपास तैनात थीं। जापान के आत्मसमर्पण के बाद जनरल फ़ू च्वो-ई को स्वेय्वान, जेहोल और छाहाड़ प्रान्तों के मुक्त क्षेत्रों पर हमला करने का आदेश

मिला। अगस्त १९४५ में उसने क्वेइस्वेइ, चीनिङ और फङचन पर कब्जा कर लिया। सितम्बर के शुरू में वह शिङहो, शाङई, ऊय्वान, थाओलिन, शिनथाङ और ल्याङछङ पर कब्जा करके और छाहाड़ मुक्त क्षेत्र पर भारी आक्रमण आरम्भ करके चाङच्याखओ के पास तक आ घुसा। आत्मरक्षा के लिए हमारी सेनाओं ने इन हमलों को विफल कर दिया और फू च्वो-ई के सैनिक अफसरों और सिपाहियों को बहुत बड़ी तादाद में बन्दी बना लिया।

९ "डाकू-विनाश निर्देशन पुस्तिका" चीनी जनता की सैन्य-शक्तियों और क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों पर चढ़ाई करने के तरीकों का विशेष विवरण प्रस्तुत करने वाली प्रतिक्रान्तिकारी पुस्तिका थी, जिसे च्याङ काई-शेक ने १९३३ में तैयार किया था। १९४५ में जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध समाप्त होने पर, च्याङ काई-शेक ने इसे फिर से छपवाया और एक गोपनीय आदेश के साथ क्वोमिन्ताङ सेना के अधिकारियों में बांट दिया; आदेश में कहा गया था: "डाकुओं के विनाश का मौजूदा अभियान, जिस पर जनता की सुख-सुविधा का दारोमदार है, तेजी के साथ पूरा करना होगा। आपको अपने सैनिक अफसरों और सिपाहियों को प्रेरित करना चाहिए कि वे जापानी आक्रमण का प्रतिरोध करने की भावना के साथ और मेरी तैयार की हुई 'डाकू-विनाश निर्देशन पुस्तिका' के अनुसार डाकुओं का विनाश करने में कोई भी कसर बाकी न उठा रखें। राज्य की सेवा में सराहनीय कार्य करने पर अच्छा खासा इनाम दिया जाएगा, और विलम्ब या गलतियों के लिए जिम्मेदार लोगों को फौजी अदालत में पेश किया जाएगा। यह आदेश आपकी कमान में डाकुओं का विनाश करने के काम पर तैनात सभी सैनिक अफसरों और सिपाहियों को बता दिया जाना चाहिए और इसका पालन उन सभी को करना चाहिए।"

लगान में कटौती और उत्पादन-कार्य मुक्त क्षेत्रों की रक्षा के लिए दो महत्वपूर्ण बातें हैं*

७ नवम्बर १९४५

१. अमरीका का सहारा पाकर क्वोमिन्ताङ हमारे मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाई करने के लिए अपनी सारी शक्तियों को गोलबन्द कर रही है। देशव्यापी गृहयुद्ध अब एक हकीकत बन चुका है। हमारी पार्टी के सामने इस समय यह कार्य मौजूद है: सारी शक्तियों को गोलबन्द करना, आत्मरक्षा का दृष्टिबिन्दु अपनाकर क्वोमिन्ताङ के हमलों को चकनाचूर कर डालना, मुक्त क्षेत्रों की रक्षा करना और शान्ति प्राप्त करने का प्रयास करना। इस मकसद को हासिल करने के लिए नीचे लिखे काम करना अत्यावश्यक हो गया है। इस बात पर जरूर ध्यान दें कि मुक्त क्षेत्रों के किसानों को आम तौर पर लगान में कटौती का लाभ हो जाए, तथा मजदूरों और अन्य मेहनतकशों को मजूरी में मुनासिब बढ़ोतरी और सुधरे हालात का लाभ हो जाए; साथ ही इस बात पर भी जरूर ध्यान दें कि जमींदारों के गुजर-बसर करने तथा औद्योगिक पूंजीपतियों और

*यह अन्त:पार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

व्यापारी पूंजीपतियों के मुनाफा कमाने की गुंजायश तब भी बनी रहे ; अगले साल बड़े पैमाने के उत्पादन आन्दोलन का विकास करें, खाद्य-पदार्थों और रोजमर्रा की जरूरत के सामान का उत्पादन बढ़ाएं, जनता के रहन-सहन में सुधार करें, अकाल-पीड़ितों और शरणार्थियों को राहत देने का बन्दोबस्त करें और सेना की जरूरतें पूरी करें। लगान में कटौती और उत्पादन-कार्य, इन दोनों महत्वपूर्ण मामलों को बखूबी निबटा लेने पर ही हम अपनी कठिनाइयों पर काबू पा सकते हैं, युद्ध में सहायता पहुंचा सकते हैं और जीत हासिल कर सकते हैं।

२. चूंकि इस समय युद्ध बहुत बड़े पैमाने पर चल रहा है, बहुत से नेतृत्वकारी कामरेड इस समय मोर्चे की कमान सम्भाले हुए हैं और लगान में कटौती और उत्पादन-कार्य की तरफ ध्यान नहीं दे पाते, इसलिए हमें श्रम-विभाजन करना होगा। जो नेतृत्वकारी कामरेड पृष्ठभाग के इलाकों में हैं, उन्हें मोर्चे को प्रत्यक्ष सहायता देने का बहुत सा काम करने के साथ-साथ लगान में कटौती और उत्पादन-कार्य इन दो महत्वपूर्ण कार्यों को संगठित करने का सुअवसर भी हाथ से नहीं जाने देना होगा। जाड़ों और वसन्त के अगले कुछ महीनों में, तमाम मुक्त क्षेत्रों में और खास तौर पर विशाल नए मुक्त क्षेत्रों में, लगान में कटौती के आन्दोलन बड़े पैमाने पर चलाने होंगे, और लगान में कटौती व्यापक रूप से लागू करनी होगी, ताकि आम किसानों की भारी बहुसंख्या में क्रान्तिकारी जोश पैदा किया जा सके। साथ ही वे इस बात पर भी जरूर ध्यान दें कि १९४६ में तमाम मुक्त क्षेत्रों के अन्दर कृषि व उद्योग के उत्पादन का नया विकास हो जाए। बड़े पैमाने के इस नए युद्ध के कारण, लगान में

कटौती की और उत्पादन-कार्य की उपेक्षा न करें ; इसके ठीक विपरीत, क्वोमिन्ताङ के हमले को परास्त कर डालने के लिए ही लगान में कटौती और उत्पादन-कार्य में और अधिक तेजी लानी होगी।

३. लगान में कटौती को सरकार की ओर से मिला दान नहीं बल्कि जन-समुदाय के संघर्ष का नतीजा होना चाहिए। लगान में कटौती की सफलता या विफलता इसी बात पर निर्भर है। लगान में कटौती के संघर्ष में ज्यादतियों से बिलकुल बचना तो मुश्किल है, लेकिन संघर्ष अगर सचमुच व्यापक जन-समुदाय का जागरूक संघर्ष हो, तो उसमें जो भी ज्यादतियां होती हैं उन्हें बाद में दुरुस्त किया जा सकता है। सिर्फ तभी हम जन-समुदाय के मन में यह बात बैठा सकते हैं और उसे यह समझने में समर्थ बना सकते हैं कि किसानों और समूची जनता के लिए यह लाभदायक है कि जमींदारों को भी गुजर-बसर करने दिया जाए, ताकि वे क्वोमिन्ताङ की मदद न करने लगें। हमारी पार्टी की मौजूदा नीति अब भी लगान में कटौती करने की ही है, जमीन जब्त करने की नहीं। लगान में कटौती के दौरान और उसके बाद हमें आम किसानों की भारी बहुसंख्या को किसान सभाओं में संगठित होने में मदद करनी होगी।

४. उत्पादन आन्दोलन में जीत हासिल करने की कुंजी यह है कि उत्पादकों की भारी बहुसंख्या को आपसी सहायता उत्पादक-ग्रुपों में संगठित किया जाए। इस सिलसिले में एक अनिवार्य काम यह है कि कृषि और उद्योग के लिए सरकारी ऋण मुहय्या किया जाए। यह बात भी बड़े महत्व की है कि खेती का काम ठीक मौसम में हो और काम में समय की कम से कम बरबादी की जाए। इस समय हमें युद्ध के लिए असैनिक जनबल को संगठित करना होगा ; दूसरी

ओर, जहां तक हो सके, हमें खेती का कोई भी मौसम हाथ से नहीं निकलने देना होगा ; अतएव हमें पुनर्व्यवस्थित करने की विधियों का अध्ययन करना होगा। फौजी यूनिटों, सरकारी संगठनों और विद्यालयों को समुचित सीमा तक उत्पादन-कार्य में शिरकत करना जारी रखना होगा, बशर्ते कि ऐसी शिरकत से युद्ध में, अपने सामान्य काम में और पढ़ाई-लिखाई में बाधा न पड़े। बस यही एक रास्ता है जिस पर चलकर वे अपने रहन-सहन को बेहतर बना सकते हैं और जनता का भार हल्का कर सकते हैं।

५. हम कुछ बड़े और अनेक मझोले नगरों पर कब्जा कर चुके हैं। इन नगरों की अर्थव्यवस्था को अपने हाथ में लेना और इनके उद्योग, वाणिज्य और बैंकिंग का विकास करना हमारी पार्टी के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य बन गया है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यह निहायत जरूरी है कि जितने भी योग्य व्यक्ति मिल सकते हों उन सबसे काम लिया जाए और पार्टी-सदस्यों को समझा दिया जाए कि वे ऐसे लोगों के साथ सहयोग करें और उनसे तकनीक व प्रबन्ध की विधियां सीख लें।

६. सभी पार्टी-सदस्यों से कहें कि वे दृढ़ता के साथ जनता के कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़े रहें, जनता की आर्थिक कठिनाइयों का खयाल रखें और इन कठिनाइयों पर काबू पाने में जनता की मदद करने की कुंजी लगान में कटौती और उत्पादन-कार्य इन दो महत्वपूर्ण कार्यों को ही समझें ; ऐसा करके ही हम जनता का हार्दिक समर्थन प्राप्त कर सकेंगे और किसी भी प्रकार के प्रतिक्रियावादियों के हमले को परास्त कर सकेंगे। हर बात पर अब भी दीर्घकालीन प्रयास के दृष्टिकोण से ही विचार करना चाहिए, मानव-शक्ति और भौतिक

साधनों का उपयोग बचा-बचा कर करना चाहिए और हर मामले के बारे में दीर्घकालीन आधार पर ही योजना बनानी चाहिए ; इस प्रकार हम अवश्य विजयी होंगे।

मुक्त क्षेत्रों में १९४६ के कार्यों के बारे में निर्धारित नीति*

१५ दिसम्बर १९४५

हमारी पार्टी ने पिछले कुछ महीनों के दौरान जापानी और कठ-पुतली सेनाओं का सफाया करने और मुक्त क्षेत्रों पर क्वोमिन्ताङ के हमलों को चकनाचूर कर देने के भीषण संघर्षों में जनता का नेतृत्व करने में बड़ी-बड़ी कामयाबियां हासिल की हैं। हमारे तमाम पार्टी-कामरेडों ने एकदिल होकर काम किया है और हर कार्य में उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं। १९४५ का साल अब जल्द ही समाप्त होने वाला है और १९४६ में हमें सभी मुक्त क्षेत्रों के अन्दर अपने काम में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना होगा :

१. नए हमलों को चकनाचूर कर डालो। स्वेय्वान, शानशी और दक्षिणी हपे के हमारे मुक्त क्षेत्रों पर किए गए बड़े पैमाने के हमलों को जब हमारी सेना ने चकनाचूर कर डाला, तब से क्वो-मिन्ताङ और भी बड़ी सेनाएं इधर लाने में लगी हुई है तथा नए हमलों की तैयारियां कर रही है। अगर कोई ऐसी नई बात न हो जाए जिससे कि क्वोमिन्ताङ को फौरन ही अपना गृहयुद्ध बन्द कर

---

*यह अन्त:पार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

देना पड़े, तो १९४६ के वसन्त की लड़ाई बड़ा भीषण रूप ले लेगी। इसलिए सभी मुक्त क्षेत्रों का प्रधान कार्य अब भी यही है कि आत्म-रक्षा का दृष्टिबिन्दु अपनाया जाए और क्वोमिन्ताङ के हमलों को चकनाचूर कर देने में कोई कसर न छोड़ी जाए।

२. काओ शू-श्युन आन्दोलन[1] को फैलाओ। क्वोमिन्ताङ के हमलों को चकनाचूर कर देने के लिए यह जरूरी है कि हमारी पार्टी उन क्वोमिन्ताङ सेनाओं को छिन्न-भिन्न करने के काम में जुट जाए जो हमले की तैयारी कर रही हैं या हमला करने में लगी हुई हैं। एक ओर तो हमारी सेना को गृहयुद्ध में लगी हुई क्वोमिन्ताङ सेनाओं का लड़ने का हौसला पस्त करने के उद्देश्य से खुलेआम व्यापक राजनीतिक प्रचार करना चाहिए और राजनीतिक अभियान चलाना चाहिए। दूसरी ओर हमें क्वोमिन्ताङ सेना के भीतर विद्रोह कराने की तैयारी करनी चाहिए और विद्रोह को संगठित करना चाहिए और काओ शू-श्युन आन्दोलन को फैलाना चाहिए, ताकि लड़ाई के दौरान नाजुक मौकों पर भारी तादाद में क्वोमिन्ताङ सैनिक काओ शू-श्युन का अनुसरण करते हुए जनता के पक्ष में आ मिलें, गृहयुद्ध का विरोध करें और शान्ति का पक्षपोषण करें। इस काम को अमली ढंग से करने और उसमें शीघ्र ही नतीजे हासिल करने के लिए, हर इलाके को केन्द्रीय कमेटी के निर्देश का पालन करते हुए एक विशेष विभाग खोलना चाहिए और बहुत से कार्यकर्ताओं को केवल इसी काम में जी-जान से लगा देना चाहिए। हर इलाके के नेतृत्वकारी संगठनों को चाहिए कि वे इस काम का गहराई से निर्देशन करें।

३. सेनाओं को ट्रेनिंग दो। मुक्त क्षेत्रों की रणांगन-सेनाएं आम तौर पर संगठित की जा चुकी हैं और प्रादेशिक सेनाओं के सैनिकों

की संख्या भी काफी है। इसलिए फिलहाल हमें सेनाओं की संख्या का विस्तार करने का काम आम तौर से बन्द रखना चाहिए और लड़ाइयों के बीच के अवकाश के समय का उपयोग करके सेनाओं को ट्रेनिंग देने के काम पर जोर देना चाहिए। यह बात रणांगन-सेनाओं, प्रादेशिक सेनाओं और मिलिशिया पर लागू होती है। जहां तक ट्रेनिंग-कोर्सों का ताल्लुक है, हमारा मुख्य उद्देश्य अब भी यही होना चाहिए कि निशाना साधने, संगीन से प्रहार करने और हथगोले फेंकने इत्यादि की तकनीक का स्तर उन्नत करें, तथा गौण उद्देश्य यह होना चाहिए कि युद्धकला का स्तर उन्नत करें; और रात के समय की जाने वाली फौजी कार्यवाहियों पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए। जहां तक ट्रेनिंग के तरीके का ताल्लुक है, हमें एक ऐसा व्यापक ट्रेनिंग आन्दोलन छेड़ देना चाहिए, जिसमें अफसर सिपाहियों को सिखाएं, और सिपाही अफसरों को, तथा एक सिपाही दूसरे सिपाही को। १९४६ के दौरान हमें सेना के भीतर राजनीतिक कार्य का स्तर उन्नत बनाने का काम और अच्छी तरह सम्पन्न करना होगा; सेना में जो भी कठमुल्लावादी या रीतिवादी कार्यशैली मौजूद हो उसे दूर करना होगा और इस बात की जोरदार कोशिश करनी होगी कि अफसरों और सिपाहियों के बीच, सेना और जनता के बीच, तथा हमारे और मित्र-सेनाओं के बीच एकता कायम हो; शत्रु-सेनाओं को छिन्न-भिन्न कर दिया जाए और इस बात की गारन्टी कर दी जाए कि ट्रेनिंग, सप्लाई और लड़ाई के जो भी काम हमारे सामने हों, वे सब पूरे हो जाएं। स्थानीय मिलिशिया को मौजूदा हालात के अनुसार नए सिरे से संगठित किया जाना चाहिए। सेना के पृष्ठभागीय सेवा-कार्यों को भी नए सिरे से व्यवस्थित किया जाना

चाहिए। सभी इलाकों में तोपखाना यूनिटों और इंजीनियरी यूनिटों को कायम करने और उनका विस्तार करने के सिलसिले में जो कुछ भी किया जा सकता हो, वह सब किया जाना चाहिए। सैनिक अकादमियों को अपना काम जारी रखना चाहिए और उन्हें जिस काम पर खास जोर देना चाहिए वह है तकनीकी कर्मचारियों को ट्रेनिंग देना।

४. लगान कम करो। केन्द्रीय कमेटी के ७ नवम्बर १६४५ के निर्देश[१] के अनुसार सभी इलाकों को १६४६ में तमाम नए मुक्त क्षेत्रों के अन्दर लगान और सूद कम करने के आन्दोलन चलाने होंगे ; ये आन्दोलन बड़े पैमाने के आन्दोलन होंगे, जनव्यापी आन्दोलन होंगे, और नेतृत्व-युक्त आन्दोलन भी होंगे। जहां तक मजदूरों का ताल्लुक है, उनकी मजूरी में समुचित वढ़ोतरी की जानी चाहिए। हमें इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि व्यापक जन-समुदाय इन आन्दोलनों के जरिए अपनी मुक्ति हासिल करने में समर्थ बने, अपने आपको संगठित कर ले और मुक्त क्षेत्रों का जागरूक मालिक बन जाए। इन संकल्पबद्ध कार्यवाहियों के बिना नए मुक्त क्षेत्रों की आम जनता यह नहीं बता सकेगी कि कम्युनिस्ट पार्टी और क्वोमिन्ताङ इन दो पार्टियों में कौन सी अच्छी है और कौन सी बुरी ; वह ढुलमुल बनी रहेगी और हमारी पार्टी का दृढ़तापूर्वक समर्थन नहीं करेगी। पुराने मुक्त क्षेत्रों में लगान और सूद कम करने के कार्य की जांच-परख फिर से की जानी चाहिए, ताकि इन क्षेत्रों को और भी अधिक सुदृढ़ बनाया जा सके।

५. उत्पादन। सभी इलाकों को ७ नवम्बर के निर्देश के मुताबिक फौरन ही हर तरह की तैयारी करके इस बात की गारन्टी कर लेनी

चाहिए कि १६४६ में तमाम मुक्त क्षेत्रों में सार्वजनिक और निजी, दोनों ही तरह का उत्पादन अब तक के किसी भी वर्ष के उत्पादन के मुकाबले, पैमाने के लिहाज से और उपलब्धियों के लिहाज से आगे निकल जाए। थकान की जो भावना जनता में दिखाई पड़ने लगी है, उसे तभी दूर किया जा सकता है जबकि लगान में कटौती और उत्पादन-कार्य इन दोनों ही कार्यों को मन लगाकर किया जाए और उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त की जाएं। मुक्त क्षेत्रों के राजनीतिक और सैनिक संघर्षों की हार-जीत का फैसला अन्ततः इसी बात से होगा कि इन दोनों महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा कर लिया जाता है या नहीं, इसलिए किसी भी इलाके में इन दो कार्यों की उपेक्षा हरगिज नहीं की जानी चाहिए।

६. वित्त। हाल के दौर में किए गए जोरदार काम की जरूरतों को पूरा करने के कारण जो वित्तीय भार पहले से बढ़ गया है, उसे १६४६ में योजनाबद्ध और सुव्यवस्थित ढंग से फिर सामान्य स्तर तक ले आना चाहिए। जिनके ऊपर बहुत भारी बोझ है, उनके बोझ में समुचित कमी की जानी चाहिए। दीर्घकालीन प्रयास की सफलता की दृष्टि से इस बात को ध्यान में रखना होगा कि किसी भी इलाके में उत्पादन-कार्य से हटकर दूसरे कार्यों में लगने वाले लोगों की तादाद उस इलाके की स्थानीय वित्तीय क्षमता की सीमाएं न लांघने पाए। सेनाओं का मूल्यांकन उनकी श्रेष्ठता के आधार पर किया जाता है, तादाद के आधार पर नहीं ; सेना के निर्माण के बारे में हमारा एक उसूल अब भी यही है। अपनी वित्तीय और आर्थिक समस्याओं को हल करने के बारे में हमारे समुचित मार्गदर्शक उसूल अब भी वही हैं जो अब तक रहे हैं, यानी उत्पादन का विकास करना,

सप्लाई की गारन्टी करना, एकीकृत नेतृत्व करना, विकेन्द्रित प्रबन्ध करना, सेना और जनता दोनों का ध्यान रखना तथा सार्वजनिक हितों और निजी हितों दोनों का ध्यान रखना तथा उत्पादन और किफायत दोनों पर बराबर जोर देना।

७. सरकार का समर्थन करो और जनता के साथ आत्मीयता बढ़ाओ ; सेना का समर्थन करो और प्रतिरोध-युद्ध में लड़ने वाले सैनिकों के परिवारों को तरजीह दो।[१] इन दोनों ही कार्यों को हमें १९४६ में पिछले कुछ वर्षों के मुकाबले बेहतर ढंग से करना होगा। क्वोमिन्ताङ के हमलों को चकनाचूर करने और मुक्त क्षेत्रों को सुदृढ़ बनाने में इसका बहुत बड़ा महत्व होगा। सेना में हर कमाण्डर और हर सैनिक को विचारधारात्मक शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि वे सब लोग सरकार का समर्थन करने और जनता के साथ आत्मीयता बढ़ाने के महत्व को सम्पूर्ण रूप से समझ जाएं। यदि सेना अपनी ओर से यह कार्य अच्छी तरह करती रहेगी, तो स्थानीय पार्टी-संगठन, स्थानीय सरकार और जनता भी सेना के साथ अपने सम्बन्धों को सुधारती जाएगी।

८. राहत-कार्य। मुक्त क्षेत्रों में ऐसे बहुत से अकाल-पीड़ित, शरणार्थी, बेरोजगार और आंशिक रूप से बेरोजगार लोग हैं जिन्हें राहत की फौरी जरूरत है। ऐसे लोगों की समस्या अच्छी तरह सुलझाई जाती है या बेढंगे तौर पर, इस बात का प्रभाव बहुत बड़ा और व्यापक होता है। राहत-कार्य में सरकारी उपायों के अलावा मुख्य रूप से खुद जन-समुदाय की ही पारस्परिक सहायता पर निर्भर रहना चाहिए। पार्टी और सरकार को चाहिए कि वे जन-समुदाय

को पारस्परिक सहायता के जरिए राहत-कार्य संगठित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

९. स्थानीय कार्यकर्ताओं की देखभाल अच्छी तरह करो। आज हर मुक्त क्षेत्र में दूसरे क्षेत्रों से आए हुए कार्यकर्ता बहुत बड़ी तादाद में मौजूद हैं, जो सभी स्तरों पर नेतृत्व-कार्य को सम्भाले हुए हैं। उत्तर-पूर्वी प्रान्तों पर यह बात खास तौर से लागू होती है। हर इलाके के नेतृत्वकारी संगठनों को चाहिए कि वे इन कार्यकर्ताओं को हमेशा यह सलाह देते रहें कि वे स्थानीय कार्यकर्ताओं की देखभाल अच्छी तरह करें और उनके साथ ऊंचे दर्जे की गर्मजोशी और सद्भाव के साथ बरताव करें। बाहर से आए कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे स्थानीय कार्यकर्ताओं के चयन, प्रशिक्षण और पदोन्नति को अपना एक महत्वपूर्ण कार्य बना लें। सिर्फ इसी तरह हमारी पार्टी मुक्त क्षेत्रों में अपनी जड़ें जमा सकती है। बाहर से आए हुए जो लोग स्थानीय लोगों को अपने से हेय समझते हैं, उनकी इस कार्यशैली की आलोचना की जानी चाहिए।

१०. हर चीज का हिसाब एक दीर्घकालीन आधार पर लगाओ। हालात चाहे जो भी करवट लें, अगर हमें अपनी स्थिति को अजेय बनाना है, तो हमारी पार्टी को हमेशा एक दीर्घकालीन आधार पर अपना हिसाब लगाना चाहिए। इस समय हमारी पार्टी एक ओर तो मुक्त क्षेत्रों में स्वायत्त शासन और आत्मरक्षा के अपने दृष्टिबिन्दु पर अडिग है, क्वोमिन्ताङ के हमलों का डटकर विरोध कर रही है और इन क्षेत्रों की जनता द्वारा हासिल की गई उपलब्धियों को सुदृढ़ बनाने में लगी हुई है। दूसरी ओर हम क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में इस समय विकसित हो रहे जनवादी आन्दोलन का समर्थन करते

हैं (जिसके लक्षण खुनमिङ के छात्रों की हड़ताल[४] के रूप में प्रकट हुए हैं), ताकि हम प्रतिक्रियावादियों को अलगाव की स्थिति में डाल दें, अपने लिए काफी तादाद में संश्रयकारी हासिल कर लें और अपनी पार्टी के प्रभाव में राष्ट्रीय जनवादी संयुक्त मोर्चे का विस्तार कर लें। साथ ही हमारी पार्टी का एक प्रतिनिधिमण्डल जल्द ही विभिन्न पार्टियों और निर्दलीय सार्वजनिक गण्यमान्य व्यक्तियों के राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन में भाग लेने, क्वोमिन्ताङ के साथ समझौता-वार्ता फिर से शुरू करने और देशभर में शान्ति और जनवाद की स्थापना के लिए प्रयास करने के लिए जा रहा है। लेकिन हमें अब भी टेढ़ेमेढ़े रास्ते से होकर गुजरना पड़ सकता है। हमारे सामने अब भी बहुत सी कठिनाइयां मौजूद हैं। जैसे, हमारे नए क्षेत्र और हमारी नई सेनाएं अभी सुदृढ़ नहीं बन पाई हैं, और वित्तीय कठिनाइयां भी मौजूद हैं। हमें इन सभी कठिनाइयों का जमकर सामना करना होगा और इन पर काबू पाना होगा, अपने सारे काम को दीर्घकालीन आधार पर व्यवस्थित करना होगा, मानव-शक्ति और भौतिक साधनों को बचा-बचा कर काम में लाने पर अधिक से अधिक ध्यान देना होगा, और भाग्य के भरोसे सस्ते में कामयाबी हासिल करने के खयाली पुलाव पकाने के किसी भी रुझान के विरुद्ध चौकसी बरतनी होगी।

१९४६ के अपने काम में, और खासकर १९४६ की पहली छमाही के अपने काम में हमें इन दस बातों पर खास तौर से ध्यान देना चाहिए। आशा है कि विभिन्न इलाकों के कामरेड अपने-अपने स्थानीय हालात को ध्यान में रखते हुए इन नीतियों को लागू करने में लचीलेपन से काम लेंगे। जहां तक विभिन्न इलाकों के काम

का सवाल है, जैसे स्थानीय राजनीतिक सत्ता का निर्माण करना, संयुक्त मोर्चे के काम को अंजाम देना, पार्टी के भीतर और पार्टी के बाहर सामयिक मामलों की जानकारी और समझदारी का प्रसार करना, और मुक्त क्षेत्रों के आसपास वाले नगरों में काम करना – ये सारे ही काम महत्वपूर्ण हैं, मगर इनकी चर्चा हम यहां नहीं करेंगे।

नोट

[१] ३० अक्तूबर १९४५ को क्वोमिन्ताङ के ग्यारहवें युद्ध-क्षेत्र के उप-कमाण्डर काओ शू-श्युन ने दक्षिणी हूपे प्रान्त के हानतान में गृहयुद्ध के मोर्चे पर विद्रोह कर दिया तथा वह एक फौजी कोर और एक कालम को अपने साथ लेकर हमारे पक्ष में आ मिला। देशभर में इसका बहुत भारी असर पड़ा। क्वोमिन्ताङ सेनाओं को टुकड़ों में बांटने व उन्हें छिन्न-भिन्न करने तथा उन्हें विद्रोह के लिए प्रोत्साहित करने के काम को और भी जोरदार ढंग से चलाने के उद्देश्य से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने एक प्रचार आन्दोलन चलाने का फैसला किया, जिसके जरिए क्वोमिन्ताङ के अफसरों और सिपाहियों का आवाहन किया गया कि वे काओ शू-श्युन व उसके सैनिकों द्वारा कायम की गई मिसाल पर चलें, मुक्त क्षेत्रों पर हमला करने से इनकार कर दें, गृहयुद्ध में मोर्चे पर ढिलाई से काम लें, जन-मुक्ति सेना के साथ मिलन-समारोहों का आयोजन करें, विद्रोह करने के लिए उठ खड़े हों और जनता के पक्ष में आ मिलें। यह आन्दोलन "काओ शू-श्युन आन्दोलन" कहलाया।

[२] देखिए इसी ग्रन्थ में "लगान में कटौती और उत्पादन-कार्य मुक्त क्षेत्रों की रक्षा के लिए दो महत्वपूर्ण बातें हैं" शीर्षक रचना।

[३] "सरकार का समर्थन करो और जनता के साथ आत्मीयता बढ़ाओ" जन-मुक्ति सेना का नारा था, तथा "सेना का समर्थन करो और प्रतिरोध-युद्ध में

लड़ने वाले सैनिकों के परिवारों को तरजीह दो" मुक्त क्षेत्रों के पार्टी-संगठनों, सरकारी संगठनों, जन-संगठनों और आम जनता का नारा था। दूसरे नारे को बाद में बदलकर "सेना का समर्थन करो और क्रान्तिकारी सैनिकों के परिवारों को तरजीह दो" बना दिया गया।

* २५ नवम्बर १९४५ की शाम को युन्नान प्रान्त की राजधानी खुनमिङ में कालेजों और मिडिल स्कूलों के ६ हजार से अधिक विद्यार्थी सामयिक मामलों पर विचार-विमर्श करने और गृहयुद्ध के प्रति विरोध प्रकट करने के लिए दक्षिण-पश्चिम संयुक्त विश्वविद्यालय में आयोजित सभा में एकत्रित हुए। क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने अपनी सेना भेजकर सभा-स्थल को चारों ओर से घेर लिया, हल्की तोपों, मशीनगनों और राइफलों से गोलियां बरसाई और विश्वविद्यालय के चारों ओर गार्ड तैनात कर दी, ताकि शिक्षक और छात्र अपने-अपने घर न जाने पाएं। बाद में खुनमिङ के स्कूलों और कालेजों के विद्यार्थियों ने संयुक्त रूप से एक हड़ताल की। १ दिसम्बर को क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने दक्षिण-पश्चिम संयुक्त विश्वविद्यालय और शिक्षक-प्रशिक्षण कालेज में बहुत बड़ी तादाद में सिपाही और गुप्त एजेन्ट भेजे, जिन्होंने हथगोले फेंककर चार व्यक्तियों की हत्या कर दी और दस से अधिक लोगों को आहत कर डाला। यह घटना "१ दिसम्बर का हत्याकाण्ड" कहलाती है।

उत्तर-पूर्व में सुदृढ़ आधार-क्षेत्रों का निर्माण करो*

२८ दिसम्बर १९४५

१. उत्तर-पूर्व में हमारी पार्टी का वर्तमान कार्य है आधार-क्षेत्रों का निर्माण करना, पूर्वी, उत्तरी और पश्चिमी मंचूरिया में सुदृढ़ फौजी व राजनीतिक आधार-क्षेत्रों का निर्माण करना।[1] इस प्रकार के आधार-क्षेत्रों का निर्माण करना कोई आसान काम नहीं है; इसके लिए कठोर और तीव्र संघर्ष करना जरूरी है। इस तरह के आधार-क्षेत्रों का निर्माण करने के लिए तीन या चार वर्ष का समय चाहिए। लेकिन १९४६ में इस कार्य के लिए एक ठोस प्रारम्भिक बुनियाद कायम कर दी जानी चाहिए। वरना हम अपने पांव जमाने में कामयाब नहीं हो सकेंगे।

२. अब यह भी स्पष्ट रूप से बता दिया जाए कि इस तरह के आधार-क्षेत्रों का निर्माण उन बड़े शहरों में अथवा उन मुख्य संचार-

*यह निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था और यह केन्द्रीय कमेटी के उत्तर-पूर्वी ब्यूरो के नाम भेजा गया था। जैसे ही सोवियत संघ ने जापान के खिलाफ युद्ध की घोषणा की और सोवियत लाल सेना ने उत्तर-पूर्व में प्रवेश किया, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और चीनी जन-मुक्ति सेना ने, जापानी हमलावरों और कठपुतली "मंचूक्वो" शासन के बचेखुचे अंशों को नेस्तनाबूद करने, देशद्रोहियों का सफाया

पंक्तियों के आसपास नहीं किया जाना चाहिए जिन पर क्वोमिन्ताङ का कब्जा है अथवा हो जाएगा ; वर्तमान परिस्थिति में यह व्यवहार्य नहीं है। और न उनका निर्माण क्वोमिन्ताङ अधिकृत बड़े शहरों अथवा मुख्य संचार-पंक्तियों के निकटवर्ती क्षेत्रों में ही किया जाना चाहिए। कारण यह है कि क्वोमिन्ताङ बड़े शहरों और मुख्य संचार-पंक्तियों पर कब्जा करने के बाद, अपने बिलकुल निकटवर्ती क्षेत्रों को हमारे सुदृढ़ आधार-क्षेत्र नहीं बनने देगी। इन क्षेत्रों में हमारी पार्टी को पर्याप्त कार्य करना चाहिए तथा अपनी पहली फौजी रक्षा-पंक्ति कायम कर लेनी चाहिए और इन क्षेत्रों को लापरवाही से कतई नहीं छोड़ना चाहिए। लेकिन ये क्षेत्र दोनों ही पार्टियों के लिए छापामार क्षेत्र होंगे और हमारे सुदृढ़ आधार-क्षेत्र नहीं होंगे। इसलिए जिन इलाकों में सुदृढ़ आधार-क्षेत्रों का निर्माण किया जाएगा, उनमें वे शहर और विशाल देहाती इलाके शामिल हैं जो क्वोमिन्ताङ अधिकृत केन्द्रों से अपेक्षाकृत दूर हैं। उन इलाकों को अब निश्चित कर दिया

करने, डाकुओं को खत्म करने और विभिन्न स्तरों पर जनवादी स्थानीय सरकारों की स्थापना करने में उत्तर-पूर्व की जनता का नेतृत्व करने के लिए, कार्यकर्ताओं व सैनिकों को भारी तादाद में उत्तर-पूर्व भेजा। लेकिन उस समय क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने, जो समूचे उत्तर-पूर्व पर अपना एकछत्र नियंत्रण कायम करने पर तुले हुए थे, अमरीकी साम्राज्यवाद की सहायता से भूमि, समुद्र और आकाश मार्ग से उत्तर-पूर्व में भारी तादाद में सैनिक भेजे, तथा शानहाएक्वान और चिनचओ जैसे महत्वपूर्ण स्थानों पर, जिन्हें जन-मुक्ति सेना पहले ही मुक्त करा चुकी थी, कब्जा कर लिया। उत्तर-पूर्व में एक तीव्र संघर्ष छिड़ना अनिवार्य हो गया, तथा यह संघर्ष स्पष्टतः समूचे देश की परिस्थिति के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण होने जा रहा था। इस निर्देश में कामरेड माओ त्सेतुङ ने पहले से

जाना चाहिए, ताकि हम अपनी शक्तियों का विन्यास कर सकें और समूची पार्टी को इस लक्ष्य की ओर ले जा सकें।

३. जब हम अपने सुदृढ़ आधार-क्षेत्रों के स्थान के बारे में फैसला कर लेंगे और अपनी शक्तियों का विन्यास कर लेंगे तथा जब हमारी सेना की तादाद बहुत बढ़ जाएगी, उस समय उत्तर-पूर्व में जन-कार्य हमारी पार्टी के कार्य का गुरुत्व-केन्द्र बन जाएगा। सभी कार्य-कर्ताओं को यह समझा देना चाहिए कि उत्तर-पूर्व में कुछ समय के लिए क्वोमिन्ताङ हमारी पार्टी के मुकाबले ज्यादा शक्तिशाली हो जाएगी, तथा यदि हमने जन-समुदाय को संघर्ष के लिए जागृत करने, उसकी समस्याओं को हल करने और उस पर हर तरह से निर्भर रहने को अपना प्रस्थान-बिन्दु न बनाया, यदि हमने सभी शक्तियों को जन-समुदाय के बीच बारीकी से कार्य करने के लिए गोलबन्द न कर लिया और एक साल के अन्दर, तथा खास तौर पर आगामी कुछ संकटपूर्ण महीनों में एक ठोस प्रारम्भिक बुनियाद

ही यह देख लिया कि उत्तर-पूर्व का संघर्ष कितना भीषण रूप लेगा तथा समय रहते यह बता दिया कि वहां के कार्य का गुरुत्व-केन्द्र उन शहरों और विशाल देहाती इलाकों को बनाना चाहिए जो क्वोमिन्ताङ अधिकृत क्षेत्रों के केन्द्रों से अपेक्षाकृत दूर हैं ; यानी हमें "बड़े-बड़े मार्गों को छोड़ देना चाहिए और उनके दोनों तरफ के इलाके पर कब्जा कर लेना चाहिए", जिससे हम जन-समुदाय को संजीदगी के साथ जागृत कर सकें, सुदृढ़ आधार-क्षेत्रों का निर्माण कर सकें, कदम-ब-कदम शक्ति-संचय कर सकें तथा अपने भावी प्रत्याक्रमण की तैयारी कर सकें। केन्द्रीय कमेटी और कामरेड माओ त्सेतुङ की इस सही नीति पर कामरेड लिन प्याओ की अगुवाई में उत्तर-पूर्वी ब्यूरो ने कारगर ढंग से अमल किया ; अतएव तीन वर्ष बाद नवम्बर १९४८ में समूचे उत्तर-पूर्व को मुक्त कराने वाली महान विजय प्राप्त की जा सकी।

कायम न कर ली, तो हम उत्तर-पूर्व में अलगाव की स्थिति में पड़ जाएंगे, सुदृढ़ आधार-क्षेत्रों का निर्माण नहीं कर पाएंगे और क्वोमिन्ताङ के हमलों को परास्त नहीं कर पाएंगे, तथा ऐसा भी हो सकता है कि हमें भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़े अथवा यहां तक कि पराजय का भी मुंह देखना पड़े। इसके विपरीत, अगर हम घनिष्ठ रूप से जन-समुदाय पर निर्भर रहे, तो हम सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेंगे तथा कदम-ब-कदम अपने लक्ष्य पर पहुंच जाएंगे। जन-कार्य में ये काम शामिल हैं : जन-समुदाय को देश-द्रोहियों से निपटने के संघर्ष के लिए जागृत करना, लगान कम करने और वेतन बढ़ाने के लिए आन्दोलन छेड़ना तथा उत्पादन बढ़ाने के लिए आन्दोलन छेड़ना। इन संघर्षों में हमें विभिन्न प्रकार के जन-संगठन कायम करने चाहिए, पार्टी-केन्द्रों की स्थापना करनी चाहिए, जन-समुदाय की सशस्त्र यूनिटों और जनता की राजनीतिक सत्ता के संगठनों की स्थापना करनी चाहिए, जन-समुदाय के आर्थिक संघर्षों को ऊंचा उठाकर शीघ्रता से राजनीतिक संघर्षों के स्तर पर पहुंचा देना चाहिए और आधार-क्षेत्रों का निर्माण करने में उसका नेतृत्व करना चाहिए। जन-समुदाय को संघर्ष करने के लिए जागृत करने के बारे में जेहोल की प्रान्तीय पार्टी-कमेटी ने हाल ही में जो निर्देश [२] जारी किया है उसे उत्तर-पूर्व में लागू किया जा सकता है। हमारी पार्टी को चाहिए कि वह उत्तर-पूर्व में जनता को वास्तविक भौतिक फायदे पहुंचाए ; सिर्फ तभी जन-समुदाय हमारा समर्थन करेगा और क्वोमिन्ताङ के हमलों का मुकाबला करेगा। वरना जन-समुदाय साफ तौर पर यह नहीं देख पाएगा कि क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी इन दोनों में से कौन सी पार्टी अच्छी है और कौन

सी बुरी, तथा यह भी हो सकता है कि वह कुछ समय के लिए क्वोमिन्ताङ के धूर्ततापूर्ण प्रचार का शिकार बन जाए, यहां तक कि हमारी पार्टी के खिलाफ हो जाए, और इस प्रकार उत्तर-पूर्व में हमारे लिए एक अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थिति पैदा हो जाए।

४. इस समय उत्तर-पूर्व में हमारी पार्टी के सामने एक मनोगत कठिनाई मौजूद है। हमारे कार्यकर्ताओं में और हमारी सैन्य-शक्तियों में एक बहुत बड़ी तादाद ऐसे लोगों की है जो उत्तर-पूर्व में नए आए हैं, उस स्थान और वहां के लोगों से अपरिचित हैं। बड़े शहरों पर कब्जा न कर पाने से हमारे कार्यकर्ता असन्तुष्ट हैं तथा जन-समुदाय को जागृत करके आधार-क्षेत्रों का निर्माण करने के कठिन कार्य में बेसब्री दिखाते हैं। ये हालात वर्तमान परिस्थिति और हमारी पार्टी के कार्यों के विपरीत हैं। हमें अन्य क्षेत्रों से आए सभी कार्यकर्ताओं को बार-बार यह शिक्षा देनी चाहिए कि वे जांच-पड़ताल व अध्ययन की तरफ भारी ध्यान दें, अलग अलग स्थानों और वहां के लोगों से परिचित हो जाएं, तथा उत्तर-पूर्व की जनता के साथ एकरूप हो जाने का संकल्प करें और जन-समुदाय को प्रशिक्षण देकर उसके बीच से भारी तादाद में सक्रिय तत्वों और कार्यकर्ताओं को तैयार करें। हमें कार्यकर्ताओं को यह समझाना चाहिए कि हालांकि बड़े शहरों और संचार-पंक्तियों पर क्वोमिन्ताङ का कब्जा है, फिर भी उत्तर-पूर्व की परिस्थिति हमारे लिए अनुकूल है। अगर हमने सभी कार्यकर्ताओं व सैनिकों में यह विचार फैला दिया कि जन-समुदाय को जागृत करना चाहिए और आधार-क्षेत्रों का निर्माण करना चाहिए, तथा अगर हमने सभी शक्तियों को गोलबन्द कर लिया और आधार-क्षेत्रों का निर्माण करने के महान संघर्ष को तुरन्त

शुरू कर दिया, तो हम उत्तर-पूर्व और जेहोल में अपने पांव मजबूती से जमा लेंगे और हमारी विजय की गारन्टी हो जाएगी। हमें कार्य-कर्ताओं को बता देना चाहिए कि वे किसी भी सूरत में क्वोमिन्ताङ की शक्ति को बहुत कम करके न आंकें अथवा कठिन कार्य में सिर्फ इसलिए बेसब्री न दिखाएं कि वे ऐसा सोचते हैं कि चाहे कुछ भी हो, क्वोमिन्ताङ पूर्वी व उत्तरी मंचूरिया पर हमला जरूर करेगी। बेशक, ये सब बातें समझाते समय हमें कार्यकर्ताओं को यह महसूस नहीं होने देना चाहिए कि क्वोमिन्ताङ बेहद शक्तिशाली है और उसके हमलों को तहस-नहस नहीं किया जा सकता। यह बता दिया जाना चाहिए कि उत्तर-पूर्व में क्वोमिन्ताङ की कोई गहरी सुसंगठित बुनियाद नहीं है तथा उसके हमलों को तहस-नहस किया जा सकता है; इसलिए हमारी पार्टी के लिए वहां आधार-क्षेत्रों का निर्माण करना सम्भव है। लेकिन क्वोमिन्ताङ फौजें इस समय जेहोल-ल्याओनिङ सीमा पर हमला कर रही हैं तथा अगर उन पर प्रहार न किया गया, तो वे शीघ्र ही पूर्वी व उत्तरी मंचूरिया पर हमला कर देंगी। इसलिए हमारे सभी पार्टी-सदस्यों को यह संकल्प कर लेना चाहिए कि वे अत्यन्त कठिन कार्यों का बीड़ा उठाएं, जन-समुदाय को तेजी से जागृत करें, आधार-क्षेत्रों का निर्माण करें तथा पश्चिमी मंचूरिया और जेहोल में क्वोमिन्ताङ के हमलों को दृढ़ता से और योजनाबद्ध तरीके से तहस-नहस कर दें। पूर्वी और उत्तरी मंचूरिया में हमें क्वोमिन्ताङ के हमलों को तहस-नहस करने के लिए तेजी से परिस्थितियां तैयार करनी चाहिए। हमें अपने कार्यकर्ताओं के दिमाग से यह विचार पूरी तरह निकाल देना चाहिए कि हम महज अपनी खुशकिस्मती से ही, कठोर और तीव्र संघर्ष किए बिना ही,

अपना खून-पसीना बहाए बिना ही, आसानी से विजय प्राप्त कर सकते हैं।

५. पश्चिमी, पूर्वी और उत्तरी मंचूरिया में फौजी क्षेत्रों व उप-क्षेत्रों को तुरन्त निर्धारित किया जाए तथा हमारी सैन्य-शक्तियों को तुरन्त रणांगन-सेनाओं और प्रादेशिक फौजों के रूप में विभाजित कर दिया जाए। जन-समुदाय को जागृत करने, डाकुओं का सफाया करने, राजनीतिक सत्ता के संगठन कायम करने और छापामार दस्तों, मिलिशिया व आत्मरक्षा फौज को संगठित करने के लिए, नियमित सैनिकों की एक बड़ी तादाद को फौजी उप-क्षेत्रों में बांट दिया जाए, ताकि हमारे क्षेत्रों को सुरक्षित रखा जा सके, क्वोमिन्ताङ के हमलों को तहस-नहस करने के लिए रणांगन-सेनाओं के साथ तालमेल कायम किया जा सके। सभी फौजों को विशिष्ट क्षेत्रों और विशिष्ट कार्यों में जुटा देना चाहिए; सिर्फ इसी तरह वे तुरन्त जनता के साथ एकता कायम कर सकती हैं और सुदृढ़ आधार-क्षेत्रों का निर्माण कर सकती हैं।

६. इस बार हमारे एक लाख दसियों हजार सैनिकों ने उत्तर-पूर्व और जेहोल में प्रवेश किया है; वहां सेना ने हाल ही में दो लाख दसियों हजार नए सैनिक और बढ़ा दिए हैं तथा उसका रुझान उन्हें लगातार बढ़ाते जाने का है। अगर इसमें पार्टी व सरकार के कार्य-कर्ताओं को भी जोड़ दिया जाए, तो हमारा अनुमान है कि एक साल के अन्दर यह तादाद चार लाख से ज्यादा हो जाएगी। एक ऐसी परिस्थिति, जिसमें कर्मचारियों की इतनी बड़ी तादाद उत्पादन-कार्य से अलग रहती है और सप्लाई के लिए पूरे तौर पर उत्तर-पूर्व की जनता पर निर्भर रहती है, निश्चय ही ज्यादा समय तक

जारी नहीं रह सकती और यह एक बहुत खतरनाक परिस्थिति है। इसलिए सभी फौजी यूनिटों और सरकारी संगठनों को – सिर्फ उन रणांगन-सेनाओं को छोड़कर जिन्हें केन्द्रित किया गया है और बड़ी-बड़ी फौजी कार्यवाहियों की जिम्मेदारी सौंपी गई है – चाहिए कि जब भी उन्हें लड़ाई और सामान्य काम से अवकाश मिले तो वे उत्पादन-कार्य में भाग लें। १९४६ का वर्ष नतीजे हासिल किए बिना नहीं बीतना चाहिए; समूचे उत्तर-पूर्व को तुरन्त इसके अनुरूप योजनाएं बना लेनी चाहिए।

७. उत्तर-पूर्व में मजदूर व बुद्धिजीवी जिस दिशा में आगे बढ़ेंगे, उसका हमारे आधार-क्षेत्रों का निर्माण करने और भविष्य में विजयें प्राप्त करने के लिए अत्यन्त भारी महत्व होगा। इसलिए हमारी पार्टी को चाहिए कि वह बड़े शहरों में और मुख्य संचार-पंक्तियों के आसपास अपने काम पर, खास तौर पर मजदूरों व बुद्धिजीवियों को अपने पक्ष में करने के काम पर, पूरा ध्यान दे। इस तथ्य को देखते हुए कि जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के आरम्भिक वर्षों में हमारी पार्टी ने मजदूरों व बुद्धिजीवियों को अपने पक्ष में करके आधार-क्षेत्रों में लाने के काम पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया, अब उत्तर-पूर्व के पार्टी-संगठन को चाहिए कि वह क्वोमिन्ताङ अधिकृत क्षेत्रों में भूमिगत कार्य पर ध्यान देने के अलावा मजदूरों व बुद्धिजीवियों को हमारी सेना में और आधार-क्षेत्रों के विभिन्न निर्माण-कार्यों में आकर्षित करने की भरसक कोशिश करे।

नोट

[1] पूर्वी मंचूरिया आधार-क्षेत्र में चीनी छाङछुन रेलवे के शनयाङ-छाङछुन सेक्शन के पूर्व में स्थित चीलिन, शीआन, आनयू, येनची, तुनह्वा और अन्य स्थान शामिल थे। उत्तरी मंचूरिया आधार-क्षेत्र में हारबिन, मूतानच्याङ, पेइआन और च्यामूस इत्यादि स्थान शामिल थे। पश्चिमी मंचूरिया आधार-क्षेत्र में चीनी छाङछुन रेलवे के शनयाङ-छाङछुन सेक्शन के पश्चिम में स्थित छीछीहाड़, थाओ-आन, खाएलू, फ़ूशिन, चङच्याथुन, फ़ूय्वी और अन्य स्थान शामिल थे। पार्टी ने दक्षिणी मंचूरिया में भी आधार-क्षेत्र का निर्माण किया। इसमें चीनी छाङछुन रेलवे के शनयाङ-तात्येन सेक्शन के पूर्व में स्थित आनतुङ (आज का तानतुङ – अनु०), च्वाङहो, थुङह्वा, लिनच्याङ और छिङय्वान तथा शनयाङ के दक्षिण-पश्चिम में स्थित ल्याओचुङ और अन्य स्थान शामिल थे। दक्षिणी मंचूरिया में दुश्मन के खिलाफ किए गए अविचल संघर्ष ने उत्तर-पूर्व में आधार-क्षेत्रों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

[2] यहां "जन-समुदाय को जागृत करने के बारे में निर्देश" का हवाला दिया गया है, जिसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की जेहोल प्रान्तीय कमेटी ने दिसम्बर १९४५ में जारी किया था। निर्देश में बताया गया था कि उस समय जन-समुदाय को जागृत करने की केन्द्रीय कड़ी थी देशद्रोहियों और गुप्त एजेन्टों से निपटने के लिए उन पर आरोप लगाने और उन्हें सजा देने का एक जन-आन्दोलन छेड़ देना; उसमें बताया गया था कि इस आन्दोलन के जरिए जन-समुदाय का जोश बढ़ाया जाए, उसके सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दर्जे को बढ़ाया जाए, ट्रेड यूनियनों, किसान सभाओं व अन्य जन-संगठनों को संगठित किया जाए, तथा इस बात की तैयारी की जाए कि इस आन्दोलन के पूरा हो जाने पर लगान और सूद कम करने का जन-आन्दोलन छेड़ा जा सके। शहरों में जन-समुदाय को जागृत करते समय हमें सबसे पहले मजदूरों को जागृत करना चाहिए, ताकि वे देशद्रोहियों व गुप्त एजेन्टों से निपटने के आन्दोलन में हिरावल और नेतृत्वकारी भूमिका अदा

कर सकें। इस निर्देश में यह आवाहन भी किया गया था कि शहरी प्रशासन का समूचा तरीका सीख लिया जाए, मानव-शक्ति को किफायत से इस्तेमाल किया जाए तथा हर चीज के बारे में दीर्घकालीन योजना बनाई जाए।

वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति के मूल्यांकन के बारे में कुछ बातें*

अप्रैल १९४६

१. विश्व प्रतिक्रियावाद की शक्तियां निश्चित रूप से तीसरे विश्वयुद्ध की तैयारी कर रही हैं और युद्ध का खतरा मौजूद है। लेकिन दुनिया की जनता की जनवादी शक्तियां प्रतिक्रियावादी शक्तियों से आगे निकल गई हैं और वे विकसित होती जा रही हैं; उन्हें युद्ध के खतरे पर जरूर काबू पाना चाहिए और वे जरूर काबू पा सकती हैं। इसलिए अमरीका, बरतानिया और फ्रांस के साथ सोवियत संघ के सम्बन्धों का सवाल सुलहनामा होने या टूटने का सवाल नहीं है, बल्कि जल्दी सुलहनामा होने या देर में सुलहनामा

*यह दस्तावेज उस समय की अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति के निराशावादी मूल्यांकन का मुकाबला करने के लिए लिखा गया था। १९४६ के वसन्त में, साम्राज्यवाद, जिसका अगुवा अमरीका है, और विभिन्न देशों के प्रतिक्रियावादी अपनी सोवियत-विरोधी, कम्युनिस्ट-विरोधी और जन-विरोधी सरगरमियों को रोजाना बढ़ा रहे थे तथा यह शोरगुल मचा रहे थे कि "अमरीका और सोवियत संघ के बीच युद्ध होना अनिवार्य है" और "तीसरा विश्वयुद्ध छिड़ना अनिवार्य है"। ऐसी परिस्थिति में, चूंकि कुछ साथी साम्राज्यवाद की शक्ति को उसकी असलियत

होने का सवाल है। "सुलहनामे" का मतलब है शान्तिपूर्ण वार्ता के जरिए समझौता होना। "जल्दी या देर में" का मतलब है कुछ सालों में, या दस साल से ज्यादा अरसे, अथवा इससे भी कहीं ज्यादा समय में।

२. जिस किस्म के सुलहनामे का जिक्र ऊपर किया गया है, उसका मतलब सभी अन्तरराष्ट्रीय मामलों में सुलहनामा होना नहीं है। यह तब तक असम्भव है, जब तक अमरीका, बरतानिया और फ्रांस में प्रतिक्रियावादियों का शासन जारी रहेगा। इस किस्म के सुलहनामे का मतलब है कुछ मामलों में सुलहनामा होना, जिनमें कुछ महत्वपूर्ण मामले भी शामिल हैं। लेकिन निकट भविष्य के छोटे से अरसे में ऐसे सुलहनामे ज्यादा नहीं होंगे। तो भी इस बात की सम्भावना है कि अमरीका, बरतानिया और फ्रांस के साथ सोवियत संघ के व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ें।

से ज्यादा आंकने लगे, जनता की शक्ति को उसकी असलियत से कम आंकने लगे, अमरीकी साम्राज्यवाद से डरने लगे और नया विश्वयुद्ध छिड़ने से डरने लगे, इसलिए अमरीकी व च्याङ काई-शेक प्रतिक्रियावादी गुट के सशस्त्र हमलों के सामने उन्होंने दुर्बलता दिखाई तथा प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध का क्रान्तिकारी युद्ध के जरिए दृढ़ता के साथ विरोध करने की हिम्मत नहीं की। इस दस्तावेज में कामरेड माओ त्सेतुङ ने ऐसे गलत विचारों का विरोध किया। उन्होंने बताया कि अगर तमाम दुनिया में जनता की शक्तियां विश्व प्रतिक्रियावाद की शक्तियों के खिलाफ दृढ़ता के साथ और कारगर रूप से संघर्ष छेड़ दें, तो वे नए विश्वयुद्ध के खतरे पर काबू पा सकती हैं। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि साम्राज्यवादी देशों और समाजवादी देशों के बीच किसी प्रकार के सुलहनामे होना मुमकिन हैं,

३. अमरीका, बरतानिया व फ्रांस और सोवियत संघ के बीच का ऐसा सुलहनामा अमरीका, बरतानिया और फ्रांस की प्रतिक्रियावादी शक्तियों के खिलाफ दुनिया की तमाम जनवादी शक्तियों के दृढ़ और कारगर संघर्षों से ही हो सकता है। ऐसा सुलहनामा यह मांग नहीं करता कि पूंजीवादी दुनिया के देशों की जनता उनका अनुसरण करके अपने देश में भी सुलहनामे कर ले। उन देशों की जनता अपनी अलग-अलग स्थितियों के अनुसार अलग-अलग संघर्ष छेड़ती रहेगी। जनता की जनवादी शक्तियों से निपटते समय प्रतिक्रियावादी शक्तियों का उसूल यह रहता है कि जिसे नष्ट कर सको उसे जरूर नष्ट कर दो और जिसे अब नष्ट न कर सको उसे बाद में नष्ट करने की तैयारी करो। इस स्थिति का सामना होने पर जनता की जनवादी शक्तियों को भी इसी तरह यही उसूल प्रतिक्रियावादी शक्तियों पर लागू करना चाहिए।

लेकिन ऐसे सुलहनामे "यह मांग नहीं करते कि पूंजीवादी दुनिया के देशों की जनता उनका अनुसरण करके अपने देश में भी सुलहनामे कर ले", तथा "उन देशों की जनता अपनी अलग-अलग स्थितियों के अनुसार अलग-अलग संघर्ष छेड़ती रहेगी"। उस समय यह दस्तावेज प्रकाशित नहीं किया गया और सिर्फ केन्द्रीय कमेटी के कुछ नेताओं को पढ़ने के लिए दिया गया। दिसम्बर १९४७ में इसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की मीटिंग में बांटा गया। चूंकि उपस्थित साथियों ने इसकी विषय-वस्तु को सर्वसम्मति से मान लिया, इसलिए बाद में इसके पूरे मजमून को "केन्द्रीय कमेटी की दिसम्बर १९४७ की मीटिंग के फैसलों के बारे में सरकुलर" में शामिल कर लिया गया, जिसे केन्द्रीय कमेटी ने जनवरी १९४८ में जारी किया।

आत्मरक्षात्मक युद्ध के जरिए च्याङ काई-शेक के आक्रमण को चकनाचूर कर डालो*

२० जुलाई १९४६

१. च्याङ काई-शेक ने युद्ध-विराम समझौते[1] को तोड़ दिया है और राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावों[2] का उल्लंघन किया है ; सफिङ, छाङछुन आदि उत्तर-पूर्व के हमारे कई नगर हथिया लेने के बाद, वह अब पूर्वी और उत्तरी चीन में हमारे खिलाफ बड़े पैमाने का एक और आक्रमण शुरू कर रहा है ; बाद में वह उत्तर-पूर्व पर फिर से चढ़ाई कर सकता है। आत्मरक्षात्मक युद्ध में च्याङ काई-शेक के आक्रमण को पूरी तरह चकनाचूर कर डालने के बाद ही चीनी जनता फिर से शान्ति प्राप्त कर सकती है।

२. च्याङ काई-शेक के आक्रमण को चकनाचूर कर डालने और इस तरह शान्ति प्राप्त करने के लिए हमारी पार्टी और हमारी सेना हर प्रकार की तैयारी कर रही हैं। हालांकि च्याङ काई-शेक

---

*यह अन्तःपार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था। १९४५ के जाड़ों में च्याङ काई-शेक ने "१० अक्तूबर समझौते" को फाड़ फेंका, लेकिन चौतरफा गृहयुद्ध की उसकी तैयारियां अभी पूरी नहीं हुई थीं, और इसका मुख्य कारण यह था कि

को अमरीका से मदद मिलती है, फिर भी जनता की भावनाएं उसके खिलाफ हैं, उसकी सेनाओं के हौसले पस्त हैं और उसकी अर्थ-व्यवस्था मुश्किलों में फंसी हुई है। जहां तक हमारा ताल्लुक है, यद्यपि हमें विदेशी मदद नहीं मिलती, फिर भी जनता की भावनाएं हमारे साथ हैं, हमारी सेनाओं के हौसले बुलन्द हैं और हम अपनी अर्थव्यवस्था को सम्भाल सकते हैं। इसलिए हम च्याङ काई-शेक को परास्त कर सकते हैं। समूची पार्टी को इस बात का पूरा भरोसा होना चाहिए।

३. च्याङ काई-शेक को हराने के लिए लड़ने का तरीका आम तौर पर चलायमान युद्ध है। इसलिए अस्थाई रूप से कुछ जगहों या नगरों को छोड़कर हट जाना सिर्फ अनिवार्य ही नहीं बल्कि जरूरी भी है। कुछ जगहों या नगरों को अस्थाई रूप से इसलिए छोड़ा

क्वोमिन्ताङ सेनाओं को अभी बड़ी तादाद में गृहयुद्ध के मोर्चों पर नहीं भेजा गया था। नतीजा यह हुआ कि समूची जनता की शान्ति और जनवाद की मांग के दबाव में क्वोमिन्ताङ सरकार को जनवरी १९४६ में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और अन्य जनवादी पार्टियों की शिरकत में राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का आयोजन करना पड़ा। सम्मेलन में शान्ति और जनवाद के हक में सिलसिलेवार अनेक प्रस्ताव पास किए गए और १० जनवरी को युद्ध-विराम का आदेश जारी कर दिया गया। राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावों और युद्ध-विराम के आदेश पर अमल करने के लिए च्याङ काई-शेक राजी न था। १९४६ की पहली छमाही में क्वोमिन्ताङ सेनाओं ने मुक्त क्षेत्रों के अनेक स्थानों पर चढ़ाइयां जारी रखीं; इन चढ़ाइयों में उत्तर-पूर्व की चढ़ाई खास तौर से बड़े पैमाने पर की गई थी और एक ऐसी सूरत पैदा कर दी गई थी जिसमें लम्बी दीवार के दक्षिण में छोटे पैमाने की लड़ाइयां और उसके उत्तर में बड़े पैमाने की लड़ाइयां लड़ी गईं। इस बीच क्वोमिन्ताङ सेनाओं को लाने-ले जाने और उन्हें हथियारों से

जाता है ताकि अन्तिम विजय हासिल की जा सके, वरना अन्तिम विजय हासिल करना सम्भव नहीं होगा। हमें अपने सभी पार्टी-सदस्यों को और मुक्त क्षेत्रों की समूची जनता को यह बात समझा देनी चाहिए, ताकि वे सभी इसके लिए मानसिक रूप से तैयार रहें।

४. च्याङ काई-शेक के आक्रमण को चकनाचूर कर डालने के लिए यह जरूरी है कि हम आम जनता से घनिष्ठ रूप से सहयोग करें और जितने भी लोगों को अपने पक्ष में किया जा सकता हो, उन सबको अपने पक्ष में कर लें। देहाती इलाकों में, हमें एक ओर तो भूमि-समस्या को दृढ़ता से हल कर लेना चाहिए, खेत-मजदूरों और गरीब किसानों पर पक्का भरोसा रखना चाहिए और मध्यम किसानों के साथ एकता कायम करनी चाहिए ; दूसरी ओर हमें यह भी चाहिए कि भूमि-समस्या हल करते समय एक पक्ष में मामूली

लैस करने में अमरीका ने जोरदार कोशिशें कीं। जून १९४६ के अन्त तक च्याङ काई-शेक और उसके अमरीकी आकाओं को इत्मीनान हो गया कि अब उनकी तैयारी पूरी हो चुकी है और अब वे तीन से लेकर छै महीने के भीतर पूरी जन-मुक्ति सेना का सफाया कर सकते हैं। इसी के अनुसार उन्होंने मुक्त क्षेत्रों के विरुद्ध चौतरफा आक्रमण शुरू कर दिया, जिसकी शुरुआत २६ जून को मध्यवर्ती मैदान मुक्त क्षेत्र पर घेरा डालकर किए गए जबरदस्त आक्रमण से की गई। जुलाई और सितम्बर के बीच क्वोमिन्ताङ सेनाओं ने च्याङसू-आनह्वेइ, शानतुङ, शानशी-हपे-शानतुङ-हनान, शानशी-छाहाड़-हपे और शानशी-स्वेय्वान मुक्त क्षेत्रों पर लगातार बड़े पैमाने के हमले शुरू कर दिए। अक्तूबर में उन्होंने उत्तर-पूर्वी मुक्त क्षेत्र पर बड़े पैमाने की एक और चढ़ाई कर दी। साथ ही उन्होंने अपनी विशाल सेनाओं से शेनशी-कानसू-निङश्या मुक्त क्षेत्र की घेरेबन्दी भी जारी रखी। जब देशव्यापी गृहयुद्ध छिड़ गया, तो क्वोमिन्ताङ ने अपनी १९३ ब्रिगेडों (डिवीजनों) यानी कोई १६,००,००० नियमित सेना को, जो उसकी कुल २४८ ब्रिगेडों

धनी किसानों, मध्यम व छोटे जमींदारों और दूसरे पक्ष में गद्दारों, बुरे शरीफजादों और स्थानीय निरंकुश तत्वों के बीच भेद करें। गद्दारों, बुरे शरीफजादों और स्थानीय निरंकुश तत्वों के प्रति हमारा बरताव अधिक सख्ती का होना चाहिए तथा धनी किसानों और मध्यम व छोटे जमींदारों के प्रति अधिक नरमी का। जिन जगहों में भूमि-समस्या हल की जा चुकी है वहां हमें थोड़े से प्रतिक्रियावादियों को छोड़कर बाकी पूरे जमींदार वर्ग के प्रति अपना रुख बदलकर नरमी बरतनी चाहिए। शत्रुतापूर्ण तत्वों की तादाद घटाने और मुक्त क्षेत्रों को सुदृढ़ बनाने के लिए, हमें उन सभी जमींदारों की मदद करनी चाहिए जिन्हें गुजर-बसर करने में कठिनाई हो रही हो तथा उन जमींदारों को वापस लौटने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और उन्हें अपनी रोजी कमाने का मौका देना चाहिए जो दूसरी

(डिवीजनों) यानी २०,००,००० नियमित सेना का ८० प्रतिशत भाग थी, मुक्त क्षेत्रों पर आक्रमण करने में झोंक दिया। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और उसके ब्यूरोओं-उपब्यूरोओं के नेतृत्व में मुक्त क्षेत्रों की सेना और जनता ने च्याङ काई-शेक की सेनाओं के आक्रमण का बहादुरी से मुकाबला किया। उस समय मुक्त क्षेत्रों में छै बड़े रणक्षेत्र थे। ये छै रणक्षेत्र और इनमें लड़ने वाली जन-मुक्ति सेना की सैन्य-शक्तियां इस प्रकार थीं :

शानशी-हपे-शानतुङ-हनान मुक्त क्षेत्र, और उसमें ल्यू पो-छङ, तङ श्याओ-फिङ आदि कामरेडों के नेतृत्व में जन-मुक्ति सेना की सैन्य-शक्तियां ;

पूर्वी चीन मुक्त क्षेत्र (शानतुङ और च्याङसू-आनह्वेइ मुक्त क्षेत्रों समेत), और उसमें छन ई, सू यी, थान चन-लिन आदि कामरेडों के नेतृत्व में जन-मुक्ति सेना की सैन्य-शक्तियां ;

उत्तर-पूर्वी मुक्त क्षेत्र, और उसमें लिन प्याओ, लो रुङ-ह्वान आदि कामरेडों के नेतृत्व में जन-मुक्ति सेना की सैन्य-शक्तियां ;

जगह भाग गए हों। नगरों में, मजदूर वर्ग, निम्न-पूंजीपति वर्ग और तमाम प्रगतिशील तत्वों से एकता कायम करने के अलावा हमें इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि तमाम मध्यवर्ती तत्वों से एकता कायम की जाए और प्रतिक्रियावादियों को अलगाव में डाल दिया जाए। क्वोमिन्ताङ सेनाओं के अन्दर हमें गृहयुद्ध के सभी सम्भावित विरोधियों को अपने पक्ष में कर लेना चाहिए और जंगबाज तत्वों को अलगाव की स्थिति में डाल देना चाहिए।

५. च्याङ काई-शेक के आक्रमण को चकनाचूर कर डालने के लिए यह जरूरी है कि हम अपनी योजनाएं दीर्घकालीन आधार पर बनाएं। अपनी मानव-शक्ति और अपने भौतिक साधनों का उपयोग हमें ज्यादा से ज्यादा किफायत से करना चाहिए और फिजूलखर्ची से बचने के लिए कुछ भी उठा न रखना चाहिए। भ्रष्टाचार के जो

शानशी-छाहाड़-हपे मुक्त क्षेत्र, और उसमें न्ये रुङ-चन और अन्य कामरेडों के नेतृत्व में जन-मुक्ति सेना की सैन्य-शक्तियां ;

शानशी-स्वेय्वान मुक्त क्षेत्र, और उसमें हो लुङ और अन्य कामरेडों के नेतृत्व में जन-मुक्ति सेना की सैन्य-शक्तियां ;

मध्यवर्ती मैदान मुक्त क्षेत्र, और उसमें ली श्येन-न्येन, चङ वेइ-सान आदि कामरेडों के नेतृत्व में जन-मुक्ति सेना की सैन्य-शक्तियां।

उस समय कुल १२,००,००० सैनिकों वाली जन-मुक्ति सेना संख्या की दृष्टि से शत्रु से कमतर थी। उसने कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा निर्धारित रणनीति को सही ढंग से लागू किया और हमलावर शत्रु पर लगातार जबरदस्त चोटें कीं। लगभग आठ महीने के अन्दर शत्रु की ६६ नियमित ब्रिगेडों और कुछ अनियमित यूनिटों का, जिनके कुल सैनिकों की संख्या ७,१०,००० से ज्यादा थी, सफाया कर डालने के बाद, जन-मुक्ति सेना ने शत्रु के चौतरफा आक्रमण को रोक दिया। फिर वह कदम-ब-कदम अपने रणनीतिक प्रत्याक्रमण को बढ़ाती गई।

अंकुर कई जगह दिखाई पड़े हैं, उनकी जांच-पड़ताल करके उन्हें दूर कर देना चाहिए। जरूरत के सभी सामान के मामले में और सबसे पहले अनाज और कपड़े के मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर बनने के लिए हमें उत्पादन-कार्य में कड़ी मेहनत करनी चाहिए। हमें इस बात को प्रोत्साहन देना चाहिए कि कपास की व्यापक खेती की जाए, हर परिवार कताई करे और हर गांव बुनाई करे। यह प्रोत्साहन देना हमें उत्तर-पूर्व में भी शुरू कर देना चाहिए। वित्त और सप्लाई के मामले में हमें आत्मरक्षात्मक युद्ध की भौतिक जरूरतों को पूरा करना चाहिए, और साथ ही जनता का भार भी घटाते जाना चाहिए, ताकि युद्ध-काल की परिस्थिति में भी हमारे मुक्त क्षेत्रों की जनता का रहन-सहन कुछ न कुछ सुधर सके। सारांश यह कि हम पूरे तौर पर सिर्फ अपनी ही कोशिशों पर निर्भर हैं और हमारी स्थिति अजेय है ; यह च्याङ काई-शेक के ठीक विपरीत है, जो पूरे तौर पर अन्य देशों पर ही निर्भर है। हम सादगी से रहते हैं और मेहनत से काम करते हैं, तथा सेना और जनता दोनों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हैं ; यह च्याङ काई-शेक के इलाकों की स्थिति के बिलकुल विपरीत है, जहां चोटी के लोग तो भ्रष्ट और पतित हैं, जबकि उनके अधीन जनता बड़ी दीन-हीन स्थिति में है। ऐसी परिस्थिति में हम निश्चय ही विजयी होंगे।

६. हमारे सामने कठिनाइयां मौजूद हैं, मगर उन्हें दूर किया जा सकता है और करना ही होगा। सभी पार्टी-कामरेडों को और मुक्त क्षेत्रों की समूची सेनाओं और समस्त जनता को एकदिल हो जाना चाहिए, च्याङ काई-शेक के आक्रमण को पूरी तरह चकनाचूर कर देना चाहिए तथा एक स्वाधीन, शान्तिमय और जनवादी नए चीन का निर्माण करना चाहिए।

नोट

१ "युद्ध-विराम समझौता" फौजी मुठभेड़ों को बन्द करने के बारे में किया गया एक समझौता था, जो १० जनवरी १९४६ को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों और च्याङ काई-शेक की क्वोमिन्ताङ सरकार के प्रतिनिधियों के बीच हुआ था। उसमें यह तय किया गया था कि दोनों पक्षों की सेनाएं १३ जनवरी को आधी रात के समय अपनी-अपनी स्थितियों पर रुककर अपनी तमाम सामरिक गतिविधियों को बन्द कर दें। लेकिन दरअसल हुआ यह कि च्याङ काई-शेक ने इस समझौते को धूमावरण के रूप में इस्तेमाल करके इसकी ओट में एक बड़े युद्ध की तैयारी कर डाली ; ऐन उसी वक्त जबकि युद्ध-विराम का आदेश जारी किया जा रहा था, च्याङ काई-शेक ने क्वोमिन्ताङ सेनाओं को आदेश दिया कि वे "सामरिक महत्व के ठिकानों पर कब्जा कर लें" और तभी से उसने मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाई करने के लिए अपनी सेनाओं को लगातार इधर-उधर भेजना शुरू कर दिया। जुलाई तक च्याङ काई-शेक युद्ध-विराम समझौते को खुल्लम-खुल्ला फाड़ चुका था और मुक्त क्षेत्रों पर चौतरफा चढ़ाई शुरू कर चुका था।

२ राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन में क्वोमिन्ताङ, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और अन्य राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों तथा निर्दलीय गण्यमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। उसका आयोजन १० से ३१ जनवरी १९४६ तक छुङकिङ में किया गया। सम्मेलन में पांच समझौते किए गए :

(१) सरकार के संगठन से सम्बन्धित समझौता। इस समझौते में बताया गया कि "राष्ट्रीय सरकार के संगठनात्मक नियमों में राष्ट्रीय सरकारी कौंसिल को पुष्ट करने के उद्देश्य से संशोधन किया जाएगा"। इसके द्वारा राष्ट्रीय सरकार के कौंसिलरों की संख्या बढ़ा दी जाएगी ; "राष्ट्रीय सरकार

के कौंसिलरों को राष्ट्रीय सरकार का अध्यक्ष क्वोमिन्ताङ सदस्यों व गैर-क्वोमिन्ताङ व्यक्तियों में से चुनेगा", "राष्ट्रीय सरकार के अध्यक्ष द्वारा विभिन्न पार्टियों के सदस्यों की राष्ट्रीय सरकार के कौंसिलरों के रूप में नियुक्ति सम्बन्धित पार्टियों की सिफारिश पर की जाएगी, लेकिन अगर अध्यक्ष इस सिफारिश को नामंजूर करेगा तो वह पार्टी नए नामों की सिफारिश करेगी" ; "यदि राष्ट्रीय सरकार का अध्यक्ष किसी ऐसे निर्दलीय गण्यमान्य व्यक्ति को सरकारी कौंसिलर के रूप में नामजद करेगा जिसकी नियुक्ति का पहले से नियुक्त कौंसिलरों में से एक तिहाई लोग विरोध करते हों, तो अध्यक्ष को इस मामले पर फिर से विचार करना होगा तथा इस नियुक्ति के लिए किसी नए आदमी को नामजद करना होगा" ; "राष्ट्रीय सरकार के आधे कौंसिलर क्वोमिन्ताङ के सदस्य होंगे और बाकी आधे अन्य राजनीतिक पार्टियों व गण्यमान्य व्यक्तियों में से लिए जाएंगे"। राष्ट्रीय सरकार की कौंसिल की परिभाषा अमूर्त रूप से यह दी गई थी कि यह "राजकीय मामलों के लिए उत्तरदायी सर्वोच्च सरकारी संगठन है", जिसे वैधानिक उसूलों, प्रशासनिक नीतियों और मुख्य सैनिक मामलों, वित्तीय योजनाओं और बजट के बारे में तथा राष्ट्रीय सरकार के अध्यक्ष द्वारा विचारार्थ प्रस्तुत किए गए मामलों के बारे में विचार-विमर्श करने और फैसला करने का अधिकार होगा ; मगर साथ ही राष्ट्रीय सरकार के अध्यक्ष को भारी अधिकार प्राप्त होंगे, जिनमें किसी पद के लिए किसी व्यक्ति को नामजद करने का अधिकार, सापेक्ष वीटो का अधिकार और संकटकालीन अधिकार शामिल होंगे। समझौते में यह व्यवस्था भी की गई थी कि राष्ट्रीय सरकार के "कार्यकारी स्थान के सात या आठ सदस्य गैरक्वोमिन्ताङ होंगे, जो या तो मौजूदा मंत्रालयों का संचालन करेंगे अथवा प्रस्तावित बिना पोर्टफोलियो के मंत्रालय का।"

(२) शान्तिपूर्ण राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का प्रोग्राम। इस प्रोग्राम की नौ धाराएं हैं, यानी "आम उसूल", "जनता के अधिकार", "राजनीतिक मामले", "फौजी मामले", "वैदेशिक सम्बन्ध", "आर्थिक व वित्तीय मामले", "शिक्षा व संस्कृति", "सहायता व पुनर्वास" और "प्रवासी चीनियों से सम्बन्धित मामले"। "आम उसूल" सम्बन्धी धारा में यह व्यवस्था की गई कि देश की

समस्त राजनीतिक पार्टियां "एक एकीकृत, स्वतंत्र और जनवादी नए चीन का निर्माण करने के लिए घनिष्ठ रूप से एकताबद्ध हो जाएंगी"; "राजनीतिक जनवादीकरण, सेनाओं के राष्ट्रीयकरण तथा सभी राजनीतिक पार्टियों के लिए समानता और वैधता" पर अमल किया जाएगा ; "राष्ट्र के शान्तिपूर्ण विकास की गारन्टी करने के लिए राजनीतिक विवादों को राजनीतिक उपायों से ही हल किया जाएगा"। "जनता के अधिकार" सम्बन्धी धारा में यह व्यवस्था की गई कि "जनता के लिए, व्यक्ति, विचार, धर्म, विश्वास, भाषण, प्रेस, सभा, संगठन, निवास, स्थानान्तरण और पत्र-व्यवहार की आजादियों की गारन्टी की जाएगी" तथा "न्यायपालिका और पुलिस को छोड़कर किसी भी संगठन अथवा व्यक्ति को इस बात की हरगिज इजाजत नहीं होगी कि वह जनता को गिरफ्तार करे, उसके मुकदमों की सुनवाई करे और उसे सजा दे, तथा जो कोई इस व्यवस्था का उल्लंघन करेगा उसे सजा दी जाएगी"। "राजनीतिक मामले" सम्बन्धी धारा में यह व्यवस्था की गई कि "प्रशासन के सभी स्तरों को ओवरहाल किया जाएगा, उनके अधिकारों व उत्तरदायित्वों का एकीकरण किया जाएगा और उन्हें स्पष्ट रूप से निर्धारित कर दिया जाएगा, तमाम दोहरी एजेन्सियों को तोड़ दिया जाएगा, प्रशासनिक विधियों को सरल रूप दिया जाएगा, तथा हर स्तर के प्रशासन को निश्चित उत्तरदायित्व सौंपे जाएंगे"; "सुयोग्य पदाधिकारियों की रक्षा की जाएगी, सरकारी पदों पर नियुक्तियां पार्टी-सम्बन्धों के आधार पर नहीं बल्कि योग्यता और वरिष्ठता के आधार पर की जाएंगी, तथा एक से अधिक पदों पर एक ही आदमी के बने रहने और निजी सिफारिश के जरिए नियुक्त करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाएगा"; "निरीक्षण व्यवस्था पर सख्ती से अमल किया जाएगा, भ्रष्टाचार के मामलों में कड़ी सजा दी जाएगी तथा जनता को इस बात की सुविधा दी जाएगी कि वह भ्रष्ट अफसरों पर आजादी से इलजाम लगा सके"; "स्थानीय स्वायत्त शासन को सक्रियता से बढ़ाया जाएगा और बालिग मताधिकार के जरिए निचले स्तर से ऊपर के स्तरों तक चुनाव किया जाएगा"; तथा "केन्द्रीय सरकार और स्थानीय सरकारों के अधिकारों को सत्ता के समुचित वितरण के उसूल के अनुरूप निर्धारित

किया जाएगा, स्थानीय सरकारें ऐसे कदम उठा सकेंगी जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल हों, लेकिन किसी प्रान्त अथवा काउन्टी की सरकार द्वारा बनाए गए कायदे-कानूनों को केन्द्रीय सरकार के कायदे-कानूनों से टकराना नहीं चाहिए"। "फौजी मामले" सम्बन्धी धारा में यह व्यवस्था की गई कि "फौजी संगठनों को राष्ट्रीय प्रतिरक्षा की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल दिया जाएगा, फौजी प्रणाली में सरकार की जनवादी व्यवस्था और हमारे देश की परिस्थितियों के अनुरूप सुधार किया जाएगा, फौजी सत्ता को राजनीतिक पार्टियों से अलग रखा जाएगा, फौजी सत्ता को सिविल सत्ता से अलग रखा जाएगा, फौजी शिक्षा में सुधार किया जाएगा, पर्याप्त साज-सामान जुटाया जाएगा, कर्मचारी व्यवस्था और वित्तीय व्यवस्था में सुधार किया जाएगा, ताकि एक आधुनिकीकृत राष्ट्रीय सेना का निर्माण किया जा सके"; "राष्ट्र की फौजों को सैनिक पुनर्गठन योजना के अनुरूप कारगर रूप से घटाया जाएगा और पुनर्गठित किया जाएगा"। "आर्थिक व वित्तीय मामले" सम्बन्धी धारा में यह व्यवस्था की गई कि "नौकरशाही-पूंजी के विकास को रोका जाएगा और सरकारी अफसरों को इस बात की सख्त मनाही होगी कि वे अपने सरकारी पद और प्रभाव का इस्तेमाल करके सट्टेबाजी, इजारेदारी, टैक्स-चोरी, तस्करी, सार्वजनिक निधि का गबन और परिवहन के साधनों का गैरकानूनी इस्तेमाल करें"; "लगान और सूद कम कर दिया जाएगा, काश्तकारों के अधिकारों की रक्षा की जाएगी, जमीन के लगान के भुगतान की गारन्टी की जाएगी, कृषि-ऋणों को बढ़ाया जाएगा, सूदखोरी पर सख्त पाबन्दी लगाई जाएगी, ताकि किसानों के रहन-सहन में सुधार किया जा सके तथा 'जमीन जोतने वालों को' के उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक भूमि-कानून लागू किया जाएगा"; "श्रम-स्थितियों में सुधार करने के लिए श्रमिक-कानून लागू किए जाएंगे"; "वित्तीय बन्दोबस्त का सार्वजनिक रूप से ऐलान कर दिया जाएगा, बजट व्यवस्था और वित्तीय रिपोर्टों की व्यवस्था का सख्ती से पालन किया जाएगा, बजट के खर्च में भारी कटौती कर दी जाएगी, राजस्व और व्यय में सन्तुलन पैदा किया जाएगा, केन्द्रीय व स्थानीय सरकारी वित्त की परिभाषा निर्धारित कर दी जाएगी, प्रचलित मुद्रा का संकुचन कर दिया जाएगा और मुद्रा-व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान किया जाएगा तथा घरेलू व विदेशी ऋण लेने और उनका इस्तेमाल करने का सार्वजनिक रूप से ऐलान किया जाएगा और ये काम सार्वजनिक संस्थाओं की देखरेख में किए जाएंगे"; "टैक्स-व्यवस्था में सुधार किया जाएगा तथा सभी भारी व विविध प्रकार की लेवियों और गैरकानूनी टैक्सों को पूरी तरह खत्म कर दिया जाएगा"। "शिक्षा व संस्कृति" सम्बन्धी धारा में यह व्यवस्था की गई कि "विद्याओं का अध्ययन-अनुसन्धान करने की आजादी की गारन्टी की जाएगी, तथा धार्मिक विश्वास या राजनीतिक विचारों के कारण किसी भी स्कूल-कालेज के प्रशासन में दखल नहीं दिया जाएगा"; "शिक्षा व संस्कृति के लिए राष्ट्रीय बजट में निर्धारित रकम के अनुपात को बढ़ाया जाएगा"; तथा "समाचारपत्रों, प्रकाशनों, फिल्मों, नाटकों और डाक-तार पर लगाई गई युद्धकालीन सैन्सरशिप को खत्म कर दिया जाएगा"।

(३) राष्ट्रीय एसेम्बली से सम्बन्धित समझौता। इस समझौते में यह व्यवस्था की गई कि राष्ट्रीय एसेम्बली में "विभिन्न पार्टियों और सार्वजनिक गण्यमान्य व्यक्तियों में से सात सौ प्रतिनिधि और बढ़ा दिए जाएंगे" तथा "प्रथम राष्ट्रीय एसेम्बली का कर्तव्य व अधिकार यह होगा कि वह एक संविधान तैयार करे और उसे स्वीकार करे"।

(४) संविधान के मसौदे से सम्बन्धित समझौता। इस समझौते में यह व्यवस्था की गई कि क्वोमिन्ताङ द्वारा तैयार किए गए संविधान के मसौदे को संशोधित करने के लिए एक पुनरावलोकन कमेटी की स्थापना की जाएगी, तथा उसको संशोधित करने से सम्बन्धित उसूल भी निर्धारित किए गए। राष्ट्रीय एसेम्बली और सरकारी संगठनों के कर्तव्यों व अधिकारों को निर्धारित करने वाले उसूल तय करने के अलावा "स्थानीय शासन-व्यवस्था" और "जनता के अधिकारों व कर्तव्यों" के बारे में विशेष प्रकार की व्यवस्था की गई। "स्थानीय शासन-व्यवस्था" के बारे में उसमें यह व्यवस्था की गई कि "प्रान्त स्थानीय स्वशासन की सबसे ऊंची इकाई होगा"; "केन्द्रीय सरकार के अधिकारों और प्रान्तीय सरकार के अधिकारों को सत्ता के समुचित वितरण के उसूल के आधार पर निर्धारित किया जाएगा"; "प्रान्तीय गवर्नर का

चुनाव जनता द्वारा किया जाएगा" ; तथा "प्रान्त का अपना अलग संविधान भी हो सकता है, लेकिन वह ऐसा हो जो राष्ट्रीय संविधान का उल्लंघन न करे"। "जनता के अधिकारों व कर्तव्यों" के सम्बन्ध में उसमें यह व्यवस्था की गई कि "उन तमाम आजादियों व अधिकारों की, जिनका उपभोग एक जनवादी देश की जनता आम तौर पर करती है, संविधान के जरिए रक्षा की जाएगी और उनका गैरकानूनी उल्लंघन नहीं होने दिया जाएगा"; "अगर जनता की आजादी के बारे में कानूनी तौर पर कोई व्यवस्था की गई तो उसका उद्देश्य होगा इस प्रकार की आजादी की रक्षा करना न कि उसे सीमित करना"; "श्रमिकों की अनिवार्य भरती की व्यवस्था स्थानीय कानूनों में की जाएगी, राष्ट्रीय संविधान में नहीं"; तथा "जो अल्पसंख्यक जातियां एक साथ खास समुदाय बनाकर रहती हैं उनके लिए स्वायत्त शासन के अधिकार की गारन्टी की जाएगी"।

(५) फौजी मामलों से सम्बन्धित समझौता। इस समझौते में यह व्यवस्था की गई कि "फौजी प्रणाली में सरकार की जनवादी व्यवस्था और हमारे देश की परिस्थितियों के अनुरूप सुधार किया जाएगा"; "अनिवार्य फौजी भरती में सुधार किया जाएगा"; "फौजी शिक्षा सैन्य-निर्माण के उसूलों के आधार पर प्रदान की जाएगी तथा उसका राजनीतिक पार्टियों व व्यक्तिगत सम्बन्धों से हमेशा के लिए नाता तोड़ लिया जाएगा"; "फौजी सत्ता को राजनीतिक पार्टियों से अलग रखा जाएगा" और "किसी भी राजनीतिक पार्टी अथवा व्यक्ति को सेना का इस्तेमाल राजनीतिक संघर्ष के साधन के तौर पर नहीं करने दिया जाएगा" ; तथा "फौजी सत्ता को सिविल सत्ता से अलग रखा जाएगा" और "सामरिक सेवा में नियुक्त किसी भी सैनिक को उसके साथ-साथ सिविल अधिकारी के रूप में भी नियुक्त नहीं किया जाएगा"। क्वोमिन्ताङ सेनाओं और मुक्त क्षेत्रों की सेनाओं का पुनर्गठन करने के बारे में, उक्त समझौते में यह व्यवस्था की गई कि "तीन व्यक्तियों की फौजी उपसमिति, योजना के अनुसार, यथासम्भव शीघ्रता के साथ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सेनाओं का पुनर्गठन करने के लिए उठाए जाने वाले कदमों के बारे में समझौता कर लेगी और पुनर्गठन का काम पूरा कर लेगी"; क्वोमिन्ताङ

सेनाओं की "नब्बे डिवीजनों का पुनर्गठन युद्ध मंत्रालय द्वारा पहले से ही तैयार की गई योजना के अनुरूप कर दिया जाएगा और यह पुनर्गठन-कार्य यथासम्भव तेज रफ्तार के साथ छै महीने के भीतर पूरा कर लिया जाएगा"; तथा "जब उक्त दोनों पुनर्गठन-कार्य पूरे हो जाएंगे, तो समूचे राष्ट्र की सभी सेनाओं का एकीकरण कर दिया जाएगा तथा उन्हें पचास या साठ डिवीजनों में फिर से पुनर्गठित कर दिया जाएगा"।

राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के ये समझौते अलग-अलग मात्रा में जनता के लिए अनुकूल और च्याङ काई-शेक के प्रतिक्रियावादी शासन के लिए प्रतिकूल थे। इन समझौतों के प्रति अपनी स्वीकृति व्यक्त करके उन्हें अपनी शान्ति की धोखाधड़ी के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश करते हुए, च्याङ काई-शेक ने एक देशव्यापी गृहयुद्ध छेड़ने के लिए सक्रियता के साथ फौजी तैयारियां कीं। राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के इन समझौतों को उसने जल्दी ही एक-एक करके फाड़ डाला।

अमरीकी पत्रकार एन्ना लुईस स्ट्रोंग के साथ बातचीत*

अगस्त १९४६

एन्ना लुईस स्ट्रोंग : आपके विचार से, क्या निकट भविष्य में चीन की समस्याओं के राजनीतिक और शान्तिपूर्ण हल की कोई आशा है ?

माओ त्सेतुङ : यह अमरीका सरकार के रवैये पर निर्भर है। अगर च्याङ काई-शेक को गृहयुद्ध में मदद देने वाले अमरीकी प्रतिक्रियावादियों के हाथ अमरीकी जनता पीछे खींच ले, तो शान्ति की आशा की जा सकती है।

प्रश्न : मान लीजिए, अमरीका च्याङ काई-शेक को जितनी मदद अब तक दे चुका है उसके अलावा और मदद न दे,[1] तो च्याङ काई-शेक कितने दिन और लड़ सकता है ?

---

*यह अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू परिस्थिति के बारे में कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति के कुछ ही समय बाद दिया गया एक अत्यन्त महत्वपूर्ण वक्तव्य है। इसमें कामरेड माओ त्सेतुङ ने अपनी मशहूर स्थापना "तमाम प्रतिक्रियावादी कागजी बाघ हैं" पेश की थी। इस स्थापना ने हमारे देश की जनता को विचारधारा की दृष्टि से लैस किया, विजय के प्रति उसके विश्वास को मजबूत बनाया और जन-मुक्ति युद्ध में अत्यन्त महान भूमिका अदा की।

उत्तर : एक साल से ज्यादा।

प्रश्न : क्या च्याङ काई-शेक आर्थिक दृष्टि से इतनी देर तक टिक सकता है ?

उत्तर : हां, टिक सकता है।

प्रश्न : अगर अमरीका यह साफ तौर पर जाहिर कर दे कि वह च्याङ काई-शेक को अब कोई मदद नहीं देगा, तो क्या होगा ?

उत्तर : फिलहाल इस बात के कोई आसार नजर नहीं आ रहे कि अमरीका सरकार और च्याङ काई-शेक अल्प काल में लड़ाई बन्द करना चाहते हैं।

प्रश्न : कम्युनिस्ट पार्टी कब तक लड़ सकती है ?

उत्तर : जहां तक हमारी इच्छा का सम्बन्ध है, हम एक दिन भी नहीं लड़ना चाहते। लेकिन अगर हालात ने हमें लड़ने के लिए मजबूर

जिस तरह लेनिन ने साम्राज्यवाद को "मिट्टी का भीम" समझा था, उसी तरह कामरेड माओ त्सेतुङ भी साम्राज्यवाद और तमाम प्रतिक्रियावादियों को कागजी बाघ समझते हैं ; दोनों ने उनके सारतत्व का वर्णन किया है। यह स्थापना क्रान्तिकारी जनता के लिए एक बुनियादी रणनीतिक धारणा है। द्वितीय क्रान्तिकारी गृहयुद्ध के काल से कामरेड माओ त्सेतुङ ने बार-बार बताया है : रणनीति की दृष्टि से, समूचे रूप में, क्रान्तिकारियों को चाहिए कि वे दुश्मन को नाचीज समझें, उसके खिलाफ संघर्ष करने का साहस करें और विजय प्राप्त करने का साहस करें ; साथ ही युद्धकला और कार्यनीति की दृष्टि से, हर अंश में, हर ठोस संघर्ष में, उन्हें दुश्मन का पूरा-पूरा ब्यौरा नजर में रखना चाहिए, सावधानी से काम लेना चाहिए, संघर्ष की कला का होशियारी से अध्ययन करके उसमें महारत हासिल कर लेनी चाहिए, तथा अलग-अलग समय, अलग-अलग जगह और अलग-अलग स्थिति के अनुकूल संघर्ष के अलग-अलग रूपों को अपनाना चाहिए, जिससे दुश्मन को कदम-ब-कदम अलगाव की स्थिति में डाला जा सके और नष्ट किया जा सके।

कर दिया, तो हम अन्त तक लड़ सकते हैं।

प्रश्न : अगर अमरीकी जनता मुझसे यह सवाल करे कि कम्युनिस्ट पार्टी लड़ाई क्यों कर रही है, तो मैं क्या जवाब दूंगी ?

उत्तर : क्योंकि च्याङ काई-शेक चीनी जनता को कत्ल करना चाहता है और अगर जनता को जीवित रहना है तो उसे आत्मरक्षा करनी ही होगी। यह बात अमरीकी जनता समझ सकती है।

प्रश्न : अमरीका द्वारा सोवियत संघ के खिलाफ युद्ध छेड़े जाने की सम्भावना के बारे में आपकी क्या राय है ?

उत्तर : सोवियत-विरोधी युद्ध के बारे में किए गए प्रचार के दो पहलू हैं। एक तरफ तो अमरीकी साम्राज्यवाद सोवियत संघ के खिलाफ सचमुच युद्ध की तैयारी कर रहा है ; सोवियत-विरोधी युद्ध का वर्तमान प्रचार और अन्य सोवियत-विरोधी प्रचार सोवियत-

१ दिसम्बर १९५८ को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो की ऊछाङ में आयोजित मीटिंग में कामरेड माओ त्सेतुङ ने कहा था :

जिस तरह दुनिया में कोई भी चीज ऐसी नहीं है जिसका स्वरूप दोहरा न हो (यह विपरीत तत्वों की एकता का नियम है), उसी तरह साम्राज्यवाद और तमाम प्रतिक्रियावादियों का स्वरूप भी दोहरा है – वे असली बाघ भी हैं और कागजी बाघ भी। अतीत काल के इतिहास में दास-मालिक वर्ग, सामन्ती जमींदार वर्ग और पूंजीपति वर्ग राजसत्ता पर अधिकार करने से पहले और उसके बाद भी कुछ समय तक बड़े ओजस्वी, क्रान्तिकारी और प्रगतिशील रहे ; वे असली बाघ थे। लेकिन समय बीतने पर, चूंकि उनके विपरीत तत्व – दास वर्ग, किसान वर्ग और सर्वहारा वर्ग – कदम-ब-कदम शक्तिशाली होते गए, उनके खिलाफ संघर्ष करते रहे तथा ज्यादा से ज्यादा अजेय बनते गए, इसलिए ये शासक वर्ग कदम-ब-कदम अपने उल्टे तत्वों में बदल गए, प्रतिक्रियावादियों में बदल गए, पिछड़े हुए लोगों में बदल गए,

विरोधी युद्ध के लिए राजनीतिक तैयारी है। दूसरी तरफ, यह प्रचार अमरीकी प्रतिक्रियावादियों द्वारा पैदा किया गया धुएं का पर्दा है, जिसका उद्देश्य अमरीकी साम्राज्यवाद के सामने मौजूद बहुत से वास्तविक अन्तरविरोधों को ढकना है। ये अन्तरविरोध अमरीकी प्रतिक्रियावादियों और अमरीकी जनता के बीच, अमरीकी साम्राज्य-वाद और दूसरे पूंजीवादी देशों के बीच तथा अमरीकी साम्राज्य-वाद और औपनिवेशिक व अर्ध-औपनिवेशिक देशों के बीच हैं। फिलहाल सोवियत-विरोधी युद्ध छेड़ने के अमरीकी नारे का असली मतलब है अमरीकी जनता का दमन करना और पूंजीवादी दुनिया में अपनी हमलावर शक्तियों का विस्तार करना। जैसा कि आपको मालूम ही है, हिटलर और उसके सहयोगी जापानी युद्ध-सरदारों ने अपने देश की जनता को गुलाम बनाने के लिए और दूसरे देशों

कागजी बाघों में बदल गए। और अन्त में जनता द्वारा उन्हें उखाड़ फेंका गया या उखाड़ फेंका जाएगा। प्रतिक्रियावादी, पिछड़े हुए और सड़े-गले वर्ग जनता के खिलाफ अपने आखिरी जिन्दगी-मौत के संघर्षों में भी इस दोहरे स्वरूप को बनाए रखते हैं। एक ओर तो वे असली बाघ हैं, आदमियों को खाते हैं, लाखों-करोड़ों आदमियों को खाते हैं। जनता के संघर्ष के कार्य को मुश्किलों और मुसीबतों के जमाने से गुजरना पड़ता है और बहुत टेढ़ामेढ़ा रास्ता तय करना पड़ता है। चीन में साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद के शासन को नष्ट करने में चीनी जनता को सौ साल से ज्यादा समय लगा और करोड़ों लोगों की कुरबानी देनी पड़ी। तब कहीं १९४९ में विजय प्राप्त की जा सकी। जरा सोचिए तो! क्या ये जिन्दा बाघ नहीं थे, लोहे के बाघ नहीं थे, असली बाघ नहीं थे? लेकिन अन्त में ये कागजी बाघों में बदल गए, मुर्दा बाघों में बदल गए, बीन-पनीर के बाघों में बदल गए। ये ऐतिहासिक तथ्य हैं। क्या लोगों ने इन तथ्यों को देखा या सुना नहीं है?

पर हमला करने के लिए एक लम्बे अरसे तक सोवियत-विरोधी नारों का एक बहाने के तौर पर इस्तेमाल किया। अब अमरीकी प्रतिक्रियावादी भी बिलकुल वही काम कर रहे हैं।

युद्ध छेड़ने के लिए, अमरीकी प्रतिक्रियावादियों को पहले अमरीकी जनता पर प्रहार करना होगा। अमरीकी जनता पर उनका प्रहार चल ही रहा है। वे अमरीकी मजदूरों और जनवादी तत्वों का राज-नीतिक और आर्थिक दमन कर रहे हैं और अमरीका में फासिज्म लाने की तैयारी कर रहे हैं। अमरीकी जनता को अपने देश के प्रतिक्रियावादियों के प्रहारों का मुकाबला करने के लिए उठ खड़े होना चाहिए। मुझे विश्वास है कि वह ऐसा करेगी।

अमरीका और सोवियत संघ के बीच बेहद विशाल इलाका फैला हुआ है, जिसमें योरप, एशिया और अफरीका के बहुत से पूंजीवादी,

---

बेशक, इनकी तादाद कई हजार और दसियों हजार है! कई हजार और दसियों हजार! इसलिए साम्राज्यवाद और सभी प्रतिक्रियावादियों को सारतत्व की दृष्टि से, दीर्घकालीन दृष्टि से, रणनीति की दृष्टि से, उनकी असलियत के मुताबिक कागजी बाघ के रूप में ही देखना चाहिए। इसी के आधार पर हमें अपने रणनीति सम्बन्धी विचारों का निर्माण करना चाहिए। दूसरी तरफ वे जिन्दा बाघ भी हैं, लोहे के बाघ भी हैं, असली बाघ भी हैं, जो लोगों को खा सकते हैं। इसी के आधार पर हमें कार्यनीति और युद्धकला सम्बन्धी अपने विचारों का निर्माण करना चाहिए।

रणनीति की दृष्टि से दुश्मन को नाचीज समझने और युद्धकला की दृष्टि से उसका पूरा-पूरा ब्यौरा नजर में रखने की आवश्यकता के बारे में देखिए: "चीन के क्रान्तिकारी युद्ध की रणनीति विषयक समस्याएं", अध्याय ५, परिच्छेद ६, ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ १); तथा इसी ग्रन्थ में "पार्टी की वर्तमान नीति से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण समस्याएं", भाग १।

औपनिवेशिक और अर्ध-औपनिवेशिक देश हैं। इन देशों को अपने काबू में किए बिना सोवियत संघ पर हमला करने का अमरीकी प्रतिक्रियावादियों के लिए सवाल ही नहीं उठता। आज अमरीका प्रशान्त महासागर में एक ऐसा विशाल इलाका अपने नियंत्रण में कर चुका है जिसका क्षेत्रफल उन तमाम क्षेत्रों से भी ज्यादा है जिन पर पहले बरतानिया का प्रभुत्व था ; जापान, चीन का क्वोमिन्ताङ-शासित प्रदेश, आधा कोरिया और दक्षिणी प्रशान्त महासागर उसके नियंत्रण में हैं। मध्य अमरीका और दक्षिणी अमरीका में वह काफी अरसे से अपना प्रभुत्व जमाए हुए है। वह समूचे बरतानवी साम्राज्य और पश्चिमी योरप को भी अपने नियंत्रण में करना चाहता है। अमरीका तरह-तरह के बहाने गढ़कर बहुत से देशों में बड़े पैमाने पर सैन्य-विन्यास कर रहा है और अपने फौजी अड्डे कायम कर रहा है। दुनिया में जगह-जगह अमरीका द्वारा जो फौजी अड्डे कायम किए गए हैं, या जिन्हें कायम करने की वह तैयारी कर रहा है, वे सब अमरीकी प्रतिक्रियावादियों के कथनानुसार सोवियत संघ के खिलाफ हैं। यह सच है कि ये फौजी अड्डे सोवियत संघ के खिलाफ हैं। लेकिन फिलहाल अमरीकी हमले का शिकार पहले सोवियत संघ नहीं बल्कि वे देश हुए हैं जिनमें ये फौजी अड्डे कायम किए गए हैं। मुझे यकीन है कि जल्दी ही ये देश समझ जाएंगे कि उनका उत्पीड़न सचमुच कौन कर रहा है, सोवियत संघ या अमरीका। अमरीकी प्रतिक्रियावादी एक न एक दिन तमाम दुनिया की जनता को अपने खिलाफ पाएंगे।

बेशक, मेरा मतलब यह नहीं है कि अमरीकी प्रतिक्रियावादियों का सोवियत संघ पर हमला करने का इरादा नहीं है। सोवियत संघ विश्वशान्ति का रक्षक है और अमरीकी प्रतिक्रियावादियों को तमाम दुनिया पर आधिपत्य जमाने से रोकने वाला शक्तिशाली तत्व है। सोवियत संघ के रहते अमरीका और दुनिया के प्रतिक्रियावादियों की कुआकांक्षा किसी भी सूरत में पूरी नहीं हो सकती। यही वजह है कि सोवियत संघ से अमरीकी प्रतिक्रियावादी बेहद नफरत करते हैं और दरअसल इस समाजवादी देश को खत्म करने के सपने देखते हैं। लेकिन आज, जबकि दूसरा विश्वयुद्ध खत्म हुए अभी ज्यादा अरसा नहीं बीता, अमरीकी प्रतिक्रियावादियों द्वारा अमरीका-सोवियत युद्ध के बारे में मचाए गए शोरगुल और उनके द्वारा पैदा किए गए गन्दे माहौल के कारण उनके असली मकसद पर नजर डाले बिना नहीं रहा जाता। जाहिर है कि सोवियत-विरोधी नारे की आड़ में वे बड़े पागलपन के साथ अमरीकी मजदूरों और जनवादी तत्वों पर प्रहार कर रहे हैं तथा उन तमाम देशों को, जो अमरीकी बिस्तार का शिकार हैं, अमरीका के अधीन देशों में बदल रहे हैं। मेरा खयाल है कि अमरीकी जनता को और अमरीकी हमले के खतरे के शिकार तमाम देशों की जनता को अमरीकी प्रतिक्रियावादियों और विभिन्न देशों में मौजूद उनके पालतू कुत्तों के प्रहार का मुकाबला करने के लिए एक हो जाना चाहिए। इस संघर्ष में जीत हासिल करके ही तीसरे विश्वयुद्ध को टाला जा सकता है ; वरना इसे नहीं टाला जा सकता।

प्रश्न : यह बहुत अच्छी व्याख्या है। लेकिन मान लीजिए, अमरीका परमाणु-बम का इस्तेमाल करता है ? और मान लीजिए, अमरीका आइसलैण्ड, ओकीनावा और चीन में कायम अपने अड्डों से सोवियत संघ पर बमबारी कर देता है ?

उत्तर : परमाणु-बम एक कागजी बाघ है, जिसे लोगों को डराने के लिए अमरीकी प्रतिक्रियावादी इस्तेमाल करते हैं। यह देखने में भयानक मालूम होता है, लेकिन वास्तव में यह भयानक है नहीं। इसमें सन्देह नहीं कि परमाणु-बम एक व्यापक संहारकारी शस्त्र है, लेकिन युद्ध की हार-जीत का निर्णय जनता करती है, एक या दो नए किस्म के हथियार नहीं।

तमाम प्रतिक्रियावादी कागजी बाघ हैं। प्रतिक्रियावादी देखने में बड़े डरावने लगते हैं, लेकिन दरअसल वे इतने शक्तिशाली नहीं होते। दूरदृष्टि से देखा जाए, तो वास्तव में शक्तिशाली प्रतिक्रियावादी नहीं होते बल्कि जनता होती है। रूस में १९१७ की फरवरी क्रान्ति से पहले आखिर कौन सा पक्ष सचमुच शक्तिशाली था? बाहर से देखने पर उस समय जार शक्तिशाली था ; लेकिन फरवरी क्रान्ति के महज एक झोंके ने उसे उड़ा दिया। अन्ततोगत्वा, रूस में शक्ति मजदूरों, किसानों और सैनिकों की सोवियतों के पक्ष में थी। जार महज एक कागजी बाघ था। क्या हिटलर किसी जमाने में बहुत शक्तिशाली नहीं माना जाता था? लेकिन इतिहास ने उसे कागजी बाघ साबित कर दिया। ऐसा ही मुसोलिनी भी था, ऐसा ही जापानी साम्राज्यवाद भी था। इसके विपरीत, सोवियत संघ तथा तमाम देशों की जनवाद व आजादी से प्रेम करने वाली जनता लोगों के अनुमान से कहीं अधिक शक्तिशाली साबित हुई है।

च्याङ काई-शेक और उसके समर्थक अमरीकी प्रतिक्रियावादी भी कागजी बाघ हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद की चर्चा करते समय लोगों को ऐसा लगता है कि वह बेहद शक्तिशाली है। चीन के प्रतिक्रियावादी अमरीका की "शक्ति" का इस्तेमाल चीनी जनता

को डराने के लिए कर रहे हैं। लेकिन यह बात साबित हो जाएगी कि इतिहास के सभी प्रतिक्रियावादियों की ही तरह अमरीकी प्रतिक्रियावादियों के पास भी ज्यादा शक्ति नहीं है। अमरीका में दूसरी तरह के लोग – अमरीकी जनता – सचमुच शक्तिशाली हैं।

मिसाल के लिए चीन की परिस्थिति को ही लीजिए। हम लोग आज सिर्फ कोदों और बन्दूक पर निर्भर हैं ; लेकिन इतिहास अन्त में यह साबित कर देगा कि हमारा कोदों और बन्दूक का योग च्याङ काई-शेक के हवाईजहाजों और टैंकों के योग से ज्यादा शक्तिशाली है। हालांकि चीनी जनता के सामने अब भी बहुत सी कठिनाइयां मौजूद हैं, हालांकि चीनी जनता काफी समय तक अमरीकी साम्राज्यवादियों व चीनी प्रतिक्रियावादियों के मुश्तरका हमलों के कारण बहुत सी मुसीबतों का सामना करेगी, फिर भी एक न एक दिन ये प्रतिक्रियावादी परास्त होंगे और हम विजयी होंगे। इसका कारण और कोई नहीं बल्कि यह है : प्रतिक्रियावादी प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि हम प्रगति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

नोट

[1] जनता के खिलाफ गृहयुद्ध छेड़ने में च्याङ काई-शेक का समर्थन करने के लिए अमरीकी साम्राज्यवाद ने उसकी सरकार को भारी मदद दी। जून १९४६ के अन्त तक, अमरीका ४५ क्वोमिन्ताङ डिवीजनों को फौजी साज-सामान से लैस कर चुका था। वह क्वोमिन्ताङ के १,५०,००० फौजी कर्मचारियों को प्रशिक्षित कर चुका था – जिनमें स्थलसैनिक, नौसैनिक, वायुसैनिक, जासूस, संचार-पुलिस, स्टाफ अफसर, मेडिकल अफसर, सप्लाई कर्मचारी इत्यादि शामिल

थे। अमरीकी युद्धपोतों और विमानों ने क्वोमिन्ताङ की १४ फौजी कोरों (४१ डिवीजनों) के और संचार-पुलिस कोर की ८ रेजीमेन्टों के कुल ५,४०,००० से कुछ ज्यादा लोगों को मुक्त क्षेत्रों पर हमला करने वाले मोर्चों तक पहुंचाया। अमरीका सरकार ने अपनी नौसेना की स्थलसैनिक यूनिटों के ९०,००० सैनिकों को चीन भेजा और उन्हें शांघाई, छिङताओ, थ्येनचिन, पेफिङ और छिनह्वाङताओ जैसे महत्वपूर्ण शहरों में तैनात किया। वे उत्तरी चीन में क्वोमिन्ताङ की संचार-पंक्तियों की रक्षा करते थे। अमरीकी विदेश विभाग द्वारा ५ अगस्त १९४९ को प्रकाशित "चीन के साथ अमरीका के सम्बन्ध" (श्वेतपत्र) में दी गई सामग्री के अनुसार, जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध से १९४८ तक अमरीका ने च्याङ काई-शेक सरकार को ४५० करोड़ डालर से ज्यादा की सहायता दी (जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान दी गई अमरीकी सहायता का ज्यादातर हिस्सा क्वोमिन्ताङ ने बाद के जन-विरोधी गृहयुद्ध के लिए जमा किया हुआ था)। लेकिन च्याङ काई-शेक को दी गई असली सहायता इन आंकड़ों से कहीं ज्यादा थी। अमरीकी श्वेतपत्र में यह स्वीकार किया गया कि अमरीकी सहायता च्याङ काई-शेक सरकार के "कुल मुद्रा-व्यय के ५० फीसदी से ज्यादा हिस्से के बराबर थी तथा उस सरकार के बजट को देखते हुए, अमरीका द्वारा युद्ध समाप्त होने के बाद पश्चिमी योरप के किसी भी देश को दी गई सहायता के मुकाबले अनुपात की दृष्टि से ज्यादा भारी थी"।

दुश्मन की फौजों को एक-एक करके नष्ट करने के लिए बरतर सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करो*

१६ सितम्बर १९४६

१. दुश्मन की फौजों को एक-एक करके नष्ट करने[१] के लिए बरतर सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करके लड़ने का तरीका न सिर्फ एक मुहिम के सैन्य-विन्यास में इस्तेमाल किया जाना जरूरी है बल्कि एक लड़ाई के सैन्य-विन्यास में भी इस्तेमाल किया जाना जरूरी है।

२. जहां तक एक मुहिम के सैन्य-विन्यास का सवाल है, जब दुश्मन बहुत सी ब्रिगेडों[२] (या रेजीमेन्टों) का इस्तेमाल करके कई कालमों में और कई दिशाओं से हमारी फौज के खिलाफ अभियान करता है, तब हमारी फौज के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह नितान्त बरतर—दुश्मन की शक्ति से छैगुनी, पंचगुनी, चौगुनी या कम से कम तिगुनी बड़ी—सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करे और एक अनुकूल अवसर चुनकर सबसे पहले दुश्मन की एक ब्रिगेड (या एक रेजीमेन्ट) को घेर ले और उसका सफाया कर दे। यह ब्रिगेड (या रेजीमेन्ट) दुश्मन की ब्रिगेडों (या रेजीमेन्टों) में से अपेक्षाकृत

*यह अन्तःपार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन के लिए तैयार किया था।

कमजोर होनी चाहिए या वह ऐसी होनी चाहिए जिसे कम सहायता प्राप्त हो अथवा जिसने किसी ऐसी जगह पर पड़ाव डाला हो जहां का धरातल और जहां के निवासी हमारे लिए अत्यन्त अनुकूल हों और दुश्मन के लिए प्रतिकूल हों। हमें कम सैन्य-शक्ति इस्तेमाल करके दुश्मन की बाकी ब्रिगेडों (या रेजीमेन्टों) को उलझाए रखना चाहिए, ताकि उन्हें उस ब्रिगेड (या रेजीमेन्ट) के लिए, जिस पर हम घेरा डाल रहे हैं और जिस पर हम हमला कर रहे हैं, जल्दी कुमक पहुंचाने से रोका जा सके, जिससे हम उस ब्रिगेड (या रेजीमेन्ट) को पहले ही नष्ट कर सकें। जब यह लक्ष्य प्राप्त हो जाए, तो हमें परिस्थितियों के अनुसार या तो दुश्मन की एक और ब्रिगेड अथवा कई और ब्रिगेडों का सफाया कर डालना चाहिए या आगामी लड़ाई की तैयारी के लिए अपनी फौजों को हटाकर उन्हें विश्राम करने देना चाहिए और उन्हें सुदृढ़ बनाना चाहिए। (यहां पहली बात के सिलसिले में दो मिसालें पेश की जाती हैं। सू य्वी और थान चन-लिन की कमान में हमारी फौज ने रुकाओ के नजदीक २२ अगस्त को दुश्मन की संचार-पुलिस कोर[३] के पांच हजार पुलिसमैनों का और २६ अगस्त को दुश्मन की एक ब्रिगेड का तथा २७ अगस्त को दुश्मन की डेढ़ ब्रिगेडों का सफाया कर डाला[४]। ल्यू पो-छङ और तङ श्याओ-फिङ की कमान में हमारी फौज ने तिङथाओ के नजदीक ३ और ६ सितम्बर के बीच दुश्मन की एक ब्रिगेड को और ६ सितम्बर के तीसरे पहर फिर एक ब्रिगेड को तथा ७-८ सितम्बर को दो अन्य ब्रिगेडों को नेस्तनाबूद कर डाला।[५]) एक मुहिम के सैन्य-विन्यास में हमें लड़ने के उस गलत तरीके को अपनाने से अवश्य इनकार कर देना चाहिए जिसमें दुश्मन की शक्ति को नाचीज समझने

के फलस्वरूप अपनी फौजी शक्ति को सम-विभाजित कर दुश्मन के सभी कालमों का मुकाबला किया जाता है, क्योंकि इस तरीके से हम दुश्मन के एक भी कालम को नष्ट नहीं कर सकते, बल्कि अपने को ही निष्क्रियता की स्थिति में डाल देते हैं।

३. एक लड़ाई का सैन्य-विन्यास करते समय, जब हम नितान्त बरतर सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करके दुश्मन के कालमों में से एक को (एक ब्रिगेड या रेजीमेन्ट को) घेर रहे हों, तो हमला करने वाली हमारी फौजी फारमेशनों (या यूनिटों) को ऐसा नहीं करना चाहिए कि वे घेरे में फंसे हुए सभी दुश्मनों का एक ही समय में और एक ही झपेटे में सफाया कर डालने की कोशिश करें और इस प्रकार अपनी शक्ति को सम-विभाजित कर हर जगह हमला तो कर दें लेकिन किसी भी जगह पर्याप्त शक्ति न लगा सकें, जिससे समय हाथ से निकल जाए और कोई नतीजा हासिल करना मुश्किल हो जाए। इसके बजाय, हमें ऐसा करना चाहिए कि नितान्त बरतर सैन्य-शक्ति को, यानी दुश्मन की सैन्य-शक्ति से छैगुनी, पंचगुनी, चौगुनी या कम से कम तिगुनी बड़ी सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करें, अपने समूचे या अधिकांश तोपखाने को केन्द्रित करें, दुश्मन की मोर्चेबन्दियों में से एक अपेक्षाकृत कमजोर जगह को (दो को नहीं) चुन लें, उस पर भीषण प्रहार करें और निश्चित रूप से जीत हासिल कर लें। जब यह लक्ष्य प्राप्त कर लिया जाए, तो झटपट विजय का विस्तार करके दुश्मन की फौजों को एक-एक करके नष्ट कर डालना चाहिए।

४. इस तरीके से लड़ने के परिणाम ये होते हैं: पहला, पूरी तरह नेस्तनाबूद करना और दूसरा, तुरत निर्णय करना। सिर्फ पूरी

तरह नेस्तनाबूद करने से ही दुश्मन पर अत्यन्त कारगर रूप से आघात किए जा सकते हैं, क्योंकि जब हम उसकी एक रेजीमेन्ट का सफाया कर डालते हैं तो उसके पास एक रेजीमेन्ट कम हो जाती है, और जब हम उसकी एक ब्रिगेड का सफाया कर डालते हैं तो उसके पास एक ब्रिगेड कम हो जाती है। यह तरीका उस दुश्मन के खिलाफ अत्यन्त उपयोगी साबित होता है जिसके पास दूसरी सैन्य-पंक्ति का अभाव है। सिर्फ पूरी तरह नेस्तनाबूद करने से ही हमारी फौज की क्षतिपूर्ति यथेष्ट रूप से की जा सकती है। इस समय यह न सिर्फ हमारे हथियारों व गोला-बारूद का मुख्य स्रोत है, बल्कि मानव-शक्ति का भी एक महत्वपूर्ण स्रोत है। पूरी तरह नेस्तनाबूद करने से दुश्मन की फौज का हौसला टूट जाता है और उसके अनुयायी निराश हो जाते हैं, जबकि हमारी फौज का हौसला बढ़ता जाता है और हमारी जनता को नई प्रेरणा मिलती है। तुरत निर्णय करने से हमारी फौजों के लिए यह सम्भव हो जाता है कि वे या तो दुश्मन की फौजी कुमक का एक-एक करके सफाया कर डालें अथवा उससे कतराकर निकल जाएं। लड़ाई और मुहिम के दौरान तुरत निर्णय करना दीर्घकालीन युद्ध की रणनीति के लिए एक आवश्यक शर्त है।

५. हमारे फौजी कार्यकर्ताओं में बहुत से लोग अब भी ऐसे हैं जो, जब फौजी कार्यवाही नहीं होती उस समय तो अपनी सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करके दुश्मन की फौजों को एक-एक करके नेस्तनाबूद करने के उसूल का अनुमोदन करते हैं, लेकिन फौजी कार्यवाही के दौरान इसका इस्तेमाल करने में अक्सर असमर्थ हो जाते हैं। इसकी वजह है दुश्मन की शक्ति को नाचीज समझना और गहन शिक्षा

व अध्ययन का अभाव। यह जरूरी है कि पिछली लड़ाइयों की मिसालों को सविस्तार पेश करते हुए लड़ने के इस तरीके की खूबियों की बारम्बार व्याख्या की जाए और बताया जाए कि च्याङ काई-शेक के प्रहारों को पराजित करने का यही मुख्य तरीका है। इस तरीके पर अमल करने से हम विजयी होंगे। इसके विपरीत कार्यवाही करने से हम पराजित हो जाएंगे।

६. एक दशाब्दी से भी ज्यादा समय पहले जब से हमारी सेना की स्थापना हुई तभी से दुश्मन की फौजों का एक-एक करके सफाया करने के लिए अपनी सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करने का उसूल हमारी सेना की एक श्रेष्ठ परम्परा रहा है; ऐसा नहीं है कि इसे पहली बार पेश किया जा रहा हो। लेकिन जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान छापामार लड़ाई के लिए अपनी सैन्य-शक्ति को बिखेरना मुख्य कार्य था और चलायमान लड़ाई के लिए अपनी सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करना पूरक कार्य था। मौजूदा गृहयुद्ध में, चूंकि हालत बदल गई है इसलिए लड़ने का तरीका भी बदलना चाहिए। चलायमान लड़ाई के लिए अपनी सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करना मुख्य कार्य होना चाहिए और छापामार लड़ाई के लिए अपनी सैन्य-शक्ति को बिखेरना पूरक कार्य होना चाहिए। आज जबकि च्याङ काई-शेक की सेना को अधिक शक्तिशाली हथियार प्राप्त हो गए हैं, इस तरीके पर विशेष जोर देना हमारी सेना के लिए जरूरी हो गया है कि दुश्मन की फौजों को एक-एक करके नेस्तनाबूद करने के लिए बरतर सैन्य-शक्ति को केन्द्रित किया जाए।

७. जब दुश्मन आक्रमणात्मक स्थिति में हो और हम रक्षात्मक स्थिति में हों, तो इस तरीके का जरूर इस्तेमाल करना चाहिए।

लेकिन, जब दुश्मन रक्षात्मक स्थिति में हो श्रौर हम आक्रमणात्मक स्थिति में हों, तो हमें इन दो किस्म की परिस्थितियों के बीच भेद करना चाहिए श्रौर भिन्न-भिन्न तरीके अपनाने चाहिए। जब हमारी सैन्य-शक्ति बड़ी हो श्रौर वहां मौजूद दुश्मन अपेक्षाकृत कमजोर हो, अथवा जब हम दुश्मन पर आकस्मिक प्रहार कर रहे हों, तो हम उसकी कई फौजी यूनिटों पर एक साथ धावा बोल सकते हैं। मिसाल के तौर पर, ५ से १० जून तक शानतुङ प्रान्त में हमारी फौज ने छिङताओ-चीनान श्रौर थ्येनचिन-फूखओ रेलवे-लाइनों पर स्थित दस से ज्यादा नगरों व कस्बों पर एक साथ हमला किया श्रौर उन पर कब्जा कर लिया।[6] दूसरी मिसाल लीजिए: १० से २१ अगस्त तक हमारी फौज ने ल्यू पो-छङ श्रौर तङ श्याओ-फिङ की कमान में लुङहाए रेलवे-लाइन के खाएफ़ङ व श्वीचओ के बीच के सेक्शन में स्थित दस से ज्यादा नगरों व कस्बों पर हमला किया श्रौर उन पर कब्जा कर लिया।[7] दूसरी श्रोर, जब हमारे पास फौजी शक्ति काफी न हो, तो हमें दुश्मन के कब्जे में मौजूद नगरों व कस्बों को एक-एक करके अपने कब्जे में कर लेना चाहिए श्रौर कई नगरों व कस्बों में दुश्मन पर एक साथ हमला नहीं करना चाहिए। यही तरीका अपना कर शानशी प्रान्त में हमारी फौज ने ताथुङ-फूचओ रेलवे-लाइन पर स्थित कई नगरों व कस्बों को अपने हाथ में ले लिया था।[8]

८. जब हमारी सेना की मुख्य शक्ति दुश्मन को नेस्तनाबूद करने के लिए केन्द्रित हो जाती है, तो उसे अपनी कार्यवाहियों का तालमेल प्रादेशिक फौजी फारमेशनों, स्थानीय छापामार दस्तों व मिलिशिया की जोरदार गतिविधियों के साथ कायम करना चाहिए। जब प्रादेशिक फौजी फारमेशनें (या यूनिटें) दुश्मन की एक रेजीमेन्ट, बटालियन या कम्पनी पर प्रहार करती हैं, तो उन्हें भी दुश्मन की फौजों को एक-एक करके नेस्तनाबूद करने के लिए अपनी सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करने का उसूल अपनाना चाहिए।

९. दुश्मन की फौजों का एक-एक करके सफाया करने के लिए अपनी सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करने के उसूल का मुख्य उद्देश्य है दुश्मन की प्रभावकारी शक्ति को नेस्तनाबूद करना, न कि किसी स्थान को सुरक्षित रखना या उस पर कब्जा जमा लेना। दुश्मन की फौजों का सफाया करने के लिए अपनी सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करने के उद्देश्य से, या इस उद्देश्य से कि हमारी सेना की मुख्य शक्ति दुश्मन की फौज के भारी प्रहार से बच सके श्रौर उसे आगामी लड़ाई के लिए विश्राम करने श्रौर अपने को सुदृढ़ बनाने की सुविधाएं मिल सकें, किन्हीं स्थितियों में इस बात की इजाजत दी जा सकती है कि कुछ जगहों को त्याग दिया जाए। जब हमारी सेना दुश्मन की प्रभावकारी शक्ति का बड़ी तादाद में सफाया करने में समर्थ होगी, तब खोए हुए स्थानों पर फिर से अधिकार कर लेना श्रौर नए स्थानों पर कब्जा जमा लेना सम्भव हो जाएगा। इसलिए उन सब लोगों की प्रशंसा की जानी चाहिए जो दुश्मन की प्रभावकारी शक्ति को नष्ट करने में सफल हो जाते हैं। यह बात न सिर्फ दुश्मन की नियमित सेना को नष्ट करने वालों पर लागू होती है, बल्कि उसकी शान्ति-रक्षा कोरों, "अपने गांव लौटने वाले दस्तों"[9] श्रौर अन्य स्थानीय प्रतिक्रियावादी सशस्त्र गिरोहों को नष्ट करने वालों पर भी लागू होती है। लेकिन, हमें ऐसे स्थानों को सुरक्षित रखना चाहिए या उन पर कब्जा कर लेना चाहिए जहां तुलनात्मक शक्ति की दृष्टि से ऐसा करना सम्भव हो, अथवा ऐसे स्थान जो मुहिमों या लड़ाइयों

के लिहाज से महत्व रखते हों ; ऐसा न करना गलत होगा । इसलिए, जो लोग ऐसे स्थानों को सुरक्षित रखने या उन पर कब्जा करने में सफल होते हैं उनकी भी प्रशंसा की जानी चाहिए ।

नोट

[१] "दुश्मन को नष्ट करना", "दुश्मन का सफाया करना" और "दुश्मन को नेस्तनाबूद करना" इन वाक्यांशों को इस पुस्तक में समानार्थी वाक्यांशों के रूप में इस्तेमाल किया गया है । इनके अन्तर्गत दुश्मन के सैनिकों को हताहत करना और कैदी बना लेना शामिल है ।

[२] क्वोमिन्ताङ की नियमित सेना की हर फौजी कोर में पहले तीन (कभी-कभी दो) डिवीजनें होती थीं और हर डिवीजन में तीन रेजीमेन्टें होती थीं । मई १९४६ से, पीली नदी के दक्षिण में स्थित नियमित क्वोमिन्ताङ सेना का समय-समय पर पुनर्गठन किया गया ; जो पहले एक फौजी कोर थी वह एक पुनर्गठित डिवीजन बन गई और जो पहले एक डिवीजन थी वह एक ब्रिगेड बन गई ; प्रत्येक ब्रिगेड में तीन (कभी-कभी दो) रेजीमेन्टें थीं । पीली नदी के उत्तर में तैनात क्वोमिन्ताङ सेना का पुनर्गठन नहीं हुआ और उसके फौजी संगठनों का नाम ज्यों का त्यों बना रहा । कुछ पुनर्गठित डिवीजनों को बाद में फिर से पहले की ही तरह फौजी कोर का नाम दे दिया गया ।

[३] क्वोमिन्ताङ की संचार-पुलिस कोर की स्थापना मार्च १९४५ में हुई थी । जापान के आत्मसमर्पण के बाद इस कोर को रेलवे-लाइनों की रक्षा करने का बहाना बनाकर संचार-पंक्तियों पर तैनात कर दिया गया । लेकिन वास्तव में उसे पुलिस की गुप्त गतिविधियों के लिए तैनात किया गया था । यह उन शक्तियों में से एक थी जिन्हें क्वोमिन्ताङ द्वारा गृहयुद्ध के लिए इस्तेमाल किया जाता था । —अनु०

[४] जुलाई १९४६ में क्वोमिन्ताङ फौजों ने च्याङसू-आनह्वेइ मुक्त क्षेत्र पर

बड़े पैमाने पर हमला कर दिया और हमारी फौजें आत्मरक्षा के लिए वीरता के साथ लड़ीं । मध्य च्याङसू मुक्त क्षेत्र पर हमला करने वाली क्वोमिन्ताङ फौजों में थाङ अन-पो के मातहत १५ ब्रिगेडें शामिल थीं, जिनमें लगभग १,२०,००० सैनिक थे । पूर्वी चीन जन-मुक्ति सेना की १८ रेजीमेन्टों ने सू य्वी, थान चन-लिन और अन्य कामरेडों की कमान में १३ जुलाई से २७ अगस्त तक मध्य च्याङसू के थाएशिङ, रुकाओ, हाएआन और शाओपो के इलाके में अपनी बरतर सैन्य-शक्तियों को केन्द्रित किया और सफलता के साथ लगातार सात लड़ाइयां लड़ीं । हमारी फौजों ने दुश्मन की ६ ब्रिगेडों और संचार-पुलिस कोर की ५ बटालियनों का सफाया कर डाला । यहां इन लड़ाइयों में से दो की उपलब्धियों का जिक्र किया गया है ।

[५] अगस्त १९४६ में क्वोमिन्ताङ फौजों ने श्वीचओ और चङचओ इलाकों से दो रास्तों पर अभियान करते हुए शानशी-हपे-शानतुङ-हनान मुक्त क्षेत्र पर हमला कर दिया । इस क्षेत्र की जन-मुक्ति सेना ने ल्यू पो-छङ, तङ श्याओ-फिङ और अन्य कामरेडों की कमान में बरतर सैन्य-शक्तियों को केन्द्रित करके चङचओ से अभियान कर रहे दुश्मन के कालम का मुकाबला किया । ३ से ८ सितम्बर तक उसने शानतुङ प्रान्त के होत्से, तिङथाओ और छाओश्येन क्षेत्र में लगातार दुश्मन की चार ब्रिगेडों का सफाया कर डाला ।

[६] जून १९४६ के शुरू में शानतुङ जन-मुक्ति सेना ने छिङताओ-चीनान और थ्येनचिन-फूखओ रेलवे-लाइनों पर तैनात कठपुतली सेना के खिलाफ अभियान किया और दस से ज्यादा नगरों व कस्बों को मुक्त कराया, जिनमें च्याओश्येन, चाङत्येन, चओछुन, तचओ, थाएआन और चाओच्वाङ शामिल थे ।

[७] १० से २१ अगस्त १९४६ तक शानशी-हपे-शानतुङ-हनान जन-मुक्ति सेना ने मध्यवर्ती मैदान और पूर्वी चीन जन-मुक्ति सेनाओं को युद्ध में सहयोग देने के लिए कई रास्तों से लुङहाए रेलवे-लाइन के खाएफङ-श्वीचओ सेक्शन में तैनात दुश्मन की फौज पर प्रहार किया और दस से ज्यादा नगरों व कस्बों पर, जिनमें ताङशान, लानफङ, ह्वाङखओ, लीच्वाङ और याङची शामिल थे, कब्जा कर लिया ।

[८] जुलाई १९४६ में, हू चुङ-नान और येन शी-शान के मातहत क्वोमिन्ताङ

फौजों ने दक्षिणी शानशी मुक्त क्षेत्र पर मुश्तरका हमला किया। शानशी-हूपे-शानतुङ-हनान जन-मुक्ति सेना की थाएख्वे यूनिटों ने और शानशी-स्वेय्वान जन-मुक्ति सेना के एक भाग ने दक्षिणी शानशी में दुश्मन पर जवाबी हमला किया और उसे हरा दिया। अगस्त में उन्होंने ताथुङ-फूचओ रेलवे-लाइन पर स्थित लिनफ़न और लिङशि के बीच तैनात दुश्मन पर प्रहार किया और हुङ्युङ, चाओछङ, ह्वोश्येन, लिङशि और फ़नशी आदि नगरों को मुक्त करा लिया।

[१] जन-मुक्ति युद्ध के दौरान, मुक्त क्षेत्रों के कुछ जमींदार और स्थानीय निरंकुश तत्व क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में भाग गए। क्वोमिन्ताङ फौज के साथ मिलकर मुक्त क्षेत्रों पर आक्रमण करने के लिए उन्हें क्वोमिन्ताङ द्वारा "अपने गांव लौटने वाले दस्तों", "अपने गांव लौटने वाले सैन्य-दलों" तथा अन्य प्रतिक्रियावादी सशस्त्र दलों में संगठित किया गया। इन लोगों ने हर जगह लूट-खसोट और हत्याएं कीं तथा सभी प्रकार के अत्याचार किए।

अमरीकी "मध्यस्थता" के बारे में सच्चाई और चीन के गृहयुद्ध का भविष्य

अमरीकी संवाददाता ए० टी० स्टील से बातचीत

२६ सितम्बर १९४६

ए० टी० स्टील : जनाब, क्या आप यह समझते हैं कि चीन के गृहयुद्ध में मध्यस्थता करने की अमरीकी कोशिश नाकाम हो गई है? अगर अमरीका की नीति आज जैसी ही बनी रही तो उसका नतीजा क्या होगा?

माओ त्सेतुङ : मुझे तो इस बात पर बहुत बड़ा शक है कि अमरीका सरकार की नीति "मध्यस्थता"[१] की नीति है। च्याङ काई-शेक को एक अभूतपूर्व बड़े पैमाने पर गृहयुद्ध छेड़ने के लिए समर्थ बनाने के लिए अमरीका जितनी बड़ी सहायता उसे दे रहा है उसे देखते हुए तो यही कहना पड़ता है कि अमरीका सरकार की नीति तथाकथित मध्यस्थता को धूमावरण बनाकर उसकी आड़ में च्याङ काई-शेक को हर तरह से मजबूत बनाने और च्याङ काई-शेक की कत्लेआम की नीति के जरिए चीन की जनवादी शक्तियों का दमन करने और इस प्रकार चीन को दरहकीकत एक अमरीकी उपनिवेश

बनाने की नीति है। अगर उसकी यह नीति बनी रही, तो यह निश्चित है कि चीन के कोने-कोने में तमाम देशभक्त जनता उठ खड़ी होगी और दृढ़ता के साथ उसका प्रतिरोध करेगी।

प्रश्न : चीन में गृहयुद्ध कब तक चलेगा? इसका नतीजा क्या होगा?

उत्तर : अगर अमरीका सरकार च्याङ काई-शेक को सहायता देने की अपनी मौजूदा नीति को त्याग दे, चीन में इस समय स्थित अपनी सेनाओं को हटा ले तथा सोवियत संघ, अमरीका और बरतानिया के विदेश मंत्रियों के मास्को सम्मेलन में हुए समझौते [२] को अमली जामा पहना दे, तो यह निश्चित है कि चीन में गृहयुद्ध जल्दी ही समाप्त हो जाएगा। वरना यह गृहयुद्ध एक दीर्घकालीन युद्ध का रूप भी धारण कर सकता है। और इससे निस्सन्देह एक तरफ तो चीनी जनता को मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा, मगर दूसरी तरफ इससे चीनी जनता अवश्य ही एकताबद्ध हो जाएगी, आत्मरक्षा के लिए लड़ेगी और अपने भाग्य का निर्णय खुद करेगी। कठिनाइयां और आफतें चाहे जितनी भी झेलनी पड़ें, यह निश्चित है कि चीनी जनता स्वाधीनता, शान्ति और जनवाद की प्राप्ति का अपना यह कार्य पूरा करके ही रहेगी। कोई भी देशी अथवा विदेशी दमनकारी शक्ति इस कार्य की पूर्ति में बाधक नहीं बन सकती।

प्रश्न : जनाब, क्या आप च्याङ काई-शेक को चीनी जनता का "जन्मजात नेता" मानते हैं? चीनी कम्युनिस्ट पार्टी क्या च्याङ काई-शेक की पांच मांगों [३] को हर सूरत में अस्वीकार करने जा रही है? अगर क्वोमिन्ताङ ने कम्युनिस्ट पार्टी की शिरकत के बिना ही राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाने की कोशिश की,[४] तो कम्युनिस्ट पार्टी क्या कार्यवाही करेगी?

उत्तर : "जन्मजात नेता" नाम की कोई भी चीज दुनिया में नहीं होती। अगर च्याङ काई-शेक चीन की राजनीतिक, फौजी, आर्थिक और दूसरी समस्याओं को इस साल जनवरी में किए गए युद्ध-विराम समझौते [५] के अनुसार और राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन में स्वीकार किए गए संयुक्त प्रस्तावों [६] के अनुसार हल करने की कोशिश करता है, न कि उन तथाकथित "पांच मांगों" या दस मांगों के अनुसार जो एकतरफा मांगें हैं और उक्त समझौते और उक्त संयुक्त प्रस्तावों के विरुद्ध हैं, तो हम फिर भी उसके साथ मिलकर काम करने को तैयार रहेंगे। राष्ट्रीय एसेम्बली राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावों के अनुरूप, विभिन्न पार्टियों के द्वारा ही संयुक्त रूप से बुलाई जानी चाहिए ; वरना हम दृढ़ता के साथ उसका विरोध करेंगे।

नोट

[१] दिसम्बर १९४५ में अमरीका सरकार ने जार्ज सी० मार्शल को अमरीकी प्रेसीडेन्ट के विशेष प्रतिनिधि के रूप में चीन भेजा और अमरीकी आक्रमणकारी शक्तियों और प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ के शासन को तरह-तरह से मजबूत बनाने के लिए "क्वोमिन्ताङ और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सैनिक मुठभेड़ में मध्यस्थता" को एक आवरण के रूप में इस्तेमाल किया। गृहयुद्ध की तैयारियां करने के लिए वक्त हासिल करने के उद्देश्य से च्याङ काई-शेक ने अमरीकी साम्राज्य-वाद के इशारे पर, गृहयुद्ध बन्द करने की चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी जनता की मांग को स्वीकार करने का दिखावा किया। जनवरी १९४६ में क्वोमिन्ताङ सरकार और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों ने एक युद्ध-विराम समझौते

पर हस्ताक्षर किए, युद्ध-विराम का आदेश जारी किया और अमरीकी प्रतिनिधियों को शामिल करके "तीन सदस्यों की कमेटी" और "पेफिङ कार्यकारी हेडक्वार्टर" का गठन किया। "मध्यस्थता" के दौरान मार्शल ने पहले उत्तर-पूर्वी चीन में और फिर उत्तरी, पूर्वी और मध्य चीन में मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाइयां करने में क्वोमिन्ताङ सेनाओं की मदद करने के लिए बहाने के तौर पर तरह-तरह की चालों का सहारा लिया ; उसने क्वोमिन्ताङ सेनाओं को बड़ी सरगरमी के साथ प्रशिक्षित और हथियारों से लैस किया तथा च्याङ काई-शेक को हथियार व अन्य युद्ध-सामग्री भारी मात्रा में सप्लाई की। जून १६४६ तक च्याङ काई-शेक ने मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाई करने के लिए मोर्चे पर अपनी नियमित सेनाओं (लगभग बीस लाख सैनिकों) के ८० फीसदी हिस्से का जमाव कर लिया था ; उनमें से ५,४०,००० से अधिक सैनिक सीधे अमरीकी सशस्त्र सेनाओं के जंगी जहाजों और विमानों द्वारा मोर्चे पर उतारे गए थे। अपनी सेनाओं का सैन्य-विन्यास पूरा हो जाने पर जुलाई में च्याङ काई-शेक ने देशव्यापी प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध छेड़ दिया। इसके बाद १० अगस्त को मार्शल और चीन स्थित अमरीकी राजदूत लीटन स्टुअर्ट ने गृहयुद्ध चलाने में च्याङ काई-शेक को खुलकर खेलने का मौका देने के इरादे से एक संयुक्त बयान जारी किया, जिसमें ऐलान किया गया कि "मध्यस्थता" नाकाम हो गई है।

[२] यहां दिसम्बर १६४५ में सोवियत संघ, अमरीका और बरतानिया के विदेश मंत्रियों के मास्को सम्मेलन में चीन के बारे में हुए समझौते का उल्लेख किया गया है। सम्मेलन की विज्ञप्ति में तीनों विदेश मंत्रियों ने "चीन के अन्दरूनी मामलों में दखल न देने की नीति पर कायम रहने की फिर एक बार पुष्टि की"। सोवियत संघ और अमरीका के विदेश मंत्रियों के बीच समझौता हो गया कि सोवियत सेनाएं और अमरीकी सेनाएं यथासम्भव जल्दी से जल्दी चीन से हटा ली जाएं। इस समझौते की शर्तों को सोवियत संघ ने ईमानदारी से पूरा किया। क्वोमिन्ताङ सरकार के बार-बार आग्रह करने पर ही सोवियत सेनाओं ने चीन से हटने की अपनी निश्चित तिथि को स्थगित कर दिया था। ३ मई १६४६ को सोवियत संघ की सशस्त्र सेनाओं ने उत्तर-पूर्वी चीन से हट जाने का काम पूरा कर लिया। मगर अमरीका सरकार ने अपने वादे को पूरी तरह तोड़ डाला, अपनी सेनाएं हटाने से इनकार कर दिया और चीन के अन्दरूनी मामलों में अपनी दखलन्दाजी और अधिक बढ़ा दी।

[३] जून और अगस्त १६४६ में दो मौकों पर च्याङ काई-शेक ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सामने अपनी "पांच मांगें" रखीं और ऐलान किया कि गृहयुद्ध बन्द करने के सवाल पर क्वोमिन्ताङ सिर्फ तभी विचार करेगी जब कम्युनिस्ट पार्टी इन पांच मांगों को मान लेगी। इन पांच मांगों में कहा गया था कि चीनी जन-मुक्ति सेना निम्नलिखित स्थानों से हट जाए : (१) लुङहाए रेलवे के दक्षिण में स्थित तमाम इलाके ; (२) छिङताओ-चीनान रेलवे के समूचे इलाके ; (३) छङत्ये और उसके दक्षिण के इलाके ; (४) उत्तर-पूर्वी चीन का अधिकांश भाग ; और (५) मुक्त क्षेत्रों की जनता की सशस्त्र सेनाओं द्वारा शानतुङ और शानशी प्रान्तों में ७ जून १६४६ के बाद कठपुतली सेनाओं से मुक्त कराए गए समस्त इलाके। इन सभी प्रतिक्रान्तिकारी मांगों को मानने से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने दृढ़ता से इनकार कर दिया।

[४] जनवरी १६४६ में आयोजित राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के फैसले के अनुसार राष्ट्रीय एसेम्बली को जनवाद और एकता वाली एक ऐसी एसेम्बली बनाया जाना चाहिए था जिसमें सभी राजनीतिक पार्टियां शामिल होतीं और जिसे राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन में किए गए समझौतों की शर्तें पूरी हो जाने पर पुनर्गठित की गई सरकार के नेतृत्व में बुलाया जाता। ११ अक्तूबर १६४६ को क्वोमिन्ताङ सेनाओं ने चाङच्याखओ पर कब्जा कर लिया। इस "विजय" से च्याङ काई-शेक गुट के दिमाग चढ़ गए, इसलिए उसी दिन तीसरे पहर उसने राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्ताव की शर्तों का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन किया तथा सिर्फ क्वोमिन्ताङ द्वारा नियंत्रित एक फूटपरस्त व तानाशाह "राष्ट्रीय एसेम्बली" बुलाने का आदेश जारी कर दिया। इस "राष्ट्रीय एसेम्बली" का, जिसे १५ नवम्बर १६४६ से नानकिङ में औपचारिक रूप से बुलाया गया, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, जनवादी पार्टियों और सारे देश की जनता ने दृढ़ता के साथ विरोध और बहिष्कार किया।

[५] देखिए इसी ग्रन्थ में "आत्मरक्षात्मक युद्ध के जरिए च्याङ काई-शेक के आक्रमण को चकनाचूर कर डालो" शीर्षक रचना का नोट १।

¹ देखिए इसी ग्रन्थ में "आत्मरक्षात्मक युद्ध के जरिए च्याङ काई-शेक के आक्रमण को चकनाचूर कर डालो" शीर्षक रचना का नोट २।

तीन महीने का सारांश*

१ अक्तूबर १९४६

१. २० जुलाई को पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने वर्तमान परिस्थिति के बारे में अपने निर्देश[1] में कहा था : "हम च्याङ काई-शेक को परास्त कर सकते हैं। समूची पार्टी को इस बात का पूरा भरोसा होना चाहिए।" जुलाई, अगस्त और सितम्बर की लड़ाइयों से साबित हो गया है कि यह निष्कर्ष सही है।

२. उन बुनियादी राजनीतिक और आर्थिक अन्तरविरोधों को छोड़कर जिन्हें च्याङ काई-शेक हल नहीं कर सकता तथा जो हमारी अनिवार्य विजय और च्याङ की अवश्यम्भावी पराजय का बुनियादी कारण हैं, फौजी क्षेत्र में, च्याङ के अत्यधिक लम्बे-चौड़े युद्ध-मोर्चे और उसकी फौजों की कमी के बीच तीव्र अन्तरविरोध पैदा हो चुका है। यह अन्तरविरोध अनिवार्य रूप से हमारी विजय और च्याङ की पराजय का प्रत्यक्ष कारण बन जाएगा।

३. मुक्त क्षेत्रों पर प्रहार करने वाली च्याङ काई-शेक की नियमित

*यह अन्त:पार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था। इसमें जुलाई १९४६ से देशव्यापी गृहयुद्ध छिड़ने के बाद के तीन महीने की लड़ाई में प्राप्त सिलसिलेवार अनुभवों का विस्तृत सारांश निकाला गया, आगामी फौजी कार्यवाहियों के लिए जन-

सेनाओं की, जिनमें कठपुतली फौजें, शान्ति-रक्षा कोर और संचार-पुलिस कोर शामिल नहीं हैं, कुल मिलाकर १६० से अधिक ब्रिगेडें हैं। इस संख्या के अलावा, वह अधिक से अधिक यह कर सकता है कि दक्षिण से फिर अपनी फौज का एक और भाग कुमक के तौर पर उत्तर में भेज दे; परन्तु इसके बाद कोई और कुमक भेजना उसके लिए मुश्किल होगा। पिछले तीन महीने में इन १६० से अधिक ब्रिगेडों में से २५ ब्रिगेडों का हमारी सेना सफाया कर चुकी है। इस संख्या में वे फौजें शामिल नहीं हैं जिनका इस साल फरवरी से जून तक हमारी सेना ने उत्तर-पूर्वी चीन में सफाया किया था।

४. च्याङ काई-शेक को अपनी इन १६० से अधिक ब्रिगेडों में से लगभग आधी ब्रिगेडों को गैरिजन ड्यूटी पर तैनात करना पड़ता है, केवल आधी से कुछ ज्यादा को ही रणभूमि में रखा जा सकता है। और जब ये रणांगन-सेनाएं निश्चित इलाकों में पहुंच जाएंगी, तो इनके एक हिस्से, यहां तक कि अधिकांश हिस्से को अनिवार्य रूप से गैरिजन ड्यूटी पर तैनात किया जाएगा। जैसे-जैसे लड़ाई जारी रहेगी, वैसे-वैसे दुश्मन की रणांगन-सेनाएं भी कम होती जाएंगी। इसका कारण यह है कि एक तरफ तो हम उन्हें लगातार नष्ट करते जाएंगे, तथा दूसरी तरफ दुश्मन को अपनी फौज की एक बड़ी संख्या को गैरिजन ड्यूटी पर तैनात करना होगा।

मुक्ति सेना की नीति और उसके कार्य निर्धारित किए गए, तथा यह बताया गया कि उन कठिनाइयों को, जो एक निश्चित काल तक मौजूद रहेंगी, दूर करने के बाद हम जन-मुक्ति युद्ध में अवश्य विजय प्राप्त करेंगे। इस दस्तावेज में, मुक्त क्षेत्रों में भूमि-सुधार की समस्या, मुक्त क्षेत्रों में उत्पादन के विकास की समस्या, क्वो-

५. पिछले तीन महीने में हमारे द्वारा नष्ट की गई २५ ब्रिगेडों में से ७ ब्रिगेडें थाङ अन-पो की कमान में (जो पहले ली मो-आन की कमान में थीं), २ ब्रिगेडें श्वे य्वे की कमान में, ७ ब्रिगेडें कू चू-थुङ की कमान में (जो पहले ल्यू च की कमान में थीं), २ ब्रिगेडें हू चुङ-नान की कमान में, ४ ब्रिगेडें येन शी-शान की कमान में, २ ब्रिगेडें वाङ याओ-ऊ की कमान में और १ ब्रिगेड तू य्वी-मिङ की कमान में थीं। केवल ४ ग्रुपों पर, जिनकी कमान ली चुङ-रन, फू च्वो-ई, मा हुङ-क्वेइ और छङ छ्येन के हाथ में है, अभी हमारी सेना का घातक प्रहार नहीं हुआ; बाकी ७ ग्रुपों पर हम या तो गम्भीर प्रहार कर चुके हैं अथवा प्रारम्भिक प्रहार। जिन पर गम्भीर प्रहार किया गया, वे थे तू य्वी-मिङ (इसमें इस साल फरवरी से जून तक उत्तर-पूर्वी चीन में हुई लड़ाई भी शामिल है), थाङ अन-पो, कू चू-थुङ और येन शी-शान के ग्रुप। जिन पर प्रारम्भिक प्रहार किया गया, वे थे श्वे य्वे, हू चुङ-नान और वाङ याओ-ऊ के ग्रुप। इन सब बातों से यही साबित होता है कि हमारी सेना च्याङ काई-शेक को परास्त कर सकती है।

६. हमारा आगामी कार्य है दुश्मन की करीब २५ ब्रिगेडों को और नष्ट कर देना। इस कार्य के पूरा होने के बाद च्याङ काई-शेक के आक्रमण को रोकने और हमारी खोई हुई भूमि का एक भाग फिर

मिन्ताङ-शासित क्षेत्रों में जन-संघर्षों के नेतृत्व को सुदृढ़ बनाने की समस्या तथा अन्य सम्बन्धित समस्याओं की भी, जिन्हें हल करना जन-मुक्ति युद्ध का समर्थन करने और उसके साथ तालमेल कायम करने के लिए आवश्यक था, उसूली तौर पर व्याख्या की गई है।

से हासिल करने की सम्भावना पैदा हो जाएगी । यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इन दूसरी २५ ब्रिगेडों को नष्ट करने के बाद हमारी सेना अवश्य ही रणनीतिक पहलकदमी प्राप्त कर सकेगी, और वह रक्षात्मक लड़ाई से बदलकर आक्रमणात्मक लड़ाई करने लगेगी। तब हमारा कार्य होगा दुश्मन की २५ ब्रिगेडों के तीसरे समूह को नष्ट कर देना । यदि हम यह कार्य भी पूरा कर लेंगे, तो हम अपनी खोई हुई भूमि का अधिकांश भाग, यहां तक कि समूचा भाग फिर से हासिल कर सकेंगे और मुक्त क्षेत्रों को बढ़ा सकेंगे। उस समय क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी की तुलनात्मक सैन्य-शक्ति में अनिवार्य रूप से भारी परिवर्तन हो जाएगा । इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, हमें पिछले तीन महीने में दुश्मन की २५ ब्रिगेडों को नष्ट करने में प्राप्त की गई महान सफलता का विकास करते हुए आगामी तीन महीने में या इससे कुछ ज्यादा समय में दुश्मन की करीब २५ ब्रिगेडों को और नष्ट करना होगा। दुश्मन और हमारे बीच की परिस्थिति को बदलने की यही एक कुंजी है ।[2]

७. पिछले तीन महीने में, हम ह्वाएइन, होत्से, छङते और चीनिङ आदि दर्जनों मझोले और छोटे शहर खो चुके हैं। इनमें अधिकांश शहर ऐसे थे जिन्हें छोड़ना हमारे लिए अनिवार्य था, और उन्हें अपनी ही पहलकदमी से अस्थाई रूप से छोड़ देना ठीक था । इनमें कुछ शहर ऐसे थे जिन्हें हमें विवश होकर छोड़ना पड़ा, क्योंकि वहां हमने अच्छी तरह लड़ाई नहीं लड़ी। बहरहाल, यदि हम अब से अच्छी तरह लड़ने लगेंगे, तो अपने खोए हुए प्रदेश को फिर से हासिल कर सकेंगे । भविष्य में भी कुछ स्थान ऐसे होंगे जिन पर दुश्मन द्वारा कब्जा किए जाने को हम रोक नहीं सकेंगे, लेकिन

इन सबको हम बाद में फिर से हासिल कर सकेंगे । सभी क्षेत्रों को पिछली लड़ाई के अपने अनुभवों का आलोचनात्मक सिंहावलोकन करना चाहिए, ताकि वे सबक सीख सकें और गलतियों को दोहराने से बच सकें ।

८. पिछले तीन महीने में, हमारी मध्यवर्ती मैदान मुक्ति सेना ने अतुलनीय सहन-शक्ति से कठिनाइयों और मुसीबतों पर विजय प्राप्त की है । केवल एक भाग को छोड़कर, जो पुराने मुक्त क्षेत्र में चला गया है, उसकी मुख्य सैन्य-शक्ति ने दक्षिणी शेनशी और पश्चिमी हुपे में दो छापामार आधार-क्षेत्र स्थापित कर लिए हैं ।[1] इसके अलावा, पूर्वी और मध्य हुपे में भी हमारी फौजी यूनिटें डटकर छापामार लड़ाई चला रही हैं । इन सब बातों से पुराने मुक्त क्षेत्रों में हो रही लड़ाई को बहुत भारी सहायता मिली है और अब भी मिल रही है, तथा ये आगे भी दीर्घकालीन युद्ध में और बड़ी भूमिका अदा करती रहेंगी ।

९. पिछले तीन महीने के युद्ध में, हमने च्यांङ काई-शेक की कुछ शक्तिशाली फौजी यूनिटों को, जिन्हें उत्तर-पूर्वी चीन में भेजने की योजना थी, लम्बी दीवार के दक्षिण में उलझा लिया और इस प्रकार हमें उत्तर-पूर्वी चीन में अपनी सेनाओं को विश्राम देने और सुदृढ़ बनाने तथा जन-समुदाय को जागृत करने के लिए समय मिल गया । इसका भी भावी संघर्ष के लिए भारी महत्व है ।

१०. दुश्मन की फौजों को एक-एक करके नष्ट करने के लिए बरतर सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करने का तरीका लड़ाई करने का एकमात्र सही तरीका है, जिसे हमने पिछले तीन महीने में दुश्मन की २५ ब्रिगेडों को नष्ट करते समय अपनाया था । दुश्मन के मुकाबले

छैगुनी, पंचगुनी, चौगुनी या कम से कम तिगुनी शक्ति को केन्द्रित करके ही हम दुश्मन को पुरअसर तरीके से नष्ट कर सकते हैं। मुहिमों और लड़ाइयों दोनों में ऐसा किया जाना चाहिए। लड़ाई के इस तरीके को न केवल ऊंचे रैंक वाले सभी कमाण्डरों को, बल्कि मध्यम और निचले रैंक वाले सभी कार्यकर्ताओं को भी अवश्य सीख लेना चाहिए।

११. पिछले तीन महीने में, दुश्मन की २५ नियमित ब्रिगेडों को नष्ट करने के अलावा, हमारी सेना ने कठपुतली फौजों, शान्ति-रक्षा कोर और संचार-पुलिस कोर जैसी अन्य प्रतिक्रियावादी सेनाओं को भी बड़ी संख्या में नष्ट किया। यह भी एक भारी सफलता है। हमें आगे भी इस प्रकार की सेनाओं को लगातार भारी संख्या में नेस्तनाबूद करते रहना चाहिए।

१२. पिछले तीन महीने के अनुभव से यह साबित हो गया है कि दुश्मन के १०,००० सैनिकों को नष्ट करने के लिए हमें अपने २,००० से ३,००० सैनिकों के हताहत होने की कीमत चुकानी पड़ती है। यह अनिवार्य है। दीर्घकालीन युद्ध का सामना करने के लिए (हर जगह हर बात पर एक दीर्घकालीन युद्ध को ध्यान में रखकर ही विचार करना चाहिए), अब से हमें योजना के मुताबिक अपनी सेना का विस्तार करना चाहिए, हमेशा अपनी मुख्य सैन्य-शक्तियों की भरपूर संख्या की गारन्टी कर लेनी चाहिए तथा सैनिक कार्यकर्ताओं को बड़ी तादाद में ट्रेनिंग देनी चाहिए। हमें अर्थव्यवस्था का विकास करने और सप्लाई की गारन्टी करने, एकीकृत नेतृत्व और विकेन्द्रित प्रबन्ध पर अमल करने तथा सेना व जनता दोनों का और सार्वजनिक हितों व निजी हितों दोनों का ध्यान रखने के उसूलों को दृढ़ता से कार्यान्वित करते हुए, योजना के मुताबिक उत्पादन का विकास करना चाहिए और वित्तीय साधनों को व्यवस्थित करना चाहिए।

१३. पिछले तीन महीने के अनुभव से यह साबित हो गया है कि जिन फौजों ने जनवरी से जून तक युद्ध-विराम की अवधि में केन्द्रीय कमेटी के निर्देशों के अनुसार फौजी ट्रेनिंग पर जोर दिया था (केन्द्रीय कमेटी ने बार-बार हिदायत दी थी कि विभिन्न क्षेत्रों को फौजी ट्रेनिंग, उत्पादन और भूमि-सुधार को अपने तीन प्रधान कार्य बना लेना चाहिए), उनकी युद्ध-क्षमता का स्तर ज्यादा ऊंचा रहा; जिन फौजों ने ट्रेनिंग पर जोर नहीं दिया, उनकी युद्ध-क्षमता का स्तर काफी नीचा रहा। अब से सभी क्षेत्रों को फौजी कार्यवाहियों के बीच के समय का इस्तेमाल करके फौजी ट्रेनिंग का काम जोरों से चलाना चाहिए। सभी फौजी यूनिटों को अपने राजनीतिक कार्य पर जोर देना चाहिए।

१४. पिछले तीन महीने के अनुभव से यह साबित हो गया है कि जहां भी केन्द्रीय कमेटी के ४ मई के निर्देश[४] को दृढ़ता और शीघ्रता से कार्यान्वित करके भूमि-समस्या को गहराई से और पूर्ण रूप से हल किया गया, वहां के किसान च्यांङ काई-शेक की फौजों के हमले के खिलाफ हमारी पार्टी और हमारी सेना के पक्ष में खड़े हो गए। और जहां भी "४ मई के निर्देश" को दृढ़ता से कार्यान्वित नहीं किया गया अथवा उसमें बताई गई व्यवस्था को अमल में लाने में काफी देर की गई, या इस काम को यांत्रिक रूप से कई मंजिलों में बांटकर किया गया अथवा युद्ध में व्यस्त होने का बहाना बनाकर भूमि-सुधार की उपेक्षा की गई, वहां किसानों ने ठहरने व

इन्तजार करने का रुख अपनाया। आने वाले कुछ महीनों में सभी क्षेत्रों को, चाहे वे युद्ध में कितने ही व्यस्त क्यों न हों, भूमि-समस्या को हल करने के लिए किसान समुदाय का दृढ़तापूर्वक नेतृत्व करना चाहिए, और भूमि-सुधार के आधार पर अगले साल के बड़े पैमाने के उत्पादन-कार्य का बन्दोबस्त करना चाहिए।

१५. पिछले तीन महीने के अनुभव से यह साबित हो गया है कि जहां भी स्थानीय सशस्त्र शक्तियों को, जिनमें मिलिशिया, छापामार दस्ते और सशस्त्र कार्यदल शामिल हैं, अच्छी तरह संगठित किया गया है, वहां हम विस्तृत देहाती इलाकों को नियंत्रित कर सकते हैं, भले ही दुश्मन ने अनेक स्थलों और लाइनों पर अस्थाई रूप से कब्जा जमा रखा हो। लेकिन जहां कहीं स्थानीय सशस्त्र शक्तियां कमजोर हों और उनका नेतृत्व दुर्बल हो, वहां दुश्मन को काफी सुविधा मिल जाती है। अब से हमें चाहिए कि पार्टी-नेतृत्व को सुदृढ़ बनाएं, दुश्मन द्वारा अस्थाई रूप से कब्जा किए गए क्षेत्रों में स्थानीय सशस्त्र शक्तियों का विकास करें, छापामार लड़ाई जारी रखें, जन-समुदाय के हितों की रक्षा करें और प्रतिक्रियावादियों की कार्यवाहियों को धूल में मिला दें।

१६. पिछले तीन महीने की लड़ाई ने क्वोमिन्ताङ की लगभग सभी सुरक्षित फौजों को अपनी लपेट में ले लिया है और क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों में उसकी सैन्य-शक्ति को बुरी तरह क्षीण बना दिया है। साथ ही, क्वोमिन्ताङ द्वारा जबरन भरती और अनाज-लेवियों की वसूली[५] की फिर से शुरुआत किए जाने से जनता में असन्तोष पैदा हो गया है और इससे जन-संघर्ष के विकास के लिए एक अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। समूची पार्टी को क्वोमिन्ताङ-शासित

क्षेत्रों में जन-संघर्ष के नेतृत्व को सुदृढ़ बनाना चाहिए और क्वोमिन्ताङ सेना को छिन्न-भिन्न करने के काम पर जोर देना चाहिए।

१७. क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने अमरीका के निर्देशन में इस साल जनवरी में किए गए युद्ध-विराम समझौते तथा राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावों को भंग करके, जनता की जनवादी शक्तियों को नष्ट करने की उम्मीद से गृहयुद्ध छेड़ने का संकल्प किया है। उनकी सभी चिकनी-चुपड़ी बातें महज एक धोखा-धड़ी हैं; हमें अमरीका और च्याङ काई-शेक की तमाम साजिशों का पर्दाफाश कर देना चाहिए।

१८. पिछले तीन महीने में, क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों में व्यापकतम तबकों की जनता ने, जिसमें राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग भी शामिल है, इस तथ्य के बारे में अपनी समझ को बहुत तेजी से उन्नत किया है कि क्वोमिन्ताङ और अमरीका सरकार ने एक दूसरे से सांठगांठ करके गृहयुद्ध छेड़ दिया है और वे जनता का उत्पीड़न कर रहे हैं। अधिकाधिक लोगों ने इस सच्चाई को समझ लिया है कि मार्शल की मध्यस्थता महज एक छल है और क्वोमिन्ताङ ही गृहयुद्ध के लिए मुख्य गुनहगार है। व्यापक जन-समुदाय अमरीका और क्वोमिन्ताङ से निराश होकर अब हमारी पार्टी की विजय पर आशा लगाए हुए है। यह घरेलू राजनीतिक परिस्थिति हमारे लिए अत्यन्त अनुकूल है। अमरीकी साम्राज्यवाद की प्रतिक्रियावादी नीति ने विभिन्न देशों की व्यापक जनता में अधिकाधिक असन्तोष उत्पन्न कर दिया है। सभी देशों की जनता की राजनीतिक चेतना का स्तर दिनोंदिन उन्नत होता जा रहा है। सभी पूंजीवादी देशों में जनता का जनवादी संघर्ष दिनोंदिन प्रचण्ड रूप धारण करता जा रहा है।

अनेक देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों की शक्ति का भारी विकास हुआ है, और यह असम्भव है कि प्रतिक्रियावादी उन पर हावी हो जाएं। सोवियत संघ की शक्ति और विभिन्न देशों की जनता में उसकी प्रतिष्ठा दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। अमरीकी प्रतिक्रियावादी और विभिन्न देशों में उनके द्वारा पोषित प्रतिक्रियावादी अनिवार्य रूप से दिनोंदिन अलगाव की स्थिति में पड़ते जाएंगे। यह अन्तरराष्ट्रीय राजनीतिक परिस्थिति हमारे लिए अत्यन्त अनुकूल है। देश और विदेश दोनों की परिस्थितियां प्रथम विश्वयुद्ध के बाद की परिस्थितियों से बहुत भिन्न हैं। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद क्रान्तिकारी शक्तियों का बेहद भारी विकास हुआ है। देश-विदेश के प्रतिक्रियावादियों का चाहे कितना ही बोलबाला क्यों न हो (इस प्रकार का बोलबाला होना ऐतिहासिक दृष्टि से अनिवार्य है और यह जरा भी आश्चर्य की बात नहीं), हम उन्हें शिकस्त दे सकते हैं। सभी क्षेत्रों के नेतृत्वकारी साथियों को चाहिए कि वे पार्टी में उन साथियों को यह बात पूरी तरह समझाएं जो देश-विदेश की अनुकूल परिस्थितियों की अपर्याप्त समझ के कारण संघर्ष के भविष्य के प्रति निराशापूर्ण भावना रखते हैं। यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि दुश्मन के अन्दर अब भी शक्ति मौजूद है, हमारे अन्दर अब भी कमियां मौजूद हैं, और हमारा संघर्ष अब भी एक दीर्घकालीन व क्रूर संघर्ष बना हुआ है। लेकिन हम अवश्य जीत हासिल कर सकेंगे। यह समझ और यह आस्था समूची पार्टी में अवश्य दृढ़ता से कायम की जानी चाहिए।

१६. आने वाले कुछ महीनों का अरसा एक महत्वपूर्ण और कठिन काल होगा। इसमें समूची पार्टी को भरपूर शक्ति से गोलबन्द हो

जाना चाहिए, बड़ी सावधानी से योजना बनाकर फौजी कार्यवाहियां करनी चाहिए और फौजी परिस्थिति को मूल रूप से बदल देना चाहिए। सभी क्षेत्रों को चाहिए कि वे उपरोक्त नीतियों को दृढ़तापूर्वक कार्यान्वित करें और फौजी परिस्थिति के आमूल परिवर्तन के लिए भरसक प्रयत्न करें।

नोट

[१] देखिए इसी ग्रन्थ में "आत्मरक्षात्मक युद्ध के जरिए च्याङ काई-शेक के आक्रमण को चकनाचूर कर डालो" शीर्षक रचना।

[२] बाद के परिस्थिति-विकास से यह जाहिर हो गया कि दुश्मन और हमारे बीच की परिस्थिति में जुलाई १९४७ में परिवर्तन होना शुरू हो गया, जब शानशीह्पे-शानतुङ-हनान जन-मुक्ति सेना ने तमाम बाधाओं की परवाह न करके पीली नदी पार की तथा ताप्ये पर्वतश्रृंखला में कूच कर दिया। उस समय जन-मुक्ति सेना को युद्ध करते बारह महीने हो गए थे और हर महीने में दुश्मन की औसतन ८ ब्रिगेडों को नष्ट करते हुए वह अब तक दुश्मन की लगभग १०० ब्रिगेडों को नष्ट कर चुकी थी। यह संख्या इस लेख में किए गए अनुमान से भी ज्यादा बड़ी थी, कारण, अमरीकी साम्राज्यवाद के समर्थन में च्याङ काई-शेक ने अपनी सभी उपलब्ध सैन्य-शक्तियों को आक्रमण में जुटा दिया था।

[३] जून १९४६ के अन्त में, क्वोमिन्ताङ की ३,००,००० फौजों द्वारा घेरा डालकर आक्रमण किए जाने की स्थिति में ली श्येन-न्येन और चङ वेइ-सान आदि कामरेडों के नेतृत्व में मध्यवर्ती मैदान मुक्ति सेना ने पहलकदमी के साथ अपनी सैन्य-शक्तियों का रणनीतिक स्थानान्तरण किया और दुश्मन की घेरेबन्दी को सफलतापूर्वक तोड़ दिया। कामरेड माओ त्सेतुङ ने यहां पुराने मुक्त क्षेत्र में जाने वाली जिन यूनिटों का उल्लेख किया है वे वाङ चन और अन्य कामरेडों

के नेतृत्व वाली यूनिटें थीं ; दुश्मन की घेरेबन्दी को तोड़कर वे शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में चली गई थीं । दक्षिणी शेनशी का छापामार आधार-क्षेत्र मध्यवर्ती मैदान मुक्ति सेना की मुख्य शक्ति के एक भाग द्वारा स्थापित किया गया था और उसमें पश्चिमी हनान के लूशि व शीछ्वान और दक्षिणी शेनशी के लोनान व शानयाङ नामक स्थान शामिल थे । पश्चिमी हूपे का छापामार आधार-क्षेत्र इसी सेना के एक अन्य भाग द्वारा स्थापित किया गया था और उसका केन्द्र उत्तर-पश्चिमी हूपे में स्थित ऊताङ पर्वत-शृंखला था ।

[४] यहां "भूमि-समस्या के बारे में निर्देश" का हवाला दिया गया है, जिसे ४ मई १९४६ को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने जारी किया था । जापान के आत्मसमर्पण के बाद, जमीन के लिए किसानों की तीव्र मांग को देखते हुए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान अपनाई गई भूमि-नीति को बदलने का फैसला किया, यानी लगान और सूद कम करने की नीति को बदलकर जमींदारों की जमीन को जब्त करके किसानों में बांट देने की नीति अपना ली । "४ मई का निर्देश" इसी परिवर्तन का द्योतक था ।

[५] अनाज-लेवियों का अर्थ है जमीन का टैक्स अनाज के रूप में वसूल करना ।

चीनी क्रान्ति के नए ऊंचे उभार का स्वागत*

१ फरवरी १९४७

१. सभी हालात से अब यही जाहिर हो रहा है कि चीन की परिस्थिति अब अपने विकास के एक नए दौर में दाखिल होने वाली है । यह नया दौर एक ऐसा दौर है जिसमें साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के खिलाफ देशव्यापी संघर्ष विकसित होकर एक महान नई जन-क्रान्ति का रूप धारण कर लेगा । आज हम इस क्रान्ति की पूर्ववेला में हैं । हमारी पार्टी का कार्य यह है कि वह इस ऊंचे उभार के आगमन के लिए और उसकी विजय के लिए संघर्ष करे ।

२. फौजी परिस्थिति का विकास अब एक ऐसी दिशा में हुआ है जो जनता के हितों के अनुकूल है । पिछली जुलाई से इस जनवरी तक के सात महीनों की लड़ाई में हमने मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाई करने वाली च्याङ काई-शेक की नियमित सेनाओं को ५६ ब्रिगेडों का सफाया कर डाला, यानी औसतन एक महीने में ८ ब्रिगेडों के हिसाब से सफाया कर दिया ; इनमें वे अनेक कठपुतली सेनाएं और शान्ति-रक्षा कोरें शामिल नहीं हैं जिनका सफाया हमने इस बीच किया

*यह अन्तःपार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था ।

और न ही च्याङ काई-शेक की वे नियमित सेनाएं शामिल हैं जिन्हें हमने तितर-बितर कर दिया। यद्यपि दक्षिणी और पश्चिमी शानतुङ में, शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में, पेफिङ-हानखओ रेलवे के उत्तरी हिस्से के इलाकों में और दक्षिणी मंचूरिया में च्याङ काई-शेक का आक्रमण अब भी जारी है, फिर भी गत शरद के मुकाबले यह आक्रमण बहुत ही अधिक कमजोर हो चला है। च्याङ काई-शेक की सेना के पास सैन्य-विन्यास के लिए पर्याप्त सैनिक नहीं हैं, और न ही वह जबरन भरती के अपने नियत लक्ष्य पूरे कर सकती है; इस तथ्य के और उसके विस्तृत जंगी मोर्चों व उसकी मानव-शक्ति के अधिकाधिक ह्रास के बीच गम्भीर अन्तरविरोध पैदा हो गया है। च्याङ की सेना के हौसले दिन पर दिन पस्त होते जा रहे हैं। उत्तरी च्याङसू, दक्षिणी व पश्चिमी शानतुङ और पश्चिमी शानशी की हाल की लड़ाई में च्याङ की बहुत सी सेनाओं के हौसले बेहद पस्त हो गए। कई मोर्चों पर हमारी सेनाएं अब पहलकदमी अपने हाथ में लेने लगी हैं और उधर च्याङ काई-शेक की सेनाएं अब पहलकदमी गंवाने लगी हैं। अब हम इसका पूर्वानुमान कर सकते हैं कि अगले कुछ महीनों के अन्दर हम पहले की नष्ट की हुई ब्रिगेडों को मिलाकर च्याङ की कुल १०० ब्रिगेडों का सफाया कर डालने का अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। कठपुतली सेनाओं, पुलिस, स्थानीय शान्ति-रक्षा कोरों, संचार-पुलिस कोरों, पृष्ठभागीय सेवा सैन्य-दलों और तकनीकी सैन्य-दलों को छोड़कर च्याङ काई-शेक के पास १९,१६,००० सैनिकों वाली २४८ ब्रिगेडों (डिवीजनों) से बनी हुई कुल ९३ नियमित पैदल और घुड़सवार डिवीजनें (फौजी कोरें) हैं। मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाई करने में कुल १७,१३,००० सैनिकों

वाली २१८ ब्रिगेडों (डिवीजनों) से बनी हुई ७८ डिवीजनें (फौजी कोरें), यानी च्याङ काई-शेक की नियमित सेनाओं का लगभग ९० फीसदी भाग, लगी हुई हैं। कुल २,०३,००० सैनिकों वाली ३० ब्रिगेडों से बनी हुई सिर्फ १५ डिवीजनें, यानी च्याङ काई-शेक की नियमित सेनाओं का लगभग १० फीसदी भाग, क्वोमिन्ताङ के पृष्ठ-भागीय इलाकों में रह गई हैं। इसलिए मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाई करने के लिए च्याङ काई-शेक अपने पृष्ठभागीय इलाकों से अब जुझारू क्षमता वाली बहुत सी सेनाएं नहीं भेज सकता। मुक्त क्षेत्रों पर चढ़ाई करने वाली २१८ ब्रिगेडों में से एक-चौथाई से अधिक का सफाया तो हम कर ही चुके हैं। यद्यपि जिनका सफाया हम कर चुके हैं उनमें से कुछ यूनिटों की नए सिरे से क्षतिपूर्ति करके उन्हें फिर से पुराने नामों से खड़ा कर दिया गया है, लेकिन उनकी जुझारू क्षमता बहुत कम हो गई है। उनमें से और कुछ यूनिटों की क्षतिपूर्ति तो की गई थी लेकिन उनका दोबारा सफाया कर दिया गया है, बाकी कुछ यूनिटों की क्षतिपूर्ति हुई ही नहीं। अगले कुछ महीनों के भीतर यदि हमारी सेनाएं ४० से ५० तक ब्रिगेडों का सफाया और कर सकीं और शुरू से लेकर कुल १०० ब्रिगेडों का सफाया करने का हिसाब पूरा कर सकीं, तो फौजी परिस्थिति में एक भारी परिवर्तन आ जाएगा।

३. इसी बीच च्याङ काई-शेक क्षेत्रों में एक महान जन-आन्दोलन विकसित हो रहा है। फेरी लगाकर सौदा बेचने वालों पर क्वोमिन्ताङ के अत्याचारों के कारण पिछले साल ३० नवम्बर को शांघाई में नागरिकों के जो दंगे शुरू हुए,[१] और एक चीनी छात्रा पर अमरीकी सैनिकों के बलात्कार के कारण पिछले साल ३०

दिसम्बर से पेफिङ में जो विद्यार्थी-आन्दोलन शुरू हुआ,[२] ये दोनों घटनाएं च्याङ काई-शेक क्षेत्रों की जनता के संघर्ष में एक नए उभार की सूचक हैं। पेफिङ में शुरू होकर यह विद्यार्थी-आन्दोलन पूरे देश के बड़े नगरों में फैल चुका है, इसमें लाखों विद्यार्थी भाग ले रहे हैं और इसका पैमाना ६ दिसम्बर के जापानी-साम्राज्यवाद-विरोधी विद्यार्थी-आन्दोलन[३] से भी बड़ा है।

४. मुक्त क्षेत्रों में जन-मुक्ति सेना की जीतें और च्याङ काई-शेक क्षेत्रों में जन-आन्दोलन का विकास यह भविष्यवाणी करते हैं कि चीन में साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के विरुद्ध एक महान नई जन-क्रान्ति निश्चित रूप से आएगी और वह विजयी होगी।

५. जिन परिस्थितियों में यह हालत पैदा हुई है वे इस प्रकार हैं: अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्ते च्याङ काई-शेक ने जापानी साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्ते वाङ चिङ-वेइ की जगह ले ली है और चीन को अमरीकी उपनिवेश बनाने, गृहयुद्ध छेड़ने और फासिस्ट तानाशाही को मजबूत बनाने की नीतियों को अपना लिया है। अमरीकी साम्राज्यवाद और च्याङ काई-शेक की इन प्रतिक्रियावादी नीतियों के सामने चीनी जनता के लिए संघर्ष के सिवाय और कोई चारा नहीं रह गया है। स्वाधीनता, शान्ति और जनवाद के लिए संघर्ष करना ही वर्तमान काल में भी चीनी जनता की बुनियादी मांग है। अप्रैल १९४५ में ही हमारी पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस सम्भावना को देख लिया था कि अमरीकी साम्राज्यवाद और च्याङ काई-शेक इन्हीं प्रतिक्रिया-वादी नीतियों को लागू करेंगे, और इन्हें परास्त करने के लिए उस

कांग्रेस ने एक सर्वांगपूर्ण और बिलकुल सही राजनीतिक कार्यदिशा भी निर्धारित कर दी थी।

६. अमरीकी साम्राज्यवाद और च्याङ काई-शेक की इन प्रति-क्रियावादी नीतियों ने चीनी जनता के तमाम तबकों को अपना उद्धार करने के हेतु एक हो जाने के लिए मजबूर कर दिया है। इन तबकों में मजदूर, किसान, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग, राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग, जागृत शरीफजादे, दूसरे देशभक्त तत्व, अल्पसंख्यक जातियां और प्रवासी चीनी शामिल हैं। यह समूचे राष्ट्र का एक अत्यन्त व्यापक संयुक्त मोर्चा है। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल के संयुक्त मोर्चे की तुलना में यह संयुक्त मोर्चा न सिर्फ अपने विस्तार में उतना ही व्यापक है, बल्कि इसकी बुनियाद उससे भी अधिक गहरी है। सभी पार्टी-कामरेडों के लिए यह आवश्यक है कि वे इस संयुक्त मोर्चे को सुदृढ़ बनाने और विकसित करने की भरपूर कोशिश करें। मुक्त क्षेत्रों में "तीन-तिहाई व्यवस्था" की नीति[४] इस शर्त पर अपरिवर्तनीय रूप से जारी रहेगी कि "जमीन जोतने वालों को" की नीति को दृढ़ता के साथ और बिना हिच-किचाहट के लागू किया जाएगा। हमें चाहिए कि हम राजनीतिक सत्ता के संगठनों में और सामाजिक काम-धन्धों में कम्युनिस्टों के अलावा पार्टी के बाहर के व्यापक प्रगतिशील तत्वों और मध्यवर्ती तत्वों (जैसे जागृत शरीफजादों) को भी काम सौंपते रहें। मुक्त क्षेत्रों के अन्दर चुनावों में मतदान करने या चुनाव के लिए खड़े होने का अधिकार वर्ग, लिंग या विश्वास का लिहाज किए बिना सभी नागरिकों को है, यह अधिकार सिर्फ देशद्रोहियों और उन प्रतिक्रिया-वादियों को नहीं है जो जनता के हितों का विरोध करके जनता

की तीव्र घृणा के पात्र बन गए हैं। "जमीन जोतने वालों को" की व्यवस्था पूरी तरह लागू हो जाने पर मुक्त क्षेत्रों की जनता के निजी जायदाद के अधिकार की गारन्टी बनी रहेगी।

७. चूंकि च्याङ काई-शेक सरकार ने बड़े लम्बे समय तक प्रतिक्रियावादी वित्तीय और आर्थिक नीतियों को लागू किया है और चूंकि च्याङ काई-शेक की नौकरशाही-दलाल पूंजी एक कुख्यात देशद्रोहपूर्ण सन्धि—चीन-अमरीका वाणिज्य सन्धि[५]—के जरिए अमरीकी साम्राज्यवादी पूंजी से जुड़ गई है, इसलिए घातक मुद्रा-स्फीति बड़ी तेजी से विकसित हो गई है, चीन के राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग का उद्योग व वाणिज्य दिन पर दिन दिवालिया होता जा रहा है, मेहनतकश जन-समुदाय, सरकारी कर्मचारियों और शिक्षकों के रोजगार की हालत दिन पर दिन बिगड़ती जा रही है, मध्यम वर्ग के तत्वों की एक बड़ी तादाद अपनी बचत गंवाकर बिलकुल सम्पत्तिहीन बनती जा रही है, और इसलिए मजदूरों और विद्यार्थियों की हड़तालों और अन्य संघर्षों का सिलसिला लगातार जारी है। चीन में सभी सामाजिक तबकों की जनता एक अभूतपूर्व भारी आर्थिक संकट का सामना कर रही है। गृहयुद्ध को जारी रखने के लिए च्याङ काई-शेक ने जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल में अपनाई गई जबरन भरती और अनाज-वसूली की निहायत बद-तरीन प्रथा को फिर से लागू कर दिया है; इसने देहातों की विशाल जनता के लिए और खासकर दरिद्र किसानों के लिए जीना हराम कर दिया है; नतीजा यह हुआ है कि किसान-विद्रोह शुरू हो गए हैं और लगातार विकसित होते जा रहे हैं। अतएव प्रतिक्रिया-वादी च्याङ काई-शेक शासक-गुट की साख व्यापक जन-समुदाय की निगाहों में अधिकाधिक घटती जा रही है और इस गुट को गम्भीर राजनीतिक व सामरिक संकट का सामना करना पड़ रहा है। यह स्थिति एक ओर तो च्याङ काई-शेक के नियंत्रण वाले इलाकों में साम्राज्यवाद-विरोधी व सामन्तवाद-विरोधी जन-आन्दोलन को दिन पर दिन आगे बढ़ा रही है, तथा दूसरी ओर यह च्याङ काई-शेक की सेनाओं के हौसले और ज्यादा पस्त कर रही है और जन-मुक्ति सेना की जीत की सम्भावना को और ज्यादा बढ़ा रही है।

८. च्याङ काई-शेक ने हमारी पार्टी और दूसरी जनवादी शक्तियों को अलगाव में डालने के लिए जिस गैरकानूनी और फूटपरस्त "राष्ट्रीय एसेम्बली" को बुलाया था, उसकी और उसके द्वारा गढ़े हुए बोगस संविधान की कोई भी कद्र जनता की निगाहों में नहीं रह गई। इन दोनों ने हमारी पार्टी और दूसरी जनवादी शक्तियों को अलगाव में डालने के बजाय खुद प्रतिक्रियावादी च्याङ काई-शेक शासक-गुट को ही अलगाव में डाल दिया है। हमारी पार्टी और दूसरी जनवादी शक्तियों ने इस बोगस राष्ट्रीय एसेम्बली में भाग लेने से इनकार करने की नीति अपनाई; यह बिलकुल सही थी। प्रति-क्रियावादी च्याङ काई-शेक शासक-गुट ने नौजवान पार्टी[६] और जनवादी समाजवादी पार्टी[७] नाम की दो छोटी पार्टियों को, जिन्हें चीनी समाज में कभी जरा भी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं हुई, अपने पक्ष में कर लिया है; साथ ही उसने चन्द तथाकथित "सार्वजनिक गण्यमान्य व्यक्तियों"[८] को भी अपनी ओर मिला लिया है; और अब यह भी देखने में आ रहा है कि कुछ मध्यममार्गी लोग प्रतिक्रियावाद के पक्ष में जा सकते हैं। कारण यह है कि चीन में जनवादी शक्तियां दिन पर दिन अधिकाधिक शक्तिशाली होती जा रही हैं और प्रतिक्रिया-

वादी शक्तियां दिन पर दिन अधिकाधिक अलगाव की स्थिति में पड़ती जा रही हैं, और इसलिए शत्रु के मोर्चे और हमारे मोर्चे के बीच की विभाजन-रेखा को इतनी स्पष्टता से खींचना आवश्यक हो गया है। जनवादी मोर्चे में छिपे रहकर जनता को धोखा देने वाले सभी तत्वों को अन्ततोगत्वा अपने असली रंग में प्रकट होना ही पड़ेगा और जनता उन्हें अपने बीच से निकाल बाहर करेगी; और इधर जनता की साम्राज्यवाद-विरोधी और सामन्तवाद-विरोधी पांतें लगातार शक्तिशाली होती जाएंगी, क्योंकि उन्होंने अपने और इन छिपे हुए प्रतिक्रियावादियों के बीच सुस्पष्ट विभाजन-रेखा खींच ली है।

९. अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति का विकास चीनी जनता के संघर्ष के अत्यन्त अनुकूल है। सोवियत संघ की बढ़ती हुई शक्ति और उसकी विदेश-नीति की सफलताएं, दुनिया के विभिन्न देशों की जनता का वामपक्ष की ओर लगातार बढ़ाव तथा अपने देश की और साथ ही विदेशों की प्रतिक्रियावादी शक्तियों के विरुद्ध उसका निरन्तर विकासमान संघर्ष – ये दोनों ही वे दो महान तत्व हैं जो अमरीकी साम्राज्यवाद को और विभिन्न देशों में उसके पालतू कुत्तों को लगातार अधिकाधिक अलगाव की स्थिति में डालते जा रहे हैं और डालते रहेंगे। इन दोनों तत्वों के साथ अगर अमरीका के अनिवार्य आर्थिक संकट के इस तीसरे तत्व को भी जोड़ दिया जाए, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि अमरीकी साम्राज्यवाद और विभिन्न देशों में उसके पालतू कुत्तों को और भी विकट स्थिति का सामना करने को मजबूर होना पड़ेगा। अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्ते च्याङ काई-शेक की शक्तिशालिता महज अस्थाई है; उनके आक्रमण

को चकनाचूर किया जा सकता है। हमारी पांतों में यह मिथ्या धारणा फैलने की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए कि प्रतिक्रियावादियों के आक्रमण को चकनाचूर नहीं किया जा सकता। केन्द्रीय कमेटी बार-बार यह बता चुकी है और अन्तरराष्ट्रीय व अन्दरूनी परिस्थिति का विकास लगातार इस निष्कर्ष को अधिकाधिक सही साबित करता जा रहा है।

१०. अपनी सेनाओं की क्षतिपूर्ति करने और नया आक्रमण शुरू करने के हेतु विश्राम का समय पाने, अमरीका से नए कर्ज और युद्ध-सामग्री हासिल करने और जनता के रोष को कम करने की नीयत से च्याङ काई-शेक हमारी पार्टी के साथ तथाकथित शान्ति-वार्ता फिर से शुरू करने की मांग करके एक नया चकमा देने की कोशिश कर रहा है।[६] हमारी पार्टी की नीति है वार्ता से इनकार न करना और इस तरह उसकी धोखाधड़ी का पर्दाफाश कर देना।

११. च्याङ काई-शेक के आक्रमण को पूरी तरह चकनाचूर कर डालने के लिए यह लाजमी है कि हम अगले कुछ महीनों के भीतर उसकी और चालीस-पचास ब्रिगेडों का सफाया कर डालें; यही वह कुंजी है जिससे हर बात का निपटारा होना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह लाजमी है कि हम केन्द्रीय कमेटी के पिछले साल १ अक्तूबर के "तीन महीने का सारांश" नाम के निर्देश और दुश्मन की फौजों को एक-एक करके नष्ट करने के लिए अपनी सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करने के बारे में हमारे फौजी कमीशन द्वारा पिछले साल १६ सितम्बर को दिए गए निर्देश को पूरी तरह कार्यान्वित करें। सभी जगहों के कामरेडों का ध्यान आकर्षित करने के लिए कुछ मुद्दों पर हम यहां फिर एक बार जोर दे रहे हैं:

(क) सैनिक समस्या। पिछले सात महीने की कठोर लड़ाई में हमारी सेना ने यह साबित कर दिया है कि वह च्याङ काई-शेक के आक्रमण को निश्चय ही चकनाचूर कर सकती है और अन्तिम जीत हासिल कर सकती है। साज-सामान और युद्धकला दोनों ही मामलों में हमारी सेना पहले से उन्नत अवस्था में पहुंच गई है। अपनी सशस्त्र सेनाओं के निर्माण में अब से हमारा प्रधान कार्य है अपने तोपखाने और इंजीनियरी कोर के निर्माण-कार्य को आगे बढ़ाने की हरचन्द कोशिश करना। छोटे-बड़े सभी फौजी क्षेत्रों और सभी रणांगन फौजी फारमेशनों को चाहिए कि वे तोपखाने और इंजीनियरी कोर को मजबूत बनाने के सिलसिले में पेश आने वाली सभी ठोस समस्याओं को और मुख्य रूप से कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण और गोला-बारूद के उत्पादन से सम्बन्धित समस्याओं को हल कर लें।

(ख) भूमि-समस्या। केन्द्रीय कमेटी का ४ मई १९४६ का निर्देश[10] हर मुक्त क्षेत्र के लगभग दो-तिहाई हिस्से में लागू किया गया है, वहां भूमि-समस्या सुलझा ली गई है और "जमीन जोतने वालों को" की नीति अमल में लाई जा चुकी है ; यह एक महान विजय है। फिर भी लगभग एक-तिहाई हिस्सा ऐसा रह गया है जहां ग्राम जनता को पूरी तरह जगाने और "जमीन जोतने वालों को" की नीति अमल में लाने के लिए अभी और अधिक प्रयास करने होंगे। जिन स्थानों में "जमीन जोतने वालों को" की नीति लागू हो चुकी है, वहां भी अभी कमी इस मायने में रह गई है कि भूमि-समस्या का हल पूर्ण रूप से नहीं हो पाया है ; और इसका मुख्य कारण यह है कि वहां ग्राम जनता को पूरी तरह जागृत नहीं किया गया, इसलिए

जमीन जब्त करने और उसका बंटवारा करने का काम सम्पूर्ण रूप से सम्पन्न नहीं हो सका और ग्राम जनता को सन्तोष नहीं है। ऐसी जगहों में हमें बड़ी संजीदगी के साथ जांच-पड़ताल करनी चाहिए और कमी की पूर्ति करके सन्तुलन कायम कर लेना चाहिए,[11] ताकि थोड़ी जमीन वाले या बे-जमीन तमाम किसानों को जमीन मिल जाए और बुरे शरीफजादों और स्थानीय निरंकुश तत्वों को सजा दी जाए। "जमीन जोतने वालों को" की नीति लागू करने की पूरी प्रक्रिया में यह लाजमी है कि हम मध्यम किसानों के साथ दृढ़ता से एकता कायम करें और मध्यम किसानों (खुशहाल मध्यम किसानों समेत) के हितों के दायरे में बेजा पैर फैलाने की इजाजत हरगिज नहीं है ; मध्यम किसानों के हितों के दायरे में बेजा पैर फैलाने का कोई वाकया अगर हो भी जाए तो हरजाना देना और माफी मांगना लाजमी है। इतना ही नहीं, भूमि-सुधार के दौरान और उसके बाद, ग्राम जनता की इच्छा के मुताबिक मामूली धनी किसानों और मझोले व छोटे जमींदारों का भी मुनासिब तौर पर खयाल रखा जाना चाहिए ; यह काम "४ मई के निर्देश" के अनुसार किया जाएगा। संक्षेप में, देहाती इलाकों में भूमि-सुधार आन्दोलन के दौरान हमारे लिए यह लाजमी है कि हम भूमि-सुधार का साथ देने वाली ग्राम जनता, जो आबादी की ९० फीसदी से भी अधिक है, के साथ एकता कायम कर लें और भूमि-सुधार का विरोध करने वाले मुट्ठीभर सामन्ती प्रतिक्रियावादी तत्वों को अलगाव में डाल दें, ताकि "जमीन जोतने वालों को" की नीति को हम तेजी के साथ कार्यान्वित कर सकें।

(ग) उत्पादन की समस्या। सभी जगहों के लोगों को लाजमी

तौर पर दूर भविष्य को ध्यान में रखते हुए योजनाएं बनानी चाहिए, उत्पादन बढ़ाने की जीतोड़ कोशिश करनी चाहिए, सख्त किफायत करनी चाहिए तथा उत्पादन और किफायत के आधार पर वित्तीय समस्या को सही ढंग से सुलझा लेना चाहिए। यहां पहला उसूल है उत्पादन का विकास करना और सप्लाई की गारन्टी करना। यही वजह है कि हमें वित्त और वाणिज्य पर एकतरफा जोर देने वाले तथा कृषि और उद्योग के उत्पादन की उपेक्षा करने वाले गलत दृष्टिकोण का विरोध करना चाहिए। दूसरा उसूल है सेना और जनता दोनों का ध्यान रखना तथा सार्वजनिक हितों और निजी हितों दोनों का ध्यान रखना। इसलिए सिर्फ एक ही पक्ष का ध्यान रखने और दूसरे पक्ष की उपेक्षा करने वाले गलत दृष्टिकोण का हमें विरोध करना चाहिए। तीसरा उसूल है एकीकृत नेतृत्व और विकेन्द्रित प्रबन्ध। इसलिए जहां कहीं परिस्थिति की मांग को देखते हुए केन्द्रित प्रबन्ध जरूरी हो वहां के मामलों को छोड़कर, बाकी हर जगह, लाजमी तौर पर, परिस्थितियों की परवाह किए बिना हर चीज का केन्द्रीकरण कर डालने की हिमायत करने और विकेन्द्रित प्रबन्ध पर अमल करने का साहस न करने के गलत दृष्टिकोण का हम विरोध करें।

१२. हमारी पार्टी और चीनी जनता को अन्तिम जीत हासिल करने का भरपूर विश्वास है ; इस बारे में रत्तीभर भी सन्देह की गुंजाइश नहीं। मगर इसका मतलब यह नहीं कि हमारे सामने कोई कठिनाई है ही नहीं। चीन का साम्राज्यवाद-विरोधी और सामन्तवाद-विरोधी संघर्ष अपने स्वरूप में एक दीर्घकालीन संघर्ष है, चीनी और विदेशी प्रतिक्रियावादी अपनी पूरी ताकत लगाकर चीनी जनता

का विरोध जारी रखेंगे, जो इलाके च्याङ काई-शेक के नियंत्रण के अधीन हैं उनमें फासिस्ट शासन का शिकंजा और ज्यादा मजबूत हो जाएगा, मुक्त क्षेत्रों का कोई-कोई हिस्सा अस्थाई तौर पर शत्रु के कब्जे वाला क्षेत्र या छापामार क्षेत्र बन जाएगा, क्रान्तिकारी शक्तियों के कुछ हिस्सै को अस्थाई तौर पर नुकसान उठाना पड़ेगा और लम्बे अरसे तक चलने वाले युद्ध में मानव-शक्ति और भौतिक साधनों की क्षति भी होगी। समूची पार्टी के कामरेडों के लिए यह लाजमी है कि वे इन सारी बातों का पूरा-पूरा ध्यान रखें और अदम्य संकल्प के साथ और सुनियोजित ढंग से हर तरह की कठिनाइयों को दूर करने के लिए तैयार रहें। प्रतिक्रियावादी शक्तियों के सामने भी कठिनाइयां होती हैं और हमारे सामने भी। लेकिन प्रतिक्रियावादी शक्तियों की कठिनाइयां ऐसी होती हैं जो दूर नहीं हो सकतीं, कारण, वे शक्तियां मृत्यु के कगार पर खड़ी हैं और उनके सामने कोई भविष्य नहीं है। हमारी कठिनाइयां दूर की जा सकती हैं, कारण, हम नई और उदीयमान शक्तियां हैं और हमारा भविष्य उज्ज्वल है।

नोट

[१] अगस्त १९४६ से शांघाई के क्वोमिन्ताङ अधिकारियों ने फेरी लगाकर सौदा बेचने वालों पर यह पाबन्दी लगा दी कि वे नगर के ह्वाङफू और लाओचा नामक इलाकों में अपना कारोबार नहीं कर सकते। नवम्बर के आखिरी दिनों में कोई एक हजार फेरीवालों को, जो तब भी वहां सौदा बेच रहे थे, गिरफ्तार कर लिया गया। ३० नवम्बर को तीन हजार फेरीवालों ने इसके खिलाफ अर्जी

दी व प्रदर्शन किया और ह्वाङफू इलाके के पुलिस थाने को घेर लिया। क्वोमिन्ताङ अधिकारियों ने कत्लेग्राम का आदेश दे दिया ; सात फेरीवाले मारे गए और बहुत बड़ी तादाद में लोग घायल और गिरफ्तार हो गए। १ दिसम्बर को फेरीवालों ने अपना संघर्ष जारी रखा। दस लोगों के और मारे जाने और सौ से अधिक लोगों के घायल होने के बावजूद उस दिन संघर्ष में भाग लेने वालों की तादाद बढ़कर पांच हजार से भी ऊपर जा पहुंची। इस संघर्ष की सहानुभूति में शांघाई की तमाम दुकानें बन्द हो गईं। इस तरह यह घटना च्याङ काई-शेक के खिलाफ नगरव्यापी जन-आन्दोलन के रूप में परिणत हो गई।

² यह घटना पेफिङ में २४ दिसम्बर १९४६ को हुई। अमरीकी सैनिकों ने पेकिङ विश्वविद्यालय की एक छात्रा पर बलात्कार किया। ३० दिसम्बर १९४६ से लेकर जनवरी १९४७ तक क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों के बीसियों बड़े और मझोले नगरों में छात्रों ने अमरीका और च्याङ काई-शेक के खिलाफ हड़तालों और प्रदर्शनों का आयोजन करके यह मांग की कि अमरीकी सेनाएं चीन से हटा ली जाएं। इस आन्दोलन में ५,००,००० से अधिक छात्रों ने भाग लिया।

³ ९ दिसम्बर १९३५ को पेफिङ में छात्रों द्वारा छेड़ा गया एक देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन। देखिए : "जापानी-साम्राज्यवाद-विरोधी कार्यनीति के बारे में", नोट ८ ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ १)।

⁴ "तीन-तिहाई व्यवस्था" जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान संयुक्त मोर्चे की राजनीतिक सत्ता के संगठनों के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नीति थी। इस नीति के अनुसार जापान-विरोधी जनवादी राजनीतिक सत्ता के संगठनों में अमले का अनुपात इस प्रकार था : मोटे तौर पर एक तिहाई लोग कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे, एक तिहाई लोग वामपक्षी प्रगतिशील व्यक्ति थे, और एक तिहाई लोग मध्यवर्ती तत्व व अन्य व्यक्ति थे।

⁵ "चीन-अमरीका वाणिज्य सन्धि" यानी "चीन-अमरीका मैत्री, वाणिज्य व जहाजरानी सन्धि" च्याङ काई-शेक सरकार और अमरीका सरकार के बीच ४ नवम्बर १९४६ को नानकिङ में हुई थी। चीन की प्रभुसत्ता को बहुत बड़े पैमाने पर अमरीका के हाथों बेच डालने वाली इस सन्धि की कुल तीस धाराएं थीं जिनकी मुख्य विषय-वस्तु इस प्रकार थी :

(१) अमरीकी नागरिक चीन के "समूचे भू-प्रदेश" में रहने-बसने, घूमने-फिरने, वाणिज्य-व्यापार करने, माल तैयार करने, प्रोसेसिंग करने, वैज्ञानिक, शैक्षणिक, धार्मिक व लोकोपकारी गतिविधियों में लगे रहने, खनिज साधनों का पता लगाने और उन्हें खोदने, जमीन को पट्टे पर लेने और अपनी मिलकियत में बनाए रखने तथा विविध काम-धन्धे व व्यवसाय चलाने के अधिकारों का उपभोग करेंगे। आर्थिक अधिकारों के मामले में चीन के अन्दर अमरीकी नागरिकों के साथ भी चीनियों जैसा ही बरताव किया जाएगा।

(२) चीन के अन्दर टैक्स लगाने, बिक्री करने, वितरण करने या इस्तेमाल करने के मामले में अमरीकी जिन्सों के प्रति किसी भी तीसरे देश के जिन्सों या चीनी जिन्सों से कम अनुकूल बरताव नहीं किया जाएगा। अमरीका में उगाई गई, पैदा की गई अथवा तैयार की गई किसी भी चीज का अमरीका से आयात करने या किसी भी चीनी माल का अमरीका को निर्यात करने पर चीन की ओर से "कोई रोक या प्रतिबन्ध नहीं लगाया जाएगा"।

(३) अमरीकी जहाजों को विदेशी वाणिज्य या जहाजरानी के लिए मुक्त किसी भी चीनी बन्दरगाह, स्थान या जल-क्षेत्र में आने-जाने की आजादी होगी तथा उन जहाजों के अमले को और उन पर लदे माल को चीन की प्रादेशिक भूमि में "सबसे अधिक सुविधाजनक रास्ते" से गुजरने की आजादी होगी। "किसी दिक्कत की हालत" के बहाने, जंगी जहाजों समेत सभी अमरीकी जहाजों को चीन में "विदेशी वाणिज्य या जहाजरानी के लिए बन्द सभी बन्दरगाहों, स्थानों या जल-क्षेत्रों" में आने-जाने की छूट होगी।

अमरीका में च्याङ काई-शेक के तत्कालीन राजदूत वेलिंगटन कू ने खुलेआम और बेशर्मी के साथ यह बयान दिया कि इस सन्धि का मतलब है "चीन की समूची प्रादेशिक भूमि को अमरीकी सौदागरों के लिए खोल देना"।

⁶ देखिए : "चीनी समाज में वर्गों का विश्लेषण", नोट १ ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ १)।

⁷ "जनवादी समाजवादी पार्टी" अगस्त १९४६ में "जनवादी संवैधानिक पार्टी" और "राष्ट्रीय समाजवादी पार्टी" को आपस में मिलाकर बनाई गई थी। इसके सदस्य मुख्य रूप से उत्तरी युद्ध-सरदारों के जमाने के प्रतिक्रियावादी

राजनीतिबाज और सामन्ती समाज के अवशेष थे।

८ "चन्द तथाकथित 'सार्वजनिक गण्यमान्य व्यक्तियों' " से यहां वाङ युन-ऊ, फू स-न्येन और हू चङ-च जैसे उन बेहया राजनीतिबाजों का हवाला दिया गया है जो निर्दलीय व्यक्ति का चोगा पहनकर च्याङ काई-शेक की "राष्ट्रीय एसेम्बली" के नुमायशी शोकेस को सजाने के काम आते थे।

९ अपने सामरिक आक्रमणों में बार-बार मुंह की खाने और अपनी सामरिक स्थिति बिगड़ती देखने के कारण, १६ जनवरी १९४७ को क्वोमिन्ताङ सरकार ने थोड़ा-सा दम लेकर नए आक्रमण की तैयारी करने की कोशिश में चीन स्थित अमरीकी राजदूत लीटन स्टुअर्ट के जरिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी से इस बात की इजाजत मांगी कि वह "शान्ति-वार्ता" के लिए अपने प्रतिनिधि येनान भेजे। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने तुरन्त इस नई अमरीकी-च्याङ धोखाधड़ी का पूरी तरह पर्दाफाश कर दिया। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने बताया कि वार्ता फिर से शुरू करने के लिए कम से कम ये दो शर्तें पूरी की जानी चाहिए : (१) राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावों को ठुकराकर क्वोमिन्ताङ ने जो बोगस संविधान बनाया और स्वीकृत किया है, उसे मंसूख कर देना होगा ; और (२) युद्ध-विराम समझौते के लागू होने के दिन यानी १३ जनवरी १९४६ के बाद से मुक्त क्षेत्रों के जितने भी इलाके पर क्वोमिन्ताङ सेनाओं ने कब्जा किया है, उन सभी को खाली करके क्वोमिन्ताङ सेनाओं को हट जाना होगा ; वरना, इस बात की गारन्टी नहीं की जा सकेगी कि बाद में जो वार्ता की जाएगी उसमें होने वाले समझौते को भी क्वोमिन्ताङ पहले की ही तरह फिर से नहीं फाड़ फेंकेगी। जब क्वोमिन्ताङ सरकार ने यह बात महसूस कर ली कि "शान्ति" का उसका दांव नहीं चलेगा, तो उसने २७ और २८ फरवरी को शान्ति-वार्ता करने और सम्पर्क कायम करने के लिए नानकिङ, शांघाई और छुङकिङ में टिके हुए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सभी प्रतिनिधियों को अधिकृत रूप से सूचित कर दिया कि उन्हें अब वहां से चले जाना चाहिए ; साथ ही उसने यह भी ऐलान कर दिया कि क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच शान्ति-वार्ता पूरी तरह से भंग हो गई है।

१० यहां चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा ४ मई १९४६ को

जारी किए गए "भूमि-समस्या के बारे में निर्देश" का उल्लेख किया गया है। देखिए इसी ग्रन्थ में "तीन महीने का सारांश" शीर्षक रचना का नोट ४।

११ "कमी की पूर्ति करके सन्तुलन कायम करना" उन पुराने मुक्त क्षेत्रों में अपनाई गई एक नीति थी, जहां भूमि-सुधार का कार्य अपेक्षाकृत मुकम्मिल तौर पर हो चुका था। इसका प्रयोजन यह था : कुछ गरीब किसानों और खेत-मजदूरों के पास जमीन और उत्पादन के दूसरे साधनों के पर्याप्त मात्रा में न होने की समस्या को और भूमि-सुधार के दौरान अनसुलझी अन्य समस्याओं को सुलझाना। सुलझाने की विधि यह थी : अपेक्षाकृत छोटे पैमाने पर, जिनके पास बेहतर है उनसे लेकर जिनके पास बदतर है उन्हें देना, जिनके पास फालतू है उनसे लेकर जिनके पास कम है उन्हें देना, ताकि जमीन और उत्पादन के अन्य साधनों का बंटवारा करने के कार्य को समुचित रूप से पुनर्व्यवस्थित किया जा सके।

अस्थाई तौर पर येनान से हट जाने और शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र की रक्षा करने के बारे में — चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के दो दस्तावेज*

नवम्बर १९४६ और अप्रैल १९४७

१. १८ नवम्बर १९४६ का निर्देश

च्याङ काई-शेक अपने विनाश के कगार पर पहुंच चुका है। वह दो उपायों से हमारी पार्टी को चोट पहुंचाना चाहता है और अपने को मजबूत बनाना चाहता है : एक तो "राष्ट्रीय एसेम्बली" बुलाकर और दूसरे येनान पर चढ़ाई करके। वास्तव में जो चीज वह हासिल करेगा, वह ठीक इसके विपरीत होगी। चीनी जनता, अकेले च्याङ काई-शेक द्वारा नियंत्रित फूटपरस्त "राष्ट्रीय एसेम्बली"

---

*कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा तैयार किए गए इन दो दस्तावेजों में से पहला दस्तावेज येनान में १९४६ के जाड़ों में उस समय लिखा गया था जब क्वोमिन्ताङ सेनाएं येनान पर चढ़ाई की तैयारियां कर रही थीं; दूसरा दस्तावेज उत्तरी शेनशी की हुङशान काउन्टी के छिङयाङछा नामक स्थान पर उस समय लिखा गया था जब १९ मार्च १९४७ को क्वोमिन्ताङ सेनाओं द्वारा येनान पर कब्जा

का दृढ़ता से विरोध करती है ; इस एसेम्बली के उद्घाटन का दिन च्यांङ काई-शेक गुट के आत्म-विनाश के आरम्भ का दिन साबित होगा । आज जबकि हम च्यांङ काई-शेक की सेनाओं की ३५ ब्रिगेडों का सफाया कर चुके हैं[1] और उनकी आक्रमणकारी शक्ति लगभग खत्म हो चुकी है, ऐसे समय अगर उसकी सेनाएं कोई आकस्मिक धावा बोलकर येनान पर कब्जा भी कर लें, तो भी जन-मुक्ति युद्ध में विजय प्राप्त करने की आम सम्भावना को इससे कोई क्षति नहीं पहुंचेगी और न ही च्यांङ काई-शेक उस तबाही से बच सकता है जो अब उस पर आने ही वाली है । थोड़े में यह कहा जा सकता है कि च्यांङ काई-शेक अब अपने सर्वनाश की राह पकड़ चुका है ; ज्योंही वह "राष्ट्रीय एसेम्बली" बुलाने और येनान पर चढ़ाई करने की अपनी दोनों चालें चलेगा, उसकी सारी तिकड़मबाजी की पोल खुल जाएगी ; और इससे जन-मुक्ति युद्ध की प्रगति

किए बीस दिन बीत चुके थे । मुक्त क्षेत्रों पर चौतरफा रूप से आक्रमण करने की अपनी योजना के दिवालिया साबित हो जाने पर च्यांङ काई-शेक ने अपने दम तोड़ते शासन को बचाने के लिए कुछ वहशियाना तदबीरें कीं – बोगस राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाई, क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों को निकाल दिया और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के निवास-स्थान येनान पर चढ़ाई कर दी । जैसा कि इन दस्तावेजों में बताया गया है, च्यांङ काई-शेक की इन तदबीरों के परिणामस्वरूप राजनीतिक तौर पर उसका अपना ही पूर्ण आत्म-विनाश हो गया । सामरिक तौर पर, उसने अपनी सेनाएं मुक्त क्षेत्रों के पूर्वी और पश्चिमी बाजुओं पर, यानी शानतुङ मुक्त क्षेत्र और शेनशी-कानसू-निङश्या मुक्त क्षेत्र पर, इस इरादे से केन्द्रित कीं कि वह "मोर्चे के महत्वपूर्ण हिस्सों पर चढ़ाई" कर सके, मगर नतीजे के तौर पर उसे सौ फीसदी असफलता का मुंह देखना पड़ा । शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र पर चढ़ाई करने वाली

में मदद मिलेगी । "राष्ट्रीय एसेम्बली" बुलाने और येनान पर चढ़ाई करने – च्यांङ काई-शेक के इन दोनों कारनामों की हकीकत हर इलाके में पार्टी के भीतर और बाहर के लोगों को हमें पूरी तरह समझा देनी चाहिए और च्यांङ काई-शेक के आक्रमण को चकनाचूर कर डालने और जनवादी चीन की स्थापना करने के संघर्ष में समूची पार्टी, समूची सेना और समूची जनता को एकताबद्ध कर लेना चाहिए ।

२. ९ अप्रैल १९४७ का सरकुलर

अपने दम तोड़ते शासन को बचाने के लिए क्वोमिन्ताङ ने बोगस राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाने, बोगस संविधान बनाने, नानकिङ, शांघाई व छुङकिङ से हमारी पार्टी की प्रतिनिधि संस्थाओं को निकाल बाहर

क्वोमिन्ताङ सेनाओं की तादाद २,३०,००० से भी अधिक थी, जबकि उस क्षेत्र में उत्तर-पश्चिमी जन-मुक्ति सेना के केवल २०,००० से कुछ ही अधिक सैनिक थे । यही कारण था कि शत्रु-सेनाएं येनान और शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के सभी काउन्टी-केन्द्रों पर कब्जा कर सकीं जिन्हें हम खुद अपनी ही पहल पर छोड़ चुके थे । फिर भी, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदर मुकाम और उत्तर-पश्चिमी जन-मुक्ति सेना को नष्ट कर डालने या उन्हें पीली नदी के पूर्व की ओर खदेड़ देने का अपना मकसद हासिल करने में शत्रु नाकाम ही रहा । उल्टे, उसे हमारी सेना के हाथों बड़ी जबरदस्त चोटें खानी पड़ीं, अपने लगभग १,००,००० सैनिक गंवाने पड़े और आखिरकार सिर पर पांव रखकर सीमान्त क्षेत्र से भागना पड़ा, जबकि इधर हमारी सेना रक्षात्मक युद्ध करने के बजाय विशाल उत्तर-पश्चिम की मुक्ति के लिए विजयपूर्वक आक्रमणात्मक युद्ध करने लगी । इतना ही नहीं, उत्तर-पश्चिम की रणभूमि की हमारी सेना ने बहुत

करने तथा क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के आपसी सम्बन्धों को तोड़ने का ऐलान करने[२] आदि तदबीरों के अलावा एक कदम और आगे बढ़कर यह तदबीर भी की है कि हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और जन-मुक्ति सेना के जनरल हेडक्वार्टर के निवास-स्थान येनान पर और शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र पर चढ़ाई कर दी है।

इस तथ्य से कि क्वोमिन्ताङ ने ये नई तदबीरें की हैं, हरगिज यह साबित नहीं होता कि उसका शासन मजबूत है, बल्कि उल्टे यह साबित होता है कि क्वोमिन्ताङ शासन का संकट बेहद गहरा हो चुका है। यही नहीं, येनान पर और शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र पर उसकी चढ़ाई, उत्तर-पश्चिमी चीन के सवाल को पहले हल कर लेने, हमारी पार्टी का दायां बाजू काट डालने, हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी को और जन-मुक्ति सेना के जनरल हेडक्वार्टर

थोड़ी तादाद में अपने सैनिक लगाकर शत्रु की मुख्य सैन्य-शक्ति की भारी तादाद को उलझाए रखा और नष्ट कर डाला तथा इस प्रकार अन्य रणभूमियों में हमारी सेनाओं की सामरिक गतिविधियों को जोरदार सम्बल प्रदान किया ; खासकर शानशी-हपे-शानतुङ-हनान रणभूमि की हमारी सेना को तो इससे काफी जोरदार सम्बल मिला, और इससे हमारी सेनाएं रक्षात्मक युद्ध के दौर को पार करके आक्रमणात्मक युद्ध के दौर में दाखिल होने में अधिक फुर्ती दिखा सकीं। मार्च १९४७ से जबकि हमारी सेनाएं येनान से हटी थीं, लेकर एक साल बाद उस समय तक जबकि हमारी सेनाएं उत्तर-पश्चिम की रणभूमि में हमला बोलने लगीं, इस पूरे दौर में कामरेड माओ त्सेतुङ, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और जन-मुक्ति सेना का जनरल हेडक्वार्टर, ये सब शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में ही बने रहे। इस तथ्य का भारी राजनीतिक महत्व था। इसने शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र की और देशभर में हर मुक्त क्षेत्र

को उत्तर-पश्चिमी चीन से निकाल बाहर करने और यह सब कुछ कर लेने के बाद अपनी सेनाओं के साथ उत्तरी चीन पर चढ़ाई कर देने और इस तरह हमारी सेनाओं को एक-एक करके परास्त कर देने का अपना मकसद हासिल करने की नाकाम कोशिश है।

इन परिस्थितियों में केन्द्रीय कमेटी ने यह फैसला किया है :

१. हमें शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र और उत्तर-पश्चिम के मुक्त क्षेत्रों का बचाव और विस्तार अडिग जुझारू भावना के साथ करना होगा ; इस मकसद को हासिल करना बिलकुल मुमकिन है।

२. हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी को और जन-मुक्ति सेना के जनरल हेडक्वार्टर को शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के अन्दर ही बने रहना होगा। यह क्षेत्र ऐसा है जिसका धरातल बहुत दुर्गम है, जहां की आम जनता में हमारा अच्छा खासा आधार है,

की सेना और जनता के जुझारू संकल्प और विजय के विश्वास को अत्यधिक प्रेरित किया और सम्पुष्ट बनाया। शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में रहते हुए, कामरेड माओ त्सेतुङ ने न सिर्फ देशभर के सभी मोर्चों पर होने वाले जन-मुक्ति युद्ध का निर्देशन जारी रखा, बल्कि उत्तर-पश्चिम की रणभूमि में हुए जन-मुक्ति युद्ध की कमान भी व्यक्तिगत रूप से खुद सम्भाल ली। और इस प्रकार प्रस्तुत दस्तावेज में निर्धारित किए गए लक्ष्य को, यानी "शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र और उत्तर-पश्चिम के मुक्त क्षेत्रों का बचाव और विस्तार अडिग जुझारू भावना के साथ करने" के लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त किया गया। उत्तर-पश्चिमी रणभूमि की सामरिक कार्यवाहियों के बारे में जानकारी के लिए देखिए इसी ग्रन्थ में "उत्तर-पश्चिम की रणभूमि के लिए सामरिक कार्यवाही सम्बन्धी नीति" और "उत्तर-पश्चिम की महान विजय के बारे में तथा मुक्ति सेना में एक नए किस्म के सुदृढ़ीकरण आन्दोलन के बारे में" शीर्षक रचनाएं।

जहां पैंतरों के लिए काफी गुंजाइश है और जहां सुरक्षा की पूरी गारन्टी है।

३. साथ ही, अपने काम के सुभीते के लिए हमने केन्द्रीय कमेटी की एक कार्य-समिति बना ली है, जो उत्तर-पश्चिमी शानशी में या किसी और उपयुक्त स्थान में जाएगी और वहां रहकर केन्द्रीय कमेटी की ओर से सौंपे गए कामों को अंजाम देगी।

ये तीनों फैसले पिछले महीने किए गए थे और अब तक इन्हें लागू भी किया जा चुका है। यह सरकुलर आपको सूचित करने के लिए भेजा जा रहा है।

नोट

[1] ये आंकड़े जुलाई के शुरू से १३ नवम्बर १९४६ तक की अवधि के हैं।

[2] शान्ति-वार्ता करने और सम्पर्क कायम करने के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के जो प्रतिनिधि और कर्मचारी नानकिङ, शांघाई और छुङकिङ में रखे गए थे, उन्हें २७-२८ फरवरी १९४७ को क्वोमिन्ताङ सरकार ने मजबूर किया कि वे निर्धारित अवधि के भीतर उन स्थानों से चले जाएं। १५ मार्च १९४७ को क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी ने अपना तीसरा पूर्ण अधिवेशन बुलाया, जिसमें च्याङ काई-शेक ने कम्युनिस्ट पार्टी के साथ क्वोमिन्ताङ के सम्बन्ध-विच्छेद का और गृहयुद्ध को अन्त तक चलाने के अपने इरादे का ऐलान किया।

उत्तर-पश्चिम की रणभूमि के लिए सामरिक कार्यवाही सम्बन्धी नीति*

१५ अप्रैल १९४७

१. शत्रु इस समय काफी थका हुआ है, मगर वह अभी तक थक कर चूर नहीं हुआ। उसकी खाद्य-सप्लाई की कठिनाइयां काफी बढ़ गई हैं, लेकिन उसे हद दर्जे की कठिनाइयों का सामना अभी तक नहीं करना पड़ा है। शत्रु की ३१वीं ब्रिगेड का सफाया करने[1] के बाद से लेकर आज तक हमारी सेना ने शत्रु-सेना के किसी बड़े भाग को नष्ट तो नहीं किया है, मगर पिछले बीस दिनों के अन्दर उसे काफी थका देने और उसकी खाद्य-सप्लाई काफी घटा देने का मकसद हमने पूरा कर लिया है, और इस प्रकार उसे पूरी तरह थकाकर चूर कर डालने, उसकी खाद्य-सप्लाई पूरी तरह काट देने और अन्त में उसका सफाया कर डालने के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा कर दी हैं।

२. इस समय शत्रु की नीति है अपने थके होने और खुराक की कमी होने की परवाह न करके, हमारी मुख्य सैन्य-शक्ति को पीली

*यह तार कामरेड माओ त्सेतुङ ने उत्तर-पश्चिमी रणांगन-सेना के नाम भेजा था, जो उस समय जन-मुक्ति सेना की शेनशी-कानसू-निङश्या मुक्त क्षेत्र और शानशी-स्वेय्वान मुक्त क्षेत्र की टुकड़ियों से बनी थी और जिसकी कमान फङ त-ह्वाए, हो लुङ, शी चुङ-श्युन और अन्य कामरेडों के हाथ में थी।

नदी के पार पूर्व की ओर मार भगाना, इसके बाद स्वेइते और मीचि की नाकेबन्दी करना तथा "सफाया" मुहिमों के लिए अपनी सेना को बिखेर देना। शत्रु-सेना ३१ मार्च को छिङच्येन पहुंची, पर वहां पहुंचते ही उत्तर की ओर नहीं बढ़ी; उसका मकसद था हमारे निकलने के लिए रास्ता खुला छोड़ रखना। पश्चिम में वायाओपाओ की ओर बढ़ने का उसका मकसद था इस तरह हमें स्वेइते और मीचि की ओर भगा देना। हमारी सेनाओं का पता लगा लेने पर अब वह वायाओपाओ के दक्षिण और पश्चिम की ओर मुड़ रही है और इसके बाद हमें उत्तर की ओर भगाने के लिए उस कस्बे की ओर फिर बढ़ेगी।

३. हमारी नीति है अपने पहले वाले तरीके पर ही डटे रहना, यानी कुछ समय के लिए (लगभग एक और महीने के लिए) शत्रु को इस इलाके में दौड़ाते रहना, जिसका मकसद उसे पूरी तरह थका देना, उसकी खाद्य-सप्लाई में भारी कटौती कर देना और तब उसे नष्ट कर डालने का अवसर ढूंढ़ निकालना है। य्वीलिन पर हमला करने के लिए उत्तर की ओर या दुश्मन के पिछले कालमों पर वार करने के लिए दक्षिण की ओर दौड़ने की जल्दी मचाने की हमारी मुख्य सेना को कोई जरूरत नहीं है। कमाण्डरों और योद्धाओं को और साथ ही आम जनता को भी यह बात बिलकुल साफ-साफ समझा देनी चाहिए कि हमारी सेना का यह तरीका शत्रु पर अन्तिम जीत हासिल करने का अनिवार्य रास्ता है। शत्रु को बुरी तरह थका डाले बिना और उसे पूरी तरह भुखमरी का शिकार बनाए बिना हम अन्तिम जीत हासिल नहीं कर सकते। इसे हम "थका देने और खत्म कर देने" की कार्यनीति कह सकते हैं, यानी शत्रु को पूरी तरह थकाकर

चूर कर दिया जाए और तब उसका सफाया कर दिया जाए।

४. अभी आप वायाओपाओ के पूर्व और उत्तर के ठिकानों पर हैं, इसलिए सबसे अच्छा तो यह होगा कि शत्रु को वायाओपाओ के उत्तर की ओर बहका ले जाएं; और तब ल्याओ आङ[१] की टुकड़ियों के कमजोर अंग पर हमला करके शत्रु को पूर्व की ओर बहका ले जा सकते हैं। इसके बाद आप आनसाए की ओर मुड़कर शत्रु को फिर पश्चिम की ओर बहका ले जा सकते हैं।

५. लेकिन कुछ ही दिनों के अन्दर आपको पूरी ३५९वीं ब्रिगेड को यह आदेश देना होगा कि वह दक्षिण की ओर बढ़ने की तैयारियां पूरी कर ले, ताकि अब से एक सप्ताह बाद उसे येनछाङ-येनान लाइन के दक्षिण और ईछ्वान-लोछ्वान लाइन के उत्तर वाले इलाके पर आकस्मिक हमला करके शत्रु की खाद्य-सप्लाई के मार्ग को बन्द कर देने के लिए दक्षिण की ओर भेजा जा सके।

६. कृपया उत्तर दें कि आप उक्त विचारों को सही मानते हैं या नहीं।

नोट

[१] अपनी ही पहलकदमी पर येनान से हट जाने के बाद, उत्तर-पश्चिमी जन-मुक्ति सेना ने अपनी एक छोटी सी टुकड़ी को शत्रु की मुख्य सैन्य-शक्ति को दूर आनसाए तक, जो येनान के उत्तर-पश्चिम में है, बहका ले जाने के लिए भेजा और उसकी अपनी मुख्य सैन्य-शक्ति येनान के उत्तर-पूर्व में स्थित छिङह्वाप्येन इलाके में शत्रु पर हमला करने के लिए घात लगाए रही। २५ मार्च १९४७ को ब्रिगेड हेडक्वार्टर के नेतृत्व में, हू चुङ-नान की कमान में क्वोमिन्ताङ

सेना की पुनर्गठित २७वीं डिवीजन की ३१वीं ब्रिगेड की एक रेजीमेन्ट उक्त जाल में आ फंसी और घंटेभर से कुछ ही अधिक समय की लड़ाई में उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया गया।

[९] हू चुङ-नान की कमान में क्वोमिन्ताङ सेना की पुनर्गठित ७६वीं डिवीजन के कमाण्डर ल्याओ आङ को बाद में ११ अक्तूबर १९४७ को छिङच्येन की लड़ाई में बन्दी बना लिया गया।

च्याङ काई-शेक सरकार समूची जनता की घेरेबन्दी में पड़ चुकी है*

३० मई १९४७

समूची जनता से शत्रुता रखने वाली च्याङ काई-शेक सरकार को अब पता चल गया है कि वह समूची जनता की घेरेबन्दी में पड़ चुकी है। सामरिक और राजनीतिक, दोनों ही मोर्चों पर वह पराजित हो गई है। जिन शक्तियों को उसने अपनी शत्रु-शक्तियां घोषित कर रखा है उनके घेरे में वह फंसी पड़ी है और इस घेरे से बच निकलने की कोई राह उसे मिल नहीं पा रही।

देशद्रोही च्याङ काई-शेक गुट और उसके आका अमरीकी साम्राज्यवादियों ने स्थिति का मूल्यांकन करने में गलती की है। उन्होंने खुद अपनी ताकत को तो बहुत बढ़ा-चढ़ा कर आंका है और जनता की ताकत को बहुत घटाकर। वे यह मानते हैं कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद चीन और संसार वैसे ही बने हुए हैं जैसे कि वे अतीत काल में थे; उन्हें यह कतई मंजूर नहीं कि कहीं कोई तिलभर भी हेरफेर

---

*यह टिप्पणी कामरेड माओ त्सेतुङ ने शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के लिए लिखी थी। इसमें बताया गया है कि चीन के घटनाक्रम की गति लोगों के अनुमान

करे और उनकी मर्जी के खिलाफ चूं तक करे। जापान के हथियार डाल चुकने के बाद वे चीन में फिर से वही पुरानी व्यवस्था कायम करने के लिए कमर कसे हुए थे। राजनीतिक सलाह-मशविरे तथा फौजी मध्यस्थता की धोखे की टट्टी खड़ी करके वक्त हासिल करने के बाद देशद्रोही च्याङ काई-शेक सरकार ने बीस लाख सेना बटोरकर चौतरफा रूप से आक्रमण शुरू कर दिया।

इस समय चीन में लड़ाई के दो मोर्चे हैं। पहला मोर्चा उस लड़ाई का है जो च्याङ काई-शेक की हमलावर सेनाओं और जन-मुक्ति सेना के बीच चल रही है। और अब एक दूसरा मोर्चा खुल गया है, अर्थात, महान और न्यायपूर्ण विद्यार्थी-आन्दोलन और प्रतिक्रियावादी च्याङ काई-शेक सरकार के बीच का तीव्र संघर्ष[१]। विद्यार्थी-आन्दोलन का नारा है : "अन्न, शान्ति, आजादी" या "भुखमरी का विरोध करो, गृहयुद्ध का विरोध करो, अत्याचार का विरोध करो"। च्याङ काई-शेक ने "सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए अस्थाई उपाय"[२] नाम का हुक्मनामा जारी किया है। च्याङ काई-शेक की सेना, पुलिस, फौजी पुलिस तथा खुफिया पुलिस हर कहीं विद्यार्थी समुदाय से टकराती फिर रही हैं। च्याङ काई-शेक निहत्थे विद्यार्थियों पर पाशविक बल का प्रयोग कर रहा है। वह उन्हें गिरफ्तार कर रहा है, उन्हें जेलों में डाल रहा है, उनकी पिटाई कर रहा है तथा उनका कत्लेआम कर रहा है ; नतीजे के तौर पर विद्यार्थी-

की अपेक्षा अधिक तेज है और जनता का आवाहन किया गया है कि वह चीनी क्रान्ति की देशव्यापी विजय के लिए तमाम आवश्यक स्थितियां जल्द से जल्द पैदा कर दे। यह सब शीघ्र ही सही साबित हुआ। यह टिप्पणी और "उत्तर-पश्चिम

आन्दोलन दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। आम लोगों की पूरी सहानुभूति विद्यार्थियों के पक्ष में है, जबकि च्याङ काई-शेक और उसके पालतू कुत्ते पूरे तौर पर अकेले पड़ गए हैं, और च्याङ का खूंखार चेहरा पूरे तौर पर बेनकाब हो चुका है। विद्यार्थी-आन्दोलन समूचे जन-आन्दोलन का ही एक अंग है। विद्यार्थी-आन्दोलन के उभार की प्रेरणा से अनिवार्यतः समूचे जन-आन्दोलन में भी उभार पैदा हो जाएगा। यह बात १९१९ के ४ मई आन्दोलन और १९३५ के ९ दिसम्बर आन्दोलन के ऐतिहासिक अनुभवों से साबित हो चुकी है।

अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्ते च्याङ काई-शेक ने जब से जापानी साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्ते वाङ चिङ-वेइ की जगह ले ली है और चीन को अमरीकी उपनिवेश बना डालने, गृहयुद्ध छेड़ देने और फासिस्ट तानाशाही शासन को मजबूत बनाने की नीतियां अपना ली हैं, तब से उन्होंने अपने आपको समूची चीनी जनता का शत्रु ऐलान कर दिया है और जनता के तमाम तबकों को भुखमरी और मौत के कगार पर ला खड़ा किया है। इससे मजबूर होकर जनता के तमाम तबके प्रतिक्रियावादी च्याङ काई-शेक सरकार के खिलाफ जीवन-मरण के संघर्ष में एकताबद्ध हो गए हैं और वे इस संघर्ष को बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। जनता के लिए इसके सिवा और कोई चारा नहीं रह गया है। च्याङ काई-शेक

की रणभूमि के लिए सामरिक कार्यवाही सम्बन्धी नीति" शीर्षक तार, ये दोनों ही दस्तावेज उत्तरी शेनशी की चिङच्येन काउन्टी के वाङच्यावान नामक स्थान पर लिखे गए थे।

सरकार की प्रतिक्रियावादी नीतियों से उत्पीड़ित और खुद अपने उद्धार के लिए एकताबद्ध चीनी जनता के तबकों में मजदूर, किसान, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग, राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग, जागृत शरीफजादे, अन्य देशभक्त तत्व, अल्पसंख्यक जातियां तथा प्रवासी चीनी शामिल हैं। यह एक बहुत ही व्यापक राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा है।

जिन निहायत प्रतिक्रियावादी वित्तीय और आर्थिक नीतियों पर च्याङ काई-शेक सरकार एक मुद्दत से अमल करती आ रही है, वे चीन-अमरीका वाणिज्य सन्धि की बदौलत, जो एक अभूतपूर्व देश-द्रोहपूर्ण सन्धि है, बहुत ही गम्भीर हो उठी हैं। इस सन्धि के आधार पर अमरीकी इजारेदार पूंजी और च्याङ काई-शेक की नौकरशाही-दलाल पूंजी एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से गुंथ गई हैं और दोनों ने समूचे देश के आर्थिक जीवन को अपने नियंत्रण में ले रखा है। इसी का नतीजा है बेलगाम मुद्रा-स्फीति, आसमान को छूने वाली बेमिसाल महंगाई, राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के उद्योग-वाणिज्य का उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ दिवालियापन और मेहनतकश आम जनता, सरकारी कर्मचारियों और शिक्षकों के रहन-सहन के स्तर का दिन पर दिन गिरता जाना। इन परिस्थितियों में जनता के तमाम तबकों के लिए इसके सिवा और कोई चारा नहीं रह जाता कि वे एक हो जाएं और अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष करें।

फौजी दमन और राजनीतिक धोखाधड़ी ही च्याङ काई-शेक के वे दो मुख्य हथकण्डे रहे हैं जिनके सहारे वह अपने प्रतिक्रियावादी शासन को बनाए रखता आया है। अब लोग इन दोनों हथकण्डों को बड़ी तेजी के साथ चूर-चूर होता देख रहे हैं।

लड़ाई के हर मैदान में च्याङ काई-शेक की सेना को मुंह की

खानी पड़ी है। पिछली जुलाई से अब तक के ग्यारह महीनों में अकेली उसकी नियमित सेना की कोई ९० ब्रिगेडों का सफाया कर दिया गया है। उसकी सेनाएं पिछले साल छाङछुन, छङते, चाङ-च्याखओ, होत्से, ह्वाएइन और आनतुङ पर कब्जा करते समय और यहां तक कि इस साल लिनई और येनान पर कब्जा करते समय जिस शेखी और घमण्ड से इतराती फिरती थीं, उसकी बू भी अब उनमें नहीं रह गई है। च्याङ काई-शेक और छन छङ ने जन-मुक्ति सेना की ताकत का और उसके लड़ने के तरीकों का गलत अन्दाजा लगाया। पीछे हट जाने के हमारे पैंतरे को हमारी बुजदिली और कई नगरों को त्याग देने के हमारे तरीके को हमारी हार मानकर उन्होंने बड़े भोलेपन से यह आस बांध ली थी कि वे तीन महीने या ज्यादा से ज्यादा छै महीने के अन्दर लम्बी दीवार के दक्षिण में स्थित इलाकों में हमारा खात्मा कर डालेंगे और फिर उत्तर-पूर्वी चीन में भी हमारा खात्मा कर डालेंगे। मगर दस महीने के बाद च्याङ काई-शेक की तमाम हमलावर सेनाएं आज बिलकुल हताश-निराश हो गई हैं, मुक्त क्षेत्रों की जनता और जन-मुक्ति सेना के घेरे में वे पूरी तरह फंस चुकी हैं और अब बच निकलने की राह पाना उनके लिए बहुत ही कठिन हो गया है।

मोर्चे पर च्याङ काई-शेक की सेनाओं की पराजयों के अधिकाधिक समाचार जैसे-जैसे उसके पृष्ठभाग के इलाकों में पहुंचते जाते हैं, वैसे-वैसे उसकी प्रतिक्रियावादी सरकार के उत्पीड़न में घुटती व्यापक जनता में अपना दुख दूर करने और अपना उद्धार करने की अधिका-धिक आशा बंधती जाती है। ऐन इसी मौके पर, च्याङ काई-शेक की तमाम राजनीतिक चालें उतनी ही जल्दी दिवालिया साबित

होती जा रही हैं जितनी जल्दी वह उन्हें चल रहा है। हर बात प्रतिक्रियावादियों की आशाओं के प्रतिकूल ही हो रही है। "संविधान" बनाने के हेतु "राष्ट्रीय एसेम्बली" बुलाने, एकदलीय सरकार का "बहुदलीय सरकार" के रूप में पुनर्गठन करने आदि न जाने कितने-कितने और कैसे-कैसे उपाय किए गए और इन सबका मूल उद्देश्य यही था कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और दूसरी जनवादी शक्तियों को अलगाव की स्थिति में डाल दिया जाए। इन उपायों का नतीजा उल्टा ही निकला ; चीनी कम्युनिस्ट पार्टी या कोई और जनवादी शक्ति तो अलगाव की स्थिति में पड़ी नहीं, खुद प्रतिक्रियावादी ही अलगाव की स्थिति में पड़ गए। इसके बाद चीनी जनता अपने अनुभव के बल पर आप ही समझ गई कि च्याङ काई-शेक की "राष्ट्रीय एसेम्बली", उसका "संविधान" और उसकी "बहुदलीय सरकार" असल में हैं क्या चीज। इससे पहले चीनी जनता के बीच बहुत से लोगों के और मुख्य रूप से मध्यवर्ती तबके के लोगों के मन में च्याङ काई-शेक की इन पैंतरेबाजियों के बारे में कम या अधिक मात्रा में भरम-भुलावे जरूर थे। यही बात उसकी "शान्ति-वार्ताओं" पर भी लागू होती है। अब जबकि च्याङ काई-शेक ने अनेक संजीदा युद्ध-विराम समझौतों को फाड़ फेंका है और शान्ति की मांग करने वाले और गृहयुद्ध का विरोध करने वाले आम छात्रों के ऊपर संगीनों से वार किए हैं, जनता को धोखा देने पर तुले हुए लोगों या राजनीति के अनुभव की दृष्टि से बिलकुल ही कोरे लोगों को छोड़कर अब किसी को भी उसकी तथाकथित शान्ति-वार्ताओं पर जरा भी विश्वास नहीं रह जाएगा।

स्थिति का जो मूल्यांकन हमने किया है, उसे सभी घटनाओं ने

सही ठहराया है। यह बात हमने पहले बार-बार बताई है कि च्याङ काई-शेक सरकार वतनफरोशी, गृहयुद्ध और तानाशाही की सरकार के अलावा और कुछ नहीं है। चीन को अमरीकी उपनिवेश बना डालने और खुद अपना तानाशाहाना शासन बनाए रखने के लिए वह गृहयुद्ध द्वारा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और तमाम दूसरी जनवादी शक्तियों का सफाया कर डालना चाहती है। इन प्रतिक्रियावादी नीतियों को अपनाने के कारण यह सरकार राजनीतिक रूप से अपनी सारी मान-मर्यादा और अपनी सारी ताकत गंवा बैठी है। च्याङ काई-शेक सरकार की शक्ति महज वक्ती और सतही है ; सच्ची बात यह है कि यह सरकार बाहरी तौर पर मजबूत और भीतरी तौर पर कमजोर है। उसके आक्रमणों को, वे चाहे जहां भी और चाहे जिस मोर्चे पर भी क्यों न हों, चकनाचूर किया जा सकता है। अनिवार्य रूप से उसका अन्त यही होगा कि आम जनता उसके विरुद्ध विद्रोह कर देगी, उसके अनुयायी उसे छोड़कर भाग जाएंगे और उसकी सेना पूरी तरह नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगी। यह मूल्यांकन ऐसा है जिसे अब तक की सभी घटनाओं ने सही ठहराया है और आगे की सभी घटनाएं भी उसे सही ठहराती रहेंगी।

चीन का घटनाक्रम लोगों के अनुमान की अपेक्षा अधिक तेजी से आगे बढ़ रहा है। एक ओर जन-मुक्ति सेना को जीतें हासिल हो रही हैं, और दूसरी ओर च्याङ काई-शेक के नियंत्रण वाले इलाकों में जनता के संघर्ष बढ़ रहे हैं ; दोनों की ही रफ्तार बहुत तेज है। चीनी जनता को चाहिए कि वह एक शान्तिपूर्ण, जनवादी और स्वाधीन नए चीन की स्थापना के लिए तमाम आवश्यक स्थितियां जल्दी से जल्दी पैदा कर दे।

नोट

१ दिसम्बर १९४६ से भुखमरी, गृहयुद्ध और अत्याचार के खिलाफ क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों के व्यापक विद्यार्थी समुदाय के जनवादी और देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन में जन-मुक्ति युद्ध के विकास के साथ-साथ नया उभार आता गया और धीरे-धीरे यह आन्दोलन च्याङ काई-शेक के प्रतिक्रियावादी शासन के खिलाफ चल रहे संघर्ष का दूसरा मोर्चा बन गया। दिसम्बर १९४६ के अन्त में और जनवरी १९४७ के शुरू में पेफिङ, थ्येनचिन, शांघाई और नानकिङ समेत बीसियों बड़े और मझोले नगरों के ५,००,००० से अधिक विद्यार्थियों ने अमरीकी सैनिकों द्वारा पेकिङ विश्वविद्यालय की एक छात्रा पर किए गए बलात्कार के विरुद्ध हड़तालें कीं, प्रदर्शन किए और चीन से अमरीकी सशस्त्र सेनाओं के हटाए जाने की मांग की। इस संघर्ष को तेजी से मजदूरों, अध्यापकों तथा अन्य लोगों का समर्थन प्राप्त हो गया। ४ मई १९४७ को शांघाई के विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने गृहयुद्ध के विरुद्ध प्रदर्शन किया। साथ ही आठ हजार मजदूरों और विद्यार्थियों ने क्वोमिन्ताङ पुलिस के सदर मुकाम पर घेरा डाल दिया। जल्द ही यह देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन नानकिङ, पेफिङ, हाङचओ, शनयाङ, छिङताओ, खाएफ़ङ तथा अन्य बहुत से नगरों में फैल गया। विद्यार्थियों के इस देशभक्तिपूर्ण और जनवादी आन्दोलन को कुचल डालने के लिए क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने परले सिरे के पाशविक उपायों का सहारा लिया। २० मई को कुख्यात "२० मई की खूनी घटना" में नानकिङ और थ्येनचिन के सौ से अधिक विद्यार्थी घायल और गिरफ्तार हुए। फिर भी व्यापक आम जनता द्वारा समर्थित उस देशभक्तिपूर्ण विद्यार्थी-आन्दोलन को दबाया नहीं जा सका। "भुखमरी का विरोध करो, गृहयुद्ध का विरोध करो, अत्याचार का विरोध करो" के नारों के साथ विद्यार्थियों की हड़तालें व प्रदर्शन, विविध व्यवसायों की जनता के अमरीका-विरोधी और च्याङ काई-शेक-विरोधी संघर्ष, जैसे मजदूरों व शिक्षकों की हड़तालें, साठ से अधिक बड़े और मझोले नगरों में फैल गए। मई १९४८ में अमरीका के बढ़ावे और सहारे पर जापानी हमलावर शक्तियों को पुनर्जीवित किए जाने के विरुद्ध सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं, पत्रकारों और अन्य व्यवसायों के लोगों के साथ मिलकर शांघाई के विद्यार्थियों ने एक देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन शुरू किया और यह आन्दोलन भी बड़ी तेजी के साथ दूसरे अनेक नगरों में फैल गया। देशव्यापी विजय हासिल हो जाने तक विद्यार्थियों के ये देशभक्तिपूर्ण संघर्ष कभी भी बन्द नहीं हुए और इन्होंने क्वोमिन्ताङ पर करारी चोटें कीं।

२ च्याङ काई-शेक सरकार द्वारा १८ मई १९४७ को जारी किए गए इस हुक्मनामे में दस से अधिक व्यक्तियों द्वारा एक साथ याचिका दिए जाने की तथा मजदूरों और विद्यार्थियों की तमाम हड़तालों और प्रदर्शनों की सख्त मनाही कर दी गई थी। इसमें क्वोमिन्ताङ के स्थानीय अधिकारियों को जनता के देशभक्तिपूर्ण और जनवादी आन्दोलनों के खूनी दमन के लिए "आवश्यक कार्यवाहियां करने" और "संकटकालीन उपाय" अपनाने का अधिकार भी दे दिया गया था।

मुक्ति युद्ध के दूसरे वर्ष के लिए रणनीति*

१ सितम्बर १९४७

१. पहले वर्ष की लड़ाई में (पिछले साल जुलाई से इस साल जून तक) हमने शत्रु की ९७.५ नियमित ब्रिगेडों यानी ७,८०,००० सैनिकों का और कठपुतली फौजों, शान्ति-रक्षा कोरों आदि के ३,४०,००० सैनिकों का, कुल मिलाकर ११,२०,००० शत्रु-सैनिकों का सफाया कर डाला। यह एक महान विजय थी। इससे शत्रु को करारी चोट लगी, पूरे शत्रु-शिविर में गहरा पराजयवाद छा गया, देशभर की जनता में उल्लास फैल गया और हमारी सेना के हाथों शत्रु के सम्पूर्ण विनाश और हमारी अन्तिम विजय की नींव पड़ गई।

२. पहले वर्ष की लड़ाई में शत्रु ने अपनी २४८ में से २१८ नियमित ब्रिगेडों यानी १६,००,००० से अधिक सैनिकों को और

*यह अन्तःपार्टी निर्देश चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए कामरेड माओ त्सेतुङ ने उस समय तैयार किया था जब वे केन्द्रीय कमेटी के साथ उत्तरी शेनशी की च्याश्येन काउन्टी के चूक्वानचाए नामक स्थान में थे। निर्देश में मुक्ति युद्ध के दूसरे वर्ष के लिए बुनियादी कार्य निर्धारित किया गया। यह कार्य था : अपनी मुख्य सैन्य-शक्ति को क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में ले जाकर उन क्षेत्रों में युद्ध फैलाना और भीतरी सैन्य-पंक्तियों पर लड़ने के बजाय बाहरी सैन्य-पंक्तियों

विशेष सैन्य-दलों (नौसेना, वायुसेना, तोपखाना, इंजीनियरी कोरों और बख्तरबन्द यूनिटों) के और कठपुतली फौजों, संचार-पुलिस कोरों और शान्ति-रक्षा कोरों के लगभग १०,००,००० सैनिकों को झोंककर मुक्त क्षेत्रों के विरुद्ध बहुत बड़े पैमाने पर आक्रमणात्मक कार्यवाही की। हमारी सेना ने सही तौर पर भीतरी सैन्य-पंक्तियों पर ही लड़ने की रणनीति अपनाई ; और हर मौके पर वह हर जगह पहलकदमी अपने ही हाथ में रखने के लिए वह अपने ३,००,००० से अधिक हताहतों के रूप में और बड़े-बड़े क्षेत्रों पर शत्रु के कब्जे के रूप में भारी कीमत चुकाने में भी पीछे नहीं रही। परिणामस्वरूप हम ११,२०,००० शत्रु-सैनिकों का सफाया करने में सफल हो सके, शत्रु को अपनी सेनाएं बिखेरने पर मजबूर कर सके, खुद अपनी सैन्य-शक्ति को फौलादी और मजबूत बना सके, उत्तर-पूर्व, जेहोल, पूर्वी हूपे, दक्षिणी शानशी और उत्तरी हनान में रणनीतिक प्रत्याक्रमण

पर लड़ना, यानी रणनीतिक रक्षा की मंजिल पार करके रणनीतिक आक्रमण की मंजिल में पहुंच जाना। कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा निर्धारित की गई रणनीतिक योजना के अनुसार जन-मुक्ति सेना जुलाई-सितम्बर १९४७ के दौरान देशव्यापी पैमाने पर आक्रमण में पहल करने के लिए मैदान में उतर पड़ी। शानशी-हूपे-शानतुङ-हनान रणांगन-सेना ने ३० जून को दक्षिण-पश्चिमी शानतुङ में जबरदस्ती पीली नदी को पार किया। अगस्त के शुरू में ही वह लुङहाए रेलवे को पार करके ताप्ये पहाड़ों में जा पहुंची। शानशी-हूपे-शानतुङ-हनान रणांगन-सेना की थाएय्वे फौजी फारमेशन ने अगस्त के अन्त में दक्षिणी शानशी से जबरदस्ती पीली नदी को पार किया और वह पश्चिमी हनान में जा पहुंची। पूर्वी चीन रणांगन-सेना शत्रु के एक केन्द्रित आक्रमण को तहस-नहस करके सितम्बर के शुरू में दक्षिण-पश्चिमी शानतुङ में जा पहुंची। उसी महीने के दौरान पूर्वी चीन रणांगन-सेना की शानतुङ फौजी फारमेशन ने पूर्वी शानतुङ में शत्रु के खिलाफ आक्रमणात्मक फौजी कार्यवाही की। उत्तर-पश्चिमी रणांगन-सेना ने अगस्त के अन्त में प्रत्याक्रमण शुरू कर दिया। शानशी-छाहाड़-हूपे रणांगन-सेना ने सितम्बर के शुरू में पेफिङ-हानखओ रेलवे के उत्तरी भाग के आसपास के इलाके में शत्रु के खिलाफ आक्रमणात्मक फौजी कार्यवाही की। उत्तर-पूर्वी रणांगन-सेना ने पूरे उत्तर-पूर्व में ग्रीष्मकालीन आक्रमण-अभियान की समाप्ति के फौरन बाद सितम्बर से छाङछुन-चोलिन-सफिङ क्षेत्र में और पेफिङ-ल्याओनिङ रेलवे के चिनशी-ईश्येन क्षेत्र में बड़े पैमाने पर शरदकालीन आक्रमण-अभियान शुरू कर दिया। इन सभी रणभूमियों के आक्रमण-अभियानों से समूची जन-मुक्ति सेना का आम आक्रमण-अभियान बन गया। बड़े पैमाने के इस आक्रमण-अभियान की परिणति मुक्ति युद्ध में एक मोड़ के रूप में हुई, और यह आक्रमण-अभियान युद्ध की स्थिति में आमूल परिवर्तन का सूचक बन गया। देखिए इसी ग्रन्थ में "वर्तमान परिस्थिति और हमारे कार्य" शीर्षक रचना।

कर सके, खोए हुए बड़े-बड़े इलाके शत्रु से दोबारा छीन सके और विशाल नए क्षेत्रों को मुक्त करा सके।[१]

३. लड़ाई के दूसरे वर्ष हमारी सेना का बुनियादी कार्य है देशव्यापी प्रत्याक्रमण शुरू करना, यानी अपनी मुख्य सैन्य-शक्ति का उपयोग करके लड़ते हुए बाहरी सैन्य-पंक्तियों तक पहुंचना, युद्ध को फैलाकर क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों तक ले जाना, बाहरी सैन्य-पंक्तियों की लड़ाई में बड़ी तादाद में शत्रु का सफाया करना और क्वोमिन्ताङ की उस प्रतिक्रान्तिकारी रणनीति को पूरी तरह धूल में मिला देना जिसका मकसद युद्ध को लगातार मुक्त क्षेत्रों में ले आना, मुक्त क्षेत्रों की मानव-शक्ति और उनके भौतिक साधनों को और ज्यादा नष्ट करना व खत्म कर डालना और हमारे लिए अधिक देर तक डटे रहने को असम्भव बना देना है। दूसरे साल की लड़ाई में हमारी सेना का आंशिक कार्य यह है कि हम अपनी मुख्य सैन्य-शक्ति के एक भाग

का और अपनी प्रादेशिक फौजी टुकड़ियों की भारी तादाद का उपयोग करके भीतरी सैन्य-पंक्ति वाली फौजी कार्यवाही को जारी रखें, वहां शत्रु का सफाया कर डालें और खोए हुए क्षेत्रों को फिर से हासिल कर लें।

४. इसमें शक नहीं कि बाहरी सैन्य-पंक्ति वाली फौजी कार्यवाही करने और युद्ध को फैलाकर क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों तक ले जाने की नीति को लागू करने में हमारी सेना को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। कारण, क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में नए आधार-क्षेत्रों का निर्माण करने में समय लगता है, और सुदृढ़ आधार-क्षेत्रों का निर्माण हम सिर्फ तभी कर सकते हैं जब हम कभी आगे तो कभी पीछे होने वाली अनेक चलायमान फौजी कार्यवाहियों में शत्रु-सैनिकों का भारी तादाद में सफाया कर चुके हों, जन-समुदाय को गोलबन्द कर चुके हों, जमीन बांट चुके हों, अपनी राजनीतिक सत्ता स्थापित कर चुके हों और जनता की सशस्त्र सैन्य-शक्तियां खड़ी कर चुके हों। इतना कुछ करने के पहले कठिनाइयां अच्छी खासी तादाद में हमारे सामने आएंगी। लेकिन उन पर हम विजय प्राप्त कर सकते हैं और हमें उन पर विजय प्राप्त करनी ही होगी। कारण, शत्रु और भी अधिक बिखरने पर मजबूर हो जाएगा और चलायमान फौजी कार्यवाहियों के लिए हमारी सेना को विशाल प्रदेश उपलब्ध हो जाएंगे और इसलिए हम चलायमान लड़ाई करने में समर्थ हो जाएंगे ; उन प्रदेशों का विशाल जन-समुदाय क्वोमिन्ताङ से नफरत करता है और हमारा समर्थन करता है ; तथा यद्यपि शत्रु-सेना के एक भाग में अपेक्षाकृत ऊंचे दर्जे की युद्ध-क्षमता अब भी मौजूद है, तथापि समग्र रूप से देखा जाए तो शत्रु के मनोबल और युद्ध-क्षमता

का स्तर सालभर पहले की अपेक्षा काफी नीचे गिर चुका है।

५. क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में की जाने वाली फौजी कार्यवाहियों में जीत हासिल करने के दो गुर हैं : एक तो लड़ने के अवसर झपट लेने में होशियार होना, बहादुर और अडिग होना और जितनी भी लड़ाइयां जीती जा सकें उतनी जीत लेना ; और दूसरा, जन-समुदाय को अपने पक्ष में कर लेने की नीति को दृढ़ता से लागू करना और व्यापक जन-समुदाय को लाभ उठाने में समर्थ बनाना ताकि वह हमारी सेना का साथ दे सके। अगर इन दोनों गुरों पर अमल किया गया, तो जीत निश्चित रूप से हमारी होगी।

६. इस वर्ष अगस्त के अन्त तक शत्रु की सैन्य-शक्ति का, जिसमें उसकी वे सेनाएं भी शामिल हैं जिनका सफाया कर डाला गया या जिन पर कमरतोड़ चोटें की गईं, वितरण इस प्रकार था : दक्षिणी मोर्चे पर १५७ ब्रिगेडें, उत्तरी मोर्चे पर ७० ब्रिगेडें और क्वोमिन्ताङ के पृष्ठभाग के क्षेत्रों में २१ ब्रिगेडें। पूरे देश में शत्रु की ब्रिगेडों की संख्या कुल मिलाकर अब भी २४८ ही थी और सैनिकों की वास्तविक तादाद लगभग १५,००,००० थी। विशेष सैन्य-दलों, कठपुतली फौजों, संचार-पुलिस कोरों और शान्ति-रक्षा कोरों की सैनिक संख्या लगभग १२,००,००० थी। शत्रु के पृष्ठभाग में स्थित सामरिक संस्थानों के गैरलड़ाकू सैनिक लगभग १०,००,००० थे। इस तरह शत्रु की कुल सैन्य-शक्ति की संख्या लगभग ३७,००,००० थी। दक्षिणी मोर्चे की सेनाओं में ११७ ब्रिगेडें कू चू-थुङ के ग्रुप की, ७ ब्रिगेडें छङ छ्येन के ग्रुप की और दूसरों की, तथा ३३ ब्रिगेडें हू चुङ-नान के ग्रुप की हैं। कू चू-थुङ के ग्रुप की ११७ ब्रिगेडों में से ६३ का सफाया किया जा चुका है या उनकी कमर तोड़ी जा चुकी

है। इनमें से कुछ ब्रिगेडों की क्षतिपूर्ति हुई ही नहीं है ; कुछ की हो तो रही है पर उनमें थोड़े से ही लोग हैं और उनकी युद्ध-क्षमता का स्तर बहुत नीचा है ; कुछ ब्रिगेडें और हैं जिनकी मानव-शक्ति और शस्त्रों की क्षतिपूर्ति काफी अच्छी तरह हो चुकी है और जिनकी युद्ध-क्षमता भी कुछ हद तक पुनर्स्थापित की जा चुकी है, पर इतना होने पर भी वे पहले की अपेक्षा बहुत ज्यादा कमजोर हैं। कुल ५४ ब्रिगेडें ही ऐसी हैं जिनका न तो कभी सफाया हुआ है और न जिन्हें कमरतोड़ चोटें ही लगी हैं। कू चू-थुङ की समस्त सैन्य-शक्ति में से ८२ से ८५ ब्रिगेडें गैरिजन ड्यूटी पर तैनात हैं और केवल स्थानीय दांव-पेचों में लगाई जा सकती हैं, केवल ३२ से ३५ ब्रिगेडों को रणनीतिक दांवपेचों में लगाया जा सकता है। छङ छ्येन के ग्रुप की और दूसरों की ७ ब्रिगेडों को भी आम तौर पर गैरिजन ड्यूटी पर ही लगाया जा सकता है और इनमें से एक की कमर तो तोड़ी भी जा चुकी है। हू चुङ-नान के ग्रुप की ३३ ब्रिगेडों (लानचओ के पूर्व, निङश्या व च्वीलिन के दक्षिण और लिनफ़न व लोयाङ के पश्चिम वाली ब्रिगेडों समेत) में से १२ का सफाया किया जा चुका है या उनकी कमर तोड़ी जा चुकी है, केवल ७ का ही रणनीतिक दांवपेचों में उपयोग हो सकता है और शेष को गैरिजन ड्यूटी पर लगा दिया गया है। उत्तरी मोर्चे पर शत्रु की कुल मिलाकर ७० ब्रिगेडें हैं। इनमें उत्तर-पूर्वी ग्रुप की २६ ब्रिगेडें हैं, जिनमें से १६ का सफाया किया जा चुका है या उनकी कमर तोड़ी जा चुकी है ; सुन ल्येन-चुङ के ग्रुप की १९ ब्रिगेडें हैं, जिनमें से ८ का सफाया किया जा चुका है या उनकी कमर तोड़ी जा चुकी है ; फू च्वो-ई की १० ब्रिगेडें हैं, जिनमें से २ की कमर तोड़ी जा चुकी है ; और येन शी-शान की १५ ब्रिगेडें हैं, जिनमें से ९ का

सफाया किया जा चुका है या उनकी कमर तोड़ी जा चुकी है। ये शत्रु-सेनाएं अब मुख्य रूप से रक्षात्मक कार्यवाही में लगी हुई हैं और उनका केवल एक छोटा सा हिस्सा ही चलायमान कार्यवाही में लगाया जा सकता है। क्वोमिन्ताङ के पृष्ठभाग में केवल २१ ब्रिगेडें गैरिजन ड्यूटी पर तैनात हैं। इनमें से ८ ब्रिगेडें सिनच्याङ और पश्चिमी कानसू में, ७ ब्रिगेडें सछ्वान और शीखाङ में, २ ब्रिगेडें युन्नान में, २ ब्रिगेडें (अर्थात ६९वीं डिवीजन, जिसका सफाया किया जा चुका है) क्वाङतुङ में और २ ब्रिगेडें थाइवान में हैं। हुनान, क्वाङशी, क्वेइचओ, फ़ूच्येन, चच्याङ और च्याङशी इन ६ प्रान्तों में कोई नियमित सेना नहीं है। क्वोमिन्ताङ इस वर्ष अमरीकी मदद के भरोसे मोर्चे की क्षतिपूर्ति करने के लिए १०,००,००० रंगरूट भरती करने तथा कई नई ब्रिगेडों को और नष्ट रेजीमेन्टों की स्थान-पूर्ति करने वाली रेजीमेन्टों को प्रशिक्षित करने की योजना बना रही है। जो भी हो, अगर हमारी सेना औसतन हर महीने शत्रु की ८ ब्रिगेडों का सफाया कर सकी, जैसा कि उसने पहले वर्ष की लड़ाई में किया था, और दूसरे वर्ष भी ९६ से १०० ब्रिगेडों का सफाया कर सकी (जुलाई और अगस्त में १६.५ ब्रिगेडों का सफाया किया जा चुका है), तो शत्रु-सेना और भी ज्यादा तथा बुरी तरह कमजोर हो जाएगी, रणनीतिक दांवपेचों में लगाई जाने वाली शत्रु की सैन्य-शक्ति की संख्या घटकर न्यूनतम रह जाएगी, देश के सभी भागों में शत्रु को केवल रक्षात्मक कार्यवाहियां करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा और उसे हर जगह हमारे आक्रमण का सामना करना पड़ेगा। १०,००,००० रंगरूट भरती करने तथा नई ब्रिगेडों और स्थान-पूर्ति करने वाली रेजीमेन्टों को प्रशिक्षण देने की क्वोमिन्ताङ की योजना

है तो सही, पर इससे उसे कोई फायदा नहीं होगा। चूंकि रंगरूट भरती करने का उसका एकमात्र तरीका है जबरन भरती करना और भाड़े पर नियुक्ति करना, इसलिए १०,००,००० की संख्या पूरी कर लेना उसके लिए निश्चित रूप से कठिन होगा तथा बहुत से रंगरूट भाग खड़े होंगे। और इधर हमारी सेना भी बाहरी सैन्य-पंक्ति वाली फौजी कार्यवाही करने की अपनी नीति को लागू करके शत्रु की मानव-शक्ति और उसके भौतिक साधनों को कम करने में समर्थ हो जाएगी।

७. हमारी सेना की फौजी कार्यवाहियों का संचालन करने वाले उसूल अब भी वही हैं जो पहले निर्धारित किए गए थे :

दुश्मन की बिखरी हुई, अलग-थलग फौजों पर पहले हमला करो (यह बात एक ही बार में अनेक ब्रिगेडों के खिलाफ चलाई गई बड़े पैमाने की विनाशकारी मुहिमों, जैसे इस वर्ष फरवरी में चलाई गई लाएऊ मुहिम [२] और जुलाई में चलाई गई दक्षिण-पश्चिमी शानतुङ मुहिम [३], पर भी लागू होती है) ; दुश्मन की केन्द्रित व शक्तिशाली फौजों पर बाद में हमला करो।

मझोले व छोटे शहरों और व्यापक देहाती क्षेत्रों पर पहले कब्जा करो ; बड़े शहरों पर बाद में कब्जा करो।

दुश्मन की प्रभावकारी शक्ति को खत्म करने को अपना मुख्य उद्देश्य बनाओ ; किसी स्थान को अपने कब्जे में रखने अथवा उस पर कब्जा जमाने को अपना मुख्य उद्देश्य न बनाओ ; किसी स्थान को अपने कब्जे में रखना अथवा उस पर कब्जा जमाना दुश्मन की प्रभावकारी शक्ति को खत्म करने का नतीजा है,

तथा किसी स्थान को हमेशा के लिए कब्जे में रखना अथवा उस पर हमेशा के लिए कब्जा जमाना केवल तभी सम्भव हो सकता है जबकि उस पर बार-बार कभी हमारा कब्जा हो चुका हो और कभी दुश्मन का।

हर लड़ाई में अपनी नितान्त बरतर सैन्य-शक्ति को केन्द्रित करो, दुश्मन की फौजों को पूरी तरह घेर लो, उनका पूरी तरह सफाया करने की भरसक कोशिश करो तथा उनमें से एक को भी अपने व्यूह से न निकलने दो। विशेष परिस्थितियों में, दुश्मन पर घातक प्रहार करने का तरीका अपनाओ, यानी अपनी सम्पूर्ण शक्ति केन्द्रित करके दुश्मन पर सामने से हमला कर दो तथा उसके एक पार्श्व से अथवा दोनों पार्श्वों से भी हमला कर दो, इस उद्देश्य से कि उसके एक भाग का सफाया कर दिया जाए और दूसरे भाग को तितर-बितर कर दिया जाए, ताकि हमारी सेना दुश्मन की अन्य फौजों को नेस्तनाबूद करने के लिए तेजी के साथ अपने सैनिक स्थानान्तरित कर सके।

एक तरफ तो बिना तैयारी के कोई लड़ाई न लड़ो, ऐसी कोई लड़ाई न लड़ो जिसमें विजय प्राप्त होने का यकीन न हो ; हर लड़ाई के लिए पूरी तरह तैयार रहने की हरचन्द कोशिश करो, दुश्मन की और हमारी विशेष परिस्थितियों को नजर में रखते हुए विजय की गारन्टी करने की हरचन्द कोशिश करो। और दूसरी तरफ, हमारी बेहतरीन युद्ध-शैली का पूर्ण विकास करो – युद्ध में साहस दिखाना, कुरबानी से न डरना, थकान से न डरना और लगातार लड़ते जाना (अर्थात अल्प अवधि में ही एक के बाद एक लड़ाई लड़ते जाना)।

दुश्मन को चलायमान लड़ाई में घसीटने की भरसक कोशिश करो। मगर साथ ही मोर्चेबन्दी पर हमला करने की कार्यनीति सीखने पर और तोपखाने व इंजीनियरी कोर के निर्माण में तेजी लाने पर भी पूरा जोर लगाओ, ताकि दुश्मन के मोर्चेबन्दी वाले स्थलों और शहरों पर बड़े पैमाने पर कब्जा किया जा सके।

दुश्मन के उन तमाम मोर्चेबन्दी वाले स्थलों व शहरों पर दृढ़ता से कब्जा जमा लो जिनकी प्रतिरक्षा-व्यवस्था कमजोर है। उचित समय आने पर, दुश्मन के उन तमाम मोर्चेबन्दी वाले स्थलों व शहरों पर भी कब्जा जमा लो जिनकी प्रतिरक्षा-व्यवस्था मझोले दर्जे की है, बशर्ते कि परिस्थिति अनुकूल हो। जहां तक दुश्मन के उन मोर्चेबन्दी वाले स्थलों व शहरों का ताल्लुक है जिनकी प्रतिरक्षा-व्यवस्था सुदृढ़ है, उन्हें फिलहाल छोड़ दो।

दुश्मन से छीने हुए सभी हथियारों और उसके अधिकांश बन्दी सैनिकों (८०-९० प्रतिशत सिपाहियों और थोड़े से जूनियर अफसरों) से अपनी शक्ति की क्षतिपूर्ति कर लो। क्षतिपूर्ति मुख्यतया शत्रु-सेनाओं और क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों से और केवल अंशतः पुराने मुक्त क्षेत्रों से करने की कोशिश करो ; यह उसूल दक्षिणी मोर्चे की फौजों पर खास तौर से लागू होता है।

नए और पुराने सभी मुक्त क्षेत्रों में हमें भूमि-सुधार दृढ़ता के साथ लागू करना होगा (दीर्घकालीन युद्ध को सम्बल प्रदान करने और देशव्यापी विजय प्राप्त करने के लिए भूमि-सुधार ही सबसे बुनियादी आवश्यकता है), उत्पादन का विकास करना होगा, किफायत बरतनी होगी और युद्ध-उद्योग के निर्माण पर जोर देना होगा – सभी कुछ

मोर्चे पर विजय प्राप्त करने के लिए करना होगा। यह सब करने पर ही हम दीर्घकालीन युद्ध को सम्बल प्रदान कर सकते हैं और देशव्यापी विजय प्राप्त कर सकते हैं। और अगर हमने यह सब किया, तो दीर्घकालीन युद्ध को सम्बल प्रदान करने और देशव्यापी विजय प्राप्त करने में हम निश्चय ही समर्थ होंगे।

८. ऊपर कही गई बातें सालभर की लड़ाई का निचोड़ हैं और भावी लड़ाई के उसूलों को निर्धारित करती हैं। सभी इलाकों के नेतृत्वकारी साथियों से अनुरोध है कि वे रेजीमेन्ट और रेजीमेन्ट से ऊपर के पदों वाले सभी कार्यकर्ताओं तक, प्रिफेक्चर पार्टी-कमेटी और उससे ऊपर के स्तरों के कार्यकर्ताओं तक और प्रिफेक्चर-कमिश्नरों के कार्यालय और उससे ऊपर के कार्यालयों के कार्यकर्ताओं तक ये बातें पहुंचा दें, ताकि हर कोई अपना-अपना कार्य समझ ले तथा उसे दृढ़ता से और अविचल रूप से सम्पन्न करे।

नोट

[1] उत्तर-पूर्व, जेहोल और पूर्वी हूपे में किया गया रणनीतिक प्रत्याक्रमण उत्तर-पूर्वी जन-मुक्ति सेना द्वारा १९४७ में किया गया ग्रीष्मकालीन आक्रमण था। १३ मई को जन-मुक्ति सेना ने उक्त मोर्चों पर एक साथ आक्रमणात्मक कार्यवाही शुरू कर दी तथा १ जुलाई तक वह ८०,००० से ज्यादा शत्रु-सैनिकों का सफाया कर चुकी थी और ४० से ज्यादा काउन्टी-केन्द्रों पर फिर से कब्जा कर चुकी थी। इस प्रकार उत्तर-पूर्वी चीन में मुक्त क्षेत्रों को एक दूसरे से अलग कर देने की दुश्मन की साजिश को पूरी तरह तहस-नहस कर दिया गया। दुश्मन की फौजों ने, जिन्हें चीनी छाङछुन रेलवे और पेफिङ-ल्याओनिङ रेलवे के आसपास

दो तंग गलियारों में धकेल दिया गया था, मजबूर होकर "महत्वपूर्ण स्थानों की रक्षा" की। इसके परिणामस्वरूप उत्तर-पूर्वी चीन की समूची परिस्थिति ही बदल गई। दक्षिणी शानशी और उत्तरी हनान के रणनीतिक प्रत्याक्रमण में शानशी-हपे-शानतुङ-हनान जन-मुक्ति सेना द्वारा उत्तरी हनान में तथा दक्षिणी शानशी स्थित ताथुङ-फूचओ रेलवे के आसपास के इलाके में मार्च और मई १९४७ के बीच की गई आक्रमणात्मक कार्यवाहियां शामिल हैं। उत्तरी हनान स्थित हमारी सेना ने २३ मार्च को आक्रमण करना शुरू किया। येनचिन, याङऊ, फूयाङ और फ़ङछ्यू पर एक के बाद एक कब्जा कर लेने के बाद, हमारी सेना इन सफलताओं का विस्तार करने के लिए उत्तर की तरफ बढ़ गई। २८ मई तक उसने छ्वीश्येन, श्युनश्येन, ह्वाश्येन और थाङइन पर कब्जा कर लिया तथा ४५,००० से ज्यादा शत्रु-सैनिकों का सफाया कर डाला। दक्षिणी शानशी स्थित हमारी फौजों ने अपनी आक्रमणात्मक कार्यवाहियां ४ अप्रैल को शुरू कीं। ४ मई तक वे बाईस काउन्टी-केन्द्रों पर, जिनमें छ्वीवो, शिनच्याङ और युङचि शामिल थे, तथा पीली नदी के दो महत्वपूर्ण फेरी-घाटों – ख्वीमनख्वाओ और फ़ङलिङतू – पर कब्जा कर चुकी थीं और १८,००० से ज्यादा शत्रु-सैनिकों का सफाया कर चुकी थीं।

२ लाएऊ मुहिम पूर्वी चीन जन-मुक्ति सेना द्वारा शानतुङ प्रान्त में चीनान के दक्षिण-पूर्व में स्थित लाएऊ क्षेत्र में की गई चलायमान लड़ाई की एक मुहिम थी। जनवरी १९४७ के अन्त में क्वोमिन्ताङ फौजों ने उत्तर और दक्षिण दोनों दिशाओं से शानतुङ के मुक्त क्षेत्र पर धावा बोल दिया। दक्षिण की ओर से क्वोमिन्ताङ की आठ पुनर्गठित डिवीजनों ने ईहो और शूहो नदियों के साथ-साथ तीन रास्तों से लिनई पर चढ़ाई करने के लिए उत्तर की तरफ कूच कर दिया तथा उनके साथ तालमेल कायम करके उत्तर की ओर से ली श्येन-चओ के ग्रुप की तीन क्वोमिन्ताङ फौजी कोरों ने मिङश्वेइ, चिछ्वान और पोशान से दक्षिण की तरफ लाएऊ और शिनथाए की ओर कूच कर दिया, और पूर्वी चीन जन-मुक्ति सेना की मुख्य शक्ति को ई-मङ पर्वतीय क्षेत्र में एक निर्णयात्मक लड़ाई में उलझाने की कोशिश की। हमारी सेना ने अपनी सैन्य-शक्ति के एक हिस्से को दक्षिण की तरफ से आने वाले शत्रु को रोकने के लिए तैनात कर दिया तथा अपनी मुख्य सैन्य-

शक्ति को ली श्येन-चओ के ग्रुप को तहस-नहस करने के लिए उत्तर की तरफ लाएऊ की ओर कूच करा दिया। दुश्मन की तमाम फौजों का, जिनके सैनिकों की तादाद ६०,००० से ज्यादा थी, २० फरवरी से २३ फरवरी के तीसरे पहर तक हुई लड़ाई में सफाया कर दिया गया। क्वोमिन्ताङ के श्वीचओ शान्ति-स्थापना हेडक्वार्टर के दूसरे शान्ति-स्थापना क्षेत्र के डिप्टी-कमाण्डर ली श्येन-चओ को बन्दी बना लिया गया और तेरह नगरों पर फिर से हमारा कब्जा हो गया।

३ यह दक्षिण-पश्चिमी शानतुङ मुहिम शानशी-हपे-शानतुङ-हनान जन-मुक्ति सेना द्वारा जुलाई १९४७ में शानतुङ प्रान्त के दक्षिण-पश्चिम में स्थित होत्से, ख्वीनछङ, च्वीये, तिङथाओ, चिनश्याङ और छाओश्येन के इलाके में चलाई गई थी। इस मुहिम में क्वोमिन्ताङ के ४ डिवीजन हेडक्वार्टरों और ९.५ ब्रिगेडों का, जिनके सैनिकों की तादाद ५६,००० से ज्यादा थी, सफाया कर दिया गया।

चीनी जन-मुक्ति सेना का घोषणापत्र*

अक्तूबर १९४७

चीनी जन-मुक्ति सेना ने च्याङ काई-शेक के आक्रमण को चकनाचूर कर देने के बाद अब बड़े पैमाने पर प्रत्याक्रमण आरम्भ कर दिया है। दक्षिणी मोर्चे पर हमारी सेनाएं याङत्सी नदी की घाटी की ओर अग्रसर हो रही हैं, उत्तरी मोर्चे पर हमारी सेनाएं चीनी छाङछुन रेलवे और पेफिङ-ल्याओनिङ रेलवे की ओर बढ़ रही हैं। जहां कहीं भी हमारी सेनाएं जाती हैं, दुश्मन में पहले ही भगदड़ मच जाती है और जनता भारी हर्षनाद कर उठती है। हमारी और दुश्मन की सम्पूर्ण परिस्थिति सालभर पहले के मुकाबले बुनियादी तौर पर बदल चुकी है।

इस युद्ध में हमारी सेना का उद्देश्य है, जैसा कि हम राष्ट्र के सामने और दुनिया के सामने बार-बार ऐलान कर चुके हैं, चीनी जनता व चीनी राष्ट्र को मुक्त कराना। और आज हमारा उद्देश्य है सारे देश की जनता की फौरी मांग को पूरा करना, यानी गृहयुद्ध के प्रमुख अपराधी च्याङ काई-शेक का तख्ता उलट देना तथा एक

---

*यह राजनीतिक घोषणापत्र कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी जन-मुक्ति सेना के जनरल हेडक्वार्टर के लिए तैयार किया था। इसमें चीन की तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति का विश्लेषण किया गया, "च्याङ काई-शेक का तख्ता उलट

जनवादी मिलीजुली सरकार कायम करना, ताकि जनता को और राष्ट्र को मुक्त कराने का आम लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

चीनी जनता ने अपनी मुक्ति और राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए जापानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध आठ वर्ष के लम्बे अरसे तक वीरता-पूर्वक युद्ध चलाया। जापान के आत्मसमर्पण के बाद जनता में शान्ति की तीव्र इच्छा थी, लेकिन च्याङ काई-शेक ने जनता के सभी शान्ति प्रयत्नों को धूल में मिला दिया और एक अभूतपूर्व गृहयुद्ध की विपत्ति को उसके मत्थे मढ़ दिया। इस प्रकार देशभर में सभी तबकों की जनता के सामने सिवाय इस बात के और कोई चारा न रह गया कि वह च्याङ काई-शेक का तख्ता उलट देने के लिए एकताबद्ध हो जाए।

च्याङ काई-शेक की गृहयुद्ध की वर्तमान नीति कोई आकस्मिक बात नहीं बल्कि उस जन-विरोधी नीति का ही अनिवार्य नतीजा है जिसे उसने और उसके प्रतिक्रियावादी गुट ने बराबर कार्यान्वित किया है। बहुत पहले, यानी १९२७ में ही च्याङ काई-शेक ने बड़ी कृतघ्नता से क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के क्रान्तिकारी संश्रय के प्रति विश्वासघात किया तथा सुन यात-सेन द्वारा प्रस्तुत क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्तों व तीन महान नीतियों के प्रति विश्वासघात किया ; तब उसने तानाशाही शासन की स्थापना की, साम्राज्यवाद के सामने आत्मसमर्पण कर दिया तथा दस वर्ष तक गृहयुद्ध चलाया, जिसके फलस्वरूप जापानी डाकुओं ने चीन पर आक्रमण कर दिया।

दो और सारे चीन को मुक्त कराओ!" का नारा पेश किया गया तथा चीनी जन-मुक्ति सेना की आठ बुनियादी नीतियों का ऐलान किया गया, जो चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की बुनियादी नीतियां भी थीं। यह घोषणापत्र १० अक्तूबर

१९३६ की शीआन घटना[१] में, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने बुराई का बदला भलाई के रूप में दिया और जनरल चाङ श्वे-ल्याङ व याङ हू-छङ के साथ मिलकर च्याङ काई-शेक को रिहा कर दिया, इस आशा से कि च्याङ काई-शेक अपने किए पर पश्चात्ताप करेगा, नए सिरे से जिन्दगी शुरू करेगा और जापानी आक्रमणकारियों के खिलाफ लड़ाई में शामिल हो जाएगा। लेकिन च्याङ काई-शेक फिर एक बार बड़ा कृतघ्न साबित हुआ ; वह जापानी डाकुओं का मुकाबला करने में तो निष्क्रिय रहा और जनता का दमन करने में सक्रिय रहा, तथा उसने कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति घोर शत्रुता बरती। १९४५ में जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया और चीनी जनता ने फिर एक बार च्याङ काई-शेक को माफ कर दिया तथा यह मांग की कि वह उस गृहयुद्ध को बन्द कर दे जिसे उसने शुरू किया है, जनवादी राजनीति को अमल में लाए और शान्तिपूर्ण राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए सभी पार्टियों व ग्रुपों के साथ एकता कायम करे। किन्तु युद्ध-विराम समझौते पर हस्ताक्षर करने, राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्ताव स्वीकार करने और चार वायदों[२] का ऐलान करने के फौरन बाद ही परले सिरे का बेईमान च्याङ काई-शेक अपने वचन से बिलकुल मुकर गया। हालांकि जनता ने मुश्तरका भलाई के हित में बार-बार सब्र व सुलह का रवैया अपनाया, लेकिन फिर भी च्याङ काई-शेक ने अमरीकी साम्राज्यवाद की मदद से देश और राष्ट्र के भाग्य की परवाह न करके जनता पर

१९४७ को जारी किया गया, इसलिए यह "१० अक्तूबर घोषणापत्र" के नाम से प्रसिद्ध है। इसे उत्तरी शेनशी की च्याश्येन काउन्टी के शनछ्वेनपाओ नामक स्थान में तैयार किया गया था।

अभूतपूर्व रूप से चौतरफा आक्रमण करने का इरादा कर रखा था। जनवरी १९४६ से, जब युद्ध-विराम समझौते की घोषणा की गई, अब तक च्याङ काई-शेक ने अपनी नियमित सेना की २२० से ज्यादा ब्रिगेडों और करीब दस लाख सैनिकों वाली विविध नामधारी फौजी टुकड़ियों को जत्थेबन्द किया है तथा बड़े पैमाने पर उन मुक्त क्षेत्रों के विरुद्ध आक्रमण आरम्भ कर दिया है जिनको चीनी जनता ने रक्तपात-पूर्ण युद्ध के बाद जापानी साम्राज्यवाद से छीना था ; उसने क्रमशः शनयाङ, फ़ूश्युन, पनशी, सफिङ, छाङछुन, युङची, छङते, चीनिङ, चाङच्याखओ, ह्वाएइन, होत्से, लिनई, येनान और येनथाए आदि शहरों तथा विशाल देहाती क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया है। च्याङ काई-शेक की फौजें जहां भी जाती हैं वहां हत्या व आगजनी, बलात्कार और लूट-पाट करती हैं, "तीन तरह का सफाया करने" की नीति पर अमल करती हैं तथा जापानी डाकुओं जैसी ही हरकतें करती हैं। पिछले साल नवम्बर में च्याङ काई-शेक ने एक बोगस राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाई और एक बोगस संविधान की घोषणा की। इस साल मार्च में उसने कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों को क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों से निकाल बाहर कर दिया। इसी साल जुलाई में उसने जनता के विरुद्ध आम लामबन्दी का आदेश जारी किया।[1] गृहयुद्ध के खिलाफ, भुखमरी के खिलाफ और अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रमण के खिलाफ देश के विभिन्न भागों की जनता के न्यायपूर्ण आन्दोलन के प्रति तथा मजदूरों, किसानों, विद्यार्थियों, नगरवासियों, सरकारी कर्मचारियों व अध्यापकों द्वारा अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए छेड़े गए संघर्ष के प्रति च्याङ काई-शेक की नीति है दमन करना, गिरफ्तार करना और कत्ल कर देना। देश की विभिन्न

अल्पसंख्यक जातियों के प्रति उसकी नीति है हान-शोविनिज्म लागू करना और अत्याचार व दमन करने में कोई कसर बाकी न रखना। च्याङ काई-शेक द्वारा शासित सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार का बोलबाला है, गुप्तचर उन्मत्त होकर मनमानी करते हैं, अनगिनत कमरतोड़ टैक्स वसूल किए जाते हैं, चीजों के भाव बेहद चढ़ गए हैं, अर्थव्यवस्था दिवालिया हो चुकी है, सभी काम-धन्धे चौपट हो गए हैं, सेना में जबरन भर्ती की जाती है और बलपूर्वक अनाज-वसूली की जाती है, तथा चारों तरफ असन्तोष फैला हुआ है ; इन सभी बातों ने सारे देश में जनता की भारी बहुसंख्या को विपत्ति के अथाह समुद्र में डुबो दिया है। इस बीच वित्तीय थैलीशाहों, भ्रष्ट अफसरों, स्थानीय निरंकुश तत्वों और बुरे शरीफजादों ने, जिन सबका सरगना च्याङ काई-शेक है, बेहद दौलत बटोर ली है। यह सब दौलत च्याङ काई-शेक तथा उसके जैसे लोगों ने अपनी तानाशाही के सहारे जबरन वसूली और उगाही करके तथा सार्वजनिक हितों की सेवा का ढोंग रचकर अपने निजी हितों में वृद्धि करके इकट्ठी की है। अपनी तानाशाही को बनाए रखने और गृहयुद्ध को जारी रखने के लिए च्याङ काई-शेक बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी हरकतों में यहां तक आगे बढ़ गया है कि उसने हमारे देश की प्रभुसत्ता विदेशी साम्राज्यवाद के हाथ बेच दी है, अमरीकी फौजों से सांठगांठ कर ली है कि वे छिङताओ व अन्य स्थानों में जमी रहें, तथा उसने अमरीका से ऐसे सलाहकार प्राप्त करने का प्रबन्ध किया है जो उसके अपने ही देशवासियों का कत्ल करने के लिए गृहयुद्ध का निर्देशन करने और फौज को ट्रेनिंग देने के काम में भाग लेते हैं। गृहयुद्ध के लिए वायुयानों, टैंकों, बन्दूकों व तोपों और गोला-बारूद को बड़ी

मात्रा में अमरीका से लाया गया है। गृहयुद्ध के लिए बड़ी तादाद में धन अमरीका से उधार लिया गया है। अमरीकी साम्राज्यवाद की इस कृपादृष्टि के बदले, च्याङ काई-शेक ने उसे फौजी अड्डे तथा हवाई उड़ान व जहाजरानी के अधिकार भेंट के रूप में दे दिए हैं और उसके साथ दासतापूर्ण वाणिज्य सन्धि[४] कर ली है – ये देशद्रोहपूर्ण कार्यवाहियां य्वान श-खाए की देशद्रोहपूर्ण कार्यवाहियों से कहीं ज्यादा गई-गुजरी हैं। एक शब्द में, च्याङ काई-शेक का बीस वर्ष का शासन देशद्रोहपूर्ण, तानाशाही तथा जन-विरोधी रहा है। आज सारे देश के लोगों की भारी बहुसंख्या, चाहे वे उत्तर के हों या दक्षिण के, चाहे जवान हों या बूढ़े, सभी उसके संगीन अपराधों को जानते हैं तथा यह आशा करते हैं कि हमारी सेना शीघ्र ही प्रत्याक्रमण आरम्भ कर देगी, च्याङ काई-शेक का तख्ता उलट देगी और सारे चीन को मुक्त करा लेगी।

हमारी सेना चीनी जनता की सेना है और वह सभी मामलों में चीनी जनता की इच्छा को ही अपनी इच्छा मानती है। हमारी सेना की नीतियां चीनी जनता की फौरी मांगों का प्रतिनिधित्व करती हैं और उनमें से मुख्य नीतियां इस प्रकार हैं :

१. मजदूरों, किसानों, सिपाहियों, बुद्धिजीवियों व व्यापारियों, सभी उत्पीड़ित वर्गों, सभी जन-संगठनों, जनवादी पार्टियों, अल्प-संख्यक जातियों, प्रवासी चीनियों तथा अन्य देशभक्तों के साथ एकता कायम करना ; राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा कायम करना ; च्याङ काई-शेक की तानाशाह सरकार का तख्ता उलट देना ; और जनवादी मिलीजुली सरकार की स्थापना करना।

२. गृहयुद्ध के अपराधियों को, जिनका सरगना च्याङ काई-शेक है, गिरफ्तार करना, उनके खिलाफ मुकदमा चलाना और उन्हें सजा देना।

३. च्याङ काई-शेक की तानाशाही को खत्म कर देना, जनता की जनवादी व्यवस्था को लागू करना और जनता की भाषण, प्रेस, सभा और संगठन आदि की आजादियों की गारन्टी करना।

४. च्याङ काई-शेक शासन की सड़ी-गली व्यवस्था को खत्म कर देना, सभी भ्रष्ट अफसरों का सफाया कर देना तथा भ्रष्टाचार-रहित शासन की स्थापना करना।

५. चार बड़े घरानों – च्याङ काई-शेक, टी० वी० सुङ, एच० एच० खुङ और छन ली-फू व उसके भाई – की तथा अन्य मुख्य युद्ध-अपराधियों की सम्पत्ति को जब्त कर लेना, नौकरशाही-पूंजी को जब्त कर लेना, राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के उद्योग-व्यापार का विकास करना, मजदूरों व कर्मचारियों की जीविका में सुधार करना और अकाल-पीड़ितों व दरिद्र व्यक्तियों को राहत देना।

६. सामन्ती शोषण-व्यवस्था को खत्म कर देना और "जमीन जोतने वालों को" की व्यवस्था को लागू करना।

७. चीन की सीमाओं के अन्दर अल्पसंख्यक जातियों के समानता व स्वायत्त शासन के अधिकार को मान्यता देना।

८. च्याङ काई-शेक की तानाशाह सरकार की देशद्रोहपूर्ण विदेश नीति को अस्वीकार करना, तमाम देशद्रोहपूर्ण सन्धियों को रद्द कर देना और गृहयुद्ध के काल में च्याङ काई-शेक द्वारा लिए गए तमाम विदेशी कर्जे का देनदार होने से इनकार कर देना। यह मांग करना कि अमरीका सरकार चीन में तैनात अपनी फौजों को, जो चीन की स्वतंत्रता के लिए एक खतरा हैं, हटा ले और उन सभी देशों का

विरोध करना जो च्याङ काई-शेक को गृहयुद्ध चलाने में मदद देते हैं अथवा जापानी आक्रमणकारी शक्तियों को पुनर्जीवित करने की कोशिश करते हैं। विदेशों के साथ समानता व आपसी लाभ के आधार पर व्यापार व मैत्री सन्धियां करना। हमारे मुश्तरका संघर्ष में संसार के उन सभी राष्ट्रों के साथ एकता कायम करना जो हमारे साथ समानता का बरताव करते हैं।

उपरोक्त नीतियां हमारी सेना की बुनियादी नीतियां हैं। हमारी सेना जहां कहीं भी जाएगी, इन पर फौरन अमल किया जाएगा। ये नीतियां हमारे देश की आम जनता, जिसकी संख्या हमारी आबादी के ६० प्रतिशत से अधिक है, की मांगों से मेल खाती हैं।

हमारी सेना च्याङ काई-शेक के पक्ष के सभी आदमियों का बहिष्कार नहीं करती, बल्कि उनके प्रति अलग-अलग बरताव करने की नीति अपनाती है। अर्थात मुख्य अपराधियों को अवश्य सजा दी जाएगी, जो लोग दबाव के कारण मजबूरन सहअपराधी बने हैं उन्हें सजा नहीं दी जाएगी और जिन्होंने सराहनीय काम किए हैं उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा। जहां तक प्रमुख अपराधी च्याङ काई-शेक, जिसने गृहयुद्ध छेड़ा है और जिसने अत्यन्त घृणित अपराध किए हैं, तथा उसके उन सभी पक्के सहअपराधियों का ताल्लुक है जिन्होंने जनता को अपने पैरों तले रौंद डाला है और जिन्हें विशाल जन-समुदाय ने युद्ध-अपराधी ठहरा दिया है, उन्हें हमारी सेना पकड़ कर ही रहेगी, चाहे उसे पृथ्वी के किसी भी कोने तक क्यों न जाना पड़े, और जरूर अदालत के कटघरे में खड़ा करेगी और सजा देगी। हमारी सेना च्याङ काई-शेक की सेना के उन सभी अफसरों व सिपाहियों, उसकी सरकार के उन सभी अफसरों तथा उसकी पार्टी

के उन सभी सदस्यों को जिनके हाथ अभी बेगुनाह जनता के खून से नहीं रंगे, यह चेतावनी देती है कि वे इन अपराधियों के कुकर्मों में हरगिज शरीक न हों। जो लोग अभी तक कुकर्म करते रहे हैं, उन्हें फौरन अपने कुकर्म बन्द करने होंगे, अपने किए पर पश्चात्ताप करना होगा और नए सिरे से जिन्दगी शुरू करनी होगी तथा च्याङ काई-शेक से नाता तोड़ लेना होगा ; हम उन्हें सराहनीय कामों के जरिए अपने पाप धोने का अवसर देंगे। हमारी सेना च्याङ काई-शेक की सेना के उन सभी अफसरों व सिपाहियों को, जो हथियार डाल देंगे, कत्ल या अपमानित नहीं करेगी ; यदि वे हमारे साथ रहने की इच्छा जाहिर करेंगे तो हम उन्हें अपनी फौज में ले लेंगे, अथवा यदि वे लौटना चाहेंगे तो हम उन्हें उनके घर भेज देंगे। च्याङ काई-शेक की उन टुकड़ियों को, जो विद्रोह के लिए उठ खड़ी होंगी और हमारी सेना में शामिल हो जाएंगी, तथा उन लोगों को, जो हमारी सेना के लिए खुले या गुप्त रूप में काम करेंगे, पुरस्कृत किया जाएगा।

यथाशीघ्र च्याङ काई-शेक का तख्ता उलट देने और जनवादी मिलीजुली सरकार कायम करने के लिए, हम विविध व्यवसायों के देशवासियों का आवाहन करते हैं कि जहां कहीं भी हमारी सेना जाए, वहां के लोग प्रतिक्रियावादी शक्तियों का सफाया करने और जनवादी व्यवस्था कायम करने में हमारे साथ सक्रियता से सहयोग करें। जहां हमारी सेना नहीं पहुंची है वहां के लोगों को चाहिए कि वे अपने आप हथियार उठाकर जबरन फौजी भरती और अनाज-उगाही का प्रतिरोध करें, भूमि का बंटवारा करें, कर्ज के देनदार होने से इनकार करें तथा दुश्मन की गैरहाजिरी का फायदा उठाकर छापामार लड़ाई का विकास करें।

यथाशीघ्र च्याङ काई-शेक का तख्ता उलट देने और जनवादी मिलीजुली सरकार कायम करने के लिए, हम मुक्त क्षेत्रों की जनता का आवाहन करते हैं कि वह भूमि-सुधार करे, जनवाद की बुनियाद को सुदृढ़ बनाए, उत्पादन का विकास करे, किफायत पर सख्ती से अमल करे, जनता की सैन्य-शक्तियों को सुदृढ़ बनाए, दुश्मन के बचेखुचे अड्डों को मिटा दे और अग्रिम मोर्चे की लड़ाई का समर्थन करे।

हमारी सेना के सभी कामरेड कमाण्डरो और योद्धाओ ! हम लोग अपने देश की क्रान्ति के इतिहास में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व अत्यन्त गौरवमय कार्य अपने कन्धों पर उठाए हुए हैं। हमें बड़ी मेहनत से अपने कार्य को पूरा करना चाहिए। हमारी मेहनत ही वह दिन लाएगी जब हमारी महान मातृभूमि अन्धकार से प्रकाश में प्रवेश करेगी और हमारे प्रिय देशवासी इन्सान की भांति जिन्दगी बसर कर सकेंगे तथा अपनी इच्छानुसार अपनी सरकार चुन सकेंगे। हमारी सेना के तमाम अफसरों व योद्धाओं को चाहिए कि वे अपनी सैन्य-कला को उन्नत करें, अवश्यम्भावी विजय प्राप्त करने के लिए युद्ध में साहसपूर्वक आगे बढ़ते जाएं तथा दृढ़तापूर्वक, सर्वांगीण रूप से, समग्र रूप से और सम्पूर्ण रूप से सभी दुश्मनों का सफाया कर दें। उन्हें चाहिए कि वे अपनी राजनीतिक चेतना का स्तर उन्नत करें, दुश्मन की ताकत का सफाया करने और जन-समुदाय को जागृत करने इन दोनों हुनरों को सीख लें, जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ एकता कायम करें तथा नए मुक्त क्षेत्रों का तेजी से सुदृढ़ क्षेत्रों के रूप में निर्माण करें। उन्हें चाहिए कि वे अपनी अनुशासन की भावना को बढ़ाएं तथा दृढ़ता के साथ आदेशों का पालन करें, हमारी नीतियों का पालन करें, अनुशासन के तीन मुख्य नियमों और ध्यान देने योग्य आठ बातों का पालन करें – सेना और जनता के बीच एकता कायम करें, सेना और सरकार के बीच एकता कायम करें, अफसरों और सिपाहियों के बीच एकता कायम करें तथा समूची सेना को एकताबद्ध करें – तथा अनुशासन भंग करने की इजाजत हरगिज न दें। हमारे तमाम अफसरों व योद्धाओं को यह बात हमेशा के लिए गांठ बांध लेनी चाहिए कि हम एक महान जन-मुक्ति सेना हैं, हम महान चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलने वाली सेना हैं। यदि हम पार्टी के निर्देशों का लगातार पालन करते रहेंगे, तो हम अवश्य विजय प्राप्त करेंगे।

च्याङ काई-शेक का तख्ता उलट दो !

नया चीन जिन्दाबाद !

नोट

[1] देखिए : **"च्याङ काई-शेक के वक्तव्य के बारे में वक्तव्य", नोट १ ("माओ** त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ १)।

[2] १९४६ में च्याङ काई-शेक ने जो "चार वायदे" राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के उद्घाटन अधिवेशन में किए थे, वे इस प्रकार हैं : जनता की स्वतंत्रता की गारन्टी करना, राजनीतिक पार्टियों के कानूनी दर्जे की गारन्टी करना, आम चुनाव कराना तथा राजनीतिक बन्दियों को रिहा करना।

[3] ४ जुलाई १९४७ को प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार ने च्याङ काई-शेक का "आम लामबन्दी बिल" स्वीकार किया और इसके फौरन बाद "कम्युनिस्ट डाकुओं के विद्रोह का दमन करने के लिए आम लामबन्दी का आदेश" जारी कर

दिया। दरअसल, च्याङ काई-शेक ने ग्राम लामबन्दी को अपने प्रतिक्रान्तिकारी गृहयुद्ध के लिए बहुत पहले से ही लागू कर रखा था। उस समय तक चीनी जन-मुक्ति सेना देशव्यापी आक्रमण शुरू कर चुकी थी। च्याङ काई-शेक स्वयं इस बात को मानता था कि उसका शासन एक "गम्भीर संकट" से गुजर रहा है। "ग्राम लामबन्दी का आदेश" उसकी मृत्युकालीन अन्तिम छटपटाहट मात्र था।

[४] यह "चीन-अमरीका मैत्री, वाणिज्य और जहाजरानी सन्धि" च्याङ काई-शेक सरकार और अमरीका सरकार के बीच ४ नवम्बर १९४६ को नानकिङ में हुई थी। इसके अनुसार चीन की प्रभुसत्ता के बहुत बड़े भाग को अमरीका के हाथों बेच डाला गया। देखिए इसी ग्रन्थ में "चीनी क्रान्ति के नए ऊंचे उभार का स्वागत" शीर्षक रचना का नोट ५।

अनुशासन के तीन मुख्य नियमों और ध्यान देने योग्य आठ बातों को फिर से जारी करने के बारे में —चीनी जन-मुक्ति सेना के जनरल हेडक्वार्टर की हिदायतें

१० अक्तूबर १९४७

१. हमारी सेना में अनुशासन के तीन मुख्य नियमों और ध्यान देने योग्य आठ बातों पर कई सालों से अमल होना आ रहा है,[१] लेकिन इनकी विषय-वस्तु विभिन्न क्षेत्रों की फौजी यूनिटों में कुछ न कुछ भिन्न रही है। अब इनमें एकरूपता लाई जा रही है और इन्हें फिर से जारी किया जा रहा है। आशा है, इन्हें सेना में गहन शिक्षा देने के लिए तथा सख्ती से लागू करने के लिए प्रतिमान के रूप में माना जाएगा। जहां तक ध्यान देने योग्य अन्य बातों का ताल्लुक है, विभिन्न क्षेत्रों की फौजी हाई कमान अपने यहां की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुरूप कुछ अन्य बातों को निर्धारित करके उन्हें लागू करने का आदेश जारी कर सकती है।

२. अनुशासन के तीन मुख्य नियम इस प्रकार हैं :

(१) अपनी सभी कार्यवाहियों में आदेश का पालन करो।

(२) आम जनता की एक सुई या एक टुकड़ा धागा तक न उठाओ।
(३) दुश्मन से जब्त की हुई हर चीज को सार्वजनिक उपयोग के लिए जमा करा दो।

३. ध्यान देने योग्य आठ बातें इस प्रकार हैं :
(१) नम्रता से बोलो।
(२) जो कुछ खरीदो, उसकी ठीक-ठीक कीमत अदा करो और जो कुछ बेचो, उसकी ठीक-ठीक कीमत लो।
(३) उधार ली हुई हर चीज को वापस लौटा दो।
(४) हर ऐसी चीज की कीमत अदा करो जो तुमसे खराब हो गई हो।
(५) जनता को न मारो और उसे अपशब्द न कहो।
(६) फसल को नुकसान न पहुंचाओ।
(७) महिलाओं से छेड़छाड़ न करो।
(८) बन्दियों के साथ बुरा बरताव न करो।

नोट

[१] अनुशासन के तीन मुख्य नियम और ध्यान देने योग्य आठ बातें अनुशासन के वे नियम थे जिन्हें कामरेड माओ त्सेतुङ ने द्वितीय क्रान्तिकारी गृहयुद्ध के दौरान चीनी मजदूर-किसानों की लाल सेना के लिए निर्धारित किया था। ये नियम लाल सेना के राजनीतिक कार्य के महत्वपूर्ण अंग थे और इन्होंने जनता की सैन्य-शक्ति का निर्माण करने, सेना के भीतर आपसी सम्बन्धों को सही ढंग से निभाने, आम जनता के साथ एकता कायम करने और बन्दियों के प्रति जन-

सेना की सही नीति निर्धारित करने में महान भूमिका अदा की। लाल सेना की स्थापना के बिलकुल शुरू के दिनों से ही कामरेड माओ त्सेतुङ ने सैनिकों से यह मांग की कि वे आम जनता के साथ नम्रता से बोलें, जो कुछ खरीदें उसकी ठीक-ठीक कीमत अदा करें और जो कुछ बेचें उसकी ठीक-ठीक कीमत लें, जनता से बेगार न कराएं तथा उसे न मारें और अपशब्द न कहें। १९२८ के वसन्त में, जब मजदूर-किसानों की लाल सेना चिङकाङशान पहाड़ों में थी, कामरेड माओ त्सेतुङ ने अनुशासन के तीन नियम निर्धारित किए : (१) अपनी कार्यवाहियों में आदेश का पालन करो, (२) मजदूरों-किसानों से कोई भी चीज न लो, और (३) स्थानीय निरंकुश तत्वों से ली गई हर चीज को सार्वजनिक उपयोग के लिए जमा करा दो। उसी साल गरमियों में उन्होंने ध्यान देने योग्य छै बातें पेश कीं : (१) जो किवाड़ तुमने बिछौना बनाने के लिए उतारे हों, उन्हें फिर से सही जगह लगा दो ; (२) जहां से पुआल तुमने बिछाने के लिए ली हो, उसे वहीं रख दो ; (३) नम्रता से बोलो ; (४) जो कुछ खरीदो, उसकी ठीक-ठीक कीमत अदा करो और जो कुछ बेचो, उसकी ठीक-ठीक कीमत लो ; (५) उधार ली हुई हर चीज को वापस लौटा दो ; और (६) हर ऐसी चीज की कीमत अदा करो जो तुमसे खराब हो गई हो। १९२९ के बाद कामरेड माओ त्सेतुङ ने इनमें ये परिवर्तन किए : नियम २ यह बन गया – "आम जनता की एक सुई या एक टुकड़ा धागा तक न उठाओ", और नियम ३ बदलकर पहले तो यह हुआ – "उगाही हुई सारी धनराशि सार्वजनिक उपयोग के लिए जमा करा दो", और बाद में उसे इस तरह सुधारा गया – "दुश्मन से जब्त की हुई हर चीज को सार्वजनिक उपयोग के लिए जमा करा दो"। ध्यान देने योग्य छै बातों में दो बातें उन्होंने और जोड़ दीं : "महिलाओं की नजर से बचकर नहाओ" और "बन्दियों की जेबों की तलाशी न लो"। अनुशासन के तीन मुख्य नियमों और ध्यान देने योग्य आठ बातों का मूल रूप यही था।

वर्तमान परिस्थिति और हमारे कार्य*

२५ दिसम्बर १९४७

१

चीनी जनता का क्रान्तिकारी युद्ध अब एक नए मोड़ पर पहुंच गया है। अर्थात चीनी जन-मुक्ति सेना ने च्याङ काई-शेक के, जो संयुक्त राज्य अमरीका का पालतू कुत्ता है, दसियों लाख प्रतिक्रियावादी सैनिकों के हमले को परास्त कर डाला है तथा खुद आक्रमण शुरू कर दिया है। वर्तमान युद्ध के पहले ही वर्ष में, जुलाई १९४६ से जून १९४७ तक, जन-मुक्ति सेना ने अनेक मोर्चों पर च्याङ काई-शेक के हमले को परास्त कर डाला तथा उसे रक्षात्मक स्थिति में रहने के लिए मजबूर कर दिया। युद्ध के दूसरे वर्ष की पहली तिमाही यानी जुलाई-सितम्बर १९४७ से, जन-मुक्ति सेना ने राष्ट्रव्यापी पैमाने पर आक्रमण शुरू कर दिया तथा च्याङ काई-शेक द्वारा मुक्त क्षेत्रों को बिलकुल नष्ट कर देने के हेतु लड़ाई को निरन्तर मुक्त

*यह रिपोर्ट कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की मीटिंग में, जो उत्तरी शेनशी प्रान्त की मीचि काउन्टी के याङच्याकओ में २५ से २८ दिसम्बर १९४७ तक हुई थी, पेश की गई। इस मीटिंग में केन्द्रीय कमेटी के उन सदस्यों और वैकल्पिक सदस्यों के अलावा, जो इसमें भाग ले सके थे, शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र और शानशी-स्वेय्वान सीमान्त क्षेत्र के

क्षेत्रों तक पहुंचाने के लिए रची गई प्रतिक्रान्तिकारी साजिश को धूल में मिला दिया। इस समय लड़ाई मुख्य रूप से मुक्त क्षेत्रों में नहीं बल्कि क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों में हो रही है; जन-मुक्ति सेना की मुख्य सैन्य-शक्तियों ने अब लड़ाई क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों तक पहुंचा दी है।[१] चीन की इस धरती पर, जन-मुक्ति सेना ने प्रतिक्रान्ति – अमरीकी साम्राज्यवाद व उसके गुर्गे च्याङ काई-शेक डाकू-गुट – के चक्र को पीछे की ओर धकेलकर उसे सर्वनाश के रास्ते पर पहुंचा दिया है तथा क्रान्ति के चक्र को आगे की ओर धकेलकर विजय के रास्ते पर पहुंचा दिया है। यह इतिहास का एक नया मोड़ है। च्याङ काई-शेक के बीस वर्ष के प्रतिक्रान्तिकारी शासन के लिए यह विकास से सर्वनाश की ओर ले जाने वाला मोड़ है। चीन में साम्राज्यवाद के सौ वर्ष से अधिक पुराने शासन के लिए यह विकास से सर्वनाश की ओर ले जाने वाला मोड़ है। यह एक महान घटना है। यह एक महान घटना इसलिए है क्योंकि यह ४७ करोड़ ५० लाख आबादी वाले देश में हो रही है, तथा इसके होने के बाद निश्चित

जिम्मेदार कामरेड भी उपस्थित थे। इस मीटिंग में उक्त रिपोर्ट के अलावा कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा लिखे गए एक अन्य दस्तावेज "वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति के मूल्यांकन के बारे में कुछ बातें" (देखिए इसी ग्रन्थ में पृष्ठ १३१ पर) पर भी विचार-विनिमय किया गया और इन दस्तावेजों को स्वीकार कर लिया गया। कामरेड माओ त्सेतुङ की रिपोर्ट के बारे में किए गए फैसले में कहा गया, "यह रिपोर्ट प्रतिक्रियावादी च्याङ काई-शेक शासक गुट का तख्ता उलटने और एक नव-जनवादी चीन की स्थापना करने के समूचे काल में राजनीतिक, सैनिक और आर्थिक क्षेत्रों के लिए एक कार्यक्रमीय दस्तावेज है। समूची पार्टी और समूची सेना को चाहिए कि वे इस दस्तावेज को और इससे सम्बन्धित उन दस्तावेजों

रूप से समूचे देश में विजय प्राप्त हो जाएगी। यही नहीं, यह एक महान घटना इसलिए भी है क्योंकि यह पूरब में हो रही है, जहां १०० करोड़ से ज्यादा लोग – आधी मानव जाति – साम्राज्यवादी उत्पीड़न से ग्रस्त हैं। चीनी जन-मुक्ति युद्ध के रक्षात्मक स्थिति से आक्रमणात्मक स्थिति में बदलने से इन उत्पीड़ित राष्ट्रों को प्रसन्नता और प्रेरणा प्राप्त हुए बिना नहीं रह सकती। इससे योरप व दोनों अमरीकाओं के विभिन्न देशों में इस समय संघर्ष करने वाली उत्पीड़ित जनता को भी मदद मिलेगी।

२

जिस दिन से च्याङ काई-शेक ने अपना प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध छेड़ा है, उसी दिन से हम यह कहते आए हैं कि हमें न सिर्फ उसे परास्त कर देना चाहिए बल्कि हम उसे परास्त करने की सामर्थ्य भी रखते हैं। हमें उसे परास्त कर देना चाहिए क्योंकि उसके द्वारा छेड़ा

को, जो १० अक्तूबर १९४७ को प्रकाशित हुए हैं [यानी 'चीनी जन-मुक्ति सेना का घोषणापत्र', 'चीनी जन-मुक्ति सेना के नारे', 'अनुशासन के तीन मुख्य नियमों और ध्यान देने योग्य आठ बातों को फिर से जारी करने के बारे में हिदायतें', 'चीन के भूमि-कानून की रूपरेखा' और 'चीन के भूमि-कानून की रूपरेखा के ऐलान के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का प्रस्ताव'], आधार बनाकर अपनी पांतों को गहराई से शिक्षा प्रदान करें और इन दस्तावेजों को सख्ती से अमल में लाएं। विभिन्न स्थानों में नीतियों को कार्यान्वित करते समय यदि रिपोर्ट में प्रस्तुत उसूलों से किसी भी किस्म का भटकाव हो जाए, तो उसे फौरन दुरुस्त कर लिया जाए।" मीटिंग में किए गए अन्य महत्वपूर्ण फैसले इस

गया युद्ध अमरीकी साम्राज्यवाद के निर्देशन में चलाया जाने वाला एक प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध है जिसे चीनी राष्ट्र की स्वाधीनता और चीनी जनता की मुक्ति के खिलाफ छेड़ा गया है। दूसरा विश्वयुद्ध समाप्त होने और जापानी साम्राज्यवाद का तख्ता उलटने के बाद, चीनी जनता के सामने यह कार्य मौजूद था – राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में नव-जनवादी रूपान्तर पूरा करना, राष्ट्रीय एकीकरण और स्वाधीनता प्राप्त करना तथा चीन को एक कृषि-प्रधान देश से एक औद्योगिक देश में बदल डालना। लेकिन ठीक उसी समय, फासिस्ट-विरोधी दूसरे विश्वयुद्ध के विजयपूर्वक समाप्त होने के बाद, अमरीकी साम्राज्यवाद और विभिन्न देशों में मौजूद उसके गुर्गों ने जर्मन व जापानी साम्राज्यवाद और उनके गुर्गों के पदचिन्हों पर चलते हुए, सोवियत संघ के खिलाफ, योरप के जन-लोकशाही देशों के खिलाफ, पूंजीवादी देशों के मजदूर आन्दोलनों के खिलाफ, उपनिवेशों व अर्ध-उपनिवेशों के राष्ट्रीय आन्दोलनों के खिलाफ और चीनी जनता की मुक्ति के खिलाफ एक प्रतिक्रिया-

प्रकार थे :

(१) चीनी जनता के क्रान्तिकारी युद्ध को अनवरत रूप से पूर्ण विजय तक ले जाने के लिए हर सम्भव उपाय अपनाया जाना चाहिए, तथा दुश्मन को जनता पर एक नया हमला करने के हेतु विश्राम व पुनर्गठन करने का समय निकालने के इरादे से टालमटोल करने की कार्यनीति (शान्ति-वार्ता) अपनाने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए।

(२) एक क्रान्तिकारी केन्द्रीय सरकार की स्थापना के लिए अभी समय परिपक्व नहीं हुआ है, तथा इस पर सिर्फ तभी विचार किया जा सकेगा जब हमारी सेना इससे ज्यादा बड़ी विजयें प्राप्त कर चुकी हो, तथा संविधान

वादी खेमा कायम कर लिया। उस समय चीनी प्रतिक्रियावादियों ने, जिनका सरगना च्याङ काई-शेक है, अमरीकी साम्राज्यवाद के पालतू कुत्तों की भूमिका अदा की – जैसा कि वाङ चिङ-वेइ ने जापानी साम्राज्यवाद के लिए किया था – चीन को अमरीका के हाथों बेच दिया तथा चीनी जनता के मुक्ति-कार्य को आगे बढ़ने से रोकने के लिए उसके खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। उस समय, अगर हम कमजोरी दिखा देते अथवा पीछे हट जाते और प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध का मुकाबला क्रान्तिकारी युद्ध से करने के लिए दृढ़ता से उठ खड़े होने का साहस न करते, तो चीन एक अन्धकारमय दुनिया बन जाता और हमारे राष्ट्र का भविष्य खतरे में पड़ जाता। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने च्याङ काई-शेक के आक्रमण के खिलाफ दृढ़ता-पूर्वक एक देशभक्तिपूर्ण, न्यायपूर्ण और क्रान्तिकारी युद्ध चलाने में चीनी जन-मुक्ति सेना का नेतृत्व किया है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के वैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर अन्तर-राष्ट्रीय और घरेलू परिस्थिति का स्पष्ट मूल्यांकन करने के बाद,

की घोषणा करना तो और भी अधिक भविष्य की बात है। ३

मीटिंग में पार्टी के भीतर मौजूद वर्तमान रुझानों तथा भूमि-सुधार और जन-आन्दोलन की कुछ विशेष नीतियों पर भी विस्तारपूर्वक विचार-विनिमय किया गया। इस विचार-विनिमय के परिणामों को बाद में कामरेड माओ त्सेतुङ ने "पार्टी की वर्तमान नीति से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण समस्याएं" शीर्षक रचना में (देखिए इसी ग्रन्थ में पृष्ठ २९९ पर) प्रस्तुत किया। इस ग्रन्थ में उक्त रिपोर्ट से लेकर २० मार्च १९४८ को लिखी गई "परिस्थिति के बारे में एक सरकुलर" शीर्षक रचना तक सभी रचनाएं उत्तरी शेनशी प्रान्त की मीचि काउन्टी के याङच्याकओ में लिखी गई थीं।

यह समझ लिया है कि देश-विदेश के प्रतिक्रियावादियों के तमाम हमलों को न केवल परास्त किया जाना चाहिए बल्कि परास्त किया जा सकता है। जब आसमान में काले बादल मंडराने लगे थे, तो हमने बता दिया था कि वे अस्थाई हैं तथा यह अन्धकार शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा और उसे चीरता हुआ सूरज फिर चमकने लगेगा। जुलाई १९४६ में जब च्याङ काई-शेक डाकू-गुट ने देशव्यापी प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध छेड़ा, तो उसने यह समझा था कि जन-मुक्ति सेना को परास्त करने में उसे सिर्फ तीन से छै महीने तक का समय लगेगा। उन लोगों ने हिसाब लगाया था कि उनके पास २० लाख नियमित सेना है, १० लाख से अधिक अनियमित सेना है तथा पृष्ठभाग के फौजी संस्थानों व फौजी यूनिटों में १० लाख से भी ज्यादा सैनिक मौजूद हैं, तथा इस प्रकार उनकी कुल सैनिक शक्ति ४० लाख से अधिक है; उन्होंने समय पाकर हमला करने की पूरी तैयारी कर ली है; उन्होंने बड़े शहरों को फिर अपने नियंत्रण में कर लिया है; उनके अधीन इलाकों की आबादी ३० करोड़ से ज्यादा है; उन्होंने १० लाख आक्रमणकारी जापानी सैनिकों का तमाम साज-सामान अपने कब्जे में कर लिया है; तथा उन्हें अमरीका सरकार से भारी मात्रा में फौजी व वित्तीय सहायता प्राप्त हुई है। उन्होंने यह भी हिसाब लगाया कि जन-मुक्ति सेना जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में आठ वर्ष तक लड़ने के बाद बहुत थक चुकी है तथा संख्या व साज-सामान की दृष्टि से वह क्वोमिन्ताङ सेना के मुकाबले कहीं अधिक कमतर है; मुक्त क्षेत्रों की आबादी सिर्फ १० करोड़ से कुछ ज्यादा है तथा इनमें से अधिकांश क्षेत्रों में प्रतिक्रियावादी सामन्ती शक्तियों का अभी सफाया नहीं किया गया और भूमि-सुधार अभी व्यापक रूप से और मुकम्मिल

तौर पर पूरा नहीं किया गया, दूसरे शब्दों में, जन-मुक्ति सेना के पृष्ठभागीय क्षेत्र को अभी मजबूत नहीं बनाया गया। इस मूल्यांकन के आधार पर च्याङ काई-शेक डाकू-गुट ने चीनी जनता की शान्ति की आकांक्षा की उपेक्षा की, जनवरी १९४६ में किए गए क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के युद्ध-विराम समझौते को और समस्त पार्टियों के राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावों को अन्त में फाड़ डाला तथा एक जोखिमभरा युद्ध छेड़ दिया। हमने उस समय कह दिया था कि च्याङ काई-शेक की सैन्य-शक्ति की बरतरी केवल अस्थाई है और यह एक ऐसा तत्व है जो केवल अस्थाई भूमिका ही अदा कर सकता है, इसी तरह अमरीकी साम्राज्यवादी सहायता भी एक ऐसा तत्व है जो केवल अस्थाई भूमिका ही अदा कर सकता है; जबकि च्याङ काई-शेक के युद्ध का जन-विरोधी स्वरूप और जनता की भावनाएं ऐसे तत्व हैं जो स्थाई भूमिका अदा करेंगे, तथा इस लिहाज से जन-मुक्ति सेना बरतरी की स्थिति में है। अपने देशभक्तिपूर्ण, न्यायपूर्ण और क्रान्तिकारी स्वरूप के कारण, जन-मुक्ति सेना द्वारा चलाए जा रहे युद्ध को अनिवार्यतः समूचे देश की जनता का समर्थन प्राप्त होगा। यह च्याङ काई-शेक पर विजय प्राप्त करने का राजनीतिक आधार है। युद्ध के अठारह महीनों के अनुभव ने हमारे इस निष्कर्ष की पूर्णतया पुष्टि कर दी है।

३

सत्रह महीनों की लड़ाई में (जुलाई १९४६ से नवम्बर १९४७ तक; दिसम्बर के आंकड़े अभी उपलब्ध नहीं हो सके), हमने

च्याङ काई-शेक के १६,६०,००० नियमित और अनियमित सैनिकों को हताहत किया व बन्दी बना लिया, जिनमें से ६,४०,००० सैनिकों को हताहत कर दिया और १०,५०,००० सैनिकों को बन्दी बना लिया। इस प्रकार हम च्याङ काई-शेक के आक्रमण को शिकस्त दे सके, मुक्त क्षेत्रों के बुनियादी इलाकों की रक्षा कर सके और खुद आक्रमण शुरू कर सके। अगर फौजी दृष्टि से विचार किया जाए, तो हम ऐसा इसलिए कर सके क्योंकि हमने सही रणनीति अपनाई। फौजी कार्यवाही के बारे में हमारे उसूल ये हैं :

१. दुश्मन की बिखरी हुई, अलग-थलग फौजों पर पहले हमला करो ; दुश्मन की केन्द्रित व शक्तिशाली फौजों पर बाद में हमला करो।

२. छोटे व मझोले शहरों और व्यापक देहाती क्षेत्रों पर पहले कब्जा करो ; बड़े शहरों पर बाद में कब्जा करो।

३. दुश्मन की प्रभावकारी शक्ति को खत्म करने को अपना मुख्य उद्देश्य बनाओ ; किसी शहर अथवा स्थान को अपने कब्जे में रखने अथवा उस पर कब्जा जमाने को अपना मुख्य उद्देश्य न बनाओ। किसी शहर अथवा स्थान को अपने कब्जे में रखना अथवा उस पर कब्जा जमाना दुश्मन की प्रभावकारी शक्ति को खत्म करने का नतीजा है, तथा किसी शहर अथवा स्थान को हमेशा के लिए कब्जे में रखना अथवा उस पर हमेशा के लिए कब्जा जमाना केवल तभी सम्भव हो सकता है जबकि उस पर बार-बार कभी हमारा कब्जा हो चुका हो और कभी दुश्मन का।

४. हर लड़ाई में अपनी नितान्त बरतर सैन्य-शक्ति को (जो दुश्मन की शक्ति के मुकाबले दुगुनी, तिगुनी, चौगुनी और कभी-कभी पंचगुनी अथवा छैगुनी भी हो सकती है) केन्द्रित करो, दुश्मन की फौजों को पूरी तरह घेर लो, उनका पूरी तरह सफाया करने की भरसक कोशिश करो तथा उनमें से एक को भी अपने व्यूह से न निकलने दो। विशेष परिस्थितियों में, दुश्मन पर घातक प्रहार करने का तरीका अपनाओ, यानी अपनी सम्पूर्ण शक्ति केन्द्रित करके दुश्मन पर सामने से हमला कर दो तथा उसके एक पार्श्व से अथवा दोनों पार्श्वों से भी हमला कर दो, इस उद्देश्य से कि उसके एक भाग का सफाया कर दिया जाए और दूसरे भाग को तितर-बितर कर दिया जाए, ताकि हमारी सेना दुश्मन की अन्य फौजों को नेस्तनाबूद करने के लिए तेजी के साथ अपने सैनिक स्थानान्तरित कर सके। ऐसी घिसाऊ-थकाऊ लड़ाइयों से बचने की हरचन्द कोशिश करो जिनमें हमें फायदे के मुकाबले नुकसान ज्यादा होता है अथवा फायदा और नुकसान दोनों बराबर होते हैं। इस प्रकार सर्वांग रूप से (संख्या की दृष्टि से) कमतर होते हुए भी हम हर अंश में और हर ठोस मुहिम में नितान्त बरतर बन जाएंगे तथा इससे हर मुहिम में हमारी विजय की गारन्टी हो जाएगी। जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, वैसे-वैसे हम भी सर्वांग रूप से बरतर बनते जाएंगे तथा अन्त में दुश्मन की समूची शक्ति का सफाया कर देंगे।

५. बिना तैयारी के कोई लड़ाई न लड़ो, ऐसी कोई लड़ाई न लड़ो जिसमें विजय प्राप्त होने का यकीन न हो ; हर लड़ाई के लिए पूरी तरह तैयार रहने की हरचन्द कोशिश करो, दुश्मन

की और हमारी विशेष परिस्थितियों को नजर में रखते हुए, विजय की गारन्टी करने की हरचन्द कोशिश करो।

६. अपनी युद्ध-शैली का पूर्ण विकास करो – युद्ध में साहस दिखाना, कुरबानी से न डरना, थकान से न डरना और लगातार लड़ते जाना (अर्थात विश्राम किए बिना अल्प अवधि में ही एक के बाद एक लड़ाई लड़ते जाना)।

७. गतिशील अवस्था में दुश्मन का सफाया करने की भरसक कोशिश करो। साथ ही मोर्चेबन्दी पर हमला करने की कार्यनीति की ओर भी ध्यान दो तथा दुश्मन के मोर्चेबन्दी वाले स्थलों व शहरों पर कब्जा कर लो।

८. शहरों पर हमला करने के सिलसिले में, दुश्मन के उन तमाम मोर्चेबन्दी वाले स्थलों व शहरों पर दृढ़ता से कब्जा जमा लो जिनकी प्रतिरक्षा-व्यवस्था कमजोर है। उचित समय आने पर, दुश्मन के उन तमाम मोर्चेबन्दी वाले स्थलों व शहरों पर भी कब्जा जमा लो जिनकी प्रतिरक्षा-व्यवस्था मझोले दर्जे की है, बशर्ते कि परिस्थिति अनुकूल हो। जहां तक दुश्मन के उन मोर्चेबन्दी वाले स्थलों व शहरों का ताल्लुक है जिनकी प्रतिरक्षा-व्यवस्था सुदृढ़ है, उन पर कब्जा करने के लिए तब तक प्रतीक्षा करो जब तक स्थिति परिपक्व नहीं हो जाती।

९. दुश्मन से छीने हुए सभी हथियारों और उसके अधिकांश बन्दी सैनिकों से अपनी शक्ति की क्षतिपूर्ति कर लो। हमारी सेना के लिए मानव-शक्ति और युद्ध-सामग्री के मुख्य स्रोत मोर्चे में ही मौजूद हैं।

१०. मुहिमों के बीच का समय अपने सैनिकों के विश्राम,

उनके सुदृढ़ीकरण और उनकी ट्रेनिंग के लिए अच्छी तरह इस्तेमाल करो। विश्राम करने, सुदृढ़ बनाने और ट्रेनिंग देने की अवधि आम तौर पर ज्यादा लम्बी नहीं होनी चाहिए, तथा जहां तक हो सके दुश्मन को जरा भी दम नहीं लेने देना चाहिए।

ये हैं वे मुख्य उपाय जिन्हें जन-मुक्ति सेना ने च्याङ काई-शेक को शिकस्त देने में अपनाया है। ये जन-मुक्ति सेना द्वारा घरेलू और विदेशी दुश्मनों के खिलाफ दीर्घकाल तक किए गए युद्धों में तपने का ही परिणाम हैं तथा हमारी आज की परिस्थिति के बिलकुल अनुकूल हैं। च्याङ काई-शेक डाकू-गुट और चीन स्थित अमरीकी साम्राज्यवादी फौज के कर्मचारी हमारे इन फौजी उपायों को अच्छी तरह जानते हैं। इनका मुकाबला करने के उपाय खोजते हुए, च्याङ काई-शेक अक्सर अपने जनरलों और फील्ड अफसरों को ट्रेनिंग के लिए एकत्रित करता रहा है तथा उनमें हमारे फौजी साहित्य और उन दस्तावेजों को अध्ययन के लिए बांटता रहा है जो युद्ध के दौरान उसके हाथ लग जाते हैं। अमरीकी फौजी कर्मचारियों ने जन-मुक्ति सेना को नष्ट करने के लिए च्याङ काई-शेक से तरह-तरह की रणनीति और कार्यनीति अपनाने की सिफारिश की है; उन्होंने च्याङ काई-शेक के सैनिकों को ट्रेनिंग दी है तथा फौजी साज-सामान सप्लाई किया है। लेकिन इस प्रकार की कोई भी कोशिश च्याङ काई-शेक डाकू-गुट को पराजय से नहीं बचा सकती। इसकी वजह यह है कि हमारी रणनीति और कार्यनीति लोकयुद्ध पर आधारित हैं; हमारी रणनीति और कार्यनीति को ऐसी कोई भी सेना इस्तेमाल नहीं कर सकती जो जनता का विरोध करती हो।

लोकयुद्ध के आधार पर तथा सेना और जनता के बीच एकता कायम करने, कमाण्डरों और योद्धाओं के बीच एकता कायम करने तथा दुश्मन की फौजों को छिन्न-भिन्न कर डालने के उसूलों के आधार पर जन-मुक्ति सेना ने अपने जोरदार क्रान्तिकारी राजनीतिक कार्य का निर्माण किया है। यह दुश्मन पर विजय प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व है। जब हमने खुद अपनी ही पहलकदमी पर बहुत से शहर खाली कर दिए, ताकि दुश्मन की बरतर सैन्य-शक्ति के घातक प्रहारों से बचा जा सके तथा अपनी सैन्य-शक्ति का स्थानान्तरण करके गतिशील अवस्था में दुश्मन की फौज को नष्ट किया जा सके, तो हमारे दुश्मनों की बाछें खिल गईं। उन्होंने इसे अपनी जीत और हमारी हार समझा। वे इस क्षणिक "विजय" के गर्व में चूर हो गए। च्याङ काई-शेक ने जिस दिन चाङच्याखओ पर कब्जा किया, उसी दिन तीसरे पहर उसने अपनी प्रतिक्रियावादी राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाने का आदेश भी जारी कर दिया, मानो उसका प्रतिक्रियावादी शासन उसी क्षण से थाएशान पर्वत की तरह स्थिर बन गया हो। अमरीकी साम्राज्यवादी भी खुशी से नाच उठे, मानो चीन को एक अमरीकी उपनिवेश में बदल डालने की उनकी वहशियाना स्कीम अब बिना किसी विघ्न-बाधा के पूरी होने वाली हो। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे-वैसे च्याङ काई-शेक और उसके अमरीकी आकाओं ने अपनी तर्ज बदलनी शुरू कर दी। अब हमारे सभी दुश्मन, घरेलू और विदेशी दोनों प्रकार के दुश्मन, हताश-निराश हो गए हैं। वे बड़ी गहरी आहें भरते हैं, संकटकाल की चीख-पुकार मचाते हैं तथा खुशी का कोई चिन्ह प्रकट नहीं करते। पिछले

अठारह महीनों में, च्याङ काई-शेक के अधिकांश उच्च फील्ड कमाण्डरों को लड़ाई में हार खाने के कारण अपने पद से हटा दिया गया। उनमें ये लोग हैं – ल्यू च (चङचओ), श्वे य्वे (श्वीचओ), ऊ छी-वेइ (उत्तरी च्याङसू), थाङ अन-पो (दक्षिणी शानतुङ), वाङ चुङ-ल्येन (उत्तरी हनान), तू य्वी-मिङ और श्युङ श-ह्वेइ (शनयाङ) और सुन ल्येन-चुङ (पेफिङ)। छन छङ को भी च्याङ काई-शेक के चीफ आफ जनरल स्टाफ के पद से, जिसके हाथ में सम्पूर्ण फौजी कार्यवाही की कमान थी, हटा दिया गया और उसका रुतबा घटाकर उसे महज उत्तर-पूर्व के मोर्चे की कमान सौंप दी गई।[१] लेकिन ठीक इसी अवधि में जब च्याङ काई-शेक ने छन छङ की जगह सर्वोच्च कमान खुद सम्भाल ली, तो परिस्थिति बदल गई तथा उसकी फौजों ने आक्रमण करने के बदले रक्षा करना शुरू कर दिया, जबकि जन-मुक्ति सेना ने रक्षा करने के बदले आक्रमण करना शुरू कर दिया। अब तक प्रतिक्रियावादी च्याङ काई-शेक गुट और उसके अमरीकी आकाओं को अपनी गलती महसूस हो जानी चाहिए थी। शान्ति प्राप्त करने के लिए और गृहयुद्ध का विरोध करने के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा चीनी जनता की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए जापान के आत्मसमर्पण के बाद काफी लम्बे समय तक किए गए तमाम प्रयत्नों को उन्होंने कायरता और कमजोरी की निशानी समझा। उन्होंने खुद अपनी शक्ति को बहुत अधिक आंका और क्रान्ति की शक्ति को बहुत कम आंका तथा दुस्साहस के साथ युद्ध छेड़ दिया। इस प्रकार वे खुद अपने ही जाल में फंस गए। हमारे दुश्मन की रणनीतिक परिकल्पना धूल में मिल गई।

४

जन-मुक्ति सेना के पृष्ठभागीय क्षेत्र अठारह महीने पहले के मुकाबले अब कहीं अधिक सुदृढ़ हो गए हैं। इसका कारण यह है कि हमारी पार्टी ने किसानों का दृढ़तापूर्वक पक्षपोषण करते हुए भूमि-सुधार को कार्यान्वित किया है। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान, क्वोमिन्ताङ के साथ जापान-विरोधी संयुक्त मोर्चा कायम करने और उन लोगों के साथ एकता कायम करने के उद्देश्य से जो उस समय भी जापानी साम्राज्यवाद का विरोध कर सकते थे, हमारी पार्टी ने खुद अपनी ही पहलकदमी से जमींदारों की जमीन जब्त करने और उसे किसानों में बांट देने की अपनी युद्ध से पहले की नीति को लगान और सूद कम करने की नीति में बदल दिया। यह निहायत जरूरी था। जापान के आत्मसमर्पण के बाद, किसानों ने जमीन को पाने की फौरी मांग की और हमने यथासमय यह फैसला कर दिया कि भूमि सम्बन्धी नीति को लगान और सूद कम करने की नीति से जमींदारों की जमीन जब्त करने और उसे किसानों में बांट देने की नीति में बदल दिया जाए। हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा ४ मई १९४६ को जारी किया गया निर्देश[३] इस परिवर्तन का द्योतक है। सितम्बर १९४७ में हमारी पार्टी ने राष्ट्रीय भूमि सम्मेलन बुलाया तथा चीन के भूमि-कानून की रूपरेखा[४] तैयार की, जिसे तुरन्त सभी क्षेत्रों में लागू कर दिया गया। इस कदम से न सिर्फ गत वर्ष के "४ मई के निर्देश" में पेश की गई नीति की पुष्टि हो गई, बल्कि इस निर्देश की पूर्णता की कुछ कमियां भी निश्चित रूप से दूर हो गईं। चीन के भूमि-कानून की रूपरेखा में प्रति व्यक्ति

के हिसाब से भूमि का समान वितरण करने की व्यवस्था की गई है,[५] जिसका आधार सामन्ती और अर्ध-सामन्ती शोषण वाली भूमि-व्यवस्था का खात्मा करने तथा "जमीन जोतने वालों को" की भूमि-व्यवस्था लागू करने का उसूल है। यह एक ऐसा तरीका है जो सामन्ती व्यवस्था का जड़मूल से खात्मा कर देता है तथा चीन के व्यापक किसान समुदाय की मांगों से पूरी तरह मेल खाता है। भूमि-सुधार को दृढ़ता के साथ पूर्ण रूप से कार्यान्वित करने के लिए यह आवश्यक है कि देहातों में, भूमि-सुधार को कार्यान्वित करने वाली कानूनी संस्थाओं के रूप में, न सिर्फ खेत-मजदूरों, गरीब किसानों और मध्यम किसानों की किसान सभाओं, जिनका व्यापकतम जन-आधार है, तथा उनकी निर्वाचित कमेटियों का संगठन किया जाए, बल्कि सबसे पहले गरीब किसान संघों, जिनमें गरीब किसान व खेत-मजदूर शामिल हैं, तथा उनकी निर्वाचित कमेटियों का संगठन किया जाए, तथा इन गरीब किसान संघों को देहातों में चलाए जाने वाले सभी संघर्षों में नेतृत्व की रीढ़ होना चाहिए। हमारी नीति है गरीब किसानों पर निर्भर रहते हुए और मध्यम किसानों के साथ सुदृढ़ एकता कायम करते हुए, जमींदार वर्ग और पुराने किस्म के धनी किसानों द्वारा किए जाने वाले शोषण की सामन्ती व अर्ध-सामन्ती व्यवस्था को खत्म कर देना। जमींदारों और धनी किसानों को आम किसानों से अधिक जमीन और सम्पत्ति नहीं दी जानी चाहिए। लेकिन १९३१-३४ में लागू की गई उस गलत उग्र-वामपंथी नीति को भी दुबारा लागू नहीं किया जाना चाहिए जिसमें "जमींदारों को कोई जमीन न देने और धनी किसानों को घटिया जमीन देने" की व्यवस्था की गई थी। हालांकि देहातों की आबादी में जमींदारों व धनी किसानों

का अनुपात हर जगह अलग-अलग है, फिर भी (परिवारों की दृष्टि से) वह आम तौर पर सिर्फ लगभग ८ फीसदी है जबकि सामान्य स्थिति में कुल जमीन के ७० से ८० फीसदी हिस्से पर उनकी मिलकियत मौजूद है। इसलिए ऐसे लोगों की तादाद बहुत कम है जो हमारे भूमि-सुधार का निशाना बनेंगे, जबकि गांवों में ऐसे लोगों की तादाद बहुत है – (परिवारों की दृष्टि से) लगभग ९० फीसदी से ज्यादा है – जो भूमि-सुधार के लिए कायम किए जाने वाले संयुक्त मोर्चे में शामिल हो सकते हैं और जिन्हें शामिल हो जाना चाहिए। यहां दो बुनियादी उसूलों पर ध्यान देना जरूरी है : पहला, गरीब किसानों और खेत-मजदूरों की मांग को पूरा करना चाहिए ; यह भूमि-सुधार का सबसे बुनियादी कार्य है। दूसरा, मध्यम किसानों के साथ दृढ़तापूर्वक एकता कायम करनी चाहिए और उनके हितों को हानि नहीं पहुंचानी चाहिए। जब तक हम इन दोनों बुनियादी उसूलों पर अमल करते रहेंगे, तब तक हम भूमि-सुधार के अपने कार्यों को निश्चित रूप से सफलतापूर्वक पूरा करते रहेंगे। समान वितरण के उसूल के अनुसार पुराने किस्म के धनी किसानों की अतिरिक्त भूमि को और सम्पत्ति के एक हिस्से को बांट देने का कारण यह है कि चीन में धनी किसानों का स्वरूप आम तौर पर और काफी हद तक सामन्ती और अर्ध-सामन्ती शोषकों का है ; उनमें से अधिकांश लोग अपनी जमीन को लगान पर देते हैं तथा सूदखोरी करते हैं और अर्ध-सामन्ती शर्तों पर मजदूर रखते हैं।[५] यही नहीं, चूंकि धनी किसानों के पास अपेक्षाकृत अधिक और बेहतर जमीन मौजूद है,[*] इसलिए जब तक इस जमीन का बंटवारा नहीं किया जाता, तब तक गरीब किसानों व खेत-मजदूरों की मांग पूरी नहीं हो सकती। लेकिन

भूमि-कानून की रूपरेखा के अनुरूप, धनी किसानों के प्रति आम तौर पर जमींदारों से भिन्न प्रकार का बरताव किया जाना चाहिए। भूमि-सुधार में मध्यम किसान समान वितरण का अनुमोदन करते हैं क्योंकि इससे उनके हितों को कोई हानि नहीं पहुंचती। समान वितरण करते समय मध्यम किसानों के एक हिस्से की जमीन ज्यों की त्यों बनी रहती है और दूसरे हिस्से की जमीन में बढ़ोतरी हो जाती है ; सिर्फ खुशहाल मध्यम किसानों के पास ही कुछ अतिरिक्त जमीन होती है तथा वे इस जमीन को समान वितरण के लिए देने को तैयार हो जाते हैं, क्योंकि इससे उनके भूमि-कर का बोझ कुछ हल्का हो जाएगा। फिर भी अलग-अलग स्थानों में भूमि का समान वितरण करते समय यह आवश्यक है कि मध्यम किसानों की राय सुनी जाए, और यदि वे एतराज करें तो उन्हें रियायत दी जानी चाहिए। सामन्ती वर्ग की जमीन व जायदाद को जब्त और वितरित करते समय कुछ मध्यम किसानों की जरूरतों पर ध्यान देना चाहिए। वर्ग-हैसियत का निर्णय करते समय इस बात की सावधानी बरतनी चाहिए कि मध्यम किसानों को गलती से धनी किसानों की श्रेणी में न रखा जाए। सक्रिय मध्यम किसानों को किसान सभा की कमेटियों और सरकार के काम में शामिल कर लेना चाहिए। भूमि-कर का बोझ और युद्ध का समर्थन करने का बोझ उठाने के बारे में, पक्षपातहीन और युक्तियुक्त रुख अपनाने के उसूल पर अमल करना चाहिए। ये हैं वे ठोस नीतियां जिन्हें हमारी पार्टी को मध्यम किसानों के साथ सुदृढ़ एकता कायम करने का रणनीतिक कार्य पूरा करते समय अपनाना चाहिए। समूची पार्टी को यह समझ लेना चाहिए कि भूमि-व्यवस्था में पूर्ण सुधार करना वर्तमान दौर में चीनी क्रान्ति का एक

बुनियादी कार्य है। अगर हम भूमि-समस्या को व्यापक रूप से और पूर्ण रूप से सुलझा सकेंगे, तो हम अपने तमाम दुश्मनों को परास्त करने के लिए एक सबसे बुनियादी स्थिति तैयार कर लेंगे।

५

भूमि-सुधार को दृढ़तापूर्वक और पूर्ण रूप से कार्यान्वित करने तथा जन-मुक्ति सेना के पृष्ठभागीय क्षेत्रों को मजबूत बनाने के लिए, यह आवश्यक है कि हमारी पार्टी की पांतों को सुदृढ़ बनाया जाए। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान पार्टी के भीतर चलाया गया दोष-निवारण आन्दोलन आम तौर पर सफल रहा। उसकी मुख्य सफलता यह थी कि हमारे नेतृत्वकारी संगठनों ने और व्यापक कार्यकर्ताओं व पार्टी-सदस्यों ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सर्वव्यापी सच्चाई को चीनी क्रान्ति के ठोस व्यवहार के साथ मिलाने की बुनियादी कार्यदिशा को और अधिक दृढ़तापूर्वक आत्मसात कर लिया। इस सिलसिले में हमारी पार्टी ने जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध से पहले के सभी ऐतिहासिक कालों के मुकाबले प्रगति के रास्ते पर एक लम्बी छलांग लगाई है। लेकिन पार्टी के स्थानीय संगठनों में, खास तौर पर देहातों में मौजूद बुनियादी स्तर के संगठनों में, हमारी पांतों की वर्ग-संरचना और हमारी कार्यशैली में मौजूद अशुद्धता की समस्या अभी हल नहीं हुई है। १९३७ से १९४७ तक के ग्यारह सालों में, हमारी पार्टी की सदस्यता दसियों हजार से बढ़कर २७,००,००० हो गई है; यह एक बहुत लम्बी छलांग है। इसने हमारी पार्टी को चीन के इतिहास में एक अभूतपूर्व शक्तिशाली पार्टी

बना दिया है। इसने हममें ऐसी सामर्थ्य पैदा कर दी है कि हम जापानी साम्राज्यवाद को परास्त कर सके हैं, च्याङ काई-शेक के आक्रमणों को शिकस्त दे सके हैं, १० करोड़ से अधिक आबादी वाले मुक्त क्षेत्रों का नेतृत्व कर सके हैं तथा २० लाख सैनिकों वाली जन-मुक्ति सेना का नेतृत्व कर सके हैं। लेकिन कुछ खामियां भी आ गई हैं। अर्थात बहुत से जमींदार, धनी किसान और गुण्डे लोग मौके का फायदा उठा कर हमारी पार्टी के भीतर आ घुसे हैं। ऐसे लोग देहाती इलाकों में अनेक पार्टी-संगठनों, सरकारी संगठनों और जन-संगठनों पर कब्जा जमाए हुए हैं, अपनी सत्ता का बड़ी नृशंसता के साथ नाजायज इस्तेमाल करते हैं, जनता पर सवारी गांठते फिरते हैं, पार्टी की नीतियों को तोड़ते-मरोड़ते हैं, इन संगठनों को जनता से अलग कर देते हैं, तथा भूमि-सुधार को पूर्ण रूप से कार्यान्वित नहीं होने देते। इस गम्भीर स्थिति में, हमारा कार्य यह है कि हम अपनी पार्टी की पांतों को सुदृढ़ बनाएं। जब तक हम यह कार्य पूरा नहीं कर लेते, तब तक हम देहातों में आगे नहीं बढ़ सकते। पार्टी के राष्ट्रीय भूमि सम्मेलन ने इस समस्या पर पूर्ण रूप से विचार-विमर्श किया तथा समुचित उपायों और विधियों को निर्धारित किया। इन उपायों और विधियों को अब भूमि के समान वितरण के फैसले के साथ-साथ हर जगह दृढ़तापूर्वक लागू किया जा रहा है। सबसे पहली और सबसे महत्वपूर्ण बात है पार्टी के भीतर आलोचना और आत्म-आलोचना करना तथा स्थानीय संगठनों में मौजूद त्रुटिपूर्ण विचारों और गम्भीर स्थितियों का, जिनमें पार्टी की कार्यदिशा से भटकाव आ गया है, पूरी तरह पर्दाफाश कर देना। सभी पार्टी-सदस्यों को यह समझ लेना चाहिए कि भूमि-समस्या को सुलझाने और दीर्घकालीन

युद्ध का समर्थन करने की एक फैसलाकुन कड़ी यह है कि पार्टी-संगठनों में से अशुद्धताओं को दूर कर दिया जाए और पार्टी की पांतों को सुदृढ़ बनाया जाए, ताकि पार्टी पूरी तरह व्यापकतम मेहनतकश जनता के साथ एक ही दिशा में बढ़ सके और प्रगति के मार्ग पर उसका नेतृत्व कर सके।

६

सामन्ती वर्ग की जमीन को जब्त कर लो और उसे किसानों के सुपुर्द कर दो ; इजारेदार पूंजी को, जिसके सरगना च्याङ काई-शेक, टी० वी० सुङ, एच० एच० खुङ और छन ली-फू हैं, जब्त कर लो और उसे नव-जनवादी राज्य के सुपुर्द कर दो ; राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के उद्योग व वाणिज्य की रक्षा करो। नव-जनवादी क्रान्ति की ये तीन मुख्य आर्थिक नीतियां हैं। च्याङ, सुङ, खुङ और छन इन चार बड़े घरानों ने बीस वर्ष के अपने शासन-काल में बेशुमार दौलत बटोर ली है, जिसकी कीमत १,००० करोड़ से २,००० करोड़ अमरीकी डालर तक है, तथा उन्होंने समूचे देश के आर्थिक जीवन-स्रोतों पर अपना इजारा कायम कर लिया है। यह इजारेदार पूंजी राजसत्ता के साथ मिलकर राजकीय-इजारेदार पूंजीवाद बन गई है। यह इजारेदार पूंजीवाद विदेशी साम्राज्यवाद, घरेलू जमींदार वर्ग और पुराने किस्म के धनी किसानों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध कायम करके दलाल, सामन्ती, राजकीय-इजारेदार पूंजीवाद बन गया है। यह है च्याङ काई-शेक के प्रतिक्रियावादी शासन का आर्थिक आधार। यह राजकीय-इजारेदार पूंजीवाद न सिर्फ मजदूरों व किसानों का उत्पीड़न करता है, बल्कि शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग का उत्पीड़न भी करता है तथा मध्यम पूंजीपति वर्ग को आघात पहुंचाता है। यह राजकीय-इजारेदार पूंजीवाद जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान और जापान के आत्मसमर्पण के बाद अपने विकास की चरम सीमा पर पहुंच गया ; इसने नव-जनवादी क्रान्ति के लिए पर्याप्त भौतिक स्थितियां तैयार कर दी हैं। यह पूंजी चीन में आम तौर पर नौकरशाही-पूंजी कहलाती है। यह पूंजीपति वर्ग, जो नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग कहलाता है, चीन के बड़े पूंजीपतियों का वर्ग है। नव-जनवादी क्रान्ति का कार्य है चीन में साम्राज्यवाद के विशेषाधिकारों को खत्म करने के अलावा, जमींदार वर्ग और नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग (बड़े पूंजीपतियों का वर्ग) द्वारा किए जाने वाले शोषण व उत्पीड़न को खत्म करना, दलाल, सामन्ती उत्पादन-सम्बन्धों को बदल देना तथा उत्पादक शक्तियों को बन्धन-मुक्त कर देना। निम्न-पूंजीपति वर्ग की उच्च श्रेणी और मध्यम पूंजीपति वर्ग का, जो जमींदार वर्ग व नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग और उनकी राजसत्ता द्वारा उत्पीड़ित और आहत हैं, नव-जनवादी क्रान्ति में भाग लेना या तटस्थ रहना सम्भव है, हालांकि वे खुद भी पूंजीपति वर्ग के ही अंग होते हैं। उनका साम्राज्यवाद के साथ कोई नाता नहीं होता अथवा अपेक्षाकृत कम नाता होता है, तथा वे सच्चे राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के अंग होते हैं। नव-जनवादी राजसत्ता जहां भी फैले, वहां उसे चाहिए कि वह दृढ़ता के साथ और बिना किसी हिचकिचाहट के उनकी रक्षा करे। च्याङ काई-शेक-शासित इलाकों में निम्न-पूंजीपति वर्ग की उच्च श्रेणी और मध्यम पूंजीपति वर्ग के थोड़े से लोग, जो उक्त वर्गों का दक्षिण पक्ष हैं, ऐसे भी हैं जिनके अन्दर प्रति-

क्रियावादी राजनीतिक प्रवृत्तियां मौजूद हैं, जो अमरीकी साम्राज्य-वाद और प्रतिक्रियावादी च्याङ काई-शेक गुट के बारे में भ्रम फैलाते हैं तथा जनता की जनवादी क्रान्ति का विरोध करते हैं। जब तक उनकी प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियां आम जनता पर प्रभाव डालती रहें, तब तक हमें चाहिए कि हम उनके प्रभाव में आए लोगों के सामने ही उन्हें बेनकाब कर डालें, आम जनता में उनके राजनीतिक प्रभाव पर चोट करें और आम जनता को उनके प्रभाव से मुक्त कराएं। लेकिन राजनीतिक प्रहार करना और आर्थिक दृष्टि से नेस्तनाबूद कर देना, ये दोनों अलग-अलग मामले हैं, तथा अगर हम इन दोनों को एक दूसरे से उलझा देंगे तो हम गलतियां कर बैठेंगे। नव-जनवादी क्रान्ति का उद्देश्य केवल सामन्तवाद और इजारेदार पूंजीवाद का, केवल जमींदार वर्ग और नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग (बड़े पूंजीपतियों का वर्ग) का खात्मा करना है, तथा उसका उद्देश्य पूंजीवाद का सामान्य रूप से खात्मा करना और निम्न-पूंजीपति वर्ग की उच्च श्रेणी और मध्यम पूंजीपति वर्ग का खात्मा करना नहीं है। चीन के आर्थिक पिछड़ेपन के कारण, क्रान्ति की देशव्यापी विजय के बाद भी यह आवश्यक होगा कि अर्थव्यवस्था के पूंजीवादी तत्व के, जिसका प्रति-निधित्व व्यापक निम्न-पूंजीपति वर्ग की उच्च श्रेणी और मध्यम पूंजीपति वर्ग करते हैं, अस्तित्व को काफी लम्बे समय तक बना रहने दिया जाए ; तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में श्रम-विभाजन के अनुरूप, इस पूंजीवादी तत्व के उन सभी हिस्सों का जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए फायदेमन्द हैं, कुछ न कुछ विकास करना तब भी आवश्यक होगा ; यह पूंजीवादी तत्व समूची राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का एक लाजमी हिस्सा होगा। यहां निम्न-पूंजीपति वर्ग की जिस उच्च श्रेणी

का उल्लेख किया गया है, उसमें वे छोटे उद्योगपति और व्यापारी शामिल हैं जो अपने यहां मजदूर अथवा कर्मचारी रखते हैं। इसके अलावा एक बड़ी तादाद ऐसे छोटे स्वतंत्र दस्तकारों व व्यापारियों की भी है जो मजदूर अथवा कर्मचारी नहीं रखते और यह कहने की जरूरत नहीं कि ऐसे लोगों की दृढ़ता से रक्षा की जानी चाहिए। देशभर में क्रान्ति की विजय होने के बाद, नव-जनवादी राज्य में बड़े-बड़े राजकीय कारोबार होंगे, जिन्हें नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग से लिया जाएगा और जो देश के आर्थिक जीवन-स्रोतों को नियंत्रित करेंगे, तथा सामन्तवाद के शिकंजे से मुक्त कृषि-अर्थव्यवस्था भी होगी, जिसे काफी लम्बे समय तक बुनियादी तौर पर बिखरी और व्यक्तिगत रहने के पश्चात, बाद में कदम-ब-कदम सहकारिता की दिशा में विकास करने के लिए अभिप्रेरित किया जा सकेगा। ऐसी परिस्थिति में इन छोटे और मध्यम पूंजीवादी तत्वों के अस्तित्व और विकास से कोई खतरा पैदा नहीं होगा। यही बात नई धनी-किसान अर्थव्यवस्था पर भी लागू होती है, जिसका उदय भूमि-सुधार के बाद देहाती क्षेत्रों में अनिवार्य रूप से होगा। अर्थव्यवस्था में निम्न-पूंजीपति वर्ग की उच्च श्रेणी और मध्यम पूंजीपति वर्ग के प्रति वैसी गलत उग्र-वामपंथी नीतियों को फिर से अपनाने की इजाजत हरगिज नहीं दी जाएगी जैसी कि हमारी पार्टी ने १९३१-३४ की अवधि में अपनाई थीं (अनुचित रूप से आगे बढ़ी हुई श्रम की शर्तें लागू करना, अनुचित रूप से आगे बढ़ी हुई आयकर की दरें लागू करना, भूमि-सुधार के दौरान उद्योगपतियों व व्यापारियों के हितों में दखलन्दाजी करना, तथा उत्पादन का विकास करने, आर्थिक समृद्धि को बढ़ाने,

सार्वजनिक हितों और निजी हितों दोनों का ध्यान रखने और श्रम व पूंजी दोनों को लाभ पहुंचाने के लक्ष्य के बजाय तथाकथित श्रमिक कल्याण का लक्ष्य निर्धारित करना, जो एक अदूरदर्शितापूर्ण और एकांगी धारणा थी)। इस प्रकार की गलतियों को फिर से दोहराने से निश्चय ही मेहनतकश जनता और नव-जनवादी राज्य दोनों के हितों को हानि पहुंचेगी। चीन के भूमि-कानून की रूपरेखा की एक धारा में यह कहा गया है : "उद्योगपतियों और व्यापारियों की सम्पत्ति और उनके कानूनी कारोबारों को दखलन्दाजी से बचाया जाएगा।" यहां "उद्योगपतियों और व्यापारियों" से तात्पर्य है सभी छोटे स्वतंत्र दस्तकार व व्यापारी तथा सभी छोटे व मध्यम पूंजीवादी तत्व। संक्षेप में, नए चीन का आर्थिक ढांचा इस प्रकार होगा : (१) राजकीय मिलकियत वाली अर्थव्यवस्था, जो अर्थव्यवस्था का नेतृत्वकारी तत्व होगी ; (२) कृषि-अर्थव्यवस्था, जो कदम-ब-कदम व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था से सामूहिक अर्थव्यवस्था की ओर विकास करेगी ; (३) छोटे स्वतंत्र दस्तकारों व व्यापारियों की अर्थव्यवस्था तथा छोटी और मध्यम निजी पूंजी की अर्थव्यवस्था। ये सब मिलकर समूची नव-जनवादी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था बनती हैं। नव-जनवादी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का मार्गदर्शन करने वाले उसूलों को उत्पादन का विकास करने, आर्थिक समृद्धि को बढ़ाने, सार्वजनिक हितों और निजी हितों दोनों का ध्यान रखने और श्रम व पूंजी दोनों को लाभ पहुंचाने के आम लक्ष्य के बिलकुल अनुरूप होना चाहिए। जो भी उसूल, नीति अथवा उपाय इस आम लक्ष्य से भटक जाता है, वह गलत है।

७

जन-मुक्ति सेना ने अक्तूबर १९४७ में एक घोषणापत्र जारी किया, जिसका एक अंश इस प्रकार था :

> मजदूरों, किसानों, सिपाहियों, बुद्धिजीवियों व व्यापारियों, सभी उत्पीड़ित वर्गों, सभी जन-संगठनों, जनवादी पार्टियों, अल्पसंख्यक जातियों, प्रवासी चीनियों तथा अन्य देशभक्तों के साथ एकता कायम करना ; राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा कायम करना ; च्याङ काई-शेक की तानाशाह सरकार का तख्ता उलट देना ; और जनवादी मिलीजुली सरकार की स्थापना करना।

यह जन-मुक्ति सेना और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का बुनियादी राजनीतिक कार्यक्रम है। बाहर से देखने में ऐसा लगता है कि हमारा क्रान्तिकारी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा वर्तमान काल में जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल के मुकाबले संकुचित हो गया है। वास्तव में ठीक वर्तमान काल में ही, जब च्याङ काई-शेक हमारे राष्ट्रीय हितों को अमरीकी साम्राज्यवाद के हाथों बेच चुका है और जनता के खिलाफ देशव्यापी गृहयुद्ध छेड़ चुका है, तथा जब अमरीकी साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादी च्याङ काई-शेक शासक-गुट के अपराधों का चीनी जनता के सामने पूरी तरह पर्दाफाश हो चुका है, ऐसे समय हमारा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा सचमुच व्यापक हो गया है। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान, च्याङ काई-शेक और क्वोमिन्ताङ ने चीनी जनता के बीच अभी पूरी तरह अपनी साख नहीं गंवाई थी तथा वे अब भी अनेक उपायों से उसे धोखा देने में सफल होते जा

रहे थे। लेकिन अब हालत अलग है; उनकी तमाम धोखाधड़ियों की कलई उनके अपने ही कारनामों से खुल गई है, अब आम जनता उनका अनुसरण नहीं करती, और वे पूरी तरह अलगाव की स्थिति में पड़ गए हैं। क्वोमिन्ताङ के विपरीत, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को न सिर्फ मुक्त क्षेत्रों की व्यापकतम जनता का विश्वास प्राप्त है, बल्कि क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों व क्वोमिन्ताङ नियंत्रित बड़े शहरों की व्यापक जनता का समर्थन भी प्राप्त है। अगर १९४६ में च्याङ काई-शेक के शासन के अधीन निम्न-पूंजीपति वर्ग की उच्च श्रेणी और मध्यम पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियों में कुछ लोग तथाकथित तीसरे रास्ते[६] के विचार को अपने दिल में संजोए हुए थे, तो अब यह विचार दिवालिया साबित हो चुका है। चूंकि हमारी पार्टी ने एक मुकम्मिल भूमि-नीति अपनाई है, इसलिए उसे जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल के मुकाबले किसानों के और अधिक व्यापक जनसमूह का हार्दिक समर्थन प्राप्त हुआ है। अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रमण, च्याङ काई-शेक के उत्पीड़न और हमारी पार्टी द्वारा जनता के हितों की दृढ़ता से रक्षा करने की सही नीति अपनाए जाने के परिणामस्वरूप, हमारी पार्टी ने च्याङ काई-शेक-शासित क्षेत्रों के मजदूर वर्ग, किसान वर्ग, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग और मध्यम पूंजीपति वर्ग के व्यापक जनसमूह की सहानुभूति प्राप्त कर ली है। भुखमरी, राजनीतिक उत्पीड़न और च्याङ काई-शेक द्वारा छेड़े गए जन-विरोधी गृहयुद्ध से, जिसने जनता के जीवन-निर्वाह को असम्भव बना दिया है, मजबूर होकर व्यापक जनसमूह अमरीकी साम्राज्यवाद और च्याङ काई-शेक की प्रतिक्रियावादी सरकार के खिलाफ निरन्तर संघर्ष करता रहा है; उसके बुनियादी

नारे भुखमरी के खिलाफ, अत्याचार के खिलाफ, गृहयुद्ध के खिलाफ और चीन के अन्दरूनी मामलों में अमरीकी हस्तक्षेप के खिलाफ हैं। उसकी जागृति का स्तर पहले कभी इतना अधिक ऊंचा नहीं हुआ जितना कि आज है – न तो जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के पहले, न उस युद्ध के दौरान और न जापान के आत्मसमर्पण के बाद के कुछ अरसे में। इसीलिए हम कहते हैं कि हमारा नव-जनवादी क्रान्तिकारी संयुक्त मोर्चा अब पहले के किसी भी जमाने के मुकाबले अधिक व्यापक और अधिक सुदृढ़ बन गया है। यह बात न सिर्फ हमारी भूमि-नीति और शहरी नीतियों से सम्बन्धित है, बल्कि समूची राजनीतिक परिस्थिति से – जन-मुक्ति सेना की विजयों से, च्याङ काई-शेक द्वारा आक्रमणात्मक युद्ध को रक्षात्मक युद्ध में बदल दिए जाने से, जन-मुक्ति सेना द्वारा रक्षात्मक युद्ध के स्थान पर आक्रमणात्मक युद्ध छेड़े जाने से तथा चीनी क्रान्ति में एक नए ऊंचे उभार के आगमन से – भी घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। यह देखकर कि च्याङ काई-शेक के शासन का अनिवार्य रूप से पतन हो जाएगा, अब लोग चीनी कम्युनिस्ट पार्टी व जन-मुक्ति सेना पर आशा बांधे हुए हैं, और यह बिलकुल स्वाभाविक है। समूचे राष्ट्र की आबादी की भारी बहुसंख्या के व्यापकतम संयुक्त मोर्चे के बिना, चीन की नव-जनवादी क्रान्ति में विजय प्राप्त करना असम्भव हो जाएगा। यही नहीं, इस संयुक्त मोर्चे को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सुदृढ़ नेतृत्व के अधीन भी होना चाहिए। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सुदृढ़ नेतृत्व के बिना कोई भी क्रान्तिकारी संयुक्त मोर्चा विजय प्राप्त नहीं कर सकता। १९२७ में जब उत्तरी अभियान अपने चरम उत्कर्ष पर पहुंच गया था, तो हमारी पार्टी के नेतृत्वकारी संगठन में मौजूद आत्मसमर्पणवादियों

ने स्वेच्छा से ही किसान समुदाय, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग और मध्यम पूंजीपति वर्ग पर पार्टी के नेतृत्व का परित्याग कर दिया और खास तौर पर सशस्त्र सैन्य-शक्तियों में पार्टी के नेतृत्व का परित्याग कर दिया, तथा इस प्रकार क्रान्ति को पराजय का मुंह देखना पड़ा। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान, हमारी पार्टी ने उनके जैसे आत्मसमर्पणवादी विचारों का विरोध किया; ये विचार हैं क्वोमिन्ताङ की जन-विरोधी नीतियों को रियायतें देना, क्वोमिन्ताङ पर आम जनता से अधिक विश्वास करना, जन-संघर्ष छेड़ने और उनका पूर्ण विकास करने का साहस न करना, जापान-अधिकृत इलाकों में मुक्त क्षेत्रों का विस्तार करने और जन-सेनाओं को बढ़ाने का साहस न करना तथा जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध का नेतृत्व क्वोमिन्ताङ को सौंप देना। हमारी पार्टी ने इस प्रकार के शक्तिहीन और पतनशील विचारों के खिलाफ, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के उसूलों का उल्लंघन करते हैं, दृढ़तापूर्वक संघर्ष चलाया तथा उसने "प्रगतिशील शक्तियों का विकास करने, मध्यवर्ती शक्तियों को अपने पक्ष में करने और कट्टरपंथी शक्तियों को अलगाव में डालने" की राजनीतिक कार्यदिशा का दृढ़ता से पालन किया और मुक्त क्षेत्रों और जन-मुक्ति सेना का दृढ़तापूर्वक विस्तार किया। इससे न सिर्फ इस बात की गारन्टी हो गई कि हमारी पार्टी जापानी आक्रमण के काल में जापानी साम्राज्यवाद को परास्त कर सकी, बल्कि इस बात की भी गारन्टी हो गई कि जापान के आत्मसमर्पण के बाद के काल में जब च्याङ काई-शेक ने अपना प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध छेड़ा, हमारी पार्टी सुगमता के साथ और बिना नुकसान उठाए, च्याङ काई-शेक के प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध का मुकाबला क्रान्तिकारी लोकयुद्ध से करने का रास्ता अपना सकी तथा एक अल्प अवधि में ही भारी जीतें हासिल कर सकी। सभी पार्टी-कामरेडों को चाहिए कि वे इतिहास के इन सबकों को पक्के तौर पर याद रखें।

८

जब प्रतिक्रियावादी च्याङ काई-शेक गुट ने १९४६ में जनता के खिलाफ देशव्यापी गृहयुद्ध छेड़ दिया, तो उसके द्वारा यह जोखिम उठाने की हिम्मत किए जाने का कारण यह था कि वह न सिर्फ अपनी फौजी शक्ति की बरतरी पर निर्भर था बल्कि मुख्य रूप से अमरीकी साम्राज्यवाद पर निर्भर था, जिसके हाथ में परमाणु-बम था और जिसे वह "बेहद शक्तिशाली" और "दुनियाभर में बेजोड़" समझता था। इस गुट के लोग एक तरफ तो यह समझते थे कि अमरीकी साम्राज्यवाद बहते पानी की तरह रसद सप्लाई करके उनकी फौजी व वित्तीय जरूरतों को पूरा कर सकता है; दूसरी तरफ वे बड़ी बर्बरता के साथ यह अटकल लगा रहे थे कि "अमरीका और सोवियत संघ के बीच युद्ध होना अनिवार्य है" तथा "तीसरा विश्वयुद्ध छिड़ना अनिवार्य है"। अमरीकी साम्राज्यवाद पर निर्भर रहना दूसरे विश्वयुद्ध के बाद सभी देशों की प्रतिक्रियावादी शक्तियों का एक समान लक्षण बन गया है। इससे उन प्रहारों की तीव्रता प्रतिबिम्बित होती है जिन्हें विश्व-पूंजीवाद को दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान झेलना पड़ा था; इससे सभी देशों की प्रतिक्रियावादी शक्तियों की कमजोरी, उनकी घबराहट और उनके आत्मविश्वास की कमी प्रतिबिम्बित होती है; तथा इससे दुनिया

की क्रान्तिकारी शक्तियों की मजबूती प्रतिबिम्बित होती है—इन सब बातों के कारण सभी देशों के प्रतिक्रियावादी यह समझने लगे हैं कि अमरीकी साम्राज्यवाद के समर्थन पर निर्भर रहने के सिवाय और कोई चारा ही नहीं है। लेकिन क्या दूसरे विश्वयुद्ध के बाद अमरीकी साम्राज्यवाद सचमुच उतना अधिक शक्तिशाली हो गया है जितना कि च्याङ काई-शेक और अन्य देशों के प्रतिक्रियावादी समझते हैं? क्या वह सचमुच उन्हें बहते पानी की तरह रसद सप्लाई कर सकता है? नहीं, ऐसा नहीं है। अमरीकी साम्राज्यवाद की आर्थिक शक्ति को, जो दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान बढ़ गई थी, अस्थिर और दिनोंदिन सिकुड़ने वाले घरेलू बाजार व विदेशी बाजार का सामना करना पड़ रहा है। इन बाजारों के और अधिक सिकुड़ जाने के परिणामस्वरूप आर्थिक संकट पैदा हो जाएंगे। अमरीका में युद्धकालीन आर्थिक उभार केवल अस्थाई तौर पर आया था। अमरीका की शक्तिशालिता सिर्फ दिखावटी और अस्थाई है। कभी हल न होने वाले घरेलू और अन्तरराष्ट्रीय अन्तरविरोध, एक ज्वालामुखी की तरह, अमरीकी साम्राज्यवाद के लिए नित नया खतरा पैदा करते रहते हैं; अमरीकी साम्राज्यवाद इसी ज्वालामुखी पर बैठा हुआ है। इस परिस्थिति ने अमरीकी साम्राज्यवादियों को इस बात के लिए मजबूर कर दिया है कि वे दुनिया को गुलाम बनाने की एक योजना बनाएं, योरप, एशिया व दुनिया के अन्य भागों में जंगली जानवरों की तरह पागलपन के साथ दौड़ते फिरें, सभी देशों की प्रतिक्रियावादी शक्तियों को, उस तलछट को जिसे उनके देश की जनता दूर फेंक चुकी है, जत्थेबन्द करते फिरें, तमाम जनवादी शक्तियों, जिनका अगुवा सोवियत संघ है, के खिलाफ

एक साम्राज्यवादी व जनवाद-विरोधी खेमा कायम कर लें, तथा इस उम्मीद पर युद्ध की तैयारी करने लगें कि दूर भविष्य में किसी न किसी दिन वे लोग जनवादी शक्तियों को परास्त करने के लिए एक तीसरा विश्वयुद्ध छेड़ सकेंगे। यह एक बिलकुल वहशियाना योजना है। दुनिया की जनवादी शक्तियों को चाहिए कि वे इस योजना को धूल में मिला दें तथा वे इसे निश्चित रूप से धूल में मिला सकती हैं। दुनिया के साम्राज्यवाद-विरोधी खेमे की शक्ति साम्राज्यवादी खेमे के मुकाबले अधिक हो गई है। बरतर स्थिति में हम हैं, दुश्मन नहीं। साम्राज्यवाद-विरोधी खेमा, जिसका अगुवा सोवियत संघ है, कायम किया जा चुका है। समाजवादी सोवियत संघ संकटों से मुक्त है, वह उन्नति की सीढ़ियां चढ़ता जा रहा है और दुनिया की व्यापक जनता उसकी कद्र करती है; उसकी शक्ति एक ऐसे साम्राज्यवादी अमरीका के मुकाबले पहले ही बढ़ चुकी है जिसे गम्भीर संकटों का सामना करना पड़ रहा है, जो पतन के गर्त में गिरता जा रहा है और जिसे दुनिया की व्यापक जनता के विरोध का सामना करना पड़ रहा है। योरप में जन-लोकशाही देश अन्दरूनी तौर पर अपने को सुदृढ़ बना रहे हैं और एक दूसरे के साथ एकता कायम कर रहे हैं। योरप के पूंजीवादी देशों में साम्राज्यवाद-विरोधी जन-शक्तियों का विकास हो रहा है, तथा फ्रांस व इटली इस दृष्टि से सबसे आगे हैं। अमरीका के अन्दर भी जनता की जनवादी शक्तियां मौजूद हैं, जो दिन-ब-दिन मजबूत होती जा रही हैं। लातिन अमरीका की जनता अमरीकी साम्राज्यवाद की आज्ञाकारी गुलाम नहीं है। पूरे एशिया में एक महान राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का उदय हुआ है। साम्राज्यवाद-विरोधी खेमे की तमाम शक्तियां एक हो रही हैं

और आगे बढ़ रही हैं। नौ योरपीय देशों की कम्युनिस्ट व मजदूर पार्टियों ने अपना सूचना-ब्यूरो कायम कर लिया है तथा दुनिया की जनता का आवाहन किया है कि वह साम्राज्यवादियों की गुलाम बनाने की योजना के खिलाफ उठ खड़ी हो।[1] इस आवाहन ने दुनिया की उत्पीड़ित जनता को प्रेरणा प्रदान की है, उसे संघर्ष की दिशा दिखाई है तथा विजय के प्रति उसके विश्वास को सुदृढ़ बनाया है। इस आवाहन ने सारी दुनिया के प्रतिक्रियावादियों को घबराहट में डाल दिया है और उनमें खलबली मचा दी है। पूरब के देशों की तमाम साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तियों को भी चाहिए कि वे आपस में एकताबद्ध हो जाएं, साम्राज्यवादियों व घरेलू प्रतिक्रियावादियों द्वारा किए जाने वाले उत्पीड़न का मुकाबला करें तथा पूरब की १०० करोड़ से अधिक उत्पीड़ित जनता की मुक्ति को अपने संघर्ष का उद्देश्य बनाएं। हमें निश्चित रूप से अपने भाग्य का मालिक खुद ही बन जाना चाहिए। हमें तमाम शक्तिहीन विचारों को अपनी पांतों से बाहर निकाल देना चाहिए। ऐसे तमाम विचार, जिनमें दुश्मन की शक्ति को अधिक आंका जाता है और जनता की शक्ति को कम आंका जाता है, बिलकुल गलत हैं। हम दुनिया की तमाम जनवादी शक्तियों के साथ हैं; अगर हम सब भरपूर कोशिश करें, तो हम निश्चित रूप से साम्राज्यवादियों की गुलाम बनाने की योजना को धूल में मिला सकते हैं, तीसरे विश्वयुद्ध की रोकथाम कर सकते हैं, समस्त प्रतिक्रियावादी शासनों का तख्ता उलट सकते हैं तथा मानव जाति के लिए स्थाई शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। हम यह भली-भांति जानते हैं कि हमें अपने प्रगति-पथ पर अब भी बहुत सी विघ्न-बाधाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, तथा हमें अपने

तमाम घरेलू व विदेशी दुश्मनों द्वारा किए जाने वाले अधिकाधिक प्रतिरोध और जीतोड़ संघर्ष का मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए। लेकिन जब तक हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विज्ञान को आत्मसात करते रहेंगे, जनता पर विश्वास रखेंगे, घनिष्ठ रूप से जनता का पक्षपोषण करेंगे और आगे बढ़ने में उसका नेतृत्व करते रहेंगे, तब तक हम हर विघ्न-बाधा को दूर करते जाएंगे और हर कठिनाई पर विजय प्राप्त करते जाएंगे; हमारी शक्ति अपराजेय हो जाएगी। यह एक ऐसा ऐतिहासिक युग है जबकि विश्व-पूंजीवाद और साम्राज्यवाद अपने सर्वनाश की ओर बढ़ रहे हैं तथा विश्व-समाजवाद और जनता का जनवाद विजय की ओर अभियान कर रहे हैं। सूर्योदय होने ही वाला है, हमें भरपूर प्रयत्न करना चाहिए।

नोट

[1] जन-मुक्ति सेना द्वारा एक के बाद एक विभिन्न मोर्चों पर आक्रमणात्मक युद्ध शुरू किए जाने तथा युद्ध को क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों तक पहुंचाए जाने की स्थिति के बारे में देखिए इसी ग्रन्थ में "उत्तर-पश्चिम की महान विजय के बारे में तथा मुक्ति सेना में एक नए किस्म के सुदृढ़ीकरण आन्दोलन के बारे में" शीर्षक रचना का नोट २।

[2] ल्यू च को, जो हनान प्रान्त के चड़चओ में क्वोमिन्ताङ के शान्ति-स्थापना हेडक्वार्टर का निर्देशक था, सितम्बर १९४६ में दक्षिण-पश्चिमी शानतुङ प्रान्त में तिङथाओ मुहिम में हारने के कारण नवम्बर में बरखास्त कर दिया गया। श्वे य्वे को, जो च्याङसू प्रान्त के श्वीचओ में क्वोमिन्ताङ के शान्ति-स्थापना हेडक्वार्टर का निर्देशक था, मार्च १९४७ में बरखास्त कर दिया गया, क्योंकि उसकी कमान में क्वोमिन्ताङ फौजों को सिलसिलेवार अनेक भारी शिकस्तें

खानी पड़ी थी; दिसम्बर १९४६ में उसने च्याङसू प्रान्त में सूछ्येन के उत्तर में स्थित क्षेत्र की मुहिम में शिकस्त खाई; जनवरी १९४७ में दक्षिणी शानतुङ की मुहिम में शिकस्त खाई; तथा फरवरी १९४७ में मध्य शानतुङ की लायवू मुहिम में शिकस्त खाई। ख्वीचओ में क्वोमिन्ताङ के शान्ति-स्थापना हेडक्वार्टर के उप-निदेशक ऊ छी-वेइ को मार्च १९४७ में बरखास्त कर दिया गया, क्योंकि उसने दिसम्बर १९४६ में सूछ्येन के उत्तर में स्थित क्षेत्र की मुहिम में शिकस्त खाई थी। क्वोमिन्ताङ की पहली सेना के कमाण्डर थाङ अन-पो को जून १९४७ में बरखास्त कर दिया गया, क्योंकि क्वोमिन्ताङ की पुनर्गठित ७४वीं डिवीजन का मई में दक्षिणी शानतुङ की मङल्याङकू मुहिम में सफाया कर दिया गया था। क्वोमिन्ताङ की चौथी सेना के कमाण्डर वाङ चुङ-ल्येन को अगस्त १९४७ में बरखास्त कर दिया गया, क्योंकि उसे जुलाई में दक्षिण-पश्चिमी शानतुङ की मुहिम में शिकस्त खानी पड़ी थी। उत्तर-पूर्व में क्वोमिन्ताङ के शान्ति-रक्षा हेडक्वार्टर के कमाण्डर तू य्वी-मिङ तथा उत्तर-पूर्व में क्वोमिन्ताङ के जनरलिसिमो हेडक्वार्टर के निदेशक श्युङ श-ह्वेइ, इन दोनों को इसलिए बरखास्त कर दिया गया क्योंकि उन्होंने जून १९४७ में उत्तर-पूर्व में जन-मुक्ति सेना के ग्रीष्मकालीन आक्रमणात्मक युद्ध में करारी हार खाई। क्वोमिन्ताङ के ग्यारहवें युद्ध-क्षेत्र के कमाण्डर सुन ल्येन-चुङ की पदावनति करके उसे हपे प्रान्त के पाओतिङ में शान्ति-स्थापना हेडक्वार्टर का निदेशक बना दिया गया, क्योंकि उसने जून १९४७ में छिङ-छाङ मुहिम में और पाओतिङ के उत्तर में स्थित श्वीछेङ क्षेत्र की मुहिम में हार खाई। च्याङ काई-शेक के चीफ आफ जनरल स्टाफ छन छङ की पदावनति करके उसे अगस्त १९४७ में उत्तर-पूर्व का गवर्नर-जनरल बना दिया गया, क्योंकि शानतुङ प्रान्त में जिन मुहिमों का निर्देशन उसने किया था, उनमें उसे एक के बाद एक शिकस्त खानी पड़ी थी।

[1] यहां "भूमि-समस्या के बारे में निर्देश" का उल्लेख किया गया है, जिसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने ४ मई १९४६ को जारी किया था। देखिए इसी ग्रन्थ में "तीन महीने का सारांश" शीर्षक रचना का नोट ४।

[2] चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का राष्ट्रीय भूमि सम्मेलन सितम्बर १९४७ में हपे प्रान्त की फिङशान काउन्टी के शीपाइपो गांव में आयोजित किया गया था।

"चीन के भूमि-कानून की रूपरेखा", जिसे उक्त सम्मेलन ने १३ सितम्बर को स्वीकार किया, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा १० अक्तूबर १९४७ को प्रकाशित की गई। इसमें निम्नलिखित व्यवस्था की गई थी:

> सामन्ती व अर्ध-सामन्ती शोषण वाली भूमि-व्यवस्था को खत्म कर दो तथा "जमीन जोतने वालों को" की व्यवस्था कायम करो।
>
> जमींदारों की समूची भूमि और देहातों की समूची सार्वजनिक भूमि पर स्थानीय किसान सभाओं का कब्जा कायम होना चाहिए, तथा उसे वहां की बाकी जमीन के साथ देहातों की समूची आबादी में लिंगभेद अथवा आयुभेद किए बगैर समान रूप से वितरित किया जाना चाहिए।
>
> देहातों की किसान सभाएं जमींदारों के जुताई-बुवाई के काम आने वाले पशुओं, कृषि-औजारों, मकानों, अनाज और उनकी अन्य सम्पत्ति को अपने कब्जे में कर लें, धनी किसानों की उपरोक्त अतिरिक्त सम्पत्ति को अपने अधिकार में ले लें, ऐसी तमाम सम्पत्ति को उन किसानों व अन्य गरीब लोगों में बांट दें जिनके पास इसकी कमी है, तथा उतना ही हिस्सा जमींदारों को भी प्रदान करें।

इस प्रकार भूमि-कानून की रूपरेखा में न सिर्फ "जमींदारों की जमीन जब्त करने और उसे किसानों में बांट देने" के उस उसूल की पुष्टि की गई जिसे १९४६ के "४ मई के निर्देश" में निर्धारित किया गया था, बल्कि निर्देश की पूर्णता की उस कमी को भी दूर कर दिया गया जिसमें कुछ जमींदारों के लिए जरूरत से ज्यादा रियायत देने का रुख अपनाया गया था।

[3] बाद में "चीन के भूमि-कानून की रूपरेखा" को कार्यान्वित करते समय भूमि के समान वितरण के तरीके के बारे में उसमें की गई व्यवस्था में कुछ परिवर्तन किए गए। फरवरी १९४८ में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने "पुराने व अर्ध-पुराने मुक्त क्षेत्रों में भूमि-सुधार सम्बन्धी कार्य करने तथा पार्टी-शुद्धीकरण के कार्य के बारे में निर्देश" में इस बात का उल्लेख किया कि पुराने और अर्ध-पुराने मुक्त क्षेत्रों में, जहां सामन्ती व्यवस्था का तख्ता पहले ही पलटा जा चुका है, जमीन का फिर से समान वितरण नहीं करना चाहिए, बल्कि जरूरत पड़ने पर बेशी वालों से लेकर कमी वालों को देने तथा बेहतर भूमि वालों से

लेकर घटिया भूमि वालों को देने का तरीका अपनाकर, पुनर्व्यवस्थित करते हुए, कुछ जमीन और उत्पादन के अन्य साधनों को उन गरीब किसानों व खेत-मजदूरों को दे देना चाहिए जिन्होंने अभी अपना सामन्ती जुआ पूरी तरह नहीं उतार फेंका, जबकि मध्यम किसानों को औसत दर्जे के गरीब किसानों के मुकाबले ज्यादा जमीन रखने की इजाजत देनी चाहिए। जिन क्षेत्रों में सामन्ती व्यवस्था अभी भी मौजूद है, वहां केवल जमींदारों की जमीन-जायदाद तथा पुराने किस्म के धनी किसानों की अतिरिक्त जमीन-जायदाद का ही समान वितरण किया जाना चाहिए। सभी क्षेत्रों में मध्यम किसानों और नए किस्म के धनी किसानों की अतिरिक्त जमीन का उसे पुनर्व्यवस्थित करने के उद्देश्य से सिर्फ तभी अधिग्रहण किया जाए यदि यह वास्तव में आवश्यक हो और उक्त जमीन के मालिक इस बात से सचमुच सहमत हों। नए मुक्त क्षेत्रों में भूमि-सुधार के दौरान किसी भी मध्यम किसान की जमीन का अधिग्रहण नहीं किया जाना चाहिए।

१ चीन के भूमि-सुधार में धनी किसानों का सवाल एक खास किस्म का सवाल है जो चीन की खास ऐतिहासिक व आर्थिक स्थितियों से पैदा हुआ है। चीन के धनी किसानों और बहुत से पूंजीवादी देशों के धनी किसानों के बीच दो बातों में फर्क है : पहली बात तो यह है कि उनका स्वरूप आम तौर पर और काफी हद तक एक सामन्ती और अर्ध-सामन्ती शोषक का रहा है, तथा दूसरी बात यह है कि धनी किसान अर्थव्यवस्था का देश की कृषि-अर्थव्यवस्था में कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है। चीन में जमींदार वर्ग द्वारा किए जाने वाले सामन्ती शोषण के खिलाफ संघर्ष के दौरान, व्यापक गरीब किसानों व खेत-मजदूरों ने धनी किसानों द्वारा किए जाने वाले सामन्ती व अर्ध-सामन्ती शोषण का खात्मा करने की मांग भी की। मुक्ति युद्ध के दौरान, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने धनी किसानों की अतिरिक्त जमीन-जायदाद का अधिग्रहण करके उसे किसानों में बांट देने की नीति अपनाई और इस प्रकार व्यापक गरीब किसानों व खेत-मजदूरों की मांग पूरी कर दी तथा जन-मुक्ति युद्ध में विजय प्राप्त करने की गारन्टी कर दी। जैसे-जैसे यह युद्ध विजय की ओर बढ़ता गया, वैसे-वैसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने फरवरी १९४८ में नए मुक्त क्षेत्रों में भूमि-सुधार के लिए नई नीतियां निर्धारित कर दीं। भूमि-सुधार को दो मंजिलों में विभाजित करके यह कहा गया : पहली मंजिल में, धनी किसानों को तटस्थ बना दिया जाए और अपने प्रहारों को जमींदारों पर, खास तौर पर बड़े जमींदारों पर केन्द्रित कर दिया जाए ; दूसरी मंजिल में, जमींदारों की जमीन का समान वितरण करते समय उस जमीन का भी वितरण कर दिया जाए जिसे धनी किसान काश्त के लिए देते हैं और जो उनके पास अतिरिक्त रूप में मौजूद हो, लेकिन फिर भी धनी किसानों के साथ जमींदारों से भिन्न प्रकार का व्यवहार जारी रखा जाए (देखिए इसी ग्रन्थ में "नए मुक्त क्षेत्रों में भूमि-सुधार सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण बातें")। चीन लोक गणराज्य की स्थापना के बाद, केन्द्रीय जन-सरकार ने जून १९५० में भूमि-सुधार कानून घोषित किया, जिसमें यह व्यवस्था की गई कि भूमि-सुधार के दौरान केवल धनी किसानों द्वारा काश्त के लिए दी जाने वाली जमीन का ही आंशिक रूप से अथवा पूर्ण रूप से अधिग्रहण किया जाए, जबकि उनकी बाकी जमीन-जायदाद की रक्षा की जाए। समाजवादी क्रान्ति की आगामी मंजिल में, जैसे-जैसे कृषि सहकारिता आन्दोलन में तीव्रता आती गई और देहाती अर्थव्यवस्था का विकास होता गया, वैसे-वैसे धनी किसान अर्थव्यवस्था भी खत्म होती गई।

[२] इसका मतलब यह हुआ कि एक धनी किसान परिवार के पास औसतन एक गरीब किसान परिवार के मुकाबले अधिक और बेहतर जमीन थी। यदि समूचे देश की दृष्टि से विचार किया जाए, तो चीन के धनी किसानों के पास मौजूद उत्पादन के साधनों की मात्रा और उनकी कृषि-उपज की मात्रा, ये दोनों ही बहुत थोड़ी थीं। चीन की देहाती अर्थव्यवस्था में धनी किसान अर्थव्यवस्था का कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं था।

[३] जन-मुक्ति युद्ध के प्रारम्भिक दौर में, कुछ जनवादी गण्यमान्य व्यक्तियों के दिमाग में यह खाम-ख्याली पैदा हो गई थी कि वे क्वोमिन्तांग के नेतृत्व में चलने वाले बड़े जमींदारों के वर्ग व बड़े पूंजीपतियों के वर्ग के अधिनायकत्व और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलने वाले जनता के जनवादी अधिनायकत्व से भिन्न एक तथाकथित तीसरा रास्ता भी खोज सकते हैं। यह तीसरा रास्ता वास्तव में ब्रिटानवी व अमरीकी ढांचे पर पूंजीपति वर्ग का अधिनायकत्व कायम करने का रास्ता था।

[४] कम्युनिस्ट व मजदूर पार्टियों के सूचना-ब्यूरो की स्थापना सितम्बर १९४७

में पोलैण्ड के वारसा नगर में बल्गारिया, रूमानिया, हंगरी, पोलैण्ड, सोवियत संघ, फ्रांस, चेकोस्लोवाकिया, इटली और युगोस्लाविया इन नौ देशों की कम्युनिस्ट व मजदूर पार्टियों के प्रतिनिधियों के एक सम्मेलन में की गई थी। बाद में, जून १९४८ में रूमानिया में आयोजित एक मीटिंग में उक्त ब्यूरो ने युगोस्लाव कम्युनिस्ट पार्टी को ब्यूरो से निकाल देने का ऐलान किया, क्योंकि वह अपने मार्क्सवाद-लेनिनवाद-विरोधी रुख पर अड़ी रही तथा उसने सोवियत संघ और समाजवादी खेमे का विरोध करने का रवैया अपनाया। सूचना-ब्यूरो ने "अन्तर-राष्ट्रीय परिस्थिति के बारे में घोषणापत्र" जारी किया, जिसमें समूची दुनिया की जनता का आवाहन किया गया कि वह साम्राज्यवाद की गुलाम बनाने की योजना के खिलाफ उठ खड़ी हो। इसी घोषणापत्र का उल्लेख कामरेड माओ त्सेतुङ ने यहां किया है। इसे सूचना-ब्यूरो की सितम्बर १९४७ में आयोजित मीटिंग में स्वीकृत किया गया।

रिपोर्ट देने की व्यवस्था कायम करने के बारे में*

७ जनवरी १९४८

केन्द्रीय कमेटी को समय पर सूचना देने के वास्ते, जिससे वह कोई घटना घटने के पहले या बाद में सभी क्षेत्रों की गलतियों से बचने या कम गलतियां करने में मदद देने में समर्थ हो सके तथा क्रान्तिकारी युद्ध में और भी महान जीतें हासिल की जा सकें, रिपोर्ट देने की निम्नलिखित व्यवस्था कायम की जा रही है, जो इसी साल के शुरू से आरम्भ हो जाएगी।

१. केन्द्रीय कमेटी और उसके अध्यक्ष के पास केन्द्रीय कमेटी के हर ब्यूरो और उपब्यूरो की ओर से द्वैमासिक संश्लेषित रिपोर्ट भेजने की जिम्मेदारी ब्यूरो और उपब्यूरो के सचिव की है (यह रिपोर्ट उसके किसी सहायक द्वारा नहीं बल्कि खुद अपने द्वारा लिखी हुई होनी चाहिए)। रिपोर्ट में सामरिक, राजनीतिक, भूमि-सुधार सम्बन्धी, पार्टी-सुदृढ़ीकरण सम्बन्धी, आर्थिक, प्रचार-कार्य

*यह अन्तःपार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था। निर्देश में रिपोर्ट देने की जो व्यवस्था निर्धारित की गई, वह जनवादी केन्द्रीयता को कायम रखने तथा अनुशासनहीनता और अराजकता की प्रवृत्तियों का मुकाबला करने के केन्द्रीय कमेटी के दीर्घकालीन

सम्बन्धी और सांस्कृतिक गतिविधियों, उन गतिविधियों के दौरान उठने वाली समस्याओं और दिखाई देने वाली प्रवृत्तियों तथा ऐसी समस्याओं को सुलझाने और ऐसी प्रवृत्तियों से निबटने की विधियों को शामिल किया जाना चाहिए। हर रिपोर्ट लगभग एक हजार शब्दों तक ही सीमित रहनी चाहिए और किन्हीं विशेष मामलों को छोड़कर कोई भी रिपोर्ट दो हजार शब्दों से ज्यादा हरगिज नहीं होनी चाहिए। यदि सारे सवाल एक ही रिपोर्ट में न लिखे जा सकें, तो एक के बजाय दो रिपोर्ट लिखिए। या ऐसा कीजिए कि पहली रिपोर्ट में तो सारा ध्यान कुछ खास सवालों पर केन्द्रित किया जाए और बाकी सवालों पर सरसरी निगाह डाली जाए, और उसके बाद अगली रिपोर्ट में पिछले बाकी बचे सवालों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए उन सवालों पर सरसरी निगाह डाली जाए जिन पर पिछली रिपोर्ट में तफ़सील के साथ गौर किया जा चुका हो। संश्लेषित रिपोर्ट विषय-वस्तु की दृष्टि से नपी-तुली और भाषा की दृष्टि से सरल और गठी हुई होनी चाहिए और उसमें समस्याओं अथवा विवादास्पद प्रश्नों को बता दिया जाना चाहिए। रिपोर्ट हर विषम संख्या वाले महीने के शुरू में लिखकर तार से भेज दी जानी चाहिए। यही रिपोर्ट

संघर्ष का नई परिस्थिति में एक विकास था। उस समय यह समस्या खास तौर से महत्वपूर्ण इसलिए हो गई कि क्रान्तिकारी परिस्थिति में भारी प्रगति हो गई थी। अनेक मुक्त क्षेत्र एक दूसरे से जुड़ गए थे, अनेक नगर मुक्त हो चुके थे या मुक्त किए जाने वाले थे, जन-मुक्ति सेना और जन-मुक्ति युद्ध में पहले के मुकाबले कहीं अधिक नियमितता लाई गई थी, और देशव्यापी विजय अब साफ़ तौर पर दिखाई देने लगी थी। इस परिस्थिति का तकाजा यह था कि पार्टी अपने अन्दर और सेना के अन्दर मौजूद अनुशासनहीनता या अराजकता की किसी भी हालत

एक नियमित रिपोर्ट है और हिदायतों के लिए एक नियमित अनुरोध है, जिसे केन्द्रीय कमेटी और उसके अध्यक्ष के पास भेजने की व्यक्तिगत जिम्मेदारी हर ब्यूरो और उपब्यूरो के सचिव की है। सचिव अगर मोर्चे पर सामरिक गतिविधियों का निर्देशन कर रहा हो, तो उसे चाहिए कि वह अपनी व्यक्तिगत रिपोर्ट भेजने के साथ-साथ अपने कार्यवाहक सचिव या उप-सचिव को पृष्ठभागीय इलाकों की गतिविधियों के बारे में रिपोर्ट भेजने का अधिकार दे जाए। खास मौकों पर भेजी जाने वाली रिपोर्टें और हिदायतों के लिए किए जाने वाले अनुरोध उपरोक्त रिपोर्टों और उपरोक्त अनुरोधों की श्रेणी में नहीं आते, और ऐसी रिपोर्टों और ऐसे अनुरोधों को केन्द्रीय कमेटी को भेजना हर ब्यूरो और हर उपब्यूरो को पहले की ही तरह जारी रखना चाहिए।

नीति सम्बन्धी नियमित संश्लेषित रिपोर्टों और हिदायतें लेने के लिए किए जाने वाले नियमित अनुरोधों की यह व्यवस्था हम इसलिए कायम कर रहे हैं कि हमारी पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस के बाद भी, ब्यूरोओं अथवा उपब्यूरोओं के (सब तो नहीं मगर) कुछ कामरेड हर घटना के घट जाने के पहले या बाद में केन्द्रीय

पर जल्दी ही काबू पा ले और जितने भी अधिकारों को केन्द्रीय कमेटी के हाथों में केन्द्रित करना जरूरी और मुमकिन हो, उन सभी को केन्द्रित कर ले। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पार्टी ने जो महत्वपूर्ण कदम उठाए, उनमें से एक था रिपोर्ट देने की एक कड़ी व्यवस्था कायम कर देना। इस प्रश्न के बारे में देखिए इसी ग्रन्थ में "१६४८ में भूमि-सुधार और पार्टी-सुदृढ़ीकरण का कार्य" शीर्षक रचना का छठा भाग और "सितम्बर मीटिंग के बारे में – चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का सरकुलर" नामक रचना का चौथा मुद्दा।

कमेटी को रिपोर्टें भेजने और उससे हिदायतें लेने की जरूरत और अहमियत को महसूस नहीं करते, या फिर वे अगर रिपोर्टें भेजते भी हैं और हिदायतें लेते भी हैं तो केवल तकनीकी मुद्दों पर ही ; और इसका नतीजा यह होता है कि उनकी (गौण या तकनीकी किस्म की नहीं मगर) प्रमुख गतिविधियों और नीतियों के बारे में केन्द्रीय कमेटी को स्पष्ट जानकारी अथवा पर्याप्त स्पष्ट जानकारी नहीं हो पाती, और इसके परिणामस्वरूप कुछ ऐसी बातें हो गई हैं जिनका प्रतिकार या तो हो ही नहीं सकता, या हो भी सकता है तो उसे करना कठिन है, या फिर हो तो सकता है मगर उनकी वजह से हमें नुकसान पहले ही पहुंच चुका है। जिन ब्यूरोओं और उपब्यूरोओं ने पहले हिदायतें ले ली और बाद में रिपोर्टें भेजीं, उन्होंने ऐसा नुकसान या तो होने ही नहीं दिया अथवा ऐसे नुकसान को कम कर दिया। चालू वर्ष से शुरू करके पार्टी के सभी स्तरों की नेतृत्वकारी संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने ऊपर के स्तरों से पहले से हिदायतें न लेने और ऊपर के स्तरों के पास बाद में रिपोर्टें न भेजने की बुरी आदत से अपना पिण्ड छुड़ा लें। ब्यूरो और उपब्यूरो केन्द्रीय कमेटी की तरफ से सौंपे गए कार्यों को पूरा करने के लिए उसके द्वारा नियुक्त अंगभूत संगठन हैं, उनका केन्द्रीय कमेटी के साथ यथासम्भव घनिष्ठ से घनिष्ठ सम्पर्क बनाए रखना लाजमी है। ठीक इसी तरह, पार्टी की प्रान्तीय कमेटियों व प्रादेशिक कमेटियों का केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरोओं व उपब्यूरोओं के साथ घनिष्ठ सम्पर्क बनाए रखना भी लाजमी है। एक ऐसे समय जबकि क्रान्ति एक नए उभार के दौर में दाखिल हो रही है, इस सम्पर्क को मजबूत बनाना अत्यावश्यक हो गया है।

२. रणांगन-सेनाओं और फौजी क्षेत्रों के नेताओं के लिए यह लाजमी है कि ठीक समय पर फौजी कार्यवाही सम्बन्धी नीतियों की रिपोर्ट देने और उनके बारे में हिदायतें लेने के अपने कर्तव्य को पूरा करने तथा लड़ाई के लाभ, हानि व गोला-बारूद की खपत और अपनी सेनाओं के वास्तविक बल के बारे में माहवारी रिपोर्टें देने के अपने पहले से निर्धारित कर्तव्य को पूरा करने के अलावा, इस साल से शुरू करके, हर दूसरे महीने नीति सम्बन्धी एक संश्लेषित रिपोर्ट भेजते रहें और हिदायतों के लिए अनुरोध करते रहें। इनमें इन विषयों का समावेश करना होगा : सैनिकों के अनुशासन की स्थिति, उनके रहन-सहन की स्थिति, कमाण्डरों व योद्धाओं की मनोदशा, उनके बीच अगर किसी प्रकार के भटकाव दिखाई पड़ें तो उन भटकावों का ब्योरा और उन्हें दूर करने की विधियां, तकनीक और युद्धकला की प्रगति या अधोगति, शत्रु की सैन्य-शक्ति की मजबूती और कमजोरी और उसके हौसले की बुलन्दी या पस्ती, हमारी सेना का राजनीतिक कार्य, हमारी सेना द्वारा भूमि-नीति, शहरी नीति और बन्दियों सम्बन्धी नीति लागू किए जाने की हालत और इन नीतियों को लागू करने में होने वाले भटकावों पर काबू पाने के लिए अपनाए गए उपाय, सेना और जनता के बीच के सम्बन्ध, तथा जनता के विभिन्न तबकों में मौजूद रुझान, इत्यादि। इन रिपोर्टों की लम्बाई, इन्हें लिखने का ढंग और इन्हें भेजने का समय भी वही होना चाहिए जो केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरोओं और उपब्यूरोओं के लिए निर्धारित किया गया है। रिपोर्ट के लिए निर्धारित समय (यानी हर विषम संख्या वाले महीने के शुरू के दिन) आ पहुंचने पर अगर उस समय घमासान लड़ाई चल रही हो, तो रिपोर्ट भेजने की तिथि

कुछ दिन आगे-पीछे खिसकाई जा सकती है, मगर ऐसी सूरत में तिथि खिसकाने का कारण भी बता देना चाहिए। रिपोर्ट में राजनीतिक कार्य के हिस्से का मसौदा सेना के राजनीतिक विभाग के निर्देशक द्वारा तैयार किया जाना चाहिए, फौजी कमाण्डर और राजनीतिक कमिसार द्वारा उसे जांचा और सुधारा जाना चाहिए तथा तीनों को ही उस पर दस्तखत करने चाहिए। ये रिपोर्टें पार्टी के फौजी कमीशन के अध्यक्ष के पास तार से भेजी जानी चाहिए। नीति सम्बन्धी इन संश्लेषित रिपोर्टों की जरूरत भी हमें ठीक उन्हीं कारणों से होती है जिन कारणों से हमें ब्यूरोओं और उपब्यूरोओं की ऐसी ही रिपोर्टों की जरूरत होती है।

पार्टी की वर्तमान नीति से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण समस्याएं*

१८ जनवरी १९४८

१. पार्टी के भीतर मौजूद गलत रुझानों के खिलाफ संघर्ष करने की समस्या

दुश्मन की शक्ति को अधिक आंकने का विरोध करो। मिसाल के लिए : अमरीकी साम्राज्यवाद से डरना ; लड़ाई को क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में ले जाने से डरना ; दलाल-सामन्ती व्यवस्था को मिटाने, जमींदारों की जमीन का समान वितरण करने और नौकरशाही-पूंजी को जब्त करने से डरना ; लम्बे समय तक खिंचने वाले युद्ध से डरना ; वगैरह-वगैरह। ये सब गलत है। साम्राज्यवाद समूची दुनिया में और प्रतिक्रियावादी च्याङ काई-शेक गुट का शासन चीन में जीर्ण-शीर्ण हो चुके हैं तथा उनका कोई भविष्य नहीं है। हमारे पास उन्हें नाचीज समझने का कारण मौजूद है और हमें विश्वास और भरोसा है कि हम देश के अन्दर व बाहर चीनी जनता के तमाम

*यह ग्रन्थ पार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था। देखिए इसी ग्रन्थ में "वर्तमान परिस्थिति और हमारे कार्य" शीर्षक रचना की परिचयात्मक टिप्पणी।

दुश्मनों को परास्त कर देंगे। लेकिन हर अंश की दृष्टि से, हर ठोस संघर्ष (सैनिक, राजनीतिक, आर्थिक अथवा विचारधारात्मक संघर्ष) की दृष्टि से, हमें दुश्मन को नाचीज कदापि नहीं समझना चाहिए; इसके विपरीत, हमें दुश्मन का पूरा ब्यौरा नजर में रखना चाहिए और अपनी तमाम शक्ति को लड़ाई में केन्द्रित कर देना चाहिए, तथा सिर्फ इस प्रकार ही विजय प्राप्त की जा सकती है। जहां एक ओर हम सही तौर पर यह बताते हैं कि सर्वांग रूप से, रणनीति की दृष्टि से, हमें दुश्मन को नाचीज समझना चाहिए, वहां दूसरी ओर हमें हर अंश की दृष्टि से, हर ठोस समस्या की दृष्टि से, दुश्मन को नाचीज कदापि नहीं समझना चाहिए। अगर सर्वांग रूप से हमने अपने दुश्मन की शक्ति को अधिक आंका और इसके परिणामस्वरूप उसका तख्ता उलटने का साहस न किया तथा विजय प्राप्त करने का साहस न किया, तो हम दक्षिणपंथी अवसरवादी गलती कर बैठेंगे। अगर हर अंश की दृष्टि से, हर ठोस समस्या की दृष्टि से, हमने बुद्धिमानी से काम न लिया, संघर्ष की कला का सावधानी से अध्ययन न किया और उसमें महारत हासिल न की, अपनी तमाम शक्ति को लड़ाई के लिए केन्द्रित न किया, तथा उन तमाम संश्रयकारियों (मध्यम किसानों, छोटे स्वतंत्र दस्तकारों व व्यापारियों, मध्यम पूंजीपति वर्ग, विद्यार्थियों, अध्यापकों, प्रोफेसरों व साधारण बुद्धिजीवियों, साधारण सरकारी कर्मचारियों, आजाद पेशे वाले लोगों और जागृत शरीफजादों) को अपने पक्ष में करने पर ध्यान न दिया जिन्हें अपने पक्ष में किया जाना चाहिए, तो हम "वामपंथी" अवसरवादी गलती कर बैठेंगे।

पार्टी के भीतर "वामपंथी" और दक्षिणपंथी भटकावों का मुकाबला करने के लिए हमें अपनी नीतियों को ठोस परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित करना चाहिए। मिसाल के लिए, सेना को जब विजय प्राप्त हो तो "वामपंथी" भटकावों से सतर्क रहना चाहिए और जब पराजय प्राप्त हो अथवा अनेक विजयें प्राप्त न हों तो दक्षिणपंथी भटकावों से सतर्क रहना चाहिए। भूमि-सुधार के दौरान, जहां कहीं जन-समुदाय को अभी अच्छी तरह जागृत न किया गया हो और संघर्ष का अभी विकास न हुआ हो, वहां दक्षिणपंथी भटकावों का मुकाबला करना चाहिए, तथा जहां कहीं जन-समुदाय को अच्छी तरह जागृत किया जा चुका हो और संघर्ष का विकास हो चुका हो, वहां "वामपंथी" भटकावों से सतर्क रहना चाहिए।

२. भूमि-सुधार और जन-आन्दोलनों में नीति सम्बन्धी कुछ ठोस समस्याएं

१. गरीब किसानों और खेत-मजदूरों के हितों और गरीब किसान संघों की अग्रवर्ती भूमिका पर हमें सबसे पहले ध्यान देना चाहिए। हमारी पार्टी को चाहिए कि वह भूमि-सुधार का सूत्रपात गरीब किसानों और खेत-मजदूरों के जरिए करे तथा उन्हें किसान सभाओं में और देहाती क्षेत्रों के राजसत्ता के संगठनों में अग्रवर्ती भूमिका अदा करने का मौका दे। इस अग्रवर्ती भूमिका का तात्पर्य है मुश्तरका संघर्ष के लिए मध्यम किसानों के साथ एकता कायम करना, न कि मध्यम किसानों को परे करके सारे काम में अपनी इजारेदारी कायम कर लेना। उन पुराने मुक्त क्षेत्रों में मध्यम किसानों की स्थिति खास तौर पर महत्वपूर्ण है जहां मध्यम किसान बहुसंख्या

में हैं तथा गरीब किसान और खेत-मजदूर अल्पसंख्या में हैं। "गरीब किसान और खेत-मजदूर मुल्क को फतह करते है तथा उन्हीं को मुल्क का शासन चलाना चाहिए" – यह नारा गलत है। गांवों में खेत-मजदूर, गरीब किसान, मध्यम किसान और अन्य मेहनतकश लोग एकताबद्ध होकर, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में, मुल्क को फतह करते है और उन्हीं को मुल्क का शासन चलाना चाहिए, तथा अकेले गरीब किसान और खेत-मजदूर ही मुल्क को फतह नहीं करते और केवल उन्हीं को मुल्क का शासन नहीं चलाना चाहिए। समूचे देश की दृष्टि से विचार किया जाए, तो मजदूर, किसान (नए धनी किसानों समेत), छोटे स्वतंत्र दस्तकार व व्यापारी, वे मध्यम व छोटे पूंजीपति जो प्रतिक्रियावादी शक्तियों से उत्पीड़ित और आहत है, विद्यार्थी, अध्यापक, प्रोफेसर, साधारण बुद्धिजीवी, आजाद पेशे वाले लोग, जागृत शरीफजादे, साधारण सरकारी कर्मचारी, उत्पीड़ित अल्पसंख्यक जातियां और प्रवासी चीनी, ये सभी मजदूर वर्ग के (कम्युनिस्ट पार्टी के जरिए) नेतृत्व में एकताबद्ध होकर मुल्क को फतह करते है और उन्हीं को मुल्क का शासन चलाना चाहिए, तथा महज चन्द लोग ही मुल्क को फतह नहीं करते और केवल उन्हीं को मुल्क का शासन नहीं चलाना चाहिए।

२. हमें मध्यम किसानों के प्रति किसी भी किस्म की दुस्साहसवादी नीति अपनाने से बचना चाहिए। उन मध्यम किसानों और अन्य तबकों के उन लोगों के मामलों में, जिनकी वर्ग-हैसियत के बारे में गलत निर्णय किया गया है, गलती निश्चित रूप से सुधार लेनी चाहिए, तथा यदि उनकी किसी सम्पत्ति का वितरण किया जा चुका हो, तो जहां तक सम्भव हो सके उन्हें वापस लौटा देना चाहिए।

मध्यम किसानों को किसान प्रतिनिधियों की पांतों से और किसान कमेटियों से अलग रखने की प्रवृत्ति तथा भूमि-सुधार सम्बन्धी संघर्ष के दौरान उन्हें गरीब किसानों और खेत-मजदूरों के प्रतिपक्ष में खड़ा करने की प्रवृत्ति को सुधार लेना चाहिए। जिन किसानों की आमदनी का एक भाग शोषण के जरिए प्राप्त होता है, यदि ऐसी आमदनी उनकी कुल आमदनी की २५ फीसदी से कम है तो उन्हें मध्यम किसानों की श्रेणी में रखना चाहिए तथा यदि ऐसी आमदनी इससे ज्यादा है तो उन्हें धनी किसानों की श्रेणी में रखना चाहिए।[1] खुशहाल मध्यम किसानों की जमीन का वितरण मालिक की इजाजत के बिना नहीं करना चाहिए।

३. हमें मध्यम और छोटे उद्योगपतियों व व्यापारियों के प्रति किसी भी किस्म की दुस्साहसवादी नीति अपनाने से बचना चाहिए। अतीत काल में मुक्त क्षेत्रों में अपनाई गई वह नीति, जिसके अनुसार राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक समस्त निजी उद्योग-वाणिज्य के विकास की रक्षा की गई थी और उसके विकास के लिए उसे पुरस्कृत किया गया था, सही थी तथा उसे भविष्य में भी जारी रखना चाहिए। जमींदारों व धनी किसानों को उद्योग-वाणिज्य में प्रवृत्त होने के लिए प्रोत्साहन देने की नीति भी, जिसे लगान व सूद कम करने के काल में अपनाया गया था, सही थी ; इस प्रकार के परिवर्तन को एक "आवरण" समझकर उसका विरोध करना तथा इस प्रकार परिवर्तित की गई सम्पत्ति को जब्त कर लेना और वितरित कर देना गलत है। जमींदारों व धनी किसानों के औद्योगिक व व्यापारिक कारोबारों की आम तौर पर रक्षा की जानी चाहिए ; केवल नौकरशाही-पूंजी और असली प्रतिक्रान्तिकारी स्थानीय

निरंकुश तत्वों के औद्योगिक व व्यापारिक कारोबारों को ही जब्त किया जा सकता है। जिन औद्योगिक व व्यापारिक कारोबारों को जब्त किया जाना चाहिए, उनमें से ऐसे कारोबार, जो राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के लिए लाभदायक है, राज्य और जनता के अधिकार में आ जाने के बाद लगातार चलते रहें तथा उन्हें न तो बिखरने दिया जाए और न बन्द होने दिया जाए। जो उद्योग-वाणिज्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक है, उन पर लेनदेन-कर सिर्फ उतना ही लगाया जाए जिससे उनके विकास में रुकावट पैदा न हो। हर सार्वजनिक कारोबार में, प्रशासन और ट्रेड यूनियन को चाहिए कि वे प्रबन्ध-कार्य को सुदृढ़ बनाने के लिए एक संयुक्त प्रबन्ध समिति कायम करें, जिससे लागत घटाई जा सके और उत्पादन बढ़ाया जा सके तथा सार्वजनिक और व्यक्तिगत दोनों प्रकार के हितों की ओर ध्यान दिया जा सके। निजी पूंजीवादी कारोबारों को भी यह तरीका काम में लाने की कोशिश करनी चाहिए, जिससे लागत घटाई जा सके और उत्पादन बढ़ाया जा सके तथा श्रम और पूंजी दोनों को फायदा पहुंचे। मजदूरों के रहन-सहन में समुचित सुधार करना जरूरी है, लेकिन अत्यधिक वेतन और सुविधाएं देने से बचना चाहिए।

४. हमें विद्यार्थियों, अध्यापकों, प्रोफेसरों, वैज्ञानिक कार्य-कर्ताओं, कलाकारों और साधारण बुद्धिजीवियों के प्रति किसी भी किस्म की दुस्साहसवादी नीति अपनाने से बचना चाहिए। चीन के विद्यार्थी आन्दोलनों और क्रान्तिकारी संघर्षों के अनुभव से यह साबित हो गया है कि इन लोगों की एक भारी बहुसंख्या क्रान्ति में भाग ले सकती है अथवा तटस्थ रह सकती है; कट्टर प्रतिक्रान्तिकारियों की संख्या अत्यन्त थोड़ी है। इसलिए हमारी पार्टी को चाहिए कि

वह विद्यार्थियों, अध्यापकों, प्रोफेसरों, वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं, कला-कारों और साधारण बुद्धिजीवियों के प्रति बड़ी सावधानी का रुख अपनाए। हमें चाहिए कि उनकी अलग-अलग हालतों को ध्यान में रखकर उनके साथ एकता कायम करें, उन्हें शिक्षा दें और नियुक्त करें, तथा हमें उनमें से केवल मुट्ठीभर कट्टर प्रतिक्रान्तिकारियों से ही जनदिशा के जरिए समुचित रूप से निपटना होगा।

५. जागृत शरीफजादों की समस्या के बारे में। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान मुक्त क्षेत्रों के राजसत्ता के संगठनों (प्रतिनिधि सभाओं और सरकारों) में हमारी पार्टी का जागृत शरीफजादों के साथ सहयोग कायम करना बिलकुल जरूरी था और यह सहयोग सफल भी रहा। जो जागृत शरीफजादे हमारी पार्टी के साथ कठिनाइयों और मुसीबतों से गुजर चुके है तथा वास्तव में काफी योगदान भी कर चुके है, उनकी अलग-अलग हालतों को देखकर उनका खास खयाल रखना चाहिए, बशर्ते कि इससे भूमि-सुधार को कोई क्षति न पहुंचे। जो लोग राजनीति की दृष्टि से अपेक्षाकृत अच्छे है और सुयोग्य भी है, उन्हें उच्च सरकारी संगठनों में बने रहने देना चाहिए और कोई समुचित कार्य सौंप देना चाहिए। जो लोग राजनीति की दृष्टि से अपेक्षाकृत अच्छे है लेकिन सुयोग्य नहीं है, उनकी जीविका की गारन्टी कर देनी चाहिए। जहां तक उन लोगों का सवाल है जो खुद जमींदार अथवा धनी किसान है लेकिन जिनके प्रति जनता में गहरा रोष नहीं है, उनकी सामन्ती जमीन-जायदाद का भूमि-कानून के अनुसार बंटवारा कर देना चाहिए, लेकिन इस बात का खयाल रखना चाहिए कि वे कहीं संघर्षों का निशाना न बन जाएं। उन लोगों को, जो मौका पाकर हमारे राज-

सत्ता के संगठनों में आ घुसे हैं, जो वास्तव में हमेशा ही बुरे रहे हैं, जो जनता के लिए तनिक भी उपयोगी साबित नहीं हो सकते और जिनके प्रति व्यापक जनता में बेहद घृणा मौजूद है, जन-अदालतों के हवाले कर देना चाहिए जहां मुकदमा चलाकर उन्हें स्थानीय निरंकुश तत्वों की ही तरह सजा दी जाए।

६. हमें नए धनी किसानों और पुराने धनी किसानों[1] के बीच फर्क करना चाहिए। लगान व सूद कम करने के काल में, नए धनी किसानों और खुशहाल मध्यम किसानों को प्रोत्साहन देना मध्यम किसानों को आश्वासन देने और मुक्त क्षेत्रों के कृषि-उत्पादन का विकास करने की दृष्टि से कारगर साबित हुआ। जमीन का समान वितरण करने के बाद, हमें किसानों का आवाहन करना चाहिए कि वे उत्पादन का विकास करें जिससे उन्हें काफी खुराक व कपड़े-लत्ते मिल सकें, तथा उन्हें यह सलाह देनी चाहिए कि वे कृषि के क्षेत्र में आपसी सहायता और सहकारिता पर अमल करने वाले संगठन कायम करें, जैसे श्रम-विनिमय दल, आपसी-सहायता दल और कार्य-विनिमय दल। जमीन का समान वितरण करते समय, पुराने मुक्त क्षेत्रों के नए धनी किसानों के साथ भी खुशहाल मध्यम किसानों जैसा ही बरताव करना चाहिए तथा उनकी जमीन का बंटवारा मालिक की अनुमति के बिना नहीं करना चाहिए।

७. पुराने मुक्त क्षेत्रों के जिन जमींदारों व धनी किसानों ने लगान व सूद कम करने के काल में अपने रहन-सहन के तौर-तरीके बदल डाले हैं, उनमें जिन जमींदारों ने पांच वर्ष या उससे ज्यादा समय तक शारीरिक श्रम किया है तथा जिन धनी किसानों की हालत तीन साल या इससे ज्यादा अरसे से मध्यम किसानों या गरीब किसानों

जैसी हो गई है, उनकी वर्ग-हैसियत को उनकी वर्तमान स्थिति के अनुसार बदला जा सकता है बशर्ते कि उनका व्यवहार अच्छा रहा हो। जो लोग अब भी काफी मात्रा में (कम मात्रा में नहीं) अतिरिक्त सम्पत्ति के मालिक हैं, उन्हें अपनी अतिरिक्त सम्पत्ति को किसानों की मांग के अनुरूप सौंप देना चाहिए।

८. भूमि-सुधार का केन्द्र है सामन्ती वर्ग की जमीन का तथा उसकी अन्य सम्पत्ति का, जिसमें अनाज, मवेशी व खेती-औजार शामिल हैं, समान वितरण कर देना (धनी किसान केवल अपनी अतिरिक्त जमीन और सम्पत्ति ही सौंपते हैं); हमें भूमि में गाड़ दी गई सम्पत्ति का पता लगाने के संघर्ष पर जरूरत से ज्यादा जोर नहीं देना चाहिए तथा खास तौर पर इस सम्बन्ध में बहुत अधिक समय खर्च नहीं करना चाहिए, जिससे इसके कारण मुख्य काम में बाधा न पड़े।

९. जहां तक जमींदारों व धनी किसानों का ताल्लुक है, उनके साथ हमें भूमि-कानून की रूपरेखा के अनुरूप अलग-अलग बरताव करना चाहिए।

१०. जमीन के समान वितरण के उसूल के ढांचे के भीतर हमें बड़े, मध्यम व छोटे जमींदारों के साथ अलग-अलग बरताव करना चाहिए तथा उन दो तरह के जमींदारों व धनी किसानों के साथ भी अलग-अलग बरताव करना चाहिए जिनमें एक तरह के लोग तो स्थानीय निरंकुश तत्व हैं और दूसरी तरह के लोग वैसे नहीं हैं।

११. क्रान्तिकारी व्यवस्था बनाए रखने के लिए यह निहायत जरूरी है कि जन-अदालतें उन मुट्ठीभर कट्टर अपराधियों पर, जिन्होंने सचमुच बेहद खूनी अपराध किए हैं, गम्भीरतापूर्वक मुकदमा

चलाएं और उन्हें सजा सुनाएं, तथा निश्चित सरकारी संगठनों (काउन्टी स्तर पर अथवा उपक्षेत्रीय स्तर पर संगठित की गई कमेटियों) द्वारा उन्हें गोली मारने का अनुमोदन किया जाए और उन्हें दिए गए मृत्यु-दण्ड का ऐलान कर दिया जाए। यह इस मामले का महज एक पहलू है। इसका दूसरा पहलू यह है कि हमें कम से कम आदमियों की जान लेने पर जोर देना चाहिए और अन्धाधुन्ध वध करने की सख्त मनाही कर देनी चाहिए। ज्यादा लोगों की जान लेने और अन्धाधुन्ध वध करने की राय बिल्कुल गलत है; इससे महज यह होगा कि हमारी पार्टी दूसरों की सहानुभूति खो बैठेगी, आम जनता से नाता तोड़ बैठेगी और अलगाव की स्थिति में जा पड़ेगी। जन-अदालतों में मुकदमा चलाने और सजा देने के तरीके को, जो भूमि-कानून की रूपरेखा में निर्धारित संघर्ष का एक रूप है, गम्भीरतापूर्वक अमल में लाना चाहिए; यह किसान समुदाय का एक शक्तिशाली हथियार है, जिसे जमींदारों व धनी किसानों के सबसे खराब तत्वों पर प्रहार करने के लिए इस्तेमाल किया जाना है; इससे अन्धाधुन्ध मारपीट करने व वध करने की गलती से बचा जा सकता है। उचित समय आने पर (जब भूमि-संघर्ष अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया हो), हमें आम जनता को यह सीख देनी चाहिए कि वह अपने खुद के दीर्घकालीन हितों को समझे – उन जमींदारों व धनी किसानों को, जो युद्ध सम्बन्धी प्रयत्नों अथवा भूमि-सुधार को तहस-नहस करने का हठ नहीं करते तथा जिनकी तादाद समूचे देश में करोड़ों में है (देहातों की लगभग ३६ करोड़ आबादी में से लगभग ३ करोड़ ६० लाख है), देश की श्रमशक्ति समझे, उन्हें जिन्दा रहने दे और उनका पुनःसंस्कार करे। हमारा कार्य है सामन्ती

व्यवस्था को खत्म करना, जमींदारों को एक वर्ग के रूप में न कि व्यक्ति के रूप में मिटा देना। हमें चाहिए कि हम भूमि-कानून के अनुरूप उन्हें उत्पादन के साधन और जीविका के साधन उपलब्ध कराएं, लेकिन ये चीजें उन्हें किसानों के मुकाबले ज्यादा न दें।

१२. हमें कुछ ऐसे कार्यकर्ताओं व पार्टी-सदस्यों को, जो गम्भीर गलतियां कर चुके हैं, तथा मजदूरों व किसानों के बीच मौजूद बुरे तत्वों की आलोचना करनी चाहिए और उनके खिलाफ संघर्ष करना चाहिए। इस प्रकार की आलोचना और संघर्ष के दौरान हमें आम जनता को समझाना-बुझाना चाहिए कि वह सही तरीके व सही रूप अपनाए तथा उद्दण्डतापूर्ण कार्यवाही से बचे। यह मामले का महज एक पहलू है। इसका दूसरा पहलू यह है कि इन कार्यकर्ताओं, पार्टी-सदस्यों और बुरे तत्वों से यह शपथ दिलानी चाहिए कि वे आम जनता से बदला लेने की कार्यवाही नहीं करेंगे। यह ऐलान कर दिया जाना चाहिए कि आम जनता को न सिर्फ स्वतंत्र रूप से उनकी आलोचना करने का हक हासिल है, बल्कि उसे यह हक भी हासिल है कि जब भी आवश्यक हो उन्हें अपने पद से हटा दे, अथवा उन्हें अपने पद से हटा देने या उन्हें पार्टी से बाहर निकाल देने का प्रस्ताव पेश करे, और यहां तक कि सबसे दुष्ट तत्वों को मुकदमा चलाने व सजा देने के लिए जन-अदालतों के सुपुर्द करे।

३. राजसत्ता की समस्या के बारे में

१. नव-जनवादी राजसत्ता साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के खिलाफ आम जनता की एक ऐसी राजसत्ता है जिसका नेतृत्व

मजदूर वर्ग करता है। यहां आम जनता में मजदूर वर्ग, किसान वर्ग, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग तथा वह राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग शामिल है जो साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ शासन के और उन वर्गों के जिनका वह प्रतिनिधित्व करता है, यानी नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग (बड़े पूंजीपतियों का वर्ग) और जमींदार वर्ग के उत्पीड़न व आघात का शिकार है। आम जनता के मुख्य दस्ते में मजदूर, किसान (सैनिक मुख्यतया वर्दीधारी किसान ही हैं) और अन्य मेहनतकश लोग शामिल हैं। आम जनता अपने खुद के राज्य (चीन लोक गणराज्य) की स्थापना करनी है तथा इस राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक सरकार (चीन लोक गणराज्य की केन्द्रीय सरकार) की स्थापना करनी है। मजदूर वर्ग अपने हिरावल दस्ते चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के जरिए आम जनता के इस राज्य में और उसकी सरकार में अपने नेतृत्व को लागू करना है। जिन दुश्मनों का इस लोक गणराज्य और इसकी सरकार द्वारा विरोध किया जाना है, वे हैं विदेशी साम्राज्यवाद तथा घरेलू क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी और वे वर्ग जिनका क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी प्रतिनिधित्व करते हैं – अर्थात नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग और जमींदार वर्ग।

२. चीन लोक गणराज्य में सत्ता लागू करने वाले संगठन विभिन्न स्तरों की जन-प्रतिनिधि सभाएं तथा विभिन्न स्तरों की वे सरकारें हैं जिनका चुनाव ये जन-प्रतिनिधि सभाएं करती हैं।

३. वर्तमान काल में, देहाती इलाकों में हम यह कर सकते हैं और ऐसा करना भी चाहिए कि किसानों की मांगों के अनुरूप, श्याङ या गांव की सरकार चुनने के लिए श्याङ या गांव के किसानों का

सम्मेलन बुलाएं, तथा जिला सरकार चुनने के लिए जिले के किसानों का प्रतिनिधि-सम्मेलन बुलाएं। चूंकि काउन्टी या म्युनिसिपल स्तर की अथवा इससे ऊंचे स्तर की सरकारें न सिर्फ देहातों के किसानों का प्रतिनिधित्व करती हैं बल्कि कस्बों, काउन्टी-केन्द्रों, प्रान्तीय राजधानियों और बड़े औद्योगिक व व्यापारिक शहरों के सभी तबकों व व्यवसायों के लोगों का भी प्रतिनिधित्व करती हैं, इसलिए हमें काउन्टी, म्युनिसिपल, प्रान्तीय, अथवा सीमान्त क्षेत्रीय स्तर पर जन-प्रतिनिधि सभाओं को बुलाना चाहिए, जो अपने-अपने स्तर पर सरकार चुन सकें। भविष्य में, जब क्रान्ति समूचे देश में विजयी हो जाएगी, तो केन्द्रीय सरकार व सभी स्तरों की स्थानीय सरकारें अलग-अलग स्तरों की जन-प्रतिनिधि सभाओं द्वारा चुनी जानी चाहिए।

४. क्रान्तिकारी संयुक्त मोर्चे में नेतृत्व करने वालों और उनके नेतृत्व में काम करने वालों के आपसी सम्बन्धों की समस्या

नेतृत्व करने वाला वर्ग और नेतृत्व करने वाली पार्टी इन दोनों को चाहिए कि वे अपने नेतृत्व में काम करने वाले वर्गों, तबकों, राजनीतिक पार्टियों व जन-संगठनों पर अपना नेतृत्व कायम करने के लिए दो शर्तें पूरी करें :

(क) अपने नेतृत्व में काम करने वालों (अपने मित्रयकारियों) का नेतृत्व करके अपने मुश्तरका दुश्मन के खिलाफ दृढ़तापूर्वक

संघर्ष करना और विजय प्राप्त करना ;

(ख) अपने नेतृत्व में काम करने वालों को भौतिक लाभ पहुंचाना, अथवा कम से कम उनके हितों को हानि न पहुंचने देना तथा साथ ही उन्हें राजनीतिक शिक्षा प्रदान करना।

इन दोनों शर्तों को पूरा किए बिना, अथवा इनमें से सिर्फ एक ही शर्त पूरी करके नेतृत्व-कार्य नहीं किया जा सकता। मिसाल के तौर पर, कम्युनिस्ट पार्टी को मध्यम किसानों का नेतृत्व करने के लिए उनकी इस तरह रहनुमाई करनी चाहिए कि वे सामन्ती वर्ग के खिलाफ हमारे साथ मिलकर दृढ़तापूर्वक संघर्ष करने लगें तथा (जमींदारों की सशस्त्र शक्ति को नष्ट करते हुए और उनकी जमीन का समान वितरण करते हुए) विजय प्राप्त कर लें। अगर दृढ़तापूर्वक संघर्ष न किया गया, अथवा अगर संघर्ष करने के बाद भी विजय प्राप्त न हुई, तो मध्यम किसान डांवांडोल होने लगेंगे। यही नहीं, हमें जमींदारों की जमीन व अन्य सम्पत्ति का एक अंश उन मध्यम किसानों में बांट देना चाहिए जो अपेक्षाकृत गरीब हैं, तथा खुशहाल मध्यम किसानों के हितों को हानि नहीं पहुंचानी चाहिए। किसान सभाओं और स्थानीय सरकारों व जिला सरकारों में, हमें चाहिए कि मध्यम किसानों के सक्रिय तत्वों को काम में जुटा दें तथा उनके लिए उचित कोटा निर्धारित कर दें (मिसाल के लिए, कमेटी-सदस्यों में एक तिहाई लोग उन्हीं में से लेना)। मध्यम किसानों की वर्ग-हैसियत का निर्णय करते समय गलती नहीं करनी चाहिए तथा भूमि-कर और सिविलियन युद्ध-सेवा के बारे में उनके प्रति न्यायोचित रुख अपनाना चाहिए। साथ ही मध्यम किसानों को राजनीतिक शिक्षा

भी देनी चाहिए। अगर हमने इन सब बातों पर अमल न किया, तो हम मध्यम किसानों का समर्थन खो बैठेंगे। शहरों में, मजदूर वर्ग व कम्युनिस्ट पार्टी को चाहिए कि वे भी मध्यम पूंजीपति वर्ग, जनवादी पार्टियों व जन-संगठनों पर, जिन्हें प्रतिक्रियावादी शक्तियों द्वारा उत्पीड़ित व आहत होना पड़ता है, अपना नेतृत्व लागू करते समय ऐसा ही करें।

नोट

[1] देहाती क्षेत्रों में वर्ग-हैसियत निश्चित करने की कसौटी क्या हो, इसके लिए देखिए "देहाती क्षेत्रों में वर्ग-विश्लेषण कैसे करें?" ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ १), तथा "चीनी क्रान्ति और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी", अध्याय २, परिच्छेद ४ ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ २)।

[2] नए धनी किसान क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों में वे मध्यम किसान अथवा गरीब किसान थे जो अपने श्रम के जरिए नए धनी किसान बन गए। पुराने धनी किसान वे लोग थे जो क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों की स्थापना के पहले भी धनी किसान थे। पुराने धनी किसान आम तौर पर काफी भारी सामन्ती और अर्ध-सामन्ती शोषण करते थे, जबकि नए धनी किसान महज हल्का शोषण करते थे। –अनु०

सेना में जनवादी आन्दोलन*

३० जनवरी १९४८

हमारी फौजी यूनिटों में राजनीतिक कार्य के लिए अपनाई जाने वाली नीति इस प्रकार है : आम सिपाहियों, कमाण्डरों और तमाम कर्मचारियों को पूरी तरह जागृत करना, ताकि केन्द्रीकृत नेतृत्व के अधीन एक जनवादी आन्दोलन के जरिए तीन मुख्य उद्देश्यों – यानी एक ऊंचे दर्जे की राजनीतिक एकता, रहन-सहन की स्थितियों में सुधार, और फौजी तकनीक व युद्धकला में उन्नति – की पूर्ति की जा सके। "तीन किस्म की जांच" और "तीन किस्म के सुधार"[1] का मकसद, जिन्हें हमारी फौजी यूनिटों में फिलहाल बड़े उत्साह के साथ अमल में लाया जा रहा है, राजनीतिक और आर्थिक जनवाद के तरीकों के जरिए ऊपर बताए गए पहले दो उद्देश्यों की पूर्ति करना है।

जहां तक आर्थिक जनवाद का ताल्लुक है, सिपाहियों द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों को यह अधिकार अवश्य दिया जाना चाहिए कि वे अपनी कम्पनी के लिए रसद और मेस का इन्तजाम करने में कम्पनी के नेतृत्व की मदद करें (लेकिन उसकी अवहेलना न करें)।

*यह अन्तःपार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन के लिए तैयार किया था।

जहां तक फौजी जनवाद का ताल्लुक है, ट्रेनिंग-काल में अफसरों और सिपाहियों के बीच तथा खुद सिपाहियों के बीच एक दूसरे को सिखाने का कार्य किया जाना चाहिए ; युद्ध-काल में मोर्चे पर मौजूद कम्पनियों को विभिन्न प्रकार की छोटी-बड़ी मीटिंगें करनी चाहिए। कम्पनी के नेतृत्व के निर्देशन में आम सिपाहियों को इस बात पर विचार-विमर्श करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि दुश्मन के मोर्चों पर कैसे हमला किया जाए और उन पर कैसे कब्जा किया जाए तथा लड़ाई के अन्य कार्य कैसे पूरे किए जाएं। यदि लड़ाई कई दिनों तक जारी रहे, तो इस प्रकार की अनेक मीटिंगें होनी चाहिए। इस प्रकार के फौजी जनवाद पर उत्तरी शेनशी में फानलुङ मुहिम[2] में तथा शानसी-छाहार-होपेई क्षेत्र में शच्याच्वाङ मुहिम[3] में भारी सफलता के साथ अमल किया गया। यह बात साबित हो चुकी है कि इस पर अमल करने से सिर्फ फायदा ही पहुंचेगा और नुकसान होने की कोई भी गुंजाइश नहीं है।

कार्यकर्ताओं के बीच जो बुरे तत्व हों, उनकी गलतियों और उनके अपराधों का पर्दाफाश करने का अधिकार आम सिपाहियों को होना चाहिए। हमें इस बात का भरोसा होना चाहिए कि कार्यकर्ताओं में जो लोग अच्छे और अपेक्षाकृत अच्छे होंगे, उन सभी को आम सिपाही प्यार करेंगे। इतना ही नहीं, आम सिपाहियों को यह अधिकार भी होना चाहिए कि वे निचले स्तरों के कार्यकर्ता-पदों के लिए जरूरत पड़ने पर अपने बीच से ऐसे लोगों को जिन पर उनका भरोसा हो, नामजद करें तथा ऐसे नामजद कार्यकर्ताओं की नियुक्ति ऊपर के स्तर से मंजूर करा लें। निचले स्तर के कार्यकर्ताओं की भारी कमी के समय इस तरह की नामजदगी बड़ी उपयोगी होती है।

लेकिन इसे नियम न बना लिया जाए, और ऐसी नामजदगी सिर्फ तभी की जानी चाहिए जब ऐसा करना जरूरी हो।

नोट

[1] "तीन किस्म की जांच" और "तीन किस्म का सुधार" पार्टी तथा सेना को सुदृढ़ बनाने का एक महत्वपूर्ण आन्दोलन था, जिसे हमारी पार्टी द्वारा जन-मुक्ति युद्ध के दौरान भूमि-सुधार के साथ-साथ लागू किया गया। गैरफौजी क्षेत्रों में "तीन किस्म की जांच" का मतलब था वर्ग-उत्पत्ति, विचारधारा और कार्यशैली की जांच करना ; फौजी यूनिटों में इसका मतलब था वर्ग-उत्पत्ति, कार्य-सम्पन्नता और लड़ाकू संकल्प की जांच करना। "तीन किस्म के सुधार" का अर्थ था संगठन को सुदृढ़ बनाना, विचारधारात्मक शिक्षा देना और कार्यशैली में सुधार करना।

[2] फानलुङ येनान के उत्तर-पूर्व में स्थित एक कस्बा था जहां उत्तर-पश्चिमी जन-मुक्ति सेना ने मई १९४७ में हू चुङ-नान की कमान में लड़ने वाले ६,७०० से ज्यादा क्वोमिन्तांग सैनिकों को घेर लिया और उनका सफाया कर डाला।

[3] शच्याच्वाङ को शानसी-छाहार-होपेई सीमान्त क्षेत्र की जन-मुक्ति सेना की यूनिटों ने १२ नवम्बर १९४७ को मुक्त कराया। वहां तैनात शत्रु की २४,००० से ज्यादा गैरिजन-सेना को पूरी तरह नष्ट कर दिया गया। यह उत्तरी चीन में जन-मुक्ति सेना द्वारा मुक्त कराया गया पहला महत्वपूर्ण नगर था।

अलग-अलग क्षेत्रों में भूमि-कानून लागू करने के लिए अलग-अलग कार्यनीतियां

३ फरवरी १६४८

भूमि-कानून लागू करने में तीन तरह के क्षेत्रों के बीच भेद करना और इन तीनों में तीन अलग-अलग कार्यनीतियों को अपनाना जरूरी है।

१. जापान के आत्मसमर्पण के पहले स्थापित किए गए पुराने मुक्त क्षेत्र। इन क्षेत्रों में जमीन का बंटवारा आम तौर पर बहुत पहले ही हो चुका है और उस बंटवारे के सिर्फ एक हिस्से को ही पुनर्व्यवस्थित करने की जरूरत है। यहां हमारे कार्य का केन्द्र फिङशान काउन्टी में प्राप्त किए गए अनुभव[1] के अनुसार पार्टी के लोगों और पार्टी के बाहर के लोगों के प्रयासों को मिलाकर अपनी पार्टी की पांतों को शिक्षा देने और उसे सुदृढ़ बनाने के कार्य को बनाया जाना चाहिए, पार्टी और आम जनता के बीच के अन्तरविरोधों को हल करने के कार्य को बनाया जाना चाहिए। इन पुराने मुक्त क्षेत्रों में हमारा कार्य न तो भूमि-कानून के अनुसार जमीन का दोबारा बंटवारा करना है और न किसान सभाओं का नेतृत्व करने के लिए गरीब किसान संघों को कृत्रिम रूप से और मनमाने ढंग

से संगठित करना है, बल्कि यह है कि हम किसान सभाओं के अन्दर ही गरीब किसान ग्रुप संगठित करें। इन ग्रुपों के सक्रिय तत्व किसान सभाओं में और देहातों की राजसत्ता के संगठनों में नेतृत्वकारी पद सम्भाल सकते हैं, मगर ऐसा कोई नियम नहीं बना लेना चाहिए कि ये पद केवल गरीब किसानों को ही मिलेंगे और मध्यम किसानों का बहिष्कार किया जाएगा। इन क्षेत्रों में किसान सभाओं के और राजसत्ता के संगठनों के नेतृत्वकारी पद गरीब और मध्यम किसानों में से उन सक्रिय तत्वों को सम्भालने चाहिए जिनके विचार सही हों और जो काम-काज चलाने में निष्पक्ष और न्यायप्रिय हों। इन क्षेत्रों में जो लोग पहले गरीब किसान थे, उनमें अधिकतर लोग अब बढ़कर मध्यम किसान बन चुके हैं और देहातों की आबादी का अधिकांश भाग अब मध्यम किसान है; इसलिए हमें मध्यम किसानों के बीच से सक्रिय तत्वों को इन देहाती क्षेत्रों के नेतृत्व-कार्य में हाथ बंटाने के लिए चुनना होगा।

२. जापान के आत्मसमर्पण के बाद और आम प्रत्याक्रमण के दौर के पहले, यानी सितम्बर १९४५ और अगस्त १९४७ के बीच के दो वर्षों के दौरान मुक्त हुए क्षेत्र। मुक्त क्षेत्रों में अत्यधिक मात्रा में ऐसे ही क्षेत्र हैं और इन्हें अर्ध-पुराने मुक्त क्षेत्र कहा जा सकता है। इन क्षेत्रों में, पिछले दो वर्षों के दौरान हिसाब लेने के संघर्ष की बदौलत और "४ मई के निर्देश"[१] को अमल में लाने की बदौलत, आम जनता की राजनीतिक चेतना के स्तर और उसके संगठन के दर्जे, इन दोनों को ही काफी हद तक उन्नत किया जा चुका है और भूमि-समस्या का प्रारम्भिक तौर पर समाधान हो चुका है। लेकिन आम जनता की राजनीतिक चेतना और संगठन की अवस्था अभी

बहुत ऊंचे स्तर पर नहीं पहुंच पायी और भूमि-समस्या का अभी सर्वांगीण रूप से समाधान नहीं हो पाया। इन क्षेत्रों में भूमि-कानून पूरे तौर पर लागू होता है, वहां जमीन का बंटवारा सर्वव्यापी और मुकम्मिल तौर पर किया जाना चाहिए, तथा हमें इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि अगर यह कार्य पहली बार अच्छी तरह न हुआ हो तो दोबारा बंटवारा किया जाएगा, और बाद में हमें एक या दो बार जांच-परख भी करनी चाहिए। इन क्षेत्रों में मध्यम किसानों की तादाद अल्पसंख्या में है और वे अभी ठहरने व देखने-परखने का रुख अपना रहे हैं। गरीब किसानों की तादाद बहुसंख्या में है और वे बड़ी उत्सुकता से जमीन की मांग कर रहे हैं। इसलिए गरीब किसान संघों का संगठन करना तथा किसान सभाओं में और देहातों की राजसत्ता के संगठनों में उनका नेतृत्वकारी स्थान स्थापित करना निहायत जरूरी है।

३. आम प्रत्याक्रमण के बाद हाल ही में मुक्त हुए क्षेत्र। इन क्षेत्रों में आम जनता को अभी जागृत नहीं किया जा सका है, क्योंकि इनमें जमींदारों और धनी किसानों का अभी भी भारी प्रभाव मौजूद है और हमारा समूचा कार्य अभी तक इन क्षेत्रों में अपनी जड़ें नहीं जमा पाया। इसलिए हमें चाहिए कि इन क्षेत्रों में सारा का सारा भूमि-कानून एक ही हल्ले में लागू कर डालने की कोशिश न करें, बल्कि इस कार्य को दो मंजिलों में बांटकर पूरा करें। पहली मंजिल में धनी किसानों को तटस्थ बना दिया जाए और अपने प्रहार का एकमात्र निशाना जमींदारों को बनाया जाए। इस मंजिल को कई कदमों में बांटना होगा, यानी प्रचार-कार्य, प्रारम्भिक संगठन-कार्य, बड़े जमींदारों की चल-सम्पत्ति[१] का बंटवारा, छोटे जमींदारों को

कुछ रियायतें देकर बड़े और मध्यम जमींदारों की जमीन का बंटवारा और अन्त में पूरे जमींदार वर्ग की जमीन का बंटवारा करना। इस मंजिल को तय करने के दौरान गरीब किसान संघों को नेतृत्व की रीढ़ के रूप में संगठित किया जाना चाहिए और किसान सभाओं को भी इस रूप में संगठित किया जाना चाहिए कि गरीब किसान उनका मुख्य अंग बन जाएं। दूसरी मंजिल में धनी किसानों द्वारा लगान पर दी गई जमीन, उनकी अतिरिक्त जमीन और उनकी दूसरी जायदाद के एक भाग का बंटवारा होगा, तथा जमींदारों की जमीन के उस हिस्से का भी बंटवारा होगा जिसे पहली मंजिल तय करने के दौरान मुकम्मिल तौर पर बांटा नहीं जा सका। पहली मंजिल तय करने में लगभग दो साल और दूसरी मंजिल तय करने में एक साल का समय लगना चाहिए। जल्दबाजी करने से निश्चय ही कोई लाभ नहीं होगा। पुराने और अर्ध-पुराने मुक्त क्षेत्रों में भूमि-सुधार और पार्टी-सुदृढ़ीकरण का कार्य सम्पन्न करने में भी (इस जनवरी से शुरू करके) तीन वर्ष का समय लग जाएगा; इस मामले में भी जल्दबाजी करने से कोई लाभ नहीं होगा।

नोट

१ हूपे प्रान्त के पश्चिमी भाग में स्थित फिङशान काउन्टी उन दिनों शानसी-छाहाड़-हूपे मुक्त क्षेत्र में थी। फिङशान के जिस अनुभव का हवाला यहां दिया गया है, वह यह था कि भूमि-सुधार के दौरान देहाती क्षेत्रों के प्रारम्भिक पार्टी-संगठनों के सुदृढ़ीकरण में हाथ बंटाने के लिए पार्टी के बाहर के लोगों को भी पार्टी की बैठकों में शामिल होने के लिए बुलाया जाता था।

२ यहां ४ मई १९४६ को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा जारी किए गए "भूमि-समस्या के बारे में निर्देश" का हवाला दिया गया है। देखिए इसी ग्रन्थ में "तीन महीने का सारांश" शीर्षक रचना का नोट ४।

३ "चल-सम्पत्ति" का मतलब अनाज, रोकड़, कपड़े-लत्तों आदि से है।

भूमि-सुधार के प्रचार-कार्य में "वामपंथी" गलतियों को सुधारो*

११ फरवरी १९४८

पिछले कुछ महीनों में बहुत सी जगहों पर हमारी समाचार-एजेन्सी और हमारे समाचारपत्रों ने किसी प्रकार का विवेचन या विश्लेषण किए बिना ऐसे अनेक गलत-सलत संवादों व लेखों को प्रसारित किया जिनमें "वामपंथी" भटकाव की गलतियां मौजूद हैं। कुछ मिसालें इस प्रकार है :

१. उन्होंने सामन्ती व्यवस्था को मिटाने के लिए गरीब किसानों और खेत-मजदूरों पर निर्भर रहने और मध्यम किसानों के साथ सुदृढ़ एकता कायम करने की कार्यदिशा का प्रचार नहीं किया, बल्कि एकतरफा तौर पर गरीब किसानों व खेत-मजदूरों की कार्यदिशा का प्रचार किया। उन्होंने इस विचार का प्रचार नहीं किया कि सर्वहारा वर्ग को साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद के शासन को उखाड़ फेंकने तथा चीन लोक गणराज्य और जनता की जनवादी सरकार की स्थापना करने के लिए तमाम मेहनतकश जनता और दूसरे उत्पीड़ित लोगों, यानी राष्ट्रीय पूंजी-

*यह अन्त पार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

पति वर्ग, **बुद्धिजीवियों** और अन्य देशभक्तों (जिनमें भूमि-सुधार का विरोध न करने वाले जागृत शरीफजादे शामिल हैं) के साथ एकता कायम करनी चाहिए, बल्कि एकतरफा तौर पर इस विचार का प्रचार किया कि गरीब किसान और खेत-मजदूर मुल्क को फतह करते हैं तथा उन्हीं को मुल्क का शासन चलाना चाहिए, अथवा यह कि जनवादी सरकार को केवल किसानों की ही सरकार होना चाहिए, या यह कि जनवादी सरकार को केवल मजदूरों, गरीब किसानों और खेत-मजदूरों की ही राय सुननी चाहिए, जबकि उन्होंने मध्यम किसानों, स्वतंत्र श्रमिकों, राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और बुद्धि-जीवियों का जिक्र तक नहीं किया। यह एक गम्भीर सैद्धान्तिक भूल है। फिर भी हमारी समाचार-एजेन्सी ने तथा हमारे समाचारपत्रों व रेडियो स्टेशनों ने इस तरह के संवादों का प्रचार-प्रसार किया है। और विभिन्न जगहों की पार्टी-कमेटियों के प्रचार विभाग इन भूलों के खिलाफ कोई कदम उठाने से चूक गए हैं। ऐसा प्रचार व्यापक रूप से न होते हुए भी पिछले कुछ महीनों में बार-बार हुआ है और इसने ऐसा माहौल बना दिया है जिसमें लोग गुमराह होकर यह विश्वास करने लगे हैं कि सही नेतृत्वकारी विचारों का प्रतिनिधित्व कहीं यही प्रचार तो नहीं कर रहा। उत्तरी शेनशी रेडियो से कुछ गलत समाचार-विवरण प्रसारित होने पर लोग गलती से यहां तक विश्वास करने लगे कि ये विचार केन्द्रीय कमेटी द्वारा अनुमोदित हैं।

२. पार्टी-सुदृढ़ीकरण के सवाल के बारे में कुछ इलाकों में इस बात का जोरदार प्रचार नहीं हुआ कि जहां वर्ग-उत्पत्ति की ओर से आंखें मूंद लेने का विरोध किया जाना चाहिए वहां वर्ग-उत्पत्ति

के अलावा बाकी हर चीज की ओर से आंखें मूंद लेने का भी विरोध किया जाना चाहिए; और तो और, ऐसा भूलभरा प्रचार भी हुआ है जिसमें सिर्फ वर्ग-उत्पत्ति पर ही ध्यान देने की पैरवी की जाती है।

३. भूमि-सुधार के सवाल के बारे में कुछ इलाकों में हिच-किचाहट और उतावलेपन दोनों के खिलाफ प्रचार का काम खासा अच्छा हुआ है; मगर बहुत से इलाकों में उतावलेपन को बढ़ावा दिया गया है और उसकी प्रशंसा में लेख तक छापे गए हैं। नेतृत्व और जन-समुदाय के बीच के सम्बन्धों के सवाल के बारे में कुछ इलाकों में तो फरमानशाही और दुमछल्लावाद दोनों का विरोध करने वाला प्रचार-कार्य चलाने पर ध्यान दिया गया है, मगर बहुत से इलाकों में "हर काम को वैसे ही करना जैसे जन-समुदाय चाहे" पर गलत जोर दिया गया है तथा जन-समुदाय के बीच मौजूद गलत विचारों के प्रति समझौतावादी रुख अपनाया गया है। यहां तक कि जन-समुदाय के नहीं बल्कि थोड़े से व्यक्तियों के गलत विचारों को भी बिना उनका खण्डन किए मान लिया गया है। ऐसा करने से पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका का निषेध होता है और दुमछल्लावाद को बढ़ावा मिलता है।

४. उद्योग व वाणिज्य और मजदूर-आन्दोलन से सम्बन्धित नीतियों के मामले में कुछ मुक्त क्षेत्रों में मौजूद गम्भीर "वामपंथी" भटकावों की या तो प्रशंसा की गई है अथवा फिर उनकी अनदेखी कर दी गई है।

सारांश यह कि पिछले कुछ महीनों के दौरान हमारे प्रचार-कार्य ने हमारे महान संघर्षों – युद्ध, भूमि-सुधार, पार्टी-सुदृढ़ीकरण,

उत्पादन और मोर्चे के समर्थन – को सही तौर पर प्रतिबिम्बित किया है और उनका सही ढंग से मार्गदर्शन किया है तथा इन संघर्षों में महान उपलब्धियां प्राप्त करने में मदद दी है ; यह हमारे प्रचार-कार्य का मुख्य पहलू है और सबसे पहले इसी को मानना होगा। मगर साथ ही कुछ भूलें और खामियां भी हैं जिन पर ध्यान देना होगा। इन भूलों और खामियों का स्वरूप उग्र-वामपंथी है। इनमें से कुछ तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों और दृष्टिबिन्दु के ठीक विपरीत हैं तथा केन्द्रीय कमेटी की कार्यदिशा से बिलकुल भटक गई हैं। आशा है कि केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरो व उपब्यूरो, उनके प्रचार विभाग, शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के केन्द्रीय और प्रादेशिक मुख्य कार्यालय तथा अखबारों में काम करने वाले तमाम कामरेड मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों और केन्द्रीय कमेटी की कार्यदिशा के आधार पर, पिछले कुछ महीनों के प्रचार-कार्य की जांच-पड़ताल करेंगे, अपनी उपलब्धियों का विस्तार करेंगे, अपनी भूलों को सुधार लेंगे और इस बात पर ध्यान देंगे कि उनका कार्य युद्ध, भूमि-सुधार, पार्टी-सुदृढ़ीकरण, मजदूर-आन्दोलन आदि इन महान संघर्षों की विजय की गारन्टी करने में तथा समूची साम्राज्यवाद-विरोधी व सामन्तवाद-विरोधी क्रान्ति की विजय की गारन्टी करने में मदद करे। इस जांच-पड़ताल की मुख्य जिम्मेदारी सभी क्षेत्रों की पार्टी-कमेटियों के प्रचार विभागों और शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के केन्द्रीय कार्यालय को अपने ऊपर ले लेनी चाहिए, तथा उन्हें यह भी चाहिए कि वे इस जांच-पड़ताल के नतीजों के बारे में नीति सम्बन्धी रिपोर्टों को खुद अपने नाम से ही केन्द्रीय कमेटी के प्रचार विभाग के समक्ष प्रस्तुत करें।

नए मुक्त क्षेत्रों में भूमि-सुधार सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण बातें*

१५ फरवरी १९४८

१. जल्दबाजी मत करो। भूमि-सुधार की रफ्तार परिस्थितियों, जन-समुदाय की राजनीतिक चेतना के स्तर और नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं की शक्ति के अनुसार निर्धारित की जानी चाहिए। भूमि-सुधार कुछ ही महीनों में पूरा कर लेने की कोशिश मत करो, बल्कि हर क्षेत्र में उसे दो या तीन वर्ष में पूरा करने की तैयारी करो। यही बात पुराने और अर्ध-पुराने मुक्त क्षेत्रों पर भी लागू होती है।

२. नए मुक्त क्षेत्रों में भूमि-सुधार के काम को दो मंजिलों में बांटकर करना चाहिए। पहली मंजिल के दौरान जमींदारों पर चोट करो और धनी किसानों को तटस्थ बनाए रखो। इस मंजिल के काम को भी कई कदमों में बांट लेना चाहिए ; पहले तो बड़े जमींदारों पर चोट करो और उसके बाद अन्य जमींदारों पर। जो जमींदार स्थानीय निरंकुश तत्व हों और जो न हों, उनसे भिन्न प्रकार का बरताव करना होगा, और इसी तरह बड़े, मझोले व छोटे जमींदारों से भी अलग-अलग ढंग से पेश आना होगा। दूसरी मंजिल के दौरान

*यह अन्तःपार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

जमीन का समान बंटवारा किया जाएगा, और इस बंटवारे में वह जमीन भी आ जाएगी जिसे धनी किसानों ने काश्त पर दे दिया है या जो उनके पास अतिरिक्त रूप में मौजूद है। मगर जो बरताव धनी किसानों के साथ किया जाए, वह जमींदारों के साथ किए जाने वाले बरताव से भिन्न प्रकार का होना चाहिए। जिन पर चोट करनी है, उनकी कुल तादाद कुल परिवारों के ८ फीसदी या कुल आबादी के १० फीसदी से अधिक आम तौर पर नहीं होनी चाहिए। अर्ध-पुराने मुक्त क्षेत्रों में भी बरताव का यह अन्तर और चोट का निशाना बनाने वालों की कुल तादाद यही रहनी चाहिए। पुराने मुक्त क्षेत्रों में ये सवाल नहीं उठते और वहां आम तौर पर जमीन के बंटवारे में कमी की पूर्ति करके सन्तुलन कायम करने[^1] की ही जरूरत है।

३. पहले तो गरीब किसान संघों को संगठित कर लो और फिर कुछ महीने बाद किसान सभाओं को संगठित करो। किसान सभाओं और गरीब किसान संघों में जमींदारों और धनी किसानों के मौका पाकर घुस जाने की सख्त रोकथाम करो। गरीब किसान संघों के सक्रिय तत्वों को किसान सभाओं के नेतृत्व का मेरुदण्ड बन जाना चाहिए, पर साथ ही मध्यम किसानों के सक्रिय तत्वों के एक भाग को भी किसान सभाओं की समितियों में शामिल करना चाहिए। भूमि-सुधार के संघर्ष में भाग लेने के लिए मध्यम किसानों को अवश्य खींच लेना चाहिए और उनके हितों का ध्यान रखना चाहिए।

४. काम सभी जगह एक साथ शुरू मत करो, बल्कि सुयोग्य कार्यकर्ताओं को चुनकर चन्द जगहों में काम करके अनुभव प्राप्त कर लो, फिर उस अनुभव को कदम-ब-कदम फैलाओ और काम

का विस्तार ऐसे करो जैसे लहरों का विस्तार होता है। यह बात समूचे रणनीतिक क्षेत्र पर भी लागू होती है और किसी अकेली काउन्टी पर भी। साथ ही यह पुराने और अर्ध-पुराने मुक्त क्षेत्रों पर भी लागू होती है।

५. सुदृढ़ मुक्त क्षेत्रों और छापामार क्षेत्रों के बीच भेद करो। सुदृढ़ मुक्त क्षेत्रों में तो भूमि-सुधार का काम कदम-ब-कदम आगे बढ़ाया जा सकता है। मगर छापामार क्षेत्रों में हमें चाहिए कि अपना काम प्रचार, गुप्त संगठन-कार्य और किसी खास हद तक चल-सम्पत्ति के बंटवारे तक ही सीमित रखें। जन-संगठन खुले तौर पर नहीं बनाए जाने चाहिए और न ही भूमि-सुधार करना चाहिए, जिस से जन-समुदाय को शत्रु द्वारा सताए जाने से बचाया जा सके।

६. जमींदारों के प्रतिक्रियावादी सशस्त्र दलों और प्रतिक्रियावादी जासूसी संगठनों को मिटा देना चाहिए और उन्हें अपने लिए हर्गिज इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

७. प्रतिक्रियावादी तत्वों को कुचल डालना चाहिए, मगर अन्धाधुन्ध वध करने की सख्त मनाही है; जानें जितनी ही कम ली जाएं उतना ही अच्छा। सभी प्राण-दण्डों पर पुनर्विचार करने और उन का अनुमोदन करने का कार्य काउन्टी-स्तर पर बनी एक कमेटी को करना चाहिए। जिन पर राजनीतिक सन्देह हो, उनके मामलों की सुनवाई और उनका फैसला करने का अधिकार जिला पार्टी-कमेटी के स्तर की कमेटियों को प्राप्त है। यह बात पुराने और अर्ध-पुराने मुक्त क्षेत्रों पर समान रूप से लागू होती है।

८. जो स्थानीय क्रान्तिकारी बुद्धिजीवी और अर्ध-बुद्धिजीवी जमींदार-परिवारों या धनी किसान-परिवारों में पैदा हुए हैं मगर

फिर भी भूमि-सुधार के समर्थक हैं, उनसे आधार-क्षेत्रों के निर्माण-कार्य में काम लेना चाहिए। लेकिन साथ ही ऐसे लोगों के बीच अपने शैक्षणिक काम में भी हमें तेजी लानी चाहिए और उन्हें सत्ताधिकार पर अपना कब्जा नहीं जमाने देना चाहिए, ताकि वे भूमि-सुधार के काम में बाधाएं न खड़ी करें। आम तौर पर करना यह चाहिए कि हम उन्हें उनके जन्म-स्थान वाले जिले या क्याङ में काम न करने दें। किसान-परिवारों के बुद्धिजीवियों और अर्ध-बुद्धिजीवियों को नियुक्त करने पर जोर दिया जाना चाहिए।

६. उद्योग और वाणिज्य की रक्षा के कार्य पर सख्ती से ध्यान दो। आर्थिक और वित्तीय मामलों की योजना बनाने और उनका प्रबन्ध करने में दूर भविष्य पर भी निगाह रखो। सशस्त्र सेनाओं और जिला-सरकारों व क्याङ-सरकारों, सबको चाहिए कि वे अपव्यय से बचने की भरपूर कोशिश करें।

नोट

[1] देखिए इसी ग्रन्थ में "चीनी क्रान्ति के नए ऊंचे उभार का स्वागत" शीर्षक रचना का नोट ११।

उद्योग और वाणिज्य सम्बन्धी नीति के बारे में*

२७ फरवरी १९४८

१. कुछ जगहों के पार्टी-संगठनों ने पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की उद्योग और वाणिज्य सम्बन्धी नीति का उल्लंघन किया है, जिससे उद्योग और वाणिज्य दोनों को भारी नुकसान पहुंचा है। इन गलतियों को जल्द से जल्द सुधार लिया जाना चाहिए। उन्हें सुधारने में इन जगहों की पार्टी-कमेटियों को संजीदगी के साथ दो पहलुओं से जांच-परख करनी होगी : निर्देशक उसूलों के पहलू से और नेतृत्व के तरीकों के पहलू से।

२. निर्देशक उसूल। देहाती इलाकों में जमींदारों और धनी किसानों से संघर्ष करने और सामन्ती शक्तियों को मिटाने के लिए जिन उपायों से काम लिया जाता है, उन्हें नगरों में लागू करने की गलती से बचने के हेतु पहले से ही चौकसी रखी जानी चाहिए। जमींदारों व धनी किसानों द्वारा किए जाने वाले सामन्ती शोषण को जड़ से उखाड़ फेंकने तथा जमींदारों व धनी किसानों द्वारा चलाए जाने वाले उद्योग व वाणिज्य सम्बन्धी कारोबारों की रक्षा

*यह अन्तःपार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

करने के बीच सख्त भेद करना चाहिए। उत्पादन का विकास करने, आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देने, सार्वजनिक हितों व निजी हितों दोनों का ध्यान रखने और श्रम व पूंजी दोनों को लाभ पहुंचाने के सही उसूल और तथाकथित "राहत देने" वाले एकतरफा व संकीर्ण उसूल के बीच, जो मजदूरों के कल्याण की हिमायत करने का दावा करता है लेकिन असल में उद्योग व वाणिज्य को नुकसान पहुंचाता है और जन-क्रान्ति के कार्य को कमजोर बनाता है, सख्त भेद करना चाहिए। मजदूर संघों के कामरेडों और मजदूर समुदाय के बीच शैक्षणिक कार्य करना चाहिए, ताकि वे यह समझ सकें कि मजदूर वर्ग के व्यापक, दीर्घकालीन हितों को भूलकर केवल फौरी और आंशिक हितों को ही ध्यान में नहीं रखना चाहिए। सार्वजनिक हितों व निजी हितों दोनों का ध्यान रखने, श्रम व पूंजी दोनों को लाभ पहुंचाने और युद्ध को सहायता देने के उद्देश्य की प्राप्ति के हेतु, लागत घटाने, उत्पादन बढ़ाने और बिक्री को बढ़ावा देने की भरसक कोशिश करने के लिए स्थानीय सरकार की रहनुमाई में अपनी उत्पादन-प्रबन्ध समितियां संयुक्त रूप से संगठित कर लेने के मामले में मजदूरों और पूंजीपतियों का पथप्रदर्शन किया जाना चाहिए। ऊपर बताए गए उसूलों में सबके सब उसूलों को, अधिकतर उसूलों को या कुछ उसूलों को ठीक से लागू करने में चूक जाना ही बहुत सी जगहों पर की गई गलतियों का कारण है। केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरोओं और उपब्यूरोओं को चाहिए कि वे इस सवाल को साफ तौर पर उठाएं, विश्लेषण करें, जांच-परख करें, सही उसूल निर्धारित करें और अन्तःपार्टी निर्देश और सरकारी फरमान जारी करें।

३. नेतृत्व के तरीके। उसूलों के तय हो जाने और निर्देशों के

जारी हो चुकने पर केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरोओं और उपब्यूरोओं को अपनी क्षेत्रीय पार्टी-कमेटियों और प्रिफेक्चर पार्टी-कमेटियों अथवा अपने ही द्वारा भेजे गए कार्य-दलों के साथ तार या टेलीफोन के जरिए, गाड़ी-सवार या घुड़सवार हरकारों के जरिए अथवा व्यक्तिगत मुलाकातों के जरिए घनिष्ठ सम्पर्क बनाए रखना चाहिए; उन्हें अखबार को अपने संगठन-कार्य और नेतृत्व-कार्य के अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए। उन्हें यथासमय अपने काम की प्रगति को अच्छी तरह अपनी गिरफ्त में रखना चाहिए, अनुभवों का आदान-प्रदान करना चाहिए और गलतियों को सुधार लेना चाहिए। व्यापक जांच-पड़ताल करने और गलतियों को व्यापक रूप से सुधारने के लिए अनुभवों का निचोड़ निकालने वाले सभा-सम्मेलन बुलाने के हेतु उन्हें कई महीनों तक, आधे वर्ष तक अथवा एक वर्ष तक इन्तजार नहीं करना चाहिए। इन्तजार करने से भारी नुकसान होता है, जबकि गलतियां करते ही फौरन उन्हें सुधार लेने से कम नुकसान होता है। साधारण परिस्थिति में, केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरोओं को इस बात की जोरदार कोशिश करनी चाहिए कि वे अपने मातहत संगठनों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क बनाए रखें, क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए, इन दोनों के बीच एक सुस्पष्ट विभाजन-रेखा खींचने की अक्सर सावधानी रखें और अपने मातहत संगठनों को लगातार इस बात की याद दिलाते रहें, ताकि वे ज्यादा गलतियां न करें। ये सभी सवाल नेतृत्व के तरीकों से सम्बन्धित सवाल हैं।

४. पार्टी के सभी कामरेडों को यह बात समझ लेनी चाहिए कि शत्रु अब पूरी तरह से अकेला पड़ चुका है। लेकिन उसके अकेले

पड़ने का मतलब यह नहीं है कि हमारी जीत हो चुकी है। अगर हम अपनी नीति में गलतियां करेंगे तो जीत अब भी हमारे हाथ नहीं आ पाएगी। ठोस रूप में यह कहा जा सकता है कि पांच नीतियों, यानी युद्ध, पार्टी-सुदृढ़ीकरण, भूमि-सुधार, उद्योग-वाणिज्य और प्रतिक्रान्तिकारियों के दमन से सम्बन्धित नीतियों में से किसी एक भी नीति में अगर हमने उसूली गलती की और उसे सुधारा नहीं, तो हम असफल रहेंगे। एक क्रान्तिकारी पार्टी की नीति उसकी सभी व्यावहारिक कार्यवाहियों का प्रस्थान-बिन्दु होती है, तथा उसकी अभिव्यक्ति उस पार्टी की कार्यवाहियों की प्रक्रिया और उनके अन्तिम परिणाम में होती है। एक क्रान्तिकारी पार्टी जब भी कोई कार्यवाही करती है, तो वह किसी न किसी नीति को ही कार्यान्वित करती है। यदि वह एक सही नीति को कार्यान्वित नहीं करती तो वह एक गलत नीति को कार्यान्वित करती है ; यदि वह किसी विशेष नीति को जागरूक होकर कार्यान्वित नहीं करती तो अन्धी होकर कार्यान्वित करती है। जिस चीज को हम अनुभव का नाम देते है, वह किसी नीति को कार्यान्वित करने की प्रक्रिया और उसका अन्तिम परिणाम ही है। केवल जनता के अमल के जरिए ही, अर्थात अनुभव के जरिए ही, हम किसी नीति के सही या गलत होने की परख कर सकते है और इस बात का निश्चित रूप से पता लगा सकते है कि वह किस सीमा तक सही या गलत है। लेकिन लोगों का अमल, खास तौर पर एक क्रान्तिकारी पार्टी और क्रान्तिकारी जन-समुदाय का अमल, किसी न किसी नीति से बंधे बिना नहीं रह सकता। इसलिए कोई भी कार्यवाही करने के पहले, हमें अपनी नीति को, जिसे हमने ठोस परिस्थितियों को ध्यान में रखकर निर्धारित किया

है, पार्टी-सदस्यों और गैरपार्टी जन-समुदाय के सामने स्पष्ट करना चाहिए। वरना पार्टी-सदस्य और गैरपार्टी जन-समुदाय हमारी नीति के मार्गदर्शन से भटक जाएंगे, बिना समझे-बूझे कार्यवाही करेंगे और एक गलत नीति को कार्यान्वित करेंगे।

राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और जागृत शरीफजादों के सवाल के बारे में*

१ मार्च १९४८

मौजूदा मंजिल में चीनी क्रान्ति अपने स्वरूप की दृष्टि से सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में व्यापक जन-समुदाय की साम्राज्यवाद-विरोधी, सामन्तवाद-विरोधी और नौकरशाही-पूंजीवाद-विरोधी क्रान्ति है। व्यापक जन-समुदाय का अर्थ उन सभी लोगों से है जो साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद द्वारा उत्पीड़ित और आहत हैं या उनके बन्धनों में जकड़े हुए हैं, अर्थात मजदूर, किसान, सिपाही, बुद्धिजीवी, व्यापारी और दूसरे सभी देशभक्त, जैसा कि चीनी जन-मुक्ति सेना के अक्तूबर १९४७ के घोषणापत्र में साफ-साफ बयान किया गया है।[1] घोषणापत्र में "बुद्धिजीवी" का तात्पर्य उन सभी बुद्धिजीवियों से है जो अत्याचार के शिकार हैं और बन्धनों में जकड़े हुए हैं। "व्यापारी" का तात्पर्य उन सभी राष्ट्रीय पूंजीपतियों से है जो अत्याचार के शिकार हैं और बन्धनों में बंधे हुए हैं, यानी मध्यम पूंजीपति वर्ग और निम्न-पूंजीपति वर्ग के लोग। "दूसरे देशभक्त" का तात्पर्य मुख्य रूप से जागृत शरीफजादों से है। मौजूदा मंजिल

*यह अन्तःपार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

में चीनी क्रान्ति एक ऐसी क्रान्ति है जिसमें इन सभी लोगों ने एक होकर साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा बना रखा है और जिसका मुख्य संघटक मेहनतकश जनता है। मेहनतकश जनता का मतलब उन सभी लोगों से है जो शारीरिक श्रम करते हैं (जैसे मजदूर, किसान, दस्तकार आदि) और जो मानसिक श्रम करते हैं किन्तु शारीरिक श्रम करने वाले लोगों के नजदीक हैं और शोषक नहीं बल्कि शोषित हैं। मौजूदा मंजिल में चीनी क्रान्ति का लक्ष्य है साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद के शासन का तख्ता उलट देना और व्यापक जन-समुदाय का एक ऐसा नव-जनवादी गणराज्य स्थापित करना जिसका मुख्य संघटक मेहनतकश जनता हो, न कि पूंजीवाद को आम तौर पर मिटा देना।

जिन जागृत शरीफजादों ने अतीत काल में हमसे सहयोग किया था, जो इस समय भी हमसे सहयोग कर रहे हैं और अमरीका तथा च्याङ काई-शेक का विरोध करने और भूमि-सुधार करने का समर्थन करते हैं, उनका हमें परित्याग नहीं करना चाहिए। शानशी-स्वेइय्वान सीमान्त क्षेत्र के ल्यू शाओ-पाए और शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के ली तिङ-मिङ[२] आदि लोगों की ही मिसाल लीजिए। चूंकि उन्होंने जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान और उसके बाद के कठिन समय में हमारी काफी मदद की थी और जब हम भूमि-सुधार करने लगे तो इस कार्य में उन्होंने न तो कोई बाधा डाली और न ही भूमि-सुधार का विरोध किया, इसलिए उनके साथ एकता कायम करने की अपनी नीति हमें जारी रखनी चाहिए। लेकिन उनके साथ एकता कायम करने का मतलब यह नहीं है कि हम उन्हें

चीनी क्रान्ति का स्वरूप निर्धारित करने वाली एक शक्ति मान लें। किसी क्रान्ति का स्वरूप निर्धारित करने वाली शक्तियां एक ओर तो उस क्रान्ति के मुख्य शत्रु होते हैं और दूसरी ओर मुख्य क्रान्तिकारी। मौजूदा समय में हमारे मुख्य शत्रु हैं साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद, तथा इन शत्रुओं के खिलाफ संघर्ष के दौरान हमारी मुख्य शक्तियां हैं शारीरिक और मानसिक श्रम में लगी हुई वह समस्त जनता जो देश की आबादी का नब्बे फीसदी हिस्सा है। इससे यह तय हुआ कि मौजूदा मंजिल में हमारी क्रान्ति अपने स्वरूप की दृष्टि से एक नव-जनवादी क्रान्ति है, जनता की जनवादी क्रान्ति है और अक्तूबर क्रान्ति जैसी समाजवादी क्रान्ति से भिन्न प्रकार की है।

राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग में जो थोड़े से दक्षिणपंथी लोग अपने को साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद के साथ जोड़ते हैं और जनता की जनवादी क्रान्ति का विरोध करते हैं, वे भी क्रान्ति के शत्रु ही हैं, जबकि राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग में जो वामपंथी लोग अपने को मेहनतकश जनता के साथ जोड़ते हैं और प्रतिक्रियावादियों का विरोध करते हैं, वे भी क्रान्तिकारी ही हैं, और वे थोड़े से जागृत शरीफजादे भी क्रान्तिकारी ही हैं जो सामन्ती वर्ग से अपना सम्बन्ध तोड़कर अलग हो चुके हैं। लेकिन न तो पहले प्रकार के लोग शत्रु पक्ष का मुख्य संघटक हैं और न दूसरे प्रकार के लोग क्रान्तिकारी पक्ष का मुख्य संघटक हैं, और इसलिए इनमें से कोई भी क्रान्ति का स्वरूप निर्धारित कर सकने वाली शक्ति नहीं है। राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग एक ऐसा वर्ग है जो राजनीतिक रूप से बहुत ही कमजोर और डांवांडोल है। लेकिन इस वर्ग के अधिकतर

लोग या तो जनता की जनवादी क्रान्ति में भाग लेंगे अथवा उस क्रान्ति में तटस्थ बने रहेंगे, क्योंकि वे भी साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद के अत्याचार के शिकार हैं और उनके बन्धनों में जकड़े हुए हैं। वे व्यापक जन-समुदाय का अंग तो हैं लेकिन उसका मुख्य संघटक नहीं है और न क्रान्ति का स्वरूप निर्धारित करने वाली शक्ति ही है। फिर भी चूंकि वे आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण हैं तथा या तो अमरीका व च्यांग काई-शेक के खिलाफ संघर्ष में भाग ले सकते हैं अथवा उस संघर्ष में तटस्थता का रुख अपना सकते हैं, इसलिए उनके साथ एकता कायम करना हमारे लिए मुमकिन और जरूरी है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के जन्म के पहले सुन यात-सेन की अगुवाई में क्वोमिन्ताङ ने राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के प्रतिनिधि की हैसियत से उस समय की चीनी क्रान्ति (पुराने ढंग की अपूर्ण जनवादी क्रान्ति) का नेतृत्व-कार्य सम्भाला था। लेकिन चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म हो जाने और उसकी क्षमता प्रकट हो जाने के बाद, क्वोमिन्ताङ चीनी क्रान्ति (नव-जनवादी क्रान्ति) का नेतृत्व नहीं कर सकती थी। राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग ने १९२४-२७ के क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लिया, जबकि १९२७-३१ के दौरान (१८ सितम्बर १९३१ की घटना के पहले) उस वर्ग के लोगों की एक अच्छी खासी तादाद ने च्यांग काई-शेक के प्रतिक्रियावाद का साथ दिया। लेकिन इसकी वजह से किसी को यह नहीं सोच लेना चाहिए कि उस काल के दौरान राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को राजनीतिक रूप से अपनी ओर मिला लेने और आर्थिक रूप से उसकी रक्षा करने की कोशिश हमें करनी ही नहीं चाहिए थी, या यह कि उस काल के दौरान राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के प्रति हमारी उग्र-वामपंथी नीति एक

दुस्साहसवादी नीति थी ही नहीं। इसके विपरीत उस काल की हमारी नीति फिर भी राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग की रक्षा करने और उस वर्ग को अपने पक्ष में मिला लेने की ही नीति होनी चाहिए थी, ताकि सारी ताकत हम मुख्य शत्रुओं से लड़ने में ही केन्द्रित कर पाते। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल में राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग युद्ध में शरीक एक ऐसा वर्ग था जो कभी क्वोमिन्ताङ के पक्ष में तो कभी कम्युनिस्ट पार्टी के पक्ष में डावांडोल होता रहता था। वर्तमान मंजिल में राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग की बहुसंख्या ऐसी है जिसके मन में अमरीका तथा च्यांग काई-शेक के प्रति घृणा का भाव बढ़ता जा रहा है; उस वर्ग के वामपंथी लोग अपने को कम्युनिस्ट पार्टी के साथ और दक्षिणपंथी लोग क्वोमिन्ताङ के साथ जोड़ते हैं, जबकि उसके मध्यवर्ती तत्व दोनों पार्टियों के प्रति एक हिचकिचाहटभरा, हवा का रुख भांपने वाला रवैया अपनाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग की बहुसंख्या को अपनी ओर मिलाना और उसकी अल्पसंख्या को अलगाव की स्थिति में डाल देना हमारे लिए जरूरी और मुमकिन हो गया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें चाहिए कि हम इस वर्ग की आर्थिक स्थिति के सवाल को हल करने में संजीदगी से काम लें और उसूली तौर पर उसकी बिना भेदभाव के रक्षा करने की नीति अपना लें। वरना हम राजनीतिक गलतियां करेंगे।

आगत शरीफजादे जमींदार वर्ग और धनी किसान वर्ग के जनवादी रुझान वाले इनेगिने व्यक्ति हैं। ऐसे व्यक्तियों और नौकरशाही-पूंजीवाद व साम्राज्यवाद के बीच तथा एक खास हद तक उनके और सामन्ती जमींदारों व धनी किसानों के बीच भी अन्तरविरोध

मौजूद है। उनके साथ एकता हम इसलिए नहीं कायम करते कि राजनीतिक रूप से वे कोई बड़ी शक्ति है या उनका कोई खास आर्थिक महत्व है (उनके द्वारा सामन्ती व्यवस्था के अनुसार अधिकृत की गई जमीन उनकी रजामन्दी से बंटवारे के लिए किसानों के हवाले कर दी जानी चाहिए), बल्कि इसलिए कायम करते है कि जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान और अमरीका व च्याङ काई-शेक के खिलाफ संघर्ष के दौरान उन्होंने राजनीतिक रूप से हमारी काफी मदद की है। भूमि-सुधार के दौरान अगर कुछ जागृत शरीफजादे हमारे भूमि-सुधार का समर्थन करें तो इससे देशभर में भूमि-सुधार के कार्य को भी लाभ होगा। इससे खास तौर पर समस्त देश के बुद्धिजीवियों (जिनमें अधिकांश लोग जमीदार-परिवारों और धनी किसान-परिवारों में पैदा हुए है), राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग (जिसके अधिकांश लोगों का जमीन के साथ ताल्लुक है) और जागृत शरीफजादों (जो कई लाख है) को अपनी ओर मिलाने में तथा साथ ही चीनी क्रान्ति के मुख्य शत्रु प्रतिक्रियावादी च्याङ काई-शेक गुट को अलगाव में डाल देने में सहायता मिलेगी। अपनी ठीक इसी भूमिका के कारण जागृत शरीफजादे भी साम्राज्यवाद-विरोधी, सामन्तवाद-विरोधी और नौकरशाही-पूंजीवाद-विरोधी क्रान्तिकारी संयुक्त मोर्चे का एक तत्व है; इसलिए उनके साथ एकता कायम करने के सवाल पर भी जरूर ध्यान देना होगा। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान जागृत शरीफजादों से हम यह मांग करते थे कि उन्हें जापान का प्रतिरोध करने की हिमायत करनी चाहिए, जनवाद की हिमायत करनी चाहिए (कम्युनिस्ट-विरोधी नहीं होना चाहिए) और लगान व सूद कम करने की हिमायत करनी चाहिए;

वर्तमान मंजिल में उनसे हम यह मांग करते है कि वे अमरीका-विरोधी और च्याङ काई-शेक-विरोधी संघर्ष की हिमायत करें, जनवाद की हिमायत करें (कम्युनिस्ट-विरोधी न हों) और भूमि-सुधार की हिमायत करें। अगर वे इन मांगों को पूरा करें, तो हमें उनसे बिना किसी अपवाद के एकता कायम करनी चाहिए और एकता कायम करते समय उन्हें शिक्षित भी करना चाहिए।

नोट

१ देखिए इसी ग्रन्थ में "चीनी जन-मुक्ति सेना का घोषणापत्र" शीर्षक रचना में सूचीबद्ध आठ नीतियों में से पहली नीति।

२ ल्यू शाओ-पाए शानशी-स्वेइय्वान सीमान्त क्षेत्र का एक जागृत शरीफजादा था, जिसे शानशी-स्वेइय्वान सीमान्त क्षेत्र की अस्थाई प्रतिनिधि-सभा का उपाध्यक्ष निर्वाचित किया गया था। ली तिङ-मिङ उत्तरी शेनशी प्रान्त का एक जागृत शरीफजादा था, जिसे शेनशी-कानसू निङश्या सीमान्त क्षेत्र सरकार का उपाध्यक्ष निर्वाचित किया गया था।

उत्तर-पश्चिम की महान विजय के बारे में तथा मुक्ति सेना में एक नए किस्म के सुदृढ़ीकरण आन्दोलन के बारे में*

७ मार्च १९४८

उत्तर-पश्चिमी जन-मुक्ति सेना की हाल की महान विजय पर टिप्पणी करते हुए जन-मुक्ति सेना के जनरल हेडक्वार्टर के एक प्रवक्ता ने कहा : इस विजय ने उत्तर-पश्चिम की स्थिति पलट दी है और यह मध्यवर्ती मैदान की स्थिति पर भी असर डालेगी। इसने साबित कर दिया है कि "दुखों का वर्णन करने" और "तीन किस्म की जांच करने" के तरीके इस्तेमाल करके जन-मुक्ति सेना एक नए किस्म के सुदृढ़ीकरण आन्दोलन के जरिए अपने आपको अपराजेय बना लेगी।

प्रवक्ता ने कहा : इस बार उत्तर-पश्चिमी जन-मुक्ति सेना ने ईछ्वान में शत्रु की एक ब्रिगेड को अचानक घेर लिया, और हू चुड-नान ने अपनी २९वीं फौजी कोर के कमाण्डर ल्यू खान को आदेश दिया कि वह कुमक के तौर पर लोछ्वान-ईच्वुन लाइन से दो

*यह टिप्पणी कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी जन-मुक्ति सेना के जनरल हेडक्वार्टर के प्रवक्ता के लिए तैयार की थी। उस समय उत्तर-पश्चिम की रण-भूमि में शत्रु के आक्रमण को चकनाचूर किया जा चुका था और हमारी सेना

पुनर्गठित डिवीजनों की चार ब्रिगेडें जल्दी ही ईछ्वान भेज दें। ये चार ब्रिगेडें, पुनर्गठित २७वीं डिवीजन की ३१वीं और ४७वीं ब्रिगेडें और पुनर्गठित ९०वीं डिवीजन की ५३वीं और ६१वीं ब्रिगेडें थीं और इनमें कुल मिलाकर २४,००० से अधिक सैनिक थे ; ये ब्रिगेडें २८ फरवरी को ईछ्वान के दक्षिण-पश्चिम के इलाके में पहुंचीं। उत्तर-पश्चिमी जन-मुक्ति सेना ने दुश्मन के खिलाफ विनाश की लड़ाई शुरू की तथा २९ फरवरी और १ मार्च को तीस घण्टे की लड़ाई में दुश्मन की उक्त कुमक का पूरी तरह सफाया कर डाला और किसी को भी बचकर निकलने नहीं दिया। १८,००० से अधिक शत्रु-सैनिक बन्दी बना लिए गए और ५,००० से अधिक हताहत हुए ; खुद ल्यू खान, ९०वीं डिवीजन का कमाण्डर येन मिङ तथा अन्य अफसर मारे गए। फिर ३ मार्च को हमने ईछ्वान पर कब्जा कर लिया और वहां भी नगर के बचाव के लिए तैनात शत्रु की पुनर्गठित ७६वीं डिवीजन की २४वीं ब्रिगेड के ५,००० से अधिक सैनिकों का सफाया कर डाला। इस मुहिम में हमने कुल मिलाकर

शत्रु के एक फौजी कोर हेडक्वार्टर, दो डिवीजन हेडक्वार्टरों और पांच ब्रिगेडों का, यानी उसके कुल ३०,००० सैनिकों का सफाया कर डाला। उत्तर-पश्चिम की रणभूमि में हमारी यह पहली महान जीत है।

उत्तर-पश्चिम की रणभूमि की स्थिति का विश्लेषण करते हुए प्रवक्ता ने कहा : हू चुङ-नान की सीधी कमान में तथाकथित "केन्द्रीय सेना" की २८ ब्रिगेडों में से ८ ब्रिगेडें उसकी तीन मुख्य डिवीजनों यानी पुनर्गठित पहली, ३६वीं और ९०वीं डिवीजनों का भाग थीं। इन डिवीजनों में से पुनर्गठित पहली डिवीजन की पहली ब्रिगेड का सफाया सितम्बर १९४६ में दक्षिणी शानशी में फ़ूशान नामक स्थान पर हम एक बार पहले भी कर चुके थे और उसी डिवीजन की १६७वीं ब्रिगेड की मुख्य सैन्य-शक्ति का सफाया भी पिछले साल मई में उत्तरी शेनशी के फानलुङ कस्बे में हमने एक बार किया था ; उसी तरह पुनर्गठित ३६वीं डिवीजन की १२३वीं और १६५वीं ब्रिगेडों का सफाया पिछले साल अगस्त में उत्तरी शेनशी की शाचि

ने खुद अपना आक्रमण शुरू कर दिया था। इस टिप्पणी में उत्तर-पश्चिम की रणभूमि की स्थिति का विश्लेषण किया गया और दूसरी रणभूमियों की स्थिति की भी रूपरेखा पेश की गई। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि इसमें "दुखों का वर्णन करने" और "तीन किस्म की जांच करने" के तरीकों के जरिए सेना में एक नए किस्म का सुदृढ़ीकरण आन्दोलन चलाने की भारी अहमियत पर जोर दिया गया। नए किस्म का यह आन्दोलन जन-मुक्ति सेना के राजनीतिक कार्य और जनवादी आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण विकास था। सभी मुक्त क्षेत्रों में भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने के जो आन्दोलन उस समय जोर-शोर से चल रहे थे, सेना में यह उन्हीं का प्रतिबिम्ब था। इस आन्दोलन ने सभी अफसरों और सिपाहियों की राजनीतिक चेतना, अनुशासन और युद्ध-क्षमता को बहुत अधिक बढ़ा दिया। साथ ही इसने बन्दी बनाए गए क्वोमिन्ताङ सिपाहियों की बड़ी तादाद को मुक्ति सेना के योद्धा बनाने के लिए उनका सुधार करने की प्रक्रिया को बेहद कारगर ढंग से तेज कर दिया। इस तरह इसने जन-मुक्ति सेना को सुदृढ़ बनाने और उसका विस्तार करने तथा रणभूमि में विजय को सुनिश्चित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस आन्दोलन की अहमियत को समझने के लिए देखिए इसी ग्रन्थ में "सेना में जनवादी आन्दोलन", "शानशी-स्वेइय्वान मुक्त क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में भाषण" और "सितम्बर मीटिंग के बारे में – चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का सरकुलर" शीर्षक रचनाएं।

काउन्टी के शाच्यात्येन नामक स्थान पर एक बार किया जा चुका था ; और इस बार पुनर्गठित ६०वीं डिवीजन का भी पूरी तरह सफाया कर डाला गया। हू चुङ-नान की मुख्य सैन्य-शक्ति के अवशेषों में से केवल पुनर्गठित पहली डिवीजन की ७८वीं ब्रिगेड और पुनर्गठित ३६वीं डिवीजन की २८वीं ब्रिगेड का सफाया अभी तक नहीं हो पाया। इसलिए यह कहा जा सकता है कि हू चुङ-नान की पूरी सेना में कोई चुनिन्दा फौजी यूनिट नहीं रही। ईछ्वान में हुई विनाश की लड़ाई के फलस्वरूप २८ नियमित ब्रिगेडों में से, जो पहले हू चुङ-नान की सीधी कमान में थीं, अब केवल २३ ही बच गई हैं। ये २३ ब्रिगेडें इन इलाकों में फैली हुई हैं : दक्षिणी शानशी में लिनफन नामक स्थान पर १ ब्रिगेड है जिसे बेहरकत कर दिया गया है और जिसका नाश अवश्यम्भावी है ; ६ ब्रिगेडें शेनशी-हनान सरहद पर और लोयाङ-थुङक्वान लाइन पर तैनात हैं जिनका काम छन कङ और श्ये फू-च की कमान में लड़ने वाली हमारी रणांगन-सेना से निबटना है ; और एक अन्य ब्रिगेड दक्षिणी शेनशी में हानचुङ इलाके की रखवाली कर रही है। बाकी १२ ब्रिगेडें थुङक्वान से पाओची और श्येनयाङ से येनान तक "T" के आकार वाली संचार-लाइनों पर जहां-तहां तैनात हैं। इनमें से ३ "क्षतिपूरित ब्रिगेडें"[1] हैं जिनमें केवल रंगरूट ही रंगरूट हैं ; २ ब्रिगेडें ऐसी हैं जिनका हमारी सेना के हाथों पूरी तरह सफाया हो चुका है और जिनमें हाल ही में नए सिरे से क्षतिपूर्ति हुई है ; २ अन्य ब्रिगेडें हमारे हाथों कमरतोड़ चोटें खा चुकी हैं और ५ को औरों की अपेक्षा कम चोटें लगी हैं। यह देखा जा सकता है कि ये सैन्य-शक्तियां न सिर्फ बहुत कमजोर हैं, बल्कि प्रायः गैरिजन ड्यूटी ही देती हैं। हू चुङ-

नान की सेना के अतिरिक्त २ ब्रिगेडें तङ पाओ-शान के मातहत ख्वीलिन के बचाव के लिए तैनात हैं, जबकि निङश्या प्रान्त के मा हुङ-ख्वेइ और छिङहाए प्रान्त के मा पू-फाङ के मातहत ६ ब्रिगेडें सानप्येन और लुङतुङ के इलाकों में बिखरी हुई हैं। अब हू चुङ-नान, तङ पाओ-शान तथा मा हुङ-ख्वेइ और मा पू-फाङ के मातहत सभी नियमित फौजों की कुल ३४ ब्रिगेडें हैं, जिनमें ऐसी यूनिटें भी हैं जिनकी एक-एक या दो-दो बार सफाया हो चुकने के बाद नए सिरे से क्षतिपूर्ति की गई है।

उत्तर-पश्चिम में शत्रु का ऐसा ही हाल है। अब आइए "T" के आकार वाली संचार-लाइनों पर। यहां जिन ५ ब्रिगेडों को औरों की अपेक्षा कम चोटें लगी हैं, उनमें से २ येनान में घिरी पड़ी हैं और ३ बृहत्तर क्वानचुङ क्षेत्र में हैं। रहीं वहां की अन्य ब्रिगेडें, उनमें से अधिकतर की हाल ही में नए सिरे से क्षतिपूर्ति हो चुकी है और कुछ ब्रिगेडों को कमरतोड़ चोटें लग चुकी हैं। इसे यों कहें कि पूरे बृहत्तर क्वानचुङ क्षेत्र में और खास तौर से कानसू प्रान्त में शत्रु की सैन्य-शक्तियां बिखरी हुई और कमजोर हैं तथा जन-मुक्ति सेना की आक्रमणात्मक कार्यवाही को रोक नहीं सकतीं। यह स्थिति दक्षिणी मोर्चे पर च्याङ काई-शेक द्वारा किए गए सैन्य-विन्यास के एक अंश पर और सबसे पहले छन कङ और श्ये फू-च के अधीन हमारी रणांगन-सेना के मुकाबले हनान-शेनशी सरहद पर च्याङ काई-शेक द्वारा किए गए सैन्य-विन्यास पर जरूर असर डालेगी। दक्षिण की ओर अपने मौजूदा आक्रमण के दौरान उत्तर-पश्चिमी जन-मुक्ति सेना ने अपना झण्डा फहराने के साथ-साथ जीत हासिल की है, धूम मचा देने वाली शोहरत हासिल की है और उत्तर-पश्चिम

में हमारे और शत्रु के बीच के शक्ति-सन्तुलन को बदल डाला है। अब से यह सेना दक्षिणी मोर्चे पर जन-मुक्ति सेना की सैन्य-शक्तियों के साथ और भी कारगर ढंग से तालमेल कायम करके फौजी कार्यवाही करने में समर्थ होगी।

प्रवक्ता ने कहा : पिछली गरमियों और शरद से लेकर अब तक ल्यू पो-छङ और तङ श्याओ-फिङ, छन ई और सू य्वी, तथा छन कङ और श्ये फू-च की कमान में हमारी तीन रणांगन-सेनाएं पीली नदी को पारकर दक्षिण की ओर बढ़ी है तथा याङत्सी नदी, ह्वाए नदी, पीली नदी और हानश्वेइ नदी के बीच के प्रदेश में उसके चप्पे-चप्पे पर छा गई है। उन्होंने भारी संख्या में शत्रु-सेनाओं का सफाया कर दिया है, दक्षिणी मोर्चे पर च्याङ काई-शेक की कुल १६० से अधिक ब्रिगेडों में से कोई ६० ब्रिगेडों को परिचालित करके अपनी ओर खींच लिया है, उसकी सेनाओं को निष्क्रियता की स्थिति में पड़ने के लिए मजबूर कर दिया है, निर्णायक रणनीतिक भूमिका अदा की है और सारे देश की जनता से प्रशंसा प्राप्त की है।[1] शून्य से ३० डिग्री नीचे तक की कड़ाके की ठण्ड को बहादुरी से झेलकर हमारी उत्तर-पूर्वी रणांगन-सेना ने अपनी शीतकालीन आक्रमणात्मक कार्यवाही से शत्रु-सेनाओं के अधिकांश भाग को नेस्तनाबूद कर दिया है, एक के बाद एक कई सुविख्यात नगरों पर कब्जा कर लिया है और सारे देश में अपनी शोहरत की धूम मचा दी है।[2] पिछले साल की वीरतापूर्ण लड़ाइयों में भारी संख्या में शत्रु-सेनाओं का सफाया करने[3] के बाद शानशी-छाहाङ-हपे क्षेत्र, शानतुङ, उत्तरी च्याङसू और शानशी-हपे-शानतुङ-हनान क्षेत्र की हमारी रणांगन-सेनाओं ने पिछले जाड़ों में अपने को सुदृढ़ बनाने और ट्रेनिंग हासिल

करने का कार्य सम्पन्न कर लिया है और जल्दी ही वे अपनी वसन्त-कालीन आक्रमणात्मक कार्यवाहियां[1] शुरू कर देंगी। पूरी स्थिति के सिंहावलोकन से एक सच्चाई साबित हो जाती है कि अगर हमने रूढ़िवाद का और शत्रु व कठिनाइयों से डरने की भावना का डटकर विरोध किया तथा अगर हमने पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की आम रणनीति का और फौजी कार्यवाही सम्बन्धी दस मुख्य उसूलों[2] के बारे में उसकी हिदायतों का पालन किया, तो हम अपनी आक्रमणात्मक कार्यवाही शुरू कर सकते है, भारी संख्या में शत्रु-सेनाओं का सफाया कर सकते है और च्याङ काई-शेक डाकू-गुट की सैन्य-शक्तियों पर ऐसी चोटें कर सकते है कि वे जवाबी चोटें करने में असमर्थ होकर सिर्फ वक्ती तौर पर ही हमारी चोटों से अपना पहलू बचा सकें या अपना पहलू बचाना भी उनके बस में न रहे और एक-एक करके उन सबका हमारे द्वारा पूरी तरह सफाया कर दिया जाए।

प्रवक्ता ने जोर दिया : हमारी उत्तर-पश्चिमी रणांगन-सेना की युद्ध-क्षमता पिछले साल के किसी भी समय के मुकाबले कहीं अधिक बढ़ गई है।[3] पिछले साल की फौजी कार्यवाही में उत्तर-पश्चिमी रणांगन-सेना एक हल्ले में अधिक से अधिक दो शत्रु-ब्रिगेडों को नष्ट कर सकती थी, अब की बार ईछ्वान मुहिम में वह एक ही हल्ले में पांच शत्रु-ब्रिगेडों को नष्ट कर सकी है। इस असाधारण विजय के कई कारण थे, जिनमें से कुछ का उल्लेख हमें कर देना चाहिए : मोर्चे पर नेतृत्वकारी साथियों की अडिग किन्तु लचीली कमान, पृष्ठभाग में नेतृत्वकारी साथियों और व्यापक जनता से प्राप्त होने वाला प्रबल समर्थन, शत्रु-सेनाओं का अपेक्षाकृत अलगाव की स्थिति में होना और धरातल का हमारे अनुकूल होना। फिर भी,

सबसे अधिक उल्लेखनीय कारण है सेना में नए किस्म का यह सुदृढ़ीकरण आन्दोलन जो पिछले जाड़ों में दो महीने से अधिक समय तक "दुखों का वर्णन करने" और "तीन किस्म की जांच करने" के तरीकों को इस्तेमाल करके चलाया गया था। अपने दुखों (पुराने समाज और प्रतिक्रियावादियों द्वारा मेहनतकश जनता को दी गई तकलीफों) का वर्णन करने तथा तीन किस्म की जांच (वर्ग-उत्पत्ति, कार्य-तत्परता और जुझारू संकल्प की जांच) करने के आन्दोलन को सही ढंग से चलाने के परिणामस्वरूप, समूची सेना के कमाण्डरों व योद्धाओं में शोषित मेहनतकश जनता को मुक्त कराने, देशव्यापी भूमि-सुधार करने तथा जनता के मुश्तरका दुश्मन च्याङ काई-शेक डाकू-गुट को नष्ट करने के लिए लड़ने की राजनीतिक चेतना का स्तर बहुत ऊंचा हो गया। साथ ही इसने कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में तमाम कमाण्डरों व योद्धाओं की सुदृढ़ एकता को बेहद मजबूत बना दिया। इसके आधार पर सेना की पांतें और अधिक शुद्ध हो गईं, उनमें अनुशासन बढ़ गया, फौजी ट्रेनिंग के लिए एक जन-आन्दोलन का विकास हो गया, तथा सुचारु नेतृत्व के जरिए तथा व्यवस्थित ढंग से उनमें राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक जनवाद का और अधिक विकास हो गया। इस प्रकार हमारी सेना एकदिल हो गई, उसका हर आदमी अपने विचारों और अपनी शक्ति का योगदान करने लगा, वह एक ऐसी सेना बन गई जो कुरबानियों से नहीं डरती और भौतिक कठिनाइयों पर काबू पा सकती है, जो दुश्मन को नष्ट करने में सामूहिक वीरता और साहस का परिचय देती है। ऐसी सेना अपराजेय है।

प्रवक्ता ने कहा : सेना के भीतर नए किस्म का यह सुदृढ़ीकरण

आन्दोलन न केवल उत्तर-पश्चिम में चलाया गया है, बल्कि देशभर की जन-मुक्ति सेना के अन्दर यह आन्दोलन या तो चलाया जा चुका है या चलाया जा रहा है। लड़ाइयों के बीच प्राप्त होने वाले अवकाश के दौरान चलाए जाने के कारण यह आन्दोलन लड़ाई में बाधा नहीं डालता। जब सेना के इस सुदृढ़ीकरण आन्दोलन को पार्टी को सुदृढ़ बनाने और भूमि-सुधार करने के उन आन्दोलनों से जोड़ दिया जाता है जिन्हें हमारी पार्टी इस समय सही ढंग से चला रही है, जब इस आन्दोलन को पार्टी की एक ऐसी सही नीति से जोड़ दिया जाता है जो अपने प्रहार के निशाने के दायरे को छोटा करके केवल साम्राज्य-वाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद के विरोध तक ही सीमित रखती है, जो अन्धाधुन्ध मारपीट और वध की सख्त मनाही करती है (वध जितना कम हो उतना ही बेहतर) और जो आम जनता के साथ, जिसमें देश की आबादी का नब्बे फीसदी से ज्यादा हिस्सा शामिल है, दृढ़ता से एकता कायम करती है, तथा जब इस आन्दोलन को हमारी पार्टी की शहरों से सम्बन्धित सही नीति के साथ और राष्ट्रीय पूंजीपतियों के उद्योग-वाणिज्य की दृढ़ता से रक्षा करने और उसका विकास करने की पार्टी की नीति के साथ जोड़ दिया जाता है, तो यह निश्चित है कि यह आन्दोलन जन-मुक्ति सेना को अजेय बनाए बिना नहीं रहेगा। चीनी जनता की जनवादी क्रान्ति के महान संघर्ष के खिलाफ च्याङ काई-शेक डाकू-गुट और उसका आका अमरीकी साम्राज्यवाद चाहे कितनी ही जीतोड़ कोशिश क्यों न करें, जीत निश्चित रूप से हमारी ही होगी।

नोट

[1] "क्षतिपूरित ब्रिगेडों" का तात्पर्य क्वोमिन्ताङ की उन ब्रिगेडों से है जिनमें से प्रत्येक ब्रिगेड के अधिकांश भाग का रणभूमि में चीनी जन-मुक्ति सेना ने सफाया कर दिया था, मगर पृष्ठभाग में क्षतिपूर्ति कर दिए जाने के बाद जिनके अपने मूल नाम पूर्ववत् कायम रखे गए थे। —अनु०

[2] ३० जून १९४७ को अपना कूच आरम्भ करते हुए, ल्यू पो-छङ, तङ श्याओ-फिङ तथा अन्य कामरेडों के नेतृत्व में शानशी-हपे-शानतुङ-हनान रणागन-सेना की ७ कालमों ने जबरदस्ती पीली नदी को पार किया और ताप्ये पहाड़ों की ओर बढ़ना शुरू कर दिया, और इस तरह जन-मुक्ति सेना का रणनीतिक आक्रमण शुरू हो गया। मार्च १९४८ के अन्त तक १,००,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों का सफाया किया जा चुका था और हुपे-हनान सरहद पर, पश्चिमी आनह्वेइ में, हुपे-हनान सीमान्त के ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी इलाके में, याङत्सी और हानश्वेइ नदियों के दोआबे के मैदानी इलाकों में तथा अन्य स्थानों पर नए आधार-क्षेत्र कायम किए जा चुके थे। अगस्त १९४७ में शानतुङ प्रान्त पर शत्रु के केन्द्रित आक्रमण को चकनाचूर करने के बाद छन ई, सू यू तथा अन्य कामरेडों के नेतृत्व में पूर्वी चीन रणागन-सेना की ८ कालमें दक्षिण-पश्चिमी शानतुङ और हनान-आनह्वेइ-च्याङसू सीमान्त क्षेत्र में जा पहुंचीं; उन्होंने १,००,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों का सफाया कर डाला और हनान-आनह्वेइ-च्याङसू मुक्त क्षेत्र का विकास किया तथा शत्रु के रणनीतिक महत्त्व के केन्द्रों, ख्वाएफङ और चङचओ को अलगाव की स्थिति में डाल दिया। छन कङ, श्ये फू-चि तथा अन्य कामरेडों की कमान में शानशी-हपे-शानतुङ-हनान क्षेत्र की ताएय्वे फौजी फारमेशन की दो कालमों और एक फौजी कोर ने अगस्त १९४७ में दक्षिणी शानशी में जबरदस्ती पीली नदी को पार किया और पश्चिमी हनान में प्रवेश किया। इस अभियान में उन्होंने ४०,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों का सफाया कर डाला और हनान-शेनशी-हुपे सीमान्त पर और दक्षिणी शेनशी में आधार-क्षेत्र कायम कर लिए तथा पश्चिमी हनान में शत्रु के रणनीतिक महत्त्व के केन्द्र लोयाङ को पूरी तरह अलगाव की स्थिति में डाल दिया और युद्धक्षेत्र के लिए खतरा पैदा कर दिया।

[3] १५ दिसम्बर १९४७ से १५ मार्च १९४८ तक लिन प्याओ, लो रुङ-ह्वान तथा अन्य कामरेडों के नेतृत्व में उत्तर-पूर्वी रणागन-सेना की १० कालमों और १२ स्वतंत्र डिवीजनों ने चीनी छाङछुन रेलवे के सफिङ-तालिङ्श्याओ सेक्शन और पेफिङ-ल्याओनिङ रेलवे के शानहाएक्वान-सनयाङ सेक्शन से लगे हुए इलाकों में अभूतपूर्व पैमाने पर शीतकालीन आक्रमण कर दिया। पूरे ९० दिन लगातार लड़ने के बाद उन्होंने १,५६,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों का सफाया कर डाला और शत्रु के रणनीतिक महत्त्व के मजबूत किलेबन्दियों वाले केन्द्र सफिङ तथा अठारह अन्य नगरों पर कब्जा कर लिया। इङ्ख्वओ की रक्षा के लिए तैनात शत्रु की एक डिवीजन ने विद्रोह कर दिया और वह हमारी तरफ आ गई। चीलिन नगर की रक्षा के लिए तैनात शत्रु-सेना छाङछुन की ओर भाग गई। इस प्रकार उत्तर-पूर्व में जो इलाका दुश्मन के कब्जे में बच गया, वह सिकुड़कर पूरे उत्तर-पूर्व का कुल १ प्रतिशत भाग ही रह गया और छाङछुन-सनयाङ-चिनचओ लाइन से लगे नगरों में दुश्मन के अड्डे अलगाव की स्थिति में पड़ गए।

[4] १९४७ में सितम्बर के शुरू से नवम्बर के मध्य तक न्ये रुङ-चन तथा अन्य कामरेडों के नेतृत्व में शानशी-छाहाड़-हपे रणागन-सेना की ५ कालमों ने ताछिङ नदी के उत्तर के इलाके और शिङफाङ्श्वेन के इलाके में एक के बाद एक लगातार कई मुहिमें चलाईं तथा साथ ही शृच्याच्वाङ की मुक्ति की मुहिम भी चलाई। इन मुहिमों में उन्होंने कुल मिलाकर लगभग ५०,००० शत्रु-सैनिकों का सफाया कर डाला और शानशी-छाहाड़-हपे मुक्त क्षेत्र और शानशी-हपे-शानतुङ-हनान मुक्त क्षेत्र को एक दूसरे से मिलाकर दोनों को एक अखण्ड क्षेत्र बना दिया। सितम्बर से दिसम्बर १९४७ तक पूर्वी चीन रणागन-सेना की शानतुङ फौजी फारमेशन की तीन कालमों और स्थानीय सशस्त्र सैन्य-शक्तियों ने श्वी श-यओ, तान चन-लिन तथा अन्य कामरेडों के नेतृत्व में पूर्वी शानतुङ मुहिम चलाई, जिसमें उन्होंने ६३,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों का सफाया कर डाला और दस से अधिक काउन्टी-केन्द्र शत्रु से वापस ले लिए; इससे शानतुङ प्रान्त की पूरी स्थिति ही बदल गई। अगस्त से दिसम्बर १९४७ तक पूर्वी चीन रणागन-सेना के एक भाग ने उत्तरी च्याङसू में येनछङ, तोंगथाई तथा अन्य स्थानों पर एक के

बाद एक मुहिमें चलाकर २४,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों को नेस्तनाबूद कर दिया और उत्तरी च्याङसू में विशाल इलाका शत्रु से वापस छीन लिया। दिसम्बर १९४७ में श्वी श्याङ-छ्येन तथा अन्य कामरेडों के नेतृत्व में शानशी-हपे-शानतुङ-हनान रणांगन-सेना के एक भाग ने उत्तर-पश्चिमी रणांगन-सेना के एक भाग के साथ तालमेल कायम करके लड़ाई लड़ी और युनछङ पर कब्जा कर लिया तथा १३,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों को नष्ट कर दिया; इस तरह दक्षिण-पश्चिमी शानशी की तमाम शत्रु-सेनाओं का सफाया कर दिया गया और लिनफन में तैनात शत्रु अलगाव की स्थिति में पड़ गया।

[1] १९४७ के जाड़ों में फौज को सुदृढ़ बनाने और ट्रेनिंग देने का दौर पूरा करने के बाद १९४८ के वसन्त में जन-मुक्ति सेना की रणांगन-सेनाओं ने एक के बाद एक कई वसन्तकालीन आक्रमण शुरू कर दिए। मार्च और मई के बीच शानशी-छाहार-हपे रणांगन-सेना तथा शानशी-हपे-शानतुङ-हनान रणांगन-सेना के एक भाग और शानशी-स्वेय्वान रणांगन-सेना के एक भाग ने दक्षिणी छाहार, पूर्वी स्वेय्वान और शानशी के लिनफन क्षेत्र में मुहिमें चलाईं, जिनमें उन्होंने ४३,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों का सफाया कर दिया और विशाल इलाका दुश्मन से वापस ले लिया। ८ मार्च से २९ मई तक मध्यवर्ती मैदान रणांगन-सेना के एक भाग और पूर्वी चीन रणांगन-सेना के एक भाग ने लोयाङ और सुश्येन में और नानयाङ के पूर्व और पश्चिम के इलाकों में एक के बाद एक लगातार कई मुहिमें चलाईं और उनमें ५६,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों का सफाया कर डाला, और इस तरह मध्यवर्ती मैदान में शत्रु की रक्षा-व्यवस्था को कुचल कर रख दिया तथा वहां के मुक्त क्षेत्र का विस्तार किया और उसे मजबूत बनाया। ११ मार्च से ८ मई तक पूर्वी चीन रणांगन-सेना की शानतुङ फौजी फारमेशन ने पहले छिङताओ-चीनान रेलवे के पश्चिमी सेक्शन में और फिर वेइश्येन में मुहिमें चलाईं और उनमें ८४,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों का सफाया कर डाला। इस प्रकार चीनान, छिङताओ, लिनई और येनचओ जैसे कुछ शहरों को छोड़कर, जो अभी क्वोमिन्ताङ के कब्जे में थे, पूरे शानतुङ प्रान्त को मुक्त करा लिया गया। मार्च में उत्तरी च्याङसू फौजी फारमेशन ने ईछिन में विजयपूर्वक मुहिम चलाई।

[2] फौजी कार्यवाही सम्बन्धी दस मुख्य उसूलों की जानकारी के लिए देखिए

इसी ग्रन्थ में "वर्तमान परिस्थिति और हमारे कार्य" शीर्षक रचना का तीसरा भाग।

[3] पङ त-हवाए, हो लुङ, शी चुङ-श्युन तथा अन्य कामरेडों के नेतृत्व में उत्तर-पश्चिमी रणांगन-सेना ने १९४७ की गर्मियों में उत्तरी शेनशी की फौजी कार्यवाही में कुल २५,००० से अधिक सैनिकों की दो कालमों और दो ब्रिगेडों की मुख्य सैन्य-शक्ति इस्तेमाल की। १९४८ के वसन्त तक यह मुख्य सैन्य-शक्ति बढ़कर पांच कालमें हो गई, जिनमें सैनिकों की कुल संख्या ७५,००० से ऊपर थी। सालभर की लड़ाई में और १९४७ के जाड़ों में सेना के भीतर नए किस्म के सुदृढ़ीकरण आन्दोलन में तपकर फौलाद बनने की बदौलत अफसरों और सिपाहियों के व्यापक समुदाय की राजनीतिक चेतना और फौजी यूनिटों की युद्ध-क्षमता अभूतपूर्व रूप से उन्नत हो गई। इससे उत्तर-पश्चिमी रणांगन-सेना द्वारा मार्च १९४८ में बाहरी सैन्य-पंक्तियों वाली फौजी कार्यवाही किए जाने के लिए आवश्यक स्थितियां तैयार हो गईं। ईछ्वान की अपनी भारी विजय के बाद, उत्तर-पश्चिमी रणांगन-सेना ने १२ अप्रैल को शीफु (शीआन के पश्चिम में स्थित चिङश्वेइ और वेइश्वेइ नदियों के दोआबे का इलाका) और पूर्वी कानसू में एक मुहिम शुरू कर दी, तथा उसने चिङश्वेइ और वेइश्वेइ नदियों के दोआबे के लम्बे-चौड़े इलाके में अभियान किया, शीआन-लानचओ राजमार्ग को काट दिया और २२ अप्रैल को येनान को शत्रु के कब्जे से वापस ले लिया।

परिस्थिति के बारे में एक सरकुलर*

२० मार्च १९४८

१. हाल के महीनों में केन्द्रीय कमेटी ने अपना सारा ध्यान नई परिस्थिति में भूमि-सुधार, उद्योग व वाणिज्य, संयुक्त मोर्चे, पार्टी-शुद्धीकरण और नए मुक्त क्षेत्रों के काम के बारे में विभिन्न ठोस नीतियों और कार्यनीतियों से सम्बन्धित समस्याओं को हल करने पर केन्द्रित रखा है ; उसने पार्टी के भीतर दक्षिणपंथी और "वामपंथी" भटकावों का, मुख्य रूप से "वामपंथी" भटकावों का विरोध किया है। हमारी पार्टी का इतिहास बतलाता है कि पार्टी के भीतर दक्षिणपंथी भटकावों के होने की सम्भावना उन दौरों में ज्यादा होती है जब हमारी पार्टी क्वोमिन्ताङ के साथ संयुक्त मोर्चा बनाती है और पार्टी के भीतर "वामपंथी" भटकावों के होने की सम्भावना उन दौरों में ज्यादा होती है जब हमारी पार्टी क्वोमिन्ताङ से अपना नाता तोड़ लेती है। इस समय "वामपंथी" भटकाव मुख्य रूप से

*यह अन्त:पार्टी सरकुलर कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए लिखा था। इसके बाद केन्द्रीय कमेटी शेनशी कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र से शानशी-स्वेय्वान मुक्त क्षेत्र के रास्ते शानशी-छाहार-हपे मुक्त क्षेत्र में चली गई और मई १९४८ में पश्चिमी हपे प्रान्त की फिङशान काउन्टी के शीपांफो गांव में पहुंच गई।

ये है : मध्यम किसानों और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के हितों को नुकसान पहुंचाना ; मजदूर-आन्दोलन में मजदूरों के फौरी हितों पर एकतरफा तौर पर जोर देना ; जमींदारों के साथ सलूक करने और धनी किसानों के साथ सलूक करने में कोई भेद न करना ; बड़े, मझोले और छोटे जमींदारों के साथ सलूक करने में, अथवा जो जमींदार स्थानीय निरंकुश तत्व हैं और जो स्थानीय निरंकुश तत्व नही है उनके साथ सलूक करने में कोई भेद न करना ; समान वितरण के सिद्धान्त की अवहेलना करके जमींदारों के पास गुजारे के लिए जरूरी साधन न छोड़ना ; प्रतिक्रान्तिकारियों को कुचल डालने के संघर्ष में नीति की कुछ सीमा-रेखाओं को लांघ जाना ; राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली राजनीतिक पार्टियों के अस्तित्व को पसन्द न करना ; जागृत शरीफजादों को पसन्द न करना ; नए मुक्त क्षेत्रों में प्रहार के निशाने के दायरे को छोटा करने (यानी धनी किसानों और छोटे जमींदारों को तटस्थ बनाने) के कार्यनीतिक महत्व की उपेक्षा करना ; और कदम-ब-कदम काम करने का धीरज खो बैठना। पिछले लगभग दो वर्ष के दौरान ये "वामपंथी" भटकाव कमोबेश सभी मुक्त क्षेत्रों में देखने को मिले है और कभी-कभी तो इन्होंने गम्भीर दुस्साहसवादी रुझानों का रूप भी धारण किया है। खैरियत है कि इन भटकावों को ठीक करना अधिक कठिन नही है ; पिछले कुछ महीनों में उन्हें आम तौर पर ठीक किया जा चुका है या अब ठीक किया जा रहा है। लेकिन सभी स्तरों के नेताओं के जीतोड़ प्रयास करने पर ही इस प्रकार के भटकावों को पूरी तरह ठीक किया जा सकेगा। दक्षिणपंथी भटकाव मुख्य रूप से ये है : शत्रु की ताकत को बढ़ा-चढ़ा कर आंकना, अमरीका द्वारा च्यांग काई-शेक को बड़े पैमाने पर दी जाने वाली सहायता से भय खाना, लम्बे समय तक चलने वाले युद्ध से ऊब जाना, अन्तरराष्ट्रीय जनवादी शक्तियों की मजबूती के बारे में सन्देह करना, सामन्ती व्यवस्था नष्ट करने के लिए आम जनता को पूरी तरह जगाने में हिम्मत से काम न लेना, और पार्टी की वर्ग-संरचना तथा कार्यशैली की अशुद्धियों के प्रति उदासीनता बरतना। लेकिन, ऐसे दक्षिणपंथी भटकाव इस समय के प्रमुख भटकाव नही हैं, इन्हें ठीक कर लेना भी कठिन नहीं है। हाल के महीनों में हमारी पार्टी ने युद्ध में, भूमि-सुधार में, पार्टी और सेना में सुदृढ़ीकरण के कार्य में, नए मुक्त क्षेत्रों को कायम करने के कार्य में और जनवादी पार्टियों को अपने पक्ष में करने के कार्य में अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं, और काम के इन क्षेत्रों में जो भटकाव हुए, उन्हें जोरदार ढंग से ठीक कर लिया गया है या ठीक किया जा रहा है। इस तरह चीन का समूचा क्रान्तिकारी आन्दोलन स्वस्थ विकास के पथ पर आगे बढ़ सकेगा। पार्टी की सभी नीतियों और कार्यनीतियों के सही रास्ते पर चलने पर ही चीनी क्रान्ति की विजय सम्भव हो सकेगी। नीति और कार्यनीति पार्टी के प्राण है, सभी स्तरों के नेतृत्वकारी कामरेडों को इनकी ओर पूरी तरह ध्यान देना चाहिए और इनके प्रति लापरवाही हरगिज नहीं बरतनी चाहिए।

२. कुछ विशिष्ट जनवादी व्यक्ति, जो अमरीका और च्यांग काई-शेक के प्रति अपने भ्रमों के कारण तथा देश-विदेश के सभी शत्रुओं को पूरी तरह हराने में हमारी पार्टी व जनता की शक्ति पर सन्देह करने के कारण यह समझते थे कि एक "तीसरा रास्ता"[१] अब भी सम्भव है, तथा जो अपने आपको क्वोमिन्ताङ और कम्यु-

निस्ट पार्टी इन दोनों के बीच की स्थिति में रखते थे. क्वोमिन्ताङ के आकस्मिक प्रहार के सामने अपने को निष्क्रिय हालत में पाने लगे और अन्ततः जनवरी १९४८ में उन्होंने भी हमारी पार्टी के नारे अपना लिए और च्याङ काई-शेक तथा अमरीका का विरोध करने और कम्युनिस्ट पार्टी से सहयोग करने तथा सोवियत संघ से मैत्री कायम करने का ऐलान कर दिया।[२] हमें इन लोगों के साथ एकता कायम करने की नीति अपनानी चाहिए और इनके गलत दृष्टिकोणों की यथोचित आलोचना करनी चाहिए। भविष्य में केन्द्रीय जन-सरकार की स्थापना करते समय इनमें से कुछ लोगों को सरकार के काम में भाग लेने के लिए निमंत्रित करना जरूरी और लाभकारी होगा। इन व्यक्तियों की विशेषताएं ये है कि ये लोग मेहनतकश जनता से सम्पर्क रखना सदा ही नापसन्द करते हैं, बड़े नगरों के जीवन के आदी है और मुक्त क्षेत्रों में आने से हिचकिचाते है। फिर भी ये लोग जिस सामाजिक आधार का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसका यानी राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग का अपना महत्व है और उसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। इसलिए हमें इन लोगों को अपने पक्ष में करने की कोशिश करनी चाहिए। हमारा अनुमान यह है कि जब हम और भी बड़ी जीतें हासिल कर लेंगे तथा शनयाङ, पेफिङ और थ्येनचिन जैसे अनेक नगरों पर कब्जा कर लेंगे और जब यह बिलकुल स्पष्ट हो जाएगा कि अब तो कम्युनिस्ट पार्टी ही जीतेगी और क्वोमिन्ताङ निश्चित रूप से हारेगी, तब ये लोग केन्द्रीय जन-सरकार में भाग लेने का निमंत्रण पाकर हमारे साथ काम करने के लिए मुक्त क्षेत्रों में आने को शायद तैयार हो जाएंगे।

३. इस साल केन्द्रीय जन-सरकार की स्थापना करने के लिए हम

तैयार नहीं हैं, क्योंकि उसके लिए अभी अनुकूल अवसर नहीं आया। जब इस साल के अन्दर च्याङ काई-शेक की बोगस राष्ट्रीय एसेम्बली च्याङ काई-शेक को प्रेसीडेन्ट चुन लेगी[३] और उसकी प्रतिष्ठा और भी अधिक गिर जाएगी, जब हम और भी बड़ी जीतें हासिल कर लेंगे और अपने इलाके का और ज्यादा विस्तार कर लेंगे, बल्कि इससे भी आगे बढ़कर जब हम देश के पहले दर्जे के नगरों में से भी एक या दो पर अधिकार कर लेंगे और जब उत्तर-पूर्वी चीन, उत्तरी चीन, शानतुङ, उत्तरी च्याङसू, हनान, हुपे और आनह्वेइ को मिलाकर एक अखण्ड इलाका बना दिया जाएगा, तभी केन्द्रीय जन-सरकार की स्थापना करना बिलकुल जरूरी होगा। वह अवसर लगभग १९४९ में आएगा। फिलहाल हम शानशी-छाहाड़-हपे क्षेत्र, शानशी-हपे-शानतुङ-हनान क्षेत्र और शानतुङ के पोहाए क्षेत्र को एक ही पार्टी-कमेटी (उत्तरी चीन ब्यूरो), एक ही सरकार और एक ही फौजी कमान के अधीन करके एक दूसरे से मिलाकर एक करने जा रहे है (पोहाए क्षेत्र को शामिल करने में कुछ देर लग सकती है)। ये तीन क्षेत्र लुङहाए रेलवे के उत्तर, थ्येनचिन-फूखओ रेलवे और पोहाए खाड़ी के पश्चिम, ताथुङ-फूचओ रेलवे के पूरब और पेफिङ-स्वेय्वान रेलवे के दक्षिण में पड़ने वाले एक विशाल भूभाग में फैले हुए है।[४] ये अब एक ऐसे अखण्ड इलाके के रूप में आपस में जुड़े हुए है जिसकी कुल आबादी पाच करोड़ है और इनके विलय का काम अल्प अवधि में ही पूरा हो जाएगा। इससे हम दक्षिणी मोर्चे के युद्ध को जोरदार समर्थन प्रदान करने में और बहुत से कार्यकर्ताओं का तबादला करके उन्हें नए मुक्त क्षेत्रों में भेजने में समर्थ हो जाएंगे। उस विलयीकृत क्षेत्र का नेतृत्व-केन्द्र शच्याच्वाङ में रहेगा। केन्द्रीय

कमेटी भी उत्तरी चीन जाने की तैयारी में लगी हुई है और उसकी कार्य-समिति का उसके अन्दर विलय हो जाएगा।

४. दक्षिणी मोर्चे की हमारी विभिन्न सेनाएं दिसम्बर से लेकर फरवरी तक विश्राम कर चुकी हैं और अपने को सुदृढ़ बना चुकी हैं; इन सेनाओं में शानतुङ फौजी फारमेशन की ६ ब्रिगेडें, उत्तरी च्याङसू फौजी फारमेशन की ७ ब्रिगेडें, पीली नदी और ह्वाए नदी के बीच के इलाके की फौजी फारमेशन की २१ ब्रिगेडें, हनान-हूपे-शेनशी क्षेत्र की फौजी फारमेशन की १० ब्रिगेडें, याङत्सी नदी, ह्वाए नदी और हानश्वेइ नदी के बीच के इलाके की फौजी फारमेशन की १६ ब्रिगेडें, उत्तर-पश्चिमी चीन की फौजी फारमेशन की १२ ब्रिगेडें तथा दक्षिणी शानशी और उत्तरी हनान की फौजी फारमेशन की १२ ब्रिगेडें हैं। इसका एकमात्र अपवाद है याङत्सी नदी, ह्वाए नदी और हानश्वेइ नदी के बीच के इलाके में ल्यू पो-छङ और तङ श्याओ-फिङ के मातहत फौजी फारमेशन की मुख्य शक्ति, जिसे विश्राम करने और अपने को सुदृढ़ बनाने का मौका इसलिए नहीं मिल पाया कि पाए छुङ-शी ने अपनी सेनाएं ताप्ये पहाड़ों पर चढ़ाई करने के लिए एकत्र कर रखी थीं;[१] फरवरी के अन्त में जाकर कहीं यह मुख्य शक्ति अपने एक भाग को विश्राम करने और सुदृढ़ बनाने के लिए ह्वाए नदी के उत्तर की ओर भेज सकी। पिछले बीस महीने की लड़ाई के दौरान यही वह पहला अवसर था जबकि हमारी फौजों को बड़े पैमाने पर विश्राम करने और सुदृढ़ बनाने का समय मिला। विश्राम और सुदृढ़ीकरण के दौरान जो तरीके हमने अपनाए वे थे: जन-समुदाय को खुलकर अपने दुखों (पुराने समाज और प्रतिक्रियावादियों द्वारा मेहनतकश जनता को दी गई तकलीफों) का

वर्णन करने का मौका देना, तीन किस्म की जांच (वर्ग-उत्पत्ति, कार्य-तत्परता और जुझारू संकल्प की जांच) करना और जनव्यापी फौजी ट्रेनिंग देना (अफसरों द्वारा सिपाहियों को, सिपाहियों द्वारा अफसरों को और सिपाहियों द्वारा सिपाहियों को सिखाना)। इन तरीकों से काम लेकर हमने समूची सेना के कमाण्डरों और योद्धाओं में ऊंचे दर्जे की क्रान्तिकारी सक्रियता का विकास किया, कुछ फौजी यूनिटों में पाए गए जमींदारों, धनी किसानों और बुरे तत्वों को या तो सुधार लिया अथवा चुनकर बाहर निकाल दिया, अनुशासन के स्तर को उन्नत किया, भूमि-सुधार में अपनाई जाने वाली विविध नीतियों और उद्योग-वाणिज्य व बुद्धिजीवियों से सम्बन्धित नीतियों को साफ-साफ समझाया, सेना में जनवादी कार्य-शैली का विकास किया और अपनी फौजी तकनीक व युद्धकला के स्तर को ऊंचा उठाया। फलस्वरूप हमारी सेना ने अपनी जुझारू क्षमता बहुत अधिक बढ़ा ली है। ल्यू पो-छङ और तङ श्याओ-फिङ के मातहत फौजी फारमेशन के सिर्फ एक भाग को छोड़कर, जो अब भी विश्राम और सुदृढ़ीकरण कर रहा है, हमारी शेष सभी फौजी फारमेशनों ने फरवरी के अन्त या मार्च के शुरू से नई फौजी कार्यवाहियां शुरू कर दी हैं और दो सप्ताह में शत्रु की ६ ब्रिगेडों का सफाया कर डाला है। उत्तरी मोर्चे की सेना का, यानी उत्तर-पूर्व फौजी फारमेशन की ४६ ब्रिगेडों, शानशी-छाहाड़-हपे क्षेत्र की फौजी फारमेशन की १८ ब्रिगेडों और शानशी-स्वेय्वान क्षेत्र की फौजी फारमेशन की २ ब्रिगेडों का बड़ा भाग तो पूरे जाड़ों में लड़ता रहा, सिर्फ एक छोटे से भाग ने ही विश्राम और सुदृढ़ीकरण किया। ल्याओहो नदी के जम जाने का फायदा उठाकर उत्तर-पूर्व

फौजी फारमेशन तीन महीने लड़ा, उसने ८ शत्रु-ब्रिगेडों का सफाया करने और १ शत्रु-ब्रिगेड को विद्रोह कराकर अपनी ओर मिला लेने में कामयाबी हासिल की, चाङऊ, फाकू, शिनलीथुन, त्याओयाङ, आनशान, हाइछङ और सफिङ पर कब्जा कर लिया तथा चीलिन पर फिर से अधिकार कर लिया। इस फौजी फारमेशन ने विश्राम और सुदृढ़ीकरण करना अब शुरू किया है। विश्राम और सुदृढ़ीकरण के बाद यह फौजी फारमेशन या तो छाङछुन पर चढ़ाई करेगी या पेफिङ-ल्याओनिङ रेलवे के आसपास के इलाकों में मौजूद शत्रु पर चढ़ाई करेगी। शानशी-छाहाङ-हपे क्षेत्र की फौजी फारमेशन विश्राम और सुदृढ़ीकरण में एक महीने से अधिक समय लगा चुकी है और अब पेफिङ-स्वेय्वान रेलवे की ओर बढ़ रही है। शानशी-स्वेय्वान क्षेत्र की फौजी फारमेशन अपेक्षाकृत छोटी है और उसकी मुख्य जिम्मेदारी येन शी-शान की सेनाओं को रोके रखने की है। सारांश यह कि अब हमारे उत्तरी और दक्षिणी, दो मोर्चों पर छोटी-बड़ी १० फौजी फारमेशनें हैं, जिनमें नियमित सेनाओं की कुल ५० कालमें (हरेक कालम क्वोमिन्ताङ की एक पुनर्गठित डिवीजन के बराबर है) या कुल १५६ ब्रिगेडें (हरेक ब्रिगेड क्वोमिन्ताङ की एक पुनर्गठित ब्रिगेड के बराबर है) हैं और हर ब्रिगेड (३ रेजीमेन्टें) में औसतन ८,००० सैनिक हैं – इस तरह हमारी नियमित सेना की कुल संख्या १३,२२,००० से भी अधिक है। इनके अलावा प्रादेशिक फौजी फारमेशनों, प्रादेशिक फौजी टुकड़ियों, छापामार दस्तों, पृष्ठ-भागीय फौजी संस्थानों और फौजी अकादमियों के ११,६८,००० से अधिक अनियमित सैनिक भी हैं (जिनमें लड़ाकू सैनिकों की तादाद ८,००,००० है)। इस तरह हमारी पूरी सेना की कुल संख्या

२४,९१,००० से अधिक है। लेकिन जुलाई १९४६ से पहले हमारी २८ कालमों या ११८ ब्रिगेडों में, जिनमें हरेक ब्रिगेड (३ रेजीमेन्टें) औसतन ५,००० से भी कम सैनिकों वाली थी, कुल ६,१२,००० से अधिक नियमित सैनिक और ६,६५,००० से अधिक अनियमित सैनिक – कुल मिलाकर १२,७८,००० से अधिक सैनिक थे। यह देखा जा सकता है कि हमारी सेना अब बढ़ गई है। ब्रिगेडों की तादाद तो अधिक नहीं बढ़ी, पर हर ब्रिगेड की सैनिक-संख्या तो बहुत अधिक बढ़ गई है। बीस महीने की लड़ाई के बाद हमारी जुझारू क्षमता भी बहुत अधिक बढ़ गई है।

५. जुलाई १९४६ से लेकर १९४७ की गरमियों तक क्वोमिन्ताङ की नियमित सेना में कुल २४८ ब्रिगेडों वाली ९३ डिवीजनें थीं, अब उसके पास २७६ ब्रिगेडों वाली १०४ नाम वाली डिवीजनें हैं। उसका फैलाव इस प्रकार है: उत्तरी मोर्चे पर ९३ ब्रिगेडों वाली २९ डिवीजनें (शनयाङ में वेइ ली-ह्वाङ के मातहत ४५ ब्रिगेडों वाली १३ डिवीजनें, पेफिङ में फू च्वो-ई के मातहत ३३ ब्रिगेडों वाली ११ डिवीजनें और थाएय्वान में येन शी-शान के मातहत १५ ब्रिगेडों वाली ५ डिवीजनें) हैं जिनकी कुल सैनिक-संख्या लगभग ५,५०,००० है, और दक्षिणी मोर्चे पर १५८ ब्रिगेडों वाली ६६ डिवीजनें (चङचओ में कू चू-थुङ के मातहत ८६ ब्रिगेडों वाली ३८ डिवीजनें, च्वीच्याङ में पाए छुङ-शी के मातहत ३३ ब्रिगेडों वाली १४ डिवीजनें और शीआन में हू चुङ-नान के मातहत ३९ ब्रिगेडों वाली १४ डिवीजनें) हैं जिनकी कुल सैनिक-संख्या लगभग १०,६०,००० है। दूसरी सैन्य-पंक्ति पर २८ ब्रिगेडों वाली ९ डिवीजनें (उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र यानी लानचओ के पश्चिम के इलाके

में ८ ब्रिगेडों वाली ४ डिवीजनें, दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र यानी सछ्वान, शीखाङ, युन्नान और क्वेइचओ प्रान्तों में १० ब्रिगेडों वाली ४ डिवीजनें, दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र यानी याङत्सी नदी के दक्षिण के प्रान्तों में ८ ब्रिगेडें और थाइवान में २ ब्रिगेडों वाली १ डिवीजन) हैं जिनकी कुल सैनिक-संख्या लगभग १,६६,००० है। क्वोमिन्ताङ की नियमित सेना की फौजी यूनिटों के नामों की तादाद बढ़ जाने का कारण यह है कि जब उसकी सेनाओं की बड़ी तादाद का सफाया हमारी सेना ने कर डाला और जब उसकी सेनाएं रणनीतिक आक्रमण से मुड़कर रणनीतिक बचाव की स्थिति में पहुंच गई, तो क्वोमिन्ताङ को अपनी सैन्य-शक्ति का बड़ा अभाव महसूस हुआ और इसलिए उसने अनेक स्थानीय सशस्त्र यूनिटों और कठपुतली सेनाओं का दर्जा बढ़ाकर या उन्हें पुनर्गठित करके अपनी नियमित सेना में मिला लिया। इस तरह उत्तरी मोर्चे पर वेइ ली-ह्वाङ की कमान में १४ ब्रिगेडों वाली ३ डिवीजनें और फू च्वो-ई की कमान में ६ ब्रिगेडों वाली २ डिवीजनें और जोड़ दी गई, तथा दक्षिणी मोर्चे पर कू चू-थुङ की कमान में ६ ब्रिगेडों वाली ६ डिवीजनों और ह चुङ-लान की कमान में २ ब्रिगेडों को और जोड़ दिया गया। कुल मिलाकर ३१ ब्रिगेडों वाली ११ डिवीजनों की बढ़ोतरी हुई। फलस्वरूप, क्वोमिन्ताङ सेना में अब ९३ के बजाय १०४ डिवीजनें और २४८ के बजाय २७९ ब्रिगेडें हैं। लेकिन पहली बात यह है कि पिछले कुछ महीनों में (२० मार्च तक) २६ ब्रिगेडों वाली जिन ६ डिवीजनों का हमने सफाया कर डाला, वे अब केवल नाममात्र के लिए ही शेष रह गई हैं; उन्हें पुनर्स्थापित करने या नई भरती से पूरा करने का समय ही नहीं मिला और कुछ को तो शायद कभी भी पुनर्स्थापित

या नई भरती से पूरा नहीं किया जा सकेगा। इसलिए, वास्तव में क्वोमिन्ताङ सेना में अब सिर्फ २५० ब्रिगेडों वाली ९८ डिवीजनें ही हैं, यानी पिछली गर्मियों के बाद से अब तक नाम के लिए कुल ५ डिवीजनों और सचमुच २ ब्रिगेडों की ही बढ़ोतरी हुई है। दूसरी बात यह है कि जो २५० ब्रिगेडें वाकई मौजूद हैं, उनमें केवल ११८ ब्रिगेडें ही ऐसी हैं जिन पर हमारी सेना ने कमरतोड़ चोटें नहीं की हैं, बाकी १३२ ब्रिगेडों का या तो हमारी सेना एक-एक बार, दो-दो बार, यहां तक कि तीन-तीन बार सफाया कर चुकी है और सफाया हो जाने के बाद नई भरती से उनकी फिर से क्षतिपूर्ति कर ली गई है, या उन पर हमारी सेना ने एक-एक बार, दो-दो बार, यहां तक कि तीन-तीन बार कमरतोड़ चोटें की हैं (ब्रिगेड के सम्बन्ध में, सफाया करने का मतलब है उसे पूरी तरह मिटा देना या उसके अधिकांश भाग को मिटा देना, जबकि कमरतोड़ चोट करने का मतलब है उसकी समस्त सैन्य-शक्ति को नहीं बल्कि उसकी एक या एक से अधिक रेजीमेन्टों को मिटा देना) और उनका हौसला तथा उनकी जुझारू क्षमता का स्तर बहुत नीचे गिर गया है। कमरतोड़ चोटों की मार से बची ११८ ब्रिगेडों में से कुछ तो दूसरी सैन्य-पंक्ति पर ट्रेनिंग प्राप्त करने वाले रंगरूटों को लेकर गठित की गई हैं और कुछ ऐसी स्थानीय सशस्त्र यूनिटें और कठपुतली सेनाएं हैं जिनके दर्जे बढ़ा दिए गए हैं या जिन्हें पुनर्गठित कर लिया गया है; उनकी जुझारू क्षमता भी बहुत क्षीण है। तीसरी बात यह है कि क्वोमिन्ताङ की सशस्त्र सेनाओं की संख्या भी घट गई है। जुलाई १९४६ के पहले क्वोमिन्ताङ के पास २०,००,००० नियमित सैनिक, ७,३८,००० अनियमित सैनिक, विशेष सेनाओं के

३,६७,००० सैनिक, नौसेना व वायुसेना के १,६०,००० सैनिक और पृष्ठभागीय सेवा-संस्थानों व फौजी अकार्दामयों के १०,१०,००० सैनिक, यानी कुल ४३,०५,००० सैनिक थे। फरवरी १९४८ में उसके पास १८,१०,००० नियमित और ५,६०,००० अनियमित सैनिक, विशेष सेनाओं के २,८०,००० सैनिक, नौसेना व वायु-सेना के १,६०,००० सैनिक और पृष्ठभागीय सेवा-संस्थानों व फौजी अकार्दामयों के ८,१०,००० सैनिक, यानी कुल ३६,५०,००० सैनिक बाकी रह गए। मतलब यह कि उसके सैनिकों की कुल तादाद में ६,५५,००० की कमी हुई। जुलाई १९४६ से जनवरी १९४८ तक के उन्नीस महीनों में हमारी सेना ने क्वोमिन्ताङ सेना के कुल १९,७७,००० सैनिकों का सफाया किया (पूरी फरवरी के और मार्च के पहले पखवाड़े के आंकड़ों को अभी जोड़ा नहीं गया, मगर यह संख्या मोटे तौर पर १,८०,००० होगी)। दूसरे शब्दों में यों कहा जा सकता है कि क्वोमिन्ताङ ने युद्ध के दौरान जो १०,००,००० से अधिक रंगरूट भरती किए उन्हें तो उसने गंवा ही दिया, साथ ही अपनी पहले की सेना के सैनिकों की भी बहुत बड़ी तादाद को गंवा दिया। ऐसी हालत में क्वोमिन्ताङ ने ऐसी नीति अपनाई है जो हमारी नीति के विपरीत है, अर्थात उसने अपनी ब्रिगेडों को पूरी सैनिक-संख्या वाली ब्रिगेडें बना लेने के बजाय हर ब्रिगेड के सैनिकों की तादाद घटाने और ब्रिगेड के नामों की तादाद बढ़ा लेने की नीति अपना ली है। १९४६ में एक क्वोमिन्ताङ ब्रिगेड में औसतन लगभग ८,००० सैनिक हुआ करते थे, जबकि अब सिर्फ लगभग ६,५०० सैनिक हैं। अब से हमारी सेना द्वारा अधिकृत क्षेत्र दिन-प्रति-दिन अधिकाधिक फैलते चले जाएंगे और क्वोमिन्ताङ के लिए

सेनाएं और रसद जुटाने वाले क्षेत्र रोज-ब-रोज सिकुड़ते जाएंगे। हमारा अनुमान यह है कि अगले वसन्त तक यानी एक अन्य पूरे वर्ष की लड़ाई के बाद हमारी सेना और क्वोमिन्ताङ सेना संख्या के लिहाज से मोटे तौर पर बराबर हो जाएगी। हमारी नीति झटपट नतीजे हासिल करने की नहीं बल्कि अविचल रूप से बढ़ते जाने और ठीक निशाने पर चोटें करने की है; हम तो बस इतना ही करने की कोशिश में हैं कि हर महीने क्वोमिन्ताङ की नियमित सेना की औसतन ८ ब्रिगेडों का या हर साल उसकी लगभग १०० ब्रिगेडों का सफाया करते रहें। वास्तव में, पिछले शरद के मौसम से औसत संख्या इससे अधिक ही रही है और अब इसे और भी अधिक बढ़ाया जा सकता है। लगभग पांच साल में (जुलाई १९४६ से गिनना शुरू करके)[१] क्वोमिन्ताङ की पूरी सेना का सफाया करना सम्भव हो सकेगा।

६. इस समय दक्षिणी और उत्तरी दोनों मोर्चों पर दो क्षेत्र ऐसे हैं जहां शत्रु के पास चलायमान कार्यवाही के लिए अपेक्षाकृत बड़ी सैन्य-शक्ति अब भी मौजूद है और जहां शत्रु आक्रमण-मुहिम चला सकता है तथा हमारी सेना को कुछ समय के लिए कठिन स्थिति में डाल सकता है। पहला क्षेत्र ताप्ये पहाड़ों में है, जहां शत्रु के पास कोई १४ ब्रिगेडें हैं और जिन्हें चलायमान कार्यवाही में लगाया जा सकता है। दूसरा क्षेत्र ल्याओ नदी के उत्तर में है, जहां शत्रु के पास इस तरह की कोई १२ ब्रिगेडें हैं। इन दो क्षेत्रों में पहलकदमी अब भी क्वोमिन्ताङ सेनाओं के ही हाथ में है (ल्याओ नदी के उत्तर वाले क्षेत्र में पहलकदमी उनके हाथ में इस वजह से है कि हमने अपनी मुख्य शक्ति वाली ब्रिगेडों में से ६ को अन्य क्षेत्रों में इस्तेमाल करने

की तैयारी के लिए विश्राम और सुदृढ़ीकरण करने पीली नदी के उत्तर में भेज दिया है)। अन्य सभी रणभूमियों में शत्रु-सेनाएं सब की सब असहाय स्थिति में मार खा रही हैं। जिन रणभूमियों की स्थिति खास तौर पर हमारे अनुकूल है, वे हैं उत्तर-पूर्व, शानतुङ, उत्तर-पश्चिम, उत्तरी च्याङसू, शानशी-छाहाड़-हपे क्षेत्र, शानशी-हपे-शानतुङ-हनान क्षेत्र और चङचओ-हानखओ रेलवे के पश्चिम, याङत्सी नदी के उत्तर और पीली नदी के दक्षिण में स्थित विशाल इलाके।

नोट

[1] देखिए इसी ग्रन्थ में "वर्तमान परिस्थिति और हमारे कार्य" शीर्षक रचना का नोट ८।

[2] अक्तूबर १९४७ में प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार ने जनवादी संघ को भंग कर डालने का फरमान जारी किया। क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के दबाव में आकर जनवादी संघ के कुछ डावांडोल तत्वों ने जनवादी संघ को भंग करने और उसकी सारी कार्यवाहियां बन्द करने की घोषणा कर दी। उन दिनों दूसरी जनवादी पार्टियां भी क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के अत्याचारों का शिकार थीं और क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों में खुलेआम काम नहीं कर सकती थीं। जनवरी १९४८ में जनवादी संघ के शन च्वुन-रू और दूसरे नेताओं ने हाङकाङ में एक बैठक बुलाई और जनवादी संघ के नेतृत्वकारी संगठन को फिर से स्थापित करने और संघ की कार्यवाहियां फिर से शुरू करने का फैसला किया। उसी महीने क्वोमिन्ताङ के जनवादी पक्ष के ली ची-शन आदि कई सदस्यों ने भी हाङकाङ में क्वोमिन्ताङ की क्रान्तिकारी कमेटी की स्थापना की। उस समय इन दोनों संस्थाओं ने मौजूदा स्थिति के बारे में कम्युनिस्ट पार्टी के मत को मान

लिया और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी तथा दूसरी जनवादी पार्टियों के साथ एकता कायम करने, च्याङ काई-शेक की तानाशाही को उखाड़ फेंकने और चीन के अन्दरूनी मामलों में अमरीका के सशस्त्र हस्तक्षेप का विरोध करने का आवाहन करते हुए घोषणापत्र जारी किए। जनवादी संघ के डावांडोल तत्वों ने भी उस समय इन नारों को मान लिया।

[3] क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने २९ मार्च से १ मई १९४८ तक नानकिङ में एक बोगस "राष्ट्रीय एसेम्बली" बनाई, जिसमें च्याङ काई-शेक को "प्रेसीडेन्ट" और ली चुङ-रन को "वाइस-प्रेसीडेन्ट" "निर्वाचित किया गया"।

[4] मई १९४८ में शानशी-छाहाड़-हपे मुक्त क्षेत्र और शानशी-हपे-शानतुङ-हनान मुक्त क्षेत्र दोनों को मिलाकर एक कर दिया गया तथा उत्तरी चीन संयुक्त प्रशासन परिषद और उत्तरी चीन फौजी क्षेत्र की स्थापना की गई। उसी साल अगस्त में उत्तरी चीन संयुक्त प्रशासन-परिषद का नाम बदलकर उत्तरी चीन जन-सरकार कर दिया गया।

[5] दिसम्बर १९४७ में पाए छुङ-शी ने कुल ३३ ब्रिगेडों को लेकर ताप्ये पहाड़ों के इलाके पर चढ़ाई शुरू की।

[6] उस समय अनुमान यह था कि पूरी की पूरी क्वोमिन्ताङ सेना का सफाया करने में लगभग पांच साल लगेंगे। बाद में यह अनुमानित समय घटकर साढ़े तीन साल ही रह गया। देखिए इसी ग्रन्थ में "चीन की फौजी परिस्थिति में भारी परिवर्तन" शीर्षक रचना।

शानशी-स्वेय्वान मुक्त क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में भाषण

१ अप्रैल १६४८

साथियो, आज मैं मुख्य रूप से शानशी-स्वेय्वान मुक्त क्षेत्र के हमारे काम से सम्बन्धित, तथा इसके बाद पूरे देश के हमारे काम से भी सम्बन्धित कुछ समस्याओं के बारे में बात करना चाहता हूं।

१

मेरी राय में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के शानशी-स्वेय्वान उपब्यूरो के नेतृत्व के अधीन क्षेत्र में भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने का सालभर का काम सफल रहा है।

इसे हम दो पहलुओं से देख सकते हैं। एक ओर तो शानशी-स्वेय्वान पार्टी-संगठन ने दक्षिणपंथी भटकावों के खिलाफ संघर्ष किया है, जन-संघर्षों का सूत्रपात किया है तथा इस क्षेत्र की कुल ३० लाख से अधिक आबादी में से २० लाख से भी अधिक लोगों में भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने का काम या तो पूरा कर लिया है या अब पूरा कर रहा है। दूसरी ओर उसने चन्द ऐसे "वामपंथी" भटकावों को भी दुरुस्त कर लिया है जो इन आन्दोलनों

में पैदा हुए थे और इस तरह से उसने अपने सारे काम को स्वस्थ विकास की राह पर लगा दिया है। इन्हीं दो पहलुओं से देखकर मैं शानशी-स्वेय्वान मुक्त क्षेत्र में भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने के काम को सफल मानता हूं।

शानशी-स्वेय्वान मुक्त क्षेत्र के लोग कह रहे हैं कि "अब से फिर कभी सामन्तवादी होने, दूसरों को सताने या भ्रष्टाचार में लिप्त होने की जुर्रत किसी की न होगी।" भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने के हमारे काम के बारे में उनका निष्कर्ष यही है। जब वे यह कहते हैं कि "अब से फिर कभी सामन्तवादी होने की जुर्रत किसी की न होगी", तो उनका मतलब होता है कि हमने उन संघर्षों का सूत्रपात करने में उनका नेतृत्व किया है जिनके जरिए नए मुक्त क्षेत्रों में सामन्ती शोषण-व्यवस्था तथा पुराने और अर्ध-पुराने मुक्त क्षेत्रों में उसके बचेखुचे अंश नष्ट किए जा चुके हैं अथवा किए जा रहे हैं। जब वे यह कहते हैं कि "अब से फिर कभी दूसरों को सताने या भ्रष्टाचार में लिप्त होने की जुर्रत किसी की न होगी", तो उनका मतलब यह होता है कि पिछले दिनों हमारे पार्टी-संगठनों और सरकारी संगठनों की वर्ग-संरचना और कार्यशैली में किसी हद तक अशुद्धता की संगीन स्थिति मौजूद थी ; बहुत से बुरे लोग मौका पाकर पार्टी-संगठनों और सरकारी संगठनों के भीतर घुस आए थे ; बहुत से लोगों ने नौकरशाहाना कार्यशैली अपना ली थी, वे अपनी सत्ता का दुरुपयोग करने और लोगों को सताने लगे थे, काम निकालने के लिए जोर-जबरदस्ती और फरमानशाही का सहारा लेने लगे थे, फलतः आम जनता में नाराजगी फैलती जा रही थी, या वे भ्रष्टाचार में लिप्त रहने या आम जनता के हितों

पर हमला करने लगे थे ; लेकिन भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने के सालभर के काम के बाद यह स्थिति बुनियादी तौर पर बदल गई है।

यहां मौजूद एक कामरेड ने मुझसे कहा कि "जो चीजें पहले हमारे लिए घातक साबित हुईं, उनसे हमने अब छुटकारा पा लिया है। जो चीजें पहले कभी हासिल नहीं हुईं, उन्हें हमने अब हासिल कर लिया है।" "घातक" से उनका मतलब पार्टी-संगठनों और सरकारी संगठनों की वर्ग-संरचना और कार्यशैली में मौजूद अशुद्धता की संगीन स्थिति से और उसके कारण आम जनता में फैली नाराजगी से था। यह स्थिति अब बुनियादी तौर पर बदल दी गई है। "जो चीजें पहले कभी हासिल नहीं हुईं उन्हें अब हासिल कर लेने" से उनका मतलब था गरीब किसान संघ, नई किसान सभा, जिला और गांव जन-प्रतिनिधि सम्मेलन, और भूमि-सुधार करने व पार्टी को सुदृढ़ बनाने के काम के फलस्वरूप देहात का नया वातावरण।

मेरे खयाल से ये विचार मौजूदा हालात की सही तस्वीर पेश करते हैं।

शानशी-स्वेय्वान मुक्त क्षेत्र में भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने के काम की महान सफलता ऐसी ही है। सफलता का यह पहला पहलू है। सालभर इसी आधार पर शानशी-स्वेय्वान पार्टी-संगठन महान जन-मुक्ति युद्ध का समर्थन करने के मामले में भारी फौजी सेवाएं अर्पित कर सका था। भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने के मामले में हमारे सफल काम के बिना ऐसे भारी फौजी दायित्व को निभा पाना कठिन है।

दूसरी ओर, अपने काम के दौरान पैदा हुए चन्द "वामपंथी"

भटकावों को भी शानशी-स्वेय्वान पार्टी-संगठन ने दुरुस्त कर लिया है। इस प्रकार के भटकाव मुख्यतः तीन थे। पहला भटकाव था : बहुत सी जगहों में वर्ग-हैसियत तय करते समय बहुत से मेहनतकश लोगों को बेजा तौर पर जमींदारों या धनी किसानों में गिन लिया गया, यद्यपि वे सामन्ती शोषण या तो करते ही नहीं थे या बहुत थोड़ा करते थे ; इस तरह प्रहार के निशाने का दायरा बेजा तौर पर फैलाकर बड़ा कर दिया गया ; और यह सबसे अहम रणनीतिक उसूल भुला दिया गया कि भूमि-सुधार के काम में गांवों के लगभग ९२ फीसदी परिवारों या लगभग ९० फीसदी लोगों यानी देहात की तमाम मेहनतकश जनता के साथ एकता कायम करके सामन्ती व्यवस्था के खिलाफ संयुक्त मोर्चा बनाना हमारे लिए मुमकिन भी है और लाजमी भी। यह भटकाव अब दुरुस्त कर लिया गया है। इस प्रकार जनता पुनः आश्वस्त हो गई है और क्रान्तिकारी संयुक्त मोर्चा सुदृढ़ बन गया है। दूसरा भटकाव था : भूमि-सुधार के काम में जमींदारों और धनी किसानों के उद्योग और वाणिज्य सम्बन्धी कारोबारों में भी बेजा तौर पर दखल दे दिया गया ; आर्थिक क्षेत्र में प्रतिक्रान्ति का पर्दाफाश करने के संघर्ष में जांच-पड़ताल के नियत दायरे की सीमाएं लांघ दी गई ; और कर-नीति में उद्योग और वाणिज्य को ठेस पहुंचाई गई। उद्योग और वाणिज्य सम्बन्धी मसलों से निपटते समय ये "वामपंथी" भटकाव थे। अब ये भी दुरुस्त कर लिए गए हैं और इसलिए उद्योग और वाणिज्य नए सिरे से अपनी हालत सुधार कर विकास कर सकते हैं। तीसरा भटकाव था : सालभर भूमि-सुधार के भीषण संघर्षों में शानशी-स्वेय्वान पार्टी-संगठन अन्धाधुन्ध मारपीट और वध की सख्त मनाही की पार्टी-नीति का असन्दिग्ध

रूप से पालन करने में चूक गया। नतीजा यह हुआ कि कई स्थानों पर भूमि-सुधार के दौरान कुछ जमींदारों और धनी किसानों को गैरजरूरी तौर पर मार डाला गया और देहात के बुरे लोगों ने इस स्थिति का फायदा उठाकर बदला लेने के लिए अनेक मेहनतकशों की जघन्य हत्याएं कर डालीं। हमारा विचार है कि जिन बड़े-बड़े अपराधियों ने जनता की जनवादी क्रान्ति का सक्रियता से और हताश होकर विरोध किया हो और भूमि-सुधार में तोड़फोड़ की हो, यानी जो जघन्यतम प्रतिक्रान्तिकारी और स्थानीय निरंकुश तत्व हों, उन्हें जन-अदालतों और जनवादी सरकारों के जरिए प्राणदण्ड देना बिलकुल जरूरी और मुनासिब है। अगर ऐसा न किया गया, तो जनवादी व्यवस्था कायम नहीं की जा सकती। लेकिन क्वोमिन्ताङ पक्ष के मामूली कर्मचारियों, मामूली जमींदारों और धनी किसानों तथा मामूली अपराधियों का अन्धाधुन्ध वध करने की मनाही हमें जरूर करनी होगी। साथ ही, अपराधियों के खिलाफ अदालती कार्यवाही करते समय जन-अदालत या जनवादी सरकार को शारीरिक दण्ड से परहेज रखना होगा। इस प्रकार के जो भटकाव पिछले एक साल में शानशी-स्वेय्वान क्षेत्र में हुए, वे भी अब दुरुस्त कर लिए गए हैं।

इन सभी भटकावों को संजीदगी से दूर कर लेने के बाद अब हम प्रामाणिक रूप से यह कह सकते हैं कि केन्द्रीय कमेटी के शानशी-स्वेय्वान उपब्यूरो के नेतृत्व में चल रहा सारा काम स्वस्थ विकास के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

अपने काम से सम्बन्धित नीतियों को वास्तविक स्थितियों के अनुरूप निर्धारित करने का तरीका काम करने का सबसे बुनियादी तरीका है, जिसे सभी कम्युनिस्टों को अच्छी तरह याद रखना

चाहिए। जब कभी हम अपनी गलतियों के कारणों का अध्ययन करते हैं, तो हमें मालूम हो जाता है कि वे सब गलतियां केवल इसलिए हुईं कि हमने एक निश्चित समय और स्थान की वास्तविक स्थितियों को ध्यान में नहीं रखा तथा अपने काम से सम्बन्धित नीतियों को निर्धारित करने में मनोगतवादी रुख अपनाया। यह सभी साथियों के लिए एक सबक होना चाहिए।

प्राथमिक स्तर के पार्टी-संगठनों को सुदृढ़ बनाने के मामले में आपने पुराने और अर्ध-पुराने मुक्त क्षेत्रों में भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने के कार्य से सम्बन्धित केन्द्रीय कमेटी के निर्देश[1] के अनुसार शानशी-छाहाड़-हपे मुक्त क्षेत्र की फिङशान काउन्टी के अनुभव का लाभ उठाया है; अर्थात, आपने पार्टी-शाखा की बैठकों में भाग लेने के लिए गैरपार्टी जन-समुदाय के बीच से भी सक्रिय लोगों को बुलाया है, पार्टी-संगठनों की वर्ग-संरचना और कार्यशैली में मौजूद अशुद्धता को दूर करने के लिए आलोचना और आत्म-आलोचना की है और इस प्रकार पार्टी को जन-समुदाय के साथ और भी घनिष्ठ सम्बन्ध जोड़ लेने में समर्थ बनाया है। इससे आप पार्टी-संगठनों को सुदृढ़ बनाने के सम्पूर्ण काम को पक्के तौर पर पूरा करने में समर्थ हो जाएंगे।

ऐसे सभी पार्टी-सदस्यों और कार्यकर्ताओं को भी, जो गलतियां तो कर चुके हैं लेकिन जिन्हें शिक्षित किया जा सकता है तथा जो बिलकुल न सुधर सकने वालों से भिन्न प्रकार के हैं, शिक्षित किया जाना चाहिए और उन्हें छोड़ नहीं देना चाहिए, चाहे उनकी वर्ग-उत्पत्ति कैसी भी क्यों न हो। यह भी ठीक है कि आप लोग इस नीति का पालन करते रहे हैं या कर रहे हैं।

सामन्ती-व्यवस्था-विरोधी संघर्ष में गरीब किसान संघों और किसान सभाओं के आधार पर जिले और गांव (या श्याङ) के स्तर पर जन-प्रतिनिधि सम्मेलनों का गठन करने का अनुभव बेहद मूल्यवान है। सच्चा जन-प्रतिनिधि सम्मेलन सिर्फ वही है जिसका आधार सचमुच व्यापक जन-समुदाय का संकल्प हो। सभी मुक्त क्षेत्रों में ऐसे जन-प्रतिनिधि सम्मेलनों का प्रकट होना अब सम्भव है। गठित होने के फौरन बाद ऐसे सम्मेलनों को जन-सत्ता का स्थानीय संगठन बन जाना चाहिए और सभी मुनासिब अधिकार इन्हीं सम्मेलनों और इनके द्वारा चुनी हुई सरकारी परिषदों को सौंप दिए जाने चाहिए। ऐसी सूरत में गरीब किसान संघ और किसान सभाएं इनकी सहायक बन जाएंगी। कभी हम यह सोचते थे कि देहात में जन-प्रतिनिधि सम्मेलनों का गठन हम भूमि-सुधार के मुख्य रूप से पूरा हो लेने के बाद ही करेंगे। लेकिन अब चूंकि आपके और दूसरे मुक्त क्षेत्रों के अनुभवों ने यह सिद्ध कर दिया है कि जिले और गांव के स्तर पर इन जन-प्रतिनिधि सम्मेलनों और इनकी चुनी हुई सरकारी परिषदों की स्थापना भूमि-सुधार के संघर्ष के दौरान भी सम्भव और आवश्यक है, इसलिए अब उचित यही है कि आप इसी रास्ते पर बने रहें। सभी मुक्त क्षेत्रों को यही करना चाहिए। जिले और गांव के स्तर पर इन सम्मेलनों के आम तौर पर गठित हो चुकने पर उन्हें काउन्टी स्तर पर भी स्थापित किया जा सकता है। काउन्टी स्तर तक जन-प्रतिनिधि सम्मेलनों के स्थापित हो चुकने पर और भी ऊंचे स्तरों पर इनकी स्थापना करना आसान हो जाएगा। विविध स्तरों के जन-प्रतिनिधि सम्मेलनों में, जहां कहीं भी सम्भव

हो, सभी जनवादी तबकों – मजदूरों, किसानों, स्वतंत्र श्रमिकों, आजाद पेशे वाले लोगों, बुद्धिजीवियों, राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के उद्योगपतियों व व्यापारियों और जागृत शरीफजादों के प्रतिनिधियों को शामिल करना होगा। हां, यह काम यांत्रिक ढंग से नहीं करना चाहिए ; कस्बों वाले देहाती इलाकों और बिना कस्बों वाले देहाती इलाकों के बीच, विविध आकारों के कस्बों के बीच तथा शहरों और देहातों के बीच भेद करना चाहिए, ताकि सभी जनवादी तबकों को एकताबद्ध करने का अपना काम हम यांत्रिक ढंग से न करके स्वाभाविक रूप से पूरा कर सकें।

भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने के महान जन-संघर्ष ने दसियों हजार सक्रिय तत्वों और कार्यकर्ताओं को शिक्षित किया है और अगली पांतों में ला खड़ा किया है। वे लोग जन-समुदाय से सम्पर्क रखते हैं और चीन लोक गणराज्य के लिए अत्यन्त अनमोल निधि सिद्ध होंगे। अब से हमें उनके शिक्षण-कार्य को आगे बढ़ाना होगा, ताकि वे अपने काम में निरन्तर प्रगति कर सकें। साथ ही उन्हें यह चेतावनी दे दी जानी चाहिए कि सफलता और सराहना के मारे वे कहीं अभिमान और आत्म-सन्तोष के शिकार न बन जाएं।

इन सभी बातों को देखते हुए, इन विविध कामों में प्राप्त सफलताओं को देखते हुए, हम यह कह सकते हैं कि शानशी-स्वेय्वान मुक्त क्षेत्र अब पहले से कहीं अधिक सुदृढ़ बन गया है। इसी दिशा में अपने काम को आगे बढ़ाने वाले अन्य मुक्त क्षेत्र भी इसी प्रकार सुदृढ़ बन चुके हैं।

२

नेतृत्व के मामले में शानशी-स्वेय्वान मुक्त क्षेत्र की सफलताओं के मुख्य कारण ये हैं :

१. पिछले वसन्त और गरमियों में लिनश्येन काउन्टी के हाओच्याफो प्रशासनिक गांव में कामरेड खाङ शङ द्वारा किए गए काम से मदद पाकर शानशी-स्वेय्वान उपब्यूरो ने पिछले जून में प्रिफेक्चर पार्टी-कमेटियों के सचिवों का सम्मेलन बुलाया। सम्मेलन ने पिछले काम में मौजूद दक्षिणपंथी भटकावों का खण्डन किया, पार्टी की कार्यदिशा से अलग होने वाले विविध प्रकार के भटकावों की संगीन स्थिति का पूरी तरह पर्दाफाश किया और भूमि-सुधार करने व पार्टी को सुदृढ़ बनाने का काम संजीदगी के साथ शुरू करने की नीति निर्धारित की। आम तौर पर सम्मेलन सफल रहा। इसके बिना इतने बड़े पैमाने पर भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने में सफलता नहीं मिल पाती। सम्मेलन की कमियां ये थीं : पुराने, अर्ध-पुराने और नए मुक्त क्षेत्रों की भिन्न परिस्थितियों के अनुरूप काम करने की भिन्न नीतियां निर्धारित करने में वह चूक गया ; वर्ग-हैसियत तय करने के सवाल पर उसने अति-वामपंथी नीति अपनाई ; सामन्ती व्यवस्था को मिटाने के उपाय के सवाल पर उसने भूमि में गाड़ी गई जमींदारों की सम्पत्ति का पता लगाने पर जरूरत से ज्यादा जोर दिया ; और जन-समुदाय की मांगों से निबटने के सवाल का वह सुलझे दिमाग से विश्लेषण नहीं

कर पाया और उसने यह अतिरंजित नारा दे दिया कि "हर काम को वैसे ही करो जैसे जन-समुदाय चाहे"। इसमें अन्तिम प्रश्न जन-समुदाय के साथ पार्टी के सम्बन्ध का है. इस मामले में पार्टी को चाहिए कि वह परिस्थितियों की रोशनी में जन-समुदाय का नेतृत्व करके उसे अपनी सभी सही धारणाओं को असली जामा पहनाने में कामयाब बनाए और उसे शिक्षित करके उसकी सभी गलत धारणाओं को दुरुस्त करे। प्रिफेक्चर पार्टी-कमेटियों के सचिवों के सम्मेलन ने सिर्फ इसी बात पर जोर दिया कि पार्टी को जन-समुदाय की धारणाओं को असली जामा पहनाना चाहिए, इस मुद्दे को सम्मेलन ने नजरअन्दाज कर दिया कि पार्टी को जन-समुदाय का शिक्षण और नेतृत्व भी करना चाहिए, तथा इस प्रकार सम्मेलन ने अन्ततः कुछ स्थानों के साथियों पर गलत प्रभाव डाला और उनकी दुमछल्लावादी गलती की जड़ें और गहरी जमा दीं।

२. इस वर्ष जनवरी में शानशी-स्वेइय्वान उपब्यूरो ने "वामपंथी" भटकावों को दुरुस्त करने के लिए समुचित उपाय अपनाए हैं। केन्द्रीय कमेटी की दिसम्बर में आयोजित मीटिंग[1] से लौटने पर उपब्यूरो के साथियों ने इन उपायों को कार्यान्वित किया। इस उद्देश्य से उपब्यूरो ने एक पांचसूत्री निर्देश[2] जारी किया। भटकाव दुरुस्त करने के ये उपाय जन-समुदाय की इच्छाओं के इतने अनुरूप बना लिए गए थे और इतनी तेजी के साथ और इतने मुकम्मिल तौर पर लागू किए गए थे कि थोड़े ही समय के भीतर लगभग सभी "वामपंथी" भटकाव दुरुस्त कर लिए गए।

३

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान शानशी-स्वेइय्वान पार्टी-संगठन की नेतृत्वकारी कार्यदिशा बुनियादी तौर पर सही थी। यह बात प्रमाणित हुई लगान और सूद कम करने में; कृषि-उत्पादन, घरेलू कताई-बुनाई, युद्ध-उद्योगों और कुछ हल्के उद्योगों का काफी हद तक पुनरुद्धार और विकास करने में; पार्टी-संगठनों की नींव डालने में; जनवादी सरकार की स्थापना करने में; और लगभग एक लाख सैनिकों की जन-सेना का गठन करने में। यही सारा काम वह आधार बना जिसे पाकर हमने प्रतिरोध-युद्ध लड़कर जीत हासिल की और येन शी-शान व अन्य प्रतिक्रियावादियों के हमलों को नाकाम कर डाला। इसमें शक नहीं कि उन दिनों पार्टी और सरकार में खामियां भी मौजूद थीं। वे खामियां, जैसा कि अब हम सभी पूरी तरह समझ चुके हैं, ये थीं : पार्टी और सरकार की वर्ग-संरचना और कार्यशैली में कुछ हद तक अशुद्धता मौजूद थी, और इसके कारण हमारे काम पर अवांछनीय प्रभाव पड़ा था। लेकिन पूरे तौर पर देखा जाए, तो प्रतिरोध-युद्ध के दिनों का काम सफल रहा। इस प्रकार हमें ऐसी अनुकूल परिस्थितियां नसीब हुईं जिनमें हम जापान के आत्मसमर्पण के बाद च्यांग काई-शेक के प्रतिक्रान्तिकारी हमलों को परास्त कर सके। प्रतिरोध-युद्ध के दौरान शानशी-स्वेइय्वान पार्टी-संगठन के नेतृत्व की खामियां या गलतियां मुख्य रूप से इस बात में निहित थीं कि पार्टी-संगठनों और सरकारी संगठनों की वर्ग-संरचना और कार्यशैली में कुछ हद तक मौजूद अशुद्धता को और काम पर उस अशुद्धता के अवांछनीय

प्रभाव को दूर करने में वह व्यापकतम जनता पर निर्भर रहने में चूक गया। उस दायित्व को निभाने का भार अब आपके कन्धों पर है। उस स्थिति का एक कारण यह था कि उन दिनों शानशी और स्वेय्वान के चन्द नेतृत्वकारी साथियों में पार्टी और जन-समुदाय सम्बन्धी बहुत सी वास्तविक स्थितियों की समझ का अभाव था। साथियों के लिए यह भी एक सबक होना चाहिए।

४

शानशी-स्वेय्वान पार्टी-संगठन के जिम्मे काम है भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने का कार्य सम्पन्न कर लेने के लिए, जनता के मुक्ति युद्ध को जारी रखने और उसका समर्थन करने के लिए, जनता के ऊपर और भार न बढ़ने देने और उस भार को समुचित रूप से हल्का करने के लिए, तथा उत्पादन का पुनरुद्धार और विकास करने के लिए बड़े से बड़ा प्रयास करना। फिलहाल आप उत्पादन के सवाल पर एक सम्मेलन कर रहे हैं। अगले कुछ वर्षों तक उत्पादन का पुनरुद्धार और विकास करने का उद्देश्य होगा एक ओर तो जनता के रहन-सहन को सुधारना और दूसरी ओर जनता के मुक्ति युद्ध का समर्थन करना। आपके पास विस्तीर्ण कृषि और दस्तकारी उद्योग हैं, साथ ही मशीनों का उपयोग करने वाले कुछ हल्के और भारी उद्योग भी हैं। आशा है, इन उत्पादन-शील धन्धों की रहनुमाई करने में आप अच्छी सफलता हासिल कर दिखाएंगे, वरना आप अच्छे मार्क्सवादी नहीं कहला सकते। कृषि में

जिन श्रम-विनिमय दलों और सहकारी समितियों* को नौकरशाही तत्वों ने अपने चंगुल में जकड़ रखा था और जिनसे जनता को लाभ के बजाय हानि ही होती थी, वे सबकी सब भहराकर गिर चुकी हैं। यह एकदम समझ में आ सकता है और जरा भी खेदजनक नहीं है। आपका काम यह है कि जिन श्रम-विनिमय दलों, सहकारी समितियों और दूसरे जरूरी आर्थिक संगठनों ने जन-समुदाय का समर्थन हासिल कर लिया है, उन्हें आप सावधानी के साथ बचाए रखें, विकसित करें और हर जगह फैलाएं।

५

राष्ट्रीय परिस्थिति हमारे साथियों के लिए दिलचस्पी का विषय है। पार्टी के पिछले साल वाले उस राष्ट्रीय भूमि-सम्मेलन के बाद जिसमें नई नीति अपनाने तथा भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने के काम को आगे बढ़ाने का निश्चय किया गया था, लगभग सभी मुक्त क्षेत्रों में पार्टी को सुदृढ़ बनाने और भूमि-सुधार करने के सवाल पर कार्यकर्ताओं के बड़े-बड़े सम्मेलन हुए। इन सम्मेलनों में पार्टी के भीतर मौजूद दक्षिणपंथी विचारों का खण्डन किया गया और पार्टी की वर्ग-संरचना और कार्यशैली में कुछ हद तक मौजूद अशुद्धता की संगीन स्थिति का पर्दाफाश किया गया। उसके बाद अनेक क्षेत्रों में समुचित कदम उठाकर "वामपंथी" भटकाव दुरुस्त किए गए या किए जा रहे हैं। इस तरह नई राजनीतिक परिस्थिति और नए राजनीतिक कार्यभार के आ पड़ने पर हमारी

पार्टी पूरे देश में अपने काम को स्वस्थ विकास के पथ पर बढ़ाने में समर्थ हुई है। पिछले कुछ महीनों में लगभग समूची जन-मुक्ति सेना में लड़ाइयों के बीच के अवकाश को बड़े पैमाने के सुदृढ़ीकरण और ट्रेनिंग के लिए इस्तेमाल किया गया है। यह कार्य पूर्णतया निर्देशित, व्यवस्थित और जनवादी तरीके से किया गया है। परिणामस्वरूप इसने कमाण्डरों और योद्धाओं के भारी जन-समुदाय के क्रान्तिकारी उत्साह को जागृत किया है, उन लोगों को इस योग्य बना दिया है कि वे युद्ध के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से समझ सकें, सेना में मौजूद कुछ गलत विचारधारात्मक रुझानों और अवांछनीय प्रवृत्तियों को खत्म कर दिया है, कार्यकर्ताओं और योद्धाओं को शिक्षित किया है तथा सेना की युद्ध-क्षमता को बहुत ज्यादा बढ़ा दिया है। अब से हमें सेना में इस नए किस्म के सुदृढ़ीकरण आन्दोलन को, एक ऐसे आन्दोलन को जिसका स्वरूप जनवादी और जनव्यापी है, चलाना जारी रखना चाहिए। यह तो आप साफ तौर पर देख सकते हैं कि चाहे पार्टी को सुदृढ़ बनाना हो, चाहे सेना को सुदृढ़ बनाना अथवा भूमि-सुधार करना – जो काम हमने सम्पन्न कर लिए हैं और जिनका महान ऐतिहासिक महत्व है – ये तीनों कार्य ऐसे हैं जिनमें से एक का भी बीड़ा उठाना हमारे शत्रु क्वोमिन्ताङ के बस का रोग नहीं था। जहां तक हमारी बात है, अपनी खामियां दूर करने की हम बड़ी संजीदगी से कोशिश करते रहे हैं; हमने समूची पार्टी को और समूची सेना को इस कदर एकताबद्ध कर लिया है कि वह एकप्राण हो गई है, तथा हमने आम जनता के साथ उनके घनिष्ठ सम्बन्ध कायम कर दिए हैं; अपनी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा निर्धारित सभी नीतियों व कार्यनीतियों को हम कारगर रूप से अमल में ला

रहे हैं और जनता का मुक्ति युद्ध सफलता के साथ चला रहे हैं। उधर हमारे शत्रु का हाल यह है कि उसकी हर बात इसके ठीक विपरीत है। भ्रष्टाचार में वह इतना लिप्त है, सदा बढ़ते जाने वाले और कभी न सुलझने वाले अन्दरूनी झगड़ों में वह इतना फंसा हुआ है, जनता ने उसे इतना ठुकरा दिया है, सबसे वह इतना अधिक अलग-थलग पड़ गया है, और लड़ाई में वह इतनी अधिक बार मुंह की खा चुका है कि उसका सर्वनाश अब टाले नहीं टल सकता। चीन में क्रान्ति बनाम प्रतिक्रान्ति की पूरी परिस्थिति यही है।

ऐसी परिस्थिति में समूची पार्टी के साथियों के लिए यह लाजमी है कि वे पार्टी की आम कार्यदिशा को यानी नव-जनवादी क्रान्ति की कार्यदिशा को पक्के तौर पर ग्रहण कर लें। नव-जनवादी क्रान्ति कोई अन्य क्रान्ति नहीं बल्कि केवल एक ऐसी क्रान्ति हो सकती है और इसे केवल एक ऐसी क्रान्ति होना चाहिए जिसे सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में व्यापक जन-समुदाय द्वारा साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद के खिलाफ चलाया जाता है। इसका मतलब यह है कि इस क्रान्ति का नेतृत्व कोई भी अन्य वर्ग और कोई भी अन्य पार्टी नहीं बल्कि केवल सर्वहारा वर्ग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ही कर सकती है और इन्हीं को इसका नेतृत्व करना चाहिए। इसका मतलब यह है कि इस क्रान्ति में शामिल होने वालों का संयुक्त मोर्चा बहुत ही व्यापक है और इसमें मजदूर, किसान, स्वतंत्र श्रमिक, आजाद पेशे वाले लोग, बुद्धिजीवी, राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग, और वे जागृत शरीफजादे जो जमींदार वर्ग से अपना नाता तोड़ चुके हैं, ये सभी आ जाते हैं। ये सब मिलकर वह समूह बन जाते हैं जिसे हम व्यापक जन-समुदाय के नाम से पुकारते हैं। व्यापक जन-समुदाय

जिस राज्य और जिस सरकार की स्थापना करेगा, वह राज्य चीन लोक गणराज्य होगा और वह सरकार सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में सभी जनवादी वर्गों के संश्रय वाली जनवादी मिलीजुली सरकार होगी। इस क्रान्ति में जिन शत्रुओं को उखाड़ फेंकना है, वे साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद ही हो सकते हैं और उखाड़ना भी उन्हीं को होगा। इन सभी शत्रुओं का केन्द्रित रूप है च्याङ काई-शेक की क्वोमिन्ताङ का प्रतिक्रियावादी शासन।

सामन्तवाद साम्राज्यवाद व नौकरशाही-पूंजीवाद का संश्रयकारी और उनके शासन की नींव है। इसलिए भूमि-व्यवस्था का सुधार चीन की नव-जनवादी क्रान्ति की प्रधान अन्तर्वस्तु है। भूमि-सुधार की आम कार्यदिशा है गरीब किसानों पर निर्भर रहना, मध्यम किसानों के साथ एकता कायम करना, सामन्ती शोषण-व्यवस्था को कदम-ब-कदम और सूक्ष्म भेद करते हुए खत्म कर देना तथा कृषि-उत्पादन का विकास करना। भूमि-सुधार में जिस बुनियादी शक्ति पर हमें निर्भर रहना चाहिए वह गरीब किसान ही हो सकते हैं और उन्हीं को होना भी चाहिए। खेत-मजदूरों को मिलाकर उनकी तादाद चीन की देहाती आबादी के ७० फीसदी के लगभग हो जाती है। भूमि-सुधार का मुख्य और प्रत्यक्ष कार्य है गरीब किसानों व खेत-मजदूरों की मांगें पूरी करना। भूमि-सुधार में मध्यम किसानों के साथ एकता कायम करना जरूरी है; गरीब किसानों और खेत-मजदूरों को देहाती आबादी की लगभग २० फीसदी तादाद वाले मध्यम किसानों के साथ सुदृढ़ संयुक्त मोर्चा बनाना होगा। नहीं तो, गरीब किसान और खेत-मजदूर अपने आपको अलगाव की स्थिति में पाएंगे और भूमि-सुधार विफल हो जाएगा। भूमि-सुधार का एक

कार्य चन्द मध्यम किसानों की मांगें पूरी करना भी है। सामान्य गरीब किसान औसतन जितनी जमीन हासिल करता है, उससे कुछ अधिक जमीन मध्यम किसानों के एक भाग के पास रहने देनी होगी। जमीन के समान वितरण की किसानों की मांग का समर्थन हम इसलिए करते हैं कि सामन्ती जमीदार वर्ग की भू-स्वामित्व व्यवस्था को जल्द से जल्द मिटा डालने के लिए व्यापक किसान समुदाय को जागृत करने में इससे मदद मिलती है; लेकिन इस मामले में निरपेक्ष समानतावाद की दुहाई हम नहीं देते। जो कोई भी निरपेक्ष समानतावाद की दुहाई देता है, वह गलत है। देहातों में एक प्रकार का विचार आजकल फैल रहा है, जो उद्योग और वाणिज्य की जड़ खोद डालना है और जमीन के बंटवारे में निरपेक्ष समानतावाद का पक्ष लेना है। इस प्रकार के विचार का स्वरूप प्रतिक्रियावादी, पिछड़ा हुआ और प्रतिगामी है। हमें उसका खण्डन करना होगा। भूमि-सुधार का निशाना बस एक ही है और वही होना भी चाहिए: वह है जमीदार वर्ग और पुराने किस्म के धनी किसानों की सामन्ती शोषण-व्यवस्था। न तो राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग पर हाथ उठाना है और न ही जमीदारों व धनी किसानों के उद्योग और वाणिज्य सम्बन्धी कारोबारों पर। इस बात की खास तौर से सावधानी बरतनी होगी कि मध्यम किसानों, स्वतंत्र श्रमिकों, आजाद पेशे वाले लोगों और नए किस्म के धनी किसानों के हितों को कोई आंच न आने पाए; ये सभी या तो बहुत थोड़ा शोषण करते हैं या कतई नहीं करते। भूमि-सुधार का उद्देश्य है सामन्ती शोषण-व्यवस्था को खत्म कर देना, अर्थात सामन्ती जमीदारों को व्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि वर्ग के रूप में मिटा देना। इसलिए जमीदार को भी उतनी ही जमीन-जायदाद देनी होगी

जितनी कि किसान को दी जाती है ; फिर उसे उत्पादक श्रम करना सीखने और देश के आर्थिक जीवन की धारा में शामिल होने को मजबूर करना होगा। उन जघन्यतम प्रतिक्रान्तिकारियों और स्थानीय निरंकुश तत्वों को छोड़कर, जिन्होंने व्यापक जन-समुदाय की बेहद घृणा अर्जित कर ली है, जो अपराधी सिद्ध किए जा चुके हैं और इसलिए दण्डित हो सकते हैं तथा जिनका दण्डित होना जरूरी भी है, शेष सभी लोगों के साथ नरमी की नीति अपनानी चाहिए और किसी भी तरह की अन्धाधुन्ध मारपीट या वध की इजाजत नहीं होनी चाहिए। सामन्ती शोषण-व्यवस्था को कदम-ब-कदम यानी एक निश्चित कार्यनीति के अनुसार खत्म किया जाना चाहिए। संघर्ष शुरू करते समय हमें अपनी कार्यनीति को परिस्थितियों के अनुसार और किसान समुदाय की राजनीतिक चेतना और संगठन के स्तर के अनुसार तय करना चाहिए। पूरी सामन्ती शोषण-व्यवस्था को रातोंरात मिटा डालने की कोशिश हमें नहीं करनी चाहिए। चीन के देहातों में सामन्ती शोषण-व्यवस्था की वास्तविक परिस्थितियों के अनुसार भूमि-सुधार के प्रहार के निशाने का कुल दायरा देहाती परिवारों के ८ फीसदी और कुल देहाती आबादी के १० फीसदी से अधिक आम तौर पर नहीं होना चाहिए। पुराने और अर्ध-पुराने मुक्त क्षेत्रों में तो यह प्रतिशत और भी नीचा होना चाहिए। वास्तविक परिस्थितियों से हटकर प्रहार के निशाने के दायरे को गलत ढंग से बढ़ा लेना खतरनाक है। इतना ही नहीं, नए मुक्त क्षेत्रों में विविध स्थानों और विविध अवस्थाओं के भेद को समझना भी जरूरी है। स्थान-भेद को समझने से हमारा मतलब यह है कि जिन स्थानों के हमारे हाथ से निकल जाने का कोई अंदेशा

न हो, वहां हमें स्थानीय जनता की इच्छाओं के अनुरूप ही उपयुक्त भूमि-सुधार करने पर अपने प्रयत्नों को केन्द्रित करना चाहिए और जिन स्थानों को फिलहाल अपने हाथ में बनाए रखना कठिन लगता हो, वहां परिस्थितियों के बदल जाने तक हमें भूमि-सुधार करने की जल्दी में नहीं पड़ना चाहिए और मौजूदा परिस्थितियों में जितना कुछ और जो कुछ करना सम्भव हो और आम जनता के लिए लाभ-कारी हो, उतना ही और वही करना चाहिए। अवस्था-भेद को समझने से हमारा मतलब यह है कि हाल में ही जन-मुक्ति सेना के अधिकार में आए हुए स्थानों में हमें धनी किसानों को तटस्थ बनाने की और मध्यम जमींदारों व छोटे जमींदारों को तटस्थ बनाने की कार्यनीति पेश करनी चाहिए और उसे लागू करना चाहिए, ताकि हम अपने प्रहार के निशाने के दायरे को यहां तक छोटा कर दें कि सिर्फ प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सेना को ही नष्ट किया जाए और बुरे शरीफजादों व स्थानीय निरंकुश तत्वों को चोट पहुंचाई जाए। नए मुक्त क्षेत्रों में अपने काम की पहली अवस्था के रूप में हमें यही कार्य सम्पन्न कर लेने पर अपने सारे प्रयत्नों को केन्द्रित करना चाहिए। इसके बाद ही हमें जन-समुदाय की राजनीतिक चेतना और संगठन के उन्नत होते हुए स्तर के अनुरूप एक-एक कदम आगे बढ़ाते हुए, पूरी सामन्ती व्यवस्था को खत्म करने की अवस्था की ओर अग्रसर होना चाहिए। नए मुक्त क्षेत्रों में चल-सम्पत्ति और जमीन का बटवारा हमें तभी करना चाहिए जब हालात अपेक्षाकृत स्थिर हो लें और जन-समुदाय की भारी बहु-संख्या इस कार्यवाही के लिए पूरी तरह जागृत हो चुकी हो ; इससे भिन्न कदम उठाना दुस्साहसवाद होगा, भरोसे के काबिल नहीं

होगा और इससे लाभ के बजाय हानि ही अधिक होगी। नए मुक्त क्षेत्रों में प्रतिरोध-युद्ध के दौरान हासिल किए गए अनुभवों का हमें पूरा-पूरा उपयोग करना चाहिए। सूक्ष्म भेद करते हुए सामन्ती व्यवस्था को खत्म करने की बात से हमारा मतलब यह है कि हमें जमींदारों और धनी किसानों के बीच भेद करना चाहिए; बड़े, मध्यम और छोटे जमींदारों के बीच भेद करना चाहिए; जो जमींदार व धनी किसान स्थानीय निरंकुश तत्व हों और जो न हों उन के बीच भेद करना चाहिए; जमीन का समान वितरण करने और सामन्ती व्यवस्था को खत्म करने के आम उसूल के अन्तर्गत हमें चाहिए कि सबके साथ एक जैसा सलूक करने का न तो हम फैसला करें और न ही ऐसा समान बरताव करें, बल्कि करें यह कि उनमें भेद करके परिस्थितियों की भिन्नता के अनुसार उनके साथ अपने बरताव को भी भिन्न-भिन्न प्रकार का रखें। ऐसा करने से लोग देखेंगे कि हमारा काम पूरे तौर पर युक्तिसंगत है। कृषि-उत्पादन का विकास ही भूमि-सुधार का प्रत्यक्ष उद्देश्य है। इस विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियां सामन्ती व्यवस्था के खात्मे से ही पैदा की जा सकती है। सामन्ती व्यवस्था को खत्म करने और भूमि-सुधार का काम पूरा कर लेने के फौरन बाद हर इलाके में पार्टी और जनवादी सरकार के लिए यह लाजमी होगा कि वे कृषि-उत्पादन का पुनरुद्धार और विकास करने का कार्य पेश करें, देहातों में उपलब्ध सभी शक्तियों को अन्य कामों से हटाकर इस काम मे लगा दें, सहकारिता और आपसी सहयोग का संगठन करें, कृषि-तकनीक उन्नत करें, बीज चुनने के कार्य को आगे बढ़ाएं और सिंचाई-साधनों का निर्माण करें। ये सारे कार्य पैदावार बढ़ाने की गारन्टी करने

के लिए करने होंगे। देहात के पार्टी-संगठनों के लिए यह लाजमी है कि वे कृषि-उत्पादन का पुनरुद्धार और विकास करने और साथ ही कस्बों के औद्योगिक उत्पादन का पुनरुद्धार और विकास करने में अपनी अधिक से अधिक शक्ति लगाएं। कृषि-उत्पादन और कस्बों में औद्योगिक उत्पादन का तेजी से पुनरुद्धार और विकास करने के लिए हमें इस बात की हरचन्द कोशिश करनी चाहिए कि सामन्ती व्यवस्था को खत्म करने के अपने संघर्ष के दौरान, उत्पादन और जीविका के तमाम उपयोगी साधनों की यथासम्भव रक्षा करें, उन्हें नष्ट करने अथवा उनका अपव्यय करने के खिलाफ दृढ़ता से कदम उठाएं, शाहखर्ची से खाने-पीने का विरोध करें और किफायत करने की ओर ध्यान दें। कृषि-उत्पादन का विकास करने के लिए यह लाजमी है कि हम निजी मिलकियत पर आधारित विविध प्रकार की ऐसी उत्पादक व उपभोक्ता सहकारी समितियां स्वेच्छा से कदम-ब-कदम संगठित करने की सलाह किसानों को दें जिनकी इजाजत मौजूदा आर्थिक परिस्थितियों में दी जा सकती हो। सामन्ती व्यवस्था के खात्मे और कृषि-उत्पादन के विकास से औद्योगिक उत्पादन के विकास की तथा एक कृषि-प्रधान देश को एक औद्योगिक देश में बदलने की नींव पड़ जाएगी। नव-जनवादी क्रान्ति का अन्तिम उद्देश्य यही है।

आप सब साथी यह जानते है कि हमारी पार्टी ने चीनी क्रान्ति की आम कार्यदिशा व आम नीति निर्धारित करने के साथ-साथ हमारे कार्य की विभिन्न विशेष कार्यदिशाएं और विशेष नीतियां भी निर्धारित की हैं। लेकिन, हमारे अनेक साथियों को जहां हमारी पार्टी के कार्य से सम्बन्धित विशेष कार्यदिशाओं व विशेष नीतियों

का ध्यान रहता है, वहां वे उसकी आम कार्यदिशा व आम नीति को अक्सर भूल जाते हैं। यदि हम वास्तव में पार्टी की आम कार्यदिशा और आम नीति को भूल जाएंगे, तो हम दिशाहीन, अपरिपक्व और उलझे दिमाग वाले क्रान्तिकारी बन जाएंगे, तथा ऐसी स्थिति में अपने कार्य की किसी विशेष कार्यदिशा और विशेष नीति को कार्यान्वित करते समय अपनी दिशा खो बैठेंगे और कभी दाएं तो कभी बाएं भटकने लगेंगे, और इससे हमारे कार्य को नुकसान पहुंचेगा।

अपनी बात फिर एक बार दोहरा दूं :

सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में व्यापक जन-समुदाय द्वारा साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद के खिलाफ चलाई जाने वाली क्रान्ति ही चीन की नव-जनवादी क्रान्ति है और इतिहास के मौजूदा दौर में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आम कार्यदिशा और उसकी आम नीति यही है।

गरीब किसानों पर निर्भर रहना, मध्यम किसानों के साथ एकता कायम करना, सामन्ती शोषण-व्यवस्था को कदम-ब-कदम और सूक्ष्म भेद करते हुए खत्म कर देना तथा कृषि-उत्पादन का विकास करना ही नव-जनवादी क्रान्ति के दौरान भूमि-सुधार के काम में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आम कार्यदिशा और उसकी आम नीति है।

नोट

१ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा २२ फरवरी १९४८ को जारी किए गए इस निर्देश में विभिन्न मुक्त क्षेत्रों में भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने के काम के अनुभवों का निचोड़ प्रस्तुत किया गया था, भूमि-सुधार करने और पार्टी को सुदृढ़ बनाने के लिए नीतियों और तरीकों की एक शृंखला निर्धारित की गई थी और चन्द इलाकों में इन दोनों कामों में पैदा हुए "वामपंथी" भटकावों को दुरुस्त करने पर जोर दिया गया था।

२ इस मीटिंग के बारे में देखिए इसी ग्रन्थ में "वर्तमान परिस्थिति और हमारे कार्य" शीर्षक रचना की परिचयात्मक टिप्पणी।

३ यहां "वर्ग-हैसियत तय करने में हुई गलतियां दुरुस्त करने और मध्यम किसानों के साथ एकता कायम करने के विषय में निर्देश" का हवाला दिया गया है, जिसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के शानशी-स्वेय्वान उपब्यूरो ने १३ जनवरी १९४८ को जारी किया था। निर्देश पांच भागों में बंटा हुआ है। मुख्य मुद्दे ये हैं :

(१) वर्ग-हैसियत तय करने की कसौटियों की अस्पष्टता के कारण किसानों की सहज मांगों के फलस्वरूप अनेक व्यक्तियों को गलत ढंग से दिखा-लिया जमींदारों या धनी किसानों में गिन लिया गया और आम तौर से खुशहाल मध्यम किसानों को गलत ढंग से धनी किसानों में शामिल कर लिया गया। मध्यम किसानों के साथ एकता कायम करने के प्रयास पर इसका बुरा प्रभाव पड़ा और ऐसा करना गलत था।

(२) ये गलतियां दुरुस्त करने के लिए किसानों को समझा-बुझा कर राजी करने की दिशा में समुचित कार्यवाही दृढ़ता के साथ की जानी चाहिए। जो जायदाद जब्त की गई थी, उसकी मुनासिब वापसी की जानी चाहिए।

(३) किसानों और कार्यकर्ताओं को यह समझाना है कि वर्ग-हैसियत तय करने की एकमात्र कसौटी शोषण-सम्बन्धों को ही मानना चाहिए। वर्ग-हैसियत तय करने में हुई गलतियां दुरुस्त की जानी चाहिए।

(४) गरीब किसानों और खेत-मजदूरों पर निर्भर रहने और मध्यम किसानों के साथ एकता कायम करने के उसूल को आत्मसात कर लेना चाहिए। मध्यम किसानों को किसान-प्रतिनिधि सम्मेलनों की और किसान सभाओं के नेतृत्वकारी संगठनों की एक तिहाई सदस्यता पाने में समर्थ बनाना चाहिए और कर-निर्धारण और भूमि-सुधार में उनके हितों का ध्यान रखा जाना चाहिए।

(५) जिम्मेदार कार्यकर्ताओं को देहाती क्षेत्रों के लिए पार्टी की वर्ग-नीति का संजीदगी के साथ अध्ययन करना चाहिए। मध्यम किसानों से सम्बन्धित पार्टी-नीतियों में भटक जाने की गलतियां दुरुस्त की जानी चाहिए; ये गलतियां जन-समुदाय के माध्यम से दुरुस्त की जानी चाहिए।

इस पांचसूत्री निर्देश के जारी करने के साथ ही साथ शानशी-स्वेय्वान उपब्यूरो ने भूमि-सुधार के दौरान उद्योग-वाणिज्य के क्षेत्र में बेजा तौर पर हाथ डालने के भटकावों को दुरुस्त करने के लिए "उद्योग और वाणिज्य की रक्षा के विषय में निर्देश" भी जारी किया था।

* यहां सप्लाई और खरीद-फरोख्त सहकारी समितियों का हवाला दिया गया है।

"शानशी-स्वेय्वान दैनिक" के सम्पादकीय विभाग के सदस्यों के साथ बातचीत

२ अप्रैल १९४८

हमारी नीति की जानकारी केवल नेताओं और कार्यकर्ताओं को ही नहीं, बल्कि व्यापक जन-समुदाय को भी कराई जानी चाहिए। नीति सम्बन्धी सवालों का आम तौर पर पार्टी के पत्रों और पत्रिकाओं में प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए। इस समय हम भूमि-व्यवस्था का सुधार कर रहे हैं। भूमि-सुधार सम्बन्धी विभिन्न नीतियों को पत्रों में प्रकाशित और रेडियो से प्रसारित किया जाना चाहिए, ताकि व्यापक जन-समुदाय को उनकी जानकारी हासिल हो जाए। जहां एक बार जन-समुदाय ने सच्चाई को जान लिया और वह समान उद्देश्य से प्रेरित हो गया, तो वह एकदिल होकर एक साथ काम करने लगेगा। यह भी लड़ाई में भाग लेने के समान ही है; लड़ाई जीतने के लिए न केवल कार्यकर्ताओं का बल्कि योद्धाओं का भी एकदिल होना लाजमी है। जब उत्तरी शेनशी की सेनाओं ने सुदृढ़ीकरण और ट्रेनिंग का कार्य पूरा कर लिया और पुरानी समाज-व्यवस्था द्वारा दी गई तकलीफों का वर्णन करने का आन्दोलन चलाया, तो योद्धाओं की राजनीतिक चेतना उन्नत हो गई और उनकी समझ में यह बात साफ-साफ आ गई कि वे क्यों लड़ रहे हैं और उन्हें कैसे

लड़ना चाहिए ; लड़ाई के लिए हर एक ने अपनी कमर कस ली, सबके हौसले बेहद बुलन्द हो उठे और लड़ाई के मैदान में उतरते ही उन्होंने जीत हासिल कर ली। अगर जन-समुदाय एकजुट हो जाए, तो सब कुछ आसान हो जाता है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का बुनियादी उसूल यह है कि जन-समुदाय को इस योग्य बना दिया जाए कि वह अपने हितों को समझ ले और एकताबद्ध होकर अपने हितों के लिए संघर्ष करे। अखबारों की भूमिका और उनकी शक्ति इस बात में है कि वे पार्टी के कार्यक्रम, पार्टी की कार्यदिशा, पार्टी की सामान्य और विशिष्ट नीतियों, उसके कार्यों और काम के तरीकों को अत्यन्त शीघ्रता के साथ और अत्यन्त व्यापक पैमाने पर आम जनता तक पहुंचा दें।

कुछ स्थानों में हमारे नेतृत्वकारी संगठनों में ऐसे लोग भी हैं जो यह समझते हैं कि पार्टी की नीतियों की जानकारी केवल नेताओं को ही होना काफी है तथा यह जानकारी जन-समुदाय को देने की कोई जरूरत नहीं है। यह इस बात का एक बुनियादी कारण है कि हमारा कुछ काम अच्छी तरह क्यों नहीं किया जाता। पिछले बीस साल से ज्यादा अरसे से हमारी पार्टी रोजाना जन-कार्य कर रही है, और पिछले दस-बारह वर्षों से वह रोजाना जनदिशा की चर्चा कर रही है। हमारा हमेशा यह मत रहा है कि क्रान्ति को जन-समुदाय पर निर्भर रहना चाहिए और सभी लोगों के प्रयत्नों पर निर्भर रहना चाहिए, तथा महज चन्द आदमियों द्वारा आदेश जारी किए जाने का हमने हमेशा विरोध किया है। लेकिन अब भी कुछ साथी अपने काम में जनदिशा को कार्यान्वित नहीं करते; वे अब भी इनेगिने लोगों पर निर्भर रहते हैं और अलग-थलग रहकर कार्य करते हैं। इसकी एक वजह यह है कि वे लोग जो कुछ भी करते हैं वह सब अपने नेतृत्व में चलने वाले लोगों को बताने से कतराते हैं, तथा वे यह नहीं जानते कि अपने नेतृत्व में चलने वाले लोगों की पहलकदमी और सृजन-शक्ति का क्यों और कैसे विकास किया जाए। मनोगत रूप से तो वे भी यह चाहते हैं कि हर आदमी काम में हाथ बंटाए, लेकिन वास्तव में वे दूसरे लोगों को यह नहीं बताते कि उन्हें क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए। ऐसी हालत में, भला यह उम्मीद कैसे की जा सकती है कि हर आदमी सक्रिय बन जाएगा तथा यह कैसे हो सकता है कि कोई काम अच्छी तरह किया जा सकेगा? इस समस्या को सुलझाने के लिए बुनियादी बात निस्सन्देह यह है कि जनदिशा की विचारधारात्मक शिक्षा दी जाए, लेकिन साथ ही हमें इन साथियों को काम के बहुत से ठोस तरीके भी सिखाने चाहिए। ऐसा ही एक तरीका अखबारों का भरपूर इस्तेमाल करना भी है। एक अखबार को अच्छी तरह चलाने, उसे रोचक और चित्ताकर्षक बनाने, उसमें पार्टी की सामान्य व विशिष्ट नीतियों का सही ढंग से प्रचार-प्रसार करने और उसके जरिए जन-समुदाय के साथ पार्टी के सम्पर्क को मजबूत बनाने का सवाल भी हमारी पार्टी के काम में एक ऐसा महत्वपूर्ण उसूली सवाल है जिसे मामूली चीज नहीं समझ बैठना चाहिए।

कामरेडो, आप लोग अखबारनवीस हैं। आपका काम है जन-समुदाय को शिक्षित करना, जन-समुदाय को इस योग्य बना देना कि वह अपने हितों को पहचानने लगे, अपने कार्य को तथा पार्टी की सामान्य व विशिष्ट नीतियों को समझने लगे। अखबार चलाना भी दूसरे सभी कामों जैसा ही है; अगर उसे भलीभांति चलाना हो,

अगर उसे ओजस्वी बनाना हो, तो उसे पूरी संजीदगी के साथ चलाना होगा। अपने अखबारों को चलाने के मामले में भी हमें आप सब लोगों पर निर्भर रहना होगा, विशाल जन-समुदाय पर निर्भर रहना होगा, समूची पार्टी पर निर्भर रहना होगा, बन्द कमरों में बैठकर काम करने वाले चन्द व्यक्तियों पर निर्भर रहने मात्र से काम नहीं चलेगा। जनदिशा की चर्चा हमारे अखबार रोजमर्रा करते रहते हैं, फिर भी अक्सर खुद अखबार के दफ्तर के काम में ही जनदिशा पर अमल नहीं किया जाता। मिसाल के तौर पर, अखबारों में छपाई की भूलें अक्सर महज इसलिए रह जाती हैं कि उन्हें दूर करने के काम को संजीदगी के साथ नहीं किया जाता। अगर हम जनदिशा के तरीके पर अमल करें, तो छपाई की भूल पर नजर पड़ते ही हमें अखबार के तमाम कर्मचारियों को एकत्र करके सिर्फ उस भूल के सवाल पर ही बहस करनी चाहिए, ऐसी सभा में कोई और बात नहीं उठाई जानी चाहिए; कर्मचारियों को यह बात साफ तौर पर समझा देनी चाहिए कि भूलें क्या हैं और क्यों होती हैं और इनसे छुटकारा कैसे पाया जा सकता है; और यह सब समझा देने के बाद हर व्यक्ति से यह मांग करनी चाहिए कि वह इस सवाल पर गम्भीरता से ध्यान दे। यदि तीन-चार बार ऐसी सभाएं कर ली गईं, तो निश्चय ही ऐसी भूलों को दूर किया जा सकता है। यह बात सिर्फ छोटे-मोटे सवालों पर ही नहीं बल्कि बड़े सवालों पर भी लागू होती है।

कुशलता के साथ पार्टी की नीति को जन-समुदाय की कार्यवाही में बदल देना और न सिर्फ नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं के बीच बल्कि व्यापक जन-समुदाय के बीच भी हमारे द्वारा छेड़े जाने वाले हर आन्दोलन और हर संघर्ष की समझ पैदा कर देना तथा उन्हें इन आन्दोलनों

और संघर्षों में निपुण बना देना – यह मार्क्सवादी-लेनिनवादी नेतृत्व की कला है। यह एक विभाजन-रेखा भी है जो इस बात का निर्णय करती है कि हम अपने काम में गलती करते हैं अथवा नहीं। अगर हम जन-समुदाय के जागृत होने से पहले ही पेशकदमी करेंगे, तो यह दुस्साहसवाद होगा। अगर हमने जन-समुदाय की इच्छा के विपरीत कोई काम करने के लिए उसका नेतृत्व करने की हठधर्मी की, तो हम निश्चित रूप से असफल हो जाएंगे। अगर हम जन-समुदाय द्वारा आगे बढ़ने की मांग होने पर भी आगे नहीं बढ़ेंगे, तो यह दक्षिणपंथी अवसरवाद होगा। छन तू-श्यू की अवसरवादी गलती ठीक यही तो थी कि वह जन-समुदाय की जागृति के साथ कदम मिलाने में असमर्थ रहा, आगे बढ़ने में जन-समुदाय का नेतृत्व करने में असमर्थ रहा, यहां तक कि उसने जन-समुदाय के आगे बढ़ने का विरोध किया। बहुत से कामरेड ऐसे हैं जो इन सवालों को अब भी नहीं समझते। हमारे अखबारों को चाहिए कि वे इन विचारों का भलीभांति प्रचार-प्रसार करें, ताकि हर कोई इन्हें समझ सके।

जन-समुदाय को शिक्षा देने के लिए अखबारों में काम करने वालों को सबसे पहले यह चाहिए कि वे खुद जन-समुदाय से सीखें। आप सभी कामरेड बुद्धिजीवी हैं। बुद्धिजीवी अक्सर नादान होते हैं और व्यावहारिक बातों का अनुभव उन्हें अक्सर या तो बहुत कम होता है या फिर होता ही नहीं। "देहाती क्षेत्रों में वर्ग-विश्लेषण कैसे करें?" नामक पुस्तिका को, जो १९३३ में जारी की गई थी, ठीक तरह समझ लेना आपके लिए आसान नहीं; इस मामले में किसान आपसे तेज हैं, क्योंकि इसकी बाबत बताते ही वे इसे पूरी तरह समझ लेते हैं। क्वोश्येन काउन्टी के दो जिलों के १८०

से अधिक किसानों ने पांच दिन की मीटिंग की और जमीन के बंटवारे से सम्बन्धित अनेक समस्याओं को सुलझा लिया। उन्हीं समस्याओं पर अगर आपका सम्पादकीय विभाग विचार करने बैठे, तो आप लोग दो सप्ताह तक बहस करने पर भी शायद उन्हें सुलझा नहीं सकेंगे। कारण बिल्कुल सीधा है ; इन समस्याओं को आप समझते ही नहीं। समझ की कमी की स्थिति से समझ पैदा कर लेने की स्थिति में आने के लिए आदमी का खुद करना और देखना लाजमी होता है ; यानी उसे सीखना होता है। अखबारों में काम करने वाले कामरेडों को चाहिए कि वे बारी-बारी कुछ समय तक के लिए जन-कार्य में, भूमि-सुधार के कार्य में हिस्सा लेने जाएं ; यह बहुत जरूरी है। जब तक आप जन-कार्य में हिस्सा लेने न जाएं, तब तक आपको जन-समुदाय के आन्दोलनों के बारे में काफी सामग्री पढ़नी-सुननी चाहिए और ऐसी सामग्री का समय लगाकर और प्रयत्नपूर्वक अध्ययन करना चाहिए। सैनिकों को ट्रेनिंग देते समय हमारा नारा यह होता है : "अफसर सिपाहियों को सिखाएं और सिपाही अफसरों को, तथा एक सिपाही दूसरे सिपाही को।" योद्धाओं के पास लड़ाई का बहुत सा असली तजरबा मौजूद होता है। अफसरों को चाहिए कि वे योद्धाओं से सीखें, तथा जब वे दूसरों के तजरबों को अपना लेंगे तो उनकी कार्य-क्षमता पहले से ज्यादा बढ़ जाएगी। अखबारों में काम करने वाले कामरेडों को भी चाहिए कि वे निचले स्तरों से आई हुई सामग्री का अध्ययन निरन्तर करते रहें, कदम-ब-कदम अपनी व्यावहारिक जानकारी बढ़ा लें और अनुभवी बन जाएं। केवल इसी प्रकार आप अपना काम अच्छी तरह करने में समर्थ हो सकेंगे, जन-

समुदाय को शिक्षित करने की अपनी जिम्मेदारी निभाने में समर्थ हो सकेंगे।

पिछले जून में आयोजित प्रिफेक्चर पार्टी-कमेटियों के सचिवों के सम्मेलन के बाद से "शानशी-स्वेय्वान दैनिक" ने बहुत बड़ी प्रगति की। तब यह अखबार विषय-वस्तु की दृष्टि से बड़ा ही सम्पन्न, पैना, मर्मस्पर्शी और ओजस्वी था ; यह जन-समुदाय के महान संघर्षों को प्रतिबिम्बित करता था, जन-समुदाय का पक्षपोषण करता था। इसे पढ़ना मुझे बहुत अच्छा लगता था। लेकिन इस साल जनवरी से, यानी जबसे "वामपंथी" भटकावों को सुधारना शुरू किया गया, ऐसा लगता है कि आपका अखबार अपनी उस ओजस्विता को कुछ गंवा बैठा है ; इसे जितना स्पष्ट होना चाहिए उतना स्पष्ट यह नहीं रह गया, काफी मर्मस्पर्शी भी नहीं रह गया। यह जानकारी भी पहले जितनी नहीं देता और पाठकों के लिए कोई विशेष आकर्षक भी नहीं रह गया। अब आप अपने काम की जांच-पड़ताल कर रहे हैं और अपने अनुभवों का निचोड़ निकाल रहे हैं ; यह बड़ी अच्छी बात है। जब आप दक्षिणपंथी और "वामपंथी" भटकावों का मुकाबला करने के अपने अनुभवों का निचोड़ निकाल चुकेंगे और पहले से ज्यादा स्पष्ट समझ हासिल कर लेंगे, तो आपका काम बेहतर हो जाएगा।

पिछले साल जून से "शानशी-स्वेय्वान दैनिक" ने दक्षिणपंथी भटकावों के खिलाफ जो संघर्ष चलाया, वह बिल्कुल सही था। उस संघर्ष में आपने बड़ी ही संजीदगी से काम किया और जन-आन्दोलन की वास्तविक स्थिति को पूरी तरह प्रतिबिम्बित किया। जिन दृष्टिकोणों और विवरणों को आपने गलत समझा, उनकी

सम्पादकीय टिप्पणियों के रूप में समीक्षा की। आपकी बाद वाली समीक्षाओं में कुछ खामियां भी थी, मगर ध्येयनिष्ठा की भावना अच्छी थी। आपकी खामियां मुख्य रूप से इस बात में थी कि आपने कमान की डोरी को जरूरत से ज्यादा खींचे रखा। कमान की डोरी को जरूरत से ज्यादा खींचा गया तो वह टूट जाती है। प्राचीन काल के लोगों का कहना था कि "राजा वन और राजा ऊ का सिद्धान्त यह था कि तनाव और ढिलाई का दौर बारी-बारी बदलते रहा जाए"।[1] अब थोड़ी सी "ढिलाई" लाइए, जिससे कामरेडों में स्पष्ट समझ पैदा हो सके। आपने अपने पिछले काम में कामयाबी हासिल की, मगर साथ ही उसमें खामियां भी रहीं, मुख्य रूप से "वामपंथी" भटकाव हुए। अब आप सर्वांगीण रूप से निचोड़ निकालने में लगे हुए है और "वामपंथी" भटकावों को दूर करने के बाद आपको और भी बड़ी कामयाबियां हासिल होंगी।

जब हम भटकावों को सुधार रहे है, तो कुछ लोग अतीत काल के समूचे कार्य को निहायत ही उपलब्धिहीन और सौ फीसदी गलत समझते है। ऐसा मानना ठीक नहीं। ये लोग यह नहीं देख पाते कि पार्टी की अगुवाई में अनगिनत किसानों ने जमीन हासिल की है, सामन्तवाद को उखाड़ फेंका है, और पार्टी ने अपने संगठनों को सुदृढ़ बनाया है और कार्यकर्ताओं की कार्यशैली को सुधारा है, और यह कि अब उसने "वामपंथी" भटकावों को भी दुरुस्त कर लिया है और कार्यकर्ताओं व जन-समुदाय को भी शिक्षित किया है। क्या ये सारी उपलब्धियां महान नहीं है ? हमारे कार्य को और जन-समुदाय के कार्य को आंकने में विश्लेषणात्मक रुख अपनाया जाना चाहिए

और तमाम किए-कराए का निषेध नहीं किया जाना चाहिए। अतीत काल में "वामपंथी" भटकाव इसलिए हुए कि लोगों को कोई अनुभव नहीं था। अनुभव के बिना गलतियों से बचना मुश्किल है। अनुभवहीनता से अनुभव तक पहुंचने में एक प्रक्रिया से गुजरना लाजमी होता है। पिछले साल जून से लेकर अब तक की छोटी सी अवधि में दक्षिणपंथी और "वामपंथी" भटकावों के खिलाफ जो संघर्ष हुए है, उनसे गुजरकर लोग यह समझने लगे है कि दक्षिणपंथी भटकावों के खिलाफ संघर्ष का मतलब क्या होता है और "वामपंथी" भटकावों के खिलाफ संघर्ष का मतलब क्या होता है। इस प्रक्रिया से गुजरे बिना लोग यह कभी न समझ पाते।

जब आप अपने काम की जांच-पड़ताल कर चुकेंगे और अपने अनुभव का निचोड़ निकाल चुकेंगे, तो मुझे पक्का विश्वास है कि आपका अखबार और अच्छी तरह चलेगा। आपको अवश्य ही अपने अखबार की पहले वाली खूबियों को बनाए रखना चाहिए – उसे पैना, मर्मस्पर्शी और स्पष्टवादी होना चाहिए और बड़ी संजीदगी के साथ चलाया जाना चाहिए। सच्चाई की हिमायत हमें डटकर करनी चाहिए और सच्चाई को जरूरत होती है एक सुस्पष्ट दृष्टि-बिन्दु की। अपने दृष्टिकोण को छिपाना हम कम्युनिस्टों ने सदा ही अपनी शान के खिलाफ समझा है। हमारी पार्टी द्वारा चलाए जाने वाले अखबारों और हमारी पार्टी के समूचे प्रचार-कार्य को सजीव, सुस्पष्ट और पैना होना चाहिए और उन्हें बुदबुदाना और भुनभुनाना कभी नहीं चाहिए। यही जुझारू शैली अपनाना हमारे लिए, क्रान्तिकारी सर्वहारा वर्ग के लिए, उचित है। इस जुझारू शैली की जरूरत

हमें इसलिए है कि हम जनता को सच्चाई की जानकारी हासिल करने की शिक्षा देना चाहते है, उसे खुद अपनी मुक्ति के संघर्ष के लिए जागृत करना चाहते हैं। भोथरी छुरी घाव नहीं करती।

नोट

१ "विधि संहिता" नामक रचना के "फुटकर अभिलेख" के भाग २ से उद्धृत।

लोयाङ नगर पर फिर से कब्जा कर लेने के बाद लोयाङ मोर्चे के सदर मुकाम के नाम तार*

८ अप्रैल १९४८

लोयाङ पर अब फिर से कब्जा कर लिया गया है[1] और सम्भवत: अब उसे पक्के तौर पर अपने ही हाथ में रखा जा सकेगा। शहरी नीति के बारे में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें :

१. क्वोमिन्ताङ शासन के संस्थानों को खत्म करने में अत्यन्त सावधानी से काम लें, सिर्फ मुख्य प्रतिक्रियावादियों को ही गिरफ्तार करें और जरूरत से ज्यादा लोगों को लपेट में न लें।

२. नौकरशाही-पूंजी के बारे में सुस्पष्ट विभाजन-रेखा खींच दें; क्वोमिन्ताङ सदस्यों द्वारा चलाए जाने वाले सभी औद्योगिक व व्यापारिक कारोबारों को नौकरशाही-पूंजी का नाम न दें और उन्हें जब्त न करें। यह सिद्धान्त निर्धारित कर दिया जाना चाहिए कि

*यह तार कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था। चूंकि इसकी विषय-वस्तु न सिर्फ लोयाङ पर बल्कि बुनियादी तौर पर सभी नव-मुक्त नगरों पर लागू होती थी, इसलिए यह तार लोयाङ मोर्चे के साथ-साथ अन्य मोर्चों और अन्य क्षेत्रों के नेतृत्वकारी कामरेडों के नाम भी भेज दिया गया।

जनवादी सरकार उन सभी औद्योगिक और व्यापारिक कारोबारों को अपने हाथ में ले लेगी और चलाएगी जिनके बारे में इस बात की तसदीक निश्चित रूप से हो चुकी हो कि वे कारोबार क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय, प्रान्तीय, काउन्टी अथवा म्युनिसिपल सरकारों के संचालन में चलते रहे हैं, यानी पूरी तरह से सरकारी संस्थानों के संचालन में चलते रहे हैं। लेकिन अगर फिलहाल जनवादी सरकार उन्हें अपने हाथ में लेने को तैयार न हो या ऐसा करने में असमर्थ हो, तो जो व्यक्ति पहले से उनकी देखरेख की जिम्मेदारी सम्भालते आ रहे हों, वक्ती तौर पर उन्हीं को इनके प्रबन्ध का भार सौंप दिया जाना चाहिए, ताकि ये कारोबार तब तक यथावत् चालू रह सकें जब तक कि उन्हें सम्भाल लेने वालों को जनवादी सरकार नियुक्त न कर दे। इन औद्योगिक व व्यापारिक कारोबारों में काम करने वाले मजदूरों और तकनीशियनों को प्रबन्ध-कार्य में भाग लेने के लिए संगठित किया जाना चाहिए और उनकी कार्य-कुशलता पर भरोसा करना चाहिए। अगर क्वोमिन्ताङ कर्मचारी भाग गए हों और कारोबार में काम ठप्प हो गया हो, तो मजदूरों और तकनीशियनों के निर्वाचित प्रतिनिधियों की एक प्रबन्ध-समिति बना दी जानी चाहिए, और इसके बाद जनवादी सरकार उन प्रबन्धकों और निर्देशकों की नियुक्ति कर दे जो मजदूरों के साथ मिलकर कारोबार का प्रबन्ध-कार्य सम्भालेंगे। क्वोमिन्ताङ के कुख्यात बड़े नौकरशाहों द्वारा संचालित कारोबारों के मामलों को ऊपर बयान किए गए सिद्धान्तों और उपायों के अनुसार निपटाया जाना चाहिए। लेकिन उद्योग और वाणिज्य के जिन कारोबारों को छोटे नौकरशाह या जमींदार चलाते हों, उन्हें जब्त न किया जाए। राष्ट्रीय पूंजीपतियों

के संचालन में चलने वाले कारोबारों को हाथ लगाने की सख्त मनाही है।

३. जमींदारों को पकड़ने और उनसे हिसाब चुकता करने के लिए नगर में दाखिल होने से किसान-संगठनों को रोका जाए। जिन जमींदारों की जमीन तो देहातों में हो मगर जो खुद नगर में रहते हों, उनसे जनवादी म्युनिसिपल सरकार ही कानून के मुताबिक निबटे। जिन्होंने जघन्यतम अपराध किए हों, उनसे निपटने के लिए गांव के किसान-संगठनों के अनुरोध पर उन्हें गांवों में वापस भेजा जा सकता है।

४. नगर में प्रवेश करने पर शुरू में, मजूरी बढ़ाने और काम के घंटे कम करने के नारे हल्के-फुल्के तरीके से न लगाए जाएं। युद्ध-काल में अगर उत्पादन जारी रखा जा सके और काम के घंटों और मजूरी की दरों को ज्यों का त्यों बनाए रखा जा सके, तो भी अच्छी बात ही होगी। बाद में काम के घंटों को उपयुक्त मात्रा में घटाया जाएगा या नहीं और मजूरी बढ़ाई जाएगी या नहीं, इसका निर्णय इस बात पर निर्भर होगा कि आर्थिक हालत कैसी रहती है, यानी इस बात पर कि कारोबार फूलते-फलते हैं या नहीं।

५. जनवादी सुधार करने और रहन-सहन को बेहतर बनाने के लिए नगर की जनता को संगठित करने में जल्दबाजी न करें। जब नगर-प्रशासन अच्छी तरह चलने लगेगा, जनता का आवेश शान्त हो जाएगा, सूक्ष्म जांच-पड़ताल के जरिए स्थानीय परिस्थिति के बारे में एक सुस्पष्ट धारणा बनाई जा चुकी होगी और समुचित उपाय निकाले जा चुके होंगे, सिर्फ तभी परिस्थितियों की रोशनी

में इन सवालों को समुचित ढंग से सुलझाने का काम किया जा सकेगा।

६. इस समय बड़े नगरों की प्रधान समस्या अन्न और ईंधन की समस्या है ; इसे योजनाबद्ध तरीके से सुलझाना होगा। किसी नगर के हमारे प्रशासन के अधीन आने पर नगर के दरिद्र लोगों की जीविका का सवाल योजनाबद्ध ढंग से कदम-ब-कदम हल करना होगा। यह नारा न दें कि "दरिद्रों को राहत देने के लिए अनाज के भण्डार खोल दो"। राहत पाने के लिए सरकार का मुंह ताकने की मनोवृत्ति उनमें न पैदा करें।

७. क्वोमिन्ताङ और उसके तीन जन-सिद्धान्त नौजवान संघ के सदस्यों की ठीक ढंग से जांच-पड़ताल करके उनके नाम रजिस्टर कर लें।

८. हर चीज की योजना दूर भविष्य को ध्यान में रखकर बनाएं। सार्वजनिक मिल्कियत हो या निजी मिल्कियत, उत्पादन के किसी भी साधन को नष्ट करने की सख्त मनाही है ; उसी तरह उपभोक्ता-सामग्री को बरबाद करने की भी सख्त मनाही है। शाहखर्ची से खाने-पीने की इजाजत नहीं है, और किफायत व कमखर्ची पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

९. पार्टी की म्युनिसिपल-कमेटी के सचिव और मेयर के पदों पर उन्हीं को नियुक्त किया जाए, जो नीति को अच्छी तरह समझ चुके हों और सुयोग्य हों। उन्हें चाहिए कि वे अपने सभी कर्मचारियों को प्रशिक्षित करें और शहरी नीतियां व कार्यनीतियां सबको समझाएं। नगर की मालिक अब जनता है, इसलिए हर काम इस भावना से चलाया जाना चाहिए कि नगर के प्रबन्ध की जिम्मेदारी खुद जनता

पर ही है। क्वोमिन्ताङ के प्रशासन के अधीन नगरों के लिए निर्धारित हमारी नीतियों और कार्यनीतियों को जनता के खुद के प्रशासन के अधीन नगरों पर लागू करना बिलकुल गलत होगा।

नोट

[१] लोयाङ हनान प्रान्त के पश्चिमी भाग में क्वोमिन्ताङ सेनाओं का एक महत्वपूर्ण गढ़ था। जन-मुक्ति सेना ने पहले पहल १६ मार्च १९४८ को लोयाङ पर कब्ज़ा कर लिया, फिर सुभीते से शत्रु की प्रभावकारी शक्ति का सफ़ाया करने के लिए खुद अपनी ही पहलकदमी पर वह नगर खाली कर दिया और ५ अप्रैल १९४८ को फिर एक बार उस पर कब्ज़ा कर लिया।

नए मुक्त क्षेत्रों में देहातों के काम की कार्यनीति विषयक समस्याएं

२४ मई १९४८

नए मुक्त क्षेत्रों में देहातों के काम की कार्यनीति विषयक समस्याओं पर समग्र रूप से ध्यान देना जरूरी है। इन क्षेत्रों में हमें जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल में हासिल हुए अनुभवों का पूरा-पूरा उपयोग करना होगा ; इनकी मुक्ति के काफी समय बाद तक हमें इन क्षेत्रों में लगान व सूद कम करने और बीज व खाद्यान्न की सप्लाई के काम को मुनासिब ढंग से व्यवस्थित करने की सामाजिक नीति पर तथा भार का न्यायसंगत बंटवारा करने की वित्तीय नीति पर अमल करना चाहिए ; अपने मुख्य प्रहार का निशाना हमें उन मुख्य प्रतिक्रान्तिकारियों को ही बनाना चाहिए जो राजनीतिक रूप से क्वोमिन्ताङ के साथ हैं और हमारी पार्टी व सेना का हठपूर्वक विरोध करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कि हमने प्रतिरोध-युद्ध के काल में सिर्फ गद्दारों को ही गिरफ्तार किया था और सिर्फ उन्हीं की जायदादें जब्त की थीं ; चल-सम्पत्ति और जमीन के बंटवारे की समाज-सुधार नीति को अविलम्ब ही लागू कर डालने की जल्दी हमें नहीं करनी चाहिए। कारण यह कि केवल थोड़े से निर्भीक तत्व ही ऐसे होंगे जो चल-सम्पत्ति का समय से पूर्व बंटवारा करने का स्वागत

करेंगे, जबकि बुनियादी जन-समुदाय के हाथ कुछ भी नहीं लगेगा और इसलिए वह असन्तुष्ट हो जाएगा। इतना ही नहीं, सामाजिक धन का जल्दी ही बिखराव होने से सेना को भी असुविधा होगी। जमीन का समय से पूर्व बंटवारा करने का नतीजा यह होगा कि सामरिक मांगों का पूरा भार जमींदारों व धनी किसानों के बजाय समय से पहले ही आम किसानों के कन्धों पर आ पड़ेगा। समाज-सुधार के क्षेत्र में बेहतर यही होगा कि चल-सम्पत्ति और जमीन का बंटवारा करने के बजाय लगान और सूद को ही व्यापक रूप से कम किया जाए ताकि आम किसानों को ठोस लाभ हो सके; और वित्तीय नीति के क्षेत्र में हमें भार का न्यायसंगत बंटवारा कर देना चाहिए ताकि जमींदारों व धनी किसानों को ज्यादा मोटी रकम अदा करनी पड़े। इस तरह से सामाजिक धन का बिखराव भी नहीं हो पाएगा और सार्वजनिक व्यवस्था भी अधिक स्थिर हो जाएगी; और इससे हमें अपनी सारी शक्ति क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों को नष्ट करने के काम पर ही केन्द्रित करने में मदद मिलेगी। एक, दो या यहां तक कि तीन साल बाद, जब विस्तृत आधार-क्षेत्रों से क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों का सफाया हो चुका होगा, जब हालात स्थिर हो चुके होंगे, जब जन-समुदाय जागृत और संगठित हो चुका होगा और जब युद्ध दूरवर्ती इलाके की ओर बढ़ चुका होगा, तब हम भूमि-सुधार की मंजिल में यानी उत्तरी चीन की तरह चल-सम्पत्ति और जमीन का बंटवारा करने की मंजिल में दाखिल हो सकेंगे। लगान और सूद कम करने की मंजिल को किसी भी नए मुक्त क्षेत्र के अन्दर छलांग लगाकर पार नहीं किया जा सकता; अगर हमने इस मंजिल से गुजरे बिना इसे छलांग लगाकर पार कर

लेने की कोशिश की, तो हम गलतियां करेंगे। उपर्युक्त कार्यनीति को उत्तरी, उत्तर-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी चीन के विशाल मुक्त क्षेत्रों के उन भागों में भी लागू करना होगा जिनकी सीमा शत्रु के अधीन इलाकों की सीमा से लगती है।

१९४८ में भूमि-सुधार और पार्टी-सुदृढ़ीकरण का कार्य*

२५ मई १९४८

१

यह आवश्यक है कि मौसमों पर ध्यान दिया जाए। केन्द्रीय कमेटी के प्रादेशिक ब्यूरोओं अथवा उपब्यूरोओं द्वारा निर्धारित क्षेत्रों में आगामी शरद और जाड़ों का समूचा समय, यानी इस वर्ष सितम्बर से अगले वर्ष मार्च तक का सात महीने का समय, निम्नलिखित कार्यों को क्रमशः पूरा करने में खर्च किया जाना चाहिए :

१. देहातों की परिस्थिति की जांच-पड़ताल करना।

२. सही नीति के अनुरूप पार्टी के सुदृढ़ीकरण का प्राथमिक कार्य सम्पन्न करना। उच्च संगठन द्वारा देहाती इलाके में भेजे गए कार्य-ग्रुप अथवा कार्य-दल को चाहिए कि वह सबसे पहले स्थानीय पार्टी-शाखा के सभी सक्रिय सदस्यों और अपेक्षाकृत

---

*यह अन्तःपार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

अच्छे सदस्यों के साथ एकता कायम करे तथा उनके साथ मिलकर भूमि-सुधार के कार्य का नेतृत्व करे।

३. गरीब किसान संघों और किसान सभाओं को संगठित अथवा पुनर्गठित करना अथवा मजबूत बनाना तथा भूमि-सुधार के लिए संघर्ष छेड़ना।

४. वर्ग-हैसियत को सही कसौटी के मुताबिक निर्धारित करना।

५. सामन्ती जमीन और सम्पत्ति का वितरण सही नीति के मुताबिक करना। इस वितरण का अन्तिम परिणाम ऐसा होना चाहिए कि सभी मुख्य तबकों के लोग उसे न्यायोचित और युक्तिसंगत समझें तथा जमींदार भी यह महसूस करें कि उनके लिए भी जीविका कमाने का रास्ता खुला हुआ है और इसकी गारन्टी कर दी गई है।

६. श्याङ (अथवा गांव), जिला और काउन्टी स्तर पर जन-प्रतिनिधि सम्मेलनों की स्थापना करना तथा सरकारी परिषदों का चुनाव करना।

७. जमीन की मिल्कियत निश्चित करने के लिए भूमि-सनदें जारी करना।

८. कृषि-कर (यानी सार्वजनिक अनाज) की दरों को पुनर्व्यवस्थित अथवा संशोधित करना। इन दरों को सार्वजनिक हितों और निजी हितों दोनों का ध्यान रखने के उसूल के अनुरूप निश्चित किया जाना चाहिए; दूसरे शब्दों में, वे एक तरफ तो युद्ध का समर्थन करने के अनुकूल हों तथा दूसरी तरफ किसानों में उत्पादन का पुनरुद्धार व विकास करने के कार्य में दिलचस्पी

पैदा करने में भी समर्थ हों, जिससे उनके रहन-सहन में सुधार करने में मदद मिलेगी।

९. सही नीति के अनुरूप पार्टी-शाखाओं के संगठनात्मक सुदृढ़ीकरण का कार्य पूरा करना।

१०. अपने कार्य को भूमि-सुधार से कृषि-उत्पादन का पुनरुद्धार व विकास करने के सामान्य संघर्ष में देहातों की समूची मेहनतकश जनता को गोलबन्द करने तथा जमींदारों व धनी किसानों की श्रमशक्ति को संगठित करने के कार्य में बदल देना। स्वेच्छा से शामिल होने तथा समान मूल्य के आधार पर विनिमय करने के उसूलों के मुताबिक छोटे पैमाने के श्रम-विनिमय ग्रुपों और अन्य सहकारी इकाइयों को संगठित करना शुरू कर देना; बीज, खाद और ईंधन तैयार करना; उत्पादन-कार्य की योजनाएं तैयार करना; जब भी आवश्यक व सम्भव हो, कृषि-ऋणों (मुख्य रूप से उत्पादन के साधनों को खरीदने के लिए दिए जाने वाले ऋणों, जिन्हें निश्चित रूप से चुकाया जाना चाहिए तथा ऐसे ऋणों और सहायता-अनुदानों के बीच सख्ती से फर्क किया जाना चाहिए) को जारी करना; जहां कहीं सम्भव हो, वहां जल-संरक्षण परियोजनाओं के निर्माण की योजनाएं बनाना।

यह भूमि-सुधार से उत्पादन तक के कार्य की समूची प्रक्रिया है, जिसे भूमि-सुधार में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने वाले सभी कामरेडों को समझा देना चाहिए, ताकि वे लोग अपने काम में एकांगीपन से बच सकें तथा मौका खोए बिना आगामी शरद और जाड़ों के मौसमों में उक्त समूचे कार्य पूरे कर लें।

२

उपर्युक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, यह आवश्यक है कि आगामी तीन महीनों में – जून से अगस्त के अन्त तक – निम्नलिखित कार्य पूरे कर लिए जाएं :

१. भूमि-सुधार के लिए इलाके निश्चित करना। इस प्रकार के हर इलाके को निम्नलिखित तीन शर्तें अवश्य पूरी करनी चाहिए :

(क) वहां दुश्मन की तमाम सशस्त्र सैन्य-शक्तियों का सफाया किया जा चुका हो तथा परिस्थिति स्थिर हो चुकी हो ; वह कोई अस्थिर छापामार इलाका न हो।

(ख) वहां बुनियादी जन-समुदाय (खेत-मजदूरों, गरीब किसानों और मध्यम किसानों) की भारी बहुसंख्या, न कि महज अल्पसंख्या, जमीन के बंटवारे की मांग कर रही हो।

(ग) वहां भूमि-सुधार के कार्य को निश्चित रूप से अपनी गिरफ्त में रखते हुए चलाने के लिए, संख्या व गुण दोनों ही दृष्टियों से पर्याप्त पार्टी-कार्यकर्ता होने चाहिए तथा इस कार्य को जन-समुदाय की स्वतःस्फूर्त कार्यवाही के भरोसे नहीं छोड़ दिया जाना चाहिए।

जिस इलाके में इन तीन शर्तों में से कोई भी एक शर्त लागू न होती हो, उसे १९४८ में भूमि-सुधार के लिए निर्धारित नहीं करना चाहिए। मिसाल के लिए, हमें इस साल की भूमि-सुधार योजना में न तो उत्तरी, पूर्वी, उत्तर-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी

चीन के मुक्त क्षेत्रों के उन इलाकों को शामिल करना चाहिए जो शत्रु-अधिकृत क्षेत्र की सीमा पर स्थित है, और न ही केन्द्रीय कमेटी के मध्यवर्ती मैदान प्रादेशिक ब्यूरो के क्षेत्राधिकार वाले उन अधिकांश इलाकों को शामिल करना चाहिए, जो याङत्सी नदी, ह्वाए नदी, पीली नदी और हानश्वेइ नदी के बीच में स्थित है, क्योंकि ये इलाके पहली शर्त को पूरा नहीं करते। उन्हें अगले वर्ष की योजना में शामिल किया जाएगा अथवा नहीं, यह परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। इन क्षेत्रों में हमें चाहिए कि जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान प्राप्त किए गए अनुभवों का पूरा-पूरा इस्तेमाल करें, लगान व सूद कम करने और बीज व अनाज की सप्लाई को समुचित रूप से पुनर्व्यवस्थित करने की सामाजिक नीति को तथा साथ ही भार का समुचित रूप से वितरण करने की वित्तीय नीति को कार्यान्वित करें, ताकि उन तमाम सामाजिक शक्तियों के साथ संश्रय कायम किया जा सके अथवा उन्हें तटस्थ बनाया जा सके जिनके साथ संश्रय कायम किया जा सकता है अथवा जिन्हें तटस्थ बनाया जा सकता है, तथा जन-मुक्ति सेना को क्वोमिन्ताङ की समस्त सशस्त्र सैन्य-शक्तियों का सफाया कर देने में और उन स्थानीय निरंकुश तत्वों पर प्रहार करने में, जो राजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त प्रतिक्रियावादी है, मदद दी जा सके। इन इलाकों में न तो जमीन का बंटवारा किया जाना चाहिए और न चल-सम्पत्ति का ही, क्योंकि ये नए मुक्त क्षेत्र है या शत्रु-अधिकृत इलाके की सीमा पर स्थित क्षेत्र है, तथा वहां ऐसा करना, क्वोमिन्ताङ की प्रतिक्रियावादी शक्तियों का सफाया करने का बुनियादी कार्य पूरा करने

के लिए उन तमाम सामाजिक शक्तियों के साथ संश्रय कायम करने अथवा उन्हें तटस्थ बनाने में, जिनके साथ संश्रय कायम किया जा सकता है अथवा जिन्हें तटस्थ बनाया जा सकता है, फायदेमन्द साबित नहीं होगा।

२. कार्यकर्ता सम्मेलनों को सफल बनाना। भूमि-सुधार और पार्टी-सुदृढ़ीकरण से सम्बन्धित कार्य के बारे में आयोजित किए जाने वाले कार्यकर्ता सम्मेलनों में, इन दोनों कार्यों से सम्बन्धित तमाम सही नीतियों की पूर्ण रूप से व्याख्या की जानी चाहिए तथा जिन कामों को करने की इजाजत है और जिन्हें करने की इजाजत नहीं, उनके बीच एक स्पष्ट विभाजन-रेखा खींच लेनी चाहिए। भूमि-सुधार और पार्टी-सुदृढ़ीकरण का कार्य करने वाले सभी कार्यकर्ताओं से यह मांग की जाती है कि वे केन्द्रीय कमेटी द्वारा जारी किए गए तमाम महत्वपूर्ण दस्तावेजों का संजीदगी के साथ अध्ययन करें और उन्हें पूरी तरह समझ लें ; कार्यकर्ताओं को आदेश दिया जाना चाहिए कि वे इन सभी दस्तावेजों पर अमल करें और अनधिकृत रूप से उनमें कोई परिवर्तन न करें। अगर इन दस्तावेजों के कुछ अंश स्थानीय परिस्थितियों से मेल न खाते हों, तो वे इन अंशों में संशोधन पेश कर सकते हैं और उन्हें ऐसा करना भी चाहिए, लेकिन उनमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन करने से पहले उन्हें केन्द्रीय कमेटी की मंजूरी हासिल कर लेनी चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों के उच्च नेतृत्वकारी संगठनों को चाहिए कि वे कार्यकर्ता सम्मेलनों के लिए, जो इस वर्ष विभिन्न स्तरों पर आयोजित किए जाएंगे, पर्याप्त और उचित तैयारी करें। इसका मतलब यह

है कि सम्मेलन बुलाने से पहले कुछ लोगों के बीच (जिनमें से एक अपने कन्धों पर मुख्य जिम्मेदारी उठा ले) विचार-विनिमय किया जाना चाहिए, जिसके दौरान सवाल उठाए जाएं और उनका विश्लेषण किया जाए तथा एक लिखित रूपरेखा तैयार कर ली जाए ; विषय-वस्तु और शब्दावली की दृष्टि से इस रूपरेखा को बड़े ध्यानपूर्वक तैयार किया जाना चाहिए (निश्चय ही उसे स्पष्ट और संक्षिप्त होना चाहिए तथा लम्बा-चौड़ा नहीं होना चाहिए)। उसके बाद कार्यकर्ता सम्मेलन में एक रिपोर्ट पेश की जानी चाहिए, वाद-विवाद शुरू किया जाना चाहिए, वाद-विवाद के दौरान व्यक्त किए गए विचारों को ग्रहण करके रूप-रेखा की पूर्ति की जानी चाहिए और उसमें संशोधन किया जाना चाहिए तथा उसे अन्तिम रूप दे देना चाहिए और अन्तिम रूप से तैयार किए गए दस्तावेज को समूची पार्टी में वितरित किया जाना चाहिए और जहां तक सम्भव हो समाचारपत्रों में भी प्रकाशित किया जाना चाहिए। यह आवश्यक है कि अनुभववादी तरीके से मीटिंगें बुलाने का विरोध किया जाए, यानी पहले से तैयारी किए बिना, कोई सवाल उठाए बिना अथवा उसका विश्लेषण किए बिना, तथा कार्यकर्ता सम्मेलन में पेश करने के लिए ध्यानपूर्वक तैयार की गई और वजनदार विषय-वस्तु व सुगठित शब्दावली वाली रिपोर्ट के बिना मीटिंगें बुलाने तथा इन मीटिंगों में भाग लेने वाले लोगों को बेमतलब की बेतरतीब बातें करने देने, जिससे उनके अधिवेशनों में किसी स्पष्ट और अच्छी तरह सोचे-समझे हुए निष्कर्ष पर पहुंचे बिना लम्बी बहस चलती रहे, का विरोध किया जाए। अगर केन्द्रीय कमेटी के किसी प्रादेशिक

ब्यूरो या उपब्यूरो अथवा किसी क्षेत्र, प्रान्त या प्रिफेक्चर की पार्टी-कमेटी के नेतृत्व-कार्य में यह हानिकारक अनुभववादी तरीका दिखाई दे, तो इसे खत्म कर देने की ओर ध्यान देना चाहिए। नीति के बारे में विचार-विमर्श करने के लिए आयोजित सम्मेलनों में बहुत ज्यादा लोगों को नहीं बुलाया जाना चाहिए, तथा यदि अच्छी तरह तैयारी की गई हो, तो सम्मेलन के समय में कटौती की जा सकती है। आम तौर पर यह उचित है कि एक दर्जन से कुछ ज्यादा लोग या बीस से तीस लोग अथवा चालीस से पचास लोग – यह संख्या परिस्थिति के अनुसार घटाई-बढ़ाई जा सकती है – लगभग एक सप्ताह का सम्मेलन करें। नीति का प्रचार-प्रसार करने के लिए आयोजित की जाने वाली मीटिंगों में अपेक्षाकृत अधिक लोग भाग ले सकते हैं, लेकिन उन्हें भी ज्यादा लम्बा नहीं खींचा जाना चाहिए। केवल उन्हीं सम्मेलनों में अपेक्षाकृत ज्यादा लोग भाग ले सकते हैं और केवल उन्हीं सम्मेलनों को अपेक्षाकृत ज्यादा समय तक चलाया जा सकता है जिनमें पार्टी के ऊंचे और मध्यम दर्जे के कार्यकर्ताओं को पार्टी के सुदृढ़ीकरण के लिए बुलाया जाता है।

३. सितम्बर के पहले पखवाड़े तक, ज्यादा से ज्यादा दूसरे पखवाड़े तक, उन तमाम कार्यकर्ताओं को जो भूमि-सुधार के कार्य में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने वाले हैं, गांवों में पहुंच जाना चाहिए और काम शुरू कर देना चाहिए। वरना भूमि-सुधार, पार्टी-सुदृढ़ीकरण और राजनीतिक सत्ता के संगठनों के निर्माण का कार्य पूरा करने तथा वसन्त की जुताई की तैयारी करने के

लिए आगामी शरद और जाड़े के मौसमों का इस्तेमाल करना असम्भव हो जाएगा।

३

कार्यकर्ताओं के सम्मेलनों में और साथ ही उनके काम के दौरान, कार्यकर्ताओं को इस बात की शिक्षा दी जानी चाहिए कि वे निपुणता के साथ ठोस परिस्थितियों का विश्लेषण कैसे करें, तथा अलग-अलग ऐतिहासिक परिस्थितियों वाले विभिन्न इलाकों की ठोस परिस्थितियों से प्रस्थान करके एक निश्चित स्थान और समय में अपने कार्यों और काम के तरीकों का निर्णय कैसे करें। शहरों और देहाती इलाकों के बीच तथा पुराने मुक्त क्षेत्रों, अर्ध-पुराने मुक्त क्षेत्रों, शत्रु-अधिकृत इलाकों की सीमा पर स्थित क्षेत्रों और नए मुक्त क्षेत्रों के बीच विभाजन-रेखा खींच लेनी चाहिए, वरना गलतियां होंगी।

४

जिन क्षेत्रों में सामन्ती व्यवस्था को पूर्ण रूप से खत्म किया जा चुका है, जहां सभी गरीब किसानों और खेत-मजदूरों ने मोटे तौर पर जमीन को औसत मात्रा में हासिल कर लिया है तथा जहां अब भी उनकी जमीन और मध्यम किसानों की जमीन के बीच फर्क मौजूद है (जिसकी इजाजत दी जाती है) लेकिन यह फर्क बहुत

ज्यादा नहीं है, वहां यह समझना चाहिए कि जमीन की समस्या हल हो चुकी है और भूमि-सुधार का सवाल नहीं उठाया जाना चाहिए। इन क्षेत्रों में हमारे मुख्य कार्य ये है : उत्पादन का पुनरुद्धार और विकास करना, पार्टी को सुदृढ़ बनाने और राजनीतिक सत्ता के संगठनों का निर्माण करने का कार्य पूरा करना तथा मोर्चे का समर्थन करना। अगर इन क्षेत्रों के किन्हीं गांवों में कुछ जमीन का बंटवारा करना अथवा उसे पुनर्व्यवस्थित करना अब भी बाकी हो, किन्हीं व्यक्तियों की वर्ग-हैसियत निर्धारित करने में अब फिर से विचार करने की जरूरत हो तथा कुछ भूमि-सनदों को जारी करना अब भी बाकी हो, तो निस्सन्देह इन कार्यों को वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप पूरा किया जाना चाहिए।

५

सभी मुक्त क्षेत्रों में, चाहे उनमें भूमि-सुधार का कार्य पूरा किया गया हो अथवा नहीं, हमें किसानों का निर्देशन करना चाहिए कि वे इस शरद के मौसम में गेहूं के खेतों की बुवाई कर दें और जमीन के एक हिस्से की जुताई भी कर दें। जाड़ों में किसानों का आवाहन करना चाहिए कि वे खाद जमा करें। यह सब १९४९ में मुक्त क्षेत्रों के कृषि-उत्पादन और फसलों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा इसे जन-कार्य से तालमेल कायम करके उठाए जाने वाले प्रशासनिक कदमों के जरिए पूरा किया जाना चाहिए।

६

यह आवश्यक है कि अनेक स्थानों में मौजूद अनुशासनहीनता अथवा अराजकता के कुछ रूपों पर दृढ़ता से काबू पाया जाए। ऐसे लोग हैं जो अधिकार हासिल किए बिना, केन्द्रीय कमेटी अथवा अन्य उच्च पार्टी-कमेटियों द्वारा स्वीकृत नीतियों और कार्यनीतियों में संशोधन कर लेते है तथा ऐसी अत्यन्त हानिकारक नीतियों और कार्यनीतियों को लागू करते है जो एकीकृत संकल्प और अनुशासन के विरुद्ध होती है लेकिन जिन्हें वे खुद सही समझते हैं। ऐसे लोग भी है जो काम में व्यस्त होने का बहाना बनाकर कोई कार्यवाही करने से पहले हिदायतें न लेने और बाद में रिपोर्ट पेश न करने का गलत रुख अपनाते है, तथा अपने प्रशासन के अधीन क्षेत्र को एक स्वतंत्र राज्य समझते है। ये सब क्रान्ति के हितों के लिए बेहद नुकसानदेह है। सभी स्तरों की पार्टी-कमेटियों को चाहिए कि वे इस मामले पर बार-बार विचार-विमर्श करें और इस प्रकार की अनुशासनहीनता व अराजकता पर काबू पाने के लिए संजीदगी से कोशिश करें, ताकि वे तमाम सत्ताधिकार, जिन्हें केन्द्रित किया जा सकता है और किया जाना चाहिए, केन्द्रीय कमेटी और उसकी एजेन्सियों[१] के हाथ में केन्द्रित हो जाएं।

७

केन्द्रीय कमेटी, उसके प्रादेशिक ब्यूरोओं (अथवा प्रादेशिक उप-ब्यूरोओं), क्षेत्रीय (अथवा प्रान्तीय) पार्टी-कमेटियों तथा प्रिफेक्चर,

काउन्टी व जिला पार्टी-कमेटियों से लेकर पार्टी-शाखाओं के स्तर तक की कमेटियों को चाहिए कि वे एक दूसरे के साथ घनिष्ठ सम्पर्क कायम करें, ताकि आन्दोलन के रुझानों को अच्छी तरह आत्मसात किया जा सके, सूचनाओं और अनुभवों का लगातार आदान-प्रदान किया जा सके, तथा गलतियों को तुरन्त सुधारा जा सके और सफलताओं का विकास किया जा सके। इन मकसदों को हासिल करने के लिए उन्हें रेडियो, तार, टेलीफोन, डाक और सन्देशवाहकों जैसे संचार-साधनों का पूरा-पूरा इस्तेमाल करना चाहिए ; छोटी-छोटी मीटिंगों (चार या पांच व्यक्तियों की), संयुक्त स्थानीय सम्मेलनों (चन्द काउन्टियों के) और व्यक्तिगत वार्ताओं जैसे विचार-विमर्श के तरीकों का और छोटे निरीक्षक-ग्रुप (तीन से पांच व्यक्तियों के) अथवा किसी प्रतिष्ठित कमेटी-सदस्य द्वारा किए जाने वाले निरीक्षण दौरों का पूरा-पूरा इस्तेमाल करना चाहिए ; तथा समाचार-एजेन्सियों और समाचारपत्रों का पूरा-पूरा इस्तेमाल करना चाहिए। नीचे के संगठनों द्वारा ऊपर के संगठनों के सामने सारांश-रिपोर्ट पेश करने अथवा ऊपर के संगठनों द्वारा नीचे के संगठनों को आम निर्देश देने में कई महीनों, आधे वर्ष अथवा उससे भी ज्यादा लम्बे समय तक इन्तजार नहीं करना चाहिए। कारण, इस प्रकार की रिपोर्टें और ऐसे निर्देश अक्सर पुराने पड़ जाते हैं और अपनी आंशिक अथवा समूची उपयोगिता खो बैठते हैं। और गलतियां की जाती हैं तथा उन्हें ठीक समय पर नहीं सुधारा जा सकता, जिससे गम्भीर हानि होती है। जिनकी समूची पार्टी को फौरी जरूरत है, वे हैं सामयिक, सजीव और ठोस रिपोर्टें और निर्देश।

८

अपना नेतृत्व लागू करते समय केन्द्रीय कमेटी के प्रादेशिक ब्यूरोओं[1] और उपब्यूरोओं तथा क्षेत्र, प्रान्त, प्रिफेक्चर और म्युनिसिपलटी की पार्टी-कमेटियों को चाहिए कि वे शहरी और देहाती दोनों प्रकार के कार्य पर समुचित ध्यान दें, औद्योगिक उत्पादन और कृषि-उत्पादन दोनों प्रकार के कार्य पर समुचित ध्यान दें। इसका मतलब यह है कि उन्हें भूमि-सुधार और कृषि-उत्पादन का नेतृत्व करने की वजह से शहरों के काम और औद्योगिक उत्पादन का नेतृत्व करने की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अथवा इस सम्बन्ध में अपने प्रयत्नों में ढिलाई नहीं आने देनी चाहिए। चूंकि अब हमारे पास बहुत से बड़े, मझोले और छोटे शहर मौजूद हैं तथा हमारे उद्योग-धन्धों, खदानों और संचार-पंक्तियों का व्यापक जाल फैल चुका है, इसलिए अगर किसी भी सम्बन्धित नेतृत्वकारी संगठन ने इस मामले में लापरवाही दिखाई अथवा ढिलाई से काम लिया, तो हम गलतियां कर बैठेंगे।

नोट

[1] यहां केन्द्रीय कमेटी की एजेन्सियों से तात्पर्य है उसके प्रादेशिक ब्यूरो और उपब्यूरो।

ल्याओशी-शनयाङ मुहिम[1] के लिए फौजी कार्यवाही सम्बन्धी नीति*

सितम्बर और अक्तूबर १९४८

१. ७ सितम्बर का तार

जुलाई १९४६ से लेकर लगभग पांच वर्ष में[2] क्वोमिन्ताङ को बुनियादी तौर पर उखाड़ फेंकने के लिए हम तैयार है। यह सम्भव है। अगर हम हर साल क्वोमिन्ताङ की नियमित सेना की लगभग सौ-सौ ब्रिगेडें, यानी पांच साल के दौरान कोई ५०० ब्रिगेडें, नष्ट कर डालें तो हमारा लक्ष्य प्राप्त हो सकता है। पिछले दो वर्षों में हमारी सेना ने शत्रु की नियमित सेना की कुल १९१ ब्रिगेडों को नेस्तनाबूद कर डाला है; औसतन ९५.५ ब्रिगेडें सालाना या ८ से कुछ कम माहवार का हिसाब बैठता है। जरूरत इस बात की है कि अगले तीन वर्षों में हमारी सेना शत्रु की नियमित सेना की ३०० या उससे अधिक ब्रिगेडों का सफाया कर डाले। हम आशा करते हैं

*ये दोनों तार कामरेड माओ त्सेतुङ ने लिन प्याओ, लो रूङ-ह्वान तथा अन्य कामरेडों के नाम चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन के लिए लिखे थे। ल्याओशी-शनयाङ मुहिम के लिए फौजी कार्यवाही की जो नीति कामरेड माओ त्सेतुङ ने इनमें पेश की थी, उसे बाद में

कि इस वर्ष जुलाई से लेकर अगले वर्ष जून तक हम शत्रु की नियमित सेना की कोई ११५ ब्रिगेडों को नष्ट कर डालेंगे। इस संख्या का बटवारा विविध रणांगन-सेनाओं और फौजी फारमेशनों के बीच कर दिया गया है।[1] पूर्वी चीन रणांगन-सेना से उम्मीद की जाती है कि वह लगभग ४० ब्रिगेडों का (जिनमें वे ७ ब्रिगेडें भी शामिल हैं जिनका सफाया वह जुलाई में कर चुकी है) सफाया करे, तथा चीनान नगर और उत्तरी च्याङसू, पूर्वी हनान और उत्तरी आनह्वेइ के बड़े, मझोले और छोटे नगरों की एक अच्छी खासी तादाद पर कब्जा कर ले। मध्यवर्ती मैदान रणांगन-सेना से उम्मीद की जाती है कि वह लगभग १८ ब्रिगेडों का (जिनमें वे २ ब्रिगेडें भी शामिल हैं जिनका सफाया वह जुलाई में कर चुकी है) सफाया कर दे, तथा हुपे, हनान और आनह्वेइ प्रान्तों के कई नगरों पर कब्जा कर ले। उत्तर-पश्चिमी रणांगन-सेना से उम्मीद की जाती है कि वह लगभग १२ ब्रिगेडों का (जिनमें वह १.५ ब्रिगेड भी शामिल है जिसका सफाया वह अगस्त में कर चुकी है) सफाया कर दे। श्वी श्याङ-छ्येन और चओ शी-ती की कमान में जो फौजी फारमेशन उत्तरी

पूरी तरह कार्यान्वित किया गया। इस मुहिम के ये परिणाम हुए :

(१) ४,७०,००० शत्रु-सैनिकों का सफाया करने और उस अवधि के दौरान दूसरी रणभूमियों में विजय प्राप्त करने के परिणामस्वरूप गुण की दृष्टि से बरतर जन-मुक्ति सेना संख्या की दृष्टि से भी क्वोमिन्ताङ सेना से बरतर बन गई।

(२) उत्तर-पूर्वी चीन का समूचा प्रदेश मुक्त करा लिया गया और पेइफिङ, थ्येनचिन और समूचे उत्तरी चीन की मुक्ति के लिए अनुकूल हालात पैदा कर दिए गए।

चीन में है, उससे यह उम्मीद की जाती है कि वह येन शी-शान के मातहत लगभग १८ ब्रिगेडों का (जिनमें वे ८ ब्रिगेडें भी शामिल हैं जिन्हें वह जुलाई में नेस्तनाबूद कर चुकी है) सफाया कर दे और थाएय्वान पर कब्जा कर ले। आपसे यह उम्मीद की जाती है कि आप लो रुङ-हुआन और याङ छङ-ऊ की कमान वाली २ फौजी फारमेशनों से तालमेल कायम करके वेइ ली-ह्वाङ और फू च्वो-ई के मातहत दो सैन्य-दलों की लगभग ३५ ब्रिगेडों का (जिनमें वह १ ब्रिगेड भी शामिल है जिसका सफाया याङ छङ-ऊ द्वारा जुलाई में किया जा चुका है) सफाया कर दें, तथा पेइफिङ, थ्येनचिन और शनयाङ को छोड़कर पेइफिङ-ल्याओनिङ, पेइफिङ-स्वेय्वान, पेइफिङ-छङते और पेइफिङ-पाओतिङ रेलवे पर पड़ने वाले सभी नगरों पर कब्जा कर लें। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए निर्णायक कड़ी है : मुहिमों में समुचित सैन्य-विन्यास और समुचित सैन्य-संचालन तथा लड़ाई और विश्राम के बीच समुचित सन्तुलन। अगर आप सितम्बर और अक्तूबर के दो महीनों में या थोड़ी देर और लगाकर चिनचओ से थाङशान तक की लाइन में शत्रु का सफाया कर सकें तथा चिनचओ,

(३) हमारी सेना ने बड़े पैमाने की विनाश की लड़ाई चलाने का अनुभव हासिल कर लिया।

(४) उत्तर-पूर्वी चीन की मुक्ति के फलस्वरूप मुक्ति-युद्ध के लिए रणनीतिक दृष्टि से सुरक्षित और अपेक्षाकृत सशक्त औद्योगिक आधार वाले एक पृष्ठ-भागीय क्षेत्र पर कब्जा कर लिया गया, और पार्टी व जनता के लिए कदम-ब-कदम आर्थिक पुनर्स्थापना के कार्य में लग जाने की अनुकूल परिस्थितियां पैदा हो गईं।

ल्याओशी-शनयाङ मुहिम चीनी जन-मुक्ति युद्ध के दौरान निर्णायक महत्व रखने

शानहाएक्वान और थाङशान पर कब्जा कर सकें, तो आप शत्रु की कोई १८ ब्रिगेडों का सफाया करने का लक्ष्य प्राप्त कर सकेंगे। इसके लिए आपको अब अपनी मुख्य सैन्य-शक्ति इसी लाइन में लगाने की तैयारी करनी होगी तथा छाङछुन और शनयाङ में स्थित शत्रु की फौजों को फिलहाल वहीं पड़े रहने देना होगा। चिनचओ पर हमला करते समय आप शत्रु की उन फौजों का सफाया करने के लिए भी तैयार रहिए जो चिनचओ की मदद करने के लिए छाङछुन और शनयाङ से आ सकती हैं। चूंकि चिनचओ, शानहाएक्वान और थाङशान तथा इनके इर्दगिर्द दुश्मन की फौजें एक दूसरे से अलग हो गई हैं, इसलिए उन पर हमला करके उनका सफाया कर डालने में सफलता प्राप्त करना बहुत कुछ निश्चित है और साथ ही चिनचओ पर कब्जा करने और शत्रु की कुमक पर हमला करने में कामयाबी हासिल होने की भी काफी आशा है। लेकिन छाङछुन और शनयाङ से आने वाली शत्रु-सेनाओं पर हमला करने की तैयारी के तौर पर अगर आप अपनी मुख्य सैन्य-शक्ति शिनमिन और उसके समीप के उत्तरी इलाकों में तरतीबवार रखेंगे, तो सम्भवतः शत्रु को बाहर आने

वाली तीन अत्यन्त बड़ी मुहिमों में पहली मुहिम थी। अन्य दो मुहिमें ये थीं : ह्वाए-हाए मुहिम और पेकिङ-थ्येनचिन मुहिम। इन तीन बड़ी मुहिमों में, जो चार महीने उन्नीस दिन तक चलीं, शत्रु की नियमित सेना की १४४ डिवीजनों (ब्रिगेडों) और अनियमित सेना की २९ डिवीजनों, यानी कुल १५,४०,००० से अधिक सैनिकों का सफाया कर दिया गया। इस अवधि में जन-मुक्ति सेना ने दूसरे मोर्चों पर भी आक्रमण किए, जिनमें दुश्मन की बड़ी तादाद को नष्ट कर दिया गया। युद्ध के शुरू के दो वर्षों में जन-मुक्ति सेना ने हर महीने औसतन लगभग ८ शत्रु-ब्रिगेडों का सफाया किया। तब जन-मुक्ति सेना के हाथों शत्रु-सेना को

की जुर्रत नहीं होगी, क्योंकि ऐसी सूरत में वह आपसे बेहद खतरा महसूस करेगा। एक तरफ तो यह हो सकता है कि छाङछुन और शनयाङ से शत्रु बाहर ही न निकले ; दूसरी तरफ यह भी हो सकता है कि चिनचओ, शानहाएक्वान और थाङशान तथा इनके इर्दगिर्द के इलाकों की ओर जो सैन्य-शक्तियां आप भेजेंगे, वे चूंकि बहुत कम होंगी, इसलिए वहां की शत्रु-सेना (जिसमें १८ ब्रिगेडें हैं) शायद चिनचओ और थाङशान की तरफ ही पलट जाए और ऐसी सूरत में आपके लिए उस पर हमला करना कठिन जरूर हो जाएगा ; मगर आपको उस पर हमला करना ही पड़ेगा तथा आपका समय और आपकी शक्ति बेकार बरबाद होगी और इस तरह शायद आप निष्क्रियता की स्थिति में पड़ जाएंगे। इन कारणों से आपके लिए बेहतर यही होगा कि आप छाङछुन और शनयाङ स्थित शत्रु को तो वैसे ही छोड़ दें, और अपना सारा ध्यान चिनचओ, शानहाएक्वान और थाङशान स्थित शत्रु से निबटने की ओर लगाएं। एक बात और : इस साल सितम्बर से अगले साल जून तक के दस महीनों के भीतर आपको तीन बड़ी मुहिमें चलाने की तैयारी भी करनी होगी ;

नष्ट किए जाने की संख्या प्रति मास औसतन ८ ब्रिगेडों के बजाय ३८ ब्रिगेडें हो गई। इन तीन बड़ी मुहिमों ने दुश्मन की उन चुनिन्दा सेनाओं को बुनियादी तौर पर नेस्तनाबूद कर दिया जिनके भरोसे क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रान्तिकारी गृह-युद्ध चला रही थी, साथ ही उन मुहिमों ने देशभर में मुक्ति-युद्ध की विजय की रफ्तार को बहुत तेज कर दिया। ह्वाए-हाए मुहिम और पेकिङ-थ्येनचिन मुहिम के बारे में जानकारी के लिए देखिए इसी ग्रन्थ में "ह्वाए-हाए मुहिम के लिए फौजी कार्यवाही सम्बन्धी नीति" और "पेकिङ-थ्येनचिन मुहिम के लिए फौजी कार्यवाही सम्बन्धी नीति" शीर्षक रचनाएं।

हर मुहिम पर दो-दो महीने लगाने होंगे ; इस तरह कुल मिलाकर लगभग छै महीने लग जाएंगे और बाकी चार महीने आपको विश्राम के लिए रख छोड़ने होंगे। चिनचओ-शानहाएक्वान-थाङशान मुहिम (पहली बड़ी मुहिम) के दौरान अगर छाङछुन और शनयाङ स्थित शत्रु चिनचओ को बचाने के लिए अपनी पूरी ताकत के साथ बाहर निकल आता है (चूंकि आपकी मुख्य सैन्य-शक्ति का विनरण शिन-मिन में नहीं बल्कि चिनचओ के आसपास होगा, इसलिए वेइ ली-ह्वाङ मदद के लिए दौड़ पड़ने की जुर्रत करेगा), तो चिनचओ-शानहाएक्वान-थाङशान लाइन से हटे बिना ही आप फौरन शत्रु की कुमक पर लगातार बड़े पैमाने पर नेस्तनाबूद कर देने वाले हमले कर सकते है और यहीं वेइ ली-ह्वाङ की तमाम फौजों का सफाया करने की कोशिश कर सकते हैं। यह एक अत्यन्त आदर्श स्थिति होगी। इसलिए आपको इन बातों पर ध्यान देना चाहिए :

(१) चिनचओ, शानहाएक्वान और थाङशान पर हमला और कब्जा करने तथा इस पूरी लाइन पर नियंत्रण करने के अपने संकल्प पर दृढ़ रहो।

(२) जो बड़ी से बड़ी लड़ाई आपने कभी लड़ी हो, उससे कहीं बड़े पैमाने की विनाश की लड़ाई लड़ने के अपने संकल्प पर दृढ़ रहो, यानी वेइ ली-ह्वाङ की पूरी सेना अगर मदद को दौड़ पड़े तो उससे लड़ने का साहस करो।

(३) इन दो संकल्पों के अनुरूप सामरिक कार्यवाही की अपनी योजना पर नए सिरे से विचार करो, अपनी पूरी सैन्य-शक्ति की फौजी आवश्यकताओं (रसद, गोला-बारूद, रंगरूट आदि) को पूरा करने के लिए और लड़ाई में पकड़े गए बन्दियों से निबटने के लिए पूरा इन्तजाम कर लो।

कृपया उपर्युक्त बातों पर विचार कीजिए और तार द्वारा जवाब दीजिए।

२. १० अक्तूबर का तार

१. चिनचओ पर आपके हमले के दिन से ही वह दौर शुरू हो जाएगा जब सामरिक स्थिति बड़ी तनावपूर्ण हो जाएगी। आशा है कि आप हर दूसरे-तीसरे दिन हमें रेडियो से शत्रु की स्थिति (चिनचओ के बचाव के लिए तैनात शत्रु-सेना की प्रतिरोध-शक्ति, हूलूताओ व चिनशी से और शनयाङ से आने वाली शत्रु-कुमक की प्रगति, और छाङछुन में शत्रु-सेनाओं की वर्तमान व सम्भावित फौजी कार्यवाहियां) और हमारी अपनी स्थिति (नगर पर हमारी चढ़ाई की प्रगति, नगर पर चढ़ाई करने और शत्रु-कुमक को रोकने की कार्यवाहियों के दौरान हताहत हुए सैनिकों की संख्या) के बारे में सूचना देते रहेंगे।

२. जैसा कि आपने कहा है, बहुत सम्भव है कि इस दौरान सामरिक स्थिति हमारे अत्यन्त अनुकूल हो जाए, यानी आप चिनचओ के बचाव पर तैनात शत्रु-सेनाओं का ही नहीं बल्कि हूलूताओ और चिनशी से आने वाली शत्रु-कुमक के एक भाग का और छाङछुन से भागने वाली कुछ या अधिकतर शत्रु-सेनाओं का भी सफाया कर सकें। अगर आपके चिनचओ पर कब्जा कर लेने के ठीक बाद शनयाङ

से आई शत्रु-कुमक तालिङ नदी के उत्तर वाले इलाके की ओर बढ़ी और इस प्रकार आप उसे घेरने के लिए अपनी सैन्य-शक्तियां को उधर हटाने में समर्थ हो गए, तो यह सम्भव है कि आप इस कुमक का भी सफाया कर डालें। इस लक्ष्य को प्राप्त करने की कुंजी यह है कि चिनचओ पर लगभग एक सप्ताह की अवधि में कब्जा करने की कोशिश की जाए।

३. चिनचओ पर अपने हमले की प्रगति और चिनचओ की ओर पूर्व व पश्चिम दोनों तरफ से बढ़ने में शत्रु-कुमक की प्रगति के अनुरूप शत्रु की कुमक को रोकने के लिए अपने सैन्य-विन्यास के बारे में फैसला कर लो। शनयाङ से आने वाली शत्रु-कुमक यदि धीमी चाल से बढ़ रही हो (ऐसा उस सूरत में हो सकता है जब चिनचओ पर आपकी लड़ाई के दौरान छाङछुन में घिरी शत्रु-सेना घेरा तोड़कर बाहर निकल जाए, लेकिन हमारी १०वीं कालम और अन्य सेनाएं उसे पकड़कर कुचल डालें, जिसके परिणामस्वरूप शनयाङ से आने वाली शत्रु-कुमक ऐसी सम्भ्रान्त हो जाए कि वह धीमी चाल से आगे बढ़े या रुक जाए अथवा छाङछुन वाली सेनाओं को बचाने के लिए पीछे मुड़ जाए) और उधर हूलूताओ और चिनशी से आने वाली शत्रु-कुमक खासी तेज चाल से बढ़ रही हो, तो इन इलाकों में भेजी जाने वाली कुमक के एक भाग का सफाया कर डालने में और सबसे पहले उसकी पेशकदमी को रोकने में आपको अपनी चौथी और ११वीं कालमों की मदद के लिए अपनी आम रिजर्व सैन्य-शक्ति को झोंक देने को तैयार रहना चाहिए। और अगर हूलूताओ और चिनशी से आने वाली शत्रु-कुमक को हमारी चौथी और ११वीं कालमों और अन्य सेनाओं ने उलझा रखा हो और रोक रखा हो

और इसलिए वह धीमी चाल से बढ़ रही हो या रुक गई हो, अगर छाङछुन में घिरी शत्रु-सेना घेरा तोड़कर बाहर न निकल पाए, अगर शनयाङ से आने वाली शत्रु-कुमक खासी तेज चाल से बढ़ रही हो और अगर उधर चिनचओ में अधिकतर शत्रु-सेना का सफाया किया जा चुका हो और पूरे नगर पर हमारा कब्जा होने ही वाला हो, तो आपको चाहिए कि आप शनयाङ से आने वाली शत्रु-सेनाओं को तालिङ नदी के उत्तर वाले इलाके में काफी अन्दर तक घुसने दें, ताकि आप ठीक समय पर अपनी सैन्य-शक्तियों को उनकी ओर भेजकर उन्हें घेर सकें और अपनी सुविधानुसार उनका सफाया कर सकें।

४. आपको अपना ध्यान चिनचओ की सामरिक कार्यवाहियों पर केन्द्रित करना चाहिए और जितनी जल्दी हो सके उस नगर पर कब्जा करने की कोशिश करनी चाहिए। अगर दूसरा कोई भी लक्ष्य प्राप्त न हुआ और सिर्फ चिनचओ पर हमारा कब्जा हो गया, तब भी पहलकदमी आपके हाथ में आ जाएगी, जो अपनी जगह एक महान विजय होगी। आशा है कि आप उक्त बातों पर यथोचित ध्यान देंगे। खास तौर से चिनचओ पर कब्जा करने की लड़ाई के शुरू के कुछ दिनों में तो पूर्व व पश्चिम दोनों ओर से आने वाली शत्रु-कुमक कोई भारी कदम नहीं उठा पाएगी, और आपको चिनचओ के मोर्चे की फौजी कार्यवाहियों पर ही अपनी सारी शक्ति केन्द्रित करनी चाहिए।

नोट

१ ल्याम्रोशी-शनयाङ मुहिम वह बड़ी मुहिम थी जिसे उत्तर-पूर्वी जन-मुक्ति सेना ने १२ सितम्बर से २ नवम्बर १९४८ के बीच ल्याम्रोनिङ प्रान्त के पश्चिमी भाग में और शनयाङ-छाङछुन इलाके में चलाया था। इस मुहिम की पूर्ववेला में उत्तर-पूर्वी चीन में क्वोमिन्ताङ का कुल सैन्य-बल ४ सेनाम्रों का था जिनमें कुल १४ फौजी कोरें या ४४ डिवीजनें थीं। ये सैन्य-शक्तियां अपना मोर्चा सिकोड़ कर छाङछुन, शनयाङ और चिनचाम्रो के तीन इलाकों में, जो एक दूसरे से अलग-अलग थे, जम गई थीं। उत्तर-पूर्व की शत्रु-सेनाम्रों का वहीं पूरी तरह सफाया करने और समूचे उत्तर-पूर्व को जल्दी से जल्दी मुक्त करा लेने के उद्देश्य से उस क्षेत्र की जन-मुक्ति सेना ने स्थानीय व्यापक जनता के सहयोग से, अपनी मुख्य सैन्य-शक्ति, जिसमें १२ कालमें और १ तोपखाना-कालम शामिल थी, और क्षेत्रीय सशस्त्र शक्तियों को मिलाकर कुल ५३ डिवीजनों यानी ७,००,००० से अधिक सैनिकों के बल पर सितम्बर १९४८ में ल्याम्रोशी-शनयाङ मुहिम शुरू की। पेकिङ-ल्याम्रोनिङ रेलवे पर स्थित चिनचाम्रो शहर उत्तर-पूर्वी और उत्तरी चीन के बीच रणनीतिक महत्व की कड़ी था। चिनचाम्रो क्षेत्र की हिफाजत के लिए तैनात दुश्मन के १,००,००० से अधिक सैनिकों की ८ डिवीजनें थीं, जिनकी कमान क्वोमिन्ताङ के उत्तर-पूर्वी "डाकू-दमन" हेडक्वार्टर के डिप्टी कमाण्डर-इन-चीफ फान हान-च्ये के हाथ में थी। चिनचाम्रो पर कब्जा कर लेना ही ल्याम्रोशी-शनयाङ मुहिम की सफलता की कुंजी था। कामरेड माम्रो त्सेतुङ की हिदायतों पर अमल करते हुए उत्तर-पूर्वी जन-मुक्ति सेना ने छाङछुन के घेरे को बनाए रखने के काम पर १ कालम और ७ स्वतंत्र डिवीजनें लगा दीं; चिनचाम्रो को घेरकर उस पर चढ़ाई करने के काम पर ६ कालमों, १ तोपखाना-कालम और १ टैंक बटालियन को लगाया; और चिनचाम्रो की मदद करने इधर चिनशी व हुलुताम्रो से और उधर शनयाङ से आ सकने वाली शत्रु-सेनाम्रों की राह रोकने के काम पर चिनचाम्रो के दक्षिण-पश्चिम में ताशान-ताम्राष्याम्रो क्षेत्र में २ कालमें और हेशान-ताहूशान-चाङऊ क्षेत्र में ३ कालमें तैनात कर दीं। चिनचाम्रो क्षेत्र में लड़ाई १२ सितम्बर को शुरू हुई। इंग्येन पर कब्जा कर लेने के बाद हमारी

सेना चिनचाम्रो की नगर-सीमाओं पर तैनात शत्रु की सैन्य-शक्ति का सफाया कर रही थी कि च्याङ काई-शेक ने फौजी कार्यवाहियों का संचालन सीधे अपने हाथ में ले लेने के लिए हड़बड़ाकर उत्तर-पूर्व की ओर उड़ान की और पेकिङ-ल्याम्रोनिङ रेलवे पर स्थित अपने उत्तरी चीन "डाकू-दमन" हेडक्वार्टर से ५ डिवीजनों और शानतुङ प्रान्त से २ डिवीजनों को चिनशी की ४ डिवीजनों से आ मिलने के लिए फौरन बुला भेजा; इन ११ डिवीजनों ने १० अक्तूबर को ताशान के हमारे ठिकानों पर भीषण आक्रमण शुरू कर दिया, लेकिन उन्हें सफलता न मिल सकी। उधर ल्याम्रो याम्रो-श्याङ की कमान में ११ डिवीजनों और ३ घुड़सवार ब्रिगेडों वाली जो नयी क्वोमिन्ताङ सेना चिनचाम्रो को बचाने के लिए झटपट शनयाङ से निकली थी, उसे हमारी सेना ने हेशान और ताहूशान के उत्तर-पूर्व में ही रोक दिया। चिनचाम्रो पर हमारी सेना ने १४ अक्तूबर को हमला शुरू कर दिया और ३१ घंटे की घमासान लड़ाई के बाद बचाव के लिए तैनात शत्रु-सेना का पूरा सफाया कर डाला; शत्रु के उत्तर-पूर्वी "डाकू-दमन" हेडक्वार्टर के डिप्टी कमाण्डर-इन-चीफ फान हान-च्ये, छठी सेना के कमाण्डर लू च्युन-छ्वेन और उनकी कमान में १,००,००० से अधिक सैनिकों को हमारी सेना ने बन्दी बना लिया। चिनचाम्रो की मुक्ति से बाध्य होकर छाङछुन की शत्रु-सेनाम्रों के एक भाग ने क्वोमिन्ताङ के खिलाफ विद्रोह कर दिया और शेष ने हमारे आगे आत्मसमर्पण कर दिया। तब उत्तर-पूर्व में क्वोमिन्ताङ सेनाम्रों का पूरी तरह धराशायी होना बिलकुल निश्चित हो गया। लेकिन चिनचाम्रो पर फिर से कब्जा करने और उत्तर-पूर्वी चीन और उत्तरी चीन के बीच फिर से संचार-व्यवस्था कायम करने के सपने देखते हुए च्याङ काई-शेक ने ल्याम्रो याम्रो-श्याङ के मातहत सेना को सख्त हिदायत दी कि वह चिनचाम्रो की ओर अपनी पेशकदमी जारी रखे। चिनचाम्रो पर कब्जा करने के बाद उत्तर में हेशान से और दक्षिण में ताहूशान से ल्याम्रो की सेना को घेरने के लिए, उत्तर-पूर्वी जन-मुक्ति सेना फौरन उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ी। २६ अक्तूबर को जन-मुक्ति सेना हेशान-ताहूशान-सिनमिन क्षेत्र में शत्रु को घेर लेने में कामयाब हो गई और दो दिन एक रात की घमासान लड़ाई के बाद उसने शत्रु-सैनिकों का पूरी तरह सफाया कर डाला और सेना-कमाण्डर ल्याम्रो याम्रो-श्याङ तथा फौजी कोर कमाण्डर ली ताम्रो, श्याङ फङ-ऊ और चङ थिङ-ची को तथा उनकी

कमान में १,००,००० से अधिक सैनिकों को बन्दी बना लिया। इस जीत के बाद हमारी सेना ने अपनी कार्रवाई को बड़ी मुस्तैदी के साथ जारी रखा और २ नवम्बर को उसने शनयाङ और इङक्ओ को मुक्त करा लिया और साथ ही १,४६,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों का सफाया भी कर डाला। इस तरह समूचे उत्तर-पूर्व को मुक्त करा लिया गया। इस मुहिम में कुल ४,७०,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों का सफाया कर डाला गया।

* देखिए इसी ग्रन्थ में "परिस्थिति के बारे में एक सरक्यूलर" शीर्षक रचना का नोट ६।

* चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो की सितम्बर की मीटिंग के फैसलों के अनुसार केन्द्रीय कमेटी के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन ने १ नवम्बर १९४८ को विभिन्न बड़े रणनीतिक क्षेत्रों की तमाम सेनाओं का रणांगन सैन्य-दल, क्षेत्रीय सैन्य-दल और छापामार सैन्य-दल के रूप में वर्गीकरण कर दिया। रणांगन सैन्य-दल को रणांगन-सेनाओं में संगठित किया गया। एक रणांगन-सेना में कई फौजी फार्मेशनें, एक फौजी फार्मेशन में कई फौजी कोरें (पहले की कालमें), एक फौजी कोर में कई डिवीजनें, और एक डिवीजन में कई रेजीमेन्टें रखी गईं। अलग-अलग क्षेत्र के अनुसार रणांगन-सेनाओं के नाम पड़ गए: चीनी जन-मुक्ति सेना की उत्तर-पश्चिमी रणांगन-सेना, मध्यवर्ती मैदान रणांगन-सेना, पूर्वी चीन रणांगन-सेना, उत्तर-पूर्वी रणांगन-सेना और उत्तरी चीन रणांगन-सेना। हर रणांगन-सेना की फौजी फार्मेशनों, फौजी कोरों और डिवीजनों की तादाद हर बड़े रणनीतिक क्षेत्र की ठोस परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न थी। बाद में उत्तर-पश्चिमी रणांगन-सेना का नया नाम पहली रणांगन-सेना रख दिया गया, जिसमें दो फौजी फार्मेशनें थीं; मध्यवर्ती मैदान रणांगन-सेना का नया नाम दूसरी रणांगन-सेना रख दिया गया, जिसमें तीन फौजी फार्मेशनें थीं; पूर्वी चीन रणांगन-सेना का नया नाम तीसरी रणांगन-सेना रख दिया गया, जिसमें चार फौजी फार्मेशनें थीं; और उत्तर-पूर्वी रणांगन-सेना का नया नाम चौथी रणांगन-सेना रख दिया गया, जिसमें चार फौजी फार्मेशनें थीं। उत्तरी चीन रणांगन-सेना में शामिल तीन फौजी फार्मेशनों को चीनी जन-मुक्ति सेना के जनरल हेडक्वार्टर की प्रत्यक्ष कमान में रख दिया गया।

पार्टी-कमेटी व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के बारे में*

२० सितम्बर १९४८

पार्टी-कमेटी व्यवस्था पार्टी की एक महत्वपूर्ण व्यवस्था है जिसके जरिए सामूहिक नेतृत्व की गारन्टी की जाती है तथा कामकाज पर किसी एक व्यक्ति का इजारा कायम नहीं होने दिया जाता। हाल ही में इस बात का पता लगाया गया है कि कुछ नेतृत्वकारी संगठनों में (निस्सन्देह सबमें नहीं) यह एक आदत सी बन गई है कि कोई एक आदमी कामकाज पर अपना इजारा कायम कर लेता है और महत्वपूर्ण समस्याओं का अकेले ही फैसला कर लेता है। महत्वपूर्ण समस्याओं के फैसले पार्टी-कमेटी की मीटिंगों में नहीं बल्कि किसी एक व्यक्ति द्वारा किए जाते हैं, तथा पार्टी-कमेटियों की सदस्यता महज नाममात्र की रह गई है। कमेटी के सदस्यों के बीच के मतभेदों को दूर नहीं किया जा सकता तथा उन्हें काफी लम्बे समय तक बिना हल किए ही छोड़ दिया जाता है। पार्टी-कमेटी के सदस्यों के बीच केवल बाहरी एकता मौजूद रहती है, सच्ची एकता नहीं। इस स्थिति को अवश्य बदलना होगा। अब से सभी नेतृत्वकारी संगठनों में

*यह फैसला कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए लिखा था।

पार्टी-कमेटी की मीटिंगों की एक सुदृढ़ व्यवस्था कायम की जानी चाहिए, जो केन्द्रीय कमेटी के प्रादेशिक ब्यूरो से लेकर प्रिफेक्चर की पार्टी-कमेटियों तक सभी में मौजूद हो ; मोर्चों की पार्टी-कमेटियों से लेकर ब्रिगेडों की पार्टी-कमेटियों और फौजी क्षेत्रों (क्रान्तिकारी फौजी कमीशन के उप-कमीशनों अथवा नेतृत्वकारी ग्रुपों) तक सभी में मौजूद हो ; तथा सरकारी संगठनों, जन-संगठनों और समाचार-एजेन्सियों व समाचारपत्रों के कार्यालयों के नेतृत्वकारी पार्टी-सदस्यों के ग्रुपों में मौजूद हो। सभी महत्वपूर्ण समस्याओं को (निस्सन्देह महत्वहीन छोटी-मोटी समस्याओं को या ऐसी समस्याओं को नहीं जिनके हल मीटिंगों में वाद-विवाद के जरिए निकाले जा चुके हों और जिन्हें केवल कार्यान्वित करना ही बाकी रह गया हो) कमेटी के सामने वाद-विवाद के लिए पेश किया जाना चाहिए तथा उपस्थित कमेटी-सदस्यों को उनके बारे में अपनी राय पूरी तरह जाहिर करनी चाहिए और निश्चित फैसले करने चाहिए, जिन्हें उसके बाद सम्बन्धित सदस्यों को कार्यान्वित करना चाहिए। प्रिफेक्चर और ब्रिगेड से निचले स्तर की पार्टी-कमेटियों को भी यही तरीका अपनाना चाहिए। उच्चतर नेतृत्वकारी संगठनों में भी विभिन्न विभागों (मिसाल के लिए प्रचार विभाग और संगठन विभाग), कमीशनों (मिसाल के लिए मजदूर-कमीशन, महिला-कमीशन और नौजवान-कमीशन), स्कूलों (मिसाल के लिए पार्टी-स्कूल) तथा कार्यालयों (मिसाल के लिए अनुसन्धान कार्यालय) के नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं की भी सामूहिक मीटिंगें बुलाई जानी चाहिए। बेशक, हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि ये मीटिंगें न तो ज्यादा लम्बी हों और न ही बार-बार बुलाई जाएं तथा उनमें छोटे-मोटे मसलों पर बहस करने में ही वक्त

न गंवाया जाए, ताकि काम में बाधा न पड़े। ऐसी महत्वपूर्ण समस्याओं के बारे में, जो जटिल हों और जिनके बारे में मतभेद हो, मीटिंग से पहले सदस्यों से व्यक्तिगत सलाह-मशविरा कर लिया जाना चाहिए, जिससे सदस्यगण उनके बारे में सोच-विचार कर लें, ताकि मीटिंग में किए जाने वाले निर्णय महज रस्मी बनकर न रह जाएं अथवा किसी निर्णय पर पहुंचना असम्भव न हो जाए। पार्टी-कमेटी की मीटिंगों को दो श्रेणियों में बांट लेना चाहिए, स्थाई समिति की मीटिंग और पूर्ण अधिवेशन, तथा इन दोनों को एक दूसरे से उलझा नहीं देना चाहिए। यही नहीं, हमें इस बात का भी ख्याल रखना चाहिए कि न तो सामूहिक नेतृत्व की उपेक्षा करके व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर जरूरत से ज्यादा जोर दिया जाए और न व्यक्तिगत जिम्मेदारी की उपेक्षा करके सामूहिक नेतृत्व पर। सेना में कमान सम्भालने वाले अफसर को लड़ाई के दौरान और परिस्थिति की मांग पर आपत्कालीन फैसले करने का अधिकार है।

सितम्बर मीटिंग के बारे में
– चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का सरकुलर*

१० अक्तूबर १९४८

१. सितम्बर १९४८ में केन्द्रीय कमेटी ने राजनीतिक ब्यूरो की एक मीटिंग आयोजित की जिसमें राजनीतिक ब्यूरो के ७ सदस्य, केन्द्रीय कमेटी के १४ सदस्य व वैकल्पिक सदस्य और १० महत्वपूर्ण कार्यकर्ता शामिल हुए, जिनमें उत्तरी चीन, पूर्वी चीन, मध्यवर्ती मैदान व उत्तर-पश्चिमी चीन की पार्टी व सेना के प्रमुख नेतृत्वकारी साथी थे। जापान द्वारा आत्मसमर्पण कर दिए जाने के बाद केन्द्रीय कमेटी ने जितनी भी मीटिंगें बुलाई है उन सबके मुकाबले इस मीटिंग में सबसे अधिक उपस्थिति थी। मीटिंग में पिछले कार्यों की जांच-पड़ताल की गई और भविष्य के लिए कार्य निर्धारित किए गए।

२. अप्रैल १९४५ में पार्टी की सातवी राष्ट्रीय कांग्रेस के बाद से केन्द्रीय कमेटी ने तथा समूची पार्टी के नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं ने जो एकता प्रदर्शित की है, वह उस एकता से कही बढ़कर है जो

*यह अन्त पार्टी सरकुलर कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए लिखा था। सितम्बर १९४८ की मीटिंग हुये प्रान्त

उन्होंने जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान प्रदर्शित की थी। इस एकता ने हमारी पार्टी को जापानी आत्मसमर्पण के बाद के पूरे तीन वर्षों में देश के अन्दर तथा देश के बाहर हुई बहुत सी महत्वपूर्ण घटनाओं से निपटने के काबिल बना दिया है ; और इन घटनाओं के दौरान हमारी पार्टी ने चीनी क्रान्ति का आगे की ओर एक भारी कदम बढ़ा दिया है, चीनी जनता के विशाल समुदाय के बीच अमरीकी साम्राज्यवाद के राजनीतिक असर को चकनाचूर कर डाला है, क्वोमिन्ताङ द्वारा किए गए नए विश्वासघात के खिलाफ जोरदार संघर्ष किया है और उसके फौजी हमलों को पीछे ढकेल दिया है तथा जन-मुक्ति सेना को इस योग्य बना दिया है कि वह अपनी रक्षात्मक कार्यवाही को आक्रमणात्मक कार्यवाही में बदल दे।

जुलाई १९४६ से जून १९४८ तक, पिछले दो वर्षों की लड़ाई में, जन-मुक्ति सेना ने दुश्मन के २६,४०,००० सैनिकों का सफाया कर डाला, जिनमें बन्दी बनाए गए १६,३०,००० सैनिक भी शामिल हैं। इन दो वर्षों में जो युद्ध-सामग्री हथिया ली गई, वह मुख्य रूप से इस प्रकार थी : लगभग ९,००,००० राइफलें, ६४,००० से ज्यादा भारी व हल्की मशीनगनें, ८,००० से ज्यादा हल्की तोपें, ५,००० से ज्यादा पैदल सेना की तोपें और १,१०० से ज्यादा भारी माउन्टेन व फील्ड गनें। इन दो वर्षों में जन-मुक्ति सेना की तादाद १२,००,००० से कुछ ज्यादा सैनिकों से बढ़कर २८,००,००० हो गई। हमारी नियमित फौजें ११८ ब्रिगेडों से बढ़कर १७६ ब्रिगेडें हो गईं, अर्थात, नियमित सैनिकों की संख्या ६,१०,००० से बढ़कर १४,९०,००० हो गई। मुक्त क्षेत्र अब २३,५०,००० वर्ग-किलोमीटर में फैला हुआ है, जो चीन के कुल ९५,९७,००० वर्ग-किलोमीटर क्षेत्रफल का २४.५ फीसदी है। वहां की जनसंख्या १६ करोड़ ८० लाख है, जो चीन की कुल ४७ करोड़ ५० लाख जनसंख्या का ३५.३ फीसदी है ; और वहां काउन्टी-केन्द्रों से लेकर ऊपर तक कुल मिलाकर ५८६ बड़े, मझोले व छोटे शहर हैं, जो चीन के कुल २,००९ ऐसे शहरों का २९ फीसदी हैं।

चूंकि हमारी पार्टी ने भूमि-व्यवस्था का सुधार करने के कार्य में किसानों का दृढ़तापूर्वक नेतृत्व किया है, इसलिए लगभग १० करोड़ आबादी वाले इलाके में भूमि का प्रश्न मुकम्मिल तौर पर हल कर लिया गया है, और जमींदार वर्ग तथा पुराने किस्म के धनी किसानों की जमीन का ग्रामीण जनता के बीच, सबसे पहले गरीब किसानों व खेत-मजदूरों के बीच, मोटे तौर पर समान वितरण किया गया है।

हमारी पार्टी की सदस्य-संख्या, जो मई १९४५ में १२,१०,००० थी, अब ३०,००,००० हो गई है। (१९२७ में, क्वोमिन्ताङ द्वारा क्रान्ति के साथ गद्दारी किए जाने से पहले, यह संख्या ५०,००० थी ; उस साल क्वोमिन्ताङ द्वारा गद्दारी किए जाने के बाद यह

की फिङशान काउन्टी के शीपाईफो गांव में आयोजित की गई थी। जापान द्वारा आत्मसमर्पण कर दिए जाने के बाद केन्द्रीय कमेटी ने जितनी भी मीटिंगें आयोजित की थीं, उन सबके मुकाबले इस मीटिंग में सबसे अधिक उपस्थिति थी।

इससे पहले इतनी बड़ी मीटिंगें आयोजित करना सम्भव नहीं था, क्योंकि केन्द्रीय कमेटी के अधिकतर सदस्य विभिन्न मुक्त क्षेत्रों में जोरदार मुक्ति युद्ध का संचालन कर रहे थे और इधर-उधर आने-जाने में बड़ी दिक्कतें पेश आती थीं।

संख्या घटकर लगभग १०,००० रह गई ; १९३४ में भूमि-क्रान्ति के सफल विकास के कारण यह संख्या बढ़कर ३,००,००० हो गई; १९३७ में दक्षिण में क्रान्ति की पराजय हो जाने[१] के कारण, यह संख्या गिरकर लगभग ४०,००० रह गई ; १९४५ में जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के सफल विकास के कारण, यह सदस्य-संख्या बढ़कर १२,१०,००० हो गई ; और इस समय, च्याङ काई-शेक-विरोधी युद्ध तथा भूमि-क्रान्ति के सफल विकास के कारण यह संख्या बढ़कर ३०,००,००० हो गई है।) एक तरफ, पार्टी ने पिछले वर्ष कुछ अवांछनीय चीजों को, जो उसकी पांतों में कुछ हद तक मौजूद थी, मुख्य रूप से दूर कर लिया और बराबर दूर करती जा रही है ; ये थीं : वर्ग-संरचना में अशुद्धता (जमींदारों तथा धनी किसानों के तत्व), विचारधारा में अशुद्धता (जमींदारों तथा धनी किसानों की विचारधारा) और कार्यशैली में अशुद्धता (नौकरशाही तथा फरमानशाही)। और दूसरी तरफ, पार्टी ने पिछले वर्ष कुछ "वामपंथी" गलतियों को, जो भूमि-समस्या को हल करने के संघर्ष में किसान समुदाय को बड़े पैमाने पर गोलबन्द करने के दौरान पैदा हो गई थीं, दूर कर लिया और बराबर दूर करती जा रही है ; ये थीं : मध्यम किसानों के एक भाग किन्तु काफी संख्या वाले लोगों के हितों पर चोट करना, कुछ निजी औद्योगिक व व्यापारिक कारोबारों को नुकसान पहुंचाना और किसी-किसी जगह प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने की नीति के सिलसिले में निर्धारित कुछ सीमाओं का उल्लंघन करना। पिछले तीन वर्षों के, खास तौर से पिछले वर्ष के महान, तीव्र क्रान्तिकारी संघर्षों के जरिए, और खुद अपनी गलतियों को संजीदगी के साथ ठीक कर लेने के कारण, समूची पार्टी राजनीतिक

परिपक्वता हासिल करने की तरफ एक भारी कदम उठाकर आगे बढ़ गई है।

क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में पार्टी के कार्य को भारी सफलता प्राप्त हुई है। यह इस तथ्य से देखा जा सकता है कि बड़े शहरों में हमने व्यापक मजदूरों, विद्यार्थियों, अध्यापकों, प्रोफेसरों, सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं, साधारण नगरवासियों व राष्ट्रीय पूंजीपतियों को और साथ ही तमाम जनवादी पार्टियों व जन-संगठनों को अपनी पार्टी के पक्ष में कर लिया है, और इस तरह हमने क्वोमिन्ताङ के दमन का प्रतिरोध किया है और क्वोमिन्ताङ को पूरे तौर पर अलगाव की स्थिति में डाल दिया है। दक्षिण में कई विशाल क्षेत्रों में (फूच्येन-क्वाङतुङ-च्याङशी, हूनान-क्वाङतुङ-च्याङशी, क्वाङतुङ-क्वाङशी और क्वाङशी-युन्नान सीमान्त क्षेत्रों में, दक्षिणी युन्नान, आनह्वेइ-च्च्याङ-च्याङशी सीमान्त क्षेत्र तथा पूर्वी व दक्षिणी च्च्याङ में) छापामार युद्ध के आधार-क्षेत्र कायम कर लिए गए हैं और वहां के छापामारों की संख्या बढ़कर ३०,००० से ज्यादा हो गई है।

पिछले दो वर्षों के दौरान और खास तौर से गत वर्ष, हमने जन-मुक्ति सेना में एक सुव्यवस्थित, सुसंचालित जनवादी आन्दोलन चलाया है जिसमें तमाम योद्धाओं व कमाण्डरों ने हिस्सा लिया। इस आन्दोलन में हमने आत्म-आलोचना की, सेना के अन्दर नौकरशाही मनोवृत्ति को दूर कर लिया तथा बराबर दूर करते जा रहे हैं और सेना के विभिन्न स्तरों पर पार्टी-कमेटी व्यवस्था तथा कम्पनियों में सिपाही-कमेटी व्यवस्था को, जो १९२७ से १९३२ तक बड़ी उपयोगी साबित हुई लेकिन जिन्हें बाद में खत्म कर दिया गया, फिर से लागू कर दिया। इन सब बातों ने कमाण्डरों व योद्धाओं के

राजनीतिक उत्साह व चेतना को बहुत अधिक बढ़ा दिया है, उनकी युद्ध-क्षमता व अनुशासन को बहुत मजबूत बनाया है और बन्दी बनाए गए कोई ८,००,००० क्वोमिन्ताङ सैनिकों को अपने अन्दर खपा लेने तथा उन्हें अपनी बन्दूकें मोड़कर क्वोमिन्ताङ के खिलाफ लड़ने वाले मुक्ति योद्धाओं[1] के रूप में बदल देने में हमारी सहायता की है। पिछले दो वर्षों के दौरान मुक्त क्षेत्रों में हमने कोई १६,००,००० किसानों को, जिन्हें भूमि प्राप्त हो चुकी है, जन-मुक्ति सेना में शामिल होने के लिए गोलबन्द कर लिया है।

हमारे पास रेलवे, खदानें व उद्योग-धन्धे काफी तादाद में मौजूद हैं और हमारी पार्टी बड़े पैमाने पर इस बात को सीख रही है कि उद्योग-धन्धे कैसे चलाए जाएं और व्यापार कैसे किया जाए। पिछले दो वर्षों में हमारे युद्ध-उद्योग बहुत अधिक बढ़ गए हैं। लेकिन अभी भी वे इतने नहीं हैं कि युद्ध की जरूरतों को पूरा कर सकें। हमारे पास कुछ महत्वपूर्ण कच्चे माल व मशीनों का अभाव है और आम तौर से कहें तो हम अभी भी उत्पादन तैयार नहीं कर सकते।

उत्तरी चीन के क्षेत्रों में, जहां की आबादी ४ करोड़ ४० लाख है, हमने एकीकृत जन-सरकार स्थापित की है, जिसमें हमारी पार्टी गैरपार्टी जनवादी व्यक्तियों के साथ सहयोग कायम करती है। मोर्चे की सहायता करने के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए हमने तय किया है कि तीन क्षेत्रों – उत्तरी चीन, पूर्वी चीन (जिसकी आबादी ४ करोड़ ३० लाख है) तथा उत्तर-पश्चिम (जिसकी आबादी ७० लाख है) – में अर्थव्यवस्था, वित्त, व्यापार, बैंकिंग, संचार और युद्ध-उद्योग का नेतृत्व करने व उनका प्रबन्ध करने के कार्य का एकीकरण करने का भार इस सरकार को सौंप दिया जाए, और

हम इस बात के लिए तैयार हैं कि निकट भविष्य में हम दो अन्य क्षेत्रों – उत्तर-पूर्व व मध्यवर्ती मैदान के इलाकों में भी इस प्रकार के एकीकरण को अमल में लाएं।

३. पिछले दो वर्षों की लड़ाई के दौरान प्राप्त सफलताओं और दुश्मन व हमारे बीच की समूची परिस्थिति की रोशनी में, केन्द्रीय कमेटी द्वारा आयोजित मीटिंग ऐसा समझती है कि यह बिलकुल सम्भव है कि ५० लाख की जन-मुक्ति सेना बना ली जाए, लगभग पांच साल के अरसे में (जुलाई १९४६ से आरम्भ करके) दुश्मन की नियमित सेना की कुल मिलाकर कोई ५०० ब्रिगेडों (डिवीजनों) का (साल में लगभग १०० ब्रिगेडों के औसत से) सफाया कर डाला जाए, उसकी नियमित व अनियमित सेनाओं तथा विशेष सैन्य-दलों के कुल मिलाकर कोई ७५,००,००० सैनिकों का (लगभग १५,००,००० सैनिक प्रति वर्ष) सफाया कर डाला जाए और क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी शासन को जड़ से उखाड़ फेंका जाए।

क्वोमिन्ताङ की फौजी शक्ति जुलाई १९४६ में ४३,००,००० सैनिक थी। पिछले दो वर्षों में, उसके ३०,६०,००० सैनिकों का या तो सफाया कर डाला गया या वे सेना छोड़कर भाग खड़े हुए, और २४,६०,००० नए सैनिक भरती किए गए। उसकी मौजूदा शक्ति ३६,५०,००० सैनिक है। ऐसा अन्दाजा लगाया जाता है कि आगामी तीन वर्षों में क्वोमिन्ताङ फिर भी ३०,००,००० नए सैनिकों को भरती कर सकेगी और कोई ४५,००,००० सैनिकों का शायद सफाया कर डाला जाएगा या वे सेना छोड़कर भाग खड़े होंगे। इस तरह, पांच वर्षों की लड़ाई के फलस्वरूप, क्वोमिन्ताङ की बचीखुची फौजी शक्ति शायद २०,००,००० सैनिक ही रह

जाएगी। हमारी सेना में अभी २८,००,००० सैनिक हैं। आगामी तीन वर्षों में हमारी योजना है कि हम बन्दी बनाए गए १७,००,००० सैनिकों (कुल बन्दी बनाए गए सैनिकों का अन्दाजन ६० फीसदी) को अपनी फौज में शामिल कर लेंगे और २०,००,००० किसानों को अपनी सेना में भरती करने के लिए गोलबन्द कर लेंगे। सेना को जो कुछ हानि उठानी पड़ेगी उसे छोड़कर, हमारी सेना में, पांच वर्ष की लड़ाई के फलस्वरूप, शायद ५०,००,००० सैनिक तक हो जाएंगे। अगर पांच वर्ष की लड़ाई के ये नतीजे हासिल हो सकें, तो यह कहा जा सकेगा कि हमने क्वोमिन्ताङ के प्रतिक्रियावादी शासन को पूरे तौर पर उखाड़ फेंका है।

इस कार्य को पूरा करने के लिए यह निहायत जरूरी है कि हम हर साल दुश्मन की नियमित सेनाओं की लगभग १०० ब्रिगेडों (डिवीजनों) का सफाया कर डालें, पांच वर्षों में कुल मिलाकर लगभग ५०० ब्रिगेडों (डिवीजनों) का सफाया कर डालें। तमाम समस्याओं के हल की यही एक कुंजी है। अगर हम इस बात को नजर में रखें कि हमने पहले साल दुश्मन की जिन नियमित सेनाओं का सफाया कर डाला है वे ९७ ब्रिगेडों (डिवीजनों) के बराबर है और दूसरे साल दुश्मन की जिन नियमित सेनाओं का सफाया कर डाला है वे ९४ ब्रिगेडों (डिवीजनों) के बराबर है, तो हम देखेंगे कि हम अपने लक्ष्यों की न सिर्फ पूर्ति कर सकते है बल्कि उनकी अतिपूर्ति भी कर सकते है। क्वोमिन्ताङ के कुल मिलाकर ३६,५०,००० सैनिकों की मौजूदा सैन्य-शक्ति में से ७० फीसदी तो मोर्चों पर तैनात है (याङत्सी नदी तथा पाशान पर्वतमाला की लाइन के उत्तर में, लानचओ तथा होलान पर्वतमाला की लाइन के पूरब में और छङते-लाङछुन लाइन के दक्षिण में); केवल लगभग ३० फीसदी सैनिक पृष्ठभाग में है (इनमें वे सैनिक भी शामिल हैं जो याङत्सी नदी तथा पाशान पर्वतमाला की लाइन के दक्षिण में और लानचओ तथा होलान पर्वतमाला की लाइन के पश्चिम में है)। क्वोमिन्ताङ की मौजूदा तमाम नियमित सेनाओं में से, जिनमें २८५ ब्रिगेडें या १९,८०,००० सैनिक शामिल है, २४९ ब्रिगेडें या १७,४२,००० सैनिक मोर्चों पर है (९९ ब्रिगेडें या ६,९४,००० सैनिक उत्तरी मोर्चे पर, और १५० ब्रिगेडें या १०,४८,००० सैनिक दक्षिणी मोर्चे पर)। केवल ३६ ब्रिगेडें या २,३८,००० सैनिक ही पृष्ठभाग में है, और इनमें से ज्यादातर बहुत कम युद्ध-क्षमता वाली नव-निर्मित यूनिटें हैं। इसलिए केन्द्रीय कमेटी ने फैसला किया है कि तीसरे साल के दौरान समूची जन-मुक्ति सेना याङत्सी नदी के उत्तर में और उत्तरी चीन तथा उत्तर-पूर्व में युद्ध करती रहेगी। दुश्मन का सफाया करने के कार्य को पूरा करने के लिए यह निहायत जरूरी है कि एक सुनियोजित व विवेकपूर्ण तरीके से मुक्त क्षेत्रों की जनता को सेना में भरती करने के लिए गोलबन्द करने के साथ ही बन्दी सैनिकों का बड़ी तादाद में अच्छी तरह इस्तेमाल किया जाए।

४. चूंकि हमारी पार्टी और हमारी सेना लम्बे अरसे तक एक ऐसी स्थिति में रही है जिसमें हम दुश्मन द्वारा अलग-अलग हिस्सों में बंटे हुए थे, छापामार युद्ध चला रहे थे और ग्रामीण क्षेत्रों में फैले हुए थे, इसलिए हमने विभिन्न क्षेत्रों में पार्टी व सेना के नेतृत्वकारी संगठनों को बहुत अधिक स्वायत्तता दे रखी थी। इस हालत ने पार्टी-संगठनों व सशस्त्र सेनाओं को इस काबिल तो बना दिया कि वे अपनी पहलकदमी व सक्रियता को विकसित कर सकें और भीषण

कठिनाइयों के लम्बे दौरों में से सफलतापूर्वक निकल सकें, लेकिन इसके साथ ही इसने अनुशासनहीनता व अराजकता, स्थानीयतावाद व छापामारवाद के कुछ रुझानों को भी पैदा कर दिया जो क्रान्तिकारी कार्य के लिए नुकसानदेह थे। आज की स्थिति का तकाजा है कि हमारी पार्टी को अनुशासनहीनता व अराजकता, स्थानीयतावाद व छापामारवाद के इन रुझानों को दूर करने का अत्यन्त भारी प्रयत्न करना चाहिए, और केन्द्रीय कमेटी व उसकी एजेन्सियों के हाथ में उस तमाम सत्ता को, जो केन्द्रित की जा सकती है तथा केन्द्रित की जानी चाहिए, केन्द्रित करना चाहिए, ताकि छापामार युद्ध को नियमित युद्ध में बदला जा सके। पिछले दो वर्षों में सेना और उसकी सामरिक कार्रवाइयों दोनों ही का स्वरूप पहले से ज्यादा नियमित हो गया है; लेकिन इतना ही काफी नहीं है और तीसरे वर्ष आगे की ओर एक और बड़ा कदम उठाया जाना चाहिए। इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए हमें यातायात के आधुनिक साधनों, जैसे रेलों, सड़कों तथा पानी के जहाजों की मरम्मत करने तथा उन्हें इस्तेमाल करने की भरसक कोशिश करनी चाहिए, शहरों तथा उद्योगों के प्रशासन को मजबूत बनाना चाहिए और पार्टी के काम के गुरुत्व-केन्द्र को कदम-ब-कदम ग्रामीण इलाकों से हटाकर शहरों में ले जाना चाहिए।

५. देशव्यापी पैमाने पर राजनीतिक सत्ता छीनने के कार्य का तकाजा है कि हमारी पार्टी को तेजी से और योजनाबद्ध रूप से बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना चाहिए, ताकि वे फौजी, राजनीतिक, आर्थिक, पार्टी-सम्बन्धी, सांस्कृतिक व शैक्षणिक मामलों का संचालन कर सकें। युद्ध के तीसरे वर्ष, हमें निचले

स्तर पर, बीच के स्तर पर और ऊपर के स्तर पर काम करने वाले तीस से चालीस हजार कार्यकर्ता तैयार करने चाहिए ताकि चौथे वर्ष, जब सेना आगे बढ़े, तो वे उसके साथ कूच कर सकें और कोई पांच से दस करोड़ की आबादी वाले नए मुक्त क्षेत्रों में सुव्यवस्थित प्रशासन कायम कर सकें। चीन का भूभाग बहुत विशाल है, उसकी आबादी बहुत ज्यादा है और क्रान्तिकारी युद्ध बड़ी तेजी से विकसित हो रहा है; लेकिन कार्यकर्ताओं की सप्लाई बिलकुल नाकाफी है – यह एक बड़ी कठिन समस्या है। तीसरे वर्ष के दौरान कार्यकर्ता तैयार करने के सिलसिले में, जहां एक बड़े भाग की सप्लाई के लिए हमें पुराने मुक्त क्षेत्रों पर ही निर्भर रहना चाहिए, वहां क्वोमिन्ताङ के कब्जे में रहने वाले बड़े शहरों में कार्यकर्ताओं को भरती करने के कार्य पर भी हमें ध्यान देना चाहिए। क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में स्थित बड़े शहरों के अन्दर इस तरह के बहुत से मजदूर तथा बुद्धिजीवी लोग हैं जो हमारे काम में भाग ले सकते हैं और, आम तौर से कहा जाए तो उनका सांस्कृतिक स्तर पुराने मुक्त क्षेत्रों के मजदूरों और किसानों के सांस्कृतिक स्तर की अपेक्षा ऊंचा है। हमें क्वोमिन्ताङ के आर्थिक, वित्तीय, सांस्कृतिक व शैक्षणिक संस्थानों में काम करने वाले कर्मचारियों का – प्रतिक्रियावादी तत्वों को छोड़कर – बड़ी संख्या में इस्तेमाल करना चाहिए। मुक्त क्षेत्रों में स्कूली शिक्षा को फिर से बहाल किया जाना चाहिए तथा उसका विकास किया जाना चाहिए।

६. राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाने के नारे* ने क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों की तमाम जनवादी पार्टियों, जन-संगठनों तथा निर्दलीय जनवादी व्यक्तियों को हमारी पार्टी के इर्दगिर्द गोलबन्द

कर दिया है। हम इन पार्टियों व संगठनों के प्रतिनिधियों के मुक्त क्षेत्रों में आने का प्रबन्ध कर रहे है और इस बात की तैयारी कर रहे है कि १६४६ मे चीन की तमाम जनवादी पार्टियों, जन-संगठनों तथा निर्दलीय जनवादी व्यक्तियों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन आयोजित किया जाए, ताकि चीन लोक गणराज्य की अस्थाई केन्द्रीय सरकार स्थापित की जा सके।

७. मुक्त क्षेत्रों में औद्योगिक उत्पादन व कृषि-उत्पादन को पुनर्स्थापित व विकसित करना युद्ध का समर्थन करने तथा क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों को परास्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी है। केन्द्रीय कमेटी द्वारा आयोजित मीटिंग का मत है कि एक तरफ तो जन-मुक्ति सेना को चाहिए कि वह क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों के भीतर अपने विजयपूर्ण प्रहार का विस्तार करे और क्वोमिन्ताङ पक्ष व उसके क्षेत्रों से युद्ध के लिए आवश्यक मानव-शक्ति व भौतिक साधनों की विशाल सप्लाई प्राप्त करे; और दूसरी तरफ, पुराने मुक्त क्षेत्रों मे औद्योगिक उत्पादन व कृषि-उत्पादन को पुनर्स्थापित व विकसित करने के लिए भरसक प्रयत्न किए जाने चाहिए ताकि उनके स्तर को किसी हद तक उन्नत किया जा सके। इन दो कार्यों को पूरा कर लिए जाने पर ही क्वोमिन्ताङ के प्रतिक्रियावादी शासन को तहस-नहस करने की गारन्टी की जा सकेगी; अन्यथा यह सम्भव नही हो सकेगा।

इन दो कार्यों को पूरा करने के दौरान हमें बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। जब हमारी विशाल सेनाएं बिना पृष्ठ-भाग के या बिना उपयुक्त पृष्ठभाग के फौजी कार्यवाहियां करने के लिए क्वोमिन्ताङ इलाके में प्रवेश करेंगी, तो उन्हें अपनी समस्त

या ज्यादातर फौजी सप्लाई अपने आप ही, ऐन मुकाम पर ही, मुहय्या करनी पड़ेगी। औद्योगिक उत्पादन तथा कृषि-उत्पादन को पुनर्स्थापित व विकसित करने के लिए अच्छे संगठनात्मक कार्य की जरूरत होती है, मुक्त क्षेत्र के बाजारों को अच्छी तरह संचालित करने और बाहरी क्षेत्रों से व्यापार पर नियंत्रण रखने, तथा कुछ मशीनरी व कच्चे माल की कमी को दूर करने की समस्या को, और सबसे पहले, संचार व परिवहन की समस्याओं तथा रेलवे, सड़कों व जलमार्गों की मरम्मत से सम्बन्धित समस्याओं को हल करने की जरूरत होती है। इस समय मुक्त क्षेत्रों की आर्थिक व वित्तीय स्थिति में गम्भीर कठिनाइयां मौजूद हैं। हालांकि हमारी कठिनाइयां क्वोमिन्ताङ की कठिनाइयों के मुकाबले बहुत कम है, फिर भी उनके वजूद से इनकार नहीं किया जा सकता। मुख्य कठिनाइयां ये है कि हमारे पास मौजूद भौतिक साधन व मानव-शक्ति युद्ध की जरूरतों को देखते हुए नाकाफी हैं और मुद्रास्फीति काफी ज्यादा बढ़ गई है। और इन कठिनाइयों का एक कारण यह है कि हमारा संगठनात्मक कार्य, खास तौर से वित्तीय व आर्थिक क्षेत्रों में, नाकाफी है। हमारा विश्वास है कि इन कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है और इन्हें अवश्य ही दूर किया जाना होगा। कठिनाइयां दूर करने के संघर्ष मे हमें फिजूलखर्ची का विरोध करना चाहिए और किफायत बरतनी चाहिए। मोर्चे पर हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि दुश्मन से जब्त की हुई हर चीज को जमा करा दें, हमें अपनी प्रभावकारी शक्ति को संजोए रखना चाहिए, हथियारों की बहुत अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए, गोला-बारूद का किफायत के साथ इस्तेमाल करना चाहिए और बन्दी

बनाए गए क्वोमिन्ताङ सैनिकों की हिफाजत करनी चाहिए। पृष्ठ-भाग में हमें सरकारी खर्चों को कम करना चाहिए, अगर फौरी जरूरत न हो तो मानव-शक्ति तथा भारवाही पशुओं के संचय को कम कर देना चाहिए, सभाओं में खर्च किए जाने वाले वक्त को कम करना चाहिए, कृषि मौसमों पर ध्यान देना चाहिए ताकि वक्त पर कृषि-कार्य किया जा सके, औद्योगिक उत्पादन की लागत को कम करना चाहिए, श्रम-उत्पादकता को बढ़ाना चाहिए, समूची पार्टी को गोलबन्द करना चाहिए कि वह औद्योगिक उत्पादन व कृषि-उत्पादन का प्रबन्ध करने तथा व्यापार चलाने के कार्य को सीखे, मुक्त क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को अच्छी तरह संगठित करने के लिए भरसक प्रयत्न करे, बाजारों की अव्यवस्था को खत्म करे और तमाम सट्टेबाजों व चालबाजों के खिलाफ आवश्यक संघर्ष चलाए। अगर हम इन तमाम कार्यों को करने में जुट जाएं, तो अपने सामने मौजूद कठिनाइयों पर निश्चित रूप से काबू पा लेंगे।

८. कार्यकर्ताओं के सैद्धान्तिक स्तर को ऊंचा उठाना और पार्टी के अन्दर जनवाद को व्यापक बनाना, ये दोनों बातें उपरोक्त कार्यों को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण कड़ियां है। केन्द्रीय कमेटी द्वारा आयोजित मीटिंग ने पार्टी के अन्दर जनवाद को व्यापक बनाने के बारे में एक खास निर्णय [5] को स्वीकार कर लिया है। उसने कार्यकर्ताओं के सैद्धान्तिक स्तर को ऊंचा उठाने की समस्या पर भी वाद-विवाद किया है और मीटिंग में मौजूद तमाम कामरेडों का ध्यान इस समस्या की ओर आकर्षित किया है।

९. छठी राष्ट्रीय श्रमिक कांग्रेस सफलतापूर्वक आयोजित की जा चुकी है और अखिल चीन ट्रेड यूनियन फेडरेशन [6] की स्थापना

हो गई है। अगले वर्ष की पहली छमाही में, अखिल चीन जनवादी महिला संघ [7] कायम करने के लिए एक राष्ट्रीय महिला कांग्रेस आयोजित की जाएगी, अखिल चीन नौजवान संघ [8] कायम करने के लिए एक राष्ट्रीय नौजवान कांग्रेस आयोजित की जाएगी और नव-जनवादी नौजवान संघ [9] की स्थापना की जाएगी।

नोट

[1] क्वोमिन्ताङ ने १९२७ में पहली बार विश्वासघात किया था। यहां जिस नए विश्वासघात का जिक्र किया गया है वह है जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की समाप्ति के बाद क्वोमिन्ताङ द्वारा छेड़ा गया चौतरफा प्रतिक्रान्तिकारी गृहयुद्ध।

[2] दक्षिण में क्रान्ति की पराजय से मतलब है १९३४ में क्वोमिन्ताङ की "घेरा डालने और विनाश करने" की मुहिम के खिलाफ चीनी लाल सेना की पांचवीं मुहिम की पराजय और दक्षिण के क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों से लाल सेना की मुख्य सैन्य-शक्ति का हटा लिया जाना; यह पराजय पार्टी में तीसरी "वाम-पंथी" कार्यदिशा का परिणाम थी जिसका प्रतिनिधित्व वाङ मिङ ने किया था।

[3] यहां उन क्वोमिन्ताङ सैनिकों से मतलब है जिन्हें जन-मुक्ति सेना द्वारा बन्दी बनाए जाने पर प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सेना से छुटकारा मिल गया और जो शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद जन-मुक्ति सेना की पांतों में शामिल हो गए।

[4] राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाने का नारा कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा पेश किया गया था। १ मई १९४८ को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने जो "मई दिवस के नारे" जारी किए थे उनमें कामरेड माओ त्सेतुङ के सुझाव पर यह नारा भी शामिल किया गया था: "तमाम जनवादी पार्टियों,

जन-संगठनों तथा गण्यमान्य व्यक्तियों को चाहिए कि वे एक जन-प्रतिनिधि सभा बुलाने तथा जनवादी मिलीजुली सरकार कायम करने के कार्य के बारे में विचार-विमर्श करने तथा उसे कार्यान्वित करने के लिए एक राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन शीघ्र ही बुलाएं।" इस नारे को फौरन ही क्वोमिन्तांङ-शासित इलाके की जनवादी पार्टियों, जन-संगठनों तथा निर्दलीय जनवादी व्यक्तियों का हार्दिक समर्थन प्राप्त हुआ। बाद में राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का नाम बदलकर नया राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन रख दिया गया और अन्त में उसका नाम चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन रख दिया गया। देखिए इसी ग्रन्थ में "नए राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की तैयारी कमेटी में भाषण" शीर्षक रचना का नोट १।

[५] यहां "विभिन्न स्तरों पर पार्टी कांग्रेसों व सम्मेलनों के आयोजन के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का प्रस्ताव" का हवाला दिया गया है। इस प्रस्ताव में पार्टी के अन्दर नियमित जनवादी जीवन का निर्माण करने तथा उसे व्यापक रूप देने के लिए निम्नलिखित व्यवस्था की गई : पार्टी संविधान के अनुसार विभिन्न स्तरों की पार्टी-कमेटियों को चाहिए कि वे अपने-अपने स्तर पर नियमित रूप से पार्टी कांग्रेस व सम्मेलन आयोजित किया करें। इन कांग्रेसों व सम्मेलनों को पार्टी संविधान में निर्धारित तमाम अधिकारों से लैस किया जाना चाहिए और इन अधिकारों का उल्लंघन नहीं किया जाना चाहिए। मीटिंग बुलाने से पहले पर्याप्त रूप से तैयारी की जानी चाहिए। अन्त पार्टी विवादों के बारे में फौरन ही तथा पूरी सच्चाई के साथ उच्चतर स्तरों को रिपोर्ट दी जानी चाहिए और महत्वपूर्ण विवादों के बारे में केन्द्रीय कमेटी को रिपोर्ट दी जानी चाहिए। इसके अलावा प्रस्ताव में पार्टी-कमेटी व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने का कार्य भी निर्धारित किया गया और इस बात की मांग की गई कि हर स्तर की पार्टी-कमेटी को इस नियम को लागू करना चाहिए कि महत्वपूर्ण मसलों पर वह सामूहिक रूप से वाद-विवाद करे और फैसला करे तथा किसी एक व्यक्ति को यह अधिकार नहीं है कि वह किसी महत्वपूर्ण मसले पर अकेले ही फैसला कर डाले, और न तो सामूहिक नेतृत्व की उपेक्षा करके व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर जरूरत से ज्यादा जोर दिया जाए और न व्यक्तिगत जिम्मेदारी की उपेक्षा करके सामूहिक नेतृत्व पर।

[६] छठी राष्ट्रीय श्रमिक कांग्रेस १९४८ के अगस्त में हार्बिन में आयोजित की गई थी। इस कांग्रेस में चीनी मजदूर वर्ग के एकीकृत राष्ट्रीय संगठन अखिल चीन ट्रेड यूनियन फेडरेशन को फिर से बहाल कर दिया गया। इससे पहले की पांच राष्ट्रीय श्रमिक कांग्रेसें क्रमशः १९२२, १९२५, १९२६, १९२७ और १९२९ में आयोजित की गई थीं।

[७] पहली राष्ट्रीय महिला कांग्रेस मार्च १९४९ में पेकिङ में आयोजित की गई थी। इस कांग्रेस में देशभर के विशाल महिला समुदाय के संगठनों की नेतृत्वकारी संस्था अखिल चीन जनवादी महिला संघ की स्थापना की गई। बाद में इसका नाम बदलकर अखिल चीन महिला संघ कर दिया गया।

[८] राष्ट्रीय नौजवान कांग्रेस का पहला अधिवेशन मई १९४९ में पेकिङ में आयोजित किया गया था। इस अधिवेशन में अखिल चीन जनवादी नौजवान संघ की स्थापना की गई। बाद में इसका नाम बदलकर अखिल चीन नौजवान संघ कर दिया गया।

[९] चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा किए गए एक फैसले के अनुसार जनवरी १९४९ में नव-जनवादी नौजवान संघ की स्थापना की गई। अप्रैल १९४९ में पेकिङ में इसकी पहली राष्ट्रीय कांग्रेस आयोजित की गई। मई १९५७ में इसकी तीसरी राष्ट्रीय कांग्रेस में इसका नाम बदलकर कम्युनिस्ट नौजवान संघ कर दिया गया।

ह्वाए-हाए मुहिम के लिए फौजी कार्यवाही सम्बन्धी नीति*

११ अक्तूबर १९४८

ह्वाए-हाए मुहिम[1] के लिए किए जाने वाले सैन्य-विन्यास के बारे में कुछ बातें आपके गौर करने के लिए यहां पेश की जा रही हैं :

१. इस मुहिम की पहली मंजिल का मुख्य कार्य होगा अपनी सैन्य-शक्तियों को केन्द्रित करके ह्वाङ पो-थाओ की सेना का सफाया कर डालना, शत्रु के मोर्चे को बीच से तोड़ डालना और शिनआनचन, बड़ी नहर रेलवे-स्टेशन, छाओमाची, ईश्येन, चाओच्वाङ, लिनछङ, हानच्वाङ, शूयाङ, फेङश्येन, थानछङ, थाएअड़च्वाङ, लिनई इत्यादि स्थानों पर कब्जा कर लेना। ये मकसद हासिल करने के लिए आपको चाहिए कि आप शत्रु की हर डिवीजन का सफाया करने में दो-दो कालमों का इस्तेमाल करें ; इसका मतलब यह है कि शत्रु की २५वीं, ६३वीं और ६४वीं डिवीजनों को अलग-अलग टुकड़ों में काटने और उनका सफाया करने में आप छै या सात कालमों

---

*पूर्वी चीन रणांगन-सेना और मध्यवर्ती मैदान रणांगन-सेना तथा इन दोनों क्षेत्रों में स्थित चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के दोनों प्रादेशिक ब्यूरोओं के नाम भेजा गया यह तार कामरेड माओ त्सेतुङ ने पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन के लिए लिखा था। ह्वाए-हाए मुहिम चीनी जन-

को इस्तेमाल करें। शत्रु-कुमक को रोके रखने और उस पर टूट पड़ने के लिए पांच या छै कालमों से काम लें। एक या दो कालमों को इस्तेमाल करके लिनछङ और ह्वानच्वाङ में ली मी के मातहत एक ब्रिगेड को नेस्तनाबूद कर डालें और श्वीचओ को उत्तर से खतरे में डालने के लिए इन दोनों नगरों पर कब्जा करने की पूरी कोशिश करें, ताकि छ्यू छिङ-छ्वेन और ली मी के मातहत दोनों सेनाएं पूरे दल-बल के साथ पूर्व की ओर कुमक के रूप में बढ़ने का साहस न कर सकें। छ्यू छिङ-छ्वेन की सेना के एक भाग को उलझाए रखने के लिए दक्षिण-पश्चिमी शानतुङ में एक कालम और प्रादेशिक फौजी फारमेशन को इस्तेमाल करके रेलवे के श्वीचओ-शाङछ्यू सेक्शन पर एक बाजू से प्रहार करें (सुन य्वान-ल्याङ के मातहत शत्रु की तीन डिवीजनें चूंकि अब पूर्व की ओर बढ़ने वाली हैं, इसलिए आशा है कि ल्यू पो-छङ, छन ई और तङ श्याओ-फिङ चङचओ-श्वीचओ रेलवे-लाइन पर टूट पड़ने के लिए फौरन सैन्य-विन्यास करेंगे और इस प्रकार सुन य्वान-ल्याङ की सेना को उलझाए रखेंगे)। ली मी की सेना को उलझाए रखने की खातिर आप सूछ्येन-स्वेनिङ-लिङपी क्षेत्र में फौजी कार्यवाही करने के लिए एक या दो कालमों को इस्तेमाल करें। उक्त सैन्य-विन्यास का मतलब यह हुआ कि

मुक्ति युद्ध की तीन सबसे बड़ी निर्णायक मुहिमों में से एक थी। इस मुहिम को पूर्वी चीन रणांगन-सेना और मध्यवर्ती मैदान रणांगन-सेना तथा पूर्वी चीन व मध्यवर्ती मैदान की प्रादेशिक फौजों ने संयुक्त रूप से चलाया था। इस मुहिम में क्वोमिन्ताङ के ५,५५,००० से अधिक सैनिकों का सफाया कर दिया गया। इस मुहिम के सम्बन्ध में जो नीति कामरेड माओ त्सेतुङ ने इस तार द्वारा पेश की उसने हमें पूर्ण सफलता दिला दी। दरअसल यह मुहिम अनुमान से भी अधिक

हमें अपनी पूरी सैन्य-शक्ति के आधे से भी बड़े भाग को छ्यू छिङ-छ्वेन और ली मी के मातहत दोनों सेनाओं के साथ उलझाए रखने, उन्हें रोककर प्रहार करने और उनके एक भाग को खत्म कर डालने के काम पर लगाए रखना है, तब हम ह्वाङ पो-थाओ की सेना की तीन डिवीजनों को नेस्तनाबूद करने का अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकेंगे। यह सैन्य-विन्यास आम तौर पर पिछले सितम्बर के उस सैन्य-विन्यास की ही तरह होना चाहिए जिसे हमने चीनान पर कब्जा करने और शत्रु-कुमक पर हमला करने के लिए किया था;[१] वरना ह्वाङ पो-थाओ की सेना की तीनों डिवीजनों को नेस्तनाबूद करने का लक्ष्य प्राप्त करना हमारे लिए असम्भव होगा। मुहिम शुरू करने के दो-तीन हफ्तों के अन्दर-अन्दर ही आपको पहली मंजिल समाप्त करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए।

२. दूसरी मंजिल में लगभग पांच कालमों को इस्तेमाल करके हाएचओ, शिनफू, ल्येनयुनकाङ और क्वानयुन में शत्रु पर हमला करो और उसका सफाया कर दो तथा उक्त नगरों पर कब्जा कर लो। अनुमान है कि तब तक शत्रु की ५४वीं और ३२वीं डिवीजनें सम्भवतः छिङताओ से हटाकर समुद्र-मार्ग से कुमक के तौर पर हाएचओ-शिनफू-ल्येनयुनकाङ क्षेत्र में पहुंचाई जा चुकी होंगी।[१] उस क्षेत्र

सुगमता से आगे बढ़ी और इसलिए जीत भी अनुमान से अधिक तेजी से हासिल हुई और अधिक बड़ी थी। इस मुहिम के बाद, प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार की राजधानी नानकिङ को जन-मुक्ति सेना से सीधा खतरा पैदा हो गया। ह्वाए-हाए मुहिम १० जनवरी १९४९ को समाप्त हुई और २१ जनवरी को च्याङ काई-शेक ने अपने "सेवा-निवृत्त होने" की घोषणा कर दी। उसके बाद नानकिङ का प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ शासक गुट छिन्न-भिन्न होने लगा।

में पहले से मौजूद एक डिवीजन समेत शत्रु की कुल तीन डिवीजनें होंगी ; इसलिए उन पर हमला करने के लिए हमें अपनी पांच कालमें लगानी होंगी और बाकी सैन्य-शक्ति (यानी अपनी मुख्य सैन्य-शक्ति) हमें छ्यू छिङ-छ्वेन और ली मी के मातहत दोनों सेनाओं को रोके रखने में लगानी होगी और सैन्य-विन्यास का वही सिद्धान्त फिर अपनाना होगा जिसे हमने पिछले सितम्बर में चीनान पर कब्जा करने और शत्रु-कुमक पर हमला करने के लिए अपनाया था। इस दूसरी मंजिल को भी दो-तीन हफ्तों के अन्दर ही समाप्त कर लेने की आपको कोशिश करनी चाहिए।

३. अनुमान किया जा सकता है कि तीसरी मंजिल में लड़ाई ह्वाएइन और ह्वाएआन के क्षेत्र में होगी। उस समय तक शत्रु अपनी सैन्य-शक्ति में लगभग एक डिवीजन की वृद्धि कर चुका होगा (येनथाए में स्थित पुनर्गठित आठवीं डिवीजन को समुद्री जहाजों से दक्षिण में पहुंचाया जा रहा है), इसलिए हमें फिर इस बात के लिए तैयार रहना होगा कि प्रहार करने वाले सैन्य-दल के रूप में हम लगभग पांच कालमों का इस्तेमाल करें और अपनी मुख्य सैन्य-शक्ति के शेष भाग को शत्रु-कुमक पर प्रहार करने और उसे रोके रखने में लगा दें। यह मंजिल भी लगभग दो-तीन हफ्तों में समाप्त हो जाएगी।

ये तीन मंजिलें पूरी होने में लगभग डेढ़-दो महीने लग जाएंगे।

४. ह्वाए-हाए मुहिम आपको नवम्बर-दिसम्बर के दो महीनों में पूरी कर लेनी होगी। अगली जनवरी में आप अपनी सैन्य-शक्तियों को विश्राम कराएं और उन्हें सुदृढ़ बनाएं। मार्च से जुलाई तक आप ल्यू पो-छङ और तङ श्याओ-फिङ के साथ तालमेल कायम करके

दुश्मन को याङत्सी नदी के किनारे उन ठिकानों की ओर खदेड़ देने के लिए लड़ रहे होंगे जहां वह मोर्चेबन्दियां बनाकर पनाह लेगा। शरद के मौसम तक आपकी मुख्य सैन्य-शक्ति शायद याङत्सी नदी पार करने के लिए लड़ रही होगी।

नोट

[1] ह्वाए-हाए मुहिम एक निर्णायक मुहिम थी, जिसे जन-मुक्ति सेना ने उस विशाल प्रदेश में चलाया जिसका केन्द्र श्वीचओ था और जिसका विस्तार पूर्व में हाएचओ से पश्चिम में शाङछ्यू तक, और उत्तर में लिनछङ (जिसका नाम अब श्वेछङ है) से दक्षिण में ह्वाए नदी तक था। इस क्षेत्र में एकत्रित क्वोमिन्ताङ की सैन्य-शक्तियों में पांच सेनाएं और तीन शान्ति-स्थापना क्षेत्रों की फौजी यूनिटें शामिल थीं – क्वोमिन्ताङ के श्वीचओ स्थित "डाकू-दमन" हेडक्वार्टर के कमाण्डर ल्यू ची और डिप्टी-कमाण्डर तू य्वी-मिङ की कमान में चार सेनाएं और तीन शान्ति-स्थापना क्षेत्रों की फौजी यूनिटें तथा ह्वाङ वेइ की सेना, जिसे बाद में मध्य चीन से वहां कुमक के तौर पर भेजा गया था। इस मुहिम में जन-मुक्ति सेना की ६,००,००० से अधिक सैन्य-शक्ति ने भाग लिया ; उसमें पूर्वी चीन रणांगन-सेना की १६ कालमें, मध्यवर्ती मैदान रणांगन-सेना की ७ कालमें, तथा पूर्वी चीन फौजी क्षेत्र व मध्यवर्ती मैदान फौजी क्षेत्र की और उत्तरी चीन फौजी क्षेत्र के अधीन ह्पे-शानतुङ-हनान फौजी क्षेत्र की प्रादेशिक फौजी यूनिटें शामिल थीं। यह मुहिम ६ नवम्बर १९४८ से १० जनवरी १९४९ तक कुल ६५ दिन चली ; क्वोमिन्ताङ की चुनिन्दा सैन्य-शक्ति की २२ फौजी कोरों यानी ५६ डिवीजनों का, जिनमें कुल ५,५५,००० सैनिक थे, पूरी तरह सफाया कर डाला गया (इनमें विद्रोह करके हमारी तरफ आने वाली ४.५ डिवीजनें भी शामिल थीं)। इसके अलावा ल्यू रू-मिङ और ली येन-न्येन के मातहत दो सेनाओं को, जो नानकिङ से कुमक के तौर पर आई थीं, पीछे धकेल दिया गया। इस

मुहिम के फलस्वरूप, पूर्वी चीन और मध्यवर्ती मैदान के जो भाग याङत्सी नदी के उत्तर में है वे लगभग सारे के सारे मुक्त करा लिए गए। यह मुहिम तीन मंजिलों में पूरी हुई। ६ से २२ नवम्बर तक की पहली मंजिल के दौरान पूर्वी चीन रणांगन-सेना ने मध्यवर्ती मैदान रणांगन-सेना के तालमेल से श्वीचओ के पूर्व में शिनआनचन-न्येनच्वाङ क्षेत्र में ह्वाङ पो-थाओ की सेना को घेर लिया और उसका सफाया कर डाला, ह्वाङ पो-थाओ का काम तमाम कर डाला तथा न्येनच्वाङ के पूर्व में लुङहाए रेलवे के दोनों ओर के इलाकों, त्येनचिन-पूखओ रेलवे के श्वीचओ-पङपू सेक्शन के दोनों ओर के इलाकों और श्वीचओ के पश्चिम व उत्तर के इलाकों समेत विशाल प्रदेश को मुक्त करा लिया। थाएअर्हच्वाङ-चाओच्वाङ क्षेत्र में क्वोमिन्ताङ के तीसरे शान्ति-स्थापना क्षेत्र की ३.५ डिवीजनें, जिनमें सैनिकों की कुल तादाद २३,००० से ऊपर थी, विद्रोह करके हमारी ओर आ मिलीं। २३ नवम्बर से १५ दिसम्बर तक की दूसरी मंजिल में मध्यवर्ती मैदान रणांगन-सेना ने पूर्वी चीन रणांगन-सेना की मुख्य सैन्य-शक्ति के तालमेल से सुश्येन के दक्षिण-पश्चिम में श्वाङत्वेइची इलाके में ह्वाङ वेइ के मातहत सेना को घेर लिया और उसका सफाया कर डाला तथा उस सेना के कमाण्डर ह्वाङ वेइ और डिप्टी-कमाण्डर ऊ शाओ-चओ को बन्दी बना लिया। उस सेना की एक डिवीजन विद्रोह करके हमारी तरफ आ मिली। साथ ही हमारी सैन्य-शक्तियों ने सुन य्वान-ल्याङ के मातहत सेना का भी, जो श्वीचओ से पश्चिम की तरफ भाग रही थी, सफाया कर डाला। अकेला सुन य्वान-ल्याङ ही अपनी जान बचाकर निकल भागने में सफल हो सका। ६ से १० जनवरी १९४९ तक की तीसरी मंजिल के दौरान पूर्वी चीन रणांगन-सेना ने मध्यवर्ती मैदान रणांगन-सेना के तालमेल से युङछङ के उत्तर-पूर्व में छिङलुङची-छनक्वानच्वाङ क्षेत्र में क्वोमिन्ताङ की उन दो सेनाओं को घेरकर नेस्तनाबूद कर डाला, जो श्वीचओ से पश्चिम की ओर भाग रही थीं और जिनमें से एक च्यू छिङ-छ्वेन की कमान में और दूसरी ली मी की कमान में थी, तथा ये दोनों सेनाएं सीधे तू य्वी-मिङ की सर्वोपरि कमान में थीं। तू य्वी-मिङ को बन्दी बना लिया गया, च्यू छिङ-छ्वेन को मौत के घाट उतार दिया गया और केवल ली मी ही मुश्किल से अपनी जान बचाकर भाग निकला। इस तरह यह बड़ी ह्वाए-हाए मुहिम सफलतापूर्वक समाप्त हुई।

[९] "चीनान पर कब्जा करने और शत्रु-कुमक पर हमला करने" में उस युद्ध-कला का हवाला दिया गया है जिसे १९४८ के सितम्बर के मध्य में चीनान मुहिम के दौरान जन-मुक्ति सेना ने अपनाया था। चीनान शानतुङ प्रान्त में क्वोमिन्ताङ का एक रणनीतिक महत्व का ठिकाना था जिसकी रक्षा के लिए क्वोमिन्ताङ के दूसरे शान्ति-स्थापना क्षेत्र के १,१०,००० से अधिक सैनिक तैनात किए गए थे। उनके अलावा क्वोमिन्ताङ की मुख्य सैन्य-शक्ति के लगभग १,३०,००० सैनिकों वाली २३ ब्रिगेडें भी, जिनका श्वीचओ इलाके में विन्यास किया गया था, चीनान की मदद के लिए उत्तर की ओर बढ़ने को तैयार बैठी थीं। हमारी पूर्वी चीन रणांगन-सेना ने अपनी ७ कालमों का एक सैन्य-दल चीनान नगर पर धावा बोलने के लिए तथा ८ कालमों का एक दूसरा सैन्य-दल शत्रु-कुमक पर प्रहार करने के लिए संगठित किया। चीनान पर चढ़ाई १६ सितम्बर १९४८ की शाम को शुरू हुई। आठ दिन और आठ रात के निरन्तर हमले के बाद २४ सितम्बर को शत्रु की गैरिजन फौज का पूरी तरह सफाया कर दिया गया (उसमें से एक फौजी कोर विद्रोह करके हमारी ओर आ मिली) तथा क्वोमिन्ताङ के दूसरे शान्ति-स्थापना क्षेत्र का कमाण्डर वाङ याओ-ऊ बन्दी बना लिया गया। हमारी सैन्य-शक्तियों ने चीनान पर इतनी जल्दी कब्जा कर लिया कि श्वीचओ की शत्रु-सेना को चीनान की मदद करने के लिए उत्तर की ओर बढ़ने का साहस ही नहीं हुआ।

[१] दरअसल शत्रु की इन दोनों डिवीजनों को वहां आने का साहस ही नहीं हुआ।

दुनिया की क्रान्तिकारी शक्तियो एक हो जाओ, साम्राज्यवादी आक्रमण के खिलाफ संघर्ष करो ! *

नवम्बर १९४८

इस वक्त जबकि दुनिया के जागृत मजदूर वर्ग तथा तमाम सच्चे क्रान्तिकारी लोग हर्षोल्लास के साथ सोवियत संघ की महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की ३१वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, मुझे स्तालिन का एक मशहूर लेख याद आ रहा है जिसे उन्होंने अक्तूबर क्रान्ति की पहली वर्षगांठ के अवसर पर १९१८ में लिखा था। इस लेख में स्तालिन ने कहा था :

> अक्तूबर क्रान्ति का महान विश्वव्यापी महत्व मुख्यतया इस बात में निहित है कि :
>
> (१) इसने राष्ट्रीय सवाल के दायरे को व्यापकतर बना

---

*अक्तूबर क्रान्ति की ३१वीं जयन्ती के उपलक्ष में कामरेड माओ त्सेतुङ ने यह लेख योरप की कम्युनिस्ट पार्टियों और मजदूर पार्टियों के सूचना ब्यूरो के "स्थाई शान्ति के लिए, जनता के जनवाद के लिए" नामक मुखपत्र के लिए लिखा था। यह १९४८ में पत्रिका के २१वें अंक में प्रकाशित हुआ था।

दिया है और उसे योरप में राष्ट्रीय उत्पीड़न का मुकाबला करने के खास प्रश्न से उत्पीड़ित जनगण, उपनिवेशों और अर्ध-उपनिवेशों को साम्राज्यवाद से मुक्त कराने के आम प्रश्न में परिवर्तित कर दिया है ;

(२) इसने उनकी मुक्ति के लिए व्यापक सम्भावनाएं पैदा कर दी है और उसकी ओर बढ़ने के लिए सही रास्ते खोल दिए है, और इस तरह पश्चिम तथा पूर्व के उत्पीड़ित जनगण के मुक्ति-कार्य को अत्यधिक आगे बढ़ाया है और उन्हें साम्राज्यवाद के खिलाफ विजयी संघर्ष की विशाल धारा में सम्मिलित कर दिया है ;

(३) परिणामस्वरूप, इसने विश्व साम्राज्यवाद के विरुद्ध क्रान्तियों के एक नए मोर्चे की रचना करके, जो पश्चिम के सर्वहारा से लेकर, रूसी क्रान्ति से होते हुए, पूर्व के उत्पीड़ित जनगण तक फैला हुआ है, समाजवादी पश्चिम तथा गुलामी में जकड़े हुए पूर्व के बीच एक पुल का निर्माण किया है।[१]

इतिहास स्तालिन द्वारा बनाई गई दिशा में ही आगे बढ़ा है। अक्तूबर क्रान्ति ने तमाम दुनिया की जनता के मुक्ति-कार्य के लिए व्यापक सम्भावनाएं पैदा कर दी हैं और उसकी ओर बढ़ने के लिए सही रास्ते खोल दिए है ; अक्तूबर क्रान्ति ने विश्व साम्राज्यवाद के विरुद्ध क्रान्तियों के एक नए मोर्चे की रचना की है, जो पश्चिम के सर्वहारा से लेकर, रूसी क्रान्ति से होते हुए, पूर्व के उत्पीड़ित जनगण तक फैला हुआ है। क्रान्तियों का यह मोर्चा लेनिन के, और

लेनिन की मृत्यु के बाद स्तालिन के विवेकपूर्ण निर्देशन में कायम और विकसित किया गया है।

यदि क्रान्ति करनी हो, तो उसके लिए एक क्रान्तिकारी पार्टी का होना अनिवार्य है। एक क्रान्तिकारी पार्टी के बिना, एक ऐसी पार्टी के बिना जिसका निर्माण मार्क्सवादी-लेनिनवादी क्रान्तिकारी सिद्धान्त के आधार पर और मार्क्सवादी-लेनिनवादी क्रान्तिकारी शैली में हुआ हो, साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्तों को पराजित करने के लिए मजदूर वर्ग और व्यापक जनता का नेतृत्व करना असम्भव है। मार्क्सवाद के जन्म के बाद के सौ से ज्यादा वर्षों के दौरान, अक्तूबर क्रान्ति का नेतृत्व करने, समाजवादी निर्माण का नेतृत्व करने तथा फासिस्ट आक्रमण को पराजित करने की रूसी बोलशेविकों की मिसाल पर ही दुनिया में नई किस्म की क्रान्तिकारी पार्टियां कायम और विकसित की गई। इस किस्म की क्रान्तिकारी पार्टियों के जन्म लेने से विश्व-क्रान्ति का रूप बदल गया है। यह तब्दीली इतनी बड़ी है कि जोरशोर से ऐसे-ऐसे परिवर्तन हुए हैं जिनकी पुरानी पीढ़ी के लोगों ने कतई कल्पना तक नहीं की थी। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी एक ऐसी पार्टी है जिसे सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की मिसाल को सामने रखकर बनाया गया है और विकसित किया गया है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के जन्म के बाद से चीनी क्रान्ति ने एक बिलकुल नई शकल अख्तियार कर ली है। क्या यह तथ्य बिलकुल स्पष्ट नहीं है?

दुनिया के क्रान्तिकारी संयुक्त मोर्चे ने, जिसका अगुवा सोवियत संघ था, फासिस्ट जर्मनी, इटली तथा जापान को शिकस्त दे दी। यह अक्तूबर क्रान्ति का ही नतीजा था। अगर अक्तूबर क्रान्ति न

होती, अगर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी न होती, अगर सोवियत संघ न होता और अगर पश्चिम में तथा पूरब में सोवियत संघ की अगुवाई में साम्राज्यवाद-विरोधी क्रान्तिकारी संयुक्त मोर्चा न होता, तो क्या कोई फासिस्ट जर्मनी, इटली, जापान और उनके पालतू कुत्तों पर विजय प्राप्त करने की कल्पना कर सकता था ? जहां अक्तूबर क्रान्ति ने दुनिया के मजदूर वर्ग तथा उत्पीड़ित राष्ट्रों के मुक्ति-कार्य के लिए व्यापक सम्भावनाएं पैदा कर दी हैं और उसकी ओर बढ़ने के लिए सही रास्ते खोल दिए हैं, वहां फासिस्ट-विरोधी दूसरे विश्वयुद्ध की विजय ने दुनिया के मजदूर वर्ग तथा उत्पीड़ित राष्ट्रों के मुक्ति-कार्य के लिए और भी अधिक व्यापक सम्भावनाएं पैदा कर दी हैं और उसकी ओर बढ़ने के लिए और भी अधिक सही रास्ते खोल दिए हैं। दूसरे विश्वयुद्ध की विजय के महत्व को कम करके आंकना बहुत बड़ी भूल होगी।

दूसरे विश्वयुद्ध की विजय के बाद से अमरीकी साम्राज्यवाद व विभिन्न देशों के उसके पालतू कुत्तों ने फासिस्ट जर्मनी, इटली तथा जापान की जगह ले ली है. वे पागलपन के साथ एक नए विश्व-युद्ध की तैयारी कर रहे हैं और सारी दुनिया के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं ; इसमें पूंजीवादी दुनिया का घोर पतन तथा उसके मरणासन्न होने का भय प्रतिबिम्बित होता है। यह दुश्मन अब भी शक्तिशाली है ; इसलिए हर देश के अन्दर तमाम क्रान्तिकारी शक्तियों को एक हो जाना चाहिए, तथा तमाम देशों की क्रान्तिकारी शक्तियों को भी एक हो जाना चाहिए, सोवियत संघ की अगुवाई में एक साम्राज्यवाद-विरोधी संयुक्त मोर्चा बना लेना चाहिए तथा सही नीतियों को अपनाना चाहिए ; नहीं तो जीत हासिल करना मुमकिन नहीं हो सकेगा। इस दुश्मन की एक कमजोर और लड़खड़ाती हुई बुनियाद है. वह अन्दर से छिन्न-भिन्न हो रहा है, वह जनता से अलग-थलग जा पड़ा है, उसे अलंघनीय आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ रहा है ; इसलिए उसे परास्त किया जा सकता है। दुश्मन की ताकत को बढ़ा-चढ़ा कर आंकना तथा क्रान्तिकारी शक्तियों की ताकत को कम करके आंकना एक बहुत बड़ी भूल होगी।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व के अन्तर्गत चीनी जनता की महान जनवादी क्रान्ति ने, जो चीन में अमरीकी साम्राज्यवाद के पागलपनभरे आक्रमण के खिलाफ तथा वतनफरोश, तानाशाहाना और गृहयुद्ध के जरिए चीनी जनता का कत्लेआम करने वाली प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार के खिलाफ चलाई गई है. अब जबरदस्त जीतें हासिल कर ली हैं। जुलाई १९४६ से लेकर जून १९४८ तक के दो वर्षों के दौरान चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में जन-मुक्ति सेना ने प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार के ४३,००,००० सैनिकों द्वारा किए गए हमलों को परास्त कर दिया और वह रक्षात्मक युद्ध से बदलकर आक्रमणात्मक युद्ध करने लगी। इन दो वर्षों की लड़ाई के दौरान (इसमें जुलाई १९४८ और उसके बाद का घटना-विकास शामिल नहीं है) जन-मुक्ति सेना ने क्वोमिन्ताङ फौज के २६,४०,००० सैनिकों को बन्दी बना लिया या नेस्तनाबूद कर दिया। चीन का मुक्त क्षेत्र अब २३,५०,००० वर्ग-किलोमीटर हो गया है, अर्थात देश के कुल ९५,९७,००० वर्ग-किलोमीटर क्षेत्रफल का २४.५ फीसदी ; यहां की आबादी १६,८०,००,००० है, अर्थात देश की कुल ४७,५०,००,००० आबादी का ३५.३ फीसदी ; और इस क्षेत्र में ५८६ शहर हैं, अर्थात देश

के कुल २,००६ शहरों के २६ फीसदी। चूंकि हमारी पार्टी ने भूमि-व्यवस्था का सुधार करने में किसानों का दृढ़ता के साथ नेतृत्व किया है, इसलिए लगभग १०,००,००,००० आबादी वाले क्षेत्र में भूमि की समस्या मुकम्मिल तौर पर हल कर ली गई है, और जमींदारों तथा पुराने किस्म के धनी किसानों की जमीन किसानों में, मुख्यतया गरीब किसानों तथा खेत-मजदूरों में, मोटे तौर पर बराबर-बराबर बांट दी गई है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य-संख्या, जो १९४५ में १२,१०,००० थी, आज बढ़कर ३०,००,००० हो गई है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का कार्य है समूचे देश की क्रान्तिकारी शक्तियों को एकताबद्ध करके अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रमणकारी शक्तियों को बाहर खदेड़ना, क्वोमिन्ताङ के प्रतिक्रियावादी शासन को उखाड़ फेंकना और एक एकीकृत, जनवादी लोक गणराज्य की स्थापना करना। हम यह जानते हैं कि हमारे सामने अनेकानेक कठिनाइयां मौजूद हैं। लेकिन हम उनसे नहीं डरते। हमें विश्वास है कि कठिनाइयां दूर की जानी चाहिए और वे दूर की जा सकती हैं।

अक्तूबर क्रान्ति का ज्वलंत प्रकाश हमें प्रकाशमान कर रहा है। विपदग्रस्त चीनी जनता को अपनी मुक्ति हासिल करनी चाहिए, और उसे पक्का विश्वास है कि वह ऐसा कर सकती है। चीन का क्रान्तिकारी संघर्ष, जो अतीत काल में हमेशा अलगाव में पड़ा रहा, अब अक्तूबर क्रान्ति की विजय के बाद अलगाव नहीं महसूस करता। हमें दुनियाभर की कम्युनिस्ट पार्टियों तथा मजदूर वर्ग का समर्थन प्राप्त है। चीनी क्रान्ति के अग्रगामी डा० सुन यात-सेन ने यह बात अच्छी तरह समझ ली थी और उन्होंने साम्राज्यवाद के खिलाफ

सोवियत संघ के साथ संश्रय कायम करने की नीति प्रतिपादित की थी। मृत्यु-शय्या पर पड़े हुए उन्होंने सोवियत संघ को एक पत्र लिखा था, जो उनकी वसीयत का एक हिस्सा है। यह क्वोमिन्ताङ का च्याङ काई-शेक डाकू गुट ही है जो सुन यात-सेन की नीति के प्रति गद्दारी कर रहा है, साम्राज्यवादी प्रतिक्रान्तिकारी मोर्चे के पक्ष में खड़ा है और अपने ही देश की जनता का विरोध कर रहा है। लेकिन लोग जल्दी ही देख लेंगे कि चीनी जनता क्वोमिन्ताङ के समूचे प्रतिक्रियावादी शासन को पूरे तौर पर नष्ट कर डालेगी। चीनी जनता एक बहादुर जनता है, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी भी एक बहादुर पार्टी है, और ये दोनों समूचे चीन को मुक्त कराने के लिए संकल्पबद्ध हैं।

नोट

[1] जे० वी० स्तालिन, "अक्तूबर क्रान्ति का विश्वव्यापी महत्व", "अक्तूबर क्रान्ति और राष्ट्रीय सवाल" शीर्षक रचना का तीसरा परिच्छेद।

चीन की फौजी परिस्थिति में भारी परिवर्तन*

१४ नवम्बर १९४८

चीन की फौजी परिस्थिति एक नए मोड़ पर पहुंच गई है यानी युद्ध में दोनों पक्षों के बीच के शक्ति-सन्तुलन में एक बुनियादी परिवर्तन हो गया है। गुण की दृष्टि से तो जन-मुक्ति सेना बहुत समय पहले से ही बढ़ी-चढ़ी रही है, अब वह संख्या की दृष्टि से भी बरतर हो गई है। यह इस बात का सूचक है कि चीनी क्रान्ति की विजय प्राप्त करने और चीन में शान्ति स्थापित करने की वेला अब आने ही वाली है।

युद्ध के दूसरे वर्ष के अन्त में यानी इस वर्ष जून के अन्त में, क्वोमिन्ताङ के सैनिकों की कुल संख्या कोई ३६,५०,००० रह गई। जिस समय क्वोमिन्ताङ ने देशव्यापी गृहयुद्ध छेड़ा था, उस समय यानी जुलाई १९४६ में, उसके सैनिकों की कुल संख्या ४३,००,००० थी। इस तरह उसके कुल ६,५०,००० सैनिक कम हो गए। दो वर्ष के युद्ध की इस अवधि के दौरान क्वोमिन्ताङ ने २४,४०,००० नए रंगरूट भी भरती किए और इसलिए लगभग ३०,९०,००० सैनिकों

*यह टिप्पणी कामरेड माओ त्सेतुङ ने शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के लिए लिखी थी। इसमें एक नई परिस्थिति यानी ल्याओशी-शनयाङ मुहिम के बाद

का सफाया कर दिए जाने या उन्हें बन्दी बना लिए जाने अथवा उनके भाग खड़े होने (इनमें २६,४०,००० सैनिकों का सफाया कर दिया गया था या उन्हें बन्दी बना लिया गया था) के बावजूद क्वोमिन्ताङ सेना में सिर्फ ६,५०,००० सैनिकों की ही कमी हुई। हाल में एक आकस्मिक परिवर्तन हुआ। युद्ध के तीसरे वर्ष के पहले चार महीनों में, यानी इस साल १ जुलाई से लेकर २ नवम्बर को शनयाङ की मुक्ति के दिन तक, क्वोमिन्ताङ सेना को अपने १०,००,००० सैनिक गंवाने पड़े। इस अवधि में क्वोमिन्ताङ के सैनिकों की कितनी क्षतिपूर्ति की गई है इसका पता अभी तक नहीं चल सका; अगर यह मान लें कि ३,००,००० नए रंगरूटों को भरती किया जा सका होगा, तो असली कमी ७,००,००० की बैठती है। इस तरह स्थलसेना, नौसेना, वायुसेना, नियमित सेना व अनियमित सेना, लड़ाकू यूनिटों और पृष्ठभाग के सेवा-संस्थानों के कर्मचारियों आदि सबको मिलाकर भी क्वोमिन्ताङ की समूची सशस्त्र सैन्य-शक्ति अब सिर्फ लगभग २९,००,००० है। दूसरी ओर जन-मुक्ति सेना की संख्या, जो जून १९४६ में कुल १२,००,००० थी, जून १९४८ तक बढ़कर २८,००,००० हो गई, और अब वह बढ़कर ३०,००,००० से भी अधिक हो गई है। इस तरह संख्या की दृष्टि से क्वोमिन्ताङ सेना की बरतरी, जो एक जमाने से चली आ रही थी, तेजी से कमतरी में बदलती गई है। यह पिछले चार महीनों के दौरान देश

शत्रु और हमारे बीच के शक्ति-सन्तुलन में हुए परिवर्तन के आधार पर कामरेड माओ त्सेतुङ ने जन-मुक्ति युद्ध की विजय के लिए आवश्यक समय का एक नया अनुमान प्रस्तुत किया है और बताया है कि क्वोमिन्ताङ के प्रतिक्रियावादी शासन

की सभी रणभूमियों में जन-मुक्ति सेना द्वारा की गई वीरतापूर्ण लड़ाइयों का ही नतीजा है और खास तौर से दक्षिणी मोर्चे पर स्वे-छौ मुहिम[1] व चीनान मुहिम[2] और उत्तरी मोर्चे पर चिनचओ, छाङछुन, ल्याओशी और शनयाङ मुहिमों[3] का फल है। इस साल जून के अन्त तक भी क्वोमिन्ताङ ने अपनी २८५ डिवीजनों के नाम बरकरार रखे हुए थे, क्योंकि उसने बड़े पागलपन के साथ अपनी अनियमित सेनाओं को नियमित सेनाओं में शामिल कर लिया था। इन चार महीनों में उसकी जिन बटालियनों और बटालियन से बड़ी यूनिटों का सफाया जन-मुक्ति सेना ने कर डाला है, वे सब मिलाकर ८३ डिवीजनों के बराबर होती हैं, इनमें ६३ पूरी डिवीजनें थीं।

इस प्रकार युद्ध हमारे मूल अनुमान की अपेक्षा कहीं कम अवधि तक जारी रहेगा। हमारा मूल अनुमान तो यह था कि प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार को पूरी तरह उखाड़ फेंकने में जुलाई १९४६ से आरम्भ करके कोई पांच साल लगेंगे। पर अब हम देखते हैं कि उसे पूरी तरह उखाड़ फेंकने में अब से सिर्फ कोई एक साल लगेगा। हां, यह अवश्य है कि देश के सभी भागों से समस्त प्रतिक्रियावादी शक्तियों को नेस्तनाबूद कर डालने और जनता को पूर्ण मुक्ति प्राप्त करने में अपेक्षाकृत अधिक समय लगेगा।

शत्रु तेजी से ढहता जा रहा है, लेकिन कम्युनिस्टों, जन-मुक्ति सेना और समूचे देश के विविध व्यवसायों की जनता को एकदिल

को उखाड़ फेंकने में नवम्बर १९४८ से आरम्भ करके सिर्फ कोई एक साल लगेगा। चीन की फौजी परिस्थिति में इसके बाद जो घटना-विकास हुआ, उसने कामरेड माओ त्सेतुङ की इस भविष्यवाणी को पूरी तरह सही साबित कर दिया।

होकर अपने प्रयत्नों को बढ़ाते रहना चाहिए; सिर्फ इसी तरह हम प्रतिक्रियावादी ताकतों का अन्तिम रूप से और पूर्ण रूप से सफाया कर सकते हैं और समूचे देश में एकीकृत जनवादी लोक गणराज्य की स्थापना कर सकते हैं।

नोट

1 स्वे-छी मुहिम को, जो पूर्वी हनान मुहिम के नाम से भी मशहूर है, जन-मुक्ति सेना ने उस क्षेत्र में चलाया था जिसमें काएफ़ङ, स्वेइश्येन और छीश्येन नामक स्थान आते हैं। यह मुहिम १७ जून १९४८ को शुरू हुई। २२ जून को हमारी सेना ने काएफ़ङ पर अधिकार कर लिया। प्रतिकूल फौजी परिस्थिति से बचने के लिए च्याङ काई-शेक खुद मोर्चे पर जा पहुंचा, तथा उसने फौजी कमान व्यक्तिगत रूप से सम्भाल ली और छ्यू छिङ-छ्वेन, ओ शओ-न्येन और ह्वाङ पो-थाओ की कमान में तीन सेनाओं को काएफ़ङ पर कई तरफ़ से एक साथ धावा बोल देने के लिए बटोर लिया। हमारी पूर्वी चीन रणांगन-सेना की छै कालमों, मध्यवर्ती मैदान रणांगन-सेना की दो कालमों और क्वाङतुङ-क्वाङशी कालम ने (२७ जून से ६ जुलाई तक) स्वेइश्येन-छीश्येन क्षेत्र में ओ शओ-न्येन और ह्वाङ पो-थाओ की कमान में चलने वाली सेनाओं को घेर रखा और नौ दिन व नौ रात की घमासान लड़ाई के बाद ओ शओ-न्येन की सेना की २ डिवीजनों, यानी ६ ब्रिगेडों, और ह्वाङ पो-थाओ की सेना के एक भाग के कुल ९०,००० से अधिक सैनिकों का सफाया कर डाला। सेना के कमाण्डर ओ शओ-न्येन और पुनर्गठित ७५वीं डिवीजन के कमाण्डर शन छङ-न्येन को पकड़ लिया गया।

2 चीनान मुहिम के बारे में देखिए इसी ग्रन्थ में "ह्वाए-हाए मुहिम के लिए फौजी कार्यवाही सम्बन्धी नीति" शीर्षक रचना का नोट २।

3 उत्तर-पूर्वी चीन की चिनचओ, छाङछुन, ल्याओशी और शनयाङ मुहिमों

का मिलाजुला नाम ल्याओशी-शनयाङ मुहिम था। देखिए इसी ग्रन्थ में "ल्याओशी-शनयाङ मुहिम के लिए फौजी कार्यवाही सम्बन्धी नीति" शीर्षक रचना का नोट १।

पेफिङ-थ्येनचिन मुहिम के लिए फौजी कार्यवाही सम्बन्धी नीति*

११ दिसम्बर १९४८

१. चाङच्याखो, शिनपाओआन और ह्वाएलाइ की तथा पेफिङ, थ्येनचिन, थाङकू और थाङशान के समूचे क्षेत्र की शत्रु-सेनाओं में – ३५वीं, ६२वीं और ९४वीं फौजी कोरों की कुछेक डिवीजनों जैसी उन चन्द यूनिटों को छोड़कर जिनमें मोर्चेबद्ध ठिकानों के बचाव के लिए खासे ऊंचे दर्जे की युद्ध-क्षमता अब भी मौजूद है – आक्रमण करने का हौसला कतई नहीं रह गया है ; वे उन परिन्दों की तरह हैं जो धनुष की टंकारमात्र से कांप उठते हैं। यह बात तब से खास तौर पर देखने में आई है जब से आप लोग लम्बी दीवार के दक्षिण में बढ़े हैं। आपको शत्रु की युद्ध-क्षमता बढ़ा-चढ़ा कर हरगिज नहीं आंकनी चाहिए। हमारे कुछ साथियों ने शत्रु की युद्ध-क्षमता को बढ़ा-चढ़ा कर आंकने की बदौलत नुकसान उठाया, लेकिन आलोचना किए जाने पर उन्होंने सही समझ हासिल कर ली। चाङच्याखो और शिनपाओआन दोनों ही जगह शत्रु निश्चित रूप से घिर चुका

---

*यह तार कामरेड माओ त्सेतुङ ने लिन प्याओ, लो रुङ-ह्वान और अन्य कामरेडों के नाम चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन के लिए तैयार किया था। पेफिङ-थ्येनचिन मुहिम चीनी जन-मुक्ति

है और घेरे को चीरकर निकल भागना उसके लिए आम तौर पर बेहद मुश्किल हो गया है। १६वीं फौजी कोर के लगभग आधे भाग का सफाया फुर्ती से कर डाला गया है। शत्रु की ह्वाएलाइ स्थित १०४वीं फौजी कोर बड़ी हड़बड़ी में दक्षिण की तरफ भाग निकली है और अनुमान है कि आज या कल तक उसका सफाया हो जाएगा। यह काम हो जाने पर आप लोग नानखओ और पेफिङ को एक दूसरे से विच्छिन्न कर डालने के लिए चौथी कालम को दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व में भेजने के लिए तैयार रहेंगे। हमारा खयाल है कि ऐसा करना शायद आसान न हो, क्योंकि या तो ६४वीं फौजी कोर और १६वीं फौजी कोर के बचेखुचे अंश तेजी के साथ पेफिङ लौट जाएंगे, या ६४वीं, १६वीं और ६२वीं फौजी कोर संयुक्त रक्षा के लिए नानखओ-छाङफिङ-साहोचन क्षेत्र में केन्द्रित हो जाएंगी। लेकिन हमारी चौथी कालम का यह पैंतरा पेफिङ के उत्तर-पश्चिमी और उत्तरी उपनगरों के लिए सीधा खतरा उपस्थित कर देगा और उन शत्रु-सेनाओं को रोके रखेगा, ताकि वे अपनी जगह से हिलने की हिम्मत न कर सकें। अगर उन्होंने ३५वीं फौजी कोर को कुमक देने के लिए पश्चिम की ओर बढ़ने का साहस किया, तो हम या तो सीधे उनके पीछे हटने की राह बन्द कर सकते हैं या पेफिङ पर सीधी चढ़ाई कर सकते हैं ; इसलिए सम्भावना यही है कि वे अब पश्चिम की ओर बढ़ने का साहस नहीं कर सकेंगे। याङ त-च. लो रुइ-छिङ और कङ प्याओ की कमान में उत्तरी चीन स्थित फौजी फारमेशन ने शत्रु की ३५वीं फौजी कोर की तीन डिवीजनों को घेरने के लिए अपनी नौ डिवीजनों को तैनात किया है ; वे निरपेक्ष बरतरी की स्थिति में हैं। उनका सुझाव है कि शत्रु की इन डिवीजनों का सफाया जल्दी ही कर दिया जाए, लेकिन हमारा इरादा यह है कि उन्हें फिलहाल हमला न करने को कहा जाए, ताकि पेफिङ और थ्येनचिन में पड़ा हुआ शत्रु झांसे में आ जाए और उसके लिए समुद्री रास्ते से भाग निकलने का फैसला करना कठिन हो जाए। इस बार उन्होंने ३५वीं फौजी कोर को घेरने के लिए दो कालमों और १०४वीं फौजी कोर को रोकने के लिए एक कालम का इस्तेमाल किया है तथा शत्रु की इन दोनों सैन्य-शक्तियों को मारकर पीछे धकेल दिया है।

२. अब हम इस बात पर सहमत हैं कि आप लोग पेफिङ, नानखओ और ह्वाएरओ स्थित शत्रु के लिए उत्तर-पूर्व की ओर से मुसीबत खड़ी करने के हेतु अपनी पांचवीं कालम अविलम्ब नानखओ के आसपास भेज दें। यह कालम वहीं बनी रहेगी, ताकि बाद में (यानी दस-पन्द्रह दिन बाद जब याङ त-च. लो रुइ-छिङ और कङ प्याओ की कमान में चलने वाली उत्तरी चीन की फौजी फारमेशन ३५वीं फौजी कोर को नेस्तनाबूद कर चुके) आपकी चौथी कालम को पूर्व में काम सम्भालने के लिए छोड़ा जा सके। इसलिए पांचवीं कालम को यह आदेश दे दीजिए कि वह आज पश्चिम की ओर बढ़ना जारी रखे।

युद्ध की तीन सबसे बड़ी निर्णायक मुहिमों में अन्तिम मुहिम थी। इस मुहिम में हमने क्वोमिन्ताङ के ५,२०,००० से अधिक सैनिकों का सफाया किया या उन्हें पुनर्गठित किया, पेफिङ, थ्येनचिन और चाङच्याखओ नामक महत्वपूर्ण नगरों को मुक्त कराया और उत्तरी चीन की मुक्ति की लड़ाई को मुख्यतया पूरा कर लिया। इस मुहिम की फौजी कार्यवाही सम्बन्धी नीति को, जिसे कामरेड माओ त्सेतुङ ने प्रस्तुत किया था, अमल में पूरी तरह उतारा गया।

३. तीसरी कालम को किसी भी सूरत में नानखओ नहीं जाना चाहिए, बल्कि ९ तारीख के हमारे तार के अनुसार उसे पूर्व की ओर से पेफिङ के लिए खतरा उपस्थित करने के हेतु पेफिङ के पूर्व और थुङच्येन के दक्षिण में स्थित इलाके में पहुंच जाना चाहिए और इस तरह चौथी, ग्यारहवीं और पांचवीं कालमों के साथ मिलकर पेफिङ को चारों ओर से घेर लेना चाहिए।

४. लेकिन हमारा वास्तविक लक्ष्य पहले पेफिङ को घेरना नहीं बल्कि पहले थ्येनचिन, थाङकू, लूथाए और थाङशान आदि ठिकानों को घेरना ही है।

५. हमारे अनुमान से आपकी दसवीं, नवीं, छठी और आठवीं कालमें, आपकी तोपखाना कालम और सातवीं कालम करीब १५ दिसम्बर तक थ्वीच्येन को केन्द्र बनाकर उसके चारों तरफ के इलाके में एकत्रित हो चुकी होंगी। हमारा सुझाव है कि २० और २५ दिसम्बर के बीच आप बिजली की सी तेजी से कार्यवाही करें और थ्येनचिन, थाङकू, लूथाए और थाङशान में अगर शत्रु की स्थिति तब भी मोटे तौर पर वही रही जो अब है, तो अपनी छै कालमों – तीसरी कालम (जो पेफिङ के पूर्वी उपनगर से पूर्व की ओर कूच करने जा रही है), छठी, सातवीं, आठवीं, नवीं और दसवीं कालमों – को तैनात करके उक्त चारों ठिकानों पर शत्रु को घेर लें। तरीका यह है कि दो कालमों को तो ऊछिङ के चारों ओर लाङफाङ, होशीऊ और याङछुन पर रखें और पांच कालमों को थ्येनचिन, थाङकू, लूथाए, थाङशान और कूये स्थित शत्रु के ठिकानों के बीच विभाजक के रूप में ऐसे घुसेड़ दें कि शत्रु की सैन्य-शक्तियों का आपसी सम्पर्क बिलकुल कट जाए। इन सभी कालमों को चाहिए कि वे दोतरफा नाकेबन्दी

करें जिससे इस बात की गारन्टी हो जाए कि शत्रु किसी तरह बचकर नहीं निकल पाएगा। इसके बाद वे विश्राम करें और अपने सैन्य-दल को सुदृढ़ बनाएं तथा थकान उतर जाने पर शत्रु के कुछ अपेक्षाकृत छोटे दलों का सफाया कर दें। तब तक चौथी कालम को पेफिङ के उत्तर-पश्चिम की ओर से हटकर पेफिङ के पूर्व में आ जाना चाहिए। याङ त-च, लो रुङ-छिङ और कङ प्याओ की कमान में चलने वाली उत्तरी चीन की फौजी फारमेशन को चाहिए कि वह चौथी कालम के हटना शुरू करने के पहले ही शिनपाओआन में तैनात शत्रु का सफाया कर डाले। पूर्व में, वहां की परिस्थिति के अनुसार, पहले थाङकू में तैनात शत्रु का सफाया करने और इस समुद्री बन्दरगाह को अपने हाथ में लेने की हरचन्द कोशिश करनी चाहिए। अगर इन दो ठिकानों – थाङकू (सबसे महत्वपूर्ण ठिकाना) और शिनपाओआन – पर कब्जा कर लिया गया, तो पूरे युद्ध-प्रांगण में पहलकदमी आपके हाथ में आ जाएगी। सच पूछा जाए तो उक्त सैन्य-विन्यास का मतलब है चाङच्याखओ, शिनपाओआन, नानखओ, पेफिङ, ह्वाएरओ, श्युनई, थुङच्येन, वानफिङ (च्वोच्येन और ल्याङश्याङ पर हमारा अधिकार हो चुका है), फङथाए, थ्येनचिन, थाङकू, लूथाए, थाङशान और ख्वाएफिङ में शत्रु पर हमारी भरपूर घेरेबन्दी।

६. यह तरीका आम तौर पर वही है जिसे आपने ईच्येन, चिनचओ, चिनशी, शिङछङ, स्वेइचुङ, शानहाएक्वान और ल्वानच्येन से होकर गुजरने वाली लाइन पर लड़ते समय अपनाया था।[*]

७. आज से लेकर दो हफ्ते तक (११ से २५ दिसम्बर तक) बुनियादी सिद्धान्त होगा घेरा डालना मगर हमला न करना (जैसे

चाङच्याखओ और शिनपाओआन के मामले में) और कुछ मामलों में बुनियादी सिद्धान्त होगा सम्पर्क तोड़ना मगर घेरा न डालना (जैसे पेफिङ, थ्येनचिन और थाङशान के मामले में केवल रणनीतिक घेरा डालकर शत्रु की सैन्य-शक्ति के आपसी सम्पर्क को तोड़ डालना, मगर मुहिम सम्बन्धी घेरा फिर भी न डालना), ताकि हम अपना सैन्य-विन्यास पूरा हो जाने पर दुश्मन का एक-एक करके सफाया कर डालें। खासकर, चाङच्याखओ, शिनपाओआन और नानखओ में तैनात शत्रु की समूची सैन्य-शक्ति का सफाया कतई नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से नानखओ के पूर्व में स्थित शत्रु झटपट नौ दो ग्यारह हो जाने का फैसला करने को मजबूर हो जाएगा। आप इस बात को अच्छी तरह समझ लीजिए।

८. च्याङ काई-शेक को झटपट पेफिङ-थ्येनचिन से अपनी सेनाएं हटाकर समुद्री रास्ते से दक्षिण में भेजने का फैसला करने से रोकने के लिए, हम ल्यू पो-छङ, तङ श्याओ-फिङ, छन ई और सू य्वी को यह आदेश देने जा रहे हैं कि वे ह्वाङ वेइ की सेना का सफाया करने के बाद तू य्वी-मिङ के मातहत छ्यू छिङ-छ्वेन, ली मी और सुन य्वान-ल्याङ की सेनाओं (जिनमें से लगभग आधी नष्ट की जा चुकी है) के बचेखुचे अंशों को अभी बख्शे रखें और उन्हें अन्तिम रूप से नेस्तनाबूद कर डालने के लिए दो सप्ताह तक कोई सैन्य-विन्यास न करें।

९. शत्रु को छिङताओ की ओर भागने से रोकने के लिए हम शानतुङ की अपनी सेनाओं को यह आदेश देने जा रहे हैं कि वे चीनान के पास पीली नदी के एक भाग पर अपना नियंत्रण रखने के लिए कुछ सैन्य-शक्ति का जमाव किए रखें और छिङताओ-चीनान रेलवे

के आसपास के इलाकों में तैयारियां करें।

१०. यह सम्भावना नहीं है अथवा बहुत कम है कि शत्रु श्वीचओ, चङचओ, शीआन या स्वेइय्वान की ओर भागेगा।

११. हमारी एकमात्र या मुख्य चिन्ता यह है कि शत्रु कहीं समुद्री रास्ते से न भाग जाए। इसलिए अगले दो सप्ताहों में आम तौर पर यह तरीका – घेरा डालना मगर हमला न करना या सम्पर्क तोड़ना मगर घेरा न डालना – ही अपनाया जाना चाहिए।

१२. यह योजना दुश्मन की उम्मीदों से परे की चीज है और आपका अन्तिम सैन्य-विन्यास पूरा होने तक इसे ताड़ लेना उसके बूते के बाहर है। इस समय दुश्मन शायद यह अनुमान लगा रहा है कि आप पेफिङ पर हमला करेंगे।

१३. दुश्मन हमेशा हमारी सेना की सक्रियता को कम और अपनी शक्ति को ज्यादा आंकता है, हालांकि वह साथ ही धनुष की टंकारमात्र से कांप उठने वाले परिन्दे की तरह है। पेफिङ और थ्येनचिन में तैनात शत्रु यह हरगिज नहीं सोच सकता कि आप २५ दिसम्बर से पहले यह सैन्य-विन्यास पूरा करने में समर्थ हो जाएंगे।

१४. यह सैन्य-विन्यास २५ दिसम्बर के पहले पूरा कर लेने के लिए आपको अपनी सेनाओं को इस बात के लिए प्रेरित करना चाहिए कि इन दो सप्ताहों में वे थकान की परवाह न करें, तादाद घटने का डर न रखें और ठण्ड या भूख से न घबराएं; यह सैन्य-विन्यास पूरा हो जाने के बाद वे विश्राम कर सकती हैं, अपने आपको सुदृढ़ बना सकती हैं और फुरसत से हमला कर सकती हैं।

१५. हमलों का क्रम मोटे तौर पर यह होगा : पहला हमला थाङकू-लूथाए क्षेत्र पर; दूसरा हमला शिनपाओआन पर; तीसरा

हमला थाङशान क्षेत्र पर; चौथा हमला थ्येनचिन और चाङच्याखओ दो क्षेत्रों पर; और अन्तिम हमला पेइफिङ क्षेत्र पर।

१६. इस योजना के बारे में आपके विचार क्या हैं? इसकी कमियां क्या हैं? इसे लागू करने में कोई कठिनाई तो नहीं है? आप इन तमाम बातों पर गौर करें और तार द्वारा जवाब दें।

नोट

[1] लिन प्याओ, लो रुङ-ह्वान, न्ये रुङ-चन और अन्य कामरेडों की कमान में उत्तर-पूर्वी रणांगन-सेना और उत्तरी चीन जन-मुक्ति सेना की दो फौजी फारमेशनों द्वारा चलाई गई पेइफिङ-थ्येनचिन मुहिम, उत्तर-पूर्व की ल्याओशी-शनयाङ मुहिम के विजयपूर्वक समाप्त होने के फौरन बाद दिसम्बर १९४८ के शुरू में आरम्भ हो गई थी। कामरेड माओ त्सेतुङ की हिदायतों पर अमल करते हुए, उत्तर-पूर्वी रणांगन-सेना पूरे उत्तर-पूर्व को मुक्त कराने के अपने कार्य को विजयपूर्वक पूरा करने के तुरन्त बाद, अबाध गति से लम्बी दीवार के दक्षिण में पहुंच गई और उत्तरी चीन जन-मुक्ति सेना की फौजी फारमेशनों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर उत्तरी चीन में क्वोमिन्ताङ सेनाओं को घेरने और नेस्तनाबूद कर डालने के काम में जुट गई। क्वोमिन्ताङ के उत्तरी चीन "डाकू-दमन" हेडक्वार्टर के कमाण्डर-इन-चीफ फू च्वो-ई के मातहत ६,००,००० से अधिक क्वोमिन्ताङ सैनिकों ने उत्तर-पूर्व में जन-मुक्ति सेना की जीत से बुरी तरह घबराकर समुद्री रास्ते से दक्षिण की तरफ या पश्चिम में स्वेइय्वान प्रान्त की ओर भागने के इरादे से हड़बड़ाकर जल्दी-जल्दी अपने मोर्चे सिकोड़ लिए। बिजली की सी तेजी से बढ़ती हुई हमारी सेनाओं ने शत्रु-सेनाओं को विभाजित करके और पांच ठिकानों पर – पेइफिङ, थ्येनचिन, चाङच्याखओ, शिनपाओआन और थाङकू में – उन्हें अलग-अलग घेर लिया और इस तरह दक्षिण और पश्चिम की ओर निकल भागने के उनके रास्ते बन्द कर डाले। २२ दिसम्बर को शिनपाओ-आन को घेर लिया गया और दुश्मन की मुख्य शक्ति (३५वीं फौजी कोर हेडक्वार्टर और उसकी दो डिवीजनों) का सफाया कर दिया गया। २४ दिसम्बर को चाङच्याखओ पर अधिकार कर लिया गया और शत्रु की ग्यारहवीं सेना के एक फौजी कोर हेडक्वार्टर और उसकी सात डिवीजनों का, जिनमें कुल मिलाकर ५४,००० से अधिक सैनिक थे, पूरी तरह सफाया कर दिया गया। १४ जनवरी १९४९ को थ्येनचिन की घेराबन्दी के लिए तैनात हमारी सेनाओं ने शत्रु की गैरिजन-सेना के कमाण्डर छन छाङ-च्ये द्वारा आत्मसमर्पण से इनकार किए जाने पर नगर पर आम धावा बोल दिया। उन्तीस घंटे की घमासान लड़ाई के बाद नगर को मुक्त करा लिया गया, शत्रु के १,३०,००० से अधिक गैरिजन-सैनिकों का पूरी तरह सफाया कर दिया गया और छन छाङ-च्ये को गिरफ्तार कर लिया गया। नतीजा यह हुआ कि दुश्मन के पेइफिङ में तैनात २,००,००० से अधिक गैरिजन-सैनिक हमारी सेनाओं के तंग घेरे में कस गए और अपने भाग्य पर उनका कोई भी बस नहीं रह गया। उन्हें अपने पक्ष में कर लेने की हमारी कोशिशों की बदौलत जनरल फू च्वो-ई की कमान में शत्रु की पेइफिङ में तैनात पूरी गैरिजन-सेना शान्तिपूर्ण पुनर्गठन के लिए राजी हो गई। ३१ जनवरी को हमारी सेनाओं ने पेइफिङ में प्रवेश किया और नगर की शान्तिपूर्ण मुक्ति का ऐलान कर दिया गया। इस प्रकार पेइफिङ-थ्येनचिन मुहिम विजयपूर्वक समाप्त हो गई। इस मुहिम में समुद्री रास्ते से निकल भागने वाली थाङकू स्थित गैरिजन-सेना के ५०,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों को छोड़कर क्वोमिन्ताङ के कुल ५,२०,००० से अधिक सैनिकों का सफाया कर दिया गया या उन्हें हमारी सेना द्वारा पुनर्गठित कर लिया गया। सितम्बर १९४९ में स्वेइय्वान प्रान्त में तैनात क्वोमिन्ताङ सेनाओं ने तार देकर ऐलान किया कि उन्होंने विद्रोह कर दिया है और जनता के पक्ष में आ मिली है, तथा अपने पुनर्गठन के लिए राजी है।

[2] यहां "दक्षिण पश्चिम" का अर्थ है नानख्याओ के दक्षिण-पश्चिम का इलाका।

[3] सितम्बर १९४८ में पेइफिङ-ल्याओनिङ रेलवे पर पड़ने वाले ईश्येन, चिनचओ, सिनशी, शिङछङ, स्वेइचुङ, शानहाएक्वान, ल्वानश्येन और छाङली नामक ठिकानों की शत्रु-सेनाओं को अपने मोर्चे सिकोड़कर केन्द्रित होने से रोकने के लिए उस रेलवे के आसपास के इलाके में कार्यवाही करने वाली हमारी उत्तर-

पूर्वी रणांगन-सेना ने यह तरीका अपनाया कि पहले तो उसने अपनी सैन्य-शक्ति के एक भाग का इस्तेमाल करके इन स्थानों में मौजूद शत्रु की यूनिटों को घेरकर उन्हें एक दूसरे से अलग कर दिया और फिर एक-एक करके उन सबका सफाया कर दिया।

तू य्वी-मिङ तथा अन्य लोगों को आत्मसमर्पण कर देने के लिए प्रेरित करने का सन्देश*

१७ दिसम्बर १९४८

जनरल तू य्वी-मिङ, जनरल छ्यू छिङ-छ्वेन, जनरल ली मी तथा जनरल छ्यू छिङ-छ्वेन व जनरल ली मी के मातहत दो सेनाओं के समस्त फौजी कोर, डिवीजन और रेजीमेन्ट कमाण्डरो :

आपका खेल अब खत्म हो चुका है। १५ तारीख की रात को ह्वाङ वेइ की सेना का पूरे तौर पर सफाया कर दिया गया है, ली येन-न्येन की सेना मैदान छोड़कर दक्षिण की तरफ भाग गई है, और उससे जाकर मिल जाने की बात सोचना बिल्कुल बेकार है। क्या आप घेरा तोड़कर बच निकलने की आशा लगाए हैं? आप बचकर जा कैसे सकते हैं जबकि चारों तरफ से आप जन-मुक्ति सेना से घिरे हुए हैं? पिछले कुछ दिनों में आपने बच निकलने की कोशिशें की हैं, लेकिन आखिर नतीजा क्या हुआ? आपके हवाई-जहाज और टैंक भी बेकार साबित हो चुके हैं। हमारे पास आपसे ज्यादा हवाईजहाज और टैंक है, अर्थात तोपखाना व गोला-बारूद

*मध्यवर्ती मैदान तथा पूर्वी चीन जन-मुक्ति सेनाओं के हेडक्वार्टरों की तरफ से प्रसारित यह सन्देश कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा लिखा गया था।

जिन्हें जनता देसी हवाईजहाज व टैंक के नाम से पुकारती है। क्या ये आपके विदेशी हवाईजहाजों व टैंकों से दस गुना ज्यादा शक्तिशाली नहीं हैं? आपकी जो सेना सुन य्वान-ल्याङ के मातहत है वह तेरहतीन हो चुकी है, और आपकी दो बचीखुची सेनाओं के आधे से ज्यादा आदमी या तो घायल हो गए हैं या पकड़ लिए गए हैं। ख्वीनओं के विभिन्न संगठनों के बहुत से फालतू व बेकार लोगों तथा बहुत से नौजवान विद्यार्थियों को आप पकड़ लाए हैं और उन्हें आपने जबरदस्ती अपनी सेना में शामिल कर लिया है, लेकिन ये लोग भला कैसे लड़ सकते हैं? दस से ज्यादा दिनों से आप एक चक्रव्यूह में फंसे हुए हैं तथा एक के बाद एक करारी चोटें खा रहे हैं, और आपकी जगह बहुत ही छोटी हो गई है। आपके पास इतनी छोटी सी जगह है, दस वर्ग ली से कुछ ही ज्यादा, और आपके इतने अधिक आदमी एक जगह सिकुड़कर जमा हो गए हैं कि हमारा एक ही गोला आपके बहुत से आदमियों का काम तमाम कर देगा। आपके घायल सैनिक तथा वे परिवार जो फौज के साथ हो लिए हैं, अपनी खैरियत के वास्ते खुदा से दुआ मांग रहे हैं। आपके सैनिकों और बहुत से अफसरों में अब और अधिक लड़ने का दम नहीं है। डिप्टी कमाण्डर-इन-चीफ की हैसियत से, सेनाओं, फौजी कोरों, डिवीजनों तथा रेजीमेन्टों के कमाण्डरों की हैसियत से आपको अपने मातहत काम करने वालों तथा उनके परिवारों की भावनाओं को समझना चाहिए और उनसे हमदर्दी रखनी चाहिए, उनकी जिन्दगी की कद्र करनी चाहिए, जल्दी से जल्दी उनके लिए कोई रास्ता ढूंढ निकालना चाहिए और उन्हें व्यर्थ मौत की तरफ नहीं ढकेलना चाहिए।

अब जबकि ह्वाङ वेइ की सेना का पूरे तौर पर सफाया कर दिया

गया है और ली येन-न्येन की सेना पङ्पू की ओर भाग गई है, हम आपकी ताकत से कई गुना बड़ी प्रहार-शक्ति का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस बार हम सिर्फ ४० दिन लड़े हैं और आप ह्वाङ पो-थाओ के मातहत १० डिवीजनों, ह्वाङ वेइ के मातहत ११ डिवीजनों, सुन य्वान-ल्याङ के मातहत ४ डिवीजनों, फङ च-आन के मातहत ४ डिवीजनों, सुन ल्याङ-छङ के मातहत २ डिवीजनों, ल्यू रू-मिङ के मातहत १ डिवीजन, सूश्येन में स्थित १ डिवीजन और लिङपी में स्थित १ डिवीजन – कुल मिलाकर ३४ समूची डिवीजनों से हाथ धो बैठे हैं। इनमें से हमारी सेना ने २७.५ डिवीजनों का पूरे तौर पर सफाया कर डाला; केवल अपवाद थीं तो हो ची-फङ व चाङ ख青-श्या के नेतृत्व में ३.५ डिवीजनें तथा ल्याओ युन-चओ के नेतृत्व में १ डिवीजन जो विद्रोह करके हमारी तरफ आ मिली थी, और सुन ल्याङ-छङ के नेतृत्व में १ डिवीजन तथा चाओ पी-क्वाङ व ह्वाङ चि-ह्वा के नेतृत्व में २ अर्ध-डिवीजनें जिन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया था।[1] ह्वाङ पो-थाओ, ह्वाङ वेइ व सुन य्वान-ल्याङ के मातहत तीन सेनाओं का जो हश्र हुआ वह आप अपनी आंखों से देख चुके हैं। आपको छाङछुन के जनरल चङ तुङ-क्वो की मिसाल[2] से और फौजी कोर कमाण्डर सुन ल्याङ-छङ तथा डिवीजन कमाण्डर चाओ पी-क्वाङ व ह्वाङ चि-ह्वा की मौजूदा मिसाल से सीखना चाहिए और अपनी तमाम सेना को फौरन आदेश दे देना चाहिए कि वह हथियार डाल दे और प्रतिरोध करना बन्द कर दे। हमारी सेना आप लोगों – उच्च पदाधिकारियों तथा तमाम अफसरों व सैनिकों – की सुरक्षा व जिन्दगी की गारन्टी करेगी। आपके सामने यही एक रास्ता बच गया है। इस पर गौर कीजिए! अगर आप इसे

मुनासिब समझते हैं, तो फिर इसके अनुसार अमल कीजिए। अगर आप अब भी लड़ाई का एक और दौर चलाने की तमन्ना रखते हैं, तो फिर लड़ लीजिए, लेकिन यह समझ लीजिए कि हर सूरत में आपका खात्मा हो जाएगा।[3]

मध्यवर्ती मैदान जन-मुक्ति सेना
का हेडक्वार्टर
पूर्वी चीन जन-मुक्ति सेना
का हेडक्वार्टर

नोट

[1] क्वोमिन्ताङ के तीसरे शान्ति-स्थापना क्षेत्र के डिप्टी कमाण्डर हो ची-फ़ङ तथा चाङ ख-श्या ने, ह्वाए-हाए मुहिम के पहले दौर में, ८ नवम्बर १९४८ को, श्वीचओ के उत्तर-पूर्व में स्थित च्याबाङ क्षेत्र में क्वोमिन्ताङ के खिलाफ विद्रोह कर दिया, और वे १ फौजी कोर हेडक्वार्टर, ३ डिवीजनों तथा १ रेजीमेण्ट के कुल मिलाकर २०,००० से ज्यादा सैनिकों को लेकर जन-मुक्ति सेना से आ मिले। क्वोमिन्ताङ की ८५वीं फौजी कोर की ११०वीं डिवीजन के कमाण्डर ल्याओ युन-चओ ने, ह्वाए-हाए मुहिम के दूसरे दौर में, २७ नवम्बर १९४८ को, आनह्वेइ प्रान्त के सूश्येन के दक्षिण-पश्चिम में स्थित लोचो नामक स्थान में क्वोमिन्ताङ के खिलाफ विद्रोह कर दिया, और वह अपनी डिवीजन के हेडक्वार्टर तथा दो पूरी की पूरी रेजीमेण्टों के कुल मिलाकर ५,५०० सैनिकों को लेकर जन-मुक्ति सेना से आ मिला। क्वोमिन्ताङ के पहले शान्ति-स्थापना क्षेत्र के डिप्टी कमाण्डर तथा १०७वीं फौजी कोर के कमाण्डर सुन ल्याङ-छङ ने, ह्वाए-हाए मुहिम के पहले दौर में, १३ नवम्बर १९४८ को, च्याङसू प्रान्त के स्वेइनिङ के उत्तर-पश्चिम में, अपनी कोर के हेडक्वार्टर तथा १ डिवीजन के कुल

मिलाकर ५,८०० सैनिकों को लेकर जन-मुक्ति सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। क्वोमिन्ताङ की ४४वीं फौजी कोर की १५०वीं डिवीजन के कमाण्डर चाओ पी-क्वाङ ने, ह्वाए-हाए मुहिम के पहले दौर में, १८ नवम्बर १९४८ को, च्याङसू प्रान्त के श्वीचओ के पूरब में स्थित न्येनच्वाङ क्षेत्र में, अपनी बचीखुची सेना के २,००० से अधिक सैनिकों को लेकर जन-मुक्ति सेना के सामने आत्म-समर्पण कर दिया। क्वोमिन्ताङ की ८५वीं फौजी कोर की २३वीं डिवीजन के कमाण्डर ह्वाङ चि-ह्वा ने, ह्वाए-हाए मुहिम के दूसरे दौर में, दिसम्बर १९४८ में, आनह्वेइ प्रान्त के सूश्येन के उत्तर-पूर्व में स्थित श्वाङत्वेइची में अपनी डिवीजन के हेडक्वार्टर तथा अपनी २ रेजीमेण्टों के बचेखुचे भाग को लेकर जन-मुक्ति सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

[2] १९४७ की सर्दियों से उत्तर-पूर्व की जन-मुक्ति सेना ने छाङछुन शहर को घेर रखा था। हमारी सेना द्वारा चिनचओ पर कब्जा कर लिए जाने के बाद, जब उत्तर-पूर्व की तमाम शत्रु-सेनाएं डांवाडोल हो रही थीं, तो छाङछुन स्थित क्वोमिन्ताङ के सर्वोच्च कमाण्डर तथा क्वोमिन्ताङ के उत्तर-पूर्व "डाकू-दमन" हेडक्वार्टर के डिप्टी कमाण्डर-इन-चीफ़ चङ तुङ-क्वो ने १९ अक्तूबर १९४८ को, अपनी सेना के सीधे मातहत चलने वाली टुकड़ियों तथा नई सातवीं फौजी कोर के तमाम अफ़सरों व सैनिकों को साथ लेकर आत्मसमर्पण कर दिया।

[3] यह सन्देश पाने के बाद भी, क्वोमिन्ताङ के श्वीचओ "डाकू-दमन" हेडक्वार्टर के डिप्टी कमाण्डर-इन-चीफ़ तू य्वी-मिङ, क्वोमिन्ताङ की दूसरी सेना के कमाण्डर छ्यू छिङ-छ्वेन और क्वोमिन्ताङ की १३वीं सेना के कमाण्डर ली मी ने हठपूर्वक प्रतिरोध करना जारी रखा। नतीजा यह हुआ कि हमारी सेना के शक्तिशाली प्रहार के फलस्वरूप उनकी तमाम सेनाओं का सफ़ाया हो गया। तू य्वी-मिङ पकड़ लिया गया, छ्यू छिङ-छ्वेन मार डाला गया और केवल ली मी ही मैदान छोड़कर भाग निकलने में कामयाब हो सका।

क्रान्ति को अन्त तक चलाओ*

३० दिसम्बर १९४८

महान मुक्ति-युद्ध में अन्तिम विजय चीनी जनता को प्राप्त होगी। इसके बारे में अब किसी को, यहां तक कि हमारे दुश्मनों को भी सन्देह नहीं रह गया है।

युद्ध ने टेढ़ामेढ़ा रास्ता तय किया है। जब प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार ने प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध छेड़ा, तो उसके पास जन-मुक्ति सेना के मुकाबले लगभग साढ़े तीन गुनी फौज थी ; उसकी फौज का साज-सामान, मानव-शक्ति और भौतिक साधन-स्रोत जन-मुक्ति सेना से कहीं ज्यादा थे ; उसके पास आधुनिक उद्योग और आधुनिक संचार-साधन थे, जिनका जन-मुक्ति सेना में अभाव था ; उसे अमरीकी साम्राज्यवाद से बड़ी संख्या में फौजी व आर्थिक सहायता प्राप्त हुई थी और उसने लम्बे समय तक तैयारी की थी। इसी वजह से युद्ध के पहले साल (जुलाई १९४६-जून १९४७) क्वोमिन्ताङ आक्रमण करती रही और जन-मुक्ति सेना अपनी रक्षा करती रही। १९४६ में, क्वोमिन्ताङ ने उत्तर-पूर्वी चीन में शनयाङ, सिफिङ, छाङछुन, चीलिन, आनतुङ और अन्य शहरों पर तथा ल्याओ-

*यह १९४९ के लिए नववर्ष-सन्देश है, जिसे कामरेड माओ त्सेतुङ ने सिनह्वा समाचार-एजेन्सी के लिए लिखा था।

निङ, ल्याओपेइ और आनतुङ प्रान्तों[1] के ज्यादातर हिस्से पर कब्जा कर लिया ; पीली नदी के दक्षिण में, उसने ह्वाएइन, हांत्से और अन्य शहरों पर तथा हुपे-हनान-आनह्वेइ, च्याङसू-आनह्वेइ, हनान-आनह्वेइ-च्याङसू और दक्षिण-पश्चिमी शानतुङ के मुक्त क्षेत्रों के ज्यादातर हिस्से पर कब्जा कर लिया ; लम्बी दीवार के उत्तर में, उसने छङते, चीनिङ, चाङच्याखओ और अन्य शहरों तथा जेहोल, स्वेय्वान और छाहाड़ प्रान्तों के ज्यादातर हिस्से पर कब्जा कर लिया। क्वोमिन्ताङ घमण्ड में चूर होकर अपने को तीसमारखां समझने लगी। जन-मुक्ति सेना ने सही रणनीति अपनाई, जिसका मुख्य उद्देश्य था क्षेत्र पर कब्जा बनाए रखने के बजाय क्वोमिन्ताङ की प्रभावकारी शक्ति को नष्ट करना, तथा उसने हर महीने क्वोमिन्ताङ की नियमित सेना की औसतन आठ ब्रिगेडें (जो आज की आठ डिवीजनों के बराबर थीं) नष्ट कीं। नतीजे के तौर पर, अन्त में क्वोमिन्ताङ को मजबूर होकर चौतरफा आक्रमण करने की अपनी योजना का त्याग करना पड़ा और १९४७ की पहली छमाही में अपने आक्रमण के मुख्य निशाने को दक्षिणी मोर्चे के दो बाजुओं यानी शानतुङ और उत्तरी शेनशी तक ही सीमित रखना पड़ा। दूसरे साल (जुलाई १९४७-जून १९४८) युद्ध में एक बुनियादी परिवर्तन हुआ। क्वोमिन्ताङ की नियमित सेना का भारी तादाद में खात्मा करने के बाद, जन-मुक्ति सेना ने दक्षिणी और उत्तरी मोर्चों में रक्षा के बदले आक्रमण शुरू कर दिया जबकि क्वोमिन्ताङ को आक्रमण के बदले रक्षा शुरू करनी पड़ी। जन-मुक्ति सेना ने न सिर्फ उत्तर-पूर्वी चीन, शानतुङ और उत्तरी शेनशी में अपने खोए हुए अधिकांश इलाकों को फिर प्राप्त कर लिया, बल्कि लड़ाई

के मोर्चे को याङत्सी नदी और वेइश्वेइ नदी के उत्तर में फैले क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों तक विस्तृत कर दिया। साथ ही, शच्याच्वाङ, युनछङ, सफिङ, लोयाङ, ईछ्वान, पाओची, वेइश्येन, लिनफ़न और खाएफ़ङ पर हमला और कब्जा करते समय, हमारी सेना भारी मोर्चेबन्दी वाले स्थलों पर धावा बोलने की कार्यनीति में माहिर हो गई।[1] जन-मुक्ति सेना ने अपनी तोपखाना फौज और इंजीनियर कोर कायम की। यह नहीं भूलना चाहिए कि जन-मुक्ति सेना के पास न तो हवाईजहाज थे और न टैंक, लेकिन ज्योंही उसने एक ऐसी तोपखाना फौज और इंजीनियर कोर कायम की जो क्वोमिन्ताङ फौज के मुकाबले बेहतर थी, तो उसके सामने क्वोमिन्ताङ की प्रतिरक्षा-व्यवस्था और उसके हवाईजहाज व टैंक भी तुच्छ मालूम पड़ने लगे। जन-मुक्ति सेना अब न सिर्फ चलायमान लड़ाई कर सकती थी, बल्कि मोर्चेबद्ध लड़ाई भी कर सकती थी। युद्ध के तीसरे साल की पहली छमाही (जुलाई-दिसम्बर १९४८) में, एक अन्य बुनियादी तब्दीली हो गई है। जन-मुक्ति सेना, जिसकी संख्या लम्बे अरसे से कम चली आ रही थी, संख्या की दृष्टि से भी बरतर हो गई है। वह न सिर्फ क्वोमिन्ताङ की भारी मोर्चेबन्दी वाले शहरों पर कब्जा कर सकी है, बल्कि क्वोमिन्ताङ की मजबूत और बेहतरीन फौजी यूनिटों को एक लाख, यहां तक कि कई लाख की तादाद में भी, एक साथ घेर सकी है और नष्ट कर सकी है। जिस रफ्तार से जन-मुक्ति सेना क्वोमिन्ताङ फौजों को नष्ट कर रही है, वह बहुत तेज हो गई है। जरा क्वोमिन्ताङ की बटालियन के दर्जे की और उससे ऊंचे दर्जे की उन नियमित फौजी यूनिटों के आंकड़ों पर तो नजर डालिए जिन्हें हम नष्ट कर चुके हैं (इनमें दुश्मन की

वे फौजें भी शामिल हैं जिन्होंने विद्रोह कर दिया था और जो हमारे पक्ष में आ मिली थीं)। पहले साल ९७ ब्रिगेडों को नष्ट किया गया, जिनमें ४६ ब्रिगेडों का बिलकुल सफाया कर दिया गया ; दूसरे साल ९४ ब्रिगेडों को नष्ट किया गया, जिनमें ५७ ब्रिगेडों का बिलकुल सफाया कर दिया गया ; और तीसरे साल की पहली छमाही में, अधूरे आंकड़ों के अनुसार, १८७ डिवीजनों को नष्ट किया गया, जिनमें १११ डिवीजनों का बिलकुल सफाया कर दिया गया।[1] इन छै महीनों में दुश्मन की जिन डिवीजनों का बिलकुल सफाया कर दिया गया, उनकी तादाद इससे पहले के दो सालों की कुल तादाद से १५ ज्यादा थी। रणनीति की दृष्टि से दुश्मन का समूचा मोर्चा पूरी तरह ढह गया है। उत्तर-पूर्वी चीन में दुश्मन की फौजों का बिलकुल सफाया कर दिया गया है ; उत्तरी चीन में उनका जल्दी ही बिलकुल सफाया कर दिया जाएगा, तथा पूर्वी चीन और मध्यवर्ती मैदान में दुश्मन की थोड़ी सी फौजें बाकी रह गई हैं। याङत्सी नदी के उत्तर में क्वोमिन्ताङ की मुख्य सैन्य-शक्तियों का सफाया किए जाने की वजह से, जन-मुक्ति सेना के याङत्सी नदी पार करके और दक्षिण की ओर कूच करके समूचे चीन को मुक्त कराने के लिए बेहद अनुकूल स्थिति पैदा हो गई है। चीनी जनता ने फौजी मोर्चे पर विजय प्राप्त करने के साथ-साथ राजनीतिक मोर्चे और आर्थिक मोर्चे पर भी महान विजयें प्राप्त की हैं। यही कारण है कि समूची दुनिया का लोकमत तैयार करने वाला जगत, जिसमें समूचा साम्राज्यवादी प्रेस भी शामिल है, अब चीनी जनता के मुक्ति-युद्ध की अनिवार्य देशव्यापी विजय को बिलकुल निर्विवाद समझता है।

दुश्मन खुद-ब-खुद नष्ट नहीं हो जाएगा। न तो चीनी प्रतिक्रियावादी और न चीन में अमरीकी साम्राज्यवाद की हमलावर शक्तियां ही खुद-ब-खुद इतिहास के मंच से नीचे उतरेंगी। वे राजनीतिक संघर्ष को दिन-ब-दिन ज्यादा से ज्यादा महत्व ठीक इसलिए दे रहे हैं कि वे महसूस करने लगे हैं कि चीनी जनता के मुक्ति-युद्ध की देशव्यापी विजय को अब सिर्फ फौजी संघर्ष से नहीं रोका जा सकता। चीनी प्रतिक्रियावादी और अमरीकी हमलावर एक तरफ तो मौजूदा क्वोमिन्ताङ सरकार को अपनी "शान्ति" की साजिश के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं ; दूसरी तरफ वे किन्हीं ऐसे लोगों को, जिनके ताल्लुकात उनके और क्रान्तिकारी खेमे दोनों के साथ बने हुए हैं, इस्तेमाल करने की साजिश रच रहे हैं, तथा उन लोगों को कुशलता के साथ काम करने, क्रान्तिकारी खेमे में घुसने की कोशिश करने और उसके अन्दर तथाकथित विरोधी गुट बनाने के लिए भड़का और उकसा रहे हैं, ताकि प्रतिक्रियावादी शक्तियों को बनाए रखा जाए और क्रान्तिकारी शक्तियों को नष्ट कर दिया जाए। विश्वसनीय सूचना के अनुसार, अमरीका सरकार ने ऐसी साजिश रच डाली है और चीन में उस पर अमल करना भी शुरू कर दिया है। अमरीका सरकार ने महज क्वोमिन्ताङ के प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध का समर्थन करने की अपनी नीति को दो तरह के संघर्ष चलाने की नीति में बदल दिया है :

१. याङत्सी नदी के दक्षिण में और दूरवर्ती सीमान्त प्रान्तों में जन-मुक्ति सेना का विरोध जारी रखने के लिए क्वोमिन्ताङ

की सशस्त्र सेनाओं के बचेखुचे अंशों को और तथाकथित स्थानीय शक्तियों को संगठित करना ;

२. क्रान्तिकारी खेमे में विरोधी गुट को संगठित करना, जिससे भरपूर शक्ति के साथ क्रान्ति को यहीं रोका जा सके, या अगर वह आगे बढ़े, तो उसे नरमाया जा सके तथा साम्राज्यवादियों और उनके पालतू कुत्तों के हितों को ज्यादा नुकसान पहुंचाने से रोका जा सके।

बरतानवी और फ्रांसीसी साम्राज्यवादी इस अमरीकी नीति के समर्थक हैं। बहुत से लोग अभी तक इस परिस्थिति को साफ-साफ नहीं देख पाते, लेकिन शायद उन्हें इस परिस्थिति को साफ-साफ देख लेने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

आज चीनी जनता के सामने, सभी जनवादी पार्टियों के सामने और सभी जन-संगठनों के सामने यह सवाल है कि क्रान्ति को अन्त तक चलाया जाए या आधे ही रास्ते में छोड़ दिया जाए। अगर क्रान्ति को अन्त तक चलाना है, तो हमें क्रान्तिकारी तरीके अपनाकर सभी प्रतिक्रियावादी शक्तियों को दृढ़ता के साथ, सर्वांगीण रूप से, समग्र रूप से और सम्पूर्ण रूप से मिटा देना होगा ; हमें साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद को उखाड़ फेंकने के लिए अविचल रूप से डटे रहना होगा ; तथा हमें समूचे देश में क्वोमिन्ताङ के प्रतिक्रियावादी शासन का तख्ता उलट देना होगा और सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में मजदूर-किसान संश्रय को मुख्य अंग बनाते हुए एक ऐसा गणराज्य कायम करना होगा जो जनता का जनवादी अधिनायकत्व हो। इस तरह चीनी राष्ट्र उत्पीड़कों को पूरी तरह

उखाड़ फेंकेगा ; हमारा देश एक अर्ध-उपनिवेश से बदलकर एक सचमुच स्वाधीन राज्य बन जाएगा ; चीनी जनता सामन्ती उत्पीड़न और नौकरशाही-पूंजी (चीनी इजारेदार पूंजी) के उत्पीड़न को जड़ से उखाड़कर पूर्ण रूप से मुक्त हो जाएगी तथा इस तरह वह एकीकरण और जनवाद पर आधारित शान्ति को प्राप्त करेगी, चीन को एक कृषि-प्रधान देश से एक औद्योगिक देश में बदलने के लिए आवश्यक स्थितियों को तैयार करेगी तथा उसके लिए एक ऐसे समाज से, जिसमें मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण किया जाता है, समाजवादी समाज में विकसित होना सम्भव हो सकेगा। अगर क्रान्ति को आधे ही रास्ते में छोड़ दिया जाएगा, तो इसका मतलब होगा जनता के इरादे के विरुद्ध कार्य करना, विदेशी हमलावरों और चीनी प्रतिक्रियावादियों के इरादे के सामने अपना सिर झुका देना और क्वोमिन्ताङ को अपने घाव भरने का मौका देना, और इस प्रकार वह एक दिन क्रान्ति का गला घोंटने के लिए झपट पड़ेगी और फिर एक बार समूचे देश को अन्धकार में डुबो देगी। यह सवाल आज कितने स्पष्ट और तीक्ष्ण रूप से प्रस्तुत है। इन दोनों में कौन सा रास्ता चुना जाए ? चीन की हर जनवादी पार्टी को, हर जन-संगठन को इस सवाल पर विचार करना होगा, अपना रास्ता चुनना होगा और अपना रुख स्पष्ट करना होगा। चीन की जनवादी पार्टियां और जन-संगठन आधे रास्ते में ही एक दूसरे का साथ छोड़े बिना, सच्चे दिल से सहयोग कर सकते हैं या नहीं, यह इस बात पर निर्भर है कि वे इस सवाल के बारे में एकराय हैं या नहीं और चीनी जनता के मुश्तरका दुश्मन को उखाड़ फेंकने के लिए सर्वसम्मति से कार्यवाही करते हैं या नहीं। यहां जरूरत है सर्वसम्मति और सहयोग

की, न कि कोई "विरोधी गुट" कायम करने अथवा कोई "मध्यम मार्ग"* अपनाने की।

१२ अप्रैल १९२७ के प्रतिक्रान्तिकारी राजविप्लव से आज तक बीस साल से ज्यादा लम्बे अरसे के दौरान क्या चीन के प्रतिक्रियावादियों ने, जिनके मुखिया च्याङ काई-शेक इत्यादि हैं, इस बात के काफी सबूत नहीं दिए हैं कि वे लोग खून से लथपथ ऐसे हत्यारे हैं जिनके चेहरे पर लोगों की हत्या करते समय जरा भी शिकन नहीं पड़ती? क्या उन्होंने इस बात के काफी सबूत नहीं दिए हैं कि वे पेशेवर देशद्रोहियों और साम्राज्यवाद के पेशेवर पिछलग्गुओं का गिरोह है? जरा सोचिए तो सही! चीनी जनता दिसम्बर १९३६ की शीआन घटना से, अक्तूबर १९४५ की छुङकिङ वार्ता से, जनवरी १९४६ के राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन से, डाकुओं के इस गिरोह के प्रति कितनी विशालहृदयता बरतती रही है, इस उम्मीद से कि उनके साथ अन्दरूनी शान्ति कायम की जा सकेगी। लेकिन क्या इस सद्भावना की वजह से उनका वर्ग-स्वरूप रत्तीभर या बालभर भी बदला है? इन डाकुओं के इतिहास ने साबित कर दिया है कि इनमें से एक को भी अमरीकी साम्राज्यवाद से अलग नहीं किया जा सकता। इन्होंने अमरीकी साम्राज्यवाद पर निर्भर रहकर हमारे ४७ करोड़ ५० लाख देशबन्धुओं को अभूतपूर्व क्रूरतापूर्ण भारी गृहयुद्ध में झोंक दिया है तथा बमबार विमानों, लड़ाकू विमानों, तोपों, टैंकों, राकेट-प्रक्षेपकों, स्वचालित राइफलों, गैसोलीन-बमों, गैस-बमों और अन्य हथियारों के जरिए, जिन सबको अमरीकी साम्राज्यवाद ने सप्लाई किया है, दसियों लाख पुरुषों और स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों को कत्ल किया है। और इन डाकुओं पर निर्भर

रहकर अमरीकी साम्राज्यवाद ने चीन की प्रादेशिक भूमि, प्रादेशिक समुद्र और प्रादेशिक आकाश के प्रभुसत्ताधिकार को हथिया लिया है, भीतरी जहाजरानी के अधिकारों और वाणिज्य के विशेषाधिकारों को हथिया लिया है, चीन के घरेलू मामलों और वैदेशिक मामलों में विशेषाधिकारों को हथिया लिया है, यहां तक कि लोगों को मार डालने, उन्हें मोटर-कार के नीचे कुचलने और महिलाओं के साथ बलात्कार करने और इन सबके लिए सजा न पाने का विशेषाधिकार भी हथिया लिया है। क्या चीनी जनता को, जिसे इतना लम्बा और रक्तपातपूर्ण युद्ध करने के लिए मजबूर किया गया है, इन बेहद खूंखार दुश्मनों के प्रति अब भी स्नेह और नरमी बरतनी चाहिए तथा इन्हें पूरी तरह नष्ट नहीं कर देना चाहिए या खदेड़ नहीं देना चाहिए? सिर्फ चीनी प्रतिक्रियावादियों को पूरी तरह नष्ट करके और अमरीकी साम्राज्यवाद की हमलावर शक्तियों को खदेड़कर ही चीन स्वाधीनता, जनवाद और शान्ति हासिल कर सकता है। क्या यह सच्चाई अभी तक काफी स्पष्ट नहीं हुई है?

ध्यान देने योग्य बात यह है कि चीनी जनता के दुश्मन सहसा प्रतिष्ठाहीन और यहां तक कि दयनीय शक्ल बनाने की हरचन्द कोशिश करने लगे हैं (कृपया पाठक याद रखें कि भविष्य में वे फिर दयनीय शक्ल बनाने की कोशिश करेंगे)। क्या सुन खो ने, जो अब क्वोमिन्ताङ की कार्यकारी य्वान का प्रेसीडेन्ट बन गया है, पिछले साल जून में यह ऐलान नहीं किया था कि "अगर हम फौजी लड़ाई अन्त तक जारी रखेंगे, तो अन्त में हल जरूर निकलेगा"? लेकिन इस बार अपना पद ग्रहण करते ही वह "सम्मानपूर्ण शान्ति" की चिकनी-चुपड़ी बातें करने लगा है और कहने लगा है कि "सरकार

शान्ति की कोशिश करती रही है और उसे लड़ाई सिर्फ इसलिए करनी पड़ी है कि शान्ति कायम नहीं की जा सकी, लेकिन लड़ाई का अन्तिम उद्देश्य अब भी फिर से शान्ति को कायम करना ही है।" इसके फौरन बाद २१ दिसम्बर को, शांघाई से यूनाइटेड प्रेस की एक खबर में यह भविष्यवाणी की गई है कि सुन ख के बयान को "अमरीका के सरकारी क्षेत्रों में और क्वोमिन्ताङ के उदारपंथियों में अत्यन्त व्यापक समर्थन प्राप्त होगा।" इस समय अमरीकी अफसर न सिर्फ चीन की "शान्ति" में गहरी दिलचस्पी रखते हैं, बल्कि बार-बार यह प्रकट करते हैं कि सोवियत संघ, अमरीका और बरतानिया के विदेश मंत्रियों के दिसम्बर १९४५ में आयोजित मास्को सम्मेलन से ही अमरीका "चीन के अन्दरूनी मामलों में दखल न देने की नीति" का पालन करता रहा है। "शरीफों के मुल्क" के इन सज्जनों के साथ हमें कैसे निपटना है? यहां एक प्राचीन यूनानी नीतिकथा उद्धृत करना उचित होगा। "जाड़ों में एक दिन एक किसान को एक सांप मिला, जो सरदी से ठिठुर रहा था। उसे दया आ गई और उसने सांप को उठाकर अपनी छाती से लगा लिया। गरमी पहुंचने की वजह से सांप की चेतना लौट आई, उसकी स्वाभाविक प्रवृत्तियां जाग उठीं और उसने अपना उपकार करने वाले को प्राणघाती डंक मार दिया। किसान ने मरते वक्त कहा, 'एक दुष्ट प्राणी के प्रति दया दिखाने का जो फल मुझे मिलना चाहिए था वह मिल गया है।'"[१] विदेशी और चीनी जहरीले सांप यह उम्मीद करते हैं कि चीनी जनता उस किसान की ही तरह मर जाएगी तथा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और सभी चीनी क्रान्तिकारी जनवादी व्यक्ति उस किसान की ही तरह, जहरीले सांपों के प्रति दयालुता का बरताव करेंगे। लेकिन चीनी

जनता, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीन के सच्चे क्रान्तिकारी जनवादी व्यक्ति उस मेहनतकश के अन्तिम शब्दों को सुन चुके हैं तथा उन्हें अच्छी तरह याद कर चुके हैं। और फिर चीन के ज्यादातर हिस्सों में जमे हुए सांप, चाहे वे बड़े हों या छोटे, काले हों या गोरे, जहरीले फन दिखाने वाले हों या सुन्दरियों के वेष में, अभी तक जाड़े से ठिठुरे नहीं हैं, हालांकि उन्हें सरदी के मौसम का डर महसूस होने लगा है।

चीनी जनता सांप जैसे दुष्टों पर कभी दया नहीं दिखाएगी। वह सच्चे दिल से यह मानती है कि ऐसा कोई व्यक्ति चीनी जनता का सच्चा दोस्त हरगिज नहीं हो सकता जो मक्कारी के साथ यह कहता है कि इस प्रकार के दुष्टों के प्रति दया दिखानी चाहिए, और ऐसा न करना चीन की परम्परा के खिलाफ होगा, महानता के दर्जे से नीचे होगा, इत्यादि। सांप जैसे दुष्टों के प्रति दया क्यों दिखाई जाए? कौन सा मजदूर, कौन सा किसान, कौन सा सैनिक कहता है कि ऐसे दुष्टों के प्रति दया दिखाई जाए? यह सच है कि कुछ ऐसे "क्वोमिन्ताङ उदारपंथी" और गैरक्वोमिन्ताङ "उदारपंथी" हैं, जो चीनी जनता को यह सलाह देते हैं कि वह अमरीका और क्वोमिन्ताङ द्वारा पेश की गई "शान्ति" को स्वीकार कर ले, यानी साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद के बचेखुचे अंशों को दैवी वस्तु मानकर उनकी पूजा करे, जिससे कहीं इन मूल्यवान चीजों का दुनिया से लोप न हो जाए। लेकिन यह निश्चित है कि वे न तो मजदूर, किसान या सैनिक हैं और न मजदूरों, किसानों और सैनिकों के मित्र ही हैं।

हमारा मत है कि चीनी जनता के क्रान्तिकारी खेमे का विस्तार

किया जाना चाहिए और इसमें उन सबको शामिल कर लेना चाहिए जो मौजूदा मंजिल में क्रान्तिकारी कार्य में भाग लेने के इच्छुक हैं। चीनी जनता के क्रान्तिकारी कार्य को एक मुख्य दस्ते की जरूरत है और संश्रयकारियों की भी जरूरत है, क्योंकि बिना संश्रयकारियों के कोई फौज दुश्मन को नहीं हरा सकती। इस समय क्रान्ति के ऊंचे उभार में, चीनी जनता को मित्रों की जरूरत है और उसे अपने मित्रों को याद रखना चाहिए, उन्हें भूलना नहीं चाहिए। चीन में निस्सन्देह ऐसे दोस्त कम नहीं हैं जो जनता के क्रान्तिकारी कार्य के प्रति वफादार हैं, जो जनता के हितों की रक्षा करने की कोशिश करते हैं और दुश्मन के हितों की रक्षा करने का विरोध करते हैं तथा इसमें सन्देह नहीं कि इनमें से किसी भी मित्र को भूलना नहीं चाहिए या उसके प्रति उदासीन नहीं होना चाहिए। साथ ही हमारा मत है कि हमें चीनी जनता के क्रान्तिकारी खेमे को मजबूत बनाना चाहिए और उसमें बुरे तत्वों को नहीं घुसने देना चाहिए या गलत विचारों को विजयी नहीं होने देना चाहिए। इस समय क्रान्ति के ऊंचे उभार में चीनी जनता को चाहिए कि वह अपने मित्रों को याद रखने के अलावा अपने दुश्मनों और दुश्मनों के दोस्तों को भी पक्की तरह याद रखे। जैसा कि हमने ऊपर कहा है, चूंकि दुश्मन अपने मोर्चे को बनाए रखने और उसे मजबूत बनाने के लिए चालाकी के साथ "शान्ति" का तरीका और क्रान्तिकारी खेमे में घुसने का तरीका अपना रहा है, जबकि जनता के बुनियादी हितों की यह मांग है कि सभी प्रतिक्रियावादी शक्तियों को पूरी तरह नष्ट कर दिया जाए तथा अमरीकी साम्राज्यवाद की हमलावर शक्तियों को चीन से बाहर खदेड़ दिया जाए, इसलिए जो लोग जनता को दुश्मन के प्रति दया

दिखाने और प्रतिक्रियावाद की शक्तियों को बनाए रखने की सलाह देते हैं, वे जनता के मित्र नहीं बल्कि दुश्मन के मित्र हैं।

चीन की क्रान्ति का आक्रोशपूर्ण ज्वार सभी सामाजिक तबकों को अपना रवैया तय करने के लिए बाध्य कर रहा है। चीन में वर्ग-शक्तियों के सन्तुलन में एक नया परिवर्तन हो रहा है। लोग भारी तादाद में क्वोमिन्ताङ के प्रभाव और नियंत्रण से अलग हो रहे हैं और क्रान्तिकारी खेमे में आ रहे हैं; और चीनी प्रतिक्रियावादी बिलकुल हताश स्थिति में जा पड़े हैं, अकेले और असहाय। जैसे-जैसे जन-मुक्ति युद्ध अन्तिम विजय के नजदीक पहुंचता जाएगा, वैसे-वैसे समूची क्रान्तिकारी जनता और जनता के सभी मित्र ज्यादा मजबूती के साथ एक होते जाएंगे तथा वे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में दृढ़ता के साथ तब तक प्रतिक्रियावादी शक्तियों के पूर्ण सर्वनाश और क्रान्तिकारी शक्तियों के पूर्ण विकास की मांग करते जाएंगे जब तक पूरे देश में जनता का जनवादी गणराज्य कायम नहीं हो जाता और एकीकरण और जनवाद पर आधारित शान्ति प्राप्त नहीं हो जाती। इसके विपरीत अमरीकी साम्राज्यवादी, चीनी प्रतिक्रियावादी और उनके मित्र हालांकि मजबूती के साथ एक होने में असमर्थ हैं तथा वे बेअन्त आपसी झगड़ों, आपसी गाली-गलौजों, आपसी इल्जामों और दगाबाजियों में लीन हो जाएंगे, लेकिन एक मामले में वे एक दूसरे के साथ सहयोग करेंगे – हर उपाय से क्रान्तिकारी शक्तियों को नष्ट करने और प्रतिक्रियावादी शक्तियों को बनाए रखने की कोशिश करना। वे हर उपाय का इस्तेमाल करेंगे – खुले और गुप्त, सीधे और टेढ़े। लेकिन यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उनकी राजनीतिक साजिशों को भी उनके फौजी

हमलों की ही तरह हार खानी पड़ेगी। अपने समृद्ध अनुभवों के कारण, चीनी जनता और उसका जनरल स्टाफ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, दुश्मन की राजनीतिक साजिशों को भी उसके फौजी हमलों की ही तरह धूल में मिला देंगी और महान जन-मुक्ति युद्ध को अन्त तक चलाएंगी।

१९४९ में चीनी जन-मुक्ति सेना याङत्सी नदी के दक्षिण की ओर कूच करेगी और १९४८ से भी ज्यादा महान विजयें हासिल करेगी।

१९४९ में हम आर्थिक मोर्चे पर १९४८ से भी ज्यादा महान सफलताएं प्राप्त करेंगे। हमारा कृषि-उत्पादन और औद्योगिक उत्पादन पहले से ज्यादा उन्नत स्तर पर पहुंच जाएगा तथा रेल-यातायात और सड़क-यातायात पूरी तरह बहाल हो जाएगा। जन-मुक्ति सेना की मुख्य फौजी फारमेशनें अपनी फौजी कार्यवाहियों के कुछ बचेखुचे छापामार स्वरूप को छोड़ देंगी और उनकी नियमितता पहले से उन्नत स्तर पर पहुंच जाएगी।

१९४९ में राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाया जाएगा, जिसमें कोई प्रतिक्रियावादी शामिल नहीं होगा और जिसका उद्देश्य होगा जन-क्रान्ति के कार्यों को पूरा करना. चीन लोक गणराज्य की घोषणा की जाएगी और गणराज्य की केन्द्रीय सरकार की स्थापना की जाएगी। यह सरकार चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में एक ऐसी जनवादी मिलीजुली सरकार होगी जिसमें जनवादी पार्टियों और जन-संगठनों के उचित प्रतिनिधि भी शामिल होंगे।

ये हैं वे मुख्य ठोस कार्य, जिन्हें १९४९ में पूरा करने के लिए चीनी जनता को, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को तथा चीन की तमाम

जनवादी पार्टियों और जन-संगठनों को प्रयत्न करना है। हम किसी भी कठिनाई से न डरते हुए एक होकर इन कार्यों को पूरा करेंगे।

अपने संघर्ष के दौरान हम हजारों साल के सामन्ती उत्पीड़न को और सौ साल के साम्राज्यवादी उत्पीड़न को जड़-मूल से उखाड़ फेंकेंगे। १९४९ का वर्ष बेहद भारी महत्व का वर्ष होगा। हमें अपने प्रयत्नों को और ज्यादा बढ़ा देना चाहिए।

नोट

१ १९४५ में जापान के आत्मसमर्पण के बाद, क्वोमिन्ताङ सरकार ने उत्तर-पूर्व के ल्याओनिङ, चीलिन और हेलुङच्याङ नामक तीन प्रान्तों को नौ प्रान्तों में बांट दिया : ल्याओनिङ, ल्याओपेइ, आनतुङ, चीलिन, हो‍च्याङ, सुङच्याङ, हेलुङच्याङ, ननच्याङ और शिङआन। १९४९ में हमारे उत्तर-पूर्व प्रशासनिक कमीशन ने इस क्षेत्र को पांच प्रान्तों में विभाजित कर दिया : ल्याओतुङ, ल्याओशी, चीलिन, हेलुङच्याङ और सुङच्याङ। जेहोल के साथ मिलाकर इन प्रान्तों को उस समय उत्तर-पूर्व के छै प्रान्त कहा जाता था। १९५४ में केन्द्रीय जन-सरकार की परिषद ने ल्याओतुङ और ल्याओशी को मिलाकर ल्याओनिङ प्रान्त बना दिया तथा सुङच्याङ और हेलुङच्याङ को मिलाकर हेलुङच्याङ प्रान्त बना दिया। चीलिन प्रान्त को ज्यों का त्यों रहने दिया गया। १९५५ में जेहोल प्रान्त को तोड़ दिया गया और उसके इलाके को बांटकर हपे और ल्याओनिङ दो प्रान्तों में शामिल कर दिया गया।

२ इन मुख्य स्थलों पर कब्जा करने की तारीखें ये थीं : शच्याच्वाङ, १२ नवम्बर १९४७ ; युनछङ, २८ दिसम्बर १९४७ ; सफिङ, १३ मार्च १९४८ ; लोयाङ, पहली बार १४ मार्च १९४८ और दूसरी बार ५ अप्रैल १९४८ ; ईछ्वान, ३ मार्च १९४८ ; पाओची, २६ अप्रैल १९४८ ; वेइश्येन, २७ अप्रैल १९४८ ; लिनफन, १७ मई १९४८ ; खाएफङ, २२ जून १९४८। इन सब शहरों की रक्षा

के लिए किलेबन्दियों के बहुत से समूह बनाए गए थे और कुछ शहरों में ऊंची और चौड़ी चहारदीवारी भी बनी हुई थी ; साथ ही उनमें सहायक प्रतिरक्षा निर्माण-कार्य भी मौजूद थे, जिनमें खन्दकों की अनेक पंक्तियां, कांटेदार तार की बाड़ें और बारूदी-सुरंगें शामिल थीं । उस समय हमारी सेना के पास न तो हवाई-जहाज थे और न टैंक, तथा तोपखाना फौज तो थी ही नहीं और थी भी तो नहीं के बराबर । उपर्युक्त शहरों पर हमला और कब्जा करते समय हमारी सेना ने मजबूत किलेबन्दियों पर कब्जा करने की कार्यनीतियों का एक पूरा समूह सीख लिया । ये कार्यनीतियां इस प्रकार थीं :

(१) सिलसिलेवार विध्वंस – दुश्मन के विभिन्न प्रतिरक्षा संस्थानों का सिलसिलेवार विध्वंस करने के लिए विस्फोटकों का इस्तेमाल करना ;

(२) सुरंग की कार्यवाहियां – दुश्मन की किलेबन्दियों या शहर की चहारदीवारियों के नीचे तक गुप्त रूप से सुरंगें खोदना, इसके बाद उन्हें विस्फोटकों से उड़ा देना तथा इसके फौरन बाद भीषण आक्रमण करना ;

(३) खन्दकों के जरिए आगे बढ़ने की कार्यवाहियां – दुश्मन की मजबूत मोर्चेबन्दियों तक खन्दकें खोदना और तब छिपकर दुश्मन के समीप पहुंचकर उस पर अचानक हमला कर देना ;

(४) विस्फोटकों के पुलिन्दे फेंकना – दुश्मन की प्रतिरक्षा व्यवस्था को नष्ट करने के लिए सिगार-प्रक्षेपकों या मार्टरों से विस्फोटकों के पुलिन्दे फेंकना ;

(५) "तेज छुरी" कार्यनीति – सैन्य-शक्ति और फायर करने की शक्ति को केन्द्रित करते हुए दुश्मन के मोर्चे के एक हिस्से को तोड़कर घुस जाना और दुश्मन की फौज को अलग-अलग टुकड़ों में काट देना ।

३ जिन ब्रिगेडों का हवाला यहां दिया गया है, वे क्वोमिन्ताङ सेना के पुनर्गठन के बाद की ब्रिगेडें हैं, अर्थात डिवीजनें पुनर्गठन के पहले की डिवीजनें हैं (जो वास्तव में पुनर्गठित ब्रिगेड के ही समान थीं) ।

४ "मध्यम मार्ग" को "तीसरा रास्ता" भी कहा जाता था । देखिए इसी ग्रन्थ में "वर्तमान परिस्थिति और हमारे कार्य" शीर्षक रचना का नोट ८ ।

५ "नेकी के बदले बदी", इसका की नीतिकथाएं ।

युद्ध-अपराधी द्वारा शान्ति के लिए मिन्नतें किए जाने के बारे में*

५ जनवरी १९४९

चीनी प्रतिक्रियावादी शक्तियों को तथा चीन में अमरीकी आक्रमणकारी शक्तियों को बनाए रखने के उद्देश्य से चीन के अव्वल नम्बर के युद्ध-अपराधी तथा क्वोमिन्ताङ डाकू-गुट के सरगना च्यांङ काई-शेक ने नए साल के दिन शान्ति के लिए मिन्नतें करने का एक बयान जारी किया है । युद्ध-अपराधी च्यांङ काई-शेक कहता है :

> मेरी इसके अलावा और कोई ख्वाहिश नहीं है कि शान्ति-वार्ता से देश की स्वतंत्रता व अखण्डता को नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए, इसके विपरीत इससे जनता के पुनर्वास में मदद मिलनी चाहिए ; यह कि मेरे कार्य से पवित्र संविधान का उल्लंघन नहीं होना चाहिए और इसके फलस्वरूप जनवादी संविधानवाद को क्षति नहीं पहुंचनी चाहिए ; यह कि चीन गणराज्य के राजतंत्र के स्वरूप की गारन्टी कर दी जानी चाहिए और चीन गणराज्य

* यह टिप्पणी कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा सिनह्वा समाचार-एजेन्सी के लिए सिलसिलेवार लिखी गई उन अनेक टिप्पणियों में से पहली है जिन्हें क्वोमिन्ताङ द्वारा प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियों को बनाए रखने के उद्देश्य से शान्ति-वार्ता को

> के विधिसम्मत सत्ताधिकार में खलल नहीं डालना चाहिए ; यह कि सशस्त्र सेना को निश्चित रूप से बनाए रखना चाहिए और यह कि जनता को अपने रहन-सहन के स्वतंत्र तौर-तरीकों को जारी रखने तथा अपने मौजूदा न्यूनतम जीवन-स्तर को बनाए रखने की इजाजत होनी चाहिए ।
>
> . . . अगर केवल शान्ति स्थापित हो जाए, तो मुझे इस बात की बिलकुल चिन्ता नहीं कि मैं अपने पद पर बना रहता हूं या रिटायर हो जाता हूं, मैं जनता की सामान्य इच्छा के अनुसार अमल करूंगा ।

लोगों को ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि एक युद्ध-अपराधी द्वारा शान्ति के लिए मिन्नतें किए जाने की बात कुछ हास्यास्पद है, और न ही उन्हें ऐसा सोचना चाहिए कि शान्ति के लिए ऐसा बयान बिलकुल नफरत-आमेज है । यह समझ लेना चाहिए कि अव्वल नम्बर के युद्ध-अपराधी तथा क्वोमिन्ताङ डाकू-गुट के सरगना द्वारा व्यक्तिगत रूप से शान्ति के लिए मिन्नतें करना और इस तरह का बयान जारी करना, जाहिरा तौर पर चीनी जनता के लिए कुछ फायदे की ही चीज है, क्योंकि इससे क्वोमिन्ताङ डाकू-गुट तथा अमरीकी साम्राज्यवाद की साजिशों को अच्छी तरह से समझ लेने में जनता को मदद मिलती है । इससे चीनी जनता यह समझ सकती है कि "शान्ति" ही, जिसके बारे में हाल ही में इतनी चीख-पुकार मचाई गई है, वह वस्तु है जिसकी च्याङ काई-शेक हत्यारे गुट को तथा उसके अमरीकी आका को सख्त जरूरत है ।

च्याङ काई-शेक ने अपने गुट द्वारा रची गई समूची साजिश को कबूल कर लिया है । इस साजिश की मुख्य बातें इस प्रकार हैं :

"शान्ति-वार्ता से देश की स्वतंत्रता व अखण्डता को नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए" – यह सर्वाधिक महत्व का सवाल है । "शान्ति" ठीक है, लेकिन ऐसी "शान्ति" पर लाखों बार लानत है जो चार बड़े घरानों तथा दलाल-पूंजीपति वर्ग व जमींदार वर्ग द्वारा नियंत्रित राज्य की "स्वतंत्रता व अखण्डता" को नुकसान पहुंचाए । ऐसी "शान्ति" कतई अस्वीकार्य है जो चीन-अमरीका मैत्री, वाणिज्य व जहाजरानी सन्धि, चीन-अमरीका हवाई यातायात करार[१] तथा चीन-अमरीका द्विपक्षीय करार[२] जैसी सन्धियों को नुकसान पहुंचाए या जो चीन में स्थलसेना, नौसेना तथा वायुसेना के तैनात करने, फौजी अड्डे कायम करने, खानों की सम्पदा को हड़पने और व्यापार में इजारेदारी कायम करने जैसे अमरीका के विशेषाधिकारों को नुकसान पहुंचाए, या जो चीन के अमरीकी उपनिवेश बन जाने में बाधा उपस्थित करे – संक्षेप में, जो च्याङ काई-शेक के प्रतिक्रियावादी राज्य की "स्वतंत्रता व अखण्डता" की रक्षा करने वाले किन्हीं भी उपायों को नुकसान पहुंचाए ।

"जनता के पुनर्वास में मदद मिलनी चाहिए" – अर्थात, "शान्ति"

इस्तेमाल किए जाने का पर्दाफाश करने के लिए लिखा गया था । सिलसिलेवार लिखी गई अन्य टिप्पणियों में ये शामिल हैं : "बुरी तरह छिन्न-भिन्न प्रतिक्रियावादी क्यों अभी भी 'पूर्ण शान्ति' की व्यर्थ चीख-पुकार मचा रहे हैं ?", "क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों द्वारा 'शान्ति की अपील' से बदलकर 'युद्ध की अपील'", "युद्ध की जिम्मेदारी के सवाल पर क्वोमिन्ताङ के अलग-अलग जवाबों के बारे में टिप्पणी" और "नानकिङ सरकार किधर ?" ।

ऐसी होनी चाहिए जिससे कि उन चीनी प्रतिक्रियावादियों के पुनर्वास में मदद मिले जो पराजित हो चुके हैं लेकिन जिनका अभी तक सफाया नहीं किया गया है, ताकि एक बार पुनर्स्थापित हो जाने के बाद वे फिर से शान्ति की ज्वालाओं को बुझा सकें। वास्तव में "शान्ति" से उनका प्रयोजन बिल्कुल यही है। ढाई वर्षों से युद्ध चल रहा है, "दुम हिलाकर मालिक के पीछे दौड़ने वाले कुत्ते अब दौड़ नहीं पा रहे हैं" और अमरीकी नाराज हो रहे हैं ; विश्राम, चाहे वह थोड़े से ही अरसे के लिए क्यों न हो, बिलकुल विश्राम न कर पाने से तो कहीं अच्छा है।

"मेरे कार्य से पवित्र संविधान का उल्लंघन नहीं होना चाहिए और इसके फलस्वरूप जनवादी संविधानवाद को क्षति नहीं पहुंचनी चाहिए ; चीन गणराज्य के राजतंत्र के स्वरूप की गारन्टी कर दी जानी चाहिए और चीन गणराज्य के विधिसम्मत सत्ताधिकार में खलल नहीं डालना चाहिए" – इस सबका मतलब यह है कि चीन के प्रतिक्रियावादी वर्गों व प्रतिक्रियावादी सरकार की शासक की हैसियत की गारन्टी कर दी जानी चाहिए और इस बात की गारन्टी कर दी जानी चाहिए कि इन वर्गों तथा उनकी सरकार के "विधिसम्मत सत्ताधिकार में खलल नहीं डाला जाएगा"। इस "विधिसम्मत सत्ताधिकार" में निश्चित रूप से "खलल" नहीं डाला जाना चाहिए, क्योंकि इसमें "खलल" डालना निहायत खतरनाक होगा – इसका मतलब होगा सारे के सारे दलाल-पूंजीपति वर्ग व जमींदार वर्ग का खात्मा करना, क्वोमिन्ताङ डाकू-गुट का खात्मा करना और बड़े, मझोले व छोटे सभी युद्ध-अपराधियों को गिरफ्तार करना तथा उन्हें सजा देना।

"सशस्त्र सेना को निश्चित रूप से बनाए रखना चाहिए" – यह दलाल-पूंजीपति वर्ग व जमींदार वर्ग का जीवन-आधार है, और हालांकि घृणित जन-मुक्ति सेना ने दसियों लाख का सफाया कर डाला है, फिर भी अभी दस लाख से अधिक सेना मौजूद है जिसे "बनाए रखना" चाहिए, और वह भी "निश्चित रूप से"। अगर उसे "बनाए रखा जाए" लेकिन "निश्चित रूप से" नहीं, तो दलाल-पूंजीपति वर्ग व जमींदार वर्ग को अपनी पूंजी से हाथ धोना पड़ेगा, उनके "विधि-सम्मत सत्ताधिकार" में "खलल" पड़ेगा, क्वोमिन्ताङ डाकू-गुट का खात्मा हो जाएगा, बड़े, मझोले तथा छोटे समस्त युद्ध-अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा तथा उन्हें सजा दी जाएगी। जिस तरह "भव्य दर्शन उद्यान" के च्या पाओ-य्वी का जीवन उसके गले के हार में जड़े हुए जेड के एक टुकड़े पर निर्भर था,[1] उसी तरह क्वोमिन्ताङ का जीवन भी उसकी सेना पर निर्भर है, इसलिए कोई यह कैसे कह सकता है कि क्वोमिन्ताङ सेना को नहीं "बनाए रखना" चाहिए, अथवा महज "बनाए रखना" चाहिए मगर "निश्चित रूप से" नहीं ?

"जनता को अपने रहन-सहन के स्वतन्त्र तौर-तरीकों को जारी रखने तथा अपने मौजूदा न्यूनतम जीवन-स्तर को बनाए रखने की इजाजत होनी चाहिए" – इसका मतलब यह है कि चीनी दलाल-पूंजीपति वर्ग व जमींदार वर्ग को देशभर की जनता का शोषण व उत्पीड़न करने की अपनी आजादी को तथा अपनी शाहाना, ऐश-परस्ताना, अय्याशाना व काहिलाना जिन्दगी के मौजूदा स्तर को बरकरार रखना चाहिए, जबकि चीनी मेहनतकश जनता को उत्पी-ड़ित व शोषित होने की अपनी आजादी को बरकरार रखना चाहिए और अपने मौजूदा जीवन-स्तर को, ठण्ड व भूख से तड़पती जिन्दगी

को बनाए रखना चाहिए। युद्ध-अपराधियों द्वारा शान्ति के लिए मिन्नतें किए जाने का यही अन्तिम उद्देश्य है। ऐसी शान्ति आखिर किस काम की है जिसमें युद्ध-अपराधी तथा उनके वर्ग, उत्पीड़न करने व शोषण करने की अपनी आजादी को बरकरार नहीं रख सकते और अपने शाहाना, ऐशपरस्ताना, अय्याशाना व काहिलाना जीवन के मौजूदा स्तर को बनाए नहीं रख सकते ? इन सबको बरकरार रखने के लिए, निस्सन्देह मजदूरों, किसानों, बुद्धिजीवियों, सरकारी कर्मचारियों तथा शिक्षकों के लिए यह जरूरी है कि वे अपने मौजूदा "रहन-सहन के स्वतंत्र तौर-तरीकों को तथा न्यूनतम जीवन-स्तर" को, ठण्ड व भूख से तड़पती जिन्दगी को, बनाए रखें। जब हमारे परमप्रिय प्रेसीडेन्ट च्यांङ यह शर्त पेश करते है, तो कई करोड़ मजदूर, दस्तकार-मजदूर व आजाद पेशे वाले लोग, दसियों करोड़ किसान, और दसियों लाख बुद्धिजीवी, सरकारी कर्मचारी व शिक्षक, एक साथ मिलकर महज करतल-ध्वनि ही कर सकते है, और साष्टांग दण्डवत करते हुए महज दुआएं ही कर सकते है कि "प्रेसीडेन्ट साहब अमर रहें !" अगर कम्युनिस्ट पार्टी शान्ति स्थापित करने से फिर भी इनकार करती है, जिसके फलस्वरूप रहन-सहन के ये बढ़िया तौर-तरीके तथा यह बढ़िया जीवन-स्तर बरकरार नहीं रखे जा सकते, तो फिर वह एक ऐसे जुर्म की अपराधी साबित हो जाएगी जिसके लिए उसे दस हजार बार भी मौत की सजा दी जा सकती है, और "इसके जो तमाम नतीजे होंगे उनके लिए कम्युनिस्ट पार्टी ही जिम्मेदार होगी"।

इतना सब कह डालने पर भी, शान्ति के लिए मिन्नतें करने वाले युद्ध-अपराधी के पहली जनवरी के बयान में अजीबोगरीब विचारों

का जो खजाना मौजूद है उसकी सभी चीजें हम पेश नहीं कर पाए। एक और बेहतरीन चीज है – जिसे च्यांङ काई-शेक ने अपने नए साल के सन्देश में "नानकिङ-शांघाई सेक्टर की एक निर्णयात्मक लड़ाई" कहा है। इस किस्म की "निर्णयात्मक लड़ाई" लड़ने के लिए आखिर ताकत कहां है ? च्यांङ काई-शेक कहता है, "यह समझ लेना चाहिए कि आज फौजी, राजनीतिक या आर्थिक क्षेत्र में सरकार की ताकत कम्युनिस्ट पार्टी की ताकत के मुकाबले कई गुनी अथवा दसियों गुनी अधिक है"। क्या खूब कहा ! इस बेइन्तहा ताकत को देखकर आखिर डर के मारे लोगों के प्राण क्यों न सूख जाएं ? राज-नीतिक व आर्थिक ताकत की बात को एक किनारे रखकर अगर हम महज "फौजी ताकत" को ही लें, तो पता चल जाएगा कि जन-मुक्ति सेना के पास इस वक्त तीस लाख से ज्यादा सैनिक है, कि इस संख्या से दुगुनी "अधिक" संख्या साठ लाख से ज्यादा हो जाती है और दस गुनी "अधिक" संख्या तीन करोड़ से ज्यादा हो जाती है। तो फिर "दसियों गुनी अधिक" संख्या भला कितनी होगी ? आइए, जरा बीस गुनी मानकर हिसाब लगाएं, तो यह संख्या छै करोड़ से ज्यादा पहुंच जाएगी। यह कोई ताज्जुब की बात नहीं कि प्रेसीडेन्ट च्यांङ कहता है कि उसे "इस निर्णयात्मक लड़ाई में जीतने का पूरा विश्वास है"। तब फिर वह शान्ति के लिए क्यों गिड़गिड़ा रहा है ? निस्सन्देह इसलिए नहीं कि वह लड़ नहीं सकता। क्योंकि अगर वह छै करोड़ से ज्यादा सेना लेकर जोर लगाए, तो फिर क्या दुनिया में किसी भी कम्युनिस्ट पार्टी या अन्य पार्टी के जिन्दा बचने की कोई गुंजाइश रहती है ? जाहिर है सभी चकनाचूर हो जाएंगे। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जब वह शान्ति के लिए गिड़गिड़ा रहा है तो

निश्चित रूप से "जनता की जान बचाने के लिए वकालत करने" के अलावा इसका और कोई कारण नहीं है।

लेकिन क्या हर चीज बिना किसी विघ्न-बाधा के सुचारु रूप से चल रही है? ऐसा कहा जाता है कि विघ्न-बाधा मौजूद है। तो फिर विघ्न-बाधा आखिर है क्या? प्रेसीडेन्ट ल्याङ फरमाते हैं:

> अफसोस की बात है कि हमारी सरकार में ऐसे लोग मौजूद हैं जो बदकिस्मती से भरे कम्युनिस्ट प्रचार के असर में आ गए हैं और परिणामस्वरूप हमेशा दुविधापूर्ण स्थिति में फंसे रहते हैं तथा अपना आत्मविश्वास प्राय: खो बैठे हैं। विचारधारात्मक दृष्टि से कम्युनिस्टों से खतरा महसूस करते हुए वे केवल दुश्मन की ही ताकत को देखते हैं, लेकिन हमारी अपनी जबरदस्त ताकत को नहीं देखते, जो दुश्मन की ताकत के मुकाबले दसियों गुनी अधिक है।

बात यह है कि प्रत्येक वर्ष समाचारों की एक अच्छी खासी फसल होती है, लेकिन इस वर्ष की यह फसल बहुत ही खास किस्म की है। क्या यह बहुत ही खास किस्म का समाचार नहीं है कि क्वोमिन्ताङ के लोग, जिनके पास अफसर व सिपाही मिलाकर छै करोड़ से ज्यादा हैं, तीस लाख से ज्यादा सैनिकों वाली जन-मुक्ति सेना को ही देखते हैं, लेकिन छै करोड़ से ज्यादा सैनिकों वाली खुद अपनी सेना को नहीं देख पाते?

कोई पूछ सकता है, "इस तरह के समाचारों का कोई ग्राहक है या नहीं?" और "क्या यह समाचार इस काबिल भी है कि इस पर नजर डाली जाए?" पेकिङ शहर के भीतर से प्राप्त सूचना के अनुसार,

"नए साल के दिन सुबह के वक्त चीजों के दाम कुछ गिर गए, लेकिन दोपहर बाद वे फिर से चढ़कर ज्यों के त्यों हो गए।" और एक विदेशी समाचार-एजेन्सी ने रिपोर्ट दी है, "च्याङ काई-शेक के नए साल के सन्देश के प्रति शांघाई में लोगों का रुख उदासीनतापूर्ण है।" यह उस सवाल का जवाब है कि क्या युद्ध-अपराधी च्याङ काई-शेक के भी कोई ग्राहक हैं? जैसा कि हम बहुत पहले ही कह चुके हैं, च्याङ काई-शेक की रूह फना हो चुकी है, वह महज एक बेजान लाश की तरह है, और अब किसी को भी उस पर विश्वास नहीं रह गया है।

नोट

१ च्याङ काई-शेक सरकार और अमरीकी साम्राज्यवाद के बीच "चीन-अमरीका हवाई यातायात करार" पर २० दिसम्बर १९४६ को हस्ताक्षर हुए थे। इस करार में च्याङ काई-शेक ने चीन के प्रादेशिक आकाश पर चीन की प्रभुसत्ता को पूरी तरह बेच दिया। इस करार की शर्तों के अनुसार अमरीकी हवाईजहाजों को इस बात की इजाजत थी कि वे चीन के भीतर जहां चाहें उड़ान करें, सामान लादें और उतारें अथवा वाहनों की अदला-बदली करें, तथा इस तरह अमरीका ने चीन के हवाई यातायात को पूरी तरह अपने नियंत्रण में कर लिया था। अमरीकी हवाईजहाजों को "नान-ट्रैफिक स्टाप" का अधिकार, अर्थात चीन के प्रदेश पर सैन्य-अवतरण का अधिकार भी प्राप्त हो गया था।

२ "चीन-अमरीका द्विपक्षीय करार" तथाकथित "चीन-अमरीका आर्थिक सहायता करार" था जिस पर ३ जुलाई १९४८ को नानकिङ में च्याङ काई-शेक सरकार के प्रतिनिधि तथा अमरीकी साम्राज्यवाद के प्रतिनिधि ने हस्ताक्षर किए थे। इसमें निर्धारित किया गया था कि अमरीकी साम्राज्यवाद को च्याङ काई-शेक सरकार के वित्तीय व आर्थिक मामलों का निरीक्षण करने तथा उनके बारे में

फैसले लेने का सर्वोच्च अधिकार प्राप्त होगा, यह कि चीन में अपना सीधा नियंत्रण लागू करने वाले अमरीकी कर्मचारी "राज्यक्षेत्रातीत अधिकारों" का उपभोग करेंगे, और यह कि अमरीकी साम्राज्यवाद चीन से अपनी जरूरत की कोई भी सामरिक महत्व की सामग्री प्राप्त कर सकेगा और इस किस्म की सामग्री की उपलब्धि के बारे में च्याङ काई-शेक सरकार अमरीकी साम्राज्यवाद को नियमित रूप से सूचना देती रहेगी। इस करार से च्याङ काई-शेक सरकार ने इस बात की भी गारन्टी कर दी कि चीन के बाजारों को अमरीकी माल से पाट दिया जाएगा।

* च्या पाओ-य्वी "लाल भवन का सपना" नामक १८वीं सदी के चीनी उपन्यास का एक पात्र था, और "भव्य दर्शन उद्यान" उसका एक पारिवारिक बगीचा था। कहा जाता है कि जब च्या पाओ-य्वी पैदा हुआ तो उसके मुह में जेड का एक टुकड़ा मौजूद था। जेड का यह टुकड़ा उसके "जीवन का आधार" माना जाता था। च्या पाओ-य्वी हमेशा उसे अपने गले में पहने रहता था और क्षण भर भी उससे अलग नहीं रह सकता था। अगर जेड का यह टुकड़ा खो जाए, तो उसके मूर्छित होने का खतरा था।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के अध्यक्ष माओ त्सेतुङ का वर्तमान परिस्थिति के बारे में वक्तव्य

१४ जनवरी १९४९

जुलाई १९४६ से लेकर अब तक ढाई साल बीत चुके हैं जबकि प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार ने अमरीकी साम्राज्यवादियों की मदद से जनता की मरजी के खिलाफ काम किया, युद्ध-विराम समझौते को तथा राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावों को फाड़ फेंका और देशव्यापी प्रतिक्रान्तिकारी गृहयुद्ध छेड़ दिया। युद्ध के इन ढाई वर्षों में, प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार ने जनता की मरजी के खिलाफ काम करते हुए एक बोगस राष्ट्रीय एसेम्बली बुला डाली, एक बोगस संविधान घोषित कर दिया, एक बोगस प्रेसीडेन्ट निर्वाचित कर लिया और तथाकथित "विद्रोह का दमन करने के लिए लामबन्दी" के बारे में एक बोगस आदेश जारी कर दिया ; अमरीका सरकार के हाथ बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय अधिकारों को बेच डाला और अरबों अमरीकी डालर कर्जा अपने सिर पर चढ़ा लिया ; अमरीकी नौसेना व वायुसेना को दावत दे दी कि वे चीन की प्रादेशिक भूमि और प्रादेशिक समुद्र व आकाश पर कब्जा जमा लें ; अमरीका सरकार के साथ अनेकों वतनफरोश

सन्धियां कर डालीं और चीन के गृहयुद्ध में अमरीकी फौजी सलाहकार ग्रुप की शिरकत को मंजूर कर लिया ; और चीनी जनता का कत्लेग्राम करने के लिए अमरीका सरकार से बहुत बड़ी मात्रा में हवाईजहाज, टैंक, हल्की व भारी तोपें, मशीनगनें, राइफलें, गोला-बारूद, गोलियां और अन्य युद्ध-सामग्री प्राप्त कर लीं । इन्ही प्रतिक्रियावादी व देशद्रोहपूर्ण घरेलू व वैदेशिक बुनियादी नीतियों के आधार पर प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार ने अपने दसियों लाख सैनिकों को आदेश दे दिया कि वे चीनी जनता के मुक्त क्षेत्रों और चीनी जन-मुक्ति सेना पर घातक हमले करें । पूर्वी चीन, मध्यवर्ती मैदान, उत्तरी चीन, उत्तर-पश्चिमी चीन तथा उत्तर-पूर्वी चीन में स्थित जनता के तमाम मुक्त क्षेत्रों को, बिना किसी अपवाद के, क्वोमिन्ताङ फौजों ने पैरों तले रौंद डाला । मुक्त क्षेत्रों के प्रमुख शहरों, जैसे येनान, चाङच्याखओ, ह्वाएइन, होत्से, तामिङ, लिनई, येनथाए, छङते, सफिङ, छाङछुन, चीलिन और आनतुङ को डाकू फौजों ने किसी न किसी वक्त अपने कब्जे में कर लिया । जहां कहीं भी वे गए, उन्होंने कत्लेग्राम व बलात्कार किया, आगजनी व लूटमार की, और कोई भी ऐसा कुकर्म नहीं जिसे उन्होंने न किया हो । जिन इलाकों में प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार का शासन है, वहां वह तथाकथित "विद्रोह का उन्मूलन करने तथा डाकुओं का विनाश करने" के लिए जनता से जबरन अनाज-लेवियां व टैक्स लेकर और बेगार करवा कर व्यापक जन-समुदाय का – मजदूरों, किसानों, सैनिकों, बुद्धिजीवियों व व्यापारियों का – खून चूसती है । प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार जनता को उसकी तमाम स्वतंत्रताओं व अधिकारों से वंचित कर देती है; वह

तमाम जनवादी पार्टियों व जन-संगठनों को उनकी कानूनी हैसियत से वंचित रखकर उनका उत्पीड़न करती है ; वह गृहयुद्ध, भुखमरी व अत्याचार के खिलाफ तथा अमरीका द्वारा चीन के अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप के खिलाफ और अमरीका द्वारा जापान में आक्रमणकारी शक्तियों को बढ़ावा दिए जाने के खिलाफ विद्यार्थियों के न्यायपूर्ण आन्दोलन का दमन करती है ; उसने देशभर में बेलगाम राष्ट्रीय मुद्रा और बेलगाम स्वर्ण-ख्वान नोटों को अन्धाधुन्ध तरीके से फैला रखा है, इस तरह जनता के आर्थिक जीवन को तहस-नहस कर डाला है और व्यापक जन-समुदाय को दिवालिया बना दिया है ; और पैसा हड़पने के विभिन्न हथकण्डे अपनाकर उसने देश की सम्पदा के अधिकतम भाग को उन नौकरशाह-पूंजीपतियों के हाथों में केन्द्रित कर दिया है जिनकी अगुवाई च्याङ, सुङ, खुङ तथा छन नामक चार बड़े घराने करते हैं । संक्षेप में, प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार ने अपनी प्रतिक्रियावादी व देशद्रोहपूर्ण घरेलू व वैदेशिक बुनियादी नीतियों पर आधारित गृहयुद्ध छेड़कर समूचे देश की जनता को भीषण संकट में डाल दिया है ; इन सब बातों की पूरी जिम्मेदारी से वह हरगिज बच नहीं सकती । क्वोमिन्ताङ के विपरीत, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने जापान द्वारा आत्मसमर्पण किए जाने के बाद क्वोमिन्ताङ सरकार से यथासम्भव इस बात का आग्रह करने की पूरी कोशिश की कि गृहयुद्ध रोक दिया जाए तथा बिलकुल बन्द कर दिया जाए और देश के अन्दर शान्ति स्थापित की जाए । इस नीति पर चलते हुए, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने दृढ़ता से संघर्ष चलाया और सारे देश की जनता के समर्थन से सबसे पहले अक्तूबर १९४५ में "क्वोमिन्ताङ और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के बीच हुई बातचीत का

सारांश" नामक दस्तावेज पर हस्ताक्षर करवा लिए। जनवरी १९४६ में पार्टी ने फिर से क्वोमिन्ताङ के साथ एक युद्ध-विराम समझौते पर हस्ताक्षर किए और जनवादी पार्टियों के सहयोग से उसने क्वोमिन्ताङ को इस बात के लिए मजबूर कर दिया कि वह राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के मुश्तरका प्रस्तावों को मंजूर करे। उसके बाद से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी जनवादी पार्टियों तथा जन-संगठनों के साथ मिलकर इन समझौतों व प्रस्तावों को कायम रखने के लिए प्रयत्नशील रही। लेकिन अफसोस की बात है कि अन्दरूनी शान्ति तथा जनता के जनवादी अधिकारों की हिफाजत के लिए हमारे द्वारा की गई किसी भी कार्यवाही का प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार ने जरा भी सम्मान नहीं किया। उल्टे, हमारी इस तरह की कार्यवाहियों को कमजोरी की निशानी समझा गया और इन पर ध्यान देने की जरूरत ही महसूस नहीं की गई। प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार ने यह सोचा था कि जनता को डराया-धमकाया जा सकता है, यह कि युद्ध-विराम समझौते व राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावों को मनमाने ढंग से फाड़ा जा सकता है, यह कि जन-मुक्ति सेना एक ही प्रहार में बोल जाएगी, जबकि क्वोमिन्ताङ की अपनी फौजें, जिनकी तादाद दसियों लाख है, सारे देश पर हावी हो सकेंगी, और यह कि अमरीका सरकार से मिलने वाली सहायता का स्रोत प्रवाहित होता रहेगा। इसीलिए प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार ने सारे देश की जनता की मरजी के खिलाफ काम करने और प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध छेड़ देने की जुर्रत की। ऐसी परिस्थिति में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के पास सिवाय इसके और कोई चारा नहीं था कि वह क्वोमिन्ताङ सरकार की प्रतिक्रियावादी नीतियों के खिलाफ दृढ़ता

के साथ उठ खड़ी हो और देश की स्वतंत्रता तथा जनता के जनवादी अधिकारों की हिफाजत के लिए संघर्ष छेड़ दे। जुलाई १९४६ से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने बहादुर जन-मुक्ति सेना का नेतृत्व करते हुए प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार की ४३,००,००० फौजों द्वारा किए गए हमलों को पीछे ढकेल दिया, और फिर प्रत्याक्रमण करके मुक्त क्षेत्रों के तमाम खोए हुए प्रदेशों को वापस ले लिया और शच्याच्वाङ, लोयाङ, चीनान, चङचओ, खाएफ़ङ, शनयाङ, ग्वीनओ तथा थाङशान जैसे अनेक बड़े शहरों को मुक्त करा लिया। चीनी जन-मुक्ति सेना ने अभूतपूर्व कठिनाइयों पर काबू पा लिया, अपनी शक्ति में बढ़ोतरी की और अमरीका सरकार द्वारा क्वोमिन्ताङ सरकार को भारी मात्रा में दिए गए हथियारों से अपने आपको लैस कर लिया। ढाई वर्षों में उसने प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार की मुख्य फौजी शक्ति का तथा उसकी तमाम चुनिन्दा डिवीजनों का सफाया कर डाला। आज जन-मुक्ति सेना संख्या, मनोबल तथा साज-सामान में प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार की बचीखुची फौजी शक्तियों के मुकाबले कहीं अधिक बेहतर है। अब कहीं ऐसा वक्त आया है जब चीनी जनता ने आजादी से सांस लेनी शुरू की है। मौजूदा स्थिति बिल्कुल साफ है – अगर जन-मुक्ति सेना ने क्वोमिन्ताङ की बचीखुची फौजों के खिलाफ और चन्द जबरदस्त हमले किए तो प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ शासन का सारा का सारा ढांचा चरमराकर गिर पड़ेगा और नष्ट हो जाएगा। गृहयुद्ध चलाने की नीति पर अमल करने के बाद अब प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार अपनी करनी का फल भोग रही है, उसके लोग बगावत कर बैठे हैं, उसके घनिष्ठ अनुयायी उसे छोड़कर भाग रहे हैं, और अब वह अपने आपको बर-

करार नहीं रख पा रही। इन परिस्थितियों में, क्वोमिन्ताङ सरकार की बचीखुची शक्तियों को बनाए रखने की गरज से और क्रान्तिकारी शक्तियों को नष्ट करने के लिए नए हमले शुरू करने से पहले जरा दम लेने की गरज से, च्याङ काई-शेक ने, जो चीन का अव्वल नम्बर का युद्ध-अपराधी, क्वोमिन्ताङ डाकू-गुट का सरगना तथा नानकिङ सरकार का बोगस प्रेसीडेन्ट है, इस साल पहली जनवरी को यह सुझाव पेश किया कि वह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ शान्ति-वार्ता शुरू करने के लिए तैयार है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी इस सुझाव को पाखण्डपूर्ण समझती है। कारण यह है कि च्याङ काई-शेक ने शान्ति-वार्ता के आधार के रूप में ऐसी शर्तें रखी हैं जैसे, बोगस संविधान को बरकरार रखना, बोगस "विधिसम्मत सत्ताधिकार" को बरकरार रखना और प्रतिक्रियावादी सशस्त्र शक्तियों को बरकरार रखना, ऐसी शर्तें जिन्हें देशभर की जनता मानने के लिए तैयार नहीं हो सकती। ये शान्ति की शर्तें नहीं, बल्कि युद्ध जारी रखने की शर्तें हैं। पिछले दस दिनों में सारे देश की जनता ने अपनी इच्छा को स्पष्ट रूप से जाहिर कर दिया है। वह जल्दी से जल्दी शान्ति स्थापित करने के लिए बेहद इच्छुक है, लेकिन वह युद्ध-अपराधियों द्वारा प्रतिपादित तथाकथित शान्ति को स्वीकार नहीं करती, उनकी प्रतिक्रियावादी शर्तों को स्वीकार नहीं करती। जनता की इस इच्छा को आधार बना कर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ऐलान करती है कि हालांकि चीनी जन-मुक्ति सेना के पास अनतिदूर भविष्य में प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार की बचीखुची सशस्त्र शक्तियों का पूरी तरह सफाया कर देने के लिए काफी शक्ति मौजूद है और बहुत से कारण मौजूद हैं तथा उसे पूरा विश्वास है कि वह ऐसा कर सकती है, फिर भी जल्दी से

जल्दी युद्ध को समाप्त करने के लिए, वास्तविक शान्ति प्राप्त करने के लिए और जनता की मुसीबतों को कम करने के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार के साथ या किन्हीं भी स्थानीय सरकारों के साथ अथवा क्वोमिन्ताङ के फौजी ग्रुपों के साथ निम्नलिखित शर्तों के आधार पर शान्ति-वार्ता करने के लिए तैयार है:

(१) युद्ध-अपराधियों को सजा देना;
(२) बोगस संविधान को रद्द कर देना;
(३) बोगस "विधिसम्मत सत्ताधिकार" को रद्द कर देना;
(४) तमाम प्रतिक्रियावादी सेनाओं का जनवादी उसूलों के आधार पर पुनर्गठन करना;
(५) नौकरशाही-पूंजी को जब्त कर लेना;
(६) भूमि-व्यवस्था में सुधार करना;
(७) वतनफरोश सन्धियों को रद्द करना;
(८) एक राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाना जिसमें प्रतिक्रियावादी तत्वों को शामिल न किया जाए, तथा एक जनवादी मिलीजुली सरकार बनाना जो प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार और उसके अधीन सभी स्तरों की सरकारों के हाथ से सारी की सारी सत्ता ले ले।[1]

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का मत है कि उपरोक्त शर्तें देशभर की जनता की सामान्य इच्छा प्रकट कर देती है और इन्हीं शर्तों पर आधारित शान्ति ही वास्तविक जनवादी शान्ति कहला सकती है। अगर प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार के लोग झूठी प्रतिक्रिया-

वादी शान्ति नहीं बल्कि वास्तविक जनवादी शान्ति प्राप्त करने के इच्छुक हों, तो उन्हें अपनी प्रतिक्रियावादी शर्तों को त्याग देना चाहिए और उन आठ शर्तों को शान्ति-वार्ता के आधार के रूप में मंजूर कर लेना चाहिए जो चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने पेश की है। वरना उनकी तथाकथित शान्ति महज एक धोखाधड़ी ही सिद्ध होगी। हम आशा करते हैं कि सारे देश की जनता तथा तमाम जनवादी पार्टियां व जन-संगठन वास्तविक जनवादी शान्ति प्राप्त करने के लिए तथा झूठी प्रतिक्रियावादी शान्ति के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए उठ खड़े होंगे। नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार की शासन-व्यवस्था में मौजूद देशभक्त लोगों को भी इस शान्ति प्रस्ताव का समर्थन करना चाहिए। चीनी जन-मुक्ति सेना के कामरेड कमाण्डरों व योद्धाओं, सावधान! जब तक प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार वास्तविक जनवादी शान्ति को न मान ले और उसे कायम न कर ले, तब तक आपको अपने जुझारू प्रयत्नों में तनिक भी कमी नहीं आने देनी चाहिए। ऐसे प्रतिक्रियावादियों का, जो प्रतिरोध करने की जुर्रत करें, दृढ़ता के साथ, सर्वांगीण रूप से, समग्र रूप से और सम्पूर्ण रूप से सफाया कर दिया जाना चाहिए।

नोट

[1] कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा अपने इस वक्तव्य में पेश की गई शान्ति की आठ शर्तें अप्रैल १९४९ में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल तथा चाङ च-चुङ की अगवाई में क्वोमिन्ताङ सरकार के प्रतिनिधिमण्डल के बीच हुई

शान्ति-वार्ता का आधार बनीं। इस वार्ता के दौरान "अन्दरूनी शान्ति के बारे में समझौता" नामक दस्तावेज का जो मसौदा तैयार किया गया, वह शान्ति की आठ शर्तों के बारे में ठोस तजवीज पेश करता है। विस्तृत विवरण के लिए देखिए इसी ग्रन्थ में "सेना को देशव्यापी पेशकदमी के लिए आदेश" शीर्षक रचना का नोट १।

नानकिङ की कार्यकारी य्वान के फैसले के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता की टिप्पणी

२१ जनवरी १९४९

प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार की सरकारी समाचार-एजेन्सी, केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी ने १९ जनवरी को अपनी एक खबर में कहा कि उसी दिन सुबह ९ बजे हुई अपनी एक मीटिंग में कार्यकारी य्वान ने वर्तमान परिस्थिति पर विस्तार से विचार-विमर्श किया और निम्नलिखित फैसला लिया :

> समूचे देश की जनता की यथाशीघ्र शान्ति स्थापित करने की आकांक्षा का सम्मान करते हुए, सरकार अपनी यह सुनिश्चित इच्छा जाहिर करती है कि वह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ मिलकर सबसे पहले फौरन बिनाशर्त लड़ाई बन्द करने और तब शान्ति-वार्ता में शरीक होने के लिए अपने-अपने प्रतिनिधियों को नियुक्त करने को तैयार है।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का प्रवक्ता ऐलान करता है : नानकिङ की कार्यकारी य्वान के इस फैसले में नानकिङ के बोगस प्रेसीडेन्ट च्याङ

काई-शेक के १ जनवरी के उस वक्तव्य का जिक्र नहीं किया गया जिसमें शान्ति-वार्ता का प्रस्ताव पेश किया गया था, अथवा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष माओ त्सेतुङ के १४ जनवरी के उस वक्तव्य का भी जिक्र नहीं किया गया जिसमें शान्ति-वार्ता का प्रस्ताव पेश किया गया था, और न इस फैसले में यही बताया गया कि वह इनमें से किस वक्तव्य का समर्थन करता है और किसका विरोध करता है, उल्टे उसने अपना खुद का एक अन्य प्रस्ताव पेश कर दिया है, मानो क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी ने क्रमशः १ जनवरी और १४ जनवरी को कोई भी प्रस्ताव पेश न किया हो ; यह बात लोगों के लिए बिलकुल भ्रामक है। वास्तव में नानकिङ की कार्यकारी य्वान ने न सिर्फ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के १४ जनवरी के प्रस्ताव की पूर्ण रूप से अवहेलना की है, बल्कि बोगस प्रेसीडेन्ट च्याङ काई-शेक के १ जनवरी के प्रस्ताव को भी सरासर रद्द कर दिया है। अपने १ जनवरी के प्रस्ताव में च्याङ काई-शेक ने कहा था :

> ज्योंही कम्युनिस्ट पार्टी में शान्ति के लिए सच्ची आकांक्षा पैदा होगी और वह इस सम्बन्ध में निश्चित संकेत देगी, तो सरकार उसके साथ अवश्य ही सच्चे दिल से मुलाकात करेगी तथा लड़ाई बन्द करने और शान्ति की पुनर्स्थापना करने से सम्बन्धित ठोस उपायों पर विचार-विमर्श करने को तैयार हो जाएगी।

अब उन्नीस दिन बीतने के बाद, उसी सरकार का एक संगठन, यानी नानकिङ सरकार की "कार्यकारी य्वान", उस सरकार के "प्रेसीडेन्ट" के वक्तव्य को रद्द कर रही है, और यह कहने के बजाय कि सरकार कम्युनिस्ट पार्टी के साथ "अवश्य ही सच्चे दिल से मुलाकात करेगी

तथा लड़ाई बन्द करने और शान्ति की पुनर्स्थापना करने से सम्बन्धित ठोस उपायों पर विचार-विमर्श करने को तैयार हो जाएगी", यह कह रही है कि वह "सबसे पहले फौरन बिनाशर्त लड़ाई बन्द करने और तब शान्ति-वार्ता में शरीक होने के लिए अपने-अपने प्रतिनिधियों को नियुक्त करने को तैयार है।" हम नानकिङ की "कार्यकारी य्वान" के साहबान से पूछना चाहते हैं, आखिर इनमें से कौन सा प्रस्ताव कारगर है, आपका अथवा आपके "प्रेसीडेन्ट" का ? आपके "प्रेसीडेन्ट" ने "लड़ाई बन्द करने और शान्ति की पुनर्स्थापना करने" की बात को एक सा समझा है और ऐसा करने से सम्बन्धित ठोस उपायों पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सच्चे दिल से विचार-विमर्श करने के इरादे का ऐलान किया है, जबकि आप लोगों ने लड़ाई को शान्ति से अलग करके दो बातों के रूप में पेश किया है तथा आप लड़ाई बन्द करने से सम्बन्धित ठोस उपायों पर हमारे साथ विचार-विमर्श करने के लिए अपने प्रतिनिधि नियुक्त करने को तैयार नहीं हैं, और इसके विपरीत आप हवा को मुट्ठी में बांधने की कोशिश में यह प्रस्ताव पेश करते हैं कि "सबसे पहले फौरन बिनाशर्त लड़ाई बन्द की जाए" और तब "शान्ति-वार्ता में शरीक होने के लिए" अपने प्रतिनिधियों को नियुक्त किया जाए। इनमें से कौन सा प्रस्ताव सही है, आपका या आपके "प्रेसीडेन्ट" का ? हमारा मत है कि नानकिङ की बोगस कार्यकारी य्वान ने अपने सत्ताधिकार के दायरे से बाहर जाकर कार्य-वाही की है ; उसे इस बात का हक हासिल नहीं है कि वह अपने बोगस प्रेसीडेन्ट के प्रस्ताव को रद्द कर दे तथा मनमाने तरीके से अपना खुद का एक नया प्रस्ताव पेश कर दे। हम इस नए प्रस्ताव को अयुक्तियुक्त समझते हैं ; इतने बड़े पैमाने की, दीर्घकालीन और

खूंखार लड़ाई में जूझने के बाद, दोनों पक्षों को चाहिए कि वे सामान्य रूप से शान्ति की बुनियादी शर्तों पर विचार-विमर्श करने के लिए और दोनों पक्षों को मान्य युद्ध-विराम समझौता करने के लिए अपने-अपने प्रतिनिधि नियुक्त करें ; केवल इसी प्रकार युद्ध को बन्द किया जा सकता है ; यह न सिर्फ जनता की इच्छा है बल्कि क्वोमिन्ताङ पक्ष के भी बहुत से लोगों ने यह इच्छा जाहिर की है। अगर नानकिङ की कार्यकारी य्वान के बिलकुल अयुक्तियुक्त "फैसले" का अनुसरण किया गया तथा अगर क्वोमिन्ताङ तब तक शान्ति-वार्ता करने को तैयार न हुई जब तक पहले लड़ाईबन्दी न हो जाए, तो उसके अन्दर शान्ति की हार्दिक आकांक्षा कहां है ? नानकिङ की कार्यकारी य्वान का "फैसला" स्वीकार किया जा चुका है ; जब तक पहले लड़ाई-बन्दी नहीं हो जाएगी तब तक शान्ति-वार्ता नहीं हो सकती, तथा अब से शान्ति की ओर जाने का दरवाजा मजबूती से बन्द हो गया है ; अगर समझौता-वार्ता करनी हो, तो इसका एकमात्र उपाय यह है कि इस बिलकुल अयुक्तियुक्त "फैसले" को रद्द कर दिया जाए। इन दोनों में से या तो पहला रास्ता अपनाया जाएगा अथवा दूसरा। अगर नानकिङ की कार्यकारी य्वान अपने खुद के "फैसले" को रद्द करने के लिए तैयार न हुई, तो इससे सिर्फ यह जाहिर होगा कि प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार के मन में दूसरे पक्ष के साथ शान्ति-वार्ता करने की सच्ची आकांक्षा मौजूद नहीं है। लोग सवाल पूछेंगे, अगर नानकिङ सच्ची आकांक्षा रखता है, तो वह शान्ति की ठोस शर्तों पर विचार-विमर्श करने को राजी क्यों नहीं होता ? क्या इससे इस निष्कर्ष की पुष्टि नहीं हो जाती कि नानकिङ का शान्ति प्रस्ताव महज एक पाखण्ड है ? चीनी कम्युनिस्ट पार्टी

का प्रवक्ता ऐलान करता है : नानकिङ आज अराजकता की स्थिति में फंसा हुआ है. बोगस प्रेसीडेन्ट ने एक प्रस्ताव पेश किया है और बोगस कार्यकारी य्वान ने दूसरा। आखिर लोग किससे निपटें ?

चीन स्थित जापानी आक्रमणकारी सेना के भूतपूर्व कमाण्डर-इन-चीफ यासूजी ओकामूरा को फिर से गिरफ्तार करने के लिए तथा क्वोमिन्ताङ के गृहयुद्ध-अपराधियों को गिरफ्तार करने के लिए प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार को आदेश देने के बारे में – चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता का बयान

२८ जनवरी १९४९

प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार की केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी ने २६ जनवरी की अपनी खबर में कहा है :

एक सरकारी प्रवक्ता ने निम्नलिखित बयान दिया है। युद्ध के शीघ्रता से समाप्त हो जाने के लिए पिछले महीने सरकार ने विभिन्न उपाय अपनाए हैं और कदम उठाए हैं, ताकि जनता की तकलीफों को कम किया जा सके। इसके अलावा, इस महीने की २२वीं तारीख को सरकार ने शान्ति-वार्ता के लिए औपचारिक रूप से एक प्रतिनिधिमण्डल [1] की नियुक्ति कर दी है। पिछले कई

दिनों से सरकार इस बात का ही लगातार इन्तजार करती रही है कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अपना प्रतिनिधिमण्डल नियुक्त कर दे तथा किसी निश्चित स्थान पर मिलने के लिए राजी हो जाए, ताकि समझौता-वार्ता शुरू की जा सके। लेकिन शिनह्वा समाचार-एजेन्सी द्वारा २५ तारीख को उत्तरी शेनशी से किए गए ब्राडकास्ट में, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के एक प्रवक्ता ने अपने वक्तव्य[1] में सरकार के साथ शान्तिपूर्ण हल निकालने के हेतु वार्ता करने के लिए रजामन्द होने का संकेत देने के साथ ही, अन्धाधुन्ध तरीके से सरकार को अपमानित किया है तथा उस पर लांछन लगाया है और उसके खिलाफ बेहूदा व हमलावर भाषा का प्रयोग किया है। उसने यह भी कहा है कि समझौता-वार्ता के लिए स्थान सिर्फ तभी निश्चित किया जा सकेगा जब पेकिङ पूरी तरह मुक्त हो जाएगा। हम पूछना चाहते है कि अगर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी पेकिङ के तथाकथित पूरी तरह मुक्त हो जाने का इन्तजार करने का बहाना बनाती है और फौरन ही अपना प्रतिनिधिमण्डल नियुक्त नही करती तथा समझौता-वार्ता के लिए उपयुक्त स्थान के बारे में रजामन्द नहीं होती और इसके अलावा वह अपनी फौजी गतिविधियां भी बन्द नही करती, तो फिर क्या वह समय को टालने की कोशिश नही कर रही और युद्ध की विभीषिका को बढ़ा नही रही ? लोगों को यह बात मालूम होनी चाहिए कि युद्ध की विभीषिका को समाप्त कर देने की सारे देश की जनता की आशा को ध्यान में रखते हुए इस कार्य में अब देरी की कतई गुंजाइश नहीं है। अपनी बेहद ईमानदारी को साबित करने के लिए सरकार एक बार फिर यह आशा व्यक्त करती है कि चीनी

कम्युनिस्ट पार्टी स्पष्ट रूप से इस बात को महसूस कर लेगी कि जनता का उद्धार करने की ओर आज सबसे पहले ध्यान दिया जाना चाहिए और यह कि इसलिए वह समझौता-वार्ता के लिए प्रतिनिधिमण्डल नियुक्त करने के कार्य को जल्दी से जल्दी पूरा करेगी, ताकि शीघ्र ही शान्ति स्थापित की जा सके।

शांघाई से भेजी गई २६ जनवरी की अपनी एक अन्य खबर में नानकिङ की केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी ने कहा :

युद्ध-अपराधियों पर मुकदमा चलाने के लिए बनाई गई राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्रालय की फौजी अदालत द्वारा २६ तारीख को जापानी युद्ध-अपराधी जनरल यासूजी ओकामूरा, जो चीन स्थित जापानी अभियान सेना के भूतपूर्व कमाण्डर-इन-चीफ है, के मामले पर पुनर्विचार करने के बाद, अदालत के प्रेसीडेन्ट श मेइ-य्वी ने आज तीसरे पहर ४ बजे उन्हें निरपराध घोषित कर दिया। उस मौके पर अदालत के कमरे के अन्दर वातावरण बड़ा तनावपूर्ण था। फैसला सुनने के बाद ओकामूरा, जो अटेन्शन की मुद्रा में खड़े थे, थोड़ा सा मुसकरा दिए।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता निम्नलिखित बयान देते है :

१. प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार ने युद्ध-अपराधियों पर मुकदमा चलाने के लिए जो फौजी अदालत बना रखी है, उसने जापानी युद्ध-अपराधी जनरल यासूजी ओकामूरा को, जो चीन स्थित जापानी अभियान सेना का भूतपूर्व कमाण्डर-इन-चीफ है

और जो चीन-विरोधी आक्रमणकारी जापानी अभियान सेना के तमाम युद्ध-अपराधियों में प्रमुख युद्ध-अपराधी है,[1] "निरपराध" करार दिया है ; चीनी कम्युनिस्ट पार्टी तथा चीनी जन-मुक्ति सेना का जनरल हेडक्वार्टर मिलकर यह ऐलान करते हैं कि इस बात की कतई इजाजत नहीं दी जा सकती। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के आठ वर्षों के दौरान जान व माल की अनगिनत कुर्बानियां देने के बाद चीनी जनता ने अन्त में विजय हासिल की और इस युद्ध-अपराधी को पकड़ लिया, और अब वह प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार को इस बात की हरगिज इजाजत नहीं देगी कि वह मनमाने ढंग से उसे निर-पराध करार दे। सारे देश की जनता को, समस्त जनवादी पार्टियों व जन-संगठनों को तथा प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार की शासन-व्यवस्था के अन्दर काम करने वाले तमाम देशभक्त लोगों को भी फौरन उठ खड़े होना चाहिए, ताकि राष्ट्रीय हितों को बेच खाने और जापानी फासिस्ट-सैन्यवादियों के साथ सांठगांठ करने वाली उस सरकार के अपराधपूर्ण कारनामों का विरोध किया जा सके। प्रतिक्रियावादी नानकिङ सरकार के महानुभावों को हम गम्भीर चेतावनी देते हैं : आपको बिना विरोध व विलम्ब के फौरन यासूजी ओकामूरा को फिर से गिरफ्तार करके जेल में वापस भेज देना चाहिए। हम लोगों के साथ समझौता-वार्ता करने के आपके अनुरोध से यह मामला घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। हमारा मत है कि आप अपनी तमाम मौजूदा कार्यवाहियों के जरिए यह कोशिश कर रहे हैं कि झूठी शान्ति-वार्ता का इस्तेमाल करके युद्ध की अपनी नई तैयारियों पर पर्दा डाल दिया जाए, जिनमें चीन आने तथा चीनी जनता का कत्लेआम करने में आपका साथ देने के लिए जापानी प्रतिक्रिया-

वादियों को प्रलोभन देने की आपकी साजिश शामिल है ; अपने इस मकसद को हासिल करने के लिए ही आपने यासूजी ओकामूरा को रिहा कर दिया है। इसलिए हम आपको ऐसा करने की इजाजत हर-गिज नहीं देंगे। हमें इस बात का अधिकार है कि हम आपको आदेश दें कि आप यासूजी ओकामूरा को फिर से गिरफ्तार करें और हमारे द्वारा निर्धारित समय व स्थान पर उसे जन-मुक्ति सेना के हवाले कर देने की जिम्मेदारी लें। जहां तक अन्य जापानी युद्ध-अपराधियों का ताल्लुक है, वे हमारे द्वारा हिदायतें दिए जाने तक, अस्थाई तौर पर आपकी हिरासत में रहेंगे, और मनमाने तौर पर उनमें से किसी को न तो रिहा करना चाहिए और न भागने देना चाहिए। आपमें से जो लोग इस आदेश का उल्लंघन करेंगे, उन्हें सख्त सजा दी जाएगी।

२. प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार के प्रवक्ता के २६ जनवरी के वक्तव्य से हमें मालूम हुआ है कि नानकिङ में बैठे हुए आप सभी महानुभाव शान्ति-वार्ता के बारे में बहुत अधिक बेचैन, उत्सुक, आतुर और व्यग्र हैं, और कहा यह जाता है कि यह सब कुछ "युद्ध की अवधि को कम करने", "जनता की तकलीफों को कम करने" और "जनता का उद्धार करने की ओर सबसे पहले ध्यान देने" के लिए है। हमें यह भी पता चला है कि आप यह महसूस करते हैं कि आपकी इस इच्छा की प्रतिक्रिया के रूप में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी तनिक भी बेचैन, उत्सुक, आतुर और व्यग्र नहीं है और "इसके अलावा वह अपनी फौजी गतिविधियां भी बन्द नहीं करती" तथा वास्तव में "समय को टालने की कोशिश कर रही है और युद्ध की विभीषिका को बढ़ा रही है"। नानकिङ के महानुभावो, हम आपको साफ तौर पर बता देना चाहते हैं : आप लोग युद्ध-अपराधी हैं, आप लोगों पर

मुकदमा अवश्य चलाया जाएगा। "शान्ति" या "जनता की इच्छा" के बारे में आपके द्वारा बघारी गई बातों पर हमें जरा भी विश्वास नहीं है। आप लोगों ने अमरीका की ताकत के भरोसे जनता की इच्छा को कुचल डाला, युद्ध-विराम समझौते तथा राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावों को फाड़कर रद्दी की टोकरी में फेंक दिया और यह अत्यन्त निर्मम, जन-विरोधी, जनवाद-विरोधी और शान्ति-विरोधी गृहयुद्ध छेड़ दिया। उस समय आप लोग दरअसल इतने बेचैन, इतने उत्सुक, इतने आतुर और इतने व्यग्र थे कि आपने किसी की भी सलाह नहीं मानी। और जब आपने एक बोगस राष्ट्रीय एसेम्बली बुला ली थी, एक बोगस संविधान तैयार कर लिया था, एक बोगस प्रेसीडेन्ट चुन लिया था और "विद्रोह का दमन करने के लिए लामबन्दी" का एक बोगस आदेश जारी कर दिया था, उस समय भी आप इन सब बातों के बारे में इतने ही बेचैन, इतने ही उत्सुक, इतने ही आतुर और इतने ही व्यग्र थे कि आपने फिर एक बार किसी की सलाह पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। उस समय शांघाई, नानकिङ और अन्य प्रमुख शहरों में तथाकथित सलाहकार परिषदों, व्यापार-मण्डलों, ट्रेड-यूनियनों, किसान संगठनों, महिला संगठनों और सांस्कृतिक संगठनों ने, जो सबके सब या तो आपकी सरकार द्वारा संचालित किए जाते हैं अथवा आपके मोहरों का काम देते हैं, "विद्रोह का दमन करने के लिए लामबन्दी का समर्थन करने" और "कम्युनिस्ट डाकुओं को नेस्तनाबूद कर देने" के बारे में एक अच्छा खासा हंगामा खड़ा कर दिया था और तब एक बार फिर वे सब इतने ही बेचैन, इतने ही उत्सुक, इतने ही आतुर और इतने ही व्यग्र हो गए थे कि उन्होंने किसी की सलाह पर तनिक भी ध्यान

नहीं दिया। उसके बाद से ढाई साल का अरसा बीत चुका है, और इस अवधि के दौरान आपने जिन लोगों का कत्लेआम करवाया है उनकी तादाद दसियों लाख तक पहुंच गई है, और आपके द्वारा जो गांव जलाए गए हैं, जिन महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया है और जो सम्पत्ति लूटी गई है तथा आपकी हवाई फौज ने लोगों की जिन्दगी और सम्पत्ति की जो बरबादी की है, उसका तो अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता ; आपने जघन्य अपराध किए हैं और हमें आपसे उन सबका हिसाब लेना है। सुनने में आया है कि आप हिसाब लेने के संघर्ष के बिलकुल विरुद्ध हैं। लेकिन इस बार तो इस बात का उचित कारण मौजूद है कि हिसाब लेने के लिए संघर्ष किया जाए, हिसाब अवश्य लिया जाना चाहिए और फिर उसे साफ भी किया जाना चाहिए, लड़ाई अवश्य लड़ी जानी चाहिए और संघर्ष अवश्य किया जाना चाहिए। आप हारे हुए हैं। आपने जनता के रोष को भड़का दिया है और समूची जनता आपके खिलाफ एक जीवन-मरण के संघर्ष में उठ खड़ी हुई है। जनता आपको बिलकुल पसन्द नहीं करती, जनता आपकी निन्दा करती है, जनता उठ खड़ी हुई है और आप अलगाव की स्थिति में पड़ गए हैं ; यही वजह है कि आप हार गए हैं। आपने शान्ति-वार्ता के लिए पांच शर्तें* पेश कीं और हमने आठ शर्तें* पेश कीं ; जनता ने फौरन हमारी आठ शर्तों का समर्थन किया, आपकी पांच शर्तों का नहीं। आपके अन्दर साहस नहीं है कि आप हमारी आठ शर्तों का खण्डन करें या अपनी पांच शर्तों पर जमे रहें। आपने ऐलान किया है कि आप हमारी आठ शर्तों को समझौता-वार्ता का आधार बनाने के लिए तैयार हैं। क्या यह एक अच्छी बात नहीं है? तब फिर फौरन वार्ता क्यों न शुरू की जाए? इसलिए

ऐसा लगता है कि आप बहुत बेचैन, बहुत उत्सुक, बहुत आतुर और बहुत व्यग्र हैं तथा "बिनाशर्त लड़ाई बन्द करने" के लिए, "युद्ध की अवधि को कम करने" के लिए, "जनता की तकलीफों को कम करने" के लिए और "जनता का उद्धार करने की ओर सबसे पहले ध्यान देने" के लिए बहुत ही ज्यादा लालायित हैं। और हम? जाहिर है कि हम लोग बेचैन नहीं हैं, उत्सुक नहीं हैं, आतुर नहीं हैं और व्यग्र नहीं हैं तथा हम "समय को टालने की कोशिश कर रहे हैं और युद्ध की विभीषिका को बढ़ा रहे हैं"। लेकिन नानकिङ के महानुभावो, जरा रुक जाओ! हम बेचैन, उत्सुक, आतुर और व्यग्र होने जा रहे हैं; युद्ध की अवधि को जरूर कम किया जाएगा; और जनता की तकलीफों को जरूर कम किया जाएगा। चूंकि वार्ता के लिए आधार के तौर पर आप हमारी आठ शर्तों को स्वीकार कर चुके हैं, इसलिए आप और हम दोनों ही व्यस्त हो जाएंगे। इन आठ शर्तों को लागू करने के काम में आप, हम और तमाम जनवादी पार्टियां, जन-संगठन और देशभर के विभिन्न व्यवसायों के लोग कई महीनों तक, छै महीने या एक साल तक, या कई सालों तक व्यस्त रहेंगे – और शायद तब भी हम इस काम को पूरा नहीं कर पाएंगे। नानकिङ के महानुभावो, जरा सुनो! ये आठ शर्तें कोई अमूर्त वस्तुएं नहीं हैं, इनमें ठोस तत्व मौजूद होने ही चाहिए; मौजूदा अल्पकालीन अवधि के दौरान यह बात महत्वपूर्ण है कि हर व्यक्ति इस बारे में सोच-विचार करे, और इस वजह से अगर थोड़ी देर भी हो जाए तो जनता इसके लिए हमें माफ कर देगी। स्पष्ट शब्दों में कहा जाए, तो जनता की राय यह है कि इस समझौता-वार्ता के लिए अच्छी तरह से तैयारी की जानी चाहिए। समझौता-वार्ता तो अवश्य होगी, और किसी को भी इस

बात की हरगिज इजाजत नहीं है कि वह इसे बीच ही में तोड़ दे या समझौता-वार्ता करने से इनकार कर दे। इसलिए आपके प्रतिनिधियों को चाहिए कि वे आने के लिए तैयार हो जाएं। लेकिन हमें अभी कुछ समय चाहिए ताकि हम अपनी तैयारियां पूरी कर सकें, और हम युद्ध-अपराधियों को इस बात की इजाजत नहीं देंगे कि वे हमारी समझौता-वार्ता की तारीख तय करें। हम और पेफिङ की जनता इस समय एक महत्वपूर्ण काम में लगे हुए हैं; हम लोग आठ शर्तों के आधार पर पेफिङ के सवाल को शान्तिपूर्ण ढंग से हल करने में लगे हुए हैं। पेफिङ में मौजूद आपके लोग, जैसे जनरल फ़ू च्वो-ई, भी इस काम में हिस्सा ले रहे हैं, जिसे आपने अपनी समाचार-एजेन्सी की विज्ञप्ति में उचित माना है।[६] इससे न केवल शान्ति-वार्ता के लिए एक स्थान प्राप्त हो जाएगा, बल्कि नानकिङ, शांघाई, ऊहान, शीआन, थाएय्वान, क्वेइस्वेइ, लानचओ, तीह्वा, छङतू, खुनमिङ, छाङशा, नानछाङ, हाङचओ, फ़ूचओ, क्वाङचओ, थाइवान, हाएनान द्वीप आदि के लिए भी शान्तिपूर्ण हल की एक मिसाल कायम हो जाएगी। इसलिए यह कार्य एक सराहनीय कार्य है और नानकिङ के महानुभावों को इसके प्रति लापरवाही का रुख नहीं अपनाना चाहिए। हम इस समय युद्ध-अपराधियों की सूची तैयार करने की समस्या को लेकर अपने और आपके दोनों ही इलाकों की जनवादी पार्टियों, जन-संगठनों और निर्दलीय जनवादी व्यक्तियों के साथ विचार-विमर्श कर रहे हैं और अपनी आठ शर्तों में से पहली शर्त के ठोस मुद्दों को तफसील से तय करने में लगे हुए हैं। इस सूची को औपचारिक रूप से जारी करने में अब शायद ज्यादा समय नहीं लगेगा। नानकिङ के महानुभावो, जैसा कि आप जानते हैं, हमें अभी तक ऐसी सूची के बारे में जनवादी

पार्टियों और जन-संगठनों के साथ विचार-विमर्श करने और उसे औपचारिक रूप से प्रकाशित करने के लिए समय नहीं मिल पाया है। इसके लिए हम माफी चाहते हैं। इस विलम्ब का कारण यह है कि शान्ति-वार्ता के लिए आपका अनुरोध जरा कुछ देर से पहुंचा। अगर यह कुछ पहले पहुंच गया होता, तो हमारी तैयारियां अब तक पूरी हो चुकी होतीं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आपको कुछ करना ही नहीं है। जापानी युद्ध-अपराधी यासूजी ओकामूरा को गिरफ्तार करने के साथ ही, आपको गृहयुद्ध-अपराधियों के जत्थे को गिरफ्तार करना भी फौरन शुरू कर देना चाहिए और सबसे पहले नानकिङ, शांघाई, फङह्वा और थाइवान के उन तैंतालीस युद्ध-अपराधियों को गिरफ्तार कर लेना चाहिए जिनके नाम चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अधिकृत व्यक्ति के २५ दिसम्बर १९४८ के वक्तव्य में दिए गए हैं। इनमें सबसे प्रमुख ये हैं : च्याङ काई-शेक, टी० वी० सुङ, छन छङ, हो इङ-छिन, कू चू-थुङ, छन ली-फू, छन क्वो-फू, चू च्या-ह्वा, वाङ श-च्ये, ऊ क्वो-चन, ताए छ्वान-श्येन, थाङ अन-पो, चओ च-रओ, वाङ शू-मिङ और क्वेइ यङ-छिङ।* च्याङ काई-शेक का विशेष महत्व है, जो अब भागकर फङह्वा पहुंच गया है और इस बात की काफी सम्भावना है कि वह विदेश भाग जाए और अमरीकी या बरतानवी साम्राज्यवाद मे शरण मांग ले; इसलिए यह जरूरी है कि आप इस युद्ध-अपराधी को जल्दी ही गिरफ्तार कर लें और उसे बचकर न भाग जाने दें। आपको इस मामले की पूरी जिम्मेदारी उठानी होगी। अगर इनमें से कोई भी बचकर भाग निकला, तो आपको अपराध के लिए सजा दी जाएगी कि आपने डाकुओं को रिहा कर दिया, तथा आप पर किसी भी तरह का रहम नहीं किया

जाएगा। फिर यह न कहना कि आपको इसके बारे में आगाह नहीं किया गया था। हमारा मत है कि जब इन युद्ध-अपराधियों को गिरफ्तार किया जाएगा, तभी यह युद्ध की अवधि कम करने और जनता की तकलीफें कम करने के सिलसिले में गम्भीरता के साथ किया गया एक काम होगा। जब तक ये युद्ध-अपराधी आजादी से घूमते रहेंगे, तब तक युद्ध की अवधि बढ़ती ही जाएगी और जनता की तकलीफें और अधिक गम्भीर होती जाएंगी।

३. हम मांग करते हैं कि प्रतिक्रियावादी नानकिङ सरकार उक्त दोनों बातों का जवाब दे।

४. आठ शर्तों में से बाकी शर्तों के बारे में दोनों पक्षों को जो तैयारियां करनी हैं, उनकी सूचना नानकिङ को किसी अन्य समय दी जाएगी।

नोट

[1] प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा शान्ति-वार्ता में भाग लेने के लिए नियुक्त किए गए प्रतिनिधिमण्डल में शाओ ली-चि, चाङ च-चुङ, ह्वाङ शाओ-हुङ, फङ चाओ-श्येन और चङ श्येन-शिन शामिल थे।

[2] २५ जनवरी १९४९ को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के एक प्रवक्ता ने शान्ति-वार्ता के बारे में दिए गए अपने बयान में कहा : "हमने प्रतिक्रियावादी नानकिङ सरकार को हमारे साथ शान्ति-वार्ता करने के लिए एक प्रतिनिधिमण्डल भेजने की इजाजत दी है, इसका कारण यह नहीं कि हम इस सरकार को अभी भी चीनी जनता का प्रतिनिधित्व करने के काबिल मानते हैं, बल्कि यह है कि इसके पास अभी तक प्रतिक्रियावादी सशस्त्र शक्तियों के कुछ अवशेष मौजूद हैं। यदि यह सरकार यह समझती है कि वह जनता का विश्वास मुकम्मिल तौर पर खो बैठी

है और उसकी प्रतिक्रियावादी सशस्त्र शक्तियों के अवशेष शक्तिशाली जन-मुक्ति सेना का मुकाबला नहीं कर सकते, तथा यदि वह सरकार शान्ति के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा पेश की गई आठ शर्तों को मानने के लिए तैयार है, तो जनता की मुक्ति के कार्य के लिए यही बेहतर और फायदेमन्द रहेगा कि मामले का फैसला समझौता-वार्ता के जरिए ही किया जाए, ताकि जनता की तकलीफों को कम किया जा सके।" जहां तक समझौता-वार्ता के लिए उपयुक्त स्थान का ताल्लुक है, बयान में बताया गया है : "इसका फैसला पेकिङ के पूरे तौर पर मुक्त हो जाने के बाद ही किया जा सकता है और शायद यह स्थान पेकिङ ही होगा।" नानकिङ सरकार द्वारा नियुक्त किए गए प्रतिनिधियों के बारे में बयान में बताया गया है : "फङ चाओ-श्येन क्वोमिन्ताङ के सी० सी० गुट के महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक है, जो युद्ध के लिए अत्यन्त लालायित रहा है और जनता उसे एक युद्ध-अपराधी समझती है ; चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ऐसे प्रतिनिधि का सत्कार नहीं कर सकती"।

३ यासुजी ओकामुरा उन जापानी युद्ध-अपराधियों में से एक था जिनका चीन के खिलाफ आक्रमण के अपराधों का सबसे लम्बा और घृणित इतिहास था। १९२५ से लेकर १९२७ तक उसने एक उत्तरी युद्ध-सरदार सुन छ्वान-फाङ के फौजी सलाहकार के रूप में काम किया। १९२८ में जब जापानी फौजों ने चीनान पर हमला करके उस पर कब्जा कर लिया, तो उसने इस युद्ध में जापान की पैदल फौज की एक रेजीमेन्ट के कमान्डिंग अफसर की हैसियत से हिस्सा लिया। चीनान कत्लेआम का वह एक जल्लाद था। १९३२ में उसने जापानी अभियान सेना के डिप्टी चीफ आफ स्टाफ के रूप में काम किया, जिसने शांघाई पर हमला करके उस पर कब्जा कर लिया। १९३३ में उसने देशद्रोही क्वोमिन्ताङ सरकार के साथ हुए "थाङकू समझौते" पर जापान सरकार की तरफ से दस्तखत किए। १९३७ से लेकर १९४५ तक, वह क्रमशः जापान की ११वीं फौजी कोर, उत्तरी चीन मोर्चा सेना और छठी मोर्चा सेना का कमाण्डर तथा चीन में जापानी अभियान सेना का कमाण्डर-इन-चीफ रहा। उसने चीन में "सब कुछ जला डालने, सबको मार डालने और सब कुछ लूट लेने" की अत्यन्त बर्बरतापूर्ण नीति को लागू किया। अगस्त १९४५ में येनान में प्रकाशित जापानी

युद्ध-अपराधियों की सूची में उसका नाम पहले नम्बर पर था। जन-मुक्ति युद्ध के दौरान वह च्याङ काई-शेक का खुफिया फौजी सलाहकार था और उसने मुक्त क्षेत्रों पर च्याङ के हमलों की योजना बनाई थी। जनवरी १९४९ में उसे प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा निरपराध करार दिया गया तथा रिहा कर दिया गया और वह जापान वापस लौट गया। १९५० में उसने च्याङ काई-शेक के अनुरोध पर तथाकथित क्रान्तिकारी व्यवहार अनुसन्धान प्रतिष्ठान के सीनियर ट्रेनिंग अफसर का पद मंजूर कर लिया। १९५५ में उसने जापानी स्थलसेना व नौसेना के भूतपूर्व सैनिकों को संगठित करके एक "सहयोद्धा संघ" (जिसे बाद में सेवा-निवृत्त सहयोद्धा संघ के नाम से पुकारा जाने लगा) बनाया और जापानी सैन्यवाद को पुनर्जीवित करने के लिए चलाई जाने वाली प्रतिक्रियावादी गतिविधियों में बड़ी सक्रिय भूमिका अदा की।

४ प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार ने शान्ति-वार्ता के लिए जिन पांच शर्तों का सुझाव दिया था, वे १९४९ के च्याङ काई-शेक के नए साल के बयान में पेश की गई हैं। वे शर्तें इस प्रकार हैं : १. शान्ति-वार्ता से "देश की स्वतन्त्रता व अखण्डता को नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए"। २. शान्ति-वार्ता से "जनता के पुनर्वास में मदद मिलनी चाहिए"। ३. "मेरे कार्य से पवित्र संविधान का उल्लंघन नहीं होना चाहिए और इसके फलस्वरूप जनवादी संविधानवाद को क्षति नहीं पहुंचनी चाहिए ; चीन गणराज्य के राजतन्त्र के स्वरूप की गारन्टी कर दी जानी चाहिए और चीन गणराज्य के विधिसम्मत सत्ताधिकार में खलल नहीं डालना चाहिए"। ४. "सशस्त्र सेना को निश्चित रूप से बनाए रखना चाहिए"। ५. "जनता को अपने रहन-सहन के स्वतन्त्र तौर-तरीकों को जारी रखने तथा अपने मौजूदा न्यूनतम जीवन-स्तर को बनाए रखने की इजाजत होनी चाहिए"। कामरेड माओ त्सेतुङ ने तुरत ही बड़ी सख्ती के साथ इन पांचों शर्तों का खण्डन किया। इसके लिए देखिए इसी ग्रन्थ में "युद्ध-अपराधी द्वारा शान्ति के लिए मिन्नतें किए जाने के बारे में" शीर्षक रचना।

५ शान्ति-वार्ता के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा सुझाई गई "आठ शर्तें", कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा १४ जनवरी १९४९ को वर्तमान परिस्थिति के बारे में दिए गए वक्तव्य में पेश की गई हैं। इसके लिए देखिए इसी ग्रन्थ में "चीनी

कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के अध्यक्ष माम्रो त्सेतुङ का वर्तमान परिस्थिति के बारे में वक्तव्य" शीर्षक रचना।

[1] क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी के २७ जनवरी १९४९ के एक समाचार के अनुसार, नानकिङ सरकार के राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्रालय ने ऐलान किया : "उत्तरी चीन में, युद्ध की अवधि को कम करने, शान्ति प्राप्त करने और इस प्रकार प्राचीन राजधानी पेफिङ की आधारशिलाओं तथा उसकी सांस्कृतिक वस्तुओं व ऐतिहासिक स्मारकों को बनाए रखने के उद्देश्य से, कमाण्डर-इन-चीफ फू च्वो-ई ने २२ जनवरी को एक घोषणापत्र जारी किया जिसमें कहा गया था कि उस दिन सुबह १० बजे से लड़ाई बन्द हो जाएगी। जनरल हेडक्वार्टर के आदेश पर पेफिङ में तैनात हमारी फौजों का अधिकतर भाग शहरी सीमाओं से हटकर कुछ निर्दिष्ट इलाकों में चला गया है"। उसने आगे कहा कि "स्वेय्वान तथा चाखड़ में भी लड़ाई बन्द कर दी जाएगी"।

[2] क्वोमिन्ताङ शासन के एक थैलीशाह टी० वी० सुङ ने वित्तमंत्री, कार्यकारी य्वान के प्रेसीडेन्ट, विदेश मंत्री तथा अमरीका में क्वोमिन्ताङ सरकार के विशेष दूत की हैसियत से काम किया था। क्वोमिन्ताङ का भूतपूर्व चीफ आफ जनरल स्टाफ छन छङ उस समय थाइवान प्रान्त का गवर्नर था। हो इङ-छिन क्वोमिन्ताङ का चीफ आफ जनरल स्टाफ तथा राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्री रह चुका था। कू चू-थुङ उस समय क्वोमिन्ताङ फौज का चीफ आफ जनरल स्टाफ था। छन ली-फू, छन क्वो-फू तथा चू च्या-ह्वा ये सभी क्वोमिन्ताङ के सी० सी० गुट के सरगना थे। वाङ श-च्ये क्वोमिन्ताङ का विदेश मंत्री रह चुका था। ऊ क्वो-चन क्वोमिन्ताङ सरकार की तरफ से शांघाई का मेयर था। ताए छ्वान-श्येन, जिसे ताए ची-थाम्रो के नाम से भी पुकारा जाता था, एक लम्बे अरसे से च्याङ काई-शेक के "सलाहकार मण्डल" का एक सदस्य था और उस समय वह क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी की स्थाई समिति का सदस्य था। थाङ अन-पो नानकिङ-शांघाई-हाङचओ क्षेत्र में क्वोमिन्ताङ की गैरिसन फौजों का कमाण्डर-इन-चीफ था। चओ चि-रओ क्वोमिन्ताङ वायुसेना का कमाण्डर-इन-चीफ था। वाङ शू-मिङ क्वोमिन्ताङ वायुसेना का डिप्टी कमाण्डर-इन-चीफ तथा चीफ आफ स्टाफ था। क्वेइ युङ-छिङ क्वोमिन्ताङ नौसेना का कमाण्डर-इन-चीफ था।

जापानी युद्ध-अपराधियों तथा क्वोमिन्ताङ युद्ध-अपराधियों को सजा देने की बात शान्ति की शर्तों में अवश्य शामिल होनी चाहिए —चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता का वक्तव्य

५ फरवरी १९४९

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता ने शान्ति-वार्ता के सवाल के बारे में २८ जनवरी को जो वक्तव्य जारी किया उसका जवाब प्रतिक्रियावादी वतनफरोश क्वोमिन्ताङ सरकार के प्रवक्ता ने ३१ जनवरी को दे दिया है। अपने जवाब में प्रतिक्रियावादी वतनफरोश क्वोमिन्ताङ सरकार के प्रवक्ता ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता द्वारा उठाए गए सवालों के बारे में वाक्छल का सहारा लिया है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की इस मांग के सम्बन्ध में कि जापान द्वारा चीन पर आक्रमण करने वाले प्रमुख अपराधी यासूजी ओकामूरा को फिर से गिरफ्तार करने और उसे जन-मुक्ति सेना के हवाले कर देने, अन्य जापानी युद्ध-अपराधियों को नजरबन्द करने और उन्हें भाग जाने का मौका न देने की जिम्मेदारी प्रतिक्रियावादी वतनफरोश क्वोमिन्ताङ सरकार पर है, क्वोमिन्ताङ के प्रवक्ता ने कहा, "यह एक अदालती

मामला है। शान्ति-वार्ता से इसका कोई ताल्लुक नहीं, तथा यह और भी दूर की बात है कि इसे शान्ति-वार्ता के लिए पूर्वशर्त के रूप में पेश किया जाए।" चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की इस मांग के सम्बन्ध में कि च्याङ काई-शेक तथा अन्य युद्ध-अपराधियों को गिरफ्तार करने की जिम्मेदारी प्रतिक्रियावादी वतनफरोश क्वोमिन्ताङ सरकार को उठानी चाहिए, क्वोमिन्ताङ के प्रवक्ता ने कहा, "सच्ची शान्ति के लिए कोई पूर्वशर्त नहीं थोपी जानी चाहिए।" और उसने यह भी कहा कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता के वक्तव्य से "ऐसा लगता है कि उसका रुख काफी गम्भीर नहीं है" तथा "कई पेचीदगियां पैदा हो गई है"। इस बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता को यह कहना है : हाल की २८ जनवरी तक भी हम लोग प्रतिक्रियावादी वतनफरोश क्वोमिन्ताङ सरकार को सरकार कहकर ही पुकारते थे ; इस सम्बन्ध में हमारा रुख सचमुच ही काफी गम्भीर नहीं था। आखिर इस समय इस तथाकथित "सरकार" का अस्तित्व बाकी है अथवा नहीं ? क्या वह नानकिङ में है ? इस समय नानकिङ में कोई भी प्रशासनिक संस्थान मौजूद नहीं है। क्या वह क्वाङचओ में है ? क्वाङचओ में इस समय कोई भी प्रशासनिक नेता नहीं है। क्या वह शांघाई में है ? इस समय शांघाई में न तो कोई प्रशासनिक संस्थान है और न कोई प्रशासनिक नेता। क्या वह फ़ङह्वा में है ? फ़ङह्वा में केवल एक बोगस प्रेसीडेन्ट है जिसने ऐलान कर दिया है कि वह "सेवा-निवृत्त" हो चुका है, इसके अलावा वहां और कुछ नहीं है। इसलिए गम्भीरता के साथ कहें तो हमें उसे एक सरकार के रूप में नहीं मानना चाहिए, ज्यादा से ज्यादा वह एक काल्पनिक या नाममात्र की सरकार है। फिर भी मान लीजिए कि एक नाममात्र की "सरकार"

ही मौजूद है और उसका एक प्रवक्ता है जो उस तथाकथित "सरकार" की तरफ से बोल सकता है। तब उसके प्रवक्ता को यह महसूस करना चाहिए कि इस काल्पनिक, नाममात्र की, प्रतिक्रियावादी वतनफरोश क्वोमिन्ताङ सरकार ने शान्ति-वार्ता के लिए न सिर्फ कुछ भी योगदान नहीं किया बल्कि वास्तव में वह लगातार पेचीदगियां पैदा करती रही है। मिसाल के लिए आपने अचानक यासूजी ओकामूरा को एक ऐसे वक्त निरपराध घोषित करके जबकि आप समझौता-वार्ता के लिए इतने इच्छुक थे, क्या पेचीदगी नहीं पैदा की ? यासूजी ओकामूरा को फिर से गिरफ्तार करने की चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की मांग के बाद भी उसे तथा २६० अन्य जापानी युद्ध-अपराधियों को जापान वापस भेजकर क्या आपने पेचीदगी नहीं पैदा कर दी ? आज जापान पर कौन शासन करता है ? क्या जापान में साम्राज्यवादियों का नहीं बल्कि जापानी जनता का शासन है ? जापान एक ऐसी जगह है जिसे आप इतना अधिक प्यार करते हैं कि आपको विश्वास है कि जापानी युद्ध-अपराधियों को आपके द्वारा शासित इलाके के मुकाबले जापान में रहकर अधिक सुरक्षा व आराम प्राप्त हो सकेगा और वहां उनके साथ ज्यादा उचित व्यवहार किया जा सकेगा। क्या यह एक अदालती मामला है ? और यह अदालती मामला आखिर पैदा क्यों हुआ ? क्या आप यह बात भी भूल गए कि जापानी आक्रमणकारी पूरे आठ वर्ष तक हमारे खिलाफ लड़ते रहे ? क्या शान्ति-वार्ता से इस बात का कोई ताल्लुक ही नहीं है ? जब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने १४ जनवरी को आठ शर्तें पेश की, उस समय तक यासूजी ओकामूरा को छोड़ने का मामला पैदा नहीं हुआ था। २६ जनवरी को यह मामला पैदा हुआ इसलिए उसे सामने रखा जाना चाहिए और यह शान्ति-वार्ता

से निश्चित रूप से जुड़ा हुआ है। ३१ जनवरी को आपने मैकआर्थर के आदेशों का पालन करते हुए यासूजी ओकामूरा और अन्य २६० जापानी युद्ध-अपराधियों को जापान भेज दिया, इस तरह यह मामला शान्ति-वार्ता में और भी अधिक जुड़ गया है। आप शान्ति-वार्ता के लिए क्यों मिन्नतें कर रहे हैं? क्योंकि आप युद्ध में परास्त हो गए हैं। और आप परास्त क्यों हुए? क्योंकि आपने जनता के खिलाफ गृहयुद्ध छेड़ दिया। और आपने यह गृहयुद्ध कब छेड़ा? जापान के आत्मसमर्पण के बाद। और आपने किसका विरोध करने के लिए यह युद्ध छेड़ा? जन-मुक्ति सेना तथा जनता के मुक्त क्षेत्रों का विरोध करने के लिए, जिन्होंने जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में असाधारण योगदान किया। और आपने किन साधनों के सहारे इस गृहयुद्ध को छेड़ा? अमरीकी सहायता के अलावा, आपने द्वारा शासित इलाकों की जनता में से लोगों को जबरदस्ती सेना में भरती करके और जनता की धन-दौलत लूटकर ही आपने इस गृहयुद्ध को छेड़ा। जैसे ही जापानी आक्रमणकारियों के खिलाफ चीनी जनता की महान निर्णयात्मक लड़ाई खत्म हुई, जैसे ही बाहरी दुश्मन के साथ युद्ध खत्म हुआ, वैसे ही आपने यह गृहयुद्ध छेड़ दिया। आप परास्त हो गए और आपने समझौता-वार्ता की मांग की, लेकिन अचानक ही आपने प्रमुख जापानी युद्ध-अपराधी यासूजी ओकामूरा को निरपराध घोषित कर दिया। और जैसे ही हमने आपके प्रति विरोध प्रकट किया और मांग की कि आप उसे फिर से जेल में डाल दें तथा उसे जन-मुक्ति सेना के हवाले करने को तैयार हो जाएं, वैसे ही आपने झटपट उसे २६० अन्य जापानी युद्ध-अपराधियों के साथ जापान के लिए रवाना कर दिया। प्रतिक्रियावादी वतनफरोश क्वोमिन्ताङ सरकार

के महानुभावो, आपकी यह कार्यवाही अत्यन्त ही युक्तिहीन है और जनता की इच्छा के बिलकुल विपरीत है। अब हमने आपके खिताब में "वतनफरोश" शब्द जानबूझकर जोड़ दिया है और आपको इसे मंजूर कर लेना चाहिए। आपकी सरकार एक लम्बे अरसे से वतन-फरोश सरकार रही है और महज संक्षिप्तता के खयाल से कभी-कभी हम इस शब्द को छोड़ देते थे; अब हम इसे नहीं छोड़ सकते। अतीत काल में वतनफरोशी के जो तमाम अपराध आपने किए थे उनके अलावा अब आपने वतनफरोशी का एक और अपराध कर डाला है और यह अपराध अत्यन्त गम्भीर है, जिस पर शान्ति-वार्ता की मीटिंग में अवश्य ही वाद-विवाद किया जाना चाहिए। चाहे आप इसे पेची-दगी पैदा करना कहें या न कहें, इस मामले पर अवश्य ही वाद-विवाद किया जाना चाहिए और चूंकि यह १४ जनवरी के बाद की घटना है और हमारे द्वारा पहले पेश की गई आठ शर्तों में शामिल नहीं है, इसलिए हम यह जरूरी समझते हैं कि पहली शर्त में जापानी युद्ध-अपराधियों को सजा देने की एक नई आइटम जोड़ दी जाए। इस तरह पहली शर्त में अब दो आइटमें हो गई हैं: (क) जापानी युद्ध-अपराधियों को सजा देना और (ख) गृहयुद्ध के अपराधियों को सजा देना। हमारे द्वारा इस आइटम को जोड़ दिए जाने की कार्यवाही युक्तियुक्त है, यह देशभर की जनता की इच्छा को प्रतिबिम्बित करती है। देशभर की जनता की मांग है कि जापानी युद्ध-अपराधियों को सजा दी जाए। क्वोमिन्ताङ के अन्दर भी बहुत से लोगों का खयाल है कि च्याङ काई-शेक तथा गृहयुद्ध के अन्य अपराधियों को सजा देने के समान ही यासूजी ओकामूरा तथा अन्य जापानी युद्ध-अपराधियों को सजा देना भी युक्तियुक्त और स्वाभाविक है। चाहे आप यह कहें

कि शान्ति के लिए हम ईमानदारी से इच्छुक हैं, या यह कि शान्ति के लिए हम ईमानदारी से इच्छुक नहीं हैं, इन दोनों किस्म के युद्ध-अपराधियों के बारे में वार्ता करना निहायत जरूरी है और इन दोनों किस्म के युद्ध-अपराधियों को सजा देना निहायत जरूरी है। जहां तक हमारी इस मांग का ताल्लुक है कि आप समझौता-वार्ता शुरू होने से पहले ही गृहयुद्ध के अपराधियों के एक गिरोह को गिरफ्तार कर लें तथा उन्हें भाग जाने का मौका न दें, इसके बारे में आप कहते हैं कि "कोई पूर्वशर्त नहीं थोपी जानी चाहिए"। प्रतिक्रियावादी वतनफरोश क्वोमिन्ताङ सरकार के महानुभावो, यह कोई पूर्वशर्त नहीं, बल्कि एक मांग है जो युद्ध-अपराधियों को सजा देने की बात को आपके द्वारा समझौता-वार्ता के आधार के रूप में मंजूर किए जाने का स्वाभाविक नतीजा है। हमने उन्हें गिरफ्तार करने की मांग आपसे इसलिए की थी कि कहीं वे भाग न जाएं। इस वक्त जबकि हमने समझौता-वार्ता के लिए अपनी तैयारी पूरी नहीं कर पाई है, आप समझौता-वार्ता करने के लिए बड़ी दयनीय बेचैनी दिखा रहे हैं। आपके पास इतना खाली वक्त रहता है कि उससे आप परेशान हो रहे हैं। इसलिए हमने आपके जिम्मे एक उचित काम सौंप दिया है। इन युद्ध-अपराधियों को गिरफ्तार करना होगा। वे चाहे भागकर दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न चले जाएं, उन्हें अवश्य गिरफ्तार करना होगा। चूंकि आप लोग बेहद महानुभूति और करुणा के अवतार हैं और दुखी व पीड़ित मानव के दयालु रक्षक हैं, चूंकि आप "युद्ध की अवधि को कम करने", "जनता की तकलीफों को कम करने" और "जनता का उद्धार करने की ओर सबसे पहले ध्यान देने" के लिए तैयार हैं और चूंकि आप विशालहृदय महानुभाव हैं, इसलिए आपको

उन लोगों से, जो हमारे दसियों लाख देशबन्धुओं को कत्ल कर डालने के लिए जिम्मेदार हैं, प्यार नहीं करना चाहिए। युद्ध-अपराधियों को सजा देने की बात को समझौता-वार्ता के आधार के तौर पर मंजूर कर लेने की आपकी इच्छा पर अगर गौर किया जाए, तो लगता है कि आपको इन जन्तुओं से बहुत अधिक प्यार नहीं है। लेकिन, चूंकि आप बयान करते हैं कि उन्हें फौरन गिरफ्तार करने में आप कुछ कठिनाई महसूस कर रहे हैं – तो खैर, कम से कम उन्हें भाग जाने का मौका तो न दीजिए। किसी भी सूरत में इन जन्तुओं को निकल भागने का मौका नहीं देना चाहिए। महानुभावो, जरा सोच लीजिए, इन युद्ध-अपराधियों को सजा देने के सवाल पर हमसे वाद-विवाद करने के लिए एक प्रतिनिधिमण्डल भेजने का कष्ट उठाने के उपरान्त अगर यह पता चले कि वे भाग गए, तो फिर आखिर बात किस विषय पर की जाएगी? आपके प्रतिनिधिमण्डल के महानुभावों को किस कदर शर्मिन्दा होना पड़ेगा! तब फिर आप "शान्ति के लिए" अपनी बेहद "ईमानदारी" को कहां से प्रकट कर पाएंगे? महानुभावो, आप फिर यह कैसे साबित कर पाएंगे कि आप सचमुच "युद्ध की अवधि को कम करने", "जनता की तकलीफों को कम करने" और "जनता का उद्धार करने की ओर सबसे पहले ध्यान देने" के लिए तैयार हैं और यह कि उसमें जरा भी मक्कारी नहीं है? इसके अलावा क्वोमिन्ताङ के प्रवक्ता ने और भी बहुत सी बकवास की है। इस तरह की बकवास से कोई भी धोखे में नहीं आ सकता, और हम उसका जवाब देना गैरजरूरी समझते हैं। नानकिङ या क्वाङचओ की अथवा फङह्वा या शांघाई की काल्पनिक, नाममात्र की प्रतिक्रियावादी वतनफरोश क्वोमिन्ताङ "सरकार" (ध्यान रहे, सरकार शब्द

कोटेशन चिन्हों के अन्दर रखा गया है) के महानुभावो ! अगर आप यह समझते है कि इस वक्तव्य में हमारा रुख फिर एक बार काफी गम्भीर नही है, तो हमें माफ कीजिए, क्योंकि हम आपके प्रति केवल यही रुख अपना सकते है।

हमारी सेना को एक कार्य-सेना में बदल दो*

८ फरवरी १९४९

आपका ४ तारीख का तार मिला। यह बहुत अच्छी बात है कि आप लोग ट्रेनिंग देने और सुदृढ़ बनाने के काम में तेजी ला रहे हैं और निर्धारित समय से एक महीना पहले ही कूच शुरू कर डालने की तैयारी कर रहे हैं।[1] आशा है कि आप लोग इसी दिशा में बढ़ते जाएंगे और अपने काम में ढील नही आने देंगे। लेकिन वास्तव में ट्रेनिंग देने और सुदृढ़ बनाने का काम मार्च में भी जारी रखना होगा ; नीति के अध्ययन पर जोर देना होगा और बड़े शहरों पर अधिकार करने और उनका प्रशासन चलाने की तैयारियां करनी होंगी। "देहात पहले और शहर पीछे" का जो फार्मूला हम पिछले बीस साल से अपनाते आ रहे हैं, वह अब से उलटकर "शहर पहले और देहात पीछे" के फार्मूले में बदल जाएगा। हमारी सेना न केवल एक लड़ने वाली सेना है बल्कि मुख्य रूप से एक कार्य-सेना भी है। सेना के सभी कार्यकर्ताओं को यह सीख लेना चाहिए कि वे शहरों को अपने अधिकार में कैसे लें

*यह तार कामरेड माओ त्सेतुङ ने दूसरी और तीसरी रणांगन-सेनाओं के एक तार के जवाब में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन के लिए लिखा था। इसे अन्य सम्बन्धित रणांगन-सेनाओं और

और उनका प्रशासन कैसे चलाएं। शहरों के काम में उन्हें यह सीख लेना चाहिए कि साम्राज्यवादियों और क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों से निबटने में निपुण कैसे बना जाए, पूंजीपति वर्ग से निबटने में निपुण कैसे बना जाए, मजदूरों का नेतृत्व करने और ट्रेड यूनियनों का संगठन करने में निपुण कैसे बना जाए, नौजवानों को गोलबन्द और संगठित करने में निपुण कैसे बना जाए, नए मुक्त क्षेत्रों में कार्यकर्ताओं के साथ एकता कायम करने और उन्हें प्रशिक्षित करने में निपुण कैसे बना जाए, उद्योग और वाणिज्य का प्रबन्ध करने में निपुण कैसे बना जाए, विद्यालयों, समाचारपत्रों, समाचार-एजेन्सियों और ब्राडकास्टिंग-स्टेशनों का संचालन करने में निपुण कैसे बना जाए, वैदेशिक मामलों को हल करने में निपुण कैसे बना जाए, विभिन्न जनवादी पार्टियों और जन-संगठनों से सम्बन्धित समस्याओं को हल करने में निपुण कैसे बना जाए, शहरों और देहातों के सम्बन्धों में सामंजस्य स्थापित करने और अन्न, कोयले व जरूरत की अन्य चीजों की समस्याएं सुलझाने में निपुण कैसे बना जाए तथा मुद्रा सम्बन्धी और वित्तीय समस्याओं को हल करने में निपुण कैसे बना जाए। थोड़े में, अब से आप को शहरों की उन तमाम समस्याओं का भार अपने कन्धों पर उठा लेना चाहिए जिनसे हमारी सेना के कार्यकर्ता और

योद्धा अतीत काल में अपरिचित रहे हैं। आपको आगे बढ़कर चार-पांच प्रान्तों पर अधिकार करना है और शहरों के अलावा व्यापक देहाती क्षेत्रों का कार्य भी सम्पन्न करना है। दक्षिण के तमाम देहाती क्षेत्र नए मुक्त क्षेत्र होंगे, इसलिए उत्तर के पुराने मुक्त क्षेत्रों की तुलना में उनका काम बुनियादी तौर पर भिन्न प्रकार का होगा। लगान और सूद कम करने की नीति पहले ही साल लागू नहीं की जा सकती, इसलिए लगान और सूद की अदायगी मोटे तौर पर पहले की ही तरह जारी रहेगी। यही वे परिस्थितियां हैं जिनमें हमें देहातों के काम को आगे बढ़ाना है। इसलिए हमें देहातों का काम भी नए सिरे से सीखना होगा। लेकिन शहरों के काम की अपेक्षा देहातों का काम सीखना ज्यादा आसान है। शहरों का काम अधिक कठिन है और इन दिनों हमारे अध्ययन का सबसे मुख्य विषय यही है। अगर हमारे कार्यकर्ताओं ने नगर-प्रशासन में जल्दी ही निपुणता हासिल न कर ली, तो हमें बेहद कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। इसलिए आपको चाहिए कि तमाम दूसरे सवालों को फरवरी में ही हल कर डालें और मार्च का पूरा महीना यह सीखने में लगाएं कि शहरों में और नए मुक्त क्षेत्रों में कैसे काम किया जाए। क्वोमिन्ताङ के पास केवल दस-पन्द्रह लाख सेना है, जो विशाल क्षेत्र में बिखरी पड़ी है। इसमें शक

केन्द्रीय कमेटी के सम्बन्धित ब्यूरोओं के पास भी भेजा गया था। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि ल्याओशी-शनयाङ मुहिम, ह्वाए-हाए मुहिम और पेकिङ-थ्येनचिन मुहिम, इन तीन बड़ी मुहिमों के बाद भीषण लड़ाइयों का दौर समाप्त हो गया है, कामरेड माओ त्सेतुङ ने इस तार में उचित समय पर यह बात बताई कि जन-मुक्ति सेना न केवल लड़ने वाली सेना है बल्कि साथ ही उसे एक कार्य-सेना भी होना चाहिए और विशेष परिस्थितियों में उसे मुख्य रूप से एक कार्य-सेना की ही भूमिका अदा करनी चाहिए। इस नीति ने नए मुक्त क्षेत्रों में उस दौर में मौजूद कार्यकर्ता-समस्या को हल करने और जनता के भावी-सरकारी कार्य के सुचारु विकास की गारन्टी करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। लड़ने वाली सेना और कार्य-सेना के रूप में जन-मुक्ति सेना के स्वरूप की जानकारी के लिए देखिए इसी ग्रन्थ में "चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में रिपोर्ट" शीर्षक रचना का भाग २।

नहीं कि अभी भी हमें अनेक लड़ाइयां लड़नी हैं, मगर ह्वाए-हाए मुहिम जैसी बड़े पैमाने की लड़ाई होने की सम्भावना अब बहुत कम है, और यहां तक कि यह भी कहा जा सकता है कि अब ऐसी कोई सम्भावना नहीं है, अब भीषण लड़ाइयों का दौर समाप्त हो चुका है। सेना अब भी लड़ने वाली सेना ही है और इस मामले में कतई कोई ढील नहीं आने देनी चाहिए; ढील आने देना भूल होगी। लेकिन अब समय आ गया है कि हम सेना को एक कार्य-सेना में बदल डालने का काम अपने सामने निर्धारित कर लें। अगर हम अभी इस कार्य को अपने सामने निर्धारित नहीं करेंगे और इसे निभाने का संकल्प नहीं करेंगे, तो हम बहुत भारी भूल कर बैठेंगे। इस समय हम सेना के साथ ५३,००० कार्यकर्ताओं को दक्षिण में भेजने की तैयारी कर रहे हैं, मगर यह संख्या बहुत थोड़ी है। आठ-नौ प्रान्तों और बीसियों बड़े शहरों पर अधिकार करने के लिए काम करने वाले कार्यकर्ताओं की बहुत बड़ी तादाद में जरूरत होगी और इस समस्या को हल करने में सेना को मुख्य रूप से अपने खुद के ऊपर ही निर्भर रहना होगा। सेना एक विद्यालय है। कुल २१,००,००० सैनिकों वाली हमारी रणांगन-सेनाएं कई हजार विश्वविद्यालयों और माध्यमिक विद्यालयों के बराबर हैं। काम करने वाले कार्यकर्ताओं की मांग पूरी करने के लिए हमें मुख्य रूप से अपनी सेना पर ही निर्भर रहना है। यह बात आपको साफ-साफ समझ लेनी चाहिए। चूंकि भीषण लड़ाइयां बुनियादी तौर पर समाप्त हो चुकी हैं, इसलिए सेना की मानव-शक्ति और साज-सामान की क्षतिपूर्ति का काम उपयुक्त सीमाओं के भीतर ही किया जाना चाहिए तथा मात्रा, गुण और पूर्णता की मांग बहुत अधिक नहीं की जानी चाहिए, वरना कहीं इसकी वजह

से विन-संकट न पैदा हो जाए। यह एक और बात है, जिस पर आपको गम्भीरता से विचार करना चाहिए। ऊपर बयान की गई नीतियां चौथी रणांगन-सेना पर भी पूरी तरह लागू होती हैं और कामरेड लिन प्याओ और कामरेड लो रुङ-ह्वान से भी इन पर उतना ही ध्यान देने को कहा जा रहा है। कामरेड स्याओ शङ से हमारी विस्तार से बातचीत हुई है और उनसे कहा है कि वे जल्दी ही १२ तारीख तक आपके पास पहुंचकर आपसे बातचीत करें। बातचीत के बाद आप फौरन तार से हमें सूचना दें कि आपके विचार इस बारे में क्या हैं और आप क्या करने की सोच रहे हैं। पूर्वी चीन ब्यूरो और पूर्वी चीन फौजी क्षेत्र के हेडक्वार्टर को चाहिए कि वे अविलम्ब ह्वोचओ पहुंच जाएं और प्रधान मोर्चा-कमेटी[1] और तीसरी रणांगन-सेना की मोर्चा-कमेटी के साथ मिलकर काम करें और दक्षिण की ओर कूच करने की योजना तैयार करने का केन्द्रित प्रयास करें। पृष्ठभाग के क्षेत्र का अपना सारा काम आप शानतुङ उपब्यूरो को सौंप दें।

नोट

[1] दूसरी और तीसरी रणांगन-सेनाओं ने योजना बनाई थी कि याङ्त्सी नदी पार करने की प्रस्तावित कार्रवाई को अप्रैल १९४९ के बदले मार्च १९४९ में ही पूरा कर लिया जाए। बाद में प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार से शान्ति-वार्ता प्रारम्भ होने के कारण, जन-मुक्ति सेना द्वारा याङ्त्सी नदी पार करने की कार्रवाई को अप्रैल के अन्त तक के लिए स्थगित कर दिया गया।

[2] ह्वाए-हाए मुहिम की जरूरतों को पूरा करने के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन ने १६ नवम्बर १९४८

को एक प्रधान मोर्चा-कमेटी कायम करने का निश्चय किया, जिसके सदस्य कामरेड ल्यू पो-छङ, कामरेड छन ई, कामरेड तङ श्याओ-फिङ, कामरेड सू य्वी और कामरेड थान चन-लिन तथा सचिव कामरेड तङ श्याओ-फिङ थे ; इस कमेटी का काम था मध्यवर्ती मैदान रणक्षेत्र-सेना और पूर्वी चीन रणक्षेत्र-सेना का एकीकृत नेतृत्व सम्भालना तथा ह्वाए-हाए मोर्चे पर फौजी मामलों और फौजी कार्यवाहियों की कमान अपने हाथ में रखना।

बुरी तरह छिन्न-भिन्न प्रतिक्रियावादी क्यों अभी भी "पूर्ण शान्ति" की व्यर्थ चीख-पुकार मचा रहे हैं ?

१५ फरवरी १९४९

प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ शासन के पतन की रफ्तार लोगों के अनुमान से अधिक तेज है। यद्यपि इस बात को सिर्फ चार महीने से कुछ ही ज्यादा समय हुआ है जब मुक्ति सेना ने चीनान पर कब्जा किया और इस बात को सिर्फ तीन महीने से कुछ ही ज्यादा समय हुआ है जब उसने शनयाङ पर कब्जा किया, फिर भी फौजी, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और प्रचार-कार्य सम्बन्धी क्षेत्रों में क्वोमिन्ताङ की तमाम प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियां अब बुरी तरह छिन्न-भिन्न और विघटित हो चुकी हैं। क्वोमिन्ताङ शासन का आम पतन उत्तर के मोर्चे पर ल्याओशी-शनयाङ मुहिम व पेफिङ-थ्येनचिन मुहिम तथा दक्षिण के मोर्चे पर ह्वाए-हाए मुहिम के साथ शुरू हो गया है। इन तीन मुहिमों में, पिछले वर्ष अक्तूबर के शुरू से इस वर्ष जनवरी के अन्त तक, चार महीने से कम समय में, क्वोमिन्ताङ को १५,४०,००० से ज्यादा सैनिकों से, जिनमें उसकी नियमित सेना की १४४ समूची डिवीजनें शामिल थीं, हाथ धोना पड़ा। क्वोमिन्ताङ शासन का आम पतन होना चीनी जन-मुक्ति युद्ध और चीनी जनता के क्रान्तिकारी

आन्दोलन की महान विजयों का अनिवार्य परिणाम है, लेकिन क्वोमिन्ताङ और उसके अमरीकी आकाओं ने जो "शान्ति" की चीख-पुकार मचाई है, उसने भी क्वोमिन्ताङ के पतन की रफ्तार को तेज करने में पर्याप्त भूमिका अदा की है। इस वर्ष १ जनवरी से क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी "शान्ति अभियान" नामक एक बड़ा पत्थर उठाए हुए थे ; वे इस पत्थर को चीनी जनता पर फेंकना चाहते थे, लेकिन अब यह खुद उन्हीं के पांव पर आ गिरा है। यह ज्यादा सही तौर पर कहा जाए तो इस पत्थर ने क्वोमिन्ताङ को सिर से पैर तक चकनाचूर कर दिया है। जनरल फू च्वो-ई के अलावा, जिसने जन-मुक्ति सेना को पेपिङ का सवाल शान्तिपूर्ण तरीके से हल करने में मदद दी है, जगह-जगह बहुत से ऐसे लोग मौजूद हैं जो शान्तिपूर्ण हल की उम्मीद लगाए हुए हैं। अमरीकी एक ओर खड़े रहकर व्यर्थ में बौखला रहे हैं, क्योंकि उनके बगलबच्चों ने उनके मनसूबे धूल में मिला दिए हैं। शान्ति अभियान की यह जादू की छड़ी वास्तव में अमरीकी कारखाने में बनकर तैयार हुई थी और आधे साल से ज्यादा समय के पहले अमरीकियों द्वारा क्वोमिन्ताङ के हवाले की गई थी। लीटन स्टुअर्ट ने खुद ही यह भेद प्रकट किया। जब च्याङ काई-शेक ने अपना तथाकथित नववर्ष-सन्देश जारी किया, तो लीटन स्टुअर्ट ने केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी के एक सम्वाददाता को यह बताया कि इसी चीज के लिए तो "मैं खुद भी लगातार कोशिश करता रहा हूं"। अमरीकी समाचार-एजेन्सियों के अनुसार, उस सम्वाददाता को यह "अप्रकाश्य" कथन प्रकाशित करने की वजह से अपनी रोजी से हाथ धोना पड़ा। च्याङ काई-शेक गुट को काफी लम्बे समय तक इस अमरीकी आदेश को मानने का साहस नहीं हुआ, और इसका

कारण क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के प्रचार विभाग द्वारा २७ दिसम्बर १९४८ को जारी किए गए एक निर्देश में साफ तौर पर बता दिया गया है :

> अगर हम लड़ नहीं सकते, तो शान्ति भी कायम नहीं कर सकते। अगर हम लड़ सकते हैं, तो शान्ति की बात करने से हमारे सैनिकों व लोगों का हौसला व्यर्थ ही पस्त हो जाएगा। इसीलिए चाहे हम लड़ सकते हों अथवा नहीं, शान्ति की बात करने से हमें कोई फायदा नहीं होगा, बल्कि नुकसान ही नुकसान होगा।

क्वोमिन्ताङ ने यह निर्देश इसलिए जारी किया कि उस समय च्याङ गुट को छोड़कर क्वोमिन्ताङ के अन्य गुट पहले से ही शान्ति-वार्ता की पैरवी कर रहे थे। पिछली २५ दिसम्बर को पाए छुङ-शी ने और उसके निर्देशन में काम करने वाली हूपे प्रान्तीय परिषद ने च्याङ काई-शेक के सामने "शान्तिपूर्ण हल" का सवाल उठाया[1] और इसी से च्याङ काई-शेक ने विवश होकर १ जनवरी को अपनी पांच शर्तों के आधार पर शान्ति-वार्ता करने के बारे में एक वक्तव्य जारी किया। उसे यह उम्मीद थी कि वह शान्ति अभियान का आविष्कार करने का श्रेय पाए छुङ-शी से छीन लेगा तथा एक नए ट्रेडमार्क के अन्तर्गत अपना पुराना शासन जारी रखेगा। ८ जनवरी को उसने चाङ छुन को पाए छुङ-शी के समर्थन की मांग करने के लिए हानखओ भेजा, और उसी दिन उसने अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस और सोवियत संघ इन चार देशों की सरकारों से अनुरोध किया कि वे चीन के गृहयुद्ध में हस्तक्षेप करें[2]। लेकिन ये सभी कदम नाकाम साबित हुए। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष माओ त्से-तुङ के १४ जनवरी के वक्तव्य

में च्याङ काई-शेक के झूठी शान्ति के षड्यंत्र पर मर्मभेदी प्रहार किया गया तथा इस प्रकार च्याङ काई-शेक को एक हफ्ते बाद पर्दे के पीछे "सेवा-निवृत्त" होना पड़ा। हालांकि च्याङ काई-शेक, ली चुङ-रन और अमरीकियों ने इस षड्यंत्र के लिए हर तरह का इन्तजाम कर दिया था और उन्हें मिलकर एक अच्छा खासा युगल-गान का तमाशा आयोजित करने की उम्मीद थी, लेकिन फिर भी इसके विपरीत नतीजा यह हुआ कि न सिर्फ मंच के सामने से दर्शकगण खिसकते गए, बल्कि खुद अभिनेतागण भी मंच से एक के बाद एक लुप्त होते गए। फङह्वा में च्याङ काई-शेक अब भी "सेवा-निवृत्त व्यक्ति की हैसियत" से अपनी बचीखुची शक्ति का निर्देशन कर रहा है, लेकिन उसकी कानूनी हैसियत खत्म हो चुकी है, तथा जो लोग उस पर विश्वास करते हैं उनकी तादाद घटती जा रही है। अपनी खुद की ही पहलकदमी पर, सुन ख की "कार्यकारी य्वान" ने "सरकार का क्वाङचओ में स्थानान्तरण होने" का ऐलान कर दिया है। वह एक ओर अपने "प्रेसीडेन्ट" और "कार्यवाहक प्रेसीडेन्ट" से अलग हो गई है तथा दूसरी ओर अपनी "विधान य्वान" और "निरीक्षण य्वान" से भी अलग हो गई है। सुन ख की "कार्यकारी य्वान" ने युद्ध का आवाहन किया है,[1] लेकिन युद्ध चलाने वाला "राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्रालय" न तो क्वाङचओ में है और न नानकिङ में, तथा उसके बारे में लोगों को सिर्फ इतना ही मालूम है कि उसका प्रवक्ता शांघाई में है। इस प्रकार "पत्थर की नगरी" की चहारदीवारी से ली चुङ-रन के सामने जो कुछ दिखाई देता है वह सिर्फ यह रह गया है :

आसमान ऊ राज्य व छू राज्य की जमीन को छू रहा है,
इसके अलावा और कोई वस्तु नजर नहीं आती।[2]

२१ जनवरी को अपना पद सम्भाल लेने के बाद से ली चुङ-रन ने जो भी आदेश दिए हैं उनमें से एक का भी पालन नहीं किया गया। हालांकि क्वोमिन्ताङ के पास अब कोई "पूर्ण" "सरकार" नहीं है तथा हालांकि स्थानीय शान्ति स्थापित करने की गतिविधियां बहुत से स्थानों में जारी हैं, फिर भी क्वोमिन्ताङ कट्टरतावादी स्थानीय शान्ति का विरोध कर रहे हैं और तथाकथित "पूर्ण शान्ति" की मांग कर रहे हैं, तथा उनका उद्देश्य है शान्ति को ठुकरा देना और युद्ध जारी रखने की कुचेष्टा करना ; वे इस बात से बेहद डरते हैं कि स्थानीय शान्ति स्थापित करने की गतिविधियां फैलती जाएंगी और बढ़कर उनके काबू से बाहर हो जाएंगी। बुरी तरह छिन्न-भिन्न और विघटित हो रही क्वोमिन्ताङ की तथाकथित "पूर्ण शान्ति" की मांग का प्रहसन शांघाई में बोगस राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्रालय के राजनीतिक कार्य ब्यूरो के प्रधान, युद्ध-अपराधी तङ वन-ई के ६ फरवरी के वक्तव्य में अपने चरम-बिन्दु पर पहुंच गया। सुन ख की ही तरह तङ वन-ई ने भी ली चुङ-रन के २२ जनवरी के वक्तव्य को ठुकरा दिया, जिसमें चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा पेश की गई शान्ति की आठ शर्तों को समझौता-वार्ता का आधार मान लिया गया था ; बल्कि इसके विपरीत उसने तथाकथित "समानता के दर्जे की शान्ति, पूर्ण शान्ति" की मांग की, तथा यह कहा कि यदि यह मांग पूरी न की गई तो "हम कम्युनिस्टों के खिलाफ अन्त तक लड़ने के लिए कोई भी कुरबानी देने में पीछे नहीं रहेंगे"। लेकिन तङ वन-ई ने इस बात का जिक्र नहीं किया कि उसके विरोधियों को "समानता के दर्जे की शान्ति", "पूर्ण शान्ति" की स्थापना के लिए आखिर किसके साथ समझौता-वार्ता करनी चाहिए। ऐसा लगता है कि तङ वन-ई से सम्पर्क कायम

करने से सवाल हल नहीं किया जा सकेगा, और तङ वन-ई अथवा किसी अन्य व्यक्ति से सम्पर्क कायम न करने से भी सवाल हल नहीं किया जा सकेगा। कितनी दुविधाजनक बात है यह! ६ फरवरी को शांघाई में केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी की एक खबर में बताया गया है :

> तङ वन-ई से एक सम्वाददाता ने पूछा, "क्या आपके सार्वजनिक वक्तव्य के चार मुद्दों[1] की कार्यवाहक प्रेसीडेन्ट ली ने पुष्टि कर दी है?" तङ वन-ई ने जवाब दिया, "मैं राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्रालय के दृष्टिबिन्दु से बोल रहा हूं, तथा जिन चार मुद्दों की मैंने आज चर्चा की है उन्हें पहले कार्यवाहक प्रेसीडेन्ट ली के सामने पेश नहीं किया गया।"

यहां तङ वन-ई ने न सिर्फ बोगस राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्रालय के आंशिक दृष्टिबिन्दु को ईजाद किया है, जो बोगस क्वोमिन्ताङ सरकार के पूर्ण दृष्टिबिन्दु से भिन्न है, बल्कि वास्तव में बोगस राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्रालय के राजनीतिक कार्य ब्यूरो के अपेक्षाकृत छोटे आंशिक दृष्टिबिन्दु को भी ईजाद किया है, जो बोगस राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्रालय के अपेक्षाकृत बड़े आंशिक दृष्टिबिन्दु से भिन्न है। कारण, तङ वन-ई ने खुलेआम पेकिङ के शान्तिपूर्ण हल का विरोध किया है और उस पर कीचड़ उछाला है, जबकि बोगस राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्रालय ने २७ जनवरी को यह कहकर पेकिङ के शान्तिपूर्ण हल की प्रशंसा की कि उसे "युद्ध की अवधि को कम करने, शान्ति प्राप्त करने और इस प्रकार प्राचीन राजधानी पेकिङ की आधारशिलाओं तथा इसकी सांस्कृतिक वस्तुओं व ऐतिहासिक स्मारकों को बनाए रखने के उद्देश्य से" कर लिया गया है, तथा यह ऐलान किया कि ताथुङ और स्वेय्वान

जैसे स्थानों[1] में भी इसी तरह "लड़ाई बन्द कर दी जाएगी"। इससे यह पता चलता है कि जो प्रतिक्रियावादी बेहद जोरों के साथ "पूर्ण शान्ति" की चीख-पुकार मचा रहे हैं, वही असल में न्यूनतम पूर्ण दृष्टिबिन्दु वाले प्रतिक्रियावादी हैं। राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्रालय का एक राजनीतिक कार्य ब्यूरो राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्रालय के विपरीत खड़ा हो सकता है और अपने कार्यवाहक प्रेसीडेन्ट के भी विपरीत खड़ा हो सकता है। ये प्रतिक्रियावादी आज चीन में शान्ति स्थापित करने में सबसे बड़ी बाधा बने हुए हैं। वे "पूर्ण शान्ति" का नारा लगाकर पूर्ण युद्ध का ढोल पीटने का स्वप्न देख रहे हैं; उनके अपने ही शब्दों में "अगर युद्ध होना हो तो पूर्ण युद्ध होने दिया जाए, अगर शान्ति स्थापित करनी हो तो पूर्ण शान्ति स्थापित होने दी जाए"। लेकिन वास्तव में उनके अन्दर न तो पूर्ण शान्ति स्थापित करने की सामर्थ्य है और न पूर्ण युद्ध करने की। पूर्ण सामर्थ्य चीनी जनता, चीनी जन-मुक्ति सेना, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और अन्य जनवादी पार्टियों के पास है, बुरी तरह छिन्न-भिन्न और विघटित क्वोमिन्ताङ के पास नहीं। एक पक्ष में पूर्ण सामर्थ्य मौजूद है, जबकि दूसरा पक्ष बुरी तरह छिन्न-भिन्न और विघटित होने की निराशापूर्ण स्थिति में पड़ा हुआ है; यह हालत चीनी जनता के दीर्घकालीन संघर्ष और क्वोमिन्ताङ के दीर्घकालीन कुकर्मों का परिणाम है। चीन की आज की राजनीतिक परिस्थिति में इस बुनियादी तथ्य को कोई भी गम्भीर व्यक्ति नजरअन्दाज नहीं कर सकता।

नोट

[१] च्याङ काई-शेक के सामने उस समय जो अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थिति मौजूद थी उसका फायदा उठाते हुए, क्वोमिन्ताङ के मध्य चीन "डाकू-दमन" हेडक्वार्टर के कमाण्डर-इन-चीफ पाए छुङ-शी ने २५ दिसम्बर १९४८ को च्याङ के सामने "शान्तिपूर्ण हल" का प्रस्ताव पेश किया, जिसका मकसद था च्याङ को अपना पद छोड़ने के लिए मजबूर करना तथा क्वाङशी गुट का दर्जा ऊंचा उठाना। पाए छुङ-शी के निर्देशन में क्वोमिन्ताङ हूपे प्रान्तीय परिषद ने एक तार च्याङ काई-शेक को भेजा, जिसमें उसे यह चेतावनी दी गई कि "अगर युद्ध की तबाही लगातार फैलती रही और इस हालत को बदलने के लिए तुरन्त कार्यवाही न की गई, तो राज्य और जनता दोनों ही बरबाद हो जाएंगे", तथा यह सलाह दी गई कि वह "राजनीतिक हल का सामान्य रास्ता अपनाए तथा शान्तिपूर्ण समझौता-वार्ता फिर से शुरू करने के उपाय खोजे"।

[२] ८ जनवरी १९४९ को क्वोमिन्ताङ सरकार ने अमरीका, बरतानिया, फ्रांस और सोवियत संघ इन चार देशों की सरकारों से चीन के गृहयुद्ध में हस्तक्षेप करने का जो अनुरोध किया, उसे चारों देशों की सरकारों द्वारा ठुकरा दिया गया। १२ जनवरी को क्वोमिन्ताङ सरकार के नाम भेजे गए अपने "मेमोरेण्डम" में अमरीका सरकार ने इसका स्पष्टीकरण करते हुए बताया कि अमरीका ने क्वोमिन्ताङ सरकार का अनुरोध इसलिए ठुकरा दिया कि "यह विश्वास नहीं किया जा सकता कि इससे कोई लाभदायक लक्ष्य प्राप्त हो सकेगा"। इसका मतलब यह था कि उस समय अमरीका ने यह महसूस कर लिया कि वह प्रतिक्रियावादी च्याङ काई-शेक की राजसत्ता को, जिसका उसने पालन-पोषण किया था, सर्वनाश से अब किसी भी सूरत में नहीं बचा सकेगा।

[३] ६ और ७ फरवरी १९४९ को क्वोमिन्ताङ सरकार की क्वोमिन्ताङ कार्यकारी य्वान के प्रेसीडेन्ट सुन फ़ो ने क्वाङचओ में दो बयान दिए, जिनमें उसने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा पेश की गई शान्ति की आठ शर्तों को समझौता-वार्ता का आधार मानने के बारे में ली चुङ-रन के वक्तव्य का विरोध किया। उसने कहा कि "सरकार ने अब क्वाङचओ में, जहां उसका स्थानान्तरण हो गया है, कार्य

करना शुरू कर दिया है तथा हमें अपने अतीत का फिर से आलोचनात्मक ढंग से सिंहावलोकन करना चाहिए"। उसने यह भी कहा कि "युद्ध-अपराधियों को सजा देने के बारे में जो शर्त कम्युनिस्ट पार्टी ने पेश की है, उसे कतई मंजूर नहीं किया जा सकता"।

[४] ये पंक्तियां १४वीं शताब्दी के य्वान वंश के कवि सादुल की एक कविता "पत्थर की नगरी" से ली गई हैं। "पत्थर की नगरी" नानकिङ शहर का प्राचीन नाम है। ऊ राज्य और छू राज्य में सामान्य रूप से याङत्सी नदी के मध्यवर्ती व निचले भाग के इलाके शामिल थे।

[५] ९ फरवरी १९४९ को शांघाई में क्वोमिन्ताङ राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्रालय के राजनीतिक कार्य ब्यूरो के प्रधान तङ वन-ई ने "शान्ति और युद्ध का विकास" शीर्षक एक लिखित वक्तव्य दिया, जिसमें निम्नलिखित "चार मुद्दे" पेश किए गए : (१) "सरकार शान्ति चाहती है"; (२) "चीनी कम्युनिस्ट पार्टी युद्ध चाहती है"; (३) "पेकिङ की स्थानीय शान्ति एक धोखाधड़ी बन गई है"; (४) "हम कम्युनिस्टों के खिलाफ अन्त तक लड़ने के लिए कोई भी कुरबानी देने में पीछे नहीं रहेंगे"।

[६] थ्येनचिन और पेकिङ की मुक्ति के बाद, उत्तरी चीन में सिर्फ थोड़े से बचेखुचे अलग-थलग मोर्चेबन्दी वाले स्थल ही क्वोमिन्ताङ सेना के कब्जे में रह गए। उनमें थाएय्वान, ताथुङ, शिनश्याङ, आनयाङ और क्वेइस्वेइ शामिल थे। थाएय्वान स्थित दुश्मन का हमने २४ अप्रैल १९४९ को पूरी तरह सफाया कर दिया। ताथुङ स्थित दुश्मन ने १ मई को शान्तिपूर्ण पुनर्गठन स्वीकार कर लिया। शिनश्याङ स्थित दुश्मन ने ५ मई को मुक्ति सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। आनयाङ स्थित दुश्मन का हमने ६ मई को सफाया कर दिया। क्वेइस्वेइ १९ सितम्बर को शान्तिपूर्ण तरीके से मुक्त हो गया।

क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों द्वारा "शान्ति की अपील" से बदलकर युद्ध की अपील

१६ फरवरी १९४९

जब डाक् च्याङ काई-शेक ने १ जनवरी को अपना शान्ति अभियान शुरू किया, तभी से प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ गुट के मूरमा लगातार बड़े विस्तार से यह दोहराते रहे हैं कि वे "युद्ध की अवधि को कम करने", "जनता की तकलीफों को कम करने" तथा "जनता का उद्धार करने की ओर सबसे पहले ध्यान देने" के लिए तैयार हैं। लेकिन फरवरी के शुरू में इन लोगों ने अचानक अपना शान्ति का राग धीमा कर दिया है तथा वे "कम्युनिस्टों के खिलाफ अन्त तक लड़ने" का अपना पुराना राग यकायक ऊंचे स्वर में अलापने लगे हैं। पिछले चन्द दिनों में यह बात खास तौर पर नजर आई है। १३ फरवरी को क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के प्रचार विभाग ने "सभी पार्टी-हेडक्वार्टरों और पार्टी-अखबारों" के नाम "प्रचार-कार्य के लिए विशेष निर्देश" जारी किया, जिसमें कहा गया :

> ये च्येन-इङ हमारे पृष्ठभागीय क्षेत्रों में यह प्रचार कर रहा है कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी सच्चे दिल से शान्ति स्थापित करना चाहती है, जबकि साथ ही सरकार के फौजी इन्तजाम की निन्दा

करते हुए वह यह भी कह रहा है कि सरकार सच्चे दिल से शान्ति स्थापित करना नहीं चाहती। हमारे सभी अखबारों को चाहिए कि वे निम्नलिखित मुद्दों के अनुरूप, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इसका जोरदार खण्डन करें।

इस "प्रचार-कार्य के लिए विशेष निर्देश" में इस प्रकार का "खण्डन" किए जाने के एक के बाद एक कई कारण बताए गए हैं :

सरकार के लिए बिनाशर्त आत्मसमर्पण करने से यही बेहतर है कि वह अन्त तक लड़ती रहे।

माओ त्सेतुङ ने अपने १४ जनवरी के वक्तव्य में जो आठ शर्तें पेश की हैं उनसे राष्ट्र नष्ट हो जाएगा, तथा सरकार को उन्हें स्वीकार नहीं करना चाहिए था।

शान्ति भंग करने की जिम्मेदारी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को अपने ऊपर लेनी चाहिए। लेकिन इसके बजाय, उसने अब तथा-कथित युद्ध-अपराधियों की एक सूची तैयार कर ली है जिसमें तमाम सरकारी नेताओं के नाम शामिल हैं, तथा इससे भी आगे बढ़कर उसने यह मांग पेश की है कि सरकार पहले उन्हीं नेताओं को गिरफ्तार कर ले; इससे यह बात साफ तौर पर जाहिर हो जाती है कि कम्युनिस्ट पार्टी का रुख कितना दुराग्रहपूर्ण और शक्तिहीन है। अगर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अपने इस बरताव को नहीं बदलती, तो शान्ति-वार्ता के लिए रास्ता खोज निकालना निश्चय ही बड़ा कठिन होगा।

आज से दो हफ्ते पहले समझौता-वार्ता करने की जो दयनीय बेचैनी उनमें दिखाई दे रही थी वह अब बिलकुल नजर नहीं आती। "युद्ध

की अवधि को कम करने", "जनता की तकलीफों को कम करने" और "जनता का उद्धार करने की ओर सबसे पहले ध्यान देने" जैसे मशहूर कथनों का, ऐसे कथनों का जो सारी दुनिया में फैल जाते थे और लोगों का दिल बहलाते थे, अब जिक्र भी नहीं किया जाता। अगर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अपना "बरताव" बदलने को राजी नहीं होती और युद्ध-अपराधियों को सजा देने पर अड़ी रहती है, तो शान्ति-वार्ता असम्भव हो जाएगी। आखिर किस कार्य की ओर सबसे पहले ध्यान दिया जाए – जनता का उद्धार करना अथवा युद्ध-अपराधियों का? क्वोमिन्ताङ के इन सूरमाओं द्वारा जारी किए गए "प्रचार-कार्य के लिए विशेष निर्देश" के अनुसार वे लोग दूसरी बात को पसन्द करते हैं। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी युद्ध-अपराधियों की सूची के बारे में अब भी जनवादी पार्टियों और जन-संगठनों से सलाह-मशविरा कर रही है, तथा कई क्षेत्रों ने अपनी रायें भी दी हैं। अब तक जो रायें दी गई हैं उनके अनुसार वे सब लोग पिछले वर्ष २५ दिसम्बर को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के एक अधिकृत व्यक्ति द्वारा पेश की गई सूची को अस्वीकार करते हैं। वे समझते हैं कि सिर्फ तैंतालीस युद्ध-अपराधियों के नाम की सूची बहुत छोटी है; वे समझते हैं कि जो लोग प्रति-क्रान्तिकारी युद्ध छेड़ने और दसियों लाख लोगों का कत्लेआम करने के लिए जिम्मेदार हैं, उनकी संख्या सिर्फ तैंतालीस तक ही सीमित नहीं रखी जानी चाहिए बल्कि सौ से ऊपर होनी चाहिए। फिलहाल यह माना जा सकता है कि युद्ध-अपराधियों की संख्या सौ से ज्यादा निर्धारित की जाएगी। तब क्वोमिन्ताङ के सूरमाओं से हम पूछना चाहेंगे कि तुम लोग युद्ध-अपराधियों को सजा देने का आखिर क्यों विरोध करते हो? क्या तुम "युद्ध की अवधि को कम करने" और

"जनता की तकलीफों को कम करने" के लिए तैयार नहीं हो? अगर तुम्हारे इस विरोध के परिणामस्वरूप युद्ध जारी रहता है, तो क्या इसका मतलब यह नहीं होगा कि तुम समय को टालने की कोशिश कर रहे हो और युद्ध की विभीषिका को बढ़ा रहे हो? "समय को टालने की कोशिश करना" और "युद्ध की विभीषिका को बढ़ाना" – यही आरोप तुमने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ अपने उस बयान में लगाया था जिसे २६ जनवरी १६४६ को नानकिङ सरकार के प्रवक्ता के नाम से जारी किया गया; क्या अब तुम उसे वापस लेकर एक तख्ती पर लिखवाकर, गौरव-चिन्ह के रूप में अपने गले में लटका लेना चाहते हो? तुम लोग बेहद सहानुभूति और करुणा के अवतार हो तथा "जनता का उद्धार करने की ओर सबसे पहले ध्यान देने" का दावा करते हो। तो फिर तुम क्यों अचानक बदलकर युद्ध-अपराधियों का उद्धार करने की ओर सबसे पहले ध्यान देने लगे हो? तुम्हारी सरकार के गृह-मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, चीन की जन-संख्या ४५ करोड़ नहीं, बल्कि ४७ करोड़ ५० लाख है; जरा इस संख्या की सौ से ज्यादा युद्ध-अपराधियों की संख्या से तुलना कीजिए – कौन सी संख्या बड़ी है? तुम सूरमाओं ने गणित तो पढ़ा ही है, मेहरबानी करके अपनी गणित की पाठ्य-पुस्तक के अनुसार अच्छी तरह यह सवाल हल करो और तब अपना निष्कर्ष निकालो। अगर यह सवाल अच्छी तरह हल किए बिना ही तुम "जनता का उद्धार करने की ओर सबसे पहले ध्यान देने" के अपने मूल फार्मूले को – एक अच्छे फार्मूले को, जो हम लोगों को और समूचे देश की जनता को मंजूर है – बड़ी जल्दबाजी के साथ बदलकर "सौ से ज्यादा युद्ध-अपराधियों का उद्धार करने की ओर

सबसे पहले ध्यान देने" का रूप दे दोगे, तो होशियार हो जाओ, ऐसी सूरत में यह निश्चित है कि तुम्हारे पांव टिक नहीं पाएंगे। कई हफ्तों तक "शान्ति की अपील" करने के बाद, ये व्यक्ति, जो "जनता का उद्धार करने की ओर सबसे पहले ध्यान देने" की बार-बार रट लगाते रहे हैं, अब "शान्ति की अपील" बिलकुल नहीं कर रहे, बल्कि युद्ध की अपील कर रहे हैं। क्वोमिन्ताङ कट्टरतावादियों के मुश्किल में फंस जाने का कारण यह है कि उन्होंने जनता का बड़ी हठधर्मी के साथ विरोध किया है, जनता पर सवारी गांठकर मनमाने जुल्म किए हैं तथा इस प्रकार अपने आपको इतना ज्यादा अलगाव की स्थिति में डाल दिया है मानो वे किसी पगोडा की चोटी पर बैठे हों; साथ ही वे लोग तब तक पश्चात्ताप नहीं करेंगे जब तक उनकी मौत नहीं आ जाती। याङत्सी की घाटी और दक्षिण के व्यापक जन-समुदाय के तमाम लोगो – मजदूरो, किसानो, बुद्धिजीवियो, शहरी निम्न-पूंजीपतियो, राष्ट्रीय पूंजीपतियो, जागृत शरीफजादो तथा क्वोमिन्ताङ के सब नेकदिल सदस्यो – मेहरबानी करके इस बात पर ध्यान दो: तुम लोगों पर सवारी गांठकर मनमाने जुल्म ढाने वाले क्वोमिन्ताङ कट्टरतावादियों की जिन्दगी के दिन अब इनेगिने ही रह गए हैं। हम लोग और तुम लोग एक ही पक्ष में खड़े हैं। मुट्ठीभर कट्टरतावादी जल्दी ही पगोडा की चोटी से नीचे लुढ़क जाएंगे तथा जनता के चीन का जल्दी ही उदय होगा।

युद्ध की जिम्मेदारी के सवाल पर क्वोमिन्ताङ के अलग-अलग जवाबों के बारे में टिप्पणी

१८ फरवरी १९४९

"प्रतिरोध-युद्ध की समाप्ति के बाद, सरकार ने शान्तिपूर्ण राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की नीति पर चलते हुए, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की समस्या को शान्तिपूर्ण ढंग से हल करने की बड़ी कोशिश की। डेढ़ साल के अरसे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने हर समझौते को तोड़ा, इसलिए शान्ति भंग करने की जिम्मेदारी उसी को अपने ऊपर लेनी चाहिए। लेकिन इसके बजाय, उसने अब तथाकथित युद्ध-अपराधियों की एक सूची तैयार कर ली है जिसमें तमाम सरकारी नेताओं के नाम शामिल हैं, तथा इससे भी आगे बढ़कर उसने यह मांग पेश की है कि सरकार पहले उन्हीं नेताओं को गिरफ्तार कर ले; इससे यह बात साफ तौर पर जाहिर हो जाती है कि कम्युनिस्ट पार्टी का रुख कितना दुराग्रहपूर्ण और युक्तिहीन है। अगर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अपने इस बरताव को नहीं बदलती, तो शान्ति-वार्ता के लिए रास्ता खोज निकालना निश्चय ही बड़ा कठिन होगा।"

यह युद्ध की जिम्मेदारी के सवाल के बारे में पूरी की पूरी दलील है,

जो क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के प्रचार विभाग द्वारा १३ फरवरी १९४९ को जारी किए गए "प्रचार-कार्य के लिए विशेष निर्देश" में दी गई है।

यह दलील किसी दूसरे की नहीं, बल्कि अव्वल नम्बर के युद्ध-अपराधी च्यांङ काई-शेक की है। अपने नववर्ष के बयान में उसने कहा :

> तीन जन-सिद्धान्तों के एक वफादार अनुयायी के रूप में, राष्ट्र-पिता की शिक्षाओं को श्रद्धा के साथ कार्यान्वित करते हुए, मैं इस बात के लिए तनिक भी इच्छुक नहीं था कि जापान-विरोधी युद्ध की समाप्ति के बाद फिर डाकुओं के दमन के लिए सैनिक कार्यवाही की जाए और इस प्रकार जनता की तकलीफों को बढ़ा दिया जाए। इसलिए जैसे ही प्रतिरोध-युद्ध समाप्त हुआ, हमारी सरकार ने शान्तिपूर्ण राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की अपनी नीति का ऐलान कर दिया और एक कदम आगे बढ़कर कम्युनिस्ट पार्टी की समस्या को राजनीतिक सलाह-मशविरे व फौजी मध्यस्थता के जरिए हल करने की कोशिश की। लेकिन हमारी आशाओं के विपरीत, कम्युनिस्ट पार्टी ने डेढ़ साल के अरसे में तमाम समझौतों व प्रस्तावों को लागू करने के रास्ते में जानबूझकर रुकावटें डालीं और अपेक्षित कदमों के अनुसार उन्हें लागू करना नामुमकिन बना दिया। और यहां तक कि अन्त में उसने चौतरफा रूप से सशस्त्र विद्रोह छेड़ दिया, जिसने राज्य के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया। इस प्रकार विद्रोह को कुचल देने के

> लिए मजबूरन लामबन्दी करना इस सरकार के लिए एक दुखद आवश्यकता बन गया।

च्यांङ काई-शेक का यह बयान जारी होने के सात दिन पहले, यानी २५ दिसम्बर १९४८ को, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के एक अधिकृत व्यक्ति ने ४३ युद्ध-अपराधियों की एक सूची पेश की थी और इस सूची में पहले नम्बर पर च्यांङ काई-शेक का ही नाम था। इन युद्ध-अपराधियों के पास, जो शान्ति के लिए मिन्नतें करना चाहते हैं और साथ ही अपनी जिम्मेदारी से भी बचना चाहते हैं, इसके अलावा और कोई चारा नहीं है कि वे इसकी जिम्मेदारी कम्युनिस्ट पार्टी के सिर मढ़ दें। लेकिन ये दोनों बातें परस्पर-विरोधी हैं। चूंकि कम्युनिस्ट पार्टी को युद्ध छेड़ने के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, इसलिए उसे सजा दी जानी चाहिए। चूंकि कम्यु-निस्ट "डाकू" हैं, इसलिए अवश्य ही "डाकुओं का दमन" कर दिया जाना चाहिए। चूंकि उन्होंने "चौतरफा रूप से सशस्त्र विद्रोह छेड़ा", इसलिए अवश्य ही इस "विद्रोह को कुचल देना" चाहिए। "डाकुओं का दमन करने" और "विद्रोह को कुचल देने" की बात तो सौ फीसदी दुरुस्त है, तब फिर उसे क्यों छोड़ दिया जाए? आखिर क्या वजह है कि क्वोमिन्ताङ के उन सभी सार्वजनिक दस्तावेजों में, जो १ जनवरी १९४९ के बाद से जारी किए गए हैं, बिना किसी अपवाद के "कम्युनिस्ट डाकू" शब्द के स्थान पर "कम्युनिस्ट पार्टी" शब्द का इस्तेमाल किया गया?

सुन खो ने कुछ अटपटा महसूस किया और उसी दिन शाम को, जिस दिन च्यांङ काई-शेक ने अपना नववर्ष का बयान जारी किया

था, ब्राडकास्ट किए गए अपने एक भाषण में युद्ध की जिम्मेदारी के बारे में एक अलग दलील पेश की। सुन ख ने कहा :

हमें याद है कि तीन वर्ष पहले, प्रतिरोध-युद्ध की विजय के बाद वाले काल के शुरू में जबकि जनता को पुनर्वास की जरूरत थी, देश का सक्रिय रूप से पुनर्निर्माण करने की जरूरत थी और इन जरूरतों के बारे में विभिन्न पार्टियों के बीच एक समान समझदारी भी मौजूद थी, विभिन्न पक्षों के प्रतिनिधियों और सार्वजनिक गण्यमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित करके एक राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन आयोजित किया गया था। तीन सप्ताह की कोशिशों के बाद, और खास तौर पर प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन के विशेष दूत मिस्टर मार्शल की सौजन्यपूर्ण मध्यस्थता की मेहरबानी से, हम लोग शान्तिपूर्ण राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के एक प्रोग्राम और विभिन्न प्रकार के मतभेदों को मिटा देने के ठोस प्रस्तावों के बारे में सहमत हो गए। अगर हमने उस समय इन प्रस्तावों पर समय रहते अमल किया होता, तो जरा सोचिए कि आज का चीन कितना समृद्धिशाली बन गया होता और आज की चीनी जनता कितनी सुखी होती ! अफसोस की बात है कि उस समय विभिन्न पार्टियों में से कोई भी पार्टी अपने निजी स्वार्थों का पूर्ण परित्याग कर देने को तैयार नहीं थी, साथ ही समूचे देश की जनता ने शान्ति-आन्दोलन को सफल बनाने के लिए भरपूर शक्ति से प्रयास नहीं किया, इसलिए युद्ध का संकट फिर से आ खड़ा हुआ तथा लोग तकलीफों व मुसीबतों से घिर गए।

सुन ख च्याङ काई-शेक की तुलना में जरा "निष्पक्ष" मालूम होता है। जरा गौर कीजिए, वह च्याङ काई-शेक की तरह नहीं है, उसने युद्ध की समूची जिम्मेदारी कम्युनिस्ट पार्टी के मत्थे नहीं मढ़ दी, बल्कि "जमीन की मिल्कियत के समानीकरण" का तरीका अपनाकर "विभिन्न पार्टियों" को समान रूप से जिम्मेदार ठहराया है। उनमें क्वोमिन्ताङ भी है, कम्युनिस्ट पार्टी भी है, जनवादी संघ भी है और सार्वजनिक गण्यमान्य व्यक्ति भी हैं। इतना ही नहीं, उनमें "समूचे देश की जनता" भी शामिल है ; हमारे ४७ करोड़ ५० लाख देशबन्धुओं में से एक भी आदमी इस जिम्मेदारी से बच नहीं सकता। जहां च्याङ काई-शेक ने सिर्फ कम्युनिस्ट पार्टी पर ही डण्डे बरसाए है, वहां सुन ख सभी पार्टियों पर, सभी निर्दलीय लोगों पर और अपने हर देशबन्धु पर एक-एक डण्डा मारता है ; यहां तक कि च्याङ काई-शेक पर और शायद खुद सुन ख पर भी डण्डा मारा गया है। यहां आपके सामने क्वोमिन्ताङ के दो सदस्य, सुन ख और च्याङ काई-शेक, एक दूसरे के खिलाफ खड़े हैं।

एक तीसरे क्वोमिन्ताङ सदस्य ने आगे बढ़कर कहा है : नहीं, मेरे विचार से सिर्फ क्वोमिन्ताङ को ही जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। इस व्यक्ति का नाम ली चुङ-रन है। २२ जनवरी १९४९ को ली चुङ-रन ने "कार्यवाहक प्रेसीडेन्ट" की हैसियत से एक वक्तव्य जारी किया। युद्ध की जिम्मेदारी के बारे में उसने कहा :

आठ वर्ष के प्रतिरोध-युद्ध के बाद तीन वर्ष से जो गृहयुद्ध चल रहा है, उससे न सिर्फ प्रतिरोध-युद्ध की विजय के बाद देश के पुनरुद्धार की अन्तिम आशा पर एकदम पानी फिर गया है बल्कि पीली नदी के उत्तर व दक्षिण में हर जगह युद्ध का संकट छा

गया है, अनगिनत खेत-खलिहान व मकान नष्ट हो गए हैं, हजारों बेगुनाह लोग हताहत हो गए हैं, असंख्य परिवार बिछुड़ गए हैं, तथा हर जगह लोग भूख और ठण्ड से कराह रहे हैं। ऐसी भीषण तबाही की हमारे देश के गृहयुद्ध के इतिहास में सचमुच कोई मिसाल नहीं मिलती।

यहां ली चुङ-रन ने वक्तव्य तो जारी कर दिया है, लेकिन नाम किसी का नहीं लिया। उसने न तो क्वोमिन्ताङ को जिम्मेदार ठहराया है और न कम्युनिस्ट पार्टी अथवा किसी अन्य संगठन को। फिर भी उसने एक तथ्य बता दिया है कि यह "भीषण तबाही" किसी अन्य स्थान पर नहीं, बल्कि केवल "पीली नदी के उत्तर व दक्षिण में" ही ढाई गई है। यहां हम इस बात की जांच करें कि पीली नदी के दक्षिण में याङत्सी नदी तक और पीली नदी के उत्तर में सुङह्वा नदी तक फैले हुए क्षेत्र में यह "भीषण तबाही" आखिर किसने ढाई? क्या यह तबाही वहां की जनता और जनता की सेना ने अपने खुद के खिलाफ लड़ाई लड़कर ढाई है? चूंकि ली चुङ-रन किसी समय च्याङ काई-शेक के पेफिङ हेडक्वार्टर का प्रधान रह चुका था और चूंकि उसके क्वाङशी गुट की फौजों ने किसी समय च्याङ काई-शेक गुट की फौजों के साथ मिलकर शानतुङ प्रान्त के ई-मङ पहाड़ी क्षेत्र में युद्ध किया था,[1] इसलिए उसे इस बात की पुख्ता जानकारी है कि यह "तबाही" कहां और कैसे ढाई गई। अगर ली चुङ-रन में और कोई अच्छाई नहीं, तो कम से कम यह अच्छाई तो है कि उसने एक सच्ची बात कही है। यही नहीं, "विद्रोह को कुचल देने" अथवा "डाकुओं का दमन करने" की बात कहने के बदले उसने इस युद्ध

को एक "गृहयुद्ध" की संज्ञा दी है, और इसे क्वोमिन्ताङ के लिए एक बिलकुल अनोखी बात कहा जा सकता है।

अपने खुद के तर्क के अनुरूप, ली चुङ-रन ने इसी वक्तव्य में कहा है कि "सरकार चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा पेश की गई आठ शर्तों के आधार पर फौरन समझौता-वार्ता शुरू करने को तैयार है"। ली चुङ-रन यह जानता है कि इन आठ शर्तों में से पहली शर्त है युद्ध-अपराधियों को सजा देना तथा यह कि उनमें उसका अपना सम्मानित नाम भी शामिल है। युद्ध-अपराधियों को सजा दी जानी चाहिए, यह "तबाही" का एक तर्कसंगत निष्कर्ष है। यही वजह है कि क्वोमिन्ताङ कट्टरतावादी अब भी ली चुङ-रन के खिलाफ अस्पष्ट शब्दों में शिकवे करते हैं कि "माओ त्सेतुङ ने अपने १४ जनवरी के वक्तव्य में जो आठ शर्तें पेश की हैं उनसे राष्ट्र नष्ट हो जाएगा तथा सरकार को उन्हें स्वीकार नहीं करना चाहिए था"।

इस बात के कारण मौजूद हैं कि कट्टरतावादी सिर्फ अस्पष्ट शब्दों में शिकवे-शिकायतें क्यों करते हैं और खुल्लमखुल्ला अपनी बात कहने का साहस क्यों नहीं करते। च्याङ काई-शेक के "सेवा-निवृत्त" होने से पहले, कट्टरतावादी हमारी आठ शर्तों को ठुकरा देना चाहते थे, लेकिन बाद में च्याङ काई-शेक ने इसे अनुचित समझा और ऐसा न करने का फैसला किया, उसने शायद यह सोचा कि उनको ठुकरा देने से कोई रास्ता नहीं रह जाएगा; १६ जनवरी को ऐसी ही हालत थी। उस दिन सुबह के वक्त चाङ च्युन-माए ने नानकिङ से शांघाई लौटने पर अपने बयान में यह कहा कि "चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा पेश की गई आठ शर्तों के जवाब में सरकार सम्भवतया शीघ्र ही एक अन्य वक्तव्य जारी करेगी", इसके बाद उसी दिन शाम के वक्त

केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी ने एक सन्देश भेजा जिसमें कहा गया :

> अभी-अभी प्राप्त हुए चाङ च्युन-माए के बयान में, जो शांघाई से भेजा गया है, निम्नलिखित नोट जोड़ दिया जाए : जहां तक उनके इस कथन का ताल्लुक है कि सरकार शीघ्र ही एक अन्य वक्तव्य जारी करेगी, केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी के एक सम्वाददाता को सम्बन्धित अधिकारियों से अभी-अभी पता चला है कि सरकार का एक अन्य वक्तव्य जारी करने का कोई इरादा नहीं है।

२१ जनवरी को "सेवा-निवृत्त" होने के सम्बन्ध में दिए गए अपने वक्तव्य में च्याङ काई-शेक ने उक्त आठ शर्तों का खण्डन करने के बारे में एक भी शब्द नहीं कहा, यहां तक कि अपनी खुद की पांच शर्तों को भी छोड़ दिया तथा उन्हें इस प्रकार बदल दिया : "एक ऐसे उसूल के आधार पर शान्ति प्राप्त करना कि प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता बनी रहे, ऐतिहासिक संस्कृति और सार्वजनिक व्यवस्था को नष्ट न किया जाए तथा जन-जीविका और स्वतंत्रता के अधिकार की हिफाजत की जा सके"। उसने संविधान, विधिसम्मत सत्ताधिकार तथा सेना आदि बातों की फिर से चर्चा करने का साहस ही नहीं किया। यही वजह है कि २२ जनवरी को ली चुङ-रन ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आठ शर्तों को समझौता-वार्ता का आधार मानने की हिम्मत की, तथा क्वोमिन्ताङ कट्टरतावादियों ने उसका खुल्लम-खुल्ला विरोध करने का साहस नहीं किया बल्कि महज अस्पष्ट शब्दों में यह शिकवा किया कि "सरकार को उन्हें स्वीकार नहीं करना चाहिए था"।

क्या सुन ख "जमीन की मिल्कियत के समानीकरण" की अपनी नीति पर लगातार चलता रहा? नहीं। ५ फरवरी १९४९ को उसने "सरकार का क्वाङचओ में स्थानान्तरण" किया, उसके बाद ७ फरवरी को उसने एक भाषण दिया, जिसमें युद्ध की जिम्मेदारी के सवाल के बारे में उसने कहा :

> पिछले छै महीनों में युद्ध की तबाही फैलने की वजह से परिस्थिति में गम्भीर परिवर्तन हुए हैं तथा जनता को बेअन्त मुसीबतें झेलनी पड़ी हैं। इन सब बातों की जड़ हैं पिछली गलतियां, नाकामयाबियां और अयुक्तिसंगतताएं ; आज की गम्भीर परिस्थिति इन्हीं का परिणाम है। हम सब लोग भलीभांति जानते हैं कि चीन को तीन जन-सिद्धान्तों की जरूरत है। जब तक तीन जन-सिद्धान्तों पर अमल नहीं किया जाएगा, तब तक चीन की समस्याएं हरगिज हल नहीं हो सकेंगी। स्मरण रहे कि आज से बीस साल पहले हमारी पार्टी के "चुङली" ने खुद ही तीन जन-सिद्धान्तों को विरासत के रूप में हमारी पार्टी को सौंपा था, इस उम्मीद से कि उन पर कदम-ब-कदम अमल किया जाएगा। अगर उन पर अमल किया गया होता, तो आज परिस्थिति काबू के बाहर हरगिज न हो पाती।

जरा इस बात पर गौर कीजिए कि यहां क्वोमिन्ताङ सरकार की कार्यकारी य्वान के प्रेसीडेन्ट ने विभिन्न पार्टियों और अपने तमाम देशबन्धुओं को युद्ध के लिए समान रूप से जिम्मेदार नहीं ठहराया है, बल्कि खुद क्वोमिन्ताङ को ही जिम्मेदार ठहराया है। लोगों को यह देखकर बहुत अच्छा लगता है कि सुन ख सिर्फ क्वोमिन्ताङ की

पीठ पर ही डण्डे बरसा रहा है। मगर कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में उसका क्या कहना है ? प्रेसीडेन्ट सुन ने कहा है :

> हम यह देख सकते हैं कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी महज जमीन की मिल्कियत के समानीकरण की, जो तीन जन-सिद्धान्तों में से जन-जीविका के सिद्धान्त का एक हिस्सा है, अपील करके जनता को फुसलाने और गुमराह करने में कामयाब हुई है। हमें सचमुच बड़ी शर्म महसूस करनी चाहिए, अपनी सतर्कता को बढ़ाना चाहिए तथा अपनी पिछली गलतियों का फिर एक बार आलोचनात्मक ढंग से सिंहावलोकन करना चाहिए।

शुक्रिया, प्यारे प्रेसीडेन्ट साहब ! हालांकि कम्युनिस्ट पार्टी को अब भी "जनता को फुसलाने और गुमराह करने" का दोषी ठहराया जा रहा है, फिर भी वह अन्य जघन्य अपराधों से तो बरी है और इसलिए डण्डों की मार से बच गई है तथा अपनी खोपड़ी व पीठ को सुरक्षित रख पाई है।

प्रेसीडेन्ट सुन के प्रिय होने का एकमात्र कारण यही नहीं है। अपने उसी भाषण में उसने कहा है :

> आज कम्युनिस्ट पार्टी का जो असर फैल रहा है वह उन सिद्धान्तों को कार्यान्वित न कर सकने का ही परिणाम है जिन पर हमारी आस्था है। अतीत काल में हमारी पार्टी से सबसे बड़ी गलती यह हुई कि पार्टी के कुछ सदस्यों ने सशस्त्र शक्ति के प्रति बेहद ज्यादा अन्धभक्ति रखी और सत्ता के लिए आपस में संघर्ष किया तथा इस प्रकार दुश्मन को हमारे भीतर फूट डालने का मौका दिया। आठ वर्ष के प्रतिरोध-युद्ध की समाप्ति देश का शान्तिपूर्ण एकीकरण करने का एक ऐसा मौका था जो हजारों सालों में मुश्किल से मिलता है, और शुरू में सरकार की योजना भी थी कि घरेलू झगड़ों को राजनीतिक तरीकों से हल किया जाएगा ; लेकिन बदकिस्मती से उसे कार्यान्वित नहीं किया जा सका। अनेक वर्षों के युद्ध और अव्यवस्था के बाद जनता तुरन्त पुनर्वास करने की सख्त जरूरत महसूस करने लगी थी। सशस्त्र मुठभेड़ फिर से शुरू होने से लोगों की जिन्दगी दूभर हो गई तथा उन्हें भारी तकलीफें उठानी पड़ीं ; इससे फौजों का हौसला भी कम हो गया तथा इसके फलस्वरूप एक के बाद एक फौजी असफलताओं का सामना करना पड़ा। जनता की भावनाओं का आदर करते हुए और यह समझते हुए कि समस्या को हल करने में फौजी उपाय असफल रहे हैं, प्रेसीडेन्ट च्याङ ने एक नववर्ष-सन्देश जारी किया जिसमें शान्ति का आवाहन किया गया।

क्या खूब है ! यहां इस युद्ध-अपराधी सुन ख ने स्वेच्छा से एक इकबाल-नामा पेश किया है और यह बिलकुल स्पष्टवादी और सच्चा इकबाल-नामा है, हालांकि उसे अभी गिरफ्तार भी नहीं किया गया और उस पर डण्डे भी नहीं पड़े। आखिर वह कौन था जिसने सशस्त्र शक्ति के प्रति अन्धभक्ति रखी, युद्ध छेड़ दिया और जब फौजी उपाय इस समस्या को हल करने में असफल रहे तो शान्ति के लिए मिन्नतें कीं ? वह और कोई न होकर क्वोमिन्ताङ ही थी, और कोई न होकर खुद च्याङ काई-शेक ही था। प्रेसीडेन्ट सुन ने उस समय शब्द चुनने में बड़ी सूक्ष्मता से काम लिया जब उसने यह कहा कि सशस्त्र शक्ति के

प्रति बेहद ज्यादा अन्धभक्ति रखने वाले लोग उसकी पार्टी के भीतर के ही "कुछ सदस्य" है। यह बात चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की इस मांग से मेल खाती है कि क्वोमिन्ताङ के सिर्फ कुछ सदस्यों को ही सजा दी जाए और युद्ध-अपराधी घोषित किया जाए, और उससे ज्यादा सदस्यों के साथ ऐसा न किया जाए तथा सभी सदस्यों के साथ तो ऐसा हरगिज न किया जाए।

संख्या के बारे में हमारा सुन ख से कोई विवाद नही है। हमारा उससे मतभेद है निष्कर्ष के बारे में। हमारा मत है कि क्वोमिन्ताङ के उन "कुछ सदस्यों" को युद्ध-अपराधी के रूप में सजा दी जानी चाहिए जिन्होंने "सशस्त्र शक्ति के प्रति अन्धभक्ति रखी" तथा इसी कारण "सशस्त्र मुठभेड़ फिर से शुरू होने से लोगों की जिन्दगी दूभर हो गई"। लेकिन सुन ख ऐसा करने से सहमत नही। वह कहता है :

> अपने प्रतिनिधिमण्डल की नियुक्ति में देरी करके और समय को लगातार टालकर कम्युनिस्ट पार्टी ने यह जाहिर कर दिया है कि वह भी सशस्त्र शक्ति के प्रति अन्धभक्ति रखती है, तथा यह समझती है कि वह अब पूर्ण रूप से परिपक्व हो गई है और सशस्त्र शक्ति के जरिए सारे देश को फतह कर सकती है ; इसलिए वह पहले कदम के रूप में लड़ाई बन्द करने से इनकार करती है। उसका इरादा बिल्कुल साफ है। मुझे अत्यन्त गम्भीरता के साथ जो बात पेश करनी है वह यह है कि स्थाई शान्ति स्थापित करने के लिए दोनों पक्षों को समानता के स्तर पर समझौता-वार्ता करनी चाहिए तथा उनके समझौते की शर्तें न्यायोचित, युक्ति-संगत और समूचे देश की जनता को मान्य होनी चाहिए।

इससे हम यह देख सकते है कि प्रेसीडेन्ट सुन इतना ज्यादा प्रिय नही बन पाया। मालूम होता है कि उसके विचार में युद्ध-अपराधियों को सजा देना एक न्यायोचित और युक्तिसंगत शर्त नही है। युद्ध-अपराधियों के सवाल के बारे में उसके शब्दों से एक ऐसा रुख जाहिर होता है जो १३ फरवरी को क्वोमिन्ताङ के प्रचार विभाग द्वारा जारी किए गए "प्रचार-कार्य के लिए विशेष निर्देश" में प्रकट किए गए रुख से मिलता-जुलता है, यानी उसने भी केवल अस्पष्ट शब्दों का प्रयोग किया है और खुल्लमखुल्ला विरोध करने का साहस नही किया। ली चुङ-रन के मुकाबले, जिसने युद्ध-अपराधियों को सजा देने की बात को समझौता-वार्ता के लिए बुनियादी शर्तों में से एक मानने की हिम्मत की है, सुन ख बहुत भिन्न है।

लेकिन प्रेसीडेन्ट सुन के अन्दर कुछ चीज ऐसी है जिससे वह फिर भी प्रिय लगता है, क्योंकि वह यह कहता है कि कम्युनिस्ट पार्टी भी "सशस्त्र शक्ति के प्रति अन्धभक्ति रखती है", जो इन दो बातों से जाहिर होता है : "अपने प्रतिनिधिमण्डल की नियुक्ति में देरी करना" तथा "पहले कदम के रूप में लड़ाई बन्द करने से इनकार करना" ; मगर वह क्वोमिन्ताङ की तरह नही है, जिसने १९४६ में ही सशस्त्र शक्ति के प्रति अन्धभक्ति रखी तथा एक अत्यन्त नृशंसतापूर्ण युद्ध छेड़ दिया। "अपने प्रतिनिधिमण्डल की नियुक्ति में देरी करने" का कारण यह है कि युद्ध-अपराधियों की सूची तैयार करना एक महत्वपूर्ण मामला है, यह "समूचे देश की जनता को मान्य होना चाहिए" तथा एक ऐसी सूची, जो जरूरत से ज्यादा लम्बी अथवा जरूरत से ज्यादा छोटी हो, अयथार्थ होगी और "समूचे देश की जनता" के लिए (जिसकी पांतों में युद्ध-अपराधी और उनके सह-

अपराधी शामिल नहीं हैं) अमान्य होगी। इसलिए जनवादी पार्टियों और जन-संगठनों के साथ सलाह-मशविरा करना जरूरी है; इसी वजह से कुछ समय "टलता" रहा है तथा हम अपने प्रतिनिधियों को तुरन्त नियुक्त नहीं कर पाए, जिससे सुन ख और उसके जैसे लोग काफी अप्रसन्न हो गए। लेकिन इस बात से यह बात दावे के साथ नहीं कही जा सकती कि कम्युनिस्ट पार्टी भी "सशस्त्र शक्ति के प्रति अन्धभक्ति रखती है"। सम्भवतया ज्यादा समय बीतने से पहले ही युद्ध-अपराधियों की सूची घोषित कर दी जाएगी, हमारे प्रतिनिधि नियुक्त कर दिए जाएंगे तथा समझौता-वार्ता शुरू हो जाएगी; तब तो प्रेसीडेन्ट सुन यह नहीं कह सकेगा कि हम "सशस्त्र शक्ति के प्रति अन्धभक्ति रखते हैं"।

जहां तक "पहले कदम के रूप में लड़ाई बन्द करने से इनकार करने" का ताल्लुक है, यह एक सही रुख है जिसे प्रेसीडेन्ट च्याङ के नववर्ष-सन्देश के अनुरूप अपनाया गया है। प्रेसीडेन्ट च्याङ के नववर्ष-सन्देश में कहा गया है :

> ज्योंही कम्युनिस्ट पार्टी में शान्ति के लिए सच्ची आकांक्षा पैदा होगी और वह इस सम्बन्ध में निश्चित संकेत देगी, तो सरकार उसके साथ अवश्य ही सच्चे दिल से मुलाकात करेगी तथा लड़ाई बन्द करने और शान्ति की पुनर्स्थापना करने से सम्बन्धित ठोस उपायों पर विचार-विमर्श करने को तैयार हो जाएगी।

१६ जनवरी को सुन ख की कार्यकारी य्वान ने च्याङ काई-शेक के उपरोक्त सन्देश का उल्लंघन करके एक फैसला लिया, जिसमें कहा गया कि "सबसे पहले फौरन बिनाशर्त लड़ाई बन्द कर दी जाए और

तब शान्ति-वार्ता में शरीक होने के लिए अपने-अपने प्रतिनिधियों को नियुक्त किया जाए"। २१ जनवरी को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के एक प्रवक्ता ने इस तर्कहीन फैसले की गम्भीरता के साथ आलोचना की।[१] आशा के विपरीत हुआ यह कि कार्यकारी य्वान के उस प्रेसीडेन्ट ने इस आलोचना की अनसुनी कर दी तथा ७ फरवरी को फिर एक बार बकवास की कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा "पहले कदम के रूप में लड़ाई बन्द करने से इनकार करना" इस बात का सबूत है कि वह भी "सशस्त्र शक्ति के प्रति अन्धभक्ति रखती है"। च्याङ काई-शेक जैसा युद्ध-अपराधी भी यह जानता है कि समझौता-वार्ता के बिना लड़ाई बन्द करना और शान्ति की पुनर्स्थापना करना असम्भव है; इस मामले में सुन ख च्याङ काई-शेक से कहीं पीछे है।

जैसा कि सबको मालूम है, सुन ख को इसलिए युद्ध-अपराधी ठहराया गया है कि उसने युद्ध छेड़ने और युद्ध जारी रखने में हमेशा च्याङ काई-शेक का समर्थन किया है। २२ जून १९४७ तक भी सुन ख यह कह रहा था कि "अगर हम फौजी लड़ाई अन्त तक जारी रखेंगे, तो अन्त में हल जरूर निकलेगा" तथा "इस समय शान्ति-वार्ता करने का सवाल ही नहीं उठता और सरकार को चाहिए कि वह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को तहस-नहस कर दे, नहीं तो कम्युनिस्ट पार्टी राष्ट्रीय सरकार का तख्ता उलट देगी"।[२] सुन ख खुद भी क्वोमिन्ताङ के उन "कुछ सदस्यों" में से एक है, जो सशस्त्र शक्ति के प्रति अन्धभक्ति रखते हैं। लेकिन अब वह किनारे खड़ा होकर गैरजिम्मेदाराना शिकवे-शिकायतें कर रहा है, मानो उसने खुद कभी भी सशस्त्र शक्ति के प्रति अन्धभक्ति न रखी हो तथा तीन जन-सिद्धान्तों को कार्यान्वित न करने के लिए भी वह खुद जिम्मेदार

न हो। यह सरासर बेईमानी है। चाहे राज्य के कानून की दृष्टि से देखा जाए अथवा क्वोमिन्ताङ के पार्टी-अनुशासन की दृष्टि से, सुन खं डण्डे की मार से हरगिज नहीं बच सकता।

नोट

[1] यहां शानतुङ प्रान्त के ई पहाड़ और मङ पहाड़ के क्षेत्र का उल्लेख किया गया है। क्वाङशी गुट की ४६वीं फौजी कोर ने च्याङ काई-शेक गुट की फौजों के साथ मिलकर इस क्षेत्र पर हमला कर दिया। यह कोर हाएनान द्वीप से समुद्र के रास्ते अक्तूबर १९४६ में छिङताओ पहुंचाई गई थी। फरवरी १९४७ में उसका शानतुङ प्रान्त के लाएऊ क्षेत्र में पूरी तरह सफाया कर दिया गया।

[2] देखिए इसी ग्रन्थ में "नानकिङ की कार्यकारी य्वान के फैसले के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता की टिप्पणी" शीर्षक रचना।

[3] यहां २६ जून १९४७ को सुन खं द्वारा, जो उस समय क्वोमिन्ताङ सरकार का वाइस-प्रेसीडेन्ट था, नानकिङ में एसोसिएटेड प्रेस, क्वोमिन्ताङ के "केन्द्रीय दैनिक समाचार" तथा "शिनमिन पाओ" के सम्वाददाताओं से अपनी मुलाकात के दौरान कही गई बातों का उल्लेख किया गया है।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में रिपोर्ट*

५ मार्च १९४९

१

ल्याओशी-शनयाङ, ह्वाए-हाए और पेइफिङ-थ्येनचिन मुहिमों की समाप्ति के बाद क्वोमिन्ताङ सेना की मुख्य शक्ति नष्ट हो चुकी है। उसकी लड़ाकू सेनाओं में महज दस लाख से कुछ अधिक सैनिक शेष रह गए हैं, जो सिनच्याङ से थाइवान तक के विस्तृत इलाकों में और बहुत अधिक लम्बे मोर्चों पर फैले हुए हैं। भविष्य में इन क्वोमिन्ताङ सेनाओं से निपटने के केवल तीन तरीके हो सकते हैं – थ्येनचिन का तरीका, पेइफिङ का तरीका अथवा स्वेइय्वान का तरीका[1]। हमारे ध्यान देने और तैयारी करने का मुख्य लक्ष्य अभी भी यही

*चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी ने ५ मार्च से लेकर १३ मार्च १९४९ तक हपे प्रान्त की फिङशान काउन्टी के शीपोफो गांव में अपना दूसरा पूर्ण अधिवेशन आयोजित किया। इस अधिवेशन में केन्द्रीय कमेटी के ३४ सदस्यों और १९ वैकल्पिक सदस्यों ने भाग लिया। यह अधिवेशन, जो चीनी जनता की क्रान्ति की देशव्यापी विजय की पूर्ववेला में बुलाया गया, अत्यन्त

होना चाहिए कि लड़कर ही दुश्मन की फौज से निपटा जाए, जैसा कि हमने थ्येनचिन में किया। समस्त चीनी जन-मुक्ति सेना के कमाण्डरों और योद्धाओं को अपने लड़ने के संकल्प को रत्तीभर भी कम नहीं करना चाहिए ; कोई भी ऐसा विचार जो लड़ने के संकल्प को क्षीण बनाता हो और दुश्मन की शक्ति को कम करके आंकता हो, गलत है। पेफिङ के तरीके से समस्या को हल करने की सम्भावना बढ़ गई है, अर्थात दुश्मन की फौजों को इस बात के लिए मजबूर कर देना कि वे जन-मुक्ति सेना की व्यवस्था के अनुसार अपने को शान्तिपूर्ण तरीके से, शीघ्रता से और मुकम्मिल तौर पर जन-मुक्ति सेना के रूप में पुनर्गठित कर लें। प्रतिक्रान्ति के अवशेषों को यथाशीघ्र मिटा देने तथा उसके राजनीतिक प्रभाव को यथाशीघ्र नेस्तनाबूद कर देने के लिए यह हल उतना कारगर नहीं है जितना कि लड़ने का तरीका। फिर भी दुश्मन की मुख्य सेना के नष्ट हो जाने के बाद इस तरह की चीज अनिवार्य है और इसे रोका नहीं जा सकता ; इसके अलावा हमारी सेना तथा जनता के लिए यह लाभदायक भी है, क्योंकि ऐसा करने से लोग हताहत नहीं होंगे और विध्वंस से भी बचा जा सकेगा। इसलिए विभिन्न रणांगन-सेनाओं के तमाम नेतृत्व-

महत्वपूर्ण था। अधिवेशन में अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए कामरेड माओ त्सेतुङ ने क्रान्ति की देशव्यापी विजय जल्दी से जल्दी प्राप्त करने के कार्य को आगे बढ़ाने और इस विजय को संगठित करने के बारे में नीतियां प्रस्तुत कीं। उन्होंने समझाया कि इस विजय के साथ ही पार्टी के कार्य का गुरुत्व-केन्द्र गांव से हटकर शहर में आ जाना चाहिए। उन्होंने उन बुनियादी राजनीतिक, आर्थिक व वैदेशिक नीतियों को प्रतिपादित किया जो पार्टी को देशव्यापी विजय के बाद अपनानी चाहिए और चीन को एक कृषि-प्रधान देश से एक औद्योगिक देश में बदलने, एक नव-

कारी कामरेडों को चाहिए कि वे संघर्ष के इस रूप पर गौर करें और इसका इस्तेमाल करना सीख लें। यह संघर्ष का एक रूप है, संघर्ष का एक ऐसा रूप जिसमें रक्तपात नहीं होता ; इसका मतलब यह नहीं कि समस्याएं बिना संघर्ष के सुलझाई जा सकती हैं। स्वेइय्वान का तरीका यह है कि जानबूझकर क्वोमिन्ताङ सेना के एक हिस्से को पूरे तौर पर या लगभग ज्यों का त्यों रहने दिया जाता है, अर्थात, इन सेनाओं को अस्थाई तौर पर रियायतें दी जाती हैं ताकि राजनीतिक दृष्टि से उन्हें अपने पक्ष में कर लेने या उन्हें तटस्थ बना देने में मदद मिले। इस तरह हम पहले क्वोमिन्ताङ की बचीखुची सेनाओं के मुख्य भाग का सफाया कर देने के लिए अपनी शक्तियों को केन्द्रित कर सकते हैं और फिर एक निश्चित अवधि के बाद (मसलन कुछ महीनों बाद, छै महीने या सालभर बाद), जन-मुक्ति सेना की व्यवस्था के अनुसार जन-मुक्ति सेना के रूप में इन सेनाओं का पुनर्गठन करने का काम शुरू कर सकते हैं। यह संघर्ष का दूसरा रूप है। पेफिङ के तरीके की अपेक्षा यह तरीका प्रतिक्रान्ति के अवशेषों तथा उसके राजनीतिक प्रभाव को अपेक्षाकृत ज्यादा मात्रा में और ज्यादा समय तक बनाए रखेगा। लेकिन इस बात में रत्तीभर भी शक नहीं कि अन्त में उनका

जनवादी समाज को एक समाजवादी समाज में रूपान्तरित करने के लिए आम कार्यों और मुख्य दिशा को निर्धारित किया। खास तौर से, उन्होंने चीन की अर्थव्यवस्था के विभिन्न तत्वों की वर्तमान हालत का और पार्टी द्वारा अपनाई जाने वाली सही नीतियों का विश्लेषण किया ; उन्होंने चीन में समाजवादी रूपान्तर का कार्य पूरा करने के लिए आवश्यक तरीकों को बताया ; उन्होंने इस सवाल के बारे में विभिन्न "वामपंथी" तथा दक्षिणपंथी भटकावों का खण्डन किया और इस बात का पक्का विश्वास प्रकट किया कि चीन की अर्थव्यवस्था

सफाया कर दिया जाएगा। ऐसा हरगिज नहीं समझना चाहिए कि एक बार हमारे सामने सिर झुकाने मात्र से प्रतिक्रान्तिकारी व्यक्ति क्रान्तिकारियों में बदल जाएंगे और उनके प्रतिक्रान्तिकारी विचारों व मनसूबों का अस्तित्व मिट जाएगा। ऐसा हरगिज नहीं होगा। प्रतिक्रान्तिकारियों में से बहुतों का पुनःसंस्कार किया जाएगा, कुछ लोगों की छानबीन करके उन्हें अलग कर दिया जाएगा तथा कट्टरपंथी किस्म के कुछ प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन किया जाएगा।

२

जन-मुक्ति सेना हमेशा ही एक लड़ने वाली सेना होती है। देशव्यापी विजय प्राप्त करने के बाद, एक ऐसे ऐतिहासिक काल में जबकि हमारे देश में से वर्गों को खत्म नहीं किया गया है तथा साम्राज्यवादी व्यवस्था अभी दुनिया में मौजूद है, हमारी सेना एक लड़ने वाली सेना बनी रहेगी। इस बारे में किसी भी किस्म की गलतफहमी या ढुलमुलपन नहीं होना चाहिए। जन-मुक्ति सेना एक कार्य-सेना भी है; ऐसी परिस्थिति खास तौर से उस समय आएगी जबकि दक्षिण में

अपेक्षाकृत तेज रफ्तार से विकसित होगी। कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी जनता की जनवादी क्रान्ति की विजय के बाद देश के अन्दर और देश के बाहर के वर्ग-संघर्ष की नई परिस्थिति का मूल्यांकन किया और यह सामयिक चेतावनी दी कि पूंजीपति वर्ग की "शक्कर में लिपटी गोलियां" सर्वहारा वर्ग के लिए मुख्य खतरा बनेंगी। ये सब बातें इस दस्तावेज को एक बहुत लम्बे ऐतिहासिक काल तक अत्यन्त महत्वपूर्ण बना देती है। यह रिपोर्ट और उसी साल जून में उनके द्वारा लिखा गया "जनता के जनवादी अधिनायकत्व के बारे में" शीर्षक लेख

पेफिङ या स्वेय्युआन जैसे हल लागू किए जाएंगे। जैसे-जैसे लड़ाई कम होती जाएगी, एक कार्य-सेना की हैसियत से उसका काम भी बढ़ता जाएगा। इस बात की सम्भावना भी है कि जल्दी ही समस्त जन-मुक्ति सेना एक कार्य-सेना में परिवर्तित हो जाए, और हमें इस सम्भावना को अपने ध्यान में रखना चाहिए। ५३,००० कार्यकर्ता, जो इस समय सेना के साथ दक्षिण की तरफ जाने के लिए तैयार है, उन विशाल नए इलाकों के लिए बिलकुल नाकाफी है जो शीघ्र ही हमारे कब्जे में आने वाले है, और हमें इस बात की तैयारी करनी चाहिए कि वे तमाम रणांगन-सेनाएं, जिनमें सैनिकों की कुल संख्या २१,००,००० है, कार्य-सेनाओं में परिवर्तित हो जाएं। उस सूरत में हमारे पास काफी कार्यकर्ता हो जाएंगे और विशाल क्षेत्रों में काम का विकास किया जा सकेगा। २१,००,००० सैनिकों वाली रणांगन-सेना को हमें कार्यकर्ताओं का एक विशाल स्कूल समझना चाहिए।

३

१९२७ से लेकर आज तक हमारे कार्य का गुरुत्व-केन्द्र गांव ही रहे है – गांवों में अपनी ताकत को बटोरना, शहरों को घेरने के लिए

उन नीतियों के लिए आधार बन गया जिन्हें चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रथम पूर्ण अधिवेशन द्वारा स्वीकृत "संयुक्त कार्यक्रम" में शामिल किया गया। इस "संयुक्त कार्यक्रम" को नए चीन की स्थापना के बाद एक अस्थाई संविधान के तौर पर इस्तेमाल किया गया। पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन ने कामरेड माओ त्सेतुङ की रिपोर्ट के आधार पर एक प्रस्ताव पास किया। इस अधिवेशन के बाद, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी हपे प्रान्त की फिङशान काउन्टी के शीपाएफो से हटकर पेफिङ आ गई।

गांवों का इस्तेमाल करना और फिर शहरों पर कब्जा जमा लेना। इस तरीके से काम करने का काल अब बीत चुका है। "शहर से गांव की तरफ जाने" तथा शहर द्वारा गांव का नेतृत्व करने का काल अब प्रारम्भ हो गया है। पार्टी के कार्य का गुरुत्व-केन्द्र गांव से हटकर शहर में आ गया है। दक्षिण में जन-मुक्ति सेना पहले शहरों पर कब्जा करेगी और फिर गांवों पर। शहर और गांव दोनों पर ध्यान देना निहायत जरूरी है और शहरी तथा ग्रामीण कार्य के बीच, मजदूरों तथा किसानों के बीच, उद्योग तथा कृषि के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना बहुत जरूरी है। किसी भी सूरत में ऐसा नहीं होना चाहिए कि गांवों की उपेक्षा की जाए और सिर्फ शहरों पर ही ध्यान दिया जाए; इस तरह सोचना बिलकुल गलत है। फिर भी, पार्टी तथा सेना के कार्य का गुरुत्व-केन्द्र शहर में ही होना जरूरी है; शहरों का प्रशासन कैसे चलाया जाए और उनका निर्माण कैसे किया जाए, इसे सीखने के लिए हमें भरसक प्रयत्न करना चाहिए। शहर के अन्दर हमें साम्राज्यवादियों, क्वोमिन्ताङ तथा पूंजीपति वर्ग के खिलाफ राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक संघर्ष चलाना सीख लेना चाहिए और यह भी सीख लेना चाहिए कि साम्राज्यवादियों के खिलाफ राजनयिक संघर्ष कैसे चलाया जाए। हमें सीख लेना चाहिए कि उनके खिलाफ खुल्लमखुल्ला संघर्ष कैसे चलाया जाए, हमें यह भी सीख लेना चाहिए कि उनके खिलाफ गुप्त संघर्ष कैसे चलाया जाए। अगर हम इन समस्याओं की तरफ ध्यान नहीं देते, अगर हम यह नहीं सीखते कि उनके खिलाफ किस तरह ये संघर्ष चलाए जाएं और किस तरह इन संघर्षों में विजय प्राप्त की जाए, तो फिर हम अपनी राजनीतिक सत्ता कायम नहीं रख सकेंगे, हम खुद अपने पैरों पर खड़े नहीं

हो सकेंगे, हम असफल हो जाएंगे। बन्दूकधारी दुश्मनों के नेस्तनाबूद कर दिए जाने के बाद बन्दूकरहित दुश्मन फिर भी मौजूद रहेंगे; वे निश्चय ही जान की बाजी लगाकर हमारे खिलाफ संघर्ष करेंगे; हमें इन दुश्मनों को नजरअन्दाज हरगिज नहीं करना चाहिए। अगर इस समय हम इस सवाल को इस तरह नहीं उठाते और इसे नहीं समझते, तो हम बहुत गम्भीर गलतियां कर बैठेंगे।

४

शहरों के अपने संघर्षों में हम किन पर भरोसा करेंगे? कुछ उलझे दिमाग वाले कामरेड सोचते हैं कि हमें मजदूर वर्ग पर नहीं बल्कि गरीब जन-समुदाय पर भरोसा करना चाहिए। कुछ कामरेड, जो इससे भी ज्यादा उलझे दिमाग वाले हैं, यह सोचते हैं कि हमें पूंजीपति वर्ग पर भरोसा करना चाहिए। जहां तक औद्योगिक विकास की दिशा का ताल्लुक है, कुछ उलझे दिमाग वाले कामरेड यह सोचते हैं कि हमें मुख्य रूप से निजी उद्योग-धन्धों के विकास में मदद करनी चाहिए, राजकीय उद्योग-धन्धों के विकास में नहीं; कुछ दूसरे लोगों का खयाल इससे बिलकुल उल्टा है, वे कहते हैं कि राजकीय उद्योग-धन्धों पर ध्यान देना ही काफी होगा तथा निजी उद्योग-धन्धों का बहुत कम महत्व है। इन उलझनभरे विचारों का हमें खण्डन करना चाहिए। हमें पूरे दिल से मजदूर वर्ग पर भरोसा करना चाहिए, बाकी मेहनतकश जनता के साथ एकता स्थापित करनी चाहिए, बुद्धिजीवियों को अपने पक्ष में कर लेना चाहिए और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के ऐसे तत्वों तथा उनके प्रतिनिधियों को जो हमारे साथ

सहयोग कर सकते हैं. अधिक से अधिक संख्या में अपने पक्ष में कर लेना चाहिए या उन्हें तटस्थ बना देना चाहिए, ताकि हम साम्राज्यवादियों, क्वोमिन्ताङ तथा नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग के खिलाफ दृढ़तापूर्वक संघर्ष चला सकें और इन दुश्मनों को कदम-ब-कदम शिकस्त दे सकें। साथ ही हम अपने निर्माण-कार्य को शुरू कर देंगे और कदम-ब-कदम यह सीख लेंगे कि शहरों का प्रशासन किस तरह चलाया जाए और वहां उत्पादन का कैसे पुनरुद्धार किया जाए तथा उसका कैसे विकास किया जाए। उत्पादन का पुनरुद्धार करने तथा उसका विकास करने के सिलसिले में हमें नीचे लिखी बातें बिलकुल साफ-साफ समझ लेनी चाहिए : राजकीय उद्योगों का उत्पादन सबसे पहले आता है, निजी उद्योगों का उत्पादन दूसरे नम्बर पर आता है तथा दस्तकारी उद्योगों का उत्पादन तीसरे नम्बर पर आता है। किसी शहर के प्रशासन को हाथ में लेने के पहले दिन से ही हमें उत्पादन का पुनरुद्धार करने तथा उसका विकास करने के कार्य पर ध्यान देना चाहिए। हमें आंखें मूंदकर उल्टे-सीधे किसी भी तरह काम कर डालने की कोशिश नहीं करनी चाहिए और अपने मुख्य कार्य को भूल नहीं जाना चाहिए। ऐसी हालत नहीं होनी चाहिए कि किसी शहर के प्रशासन को हाथ में लेने के कई महीने बाद तक भी उसका उत्पादन-कार्य तथा निर्माण-कार्य ठीक ढर्रे पर न लाया जाए और बहुत से उद्योग-धन्धे ठप्प पड़े रहें : इससे बहुत से मजदूर बेरोजगार हो जाएंगे, उनका जीवन-स्तर नीचा हो जाएगा और वे कम्युनिस्ट पार्टी से बेजार हो जाएंगे। इस तरह की हालत की कतई अनुमति नहीं दी जा सकती। इसलिए हमारे कामरेडों को उत्पादन की तकनीक तथा उत्पादन का प्रबन्ध करने के तरीके, साथ ही उत्पादन से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित

अन्य काम, जैसे वाणिज्य व बैंकिंग, सीख लेने में कुछ भी न उठा रखना चाहिए। जब शहरों में उत्पादन का पुनरुद्धार हो जाएगा तथा उसका विकास हो जाएगा, जब उपभोक्ता शहर बदलकर उत्पादक शहर बन जाएंगे, सिर्फ तभी जनता की राजनीतिक सत्ता को सुदृढ़ बनाया जा सकेगा। शहरों के अन्य काम – मसलन, पार्टी के संगठन का काम, राजनीतिक सत्ता के संगठनों का काम, ट्रेड यूनियनों तथा अन्य जन-संगठनों का काम, संस्कृति तथा शिक्षा का काम, प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने का काम, समाचार-एजेन्सियों, समाचारपत्रों तथा ब्राडकास्टिंग-स्टेशनों का काम – ये सभी काम इस मुख्य कार्य, उत्पादन व निर्माण, की धुरी पर घूमते रहते हैं और उसी की सेवा करते हैं। अगर हम उत्पादन के बारे में कुछ भी नहीं जानते और शीघ्रता के साथ उसमें महारत नहीं हासिल कर लेते, अगर हम जल्दी से जल्दी उत्पादन का पुनरुद्धार नहीं कर सकते और उसका विकास नहीं कर सकते तथा ठोस सफलता हासिल नहीं कर सकते, ताकि आम जनता का और सबसे पहले मजदूरों का जीवन-स्तर उन्नत हो सके, तो हम अपनी राजनीतिक सत्ता कायम नहीं रख सकेंगे, हम अपने पैरों पर खड़े नहीं हो सकेंगे, हम असफल हो जाएंगे।

५

दक्षिण के हालात उत्तर के हालात से भिन्न हैं, और इसलिए इन जगहों में पार्टी का कार्य भी भिन्न रहेगा। दक्षिण का इलाका अभी भी क्वोमिन्ताङ के शासन में है। वहां पर पार्टी तथा जन-मुक्ति सेना का कार्य इस प्रकार रहेगा : शहरों व गांवों में क्वोमिन्ताङ की प्रति-

क्रियावादी सैन्य-शक्तियों का सफाया करना, पार्टी-संगठनों को कायम करना, राजनीतिक सत्ता के संगठनों को कायम करना, व्यापक जन-समूह को जागृत करना, ट्रेड यूनियनों, किसान सभाओं व अन्य जन-संगठनों को स्थापित करना, जनता की सैन्य-शक्ति की स्थापना करना, क्वोमिन्ताङ की बचीखुची शक्तियों का सफाया करना तथा उत्पादन का पुनरुद्धार करना और उसका विकास करना। ग्रामीण क्षेत्रों में हमारा कार्य इस प्रकार होगा : सबसे पहले, डाकुओं का सफाया करने तथा स्थानीय निरंकुश तत्वों – जमींदार वर्ग का वह तबका जो सत्तारूढ़ है – का विरोध करने के लिए कदम-ब-कदम संघर्ष चलाना, ताकि सूद व लगान को कम करने के लिए तैयारियां पूरी की जा सकें ; फिर जन-मुक्ति सेना के आ जाने के एक-दो साल के अन्दर सूद व लगान को कम करने का यह कार्य पूरा किया जा सकता है, और इस तरह भूमि का वितरण करने के लिए पूर्वस्थिति तैयार की जा सकती है। साथ ही जहां तक सम्भव हो, कृषि-पैदावार का मौजूदा स्तर बरकरार रखना चाहिए और उसे नीचे नहीं गिरने देना चाहिए। उत्तर में, कुछ नए मुक्त क्षेत्रों को छोड़कर, हालात बिलकुल भिन्न किस्म के हैं। यहां क्वोमिन्ताङ के शासन का तख्ता पलटा जा चुका है, जनता का शासन स्थापित किया जा चुका है और भूमि-समस्या मूल रूप से हल की जा चुकी है। यहां पार्टी का मुख्य कार्य है – उत्पादन का पुनरुद्धार करने व उसका विकास करने के लिए तमाम शक्तियों को गोलबन्द करना ; इसे सभी कामों का गुरुत्व-केन्द्र समझना चाहिए। साथ ही इस बात की भी जरूरत है कि सांस्कृतिक व शैक्षणिक कार्य का पुनरुद्धार किया जाए तथा उसका विकास किया जाए, प्रतिक्रिया-वादियों की बचीखुची शक्ति का सफाया कर दिया जाए, सारे उत्तरी

क्षेत्र को सुदृढ़ बनाया जाए और जन-मुक्ति सेना की सहायता की जाए।

६

हम व्यापक रूप से आर्थिक निर्माण-कार्य कर चुके हैं, और व्यवहार में पार्टी की आर्थिक नीति को कार्यान्वित किया गया है तथा इस बारे में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की गई है। फिर भी, इस सवाल के बारे में कि हम इसी किस्म की आर्थिक नीति को क्यों अपनाएं दूसरी क्यों नहीं, अर्थात सिद्धान्त और उसूल के सवाल के बारे में, पार्टी के अन्दर अभी भी उलझनभरे विचार प्रचलित हैं। इस सवाल का जवाब कैसे दिया जाए ? हमारी राय में जवाब इस तरह का होना चाहिए। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के पहले, चीन की कुल राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में उद्योग व कृषि का अनुपात इस प्रकार था – आधुनिक उद्योग लगभग १० फीसदी, और कृषि व दस्तकारी लगभग ९० फीसदी। यह साम्राज्यवादी व सामन्ती उत्पीड़न का नतीजा था ; यह पुराने चीन के समाज के अर्ध-औपनिवेशिक व अर्ध-सामन्ती स्वरूप की आर्थिक अभिव्यक्ति थी ; चीनी क्रान्ति के दौरान तथा विजय प्राप्त कर लेने के बाद काफी लम्बे अरसे तक पैदा होने वाले तमाम सवालों के प्रति यही हमारा बुनियादी प्रस्थान-बिन्दु रहा है। यह हमारी पार्टी की रणनीति, कार्यनीति व नीति के बारे में सिलसिलेवार कई सवाल खड़े कर देता है। हमारी पार्टी के सामने इस समय एक महत्वपूर्ण कार्य यह है कि हम इन सवालों को पहले से ज्यादा स्पष्ट रूप से समझ लें और उन्हें हल करें। इसका मतलब यह हुआ कि :

१. चीन के पास एक आधुनिक उद्योग है जो उसकी अर्थव्यवस्था का लगभग १० प्रतिशत है ; यह एक प्रगतिशील बात है, यह प्राचीन काल की स्थिति से भिन्न है। नतीजे के तौर पर, चीन में नए-नए वर्ग व नई-नई पार्टियां बन गई हैं – सर्वहारा वर्ग व पूंजीपति वर्ग, सर्वहारा वर्ग की व पूंजीपति वर्ग की राजनीतिक पार्टियां। चूंकि सर्वहारा वर्ग और उसकी पार्टी को तरह-तरह के दुश्मनों द्वारा उत्पीड़ित किया गया है, इसलिए ये दोनों तपकर फौलाद बन गए हैं और चीनी जन-क्रान्ति का नेतृत्व करने में समर्थ हैं। जो कोई भी इस बात को नजरअन्दाज करेगा या इसे कम महत्वपूर्ण समझेगा, वह दक्षिणपंथी अवसरवादी गलतियां कर बैठेगा।

२. चीन के पास अभी भी बिखरी हुई व व्यक्तिगत कृषि व दस्तकारी है, जो चीन की कुल अर्थव्यवस्था का लगभग ९० प्रतिशत है ; यह एक पिछड़ी हुई बात है, प्राचीन काल की स्थिति में और इसमें कोई ज्यादा अन्तर नहीं है – हमारे आर्थिक जीवन का लगभग ९० प्रतिशत भाग वैसा ही बना हुआ है जैसा कि प्राचीन काल में था। भूमि पर सामन्ती मिल्कियत की युगों पुरानी प्रथा हमारे द्वारा समाप्त कर दी गई है या शीघ्र ही समाप्त कर दी जाएगी। इस बात के बारे में हमारी स्थिति अब प्राचीन काल की स्थिति के मुकाबले भिन्न हो गई है या बहुत शीघ्र भिन्न हो जाएगी, तथा साथ ही हमारी कृषि व दस्तकारी के कदम-ब-कदम आधुनिकीकरण की सम्भावना भी पैदा हो गई है या शीघ्र ही पैदा हो जाएगी। लेकिन जहां तक बुनियादी रूप का सवाल है, हमारी कृषि व दस्तकारी आज भी बिखरी हुई तथा व्यक्तिगत है, अर्थात वह प्राचीन काल की स्थिति से मिलती-जुलती है, और आने वाले काफी लम्बे अरसे तक वैसी ही रहेगी। जो कोई भी इस बात को नजरअन्दाज करेगा या इसे कम महत्वपूर्ण समझेगा, वह "वामपंथी" अवसरवादी गलतियां कर बैठेगा।

३. चीन का आधुनिक उद्योग, हालांकि उसका उत्पादन-मूल्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन-मूल्य का केवल लगभग १० प्रतिशत ही है, बहुत अधिक केन्द्रित रूप में है ; पूंजी का अधिकांश भाग तथा मुख्य भाग साम्राज्यवादियों व उनके गुर्गों – चीनी नौकरशाह-पूंजीपतियों – के हाथ में केन्द्रित है। इस पूंजी को जब्त करने और इसे सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में चलने वाले लोक गणराज्य को सौंप देने से देश के आर्थिक जीवन-स्रोत हमारे लोक गणराज्य के काबू में आ जाएंगे और राजकीय अर्थव्यवस्था समूची राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का नेतृत्वकारी तत्व बन जाएगी। अर्थव्यवस्था का यह क्षेत्र अपने स्वरूप में समाजवादी है, पूंजीवादी नहीं। जो कोई भी इस बात को नजरअन्दाज करेगा या इसे कम महत्वपूर्ण समझेगा, वह दक्षिणपंथी अवसरवादी गलतियां कर बैठेगा।

४. चीन का निजी पूंजीवादी उद्योग, जो उसके आधुनिक उद्योग में दूसरे नम्बर पर आता है, एक ऐसी शक्ति है जिसे नजरअन्दाज नहीं किया जाना चाहिए। चूंकि साम्राज्यवाद, सामन्तवाद व नौकरशाही-पूंजीवाद ने चीन के राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग तथा उसके प्रतिनिधियों को उत्पीड़ित किया और उन्हें चारों ओर से जकड़ लिया, इसलिए राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और उसके प्रतिनिधियों ने अक्सर जनता के जनवादी क्रान्तिकारी संघर्षों में भाग लिया है या तटस्थ रुख अपनाया है। इस कारण से और चूंकि चीन की अर्थव्यवस्था अभी भी पिछड़ी हुई है, इसलिए क्रान्ति की विजय के बाद काफी लम्बे अरसे तक इस बात की आवश्यकता रहेगी कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था

के विकास के हित में, जहां तक सम्भव हो, शहरी तथा ग्रामीण निजी पूंजीवाद के सकारात्मक तत्वों से फायदा उठाया जाए। इस अवधि में शहरों और देहातों के ऐसे तमाम पूंजीवादी तत्वों को, जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए नुकसानदेह नहीं बल्कि फायदेमन्द हैं, बने रहने देना चाहिए तथा उन्हें विकसित होने देना चाहिए। यह न सिर्फ अनिवार्य है बल्कि आर्थिक दृष्टि से आवश्यक भी है। लेकिन चीन में पूंजीवाद की मौजूदगी और उसका विकास अबाध और अनियंत्रित नहीं रहेगा जैसा कि पूंजीवादी देशों में होता है। उस पर कई तरफ से प्रतिबन्ध लगाए जाएंगे – उसके कार्यक्षेत्र पर, टैक्स नीति के जरिए, बाजार भाव के जरिए और श्रम की शर्तों के जरिए। हर जगह, हर उद्योग तथा हर अवधि की ठोस हालतों को ध्यान में रखते हुए, हम लोग पूंजीवाद पर कई पहलुओं से प्रतिबन्ध लगाने के लिए समुचित और लचकीली नीति अपनाएंगे। "पूंजी का नियमन" करने के सुन यात-सेन के नारे को लागू करना हमारे लिए आवश्यक तथा उपयुक्त है। फिर भी समूची राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के हित में और मजदूर वर्ग तथा मेहनतकश जनता के वर्तमान व भावी हितों को नजर में रखते हुए, हमें निजी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था पर हद से ज्यादा प्रतिबन्ध या हद से ज्यादा सख्त प्रतिबन्ध नहीं लगाने चाहिए बल्कि लोक गणराज्य की आर्थिक नीति तथा योजना के दायरे के अन्तर्गत उसके बने रहने तथा विकसित होने के लिए जगह छोड़ देनी चाहिए। निजी पूंजीवाद पर प्रतिबन्ध लगाने की नीति का पूंजीपति वर्ग के लोग, खास तौर से निजी कारोबारों के बड़े-बड़े मालिक अर्थात बड़े-बड़े पूंजीपति, विभिन्न दर्जों और रूपों में निश्चित रूप से विरोध करेंगे। नव-जनवादी राज्य में, प्रतिबन्ध लगाना और उसका विरोध

करना वर्ग-संघर्ष का मुख्य रूप होगा। ऐसा सोचना कतई गलत है कि मौजूदा समय में हमें पूंजीवाद पर प्रतिबन्ध लगाने की जरूरत नहीं है और हम "पूंजी का नियमन" करने का नारा त्याग सकते हैं; यह एक दक्षिणपंथी अवसरवादी दृष्टिकोण है। लेकिन इसके विपरीत वह दृष्टिकोण भी कतई गलत है जो निजी पूंजी पर हद से ज्यादा प्रतिबन्ध या हद से ज्यादा सख्त प्रतिबन्ध लगाने की वकालत करता है या यह मानता है कि हम बहुत जल्दी ही निजी पूंजी को नेस्तनाबूद कर देंगे; यह "वामपंथी" अवसरवादी या दुस्साहसवादी दृष्टिकोण है।

५. बिखरी हुई, व्यक्तिगत कृषि और दस्तकारी को, जिनका उत्पादन-मूल्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन-मूल्य का ९० प्रतिशत है, बड़ी संजीदगी से, कदम-ब-कदम और सक्रियता के साथ, आधुनिकीकरण तथा समूहीकरण की तरफ विकसित किया जा सकता है और अवश्य किया जाना चाहिए; यह खयाल कि उन्हें अपने आप बढ़ने देने के लिए छोड़ देना चाहिए, गलत है। उत्पादक, उपभोक्ता व ऋणदाता सहकारी-समितियों और राष्ट्रीय, प्रान्तीय, म्युनिसिपल, काउन्टी तथा जिला स्तर पर सहकारी-समितियों के नेतृत्वकारी संगठनों को संगठित करना जरूरी है। ऐसी सहकारी-समितियां मेहनतकश जनता के सामूहिक आर्थिक संगठन हैं, जो निजी मिल्कियत पर आधारित है तथा सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में चलने वाली राजसत्ता के निर्देशन में काम करती हैं। यह तथ्य कि चीनी जनता सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़ी हुई है और सहकारी-समितियां संगठित करने की उसकी कोई परम्परा नहीं है, हमें कठिनाइयों में डाल सकता है; फिर भी सहकारी-समितियां संगठित की जा सकती हैं तथा

अवश्य संगठित की जानी चाहिए और उनका प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए तथा उन्हें विकसित किया जाना चाहिए। अगर महज राजकीय अर्थव्यवस्था हो और सहकारी अर्थव्यवस्था न हो, तो हमारे लिए यह नामुमकिन हो जाएगा कि हम मेहनतकश जनता की व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था को कदम-ब-कदम समूहीकरण की तरफ ले जाएं, हमारे लिए यह नामुमकिन हो जाएगा कि हम नव-जनवादी समाज से विकसित होकर भावी समाजवादी समाज में पहुंच जाएं, और हमारे लिए यह नामुमकिन हो जाएगा कि हम राजसत्ता में सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व को सुदृढ़ बनाएं। जो कोई इस बात को नजरअन्दाज करेगा या इसे कम महत्वपूर्ण समझेगा, वह भी बेहद गम्भीर गलतियां करेगा। राजकीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप समाजवादी होता है और सहकारी अर्थव्यवस्था का अर्ध-समाजवादी; ये दोनों और निजी पूंजीवाद व व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था, तथा राजकीय-पूंजीवादी अर्थव्यवस्था जिसमें राज्य और निजी पूंजीपति लोग संयुक्त रूप से काम करते हैं, मिलकर लोक गणराज्य की अर्थव्यवस्था के प्रमुख तत्व रहेंगे और इन तत्वों से नव-जनवादी आर्थिक ढांचा बन जाएगा।

६. वैदेशिक व्यापार पर नियंत्रण स्थापित करने की नीति के बिना लोक गणराज्य की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का पुनरुद्धार करना और उसका विकास करना असम्भव होगा। जब चीन में साम्राज्यवाद, सामन्तवाद व नौकरशाही-पूंजीवाद और क्वोमिन्ताङ शासन (जो साम्राज्यवाद, सामन्तवाद व नौकरशाही-पूंजीवाद इन तीनों को केन्द्रित रूप से अभिव्यक्त करता है) का खात्मा हो जाएगा, तब भी एक स्वतंत्र तथा सर्वांगपूर्ण औद्योगिक व्यवस्था स्थापित करने की समस्या बाकी रह जाएगी, और वह अन्तिम रूप से सिर्फ तभी

हल होगी जब हमारा देश आर्थिक दृष्टि से बहुत अधिक विकसित हो जाएगा और एक पिछड़े हुए कृषि-प्रधान देश से बदलकर एक आगे बढ़ा हुआ औद्योगिक देश बन जाएगा। वैदेशिक व्यापार को नियंत्रित किए बिना इस उद्देश्य को पूरा करना असम्भव है। चीनी क्रान्ति की देशव्यापी विजय होने तथा भूमि-समस्या हल हो जाने के बाद भी चीन में दो बुनियादी अन्तरविरोध बने रहेंगे। पहला अन्तरविरोध अन्दरूनी है, अर्थात मजदूर वर्ग तथा पूंजीपति वर्ग के बीच का अन्तरविरोध। दूसरा अन्तरविरोध बाहरी है, अर्थात चीन तथा साम्राज्यवादी देशों के बीच का अन्तरविरोध। इसलिए, जनता की जनवादी क्रान्ति की विजय के बाद, मजदूर वर्ग के नेतृत्व में चलने वाले लोक गणराज्य की राजसत्ता को कमजोर नहीं होने देना चाहिए, बल्कि उसे मजबूत बनाया जाना चाहिए। आर्थिक संघर्ष में राज्य की दो बुनियादी नीतियां होंगी – देश के अन्दर पूंजी का नियमन करना तथा वैदेशिक व्यापार पर नियंत्रण करना। जो कोई भी इस बात को नजरअन्दाज करेगा या इसे कम महत्वपूर्ण समझेगा, वह बेहद गम्भीर गलतियां कर बैठेगा।

७. चीन ने एक पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्था विरासत में पाई है। लेकिन चीनी जनता बहादुर और मेहनती है। चीनी जनता की क्रान्ति की विजय तथा लोक गणराज्य की स्थापना के कारण और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व के कारण, साथ ही दुनिया के विभिन्न देशों के मजदूर वर्ग के समर्थन और मुख्य रूप से सोवियत संघ के समर्थन के कारण, चीन के आर्थिक निर्माण की रफ्तार ज्यादा धीमी नहीं रहेगी बल्कि काफी तेज हो सकती है। अब वह दिन दूर नहीं जब

चीन समृद्धि प्राप्त कर लेगा। चीन के आर्थिक पुनरुत्थान के बारे में निराश होने की बात सोचने का कोई कारण नहीं है।

७

पुराना चीन साम्राज्यवादी प्रभुत्व के अधीन एक अर्ध-औपनिवेशिक देश था। चीनी जनता की जनवादी क्रान्ति, जिसका स्वरूप पूरे तौर पर साम्राज्यवाद-विरोधी था, साम्राज्यवादियों की तीव्र घृणा का पात्र बनी, जिन्होंने क्वोमिन्ताङ की मदद करने में कोई भी कसर नहीं उठा रखी। इसी से साम्राज्यवादियों के खिलाफ चीनी जनता की क्रोधाग्नि और भी अधिक भड़क उठी और चीनी जनता के अन्दर उनकी जो रही-सही प्रतिष्ठा थी वह भी खाक में मिल गई। इसके साथ ही, दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से समूची साम्राज्यवादी व्यवस्था बहुत अधिक कमजोर हो गई है, जबकि दुनिया के साम्राज्य-वाद-विरोधी मोर्चे की, जिसका अगुवा सोवियत संघ है, ताकत अभूत-पूर्व रूप से बढ़ गई है। ऐसी परिस्थिति में हम चीन में साम्राज्यवादी प्रभुत्व को व्यवस्थित रूप से और पूरे तौर पर नष्ट कर देने की नीति अपना सकते हैं और हमें इस नीति को अपनाना भी चाहिए। यह साम्राज्यवादी प्रभुत्व राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में अभिव्यक्त होता है। हर ऐसे शहर या स्थान में जहां क्वोमिन्ताङ सेनाओं का सफाया कर दिया जाता है और क्वोमिन्ताङ सरकार को उखाड़ फेंका जाता है, साम्राज्यवादी राजनीतिक प्रभुत्व भी खत्म हो जाता है, और इसी तरह साम्राज्यवादी आर्थिक व सांस्कृतिक प्रभुत्व भी खत्म हो जाता है। लेकिन साम्राज्यवादियों द्वारा सीधे

संचालित आर्थिक व सांस्कृतिक संस्थान फिर भी बने रहते हैं, और इसी तरह क्वोमिन्ताङ से मान्यताप्राप्त राजनयिक कर्मचारी तथा पत्रकार भी बने रहते हैं। हमें इन सबके साथ, जो जितना जरूरी मालूम हो उसी क्रम में, ठीक तरीके से निपटना चाहिए। क्वोमिन्ताङ काल के किसी भी विदेशी राजनयिक संस्थान तथा कर्मचारी की कानूनी हैसियत मानने से इनकार करना, क्वोमिन्ताङ काल की तमाम वतनफरोश सन्धियों को मानने से इनकार करना, चीन स्थित तमाम साम्राज्यवादी प्रचार-एजेन्सियों का खात्मा करना, वैदेशिक व्यापार को फौरन अपने नियंत्रण में करना तथा चुंगी-प्रणाली में सुधार करना – ये हैं वे प्रारम्भिक कदम जिन्हें हमें बड़े शहरों में प्रवेश करते ही उठाना चाहिए। ऐसा कर लेने के बाद चीनी जनता साम्राज्यवाद के सामने सिर ऊंचा किए खड़ी होगी। जहां तक बाकी बचे हुए साम्राज्यवादी आर्थिक व सांस्कृतिक संस्थानों का सम्बन्ध है, उन्हें फिलहाल बने रहने दिया जा सकता है, बशर्ते कि वे हमारी देखरेख व नियंत्रण में रहें; देशव्यापी विजय हो जाने के बाद हम उनसे निपट लेंगे। जहां तक साधारण विदेशी नागरिकों का सम्बन्ध है, उनके न्यायोचित हितों की हिफाजत की जाएगी और उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा। जहां तक साम्राज्यवादी देशों द्वारा हमारे देश को मान्यता देने का सवाल है, अब हमें इसे तुरन्त हल कर लेने की जल्दी नहीं करनी चाहिए और देशव्यापी विजय प्राप्त कर लेने के काफी अरसे बाद तक भी उसे हल करने की जल्दी नहीं करनी चाहिए। समानता के आधार पर हम सभी देशों के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करने को तैयार हैं, लेकिन साम्राज्यवादी, जो हमेशा से ही चीनी जनता के प्रति शत्रुता बरतते आए हैं, हमारे साथ समानता का

बरताव करने के लिए निश्चित रूप से उतावले नहीं होंगे। जब तक साम्राज्यवादी देश अपना शत्रुतापूर्ण रवैया नहीं बदलते, तब तक हम उन्हें चीन में कानूनी दर्जा नहीं प्रदान करेंगे। जहां तक विदेशियों के साथ व्यापार करने का ताल्लुक है, यह कोई सवाल नहीं है ; जहां कहीं भी व्यापार करने को मिलेगा, हम लोग अवश्य करेंगे और हमने शुरू भी कर दिया है ; कई पूंजीवादी देशों के व्यापारी लोग इस तरह का व्यापार करने के लिए होड़ लगाए हुए हैं। जहां तक सम्भव हो, हमें सबसे पहले समाजवादी देश और जनता की लोकशाही वाले देशों के साथ व्यापार करना चाहिए ; साथ ही साथ हम लोग पूंजीवादी देशों के साथ भी व्यापार करेंगे।

८

राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाने तथा एक जनवादी मिलीजुली सरकार कायम करने के लिए परिस्थिति हर तरह से तैयार है। तमाम जनवादी पार्टियां, जन-संगठन तथा निर्दलीय जनवादी व्यक्ति हमारे पक्ष में हैं। शांघाई और याङत्सी घाटी के पूंजीपति हमसे सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। उत्तर और दक्षिण के बीच जहाजरानी और डाक-संचार फिर से शुरू हो गया है। क्वोमिन्ताङ छिन्न-भिन्न हो रही है और उसने अपने आपको समस्त जनता से अलग-थलग कर लिया है। प्रतिक्रियावादी नानकिङ सरकार के साथ समझौता-वार्ता करने के लिए हम तैयारियां कर रहे हैं।[१] प्रतिक्रियावादी नानकिङ सरकार में इस समझौता-वार्ता को कराने वाली

प्रेरक-शक्तियां ये हैं : क्वाङशी गुट के युद्ध-सरदार, क्वोमिन्ताङ के वे तबके जो शान्ति के पक्ष में हैं तथा शांघाई का पूंजीपति वर्ग। उनके उद्देश्य हैं – मिलीजुली सरकार में अपना हिस्सा हासिल करना, अपने पास जितनी भी सेना रखी जा सके उसे रखना, शांघाई में और दक्षिण में पूंजीपति वर्ग के हितों को बरकरार रखना तथा क्रान्ति में नरमी लाने की भरसक कोशिश करना। ये ग्रुप समझौता-वार्ता के आधार के तौर पर हमारी आठ शर्तों को तो मंजूर करते हैं लेकिन हमारे साथ सौदेबाजी करना चाहते हैं, ताकि उन्हें बहुत ज्यादा नुकसान न उठाना पड़े। जो लोग समझौता-वार्ता को तोड़ देना चाहते हैं, वे हैं च्याङ काई-शेक और उसके कट्टर अनुयायी। याङत्सी नदी के दक्षिण में च्याङ काई-शेक के पास अभी भी ६० डिवीजनें मौजूद हैं जो लड़ाई की तैयारियां कर रही हैं। हमारी नीति है समझौता-वार्ता के लिए इनकार न करना बल्कि यह मांग करना कि दूसरा पक्ष हमारी आठ शर्तें मुकम्मिल तौर पर मंजूर कर ले, और सौदेबाजी की इजाजत न देना। इसके बदले में हम क्वाङशी गुट से तथा क्वोमिन्ताङ के उन अन्य तबकों से जो शान्ति के पक्ष में हैं, नहीं लड़ेंगे, लगभग सालभर तक उनकी फौजों का पुनर्गठन मुल्तवी कर देंगे, नानकिङ सरकार के कुछ व्यक्तियों को राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन तथा मिलीजुली सरकार में शामिल होने की इजाजत दे देंगे और शांघाई तथा दक्षिण के पूंजीपति वर्ग के कतिपय हितों की हिफाजत के लिए सहमत हो जाएंगे। समझौता-वार्ता सर्वांगव्यापी आधार पर होने वाली है और अगर यह सफल हो गई, तो इससे दक्षिण की तरफ हमारे बढ़ने तथा वहां के बड़े शहरों पर कब्जा कर लेने के बारे में बहुत सी रुकावटें

दूर हो जाएंगी। इससे हमें बहुत फायदा होगा। अगर यह समझौता-वार्ता सफल न हुई तो फिर हमारी सेना के आगे बढ़ने के बाद स्थानीय आधार पर अलग-अलग समझौता-वार्ताएं होंगी। फिलहाल यह तय हुआ है कि सर्वांगव्यापी आधार पर समझौता-वार्ता मार्च के अन्त में होगी। हम आशा करते हैं कि अप्रैल या मई तक हम नानकिङ पर कब्जा कर लेंगे, फिर पेकिङ में राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाएंगे, मिलीजुली सरकार कायम करेंगे और पेकिङ को राजधानी बनाएंगे। चूंकि हम समझौता-वार्ता के लिए सहमत हो गए हैं, इसलिए समझौता-वार्ता सफल हो जाने के बाद पैदा होने वाली तमाम कठिनाइयों के लिए हमें तैयार रहना चाहिए और हमें दूसरे पक्ष द्वारा अपनाए जाने वाले उस वानरराज सुन ऊ-खुङ के दांवपेंचों से निपटने के लिए बिलकुल ठण्डे दिमाग से तैयार रहना चाहिए जो शैतानी करने के लिए राजकुमारी फौलादी-पंखा[1] के पेट के अन्दर प्रवेश कर जाता है। जब तक हम दिमागी तौर से पूरी तरह तैयार हैं, तब तक किसी भी शैतान वानर को मात दे सकते हैं। चाहे शान्ति-वार्ता सर्वांग-व्यापी आधार पर हो अथवा स्थानीय आधार पर, हमें ऐसी सम्भाव्य स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें कठिनाइयों से डरने और पेचीदगियों से बचने के कारण समझौता-वार्ता में शामिल होने से इनकार नहीं करना चाहिए, और न ही हमें अस्पष्ट विचारों के साथ समझौता-वार्ता में शामिल होना चाहिए। हमें अपने उसूलों पर दृढ़ रहना चाहिए ; हमारे अन्दर वह तमाम लचकीलापन भी होना चाहिए जो अपने उसूलों को अमल में लाने के लिए उचित और आवश्यक है।

६

जनता के जनवादी अधिनायकत्व की, जिसका नेतृत्व सर्वहारा वर्ग करता है और जो मजदूर-किसान संश्रय पर आधारित है, यह मांग है कि हमारी पार्टी को सच्चे दिल से समस्त मजदूर वर्ग, समस्त किसान वर्ग तथा क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों के व्यापक जन-समुदाय के साथ एकता स्थापित करनी चाहिए ; ये उक्त अधिनायक-त्व की नेतृत्वकारी व बुनियादी शक्तियां हैं। इस एकता के बिना अधिनायकत्व को सुदृढ़ नहीं बनाया जा सकता। इस बात की भी आवश्यकता है कि हमारी पार्टी हमारे साथ सहयोग कर सकने वाले शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के ज्यादा से ज्यादा प्रतिनिधियों के साथ तथा उनके बुद्धिजीवियों व राजनीतिक ग्रुपों के साथ एकता स्थापित करे, ताकि क्रान्तिकारी काल में हम क्रान्ति-विरोधी शक्तियों को अलगाव की स्थिति में डाल दें और चीन में क्रान्ति-विरोधी तथा साम्राज्यवादी दोनों शक्तियों को मुकम्मिल तौर पर उखाड़ फेंकें, और ताकि क्रान्ति की विजय के बाद हम उत्पादन का जल्दी ही पुनरुद्धार और विकास कर सकें, विदेशी साम्राज्यवाद से निपट सकें, अविचल रूप से चीन को एक कृषि-प्रधान देश से एक औद्योगिक देश में बदल सकें, चीन को एक महान समाजवादी राज्य बना सकें। इसलिए गैरपार्टी जनवादी व्यक्तियों के साथ दीर्घकालीन सहयोग करने की हमारी पार्टी की नीति को समूची पार्टी के चिन्तन तथा उसके कार्य में स्पष्ट रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए। हमें अधिकांश गैरपार्टी जनवादी व्यक्तियों के साथ उसी तरह का व्यवहार करना चाहिए जैसा कि हम अपने कार्यकर्ताओं के साथ

करते हैं ; अगर ऐसी समस्याएं हों जिनके बारे में सलाह-मशविरा करने और जिन्हें हल करने की जरूरत हो, तो इन समस्याओं को हल करने में हमें उनसे ईमानदारी और खुले दिल के साथ सलाह-मशविरा करना चाहिए ; हमें उन्हें काम देना चाहिए, उन्हें वे जिम्मेदारियां व अधिकार सौंपने चाहिए जो उनके पद के साथ सम्बद्ध हों, ताकि उन्हें अपने काम में सफलता मिल सके। उनके साथ एकता स्थापित करने की आकांक्षा लेकर हमें उनकी गलतियों व कमियों की गम्भीर व उचित आलोचना करनी चाहिए अथवा उनके खिलाफ संघर्ष करना चाहिए, ताकि एकता के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके। उनकी गलतियों या कमियों के प्रति समझौतावादी रुख अपनाना गलत होगा। उनके प्रति रुद्धद्वारवादी या अन्यमनस्क रुख अपनाना भी गलत होगा। हर एक बड़े और मझोले दर्जे के शहर में, हर रणनीतिक क्षेत्र और हर प्रान्त में, हमें ऐसे गैरपार्टी जनवादी व्यक्तियों का एक ग्रुप तैयार करना चाहिए जो प्रतिष्ठित हों और हमारे साथ सहयोग कर सकें। गैरपार्टी जनवादी व्यक्तियों के प्रति गलत रुख, जो भूमि-क्रान्ति के युद्ध के दौरान हमारी पार्टी में रुद्धद्वारवादी कार्यशैली के कारण पैदा हो गया था, जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान पूरी तरह दूर नहीं हो पाया और वह १९४७ में आधार-क्षेत्रों में भूमि-सुधार के प्रचण्ड ज्वार के दौरान फिर से सामने आ गया। ऐसा रुख अपनाने से हमारी पार्टी महज अलगाव की स्थिति में ही पड़ जाएगी, जनता के जनवादी अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाने में बाधा पहुंचेगी और दुश्मन को सहयकारी मिल जाएंगे। अब जबकि पहली बार हमारी पार्टी के नेतृत्व में शीघ्र ही राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाया जाने वाला है, जबकि शीघ्र ही एक जनवादी मिली-

जुली सरकार बनाई जाने वाली है और जबकि शीघ्र ही देशभर में क्रान्ति की विजय होने वाली है, समूची पार्टी को चाहिए कि वह इस समस्या के बारे में गम्भीरता से आत्म-आलोचनात्मक जांच करे और उसे सही तौर पर समझ ले ; उसे दोनों प्रकार के भटकावों का – समझौतावादी दक्षिणपंथी भटकाव का और रुद्धद्वारवाद अथवा अन्यमनस्कता के "वामपंथी" भटकाव का – विरोध करना चाहिए तथा एक बिलकुल सही रुख अपनाना चाहिए।

१०

बहुत शीघ्र ही हम देशभर में विजय प्राप्त कर लेंगे। यह विजय साम्राज्यवाद के पूर्वी मोर्चे को भंग कर देगी तथा इसका भारी अन्तरराष्ट्रीय महत्व होगा। इस विजय को प्राप्त करने के लिए बहुत अधिक समय और प्रयत्न की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, लेकिन उसे सुदृढ़ बनाने के लिए इसकी आवश्यकता अवश्य पड़ेगी। पूंजीपति वर्ग हमारी निर्माण-क्षमता को शक की नजर से देखता है। साम्राज्यवादी ऐसा समझते हैं कि अन्त में हमें अपना गुजारा चलाने के लिए उन्हीं के सामने हाथ पसारने पड़ेंगे। विजय प्राप्त होने पर पार्टी के अन्दर कुछ प्रवृत्तियां पैदा हो सकती हैं – अहंकार, अपने आपको हीरो समझने का दिखावा करना, निष्क्रियता तथा प्रगति करने की तरफ उदासीनता, सुख-सुविधाओं के पीछे दौड़ना तथा लगातार कठोर जीवन बिताने के प्रति अनिच्छा। विजय प्राप्त होने पर जनता हमारे प्रति आभार प्रकट करेगी और पूंजीपति वर्ग आगे बढ़कर हमारी खुशामद करेगा। यह साबित हो चुका है कि दुश्मन हथियारों के जोर से हमारे ऊपर

विजय नहीं प्राप्त कर सकता। फिर भी पूंजीपति वर्ग द्वारा की गई खुशामद हमारी पांतों के भीतर कमजोर मनोबल वाले लोगों को जीत सकती है। कुछ कम्युनिस्ट ऐसे हो सकते हैं जिन पर बन्दूकधारी दुश्मन विजय प्राप्त नहीं कर सके और जिन्हें इन दुश्मनों का मुकाबला करने के लिए वीर नाम देना सार्थक होगा ; लेकिन ये लोग शक्कर में लिपटी गोलियों का मुकाबला नहीं कर सकते ; ऐसे लोग शक्कर में लिपटी गोलियों से पराजित हो जाएंगे। हमें ऐसी परिस्थिति से बचना चाहिए। देशव्यापी विजय प्राप्त करना दस हजार ली लम्बे अभियान का महज पहला कदम है। अगर यह कदम गर्व करने योग्य हो भी, तो भी यह अपेक्षाकृत एक छोटा-सा कदम है ; जो चीज ज्यादा गर्व करने योग्य होगी वह तो अभी आने को है। चीनी जनता की जनवादी क्रान्ति की विजय का अगर कुछ दशाब्दियों के बाद सिंहावलोकन किया जाएगा तो वह एक लम्बे नाटक की महज एक छोटी सी प्रस्तावनामात्र मालूम होगी। नाटक एक प्रस्तावना से शुरू होता है, लेकिन प्रस्तावना को चरमोत्कर्ष नहीं कहा जा सकता। चीनी क्रान्ति एक महान क्रान्ति है, लेकिन क्रान्ति के बाद का मार्ग और ज्यादा लम्बा होगा, कार्य और ज्यादा महान व कठिन होगा। पार्टी के अन्दर इस बात को अब साफ तौर पर बता देना चाहिए। साथियों को यह सिखाया जाना चाहिए कि वे नम्र व विवेकशील होने और घमण्ड व उतावलेपन से दूर रहने की अपनी कार्यशैली को बनाए रखें। साथियों को यह सिखाया जाना चाहिए कि वे सादा जीवन तथा कठोर संघर्ष की कार्यशैली को बनाए रखें। हमारे पास आलोचना और आत्म-आलोचना का मार्क्सवादी-लेनिनवादी हथियार मौजूद है। हम बुरी कार्यशैली से अपना पिण्ड छुड़ा सकते हैं और अच्छी कार्यशैली को

कायम रख सकते हैं। जिस चीज के बारे में हम नहीं जानते, उसे हम सीख सकते हैं। हम न सिर्फ पुरानी दुनिया को नष्ट करने में निपुण हैं बल्कि नई दुनिया का निर्माण करने में भी निपुण हैं। चीनी जनता न सिर्फ साम्राज्यवादियों के आगे हाथ पसारे बिना रह सकती है, बल्कि वह साम्राज्यवादी देशों की अपेक्षा ज्यादा अच्छा जीवन बिताएगी।

नोट

[१] १९ सितम्बर १९४९ को स्वेइय्वान प्रान्त के क्वोमिन्ताङ गवर्नर तुङ छी-ऊ और क्वोमिन्ताङ सेना के कमाण्डर सुन लान-फङ ने विद्रोह कर दिया और ४० हजार से अधिक सैनिकों को लेकर वे दोनों हमारे पक्ष में आ मिले। इन यूनिटों का पुनर्गठन २१ फरवरी १९५० को चीनी जन-मुक्ति सेना की स्वेइय्वान फौजी कमान के नेतृत्व में शुरू हुआ। १० अप्रैल को उन्हें जन-मुक्ति सेना में पुनर्गठित कर लिया गया।

[२] प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार के साथ शान्ति-वार्ता करने के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने २६ मार्च १९४९ को निम्नलिखित फैसला किया :

(१) समझौता-वार्ता शुरू करने की तारीख, १ अप्रैल ;

(२) समझौता-वार्ता का स्थान, पेकिङ ;

(३) चओ एन-लाइ, लिन पो-छ्वी, लिन प्याओ, ये च्येन-इङ और ली वेइ-हान को प्रतिनिधि (१ अप्रैल को केन्द्रीय कमेटी ने प्रतिनिधियों की सूची में न्ये रुङ-चन को भी शामिल करने का फैसला किया) तथा चओ एन-लाइ को प्रमुख प्रतिनिधि नियुक्त किया गया है, जो अध्यक्ष माओ त्सेतुङ द्वारा १४ जनवरी को वर्तमान परिस्थिति के बारे में दिए गए वक्तव्य के आधार पर और उसमें पेश की गई आठ शर्तों के आधार पर नानकिङ प्रतिनिधिमण्डल के साथ समझौता-वार्ता करेंगे ;

(४) प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार को तुरन्त रेडियो-ब्राडकास्ट द्वारा उक्त सूचना दी जाए तथा यह बता दिया जाए कि वह निर्धारित स्थान और निर्धारित समय पर अपना प्रतिनिधिमण्डल भेज दे, तथा समझौता-वार्ता में मदद देने के लिए उक्त आठ शर्तों से सम्बन्धित तमाम आवश्यक सामग्री अपने साथ ले आए।

¹ वानरराज सुन ऊ-खुङ ने एक छोटे कीड़े का रूप धारण करके राजकुमारी फौलादी-पंखा के पेट में किस प्रकार प्रवेश किया और किस प्रकार उसे परास्त कर दिया, इसकी पूरी कहानी के लिए देखिए "शी यओ ची" (पश्चिम की तीर्थ-यात्रा) नामक चीनी पौराणिक उपन्यास का ५९वां अध्याय।

पार्टी-कमेटियों के काम करने के तरीके*

१३ मार्च १९४९

१. पार्टी-कमेटी के सचिव को एक अच्छा "स्क्वाड लीडर" बनना चाहिए। एक पार्टी-कमेटी के सदस्यों की संख्या दस से बीस तक होती है; वह सेना के एक स्क्वाड की तरह होती है, और पार्टी-सचिव एक स्क्वाड लीडर के समान होता है। इस स्क्वाड का सुचारु रूप से नेतृत्व करना सचमुच कोई आसान काम नहीं है। अब केन्द्रीय कमेटी का प्रत्येक प्रादेशिक ब्यूरो और उपब्यूरो एक विशाल क्षेत्र का नेतृत्व करता है तथा उसके कन्धों पर भारी जिम्मेदारियां मौजूद रहती हैं। नेतृत्व करने का मतलब है न सिर्फ आम नीतियों और ठोस नीतियों को निर्धारित करना बल्कि काम के सही तरीकों को भी खोजना। सही आम नीतियों और ठोस नीतियों को निर्धारित करने के बाद भी यदि काम करने के तरीकों को नजरअन्दाज किया गया, तो कठिनाइयां पैदा हो सकती हैं। नेतृत्व करने के कार्य को पूरा करने के लिए हर पार्टी-कमेटी को अपने "स्क्वाड के सदस्यों" पर निर्भर रहना चाहिए तथा उन्हें अपनी भूमिका पूर्ण रूप से अदा करने का मौका देना चाहिए।

*यह कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में दिए गए समापन-भाषण का एक भाग है।

एक अच्छा "स्क्वाड लीडर" बनने के लिए पार्टी-सचिव को अच्छी तरह से अध्ययन और जांच-पड़ताल करनी चाहिए। अगर एक सचिव या उपसचिव अपने "स्क्वाड के सदस्यों" के बीच प्रचार-कार्य और संगठनात्मक कार्य करने की ओर ध्यान नहीं देता, कमेटी के सदस्यों के साथ अपने सम्बन्धों को निभाने में कुशल नहीं होता, अथवा मीटिंगों को सफलतापूर्वक चलाने के तरीके का अध्ययन नहीं करता, तो उसके लिए अपने "स्क्वाड" का सुचारु रूप से निर्देशन करना कठिन होगा। अगर "स्क्वाड के सदस्य" कन्धे से कन्धा मिलाकर नहीं चलते, तो वे लोग लड़ाई और निर्माण के क्षेत्र में कोटि-कोटि जनता का नेतृत्व हरगिज नहीं कर पाएंगे। इसमें सन्देह नहीं कि पार्टी-सचिव और कमेटी-सदस्यों के बीच का सम्बन्ध एक ऐसा सम्बन्ध है जिसमें अल्पमत को बहुमत के फैसले का पालन करना चाहिए, इसीलिए यह एक स्क्वाड लीडर और उसके सैनिकों के बीच के सम्बन्धों से भिन्न है। यहां हम केवल उनके बीच की समानता का ही जिक्र कर रहे हैं।

२. समस्याओं को विचार-विनिमय के लिए पेश करो। यह न सिर्फ "स्क्वाड लीडर" को करना चाहिए बल्कि कमेटी के सदस्यों को भी करना चाहिए। लोगों के पीठ पीछे कुछ न कहो। जब कभी समस्याएं पैदा हों, तो मीटिंग बुलाओ, समस्याओं को वाद-विवाद के लिए पेश करो और फैसले करो, तथा इस प्रकार समस्याएं हल हो जाएंगी। अगर समस्याएं मौजूद हों और उन्हें विचार-विनिमय के लिए पेश न किया गया, तो वे दीर्घकाल तक अनसुलझी ही रह जाएंगी, यहां तक कि अनेक वर्षों तक बनी रहेंगी। "स्क्वाड लीडर" और कमेटी के सदस्यों को अपने सम्बन्धों में आपसी समझ से काम लेना चाहिए। इससे ज्यादा महत्व और किसी बात का नहीं कि सचिव

और कमेटी के सदस्यों के बीच, केन्द्रीय कमेटी और उसके प्रादेशिक ब्यूरोओं के बीच तथा प्रादेशिक ब्यूरोओं और क्षेत्रीय पार्टी-कमेटियों के बीच आपसी समझ, आपसी समर्थन और मैत्री मौजूद रहे। अतीत काल में इस बात की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया, लेकिन सातवीं पार्टी कांग्रेस से इस सिलसिले में काफी प्रगति की गई है तथा मैत्री और एकता का सूत्र बहुत मजबूत हो गया है। भविष्य में इस बात की ओर लगातार ध्यान दिया जाना चाहिए।

३. "जानकारी का आदान-प्रदान करो।" इसका मतलब यह है कि एक पार्टी-कमेटी के सदस्यों को उन तमाम मामलों के बारे में जो उनकी नजर में आएं, एक दूसरे को सूचित करते रहना चाहिए और विचारों का आदान-प्रदान करते रहना चाहिए। एक मुश्तरका राय कायम करने में इस बात का भारी महत्व है। कुछ लोग ऐसा नहीं कर पाते, तथा उन लोगों की तरह जिनका जिक्र लाओ चि ने किया है, "जिन्दगीभर एक दूसरे के घर नहीं जाते, हालांकि वे एक दूसरे के इतने नजदीक रहते हैं कि उनके मुर्गों की बांग और कुत्तों के भौंकने की आवाज एक दूसरे को बराबर सुनाई देती है।"[१] नतीजा यह होता है कि उनके बीच एक मुश्तरका राय कायम नहीं हो पाती। अतीत काल में हमारे कुछ उच्च कार्यकर्ताओं की भी मार्क्सवाद-लेनिनवाद की बुनियादी सैद्धान्तिक समस्याओं तक के बारे में मुश्तरका राय नहीं बन पाई, क्योंकि उन्होंने पर्याप्त मात्रा में अध्ययन नहीं किया। आज पार्टी के भीतर पहले से ज्यादा मुश्तरका राय मौजूद है, लेकिन यह समस्या अभी पूरी तरह हल नहीं हो पाई। मिसाल के लिए भूमि-सुधार में "मध्यम किसान" और "धनी किसान" की परिभाषा के बारे में अब भी भिन्न-भिन्न समझ मौजूद है।

४. जिन मामलों को आप खुद नहीं समझते या नहीं जानते, उनके बारे में अपने मातहत काम करने वालों से जानकारी हासिल करो, तथा गहराई से विचार किए बिना अपनी स्वीकृति अथवा अस्वीकृति प्रकट न करो। कुछ दस्तावेज ऐसे होते है जिनका मसौदा तैयार करने के बाद भी उन्हें कुछ समय के लिए वितरण से रोक लिया जाता है, क्योंकि उनमें मौजूद कुछ सवालों के स्पष्टीकरण की जरूरत होती है तथा पहले निचली इकाइयों से सलाह-मशविरा करना जरूरी होता है। जो काम हम नहीं जानते उसके बारे में हमें यह दिखावा हरगिज नहीं करना चाहिए कि हम उसे जानते है, हमें "अपने मातहत काम करने वाले लोगों से सवाल करने और सीखने में शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए"[1] तथा हमें निचली इकाइयों में काम करने वाले कार्यकर्ताओं की राय को गौर से सुनना चाहिए। शिक्षक बनने से पहले एक शिष्य बनो; आदेश जारी करने से पहले निचली इकाइयों के कार्यकर्ताओं से सीखो। समस्याओं को हल करते समय, केन्द्रीय कमेटी के तमाम प्रादेशिक ब्यूरोओं और पार्टी की मोर्चा-कमेटियों को चाहिए कि वे फौजी संकट की स्थिति अथवा एक ऐसी स्थिति को छोड़कर जबकि मामले की सच्चाई पहले ही स्पष्ट हो चुकी हो, इस बात पर अमल करें। ऐसा करने से हमारी प्रतिष्ठा कम नहीं होगी बल्कि बढ़ जाएगी। चूंकि हमारे फैसले ऐसे होते है जिनमें निचली इकाइयों के कार्यकर्ताओं के सही विचारों को शामिल कर लिया जाता है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि निचली इकाइयों के कार्यकर्ता उनका समर्थन करते है। जो कुछ निचली इकाइयों के कार्यकर्ता कहें वह सही भी हो सकता है और नहीं भी; उसे सुनने के बाद हमें उसका विश्लेषण करना चाहिए। हमें सही राय को मान लेना चाहिए और उस पर

अमल करना चाहिए। केन्द्रीय कमेटी के नेतृत्व के सही होने का मुख्य कारण यह है कि वह विभिन्न स्थानों से प्राप्त होने वाली सामग्री, रिपोर्टों और सही विचारों का संश्लेषण करती है। केन्द्रीय कमेटी के लिए सही आदेश जारी करना कठिन होगा यदि विभिन्न स्थानों से उसे सामग्री और राय प्राप्त नहीं होगी। निचली इकाइयों के गलत विचारों को भी सुनना चाहिए; उन्हें बिलकुल न सुनना गलत होगा। लेकिन इस प्रकार के विचारों पर अमल नहीं करना चाहिए बल्कि उनकी आलोचना करनी चाहिए।

५. "पियानो बजाना" सीखो। पियानो बजाते समय दस की दस उंगलियां हिलती रहती है; केवल कुछ ही उंगलियों को हिलाने और बाकी को न हिलाने से काम नहीं चलता। लेकिन अगर दस की दस उंगलियों को एक साथ दबाया गया, तो मधुर ध्वनि नहीं निकलेगी। अच्छा संगीत प्रस्तुत करने के लिए दसों उंगलियों को बड़े लयात्मक ढंग से और एक दूसरे से तालमेल कायम करते हुए हिलाना चाहिए। एक पार्टी-कमेटी को अपने मुख्य कार्य को दृढ़ता से चलाना चाहिए, तथा साथ ही मुख्य कार्य के इर्दगिर्द उसे अपने अन्य कार्यों को भी आगे बढ़ाना चाहिए। इस समय हम कार्य के बहुत से पहलुओं का संचालन करते है; हमें सभी क्षेत्रों, सशस्त्र यूनिटों और विभागों के कार्य की देखभाल करनी चाहिए, तथा अपना समूचा ध्यान बाकी सब मसलों को छोड़कर केवल चन्द मसलों पर ही केन्द्रित नहीं कर देना चाहिए। जहां कहीं भी समस्या मौजूद हो, उसकी ओर हमें ध्यान देना चाहिए, तथा कार्य करने के इस तरीके में माहिर बन जाना चाहिए। कुछ लोग पियानो अच्छी तरह बजाते है और कुछ लोग बुरी तरह, तथा उनके द्वारा पैदा की जाने वाली धुनों में भी बहुत फर्क होता

है। पार्टी-कमेटियों के सदस्यों को "पियानो बजाना" अच्छी तरह सीख लेना चाहिए।

६. "मजबूती से गिरफ्त में रखो"। इसका मतलब यह है कि पार्टी-कमेटी को चाहिए कि वह मुख्य कार्यों को न सिर्फ "गिरफ्त में रखे", बल्कि जरूर "मजबूती से गिरफ्त में रखे"। कोई आदमी किसी भी चीज को सिर्फ तभी पकड़ सकता है, जब उसकी गिरफ्त मजबूत हो, और इसमें वह जरा भी ढील न आने दे। मजबूती से न पकड़ना बिलकुल न पकड़ने के बराबर है। यह स्वाभाविक है कि खुली हथेली से किसी चीज को नहीं पकड़ा जा सकता। जब हाथ इस तरह बन्द हो जैसे हम किसी चीज को पकड़ते है, लेकिन मजबूती से बन्द न हो, तो भी कोई गिरफ्त नही रहेगी। हमारे कुछ साथी मुख्य कार्यों को पकड़ते तो है, लेकिन उनकी गिरफ्त मजबूत नही होती, और इसलिए वे अपने काम में कामयाबी हासिल नहीं कर पाते। बिलकुल गिरफ्त न होने से काम नही चलेगा, और अगर गिरफ्त मजबूत न हुई तो भी काम नही चलेगा।

७. अपने दिमाग में "आंकड़ों" को बनाए रखो। इसका मतलब यह है कि हमें किसी परिस्थिति अथवा समस्या के परिमाणात्मक पहलू की ओर ध्यान देना चाहिए तथा बुनियादी परिमाणात्मक विश्लेषण करना चाहिए। हर गुणात्मक पहलू की अभिव्यक्ति किसी परिमाणात्मक पहलू के रूप मे होती है, तथा परिमाणात्मक पहलू के बिना गुणात्मक पहलू अस्तित्व में नही आ सकता। आज भी हमारे बहुत से साथी यह नहीं समझ पाते कि उन्हे वस्तुओं के परिमाणात्मक पहलू की ओर ध्यान देना चाहिए – बुनियादी आंकड़ों की ओर, मुख्य प्रतिशतो की ओर, तथा वस्तुओं के गुणात्मक पहलू का निर्णय करने वाली परिमाणात्मक सीमाओं की ओर ध्यान देना चाहिए। उनके दिमाग में कोई "आंकड़े" मौजूद नही है, जिसके परिणामस्वरूप वे गलतियों से बच नहीं सकते। मिसाल के लिए, भूमि-सुधार करते समय कुल आबादी में जमींदारों, धनी किसानों, मध्यम किसानों और गरीब किसानों का प्रतिशत बताने वाले तथा उनमें से हरएक के पास मौजूद जमीन की मात्रा बताने वाले आंकड़ों का पता लगाना निहायत जरूरी है, क्योंकि केवल इसी आधार पर हम सही नीतियों को निर्धारित कर सकते है। धनी किसान किसे कहा जाए और खुशहाल मध्यम किसान किसे कहा जाए, तथा शोषण से प्राप्त होने वाली कितनी आमदनी से धनी किसान और खुशहाल मध्यम किसान के बीच का फर्क आंका जाए – इन सब मामलों में भी परिमाणात्मक सीमाओं को निश्चित कर दिया जाना चाहिए। किसी भी जन-आन्दोलन के दौरान हमें सक्रिय समर्थकों, विरोधियों और तटस्थ रहने वालों की संख्या की बुनियादी जांच-पड़ताल करनी चाहिए और बुनियादी विश्लेषण करना चाहिए तथा समस्याओं का निर्णय बिना किसी आधार के और मनोगतवादी तरीके से नहीं करना चाहिए।

८. "लोगों को इतमीनान दिलाने के लिए सूचना"। मीटिंगों की सूचना पहले से दी जानी चाहिए; यह "लोगों को इतमीनान दिलाने के लिए सूचना" जारी करने के समान है, ताकि हर आदमी को यह मालूम हो जाए कि किस चीज पर विचार-विनिमय होने वाला है और कौन सी समस्याओं को हल किया जाना है, तथा वह यथासमय तैयारियां कर सके। कुछ स्थानों में रिपोर्टों और प्रस्तावों के मसौदों को तैयार करने से पहले ही कार्यकर्ताओं की मीटिंगें बुला ली जाती है, तथा जब लोग मीटिंग के लिए आ जाते है, तो इन दस्तावेजों को

कामचलाऊ तरीके से तैयार किया जाता है ; ऐसे स्थानों में यह कहावत लागू होती है, "फौजें और घोड़े आ पहुंचे हैं, लेकिन खुराक और चारे का इन्तजाम नहीं हुआ" ; यह अच्छी बात नहीं है। जब तक पूरी तैयारी न हो जाए, तब तक मीटिंग न बुलाओ।

९. "बेहतर फौज और सरल प्रशासन"। सभी वार्ताओं, भाषणों, लेखों और प्रस्तावों को सरल और संक्षिप्त होना चाहिए। मीटिंगों को भी बहुत देर तक जारी नहीं रहना चाहिए।

१०. जिन साथियों का आपसे मतभेद है उनके साथ एकता कायम करने और उनके साथ मिलकर काम करने की ओर ध्यान दो। इस बात पर स्थानीय संगठनों में और सेना में दोनों जगह ध्यान दिया जाना चाहिए। यह बात पार्टी के बाहर के लोगों के साथ हमारे सम्बन्धों में भी लागू होती है। हम देश के कोने-कोने से यहां एकत्रित हुए हैं तथा हमें अपने काम के दौरान न सिर्फ उन साथियों के साथ एकता कायम करने में निपुण हो जाना चाहिए जो हमारे समान मत रखते हों बल्कि उनके साथ भी एकता कायम करने में निपुण हो जाना चाहिए जो हमसे भिन्न मत रखते हों। हममें से कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने बहुत गम्भीर गलतियां की हैं ; हमें उनके बारे में तअस्सुब से काम नहीं लेना चाहिए और उनके साथ काम करने को तैयार रहना चाहिए।

११. अहंकार से बचो। जो कोई किसी नेतृत्वकारी पद पर काम करता है उसके लिए यह एक उसूली मामला है, एकता बनाए रखने के लिए यह एक महत्वपूर्ण शर्त भी है। उन लोगों को भी, जिन्होंने कोई गम्भीर गलती नहीं की और अपने काम में बहुत भारी कामयाबियां हासिल की हैं, अहंकार नहीं करना चाहिए। पार्टी-नेताओं का जन्म-दिन मनाना वर्जित है। उसी तरह पार्टी-नेताओं के नाम पर स्थानों, सड़कों और कारोबारों का नामकरण करना भी वर्जित है। सादा जीवन बिताने और कठोर संघर्ष करने की अपनी कार्यशैली पर कायम रहना चाहिए तथा चापलूसी और अतिरंजित तारीफ बन्द कर देनी चाहिए।

१२. दो विभाजन-रेखाएं खींच लो। पहली विभाजन-रेखा क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति के बीच, येनान और शीआन[1] के बीच खींच लो। कुछ लोग इस बात को नहीं समझते कि उन्हें यह विभाजन-रेखा खींच लेनी चाहिए। मिसाल के लिए, जब वे नौकरशाही का विरोध करते हैं, तो वे येनान की चर्चा इस तरह करते हैं मानो वहां "कुछ भी ठीक न हो", तथा येनान की नौकरशाही और शीआन की नौकरशाही की तुलना नहीं करते और उनके बीच फर्क नहीं करते। यह बुनियादी रूप से गलत है। दूसरी विभाजन-रेखा क्रान्तिकारी पांतों के अन्दर सही और गलत के बीच, उपलब्धियों और कमियों के बीच खींच लेनी चाहिए तथा इस बात को भी स्पष्ट कर लेना चाहिए कि इन दोनों में से कौन सी चीज मुख्य है और कौन सी गौण। मिसाल के लिए, क्या उपलब्धियों की मात्रा ३० प्रतिशत है अथवा ७० प्रतिशत? न तो कम करके आंकने से काम चलेगा और न बढ़ा-चढ़ा कर बयान करने से। हमें किसी एक आदमी के काम का बुनियादी मूल्यांकन करना चाहिए तथा यह देखना चाहिए कि क्या उसकी उपलब्धियां ३० प्रतिशत हैं और गलतियां ७० प्रतिशत, अथवा गलतियां ३० प्रतिशत हैं और उपलब्धियां ७० प्रतिशत। अगर उसकी उपलब्धियां ७० प्रतिशत हों, तो उसके काम को मुख्य रूप से मंजूर कर लेना चाहिए। जिस काम में उपलब्धियों की प्रधानता हो, उसे एक ऐसा काम बताना जिसमें गलतियों की प्रधानता हो, सरासर गलत होगा। समस्याओं

से निपटते समय हमें क्रान्ति ग्रौर प्रतिक्रान्ति के बीच, उपलब्धियों ग्रौर कमियों के बीच इन दो विभाजन-रेखाग्रों को खींचना नहीं भूलना चाहिए। ग्रगर हम इन दो विभाजन-रेखाग्रों को याद रखेंगे, तो हम ग्रपना काम ग्रच्छी तरह कर सकेंगे ; वरना हम समस्याग्रों के स्वरूप को उलझा देंगे। इसमें सन्देह नहीं कि इन दोनों विभाजन-रेखाग्रों को सही ढंग से खींचने के लिए सावधानी से ग्रध्ययन करना ग्रौर विश्लेषण करना निहायत जरूरी है। हर व्यक्ति के प्रति ग्रौर हर मामले के प्रति हमें विश्लेषण करने ग्रौर ग्रध्ययन करने का रुख ग्रपनाना चाहिए।

राजनीतिक ब्यूरो के सदस्यों का ग्रौर खुद मेरा यह खयाल है कि पार्टी-कमेटियां केवल उपर्युक्त तरीके ग्रपनाकर ही ग्रपना काम ग्रच्छी तरह कर सकती हैं। पार्टी-कांग्रेसों का सुचारु रूप से संचालन करने के ग्रलावा यह निहायत जरूरी है कि सभी स्तरों की पार्टी-कमेटियां ग्रपने नेतृत्व-कार्य का भी सुचारु रूप से संचालन करें। हमें काम करने के तरीकों का ग्रध्ययन करने ग्रौर उनमें पूर्णता लाने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि पार्टी-कमेटियों के नेतृत्व-कार्य का स्तर ग्रौर ग्रधिक उन्नत किया जा सके।

नोट

[१] "लाम्रो चि", ग्रध्याय ८० से एक उद्धरण।

[२] "कनफ्यूशियस का सूक्ति-संग्रह" के पांचवें ग्रध्याय "कुङ ये छाङ" से एक उद्धरण।

[३] येनान जनवरी १९३७ से मार्च १९४७ तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का सदर मुकाम रहा ; शीग्रान उत्तर-पश्चिमी चीन में प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ शासन का केन्द्र था। कामरेड माम्रो त्सेतुङ ने इन दोनों शहरों का जिक्र क्रान्ति ग्रौर प्रतिक्रान्ति के प्रतीक के रूप में किया है।

नानकिङ सरकार किधर ?

४ अप्रैल १९४९

नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार तथा उसके फौजी व प्रशासनिक कर्मचारियों के सामने दो रास्ते हैं। या तो वे च्याङ काई-शेक युद्ध-अपराधी गुट और उसके आका अमरीकी साम्राज्यवाद का दामन थामे रहें, यानी जनता के दुश्मन बने रहें और इस प्रकार जन-मुक्ति युद्ध में च्याङ काई-शेक युद्ध-अपराधी गुट के साथ खुद भी सर्वनाश के गर्त में जा गिरें ; अथवा वे लोग जनता के पक्ष में आ जाएं, यानी च्याङ काई-शेक युद्ध-अपराधी गुट और अमरीकी साम्राज्यवाद से नाता तोड़ लें, अपने अपराधों का प्रायश्चित्त करने के लिए जन-मुक्ति युद्ध में सराहनीय काम करें, जिससे जनता उनके साथ रियायत कर सके और उन्हें क्षमा कर सके। तीसरा कोई रास्ता नहीं है।

नानकिङ में ली चुङ-रन और हो इङ-छिन की सरकार[1] के अन्दर तीन अलग-अलग ग्रुप मौजूद हैं। एक ग्रुप बड़ी हठधर्मी के साथ पहला रास्ता अपना रहा है। वे लोग अपनी कथनी में चाहे कितने ही युक्ति-संगत जान पड़ें, लेकिन अपनी करनी में वे लगातार युद्ध की तैयारी कर रहे हैं, राष्ट्र के साथ गद्दारी कर रहे हैं, तथा सच्ची शान्ति की मांग करने वाली जनता का उत्पीड़न और कत्लेआम कर रहे हैं। वे मरते दम तक च्याङ काई-शेक के अनुयायी बने रहेंगे। दूसरा ग्रुप

दूसरा रास्ता अपनाना चाहता है, लेकिन अभी तक इस सिलसिले में कोई निर्णायक कदम नहीं उठा सका है। तीसरा ग्रुप दोराहे पर खड़ा बड़ी दुविधा में पड़ा हुआ है और यह नहीं समझ पा रहा कि उसे कौन सा रास्ता अपनाना चाहिए। वह च्याङ काई-शेक और अमरीका सरकार को नाराज नहीं करना चाहता, फिर भी वह आशा करता है कि जनता के जनवादी खेमे में उसके प्रति क्षमा की भावना पैदा होगी और उसे उसमें शामिल कर लिया जाएगा। लेकिन यह एक कोरी कल्पना है और ऐसा होना असम्भव है।

ली चुङ-रन और हो इङ-छिन की नानकिङ सरकार मुख्य रूप से पहले और तीसरे ग्रुप का मिश्रण है तथा उसमें दूसरे ग्रुप के लोग बहुत कम हैं। आज दिन तक भी यह सरकार च्याङ काई-शेक और अमरीका सरकार का महज एक मोहरा बनी हुई है।

१ अप्रैल को नानकिङ में जो हत्याकाण्ड हुआ[२] वह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। यह उन कार्यवाहियों का अनिवार्य नतीजा था जिन्हें ली चुङ-रन और हो इङ-छिन की सरकार ने च्याङ काई-शेक, उसके कट्टर अनुयायियों और अमरीकी आक्रमणकारी शक्तियों की रक्षा करने के लिए किया था। यह ली चुङ-रन और हो इङ-छिन की सरकार और च्याङ काई-शेक के कट्टर अनुयायियों द्वारा एक साथ लगाई गई इस बेहूदा हांक का परिणाम था कि "समानता के दर्जे पर एक सम्मानपूर्ण शान्ति" की स्थापना की जाए, और इसका मकसद था चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा शान्ति की स्थापना के लिए पेश की गई आठ शर्तों, और खास तौर पर युद्ध-अपराधियों को सजा देने की शर्त का विरोध करना। अब जबकि ली चुङ-रन और हो इङ-छिन की सरकार ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ शान्ति-वार्ता करने के लिए अपना

प्रतिनिधिमण्डल पेकिङ भेज दिया है तथा कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा पेश की गई आठ शर्तों को समझौता-वार्ता के आधार के रूप में मंजूर करने के लिए अपनी सहमति दे दी है, ऐसी सूरत में यदि उसके अन्दर जरा भी सद्भाव मौजूद है तो उसे चाहिए कि वह नानकिङ हत्याकाण्ड से निपटने से शुरू करके मुख्य अपराधियों, च्याङ काई-शेक, थाङ अन-पो और चाङ याओ-मिङ को गिरफ्तार कर ले और उन्हें सख्त सजा दे, नानकिङ और शांघाई की खुफिया पुलिस के गुण्डों को गिरफ्तार कर ले और उन्हें सख्त सजा दे तथा उन मुख्य प्रतिक्रान्तिकारियों को गिरफ्तार कर ले और उन्हें सख्त सजा दे जो बड़ी हठधर्मी के साथ शान्ति की स्थापना का विरोध कर रहे हैं, बड़ी सक्रियता के साथ शान्ति-वार्ता को तहस-नहस कर रहे हैं और बड़ी सक्रियता के साथ इस बात की तैयारी कर रहे हैं कि जन-मुक्ति सेना को याङत्सी नदी के दक्षिण में कूच करने से रोका जाए। "जब तक छिङ फू का खात्मा नहीं किया जाता, तब तक लू राज्य का संकट दूर नहीं हो सकेगा।"[३] जब तक युद्ध-अपराधियों का खात्मा नहीं किया जाता, तब तक देश में शान्ति स्थापित नहीं की जा सकती। क्या यह सच्चाई अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाई?

हम नानकिङ सरकार को गम्भीरता के साथ बता देना चाहते हैं: अगर तुम लोग यह कार्य करने में असमर्थ हो, तो इसे करने में तुम्हें कम से कम जन-मुक्ति सेना की तो मदद करनी चाहिए, जो जल्दी ही याङत्सी नदी पार कर लेगी और दक्षिण की तरफ कूच करेगी। समय बहुत गुजर चुका है, अब तुम्हें खोखली बातें नहीं करनी चाहिए और अच्छा तो यह होगा कि तुम अपने अपराधों का प्रायश्चित्त करने के लिए कुछ वास्तविक कार्य करो, जिससे तुम्हें अपनी जिन्दगी बचाने

के लिए भागना न पड़े, च्याङ काई-शेक के कट्टर अनुयायियों की धमकियों के आगे झुकना न पड़े तथा जनता की नजर में हमेशा के लिए तिरस्कृत न होना पड़े। यह तुम्हारा आखिरी मौका है, इसे हाथ से न जाने दो। जन-मुक्ति सेना जल्दी ही याङत्सी नदी के दक्षिण में कूच करेगी। हम झूठी धमकी नहीं दे रहे। जन-मुक्ति सेना अवश्य कूच करेगी, चाहे तुम आठ शर्तों को स्वीकार करके समझौते पर हस्ताक्षर करो अथवा न करो। हमारी सेना द्वारा कूच आरम्भ किए जाने से पहले अगर एक समझौते पर हस्ताक्षर हो जाते हैं, तो यह बहुत से लोगों के लिए फायदेमन्द साबित होगा – जनता के लिए, जन-मुक्ति सेना के लिए, क्वोमिन्ताङ सरकार के उन तमाम लोगों के लिए जो अपने सराहनीय काम के जरिए अपने अपराधों का प्रायश्चित्त करना चाहते हैं, तथा क्वोमिन्ताङ सेना के अफसरों व सिपाहियों की व्यापक पांतों के लिए फायदेमन्द साबित होगा ; यह केवल च्याङ काई-शेक, उसके कट्टर अनुयायियों और साम्राज्यवादियों के लिए फायदेमन्द साबित नहीं होगा। अगर इस समझौते पर हस्ताक्षर न हुए, तो परिस्थिति लगभग वैसी ही होगी ; स्थानीय समझौता-वार्ता के जरिए इस का हल निकाला जा सकता है। कुछ न कुछ लड़ाई होने की सम्भावना जरूर है, लेकिन ज्यादा लड़ाई नहीं होगी। सिनच्याङ से थाइवान तक फैले विशाल क्षेत्र और लम्बे मोर्चे में क्वोमिन्ताङ के पास अब सिर्फ लगभग ११,००,००० लड़ाकू सैनिक रह गए हैं, और इसलिए अब ज्यादा लड़ाई नहीं होगी। चाहे एक आम समझौते पर हस्ताक्षर हों अथवा ऐसे समझौते पर हस्ताक्षर होने के बजाय बहुत से स्थानीय समझौतों पर हस्ताक्षर हों, च्याङ काई-शेक के लिए, उसके कट्टर अनुयायियों के लिए और अमरीकी साम्राज्यवाद के लिए, संक्षेप में

उन तमाम प्रतिक्रियावादियों के लिए, जो अपने खात्मे के पहले हरगिज नहीं बदलेंगे, इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा ; उनका अनिवार्य रूप से सर्वनाश होगा। शायद यह नानकिङ के लिए और साथ ही हमारे लिए भी कुछ ज्यादा फायदेमन्द साबित होगा कि हम एक आम समझौते पर हस्ताक्षर करें बजाय इसके कि हम ऐसा न करें, और यही वजह है कि हम अब भी ऐसा समझौता करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन अगर एक आम समझौते पर हस्ताक्षर करने पड़े, तो हमें इसके परिणामस्वरूप बहुत झंझट वाले मामलों से निपटने को तैयार रहना होगा। एक आम समझौते पर हस्ताक्षर न करना और इसके बदले बहुत से स्थानीय समझौतों पर हस्ताक्षर करना हमारे लिए कहीं ज्यादा साफ-सुथरा रास्ता होगा। फिर भी हम एक आम समझौते पर हस्ताक्षर करने को तैयार हैं। अगर नानकिङ सरकार और उसका प्रतिनिधिमण्डल भी ऐसा करने को तैयार हों, तो आने वाले चन्द दिनों में उन्हें इसका निश्चय कर लेना चाहिए ; सभी तरह के भ्रम और सभी तरह की खोखली बातों को तिलांजलि दे देनी चाहिए। हम तुम्हें इस बात के लिए मजबूर नहीं कर रहे कि तुम ऐसा इरादा कर लो। नानकिङ सरकार और उसका प्रतिनिधिमण्डल ऐसा इरादा करने अथवा न करने के लिए स्वतंत्र है। तात्पर्य यह कि तुम चाहो तो च्याङ काई-शेक और लीटन स्टुअर्ट की बात सुन सकते हो तथा अविचल रूप से उनका पक्ष ले सकते हो, अथवा हमारी बात सुन सकते हो तथा हमारा पक्ष ले सकते हो ; तुम्हें इनमें से चाहे जिसे चुनने की आजादी है। लेकिन यह चुनाव करने के लिए तुम्हारे पास ज्यादा समय नहीं है। जन-मुक्ति सेना जल्दी ही अपना कूच शुरू करने वाली है, और अब हिचकिचाने का मौका नहीं रह गया है।

नोट

[1] सुन फ़ो द्वारा इस्तीफा दिए जाने के बाद, ली चुङ-रन ने १२ मार्च १९४९ को क्वोमिन्ताङ कार्यकारी य्वान के प्रेसीडेन्ट के पद पर हो इङ-छिन को नियुक्त कर दिया।

[2] १ अप्रैल १९४९ को, नानकिङ के ग्यारह कालेजों व विश्वविद्यालयों के छै हजार से ज्यादा विद्यार्थियों ने प्रदर्शन किया और मांग की कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा प्रस्तुत शान्ति की आठ शर्तों को प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार मंजूर कर ले। च्याङ काई-शेक के आदेश पर, क्वोमिन्ताङ की नानकिङ स्थित गैरिजन सेना के कमाण्डर-इन-चीफ़ चाङ याओ-मिङ ने सैनिकों, पुलिससैनों और खुफिया एजेन्टों को हुक्म दिया कि वे विद्यार्थियों की बर्बरता से पिटाई करें; इसमें दो विद्यार्थी मारे गए और सौ से अधिक विद्यार्थी घायल हो गए।

[3] बसन्त और शरद काल (७७०-४७५ ई० पू०) की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करने वाले एक प्राचीन चीनी ऐतिहासिक ग्रन्थ "च्वो च्वान" के अनुसार, लू राज्य के सामन्त छिङ फ़ू ने बार-बार अन्दरूनी कलह उकसाया तथा उस राज्य पर शासन करने वाले दो राजाओं की हत्या करवा दी। यहां जो कहावत दी गई है वह उस समय लू राज्य के लोगों में प्रचलित थी। तभी से छिङ फ़ू का नाम अन्दरूनी कलह उकसाने वाले का प्रतीक बन गया है।

सेना को देशव्यापी पेशकदमी के लिए आदेश*

२१ अप्रैल १९४९

सभी रणांगन-सेनाओं के कमाण्डर और योद्धा साथियो, दक्षिण के छापामार क्षेत्रों की जन-मुक्ति सेना के साथियो,

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल और नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार के प्रतिनिधिमण्डल के बीच लम्बी बातचीत के बाद अन्दरूनी शान्ति-समझौते का जो मसविदा तैयार किया गया था, उसे नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार ने नामंजूर कर दिया है।[1] नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार के जिम्मेदार सदस्यों ने इस अन्दरूनी शान्ति-

*यह आदेश कामरेड माओ त्सेतुङ ने लिखा था। जब प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार ने अन्दरूनी शान्ति-समझौते पर दस्तखत करने से इनकार कर दिया, तो अध्यक्ष माओ त्सेतुङ और कमाण्डर-इन-चीफ़ चू तेह द्वारा जारी किए गए इसी आदेश पर जन-मुक्ति सेना ने अमल किया और उन विशाल क्षेत्रों की तरफ, जो अभी तक मुक्त नहीं हुए थे, अभूतपूर्व पैमाने पर चौतरफा पेशकदमी शुरू कर दी। २१ अप्रैल १९४९ को प्रातःकाल, ल्यू पो-छङ, तङ श्याओ-फिङ आदि कामरेडों के नेतृत्व में दूसरी रणांगन-सेना और छन ई, सू य्वी, थान चन-लिन आदि कामरेडों के नेतृत्व में तीसरी रणांगन-सेना ने पश्चिम में च्योच्याङ के उत्तर-पूर्व में स्थित हूखओ से पूर्व में च्याङयिन तक पांच सौ किलोमीटर से अधिक दूरी तक फैले मोर्चे पर याङत्सी नदी को जबरदस्ती पार किया और

समझौते को इसलिए नामंजूर किया है कि वे अब भी अमरीकी साम्राज्यवाद की और क्वोमिन्ताङ डाकू-गुट के सरदार च्याङ काई-शेक की हुक्म-बरदारी कर रहे हैं और चीनी जनता के मुक्ति-कार्य की प्रगति की राह में रोड़े अटकाने तथा आन्तरिक समस्या को शान्तिपूर्ण उपायों से हल न होने देने की कोशिश कर रहे हैं। दोनों पक्षों के प्रतिनिधिमण्डलों ने समझौता-वार्ता के जरिए आठ धाराओं और चौबीस अनुच्छेदों वाले अन्दरूनी शान्ति-समझौते का जो मसविदा बनाया था, उसमें युद्ध-अपराधियों के सवाल पर नरमी का रुख अपनाने, क्वोमिन्ताङ सेनाओं के अफसरों व सिपाहियों और क्वोमिन्ताङ सरकार के कर्मचारियों के प्रति नरमी बरतने और अन्य सवालों के मुनासिब हल निकालने की व्यवस्था की गई और यह सब कुछ राष्ट्र और जनता के हितों को ध्यान में रखकर ही किया गया। इस

याङत्सी नदी के किनारे-किनारे उस बचाव-मोर्चे को जो शत्रु ने साढ़े तीन महीने तक एड़ी-चोटी का पसीना एक करके खड़ा किया था, पूरी तरह तहस-नहस कर डाला। २३ अप्रैल को इन सैन्य-शक्तियों ने नानकिङ को, जो बाईस साल से क्वोमिन्ताङ के प्रतिक्रान्तिकारी शासन का केन्द्र रहा था, मुक्त करा लिया और इस प्रकार यह क्वोमिन्ताङ के प्रतिक्रियावादी शासन के पतन का द्योतक बन गया। फिर वे अलग-अलग रास्तों से और अधिक दक्षिण की ओर बढ़ गईं। उन्होंने ३ मई को हाङचओ और २२ मई को नानछाङ को मुक्त कराया और २७ मई के दिन चीन के सबसे बड़े शहर शांघाई पर अधिकार कर लिया। जून में उन्होंने फ़ूच्येन प्रान्त में बढ़ना शुरू किया। उन्होंने १७ अगस्त के दिन फ़ूचओ को और १७ अक्तूबर के दिन अमोय को मुक्त करा लिया। १४ मई को लिन प्याओ, लो रुङ-ह्वान आदि कामरेडों के नेतृत्व में चौथी रणागत-सेना ने ऊहान के पूर्व में थ्वानफङ से ऊश्वे तक के सौ किलोमीटर से भी अधिक बड़े मोर्चे पर याङत्सी नदी को जबरदस्ती पार किया। १६ और १७ मई को उसने मध्य चीन

समझौते को नामंजूर कर डालने का मतलब यही है कि जिस प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध को क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने खुद ही छेड़ा था, उसे वे अन्त तक चलाने पर अड़े हुए हैं। इस समझौते को नामंजूर करने का मतलब यह है कि इस वर्ष १ जनवरी को शान्ति-वार्ता का प्रस्ताव क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने महज इसलिए रखा था कि वे जनमुक्ति सेना का बढ़ाव रोक देना चाहते थे और इस तरह कुछ समय के लिए दम लेने का मौका हासिल करना चाहते थे, ताकि उसके बाद फिर मैदान में उतरकर क्रान्तिकारी शक्तियों को कुचल डालें। इस समझौते को नामंजूर करने का मतलब यह है कि नानकिङ की ली चुङ-रन सरकार बातचीत के आधार के तौर पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की शान्ति की आठ शर्तें मानने का जो दिखावा कर रही थी, वह उसकी सरासर ढकोसलेबाजी थी। चूंकि ली चुङ-रन सरकार युद्ध-

के रणनीतिक महत्व के तीन नगरों, ऊछाङ, हानयाङ और हानखओ को मुक्त करा लिया। फिर वह दक्षिण की तरफ कूच करती हुई हूनान में जा पहुंची। हूनान प्रान्त के क्वोमिन्ताङ गवर्नर छङ छ्येन और प्रथम सेना के कमाण्डर छन मिङ-रन ने ४ अगस्त को क्वोमिन्ताङ के प्रति अपनी वफादारी को तिलांजलि देने की घोषणा कर दी और इस प्रकार हूनान प्रान्त को शान्तिपूर्वक मुक्त करा लिया गया। सितम्बर और अक्तूबर में चौथी रणागत-सेना ने हङयाङ-पाओछिङ मुहिम चलाई, पाए छुङ-शी के मातहत क्वोमिन्ताङ फौज की मुख्य शक्ति का सफाया कर डाला और फिर क्वाङतुङ और क्वाङशी प्रान्तों में कूच कर दिया। उसने क्वाङचओ को १४ अक्तूबर के दिन, क्वेइलिन को २२ नवम्बर के दिन और नाननिङ को ४ दिसम्बर के दिन मुक्त करा लिया। जिस समय दूसरी और तीसरी रणागत-सेनाएं याङत्सी नदी को जबरदस्ती पार करने में लगी हुई थीं, उस समय स्ये रुङ-चन, श्वी श्याङ-छ्येन आदि कामरेडों के नेतृत्व में उत्तरी चीन की फौजी फारमेशनों ने २४ अप्रैल १९४९ के दिन थाएय्वान पर अधिकार

अपराधियों को सजा देने, तमाम प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सेनाओं का जनवादी उसूलों के आधार पर पुनर्गठन करने और नानकिङ सरकार तथा उसके अधीन सभी स्तरों की सरकारों के हाथ से सारी की सारी सत्ता ले लेने आदि जैसी बुनियादी शर्तों को पहले ही मान चुकी थी, इसलिए उसके पास इस बात का कोई कारण मौजूद न था कि वह इन बुनियादी शर्तों के आधार पर तैयार किए गए विशिष्ट उपायों को, जो बेहद नरमी-भरे थे, नामंजूर कर दे। ऐसी परिस्थिति में हम आपको ये आदेश देते हैं :

१. बहादुरी के साथ आगे बढ़ो और चीन की सीमाओं के भीतर मौजूद उन तमाम क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों को, जो प्रतिरोध करने की जुर्रत करें, दृढ़तापूर्वक, सर्वांगीण रूप से, समग्र रूप से और सम्पूर्ण रूप से नष्ट कर डालो। पूरे देश की जनता को मुक्त कराओ।

कर लिया। २० मई को शीआन को मुक्त करा लेने के बाद फङ तह-ह्वाए, हो लुङ आदि कामरेडों के नेतृत्व में पहली रणागत-सेना ने उत्तरी चीन की दो फौजी फारमेशनों के साथ मिलकर उत्तर-पश्चिम के क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में अपना कूच जारी रखा। उन्होंने २६ अगस्त के दिन लानचओ पर अधिकार कर लिया, ५ सितम्बर के दिन शीनिङ को और २३ सितम्बर के दिन इनछ्वान को मुक्त करा लिया और मा पू-फाङ और मा हुङ-क्वेइ के अधीन तमाम क्वोमिन्ताङ सेनाओं को पूरी तरह तहस-नहस कर डाला। सितम्बर के अन्त में सिनच्याङ प्रान्त में क्वोमिन्ताङ के गैरिजन कमाण्डर-इन-चीफ ताओ चि-य्वे और गवर्नर बुरहान ने क्वोमिन्ताङ से अपनी वफादारी को तिलांजलि देने की घोषणा कर दी और इस प्रकार सिनच्याङ प्रान्त को शान्तिपूर्वक मुक्त करा लिया गया। नवम्बर के शुरू में ल्यू पो-छङ, तङ श्याओ-फिङ आदि कामरेडों के नेतृत्व में दूसरी रणागत-सेना ने हो लुङ, ली चिङ-छ्वेन आदि कामरेडों के नेतृत्व वाली उत्तरी चीन रणागत-सेना की १८वीं फौजी फारमेशन और पहली रणागत-सेना के एक भाग

चीन की प्रादेशिक भूमि और प्रभुसत्ता की स्वाधीनता और अखण्डता की रक्षा करो।

२. बहादुरी के साथ आगे बढ़ो और ऐसे तमाम युद्ध-अपराधियों को गिरफ्तार कर लो जिनके सुधरने की कोई गुंजाइश नहीं है। वे भागकर चाहे कहीं भी क्यों न जाएं, उन्हें पकड़कर कठघरे में खड़ा करना ही होगा, और कानून के मुताबिक उन्हें सजा देनी ही होगी। डाकू-सरदार च्याङ काई-शेक को गिरफ्तार करने के काम पर विशेष ध्यान दो।

३. क्वोमिन्ताङ की तमाम स्थानीय सरकारों और स्थानीय फौजी गुटों के सामने अन्दरूनी शान्ति-समझौते के अन्तिम संशोधित रूप का ऐलान कर दो। उसकी सामान्य धारणाओं के अनुसार उन तमाम लोगों के साथ स्थानीय समझौते किए जा सकते हैं, जो युद्ध की कार्य-

---

के साथ मिलकर दक्षिण-पश्चिमी चीन में बढ़ना शुरू कर दिया। उन्होंने १५ नवम्बर के दिन क्वेइयाङ को और ३० नवम्बर के दिन छुङछिङ को मुक्त करा लिया। ९ दिसम्बर को युन्नान प्रान्त के क्वोमिन्ताङ गवर्नर लू हान, शीखाङ प्रान्त के क्वोमिन्ताङ गवर्नर ल्यू वन-ह्वेइ और दक्षिण-पश्चिम में फौजी और प्रशासनिक मामलों के क्वोमिन्ताङ ब्यूरो के दो उप-निर्देशक तङ सी-हओ और फान वन-ह्वा आदि लोगों ने क्वोमिन्ताङ के प्रति अपनी वफादारी को तिलांजलि देने की घोषणा कर दी और इस प्रकार युन्नान व शीखाङ दोनों प्रान्त शान्तिपूर्वक मुक्त करा लिए गए। दक्षिण-पश्चिम में प्रवेश कर चुकने के बाद जन-मुक्ति सेना ने दिसम्बर के अन्त में छङतू मुहिम चलाई, हू त्सुङ-नान के अधीन तमाम क्वोमिन्ताङ सेनाओं का पूरी तरह सफाया कर डाला और २७ दिसम्बर के दिन छङतू को मुक्त करा लिया। दिसम्बर १९४९ के अन्त तक जन-मुक्ति सेना ने चीन की मुख्य भूमि से सभी क्वोमिन्ताङ सेनाओं का सफाया कर डाला और तिब्बत को छोड़कर समूची मुख्य भूमि को मुक्त करा लिया।

वाहियों को बन्द करने और शान्तिपूर्ण उपायों से मसलों को सुलझाने के इच्छुक हों।

४. जन-मुक्ति सेना द्वारा नानकिङ को घेर लिए जाने के बाद, यदि नानकिङ की ली चुङ-रन सरकार वहां से भागकर तितर-बितर न हो गई हो और अन्दरूनी शान्ति-समझौते पर हस्ताक्षर करने की इच्छुक हो, तो हम उसे इस समझौते पर हस्ताक्षर करने का एक और अवसर देने के लिए तैयार हैं।

माओ त्सेतुङ
अध्यक्ष, चीनी जनता का
क्रान्तिकारी फौजी कमीशन
चू तेह
कमाण्डर-इन-चीफ,
चीनी जन-मुक्ति सेना

नोट

[1] १ अप्रैल १९४९ के दिन चाङ च-चुङ के नेतृत्व में क्वोमिन्ताङ सरकार का शान्ति-वार्ता प्रतिनिधिमण्डल चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल के साथ वार्ता करने के लिए पेकिङ पहुंचा। आधे महीने की बातचीत के बाद अन्दरूनी शान्ति-समझौते का एक मसविदा तैयार किया गया। समझौते (अन्तिम संशोधित रूप) को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल ने १५ अप्रैल के दिन नानकिङ सरकार के प्रतिनिधिमण्डल के सुपुर्द किया और नानकिङ सरकार ने २० अप्रैल के दिन उसे नामंजूर कर दिया। समझौते (अन्तिम संशोधित रूप) का पूरा मजमून इस प्रकार है :

चीन गणराज्य के ३५वें वर्ष में नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार ने संयुक्त राज्य अमरीका सरकार की मदद से जनता की इच्छा की अवहेलना करते हुए युद्ध-विराम समझौते और राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावों का उल्लंघन किया और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का विरोध करने के बहाने चीनी जनता और चीनी जन-मुक्ति सेना के विरुद्ध देशव्यापी गृहयुद्ध छेड़ दिया। यह युद्ध दो वर्ष साढ़े नौ महीने चल चुका है। इसने समूचे देश की जनता के ऊपर बेइन्तहा मुसीबतें ढाई हैं। वित्तीय और भौतिक सम्पदा की दृष्टि से देश को भीषण हानियां झेलनी पड़ी हैं और उसकी प्रभुसत्ता का और अधिक उल्लंघन हुआ है। डा० सुन यात-सेन के क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्तों का, रूस से मैत्री, कम्युनिस्ट पार्टी से सहयोग और किसान-मजदूरों की सहायता की उनकी सही नीतियों का और उनकी क्रान्तिकारी वसीयत का उल्लंघन किए जाने के कारण नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के प्रति सारे देश की जनता ने सदा ही अपना असन्तोष जाहिर किया है। नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार ने अभूतपूर्व बड़े पैमाने पर जो मौजूदा गृहयुद्ध छेड़ रखा है तथा इस गृहयुद्ध को चलाने के लिए उस सरकार ने जो गलत राजनीतिक, फौजी, वित्तीय, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैदेशिक नीतियां अपनाई हैं और जो कदम उठाए हैं, उनके खिलाफ सारी जनता ने खास तौर से अपना विरोध जाहिर किया है। नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार समूची जनता का विश्वास पूरी तरह खो बैठी है। मौजूदा गृहयुद्ध में उसकी सेनाओं को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में और चीनी जनता के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन की कमान में चलने वाली जन-मुक्ति सेना पराजित कर चुकी है। अपने को इस स्थिति में पाकर, नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार ने चीन गणराज्य के ३८वें वर्ष की १ जनवरी को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि गृहयुद्ध को समाप्त करने और फिर से शान्ति की स्थापना करने के लिए बातचीत शुरू की जाए। उसी वर्ष १४ जनवरी को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के इस प्रस्ताव को मानते हुए एक वक्तव्य जारी किया जिसमें दोनों पक्षों के बीच शान्ति-वार्ता के आधार के तौर पर आठ शर्तें पेश की गई थीं। वे शर्तें इस प्रकार हैं : युद्ध-अपराधियों को सजा दो ; बोगस संविधान को रद्द करो ; बोगस "विधिसम्मत सत्ताधिकार" को रद्द करो ; तमाम प्रति-

क्रियावादी सेनाओं का जनवादी उसूलों के आधार पर पुनर्गठन करो ; नौकरशाही-पूंजी को जब्त करो ; भूमि-व्यवस्था में सुधार करो ; वतनफरोश सन्धियों को रद्द करो ; नया राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाओ, जिसमें प्रतिक्रियावादी तत्वों को शामिल न किया जाए, तथा एक जनवादी मिलीजुली सरकार बनाओ जो प्रतिक्रियावादी नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार और उसके अधीन सभी स्तरों की सरकारों के हाथ से सारी की सारी सत्ता ले ले। नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार ने इन आठ बुनियादी शर्तों को मान लिया। इसी आधार पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार ने बातचीत चलाने और समझौते पर हस्ताक्षर करने का पूर्ण अधिकार देकर अपना-अपना प्रतिनिधिमण्डल नियुक्त किया। दोनों पक्षों के प्रतिनिधियों ने पेकिङ की अपनी बैठक में सबसे पहले निश्चित रूप से यह घोषणा की है कि नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार ही मौजूदा गृहयुद्ध के लिए और अपनी सारी की सारी गलत नीतियों के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है, और यह कि दोनों पक्ष यह समझौता सम्पन्न करने पर सहमत हो गए हैं।

धारा एक

अनुच्छेद १ : चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का प्रतिनिधिमण्डल और नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार का प्रतिनिधिमण्डल ये दोनों पक्ष (जिन्हें इस दस्तावेज में आगे हर जगह केवल "दोनों पक्ष" कहा गया है) सही और गलत के बीच फर्क करने के लिए तथा जिम्मेदारी निश्चित करने के लिए निश्चित रूप से यह घोषणा करते हैं कि उसूल के तौर पर नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के उन सभी युद्ध-अपराधियों को अवश्य दंडित किया जाएगा जो मौजूदा गृहयुद्ध को छेड़ने और चलाने के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन उनके साथ बरताव करने में नीचे लिखी हालतों के अनुसार अलग-अलग फैसला किया जाएगा :

मुद्दा १ : सभी युद्ध-अपराधियों को, चाहे वे कोई भी क्यों न हों, युद्ध-अपराधी होने के अभियोग से बरी किया जा सकता है और उनके साथ नरमी का बरताव किया जा सकता है, बशर्ते कि वे सचमुच अपनी करनी से यह जाहिर कर दें कि उन्होंने दरअसल दिल से सही और गलत के बीच फर्क किया है तथा अपने अतीत से पूरी तरह नाता तोड़ लिया है और इससे चीनी जनता के मुक्ति-कार्य की प्रगति में और अन्दरूनी समस्या के शान्तिपूर्ण हल में मदद मिली है।

मुद्दा २ : ऐसे सभी युद्ध-अपराधियों को, चाहे वे कोई भी क्यों न हों, कठोर दण्ड अवश्य भुगतना पड़ेगा जिनके सुधार की कोई गुंजाइश नहीं है, और जो जनता के मुक्ति-कार्य की प्रगति की राह में रोड़े अटकाएंगे, अन्दरूनी समस्या के शान्तिपूर्ण हल में बाधा डालेंगे, यहां तक कि विद्रोह भड़काने की जुर्रत करेंगे। वे जिस किसी विद्रोह की अगवाई करेंगे उसे कुचल डालने की जिम्मेदारी चीनी जनता के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन की होगी।

अनुच्छेद २ : दोनों पक्ष निश्चित रूप से यह घोषणा करते हैं कि नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार द्वारा उठाए गए वे कदम गलत थे जिनके जरिए उसने चीन पर आक्रमण करने वाले जापानी युद्ध-अपराधी जनरल यासूजी ओकामुरा को निरपराध घोषित कर चीन गणराज्य के ३८वें वर्ष की २६ जनवरी को उसे रिहा कर दिया तथा उसी वर्ष की ३१ जनवरी को २६० अन्य जापानी युद्ध-अपराधियों को उनके देश जापान भेजने की अनुमति दे दी। चीन की जनवादी मिलीजुली सरकार, यानी समस्त चीनी जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली नई केन्द्रीय सरकार, के स्थापित होते ही इन तमाम जापानी युद्ध-अपराधियों के मामलों की सुनवाई नए सिरे से की जाएगी।

धारा दो

अनुच्छेद ३ : दोनों पक्ष निश्चित रूप से यह घोषणा करते हैं कि चीन गणराज्य के ३५वें वर्ष के नवम्बर माह में नानकिङ क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा बुलाई गई "राष्ट्रीय एसेम्बली" में स्वीकृत "चीन गणराज्य के संविधान" को रद्द कर दिया जाएगा।

अनुच्छेद ४ : "चीन गणराज्य के संविधान" के रद्द हो जाने के बाद, चीनी राज्य और जनता द्वारा पालन करने के लिए बुनियादी कानून का नए राज-

नीतिक सलाहकार सम्मेलन और जनवादी मिलीजुली सरकार के प्रस्तावों के अनुसार ही निर्णय किया जाएगा।

धारा तीन

अनुच्छेद ५ : दोनों पक्ष निश्चित रूप से यह घोषणा करते हैं कि नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के समस्त विधिसम्मत सत्ताधिकार को रद्द कर दिया जाएगा।

अनुच्छेद ६ : उन सभी जगहों पर जहां जन-मुक्ति सेना पहुंच चुकी है और अधिकार कर चुकी है, जनवादी मिलीजुली सरकार कायम हो जाने के बाद जनता का जनवादी विधिसम्मत सत्ताधिकार अविलम्ब स्थापित कर दिया जाएगा और तमाम प्रतिक्रियावादी कानून और फरमान रद्द कर दिए जाएंगे।

धारा चार

अनुच्छेद ७ : दोनों पक्ष निश्चित रूप से यह घोषणा करते हैं कि नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के अधीन जितनी भी सशस्त्र शक्तियां (स्थलसेना, नौ-सेना, वायुसेना, सशस्त्र पुलिस कोर, संचार-पुलिस कोर, स्थानीय सेनाएं, तमाम सैनिक प्रतिष्ठान, अकादमियां, कारखाने और पृष्ठभागीय सेवा-संस्थान आदि) हैं, उन सभी को जनवादी उसूलों के आधार पर जन-मुक्ति सेना के रूप में पुनर्गठित कर लिया जाएगा। अन्दरूनी शान्ति-समझौते पर हस्ताक्षर होते ही पुनर्गठन के इस काम का भार सम्भालने के लिए एक राष्ट्रीय पुनर्गठन समिति तुरन्त स्थापित कर दी जाएगी। पुनर्गठन समिति के सात या नौ सदस्य होंगे, जिनमें चार या पांच सदस्यों की नियुक्ति जनता के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन द्वारा और तीन या चार सदस्यों की नियुक्ति नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार द्वारा की जाएगी; जनता के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन द्वारा नियुक्त किए गए सदस्यों में से एक सदस्य समिति का अध्यक्ष तथा नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किए गए सदस्यों में से एक सदस्य उसका उपाध्यक्ष होगा। जिन जगहों पर जन-मुक्ति सेना पहुंच चुकी है और अधिकार कर चुकी है, वहां जरूरत के

मुताबिक, पुनर्गठन समिति की क्षेत्रीय उप-समितियां कायम की जा सकती हैं। उन उप-समितियों में दोनों पक्षों के सदस्यों की संख्या का अनुपात और उनके अध्यक्ष-पद और उपाध्यक्ष-पद का बंटवारा राष्ट्रीय पुनर्गठन समिति जैसा ही होगा। एक पुनर्गठन समिति नौसेना के लिए कायम होगी और एक वायुसेना के लिए। जिन स्थानों का प्रशासन फिलहाल नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के हाथ में है, उनमें जन-मुक्ति सेना के प्रवेश करने और उनको अपने अधिकार में लेने से सम्बद्ध सारी बातों का फैसला चीनी जनता के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन की ओर से जारी किए गए आदेशों से होगा। नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार की सशस्त्र सेनाओं को जन-मुक्ति सेना के प्रवेश का प्रतिरोध करने की हर्गिज इजाजत नहीं होगी।

अनुच्छेद ८ : दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हैं कि हर क्षेत्र में पुनर्गठन योजना को दो चरणों में लागू किया जाएगा :

मद्दा १ : पहला चरण – एकत्रीकरण और नए सिरे से जमातबन्दी।

पाइन्ट १ : नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के अधीन सभी सशस्त्र सेनाओं (स्थलसेना, नौसेना, वायुसेना, सशस्त्र पुलिस कोर, संचार-पुलिस कोर और स्थानीय सेनाओं आदि) को एकत्रित और नए सिरे से जमात-बन्द किया जाएगा। नए सिरे से की जाने वाली जमातबन्दी का उसूल यह होगा : पुनर्गठन समिति, वास्तविक स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर, उन क्षेत्रों की तमाम सशस्त्र सेनाओं को, जहां जन-मुक्ति सेना प्रवेश कर चुकी है और अपना अधिकार कर चुकी है, यह आदेश देगी कि वे इलाके-वार और मंजिलवार हटते हुए अपने मूल नामों, अपनी मूल सैन्य-रचना और अपनी मूल संख्या के अनुसार एकत्रीकरण और जमातबन्दी के लिए निर्दिष्ट स्थानों पर पहुंच जाएं।

पाइन्ट २ : जन-मुक्ति सेना के पहुंच जाने और अधिकार कर लेने के पहले, नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के अधीन सारी सशस्त्र सेनाएं अपने पड़ाव के ठिकानों – छोटे-बड़े नगरों, महत्वपूर्ण संचार-मार्गों और नदियों, समुद्री बन्दरगाहों और देहातों – की स्थानीय व्यवस्था को बनाए

रखने और वहां पर तोड़फोड़ की कोई कार्यवाही न होने देने के लिए जिम्मेदार रहेंगी।

पाइन्ट ३ : उपर्युक्त स्थानों पर जन-मुक्ति सेना के पहुंचने और अधिकार करते ही नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के अधीन सशस्त्र सेनाएं पुनर्गठन समिति और उसकी उप-समितियों के आदेशों के अनुसार इन स्थानों को शान्तिपूर्वक सौंपकर निर्दिष्ट स्थानों की ओर चल पड़ेंगी। निर्दिष्ट स्थानों की ओर बढ़ते समय और वहां पहुंच लेने पर नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार की सशस्त्र सेनाओं को अनुशासन का सख्ती से पालन करना होगा और स्थानीय व्यवस्था में कोई विघ्न डालने की इजाजत नहीं दी जाएगी।

पाइन्ट ४ : पुनर्गठन समिति और उसकी उप-समितियों के आदेशों पर नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के अधीन सशस्त्र सेनाएं जब अपने मूल ठिकानों से हटेंगी तो उन ठिकानों की स्थानीय पुलिस या शान्ति-रक्षा कोर के दस्ते वहां से नहीं हटेंगे, बल्कि वे स्थानीय शान्ति-व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिम्मेदार होंगे और उन्हें जन-मुक्ति सेना के निर्देशों और आदेशों का पालन करना होगा।

पाइन्ट ५ : नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार की जो सशस्त्र सेनाएं एक जगह से दूसरी जगह हटाई या एकत्रित की जा रही हैं, उनके लिए अनाज, चारा, बिस्तर, कपड़े-लत्ते तथा अन्य फौजी जरूरतों की सप्लाई मुहय्या करने की जिम्मेदारी पुनर्गठन समिति, उसकी उप-समितियों और स्थानीय सरकारों की रहेगी।

पाइन्ट ६ : विभिन्न क्षेत्रों की ठोस स्थितियों के अनुसार, पुनर्गठन समिति और उसकी उप-समितियां नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के अधिकारियों को आदेश देंगी कि वे अपने सारे के सारे सैनिक प्रतिष्ठान (राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मन्त्रालय से लेकर पृष्ठभागीय सेवाओं के संयुक्त सदर मुकाम तक के अधीन सभी प्रतिष्ठान, विद्यालय, कारखाने, भण्डार-घर आदि), अपने सारे के सारे सैनिक संस्थान (नौसैनिक बन्दरगाह, किले, वायुसैनिक अड्डे आदि) और अपनी सारी की सारी फौजी सामग्री जन-मुक्ति सेना को और विभिन्न स्थानों के उसके सैनिक नियंत्रण कमीशनों को इलाकेवार और मंजिलवार सौंप दें।

मुद्दा २ : दूसरा चरण – इलाकेवार पुनर्गठन।

पाइन्ट १ : नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के अधीन स्थलसेनाएं (यानी पैदल सेनाएं, घुड़सवार सेनाएं, विशेष शस्त्रास्त्रों वाले सैन्य-दल, सशस्त्र पुलिस कोर, सचार-पुलिस कोर और स्थानीय सेनाएं) जब निर्दिष्ट स्थानों पर इलाकेवार और मंजिलवार पहुंच जाएं और उनके एकत्रीकरण और जमातबन्दी का कार्य पूरा हो चुके, तो विविध क्षेत्रों की ठोस स्थितियों के अनुसार पुनर्गठन समिति उनके इलाकेवार पुनर्गठन की योजनाएं बनाएगी और निर्दिष्ट समय पर उन योजनाओं को लागू करेगी। पुनर्गठन का उसूल यह होगा कि एकत्रीकरण और जमातबन्दी के बाद उपर्युक्त सभी स्थलसेनाएं जन-मुक्ति सेना की जनवादी व्यवस्था और नियमित ढांचे के अनुरूप उसकी नियमित इकाइयों के रूप में पुनर्गठित की जाएंगी। जांच के जरिए जिन सिपाहियों को आयु के कारण अथवा निर्बल या अपाहिज होने के कारण रिटायर होने योग्य साबित किया जाएगा और जो खुद रिटायर होना चाहेंगे उनके मामलों को और साथ ही उन अफसरों और नान-कमीशन्ड अफसरों के मामलों को, जो खुद रिटायर होना चाहेंगे या कोई और धन्धा अपनाना चाहेंगे, निपटाने की जिम्मेदारी पुनर्गठन समिति और उसकी उप-समितियों की होगी। समितियां उनके घर लौटने की सुविधाएं और आजीविका के साधन मुहय्या करेंगी, ताकि हर किसी के जीवन-यापन का मुनासिब इन्तजाम हो जाए और गुजारे के साधनों के अभाव के कारण कोई भी व्यक्ति किसी तरह के बुरे काम न करे।

पाइन्ट २ : नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के अधीन नौसेना और वायुसेना जब निर्दिष्ट स्थानों पर इलाकेवार और मंजिलवार पहुंच जाएंगी और उनके एकत्रीकरण और जमातबन्दी का कार्य पूरा हो चुकेगा, तो नौसेना और वायुसेना की पुनर्गठन समितियां जन-मुक्ति सेना की जनवादी व्यवस्था के अनुरूप उनका पुनर्गठन उनके मूल नामों, मूल सैन्य-रचना और मूल संख्या के अनुसार करेंगी।

पाइन्ट ३ : नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के अधीन तमाम सशस्त्र सेनाओं को जन-मुक्ति सेना में पुनर्गठित हो जाने के बाद अनिवार्य रूप से जन-मुक्ति सेना के अनुशासन के तीन मुख्य नियमों और ध्यान देने योग्य आठ बातों का सख्ती के साथ पालन करना होगा और जन-मुक्ति सेना की फौजी और राजनीतिक व्यवस्था का वफादारी के साथ पालन करना होगा तथा उनका उल्लंघन करने की इजाजत कतई नहीं दी जाएगी।

पाइन्ट ४ : पुनर्गठन के बाद सेवा-निवृत्त अफसरों और सिपाहियों को स्थानीय जन-सरकारों का आदर करना होगा और जन-सरकार के कानूनों और फरमानों का पालन करना होगा। स्थानीय जन-सरकारें और विविध स्थानों की जनता इन रिटायर अफसरों और सिपाहियों का लिहाज करेंगी और इनके खिलाफ कोई भेदभाव नहीं बरतेगी।

अनुच्छेद ९ : अन्दरूनी शान्ति-समझौते पर हस्ताक्षर होते ही नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के अधीन तमाम सशस्त्र शक्तियों को सिपाहियों या दूसरे कर्मचारियों की नामबन्दी या रंगरूट-भरती बन्द कर देनी होगी। वे अपने तमाम शस्त्रास्त्रों, गोला-बारूद, साज-सामान, सैनिक प्रतिष्ठानों व संस्थानों और फौजी सामग्री की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार होंगी और इनमें से किसी भी पदार्थ की बरबादी, चोरी-छिपाव, हेराफेरी या बिक्री की इजाजत हरगिज नहीं दी जाएगी।

अनुच्छेद १० : अन्दरूनी शान्ति-समझौते पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद अगर नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार की सशस्त्र शक्तियों में से किसी ने भी पुनर्गठन योजना को लागू करने से इनकार किया, तो नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार को पुनर्गठन योजना जोर-जबरदस्ती से लागू करने में जन-मुक्ति सेना की सहायता करनी होगी, ताकि पुनर्गठन योजना को मुकम्मिल तौर पर कार्यान्वित करने की गारन्टी की जा सके।

धारा पांच

अनुच्छेद ११ : दोनों पक्ष इस बात पर अपनी सहमति जाहिर करते हैं कि नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के शासन-काल में राजनीतिक विशेषाधिकार

और प्रभुत्वशाली घराने की शक्ति के जरिए हासिल किए गए या हथियाए गए तमाम नौकरशाही-पूंजीवादी कारोबारों (बैंकों, कारखानों, खानों, जलयानों, कम्पनियों और दुकानों समेत) और तमाम जायदादों को जब्त करके राज्य की सम्पत्ति बना दिया जाएगा।

अनुच्छेद १२ : जिन इलाकों में जन-मुक्ति सेना अभी नहीं पहुंची और जिन्हें अपने अधिकार में अभी नहीं लिया गया, वहां अनुच्छेद ११ में उल्लिखित नौकरशाही-पूंजीवादी कारोबारों और जायदादों की देखरेख की जिम्मेदारी नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार की होगी, ताकि किसी तरह की चोरी या छिपाव, हानि या बरबादी, हेराफेरी या गुप्त बिक्री न होने पाए। जो परिसम्पत्ति पहले ही स्थानान्तरित की जा चुकी है, वह जहां कहीं भी मिलेगी उसे स्थिरता प्रदान कर दी जाएगी और उसके बाद उसे कहीं और स्थानान्तरित करने, विदेश भेजने या नुकसान पहुंचाने की अनुमति हरगिज नहीं दी जाएगी। विदेश में स्थित नौकरशाही-पूंजीवादी कारोबारों और जायदादों को राजकीय सम्पत्ति घोषित कर दिया जाएगा।

अनुच्छेद १३ : जिन इलाकों में जन-मुक्ति सेना का प्रवेश और अधिकार हो चुका हो, वहां के नौकरशाही-पूंजीवादी कारोबारों और जायदादों को, जिनका उल्लेख अनुच्छेद ११ में किया गया है, स्थानीय सैनिक नियंत्रण कमीशन या जनवादी मिलीजुली सरकार द्वारा प्राधिकृत प्रतिष्ठान जब्त कर लेंगे। अगर उनमें कोई निजी शेयर होंगे, तो उनकी जांच की जाएगी; जांच में अगर यह पाया गया कि वे गुप्त रूप से हस्तान्तरित की गई नौकरशाही-पूंजी में शामिल नहीं हैं, बल्कि सचमुच निजी शेयर हैं, तो उन्हें निजी शेयर के तौर पर मान्यता दे दी जाएगी और उनके मालिकों को शेयर-होल्डर बने रहने या अपने शेयर निकाल ले जाने की इजाजत दे दी जाएगी।

अनुच्छेद १४ : ऐसे नौकरशाही-पूंजीवादी कारोबारों को, जो नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के शासन-काल के पहले से चले आ रहे हैं या जो उसके शासन के समय से चले आ रहे हैं मगर न तो बड़े हैं और न ही राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और जनता की आजीविका के लिए हानिकर हैं, जब्त नहीं किया जाएगा। लेकिन इन कारोबारों और जायदादों में से भी जिन कारोबारों या जायदादों के मालिक

दंडनीय अपराधी हैं, जैसे जनता से इत्तला मिलने पर साबित किए जा चुके जघन्य अपराधों के दोषी प्रतिक्रियावादी हैं, उन्हें जब्त कर लिया जाएगा।

अनुच्छेद १५ : जिन नगरों में जन-मुक्ति सेना का प्रवेश और अधिकार अभी नहीं हुआ, वहां की जनता की जनवादी शक्तियों और उनकी गतिविधियों के संरक्षण की जिम्मेदारी नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के अधीन प्रान्तीय, म्युनिसिपल व काउन्टी सरकारों पर होगी और इन सरकारों को उन शक्तियों का और उनकी गतिविधियों का दमन करने या उन्हें चोट पहुंचाने की हरगिज इजाजत नहीं दी जाएगी।

धारा छै

अनुच्छेद १६ : दोनों पक्ष निश्चित रूप से यह घोषणा करते हैं कि चीन के देहाती इलाकों में भूमि के स्वामित्व की जो सामन्ती व्यवस्था मौजूद है, उसमें कदम-ब-कदम सुधार किया जाएगा। जन-मुक्ति सेना के प्रवेश के बाद लगान और सूद में कटौती आम तौर पर पहले लागू की जाएगी और जमीन का बंटवारा बाद में होगा।

अनुच्छेद १७ : जिन इलाकों में जन-मुक्ति सेना का प्रवेश और अधिकार अभी नहीं हुआ है, वहां किसान समुदाय के संगठनों और उनकी गतिविधियों के संरक्षण की जिम्मेदारी नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के अधीन स्थानीय सरकारों की होगी और इन सरकारों को उन संगठनों और उनकी गतिविधियों का दमन करने या उन्हें चोट पहुंचाने की हरगिज इजाजत नहीं दी जाएगी।

धारा सात

अनुच्छेद १८ : दोनों पक्ष सहमत हैं कि नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के शासन-काल में विदेशी राज्यों के साथ हुई तमाम सन्धियों और समझौतों को और तमाम दूसरे खुले व गुप्त राजनयिक दस्तावेजों और कागजातों को नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार द्वारा जनवादी मिलीजुली सरकार को सौंप दिया जाएगा और जनवादी मिलीजुली सरकार उन सबकी जांच करेगी। चीनी जनता और

उसके राज्य का अहित करने वाली और खासकर राज्य के अधिकारों को बेच देने वाली तमाम सन्धियों और समझौतों को, जैसा भी मामला दरपेश हो, या तो रद्द कर दिया जाएगा अथवा संशोधित किया जाएगा या उनकी जगह नई सन्धियों और समझौतों को सम्पन्न कर लिया जाएगा।

धारा आठ

अनुच्छेद १९ : दोनों पक्ष सहमत हैं कि अन्दरूनी शान्ति-समझौते पर हस्ताक्षर हो चुकने के बाद और जनवादी मिलीजुली सरकार के बनने के पहले, नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार और उसके य्वान, मंत्रालय, कमीशन तथा अन्य संस्थान अपना काम अस्थाई रूप से जारी रखेंगे, मगर राजकाज में उन्हें चीनी जनता के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन से सलाह लेनी होगी और जन-मुक्ति सेना द्वारा विभिन्न इलाकों का कब्जा लेने और नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार द्वारा हस्तान्तरण करने आदि से सम्बद्ध मामलों में जन-मुक्ति सेना की सहायता करनी होगी। जनवादी मिलीजुली सरकार बन जाने पर नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार फौरन ही जनवादी मिलीजुली सरकार को सत्ता सौंप देगी और खुद अपनी समाप्ति की घोषणा कर देगी।

अनुच्छेद २० : नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार तथा विभिन्न स्तरों पर उसकी स्थानीय सरकारों और उनके मातहत तमाम अंगों द्वारा सत्ता सौंप दिए जाने पर जन-मुक्ति सेना, स्थानीय जन-सरकारें और चीन की जनवादी मिलीजुली सरकार, पूर्वोक्त सरकारों आदि के कर्मचारियों में से उन तमाम लोगों को, जो देशभक्त और उपयोगी हों, भर्ती कर लेने, उन्हें जनवादी शिक्षा देने और उपयुक्त पदों पर नियुक्त करने की ओर ध्यान देंगी, ताकि वे बेरोजगार और बेघर न हो जाएं।

अनुच्छेद २१ : जन-मुक्ति सेना का प्रवेश और अधिकार हो लेने तक नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार और प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों और काउन्टियों में उसकी अधीनस्थ स्थानीय सरकारें, अपने-अपने इलाकों में शान्ति और व्यवस्था बनाए रखने तथा सभी सरकारी संस्थाओं और राजकीय स्वामित्व वाले तमाम कारोबारों (बैंकों, कारखानों, खानों, रेलवे-लाइनों, डाकघरों, तारघरों, हवाईजहाजों, जलयानों, कम्पनियों, मालखानों और तमाम संचार-सुविधाओं समेत) तथा अन्य

चल-अचल राजकीय सम्पत्तियों की देखभाल व रक्षा करने के लिए जिम्मेदार रहेंगी और किसी भी तरह की बरबादी, हानि, स्थानान्तरण, चोरी-छिपाव या बिक्री की हरगिज इजाजत नहीं होगी। स्थानान्तरित की गई या छिपाई गई किताबें, कागजात, पुरातन वस्तुएं, मूल्यवान पदार्थ, सोना-चांदी, विदेशी मुद्राएं और तमाम सम्पत्तियां व परिसम्पत्तियां जहां कहीं भी मिलेंगी, उन्हें वहीं तत्काल स्थिरता प्रदान कर दी जाएगी और जन-मुक्ति सेना द्वारा उन्हें अपने अधिकार में ले लिए जाने तक वे उसी स्थिति में बनी रहेंगी। विदेश भेजी गई या शुरू से ही विदेश में रखी गई सम्पत्तियों को फिर से हासिल करने या हिफाजत से रखने की जिम्मेदारी नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार की होगी और उसे इन वस्तुओं को सौंप देने के लिए भी तैयार रहना होगा।

अनुच्छेद २२ : जिन इलाकों में जन-मुक्ति सेना का प्रवेश और अधिकार हो चुका है, वहां के सारे सत्ताधिकारी तथा राजकीय सम्पत्तियों व परिसम्पत्तियों को स्थानीय सैनिक नियंत्रण कमीशन, स्थानीय जन-सरकारों या मिलीजुली सरकार के अधिकृत संस्थानों द्वारा अपने हाथ में ले लिया जाएगा।

अनुच्छेद २३ : प्रस्तुत शान्ति-समझौते पर नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के प्रतिनिधिमण्डल के हस्ताक्षर हो जाने और यह समझौता उस सरकार की ओर से लागू कर दिए जाने के बाद, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का प्रतिनिधिमण्डल नए राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की तैयारी कमेटी के सामने यह प्रस्ताव रखने की जिम्मेदारी लेना चाहेगा कि नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार को इस बात की अनुमति दी जाए कि वह एक निश्चित तादाद में देशभक्त व्यक्तियों को प्रतिनिधियों की हैसियत से इस सम्मेलन में भेज सके ; तैयारी कमेटी की स्वीकृति मिल जाने पर नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के ये प्रतिनिधि नए राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन में भाग ले सकेंगे।

अनुच्छेद २४ : नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार द्वारा नए राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन में अपने प्रतिनिधि भेज दिए जाने के बाद, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी उक्त सम्मेलन के सामने यह प्रस्ताव रखने की जिम्मेदारी लेना चाहेगी कि सहयोग की खातिर नानकिङ स्थित राष्ट्रीय सरकार के देशभक्त व्यक्ति एक निश्चित तादाद में जनवादी मिलीजुली सरकार में शामिल कर लिए जाएं।

दोनों पक्षों के प्रतिनिधिमण्डल ऐलान करते हैं : हम इस समझौते पर हस्ताक्षर करने की जिम्मेदारी इसलिए लेते हैं कि चीनी जनता मुक्त हो जाए और चीनी राष्ट्र स्वाधीन और आजाद हो जाए तथा युद्ध शीघ्र ही समाप्त हो जाए और शान्ति फिर से स्थापित हो जाए, ताकि राष्ट्रव्यापी पैमाने पर उत्पादन और निर्माण के महान कार्यों का प्रारम्भ हो सके और हमारा देश व हमारी जनता कदम-ब-कदम समृद्धि, शक्तिशालिता और सुख-चैन की स्थिति प्राप्त कर सकें। आशा है, इस समझौते को पूर्ण रूप से कार्यान्वित करने के लिए समूचे देश की जनता एकदिल होकर संघर्ष करेगी। हस्ताक्षर होते ही यह समझौता लागू हो जाएगा।

चीनी जन-मुक्ति सेना की घोषणा

२५ अप्रैल १९४९

क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने शान्ति की शर्तें नामंजूर कर दी हैं और वे राष्ट्र और जनता के विरुद्ध सर्वाग्रमाना युद्ध जारी रखने की हठधर्मी पर अड़े हुए हैं। समूचे देश की जनता को आशा है कि जन-मुक्ति सेना तेजी के साथ क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों का सफाया कर डालेगी। हमने जन-मुक्ति सेना को आदेश दिया है कि वह दिलेरी के साथ आगे बढ़ती जाए, प्रतिरोध की जुर्रत करने वाली तमाम प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सेनाओं का सफाया कर डाले, ऐसे तमाम युद्ध-अपराधियों को, जिनके सुधार की कोई गुंजाइश नहीं है, गिरफ्तार कर ले, समूचे देश की जनता को मुक्त करा ले, चीन की प्रादेशिक भूमि और प्रभुसत्ता की स्वाधीनता और अखण्डता की हिफाजत करे और देश के सच्चे एकीकरण की जन-आकांक्षा को पूरा करे। हमें दिल से उम्मीद है कि जन-मुक्ति सेना जहां कहीं भी जाएगी, सभी व्यवसायों की जनता उसका हाथ बंटाएगी। इस घोषणा के जरिए हम यह निम्न-लिखित आठसूत्री प्रतिज्ञा कर रहे हैं जिसका हम समूची जनता के साथ मिलकर पालन करेंगे।

१. सारी जनता के जान-माल की रक्षा करो। आशा है कि सभी व्यवसायों के लोग, चाहे वे किसी भी वर्ग, मत या पेशे के क्यों न हों,

व्यवस्था बनाए रखेंगे और जन-मुक्ति सेना के प्रति सहयोगपूर्ण रवैया अपनाएंगे। जन-मुक्ति सेना भी सभी व्यवसायों के लोगों के प्रति सहयोगपूर्ण रवैया अपनाएगी। उन प्रतिक्रान्तिकारियों और विध्वंस-कारियों को जरूर कड़ी सजा दी जाएगी, जो मौके का फायदा उठाकर गड़बड़ी फैलाते हैं, लूटपाट मचाते हैं या तोड़फोड़ करते हैं।

२. राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के उद्योग, वाणिज्य, कृषि और पशुपालन सम्बन्धी कारोबारों की रक्षा करो। निजी स्वामित्व वाले सभी कार-खानों, दुकानों, बैंकों, माल-गोदामों, जलयानों, जहाज-घाटों, कृषि-फार्मों, पशु-फार्मों और अन्य कारोबारों को निरपवाद रूप से हर प्रकार के बेजा हस्तक्षेप से बचाया जाएगा। आशा है कि सभी व्यवसायों के मजदूर और कर्मचारी सदा की ही तरह उत्पादन जारी रखेंगे और सभी दुकानें सदा की ही तरह खुली रहेंगी।

३. नौकरशाही-पूंजी को जब्त करो। प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार और बड़े-बड़े नौकरशाहों के प्रबन्ध में चलने वाले सभी कार-खानों, दुकानों, बैंकों, माल-गोदामों, जलयानों, जहाज-घाटों, रेलवे, डाक, तार, बिजली-बत्ती, टेलिफोन, जल-कल, कृषि-फार्मों, पशु-फार्मों और अन्य कारोबारों को जन-सरकार अपने हाथ में ले लेगी। इन कारोबारों में जो भी निजी शेयर उद्योग, वाणिज्य, कृषि या पशु-पालन के काम में लगे हुए राष्ट्रीय पूंजीपतियों के हों, उनके स्वामित्व की पुष्टि कर लिए जाने के बाद उन्हें मान्यता दे दी जाएगी। नौकर-शाह-पूंजीपतियों के कारोबारों को जन-सरकार द्वारा अपने हाथ में ले लिए जाने तक इन कारोबारों के सभी कर्मचारियों को अपने-अपने पदों पर हाजिर रहना होगा और तमाम परिसम्पत्ति, मशीनरी, चार्टों, बही-खातों, रिकार्डों आदि की जांच-पड़ताल करने और उनका चार्ज

सम्भालने की तैयारी के रूप में इन्हें सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेनी होगी। इस सिलसिले में उपयोगी सेवा अंजाम देने वालों को इनाम और बाधा डालने वालों व तोड़फोड़ करने वालों को दण्ड दिया जाएगा। जन-सरकार के हाथ में चार्ज आ जाने पर भी जो लोग काम करते रहना चाहेंगे, उन्हें उनकी योग्यता के अनुरूप रोज-गार दिया जाएगा, ताकि वे बेसहारा और बेघर न हो जाएं।

४. सभी सरकारी और निजी विद्यालयों, अस्पतालों, सांस्कृतिक व शैक्षणिक प्रतिष्ठानों, खेलकूद के मैदानों और अन्य तमाम जन-कल्याण प्रतिष्ठानों की रक्षा करो। आशा है कि इन प्रतिष्ठानों के सभी कर्मचारी अपने काम पर हाजिर रहेंगे ; जन-मुक्ति सेना उन्हें सताए जाने से बचाएगी।

५. ऐसे युद्ध-अपराधियों को छोड़कर जिनके सुधार की कोई गुंजाइश नहीं है, और ऐसे प्रतिक्रान्तिकारियों को छोड़कर जो अत्यन्त जघन्य अपराधों के दोषी हैं, क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय, प्रान्तीय, म्युनि-सिपल और काउन्टी सरकारों के किसी भी बड़े या छोटे अधिकारी, "राष्ट्रीय एसेम्बली" के किसी भी प्रतिनिधि, विधान य्वान और नियंत्रण य्वान के किसी भी सदस्य, राजनीतिक सलाहकार परिषदों के किसी भी सदस्य, पुलिस के किसी भी अधिकारी और जिले, कस्बे, श्याङ या पाओ-च्या के किसी भी अफसर को तब तक जन-मुक्ति सेना और जन-सरकार नजरबन्द, गिरफ्तार या अपमानित नहीं करेगी, जब तक कि वह सशस्त्र प्रतिरोध न कर रहा हो या तोड़फोड़ की साजिश में न लगा हुआ हो। इन सभी व्यक्तियों को यह आज्ञा दी जाती है कि चार्ज ले लिए जाने तक वे अपने-अपने काम पर हाजिर रहें, जन-मुक्ति सेना और जन-सरकार के आदेशों का पालन करें

और अपने-अपने दफ्तर की परिसम्पत्तियों और रिकार्डों को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी सम्भाल लें। जन-सरकार इनमें से उन लोगों को नियुक्त होने की इजाजत दे देगी जो किसी तरह के काम में अपने आपको उपयोगी बना सकें और जिन्होंने किसी तरह की कोई संगीन प्रतिक्रियावादी कार्यवाही या कोई अन्य घोर दुष्कर्म न किया हो। इनमें से जो लोग मौके का फायदा उठाकर, तोड़फोड़, चोरी या गबन के कामों में प्रवृत्त होंगे या कोई सार्वजनिक निधि, परिसम्पत्ति या रिकार्ड लेकर फरार हो जाएंगे अथवा हिसाब-किताब देने से इनकार करेंगे, उन्हें सजा दी जाएगी।

६. नगरों और देहातों, दोनों में शान्ति और सुरक्षा की गारन्टी करने के लिए और सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए, तमाम आवारा फिरने वाले व सैन्य-विघटन होने की वजह से बिखरे हुए सिपाहियों को चाहिए कि वे अपने-अपने इलाके में जन-मुक्ति सेना या जन-सरकार के पास हाजिर होकर अपने आपको उसके हवाले कर दें। अपनी मर्जी से ऐसा करने और अपने सभी हथियार सौंप देने वालों के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की जाएगी। हाजिर होने से इनकार करने वालों और अपने हथियार छिपा रखने वालों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा और उनकी जांच-पड़ताल होगी। आवारा फिरने वाले व सैन्य-विघटन होने की वजह से बिखरे हुए सिपाहियों को शरण देने और अधिकारियों के पास ऐसे लोगों की सूचना न देने वाले व्यक्तियों को यथोचित दण्ड दिया जाएगा।

७. देहातों में भू-स्वामित्व की सामन्ती प्रथा नाजायज है और उसे उखाड़ फेंका जाएगा। फिर भी, इस प्रथा को मुनासिब तैयारियों के बाद और कदम-ब-कदम उखाड़ फेंका जाएगा। आम तौर पर

पहले लगान और सूद को कम किया जाएगा और बाद में जमीन का बंटवारा होगा; किसी स्थान पर जन-मुक्ति सेना के पहुंच जाने और काफी दिन वहां काम कर चुकने के बाद ही भूमि-समस्या को संजीदगी से हल करने की बात करना सम्भव होगा। आम किसानों को चाहिए कि वे संगठित हो जाएं और विविध प्रकार के प्रारम्भिक सुधारों को लागू करने में जन-मुक्ति सेना की मदद करें। अपनी खेती-बाड़ी में भी उन्हें कड़ी मेहनत करनी चाहिए, ताकि उपज का मौजूदा स्तर गिरने न पाए, और इसके बाद उन्हें चाहिए कि वे उपज के मौजूदा स्तर को कदम-ब-कदम ऊंचा उठाकर अपना रहन-सहन का स्तर भी सुधार लें और नगरों की जनता के लिए तिजारती अनाज भी सप्लाई करें। शहरी जमीन और इमारतों की समस्या देहाती जमीन की समस्या की ही तरह नहीं सुलझाई जाएगी।

८. विदेशी नागरिकों के जान-माल की हिफाजत करो। आशा है कि सभी विदेशी नागरिक अपने काम में सदा की तरह लगे रहेंगे और व्यवस्था का पालन करेंगे। सभी विदेशी नागरिकों को जन-मुक्ति सेना और जन-सरकार के आदेशों और फरमानों का पालन करना होगा तथा अपने आपको जासूसी के कामों से और चीन की राष्ट्रीय स्वाधीनता व जनता की मुक्ति के कार्य का विरोध करने वाली कार्यवाहियों से दूर रखना होगा; साथ ही वे चीन के युद्ध-अपराधियों, प्रतिक्रान्तिकारियों और कानून भंग करने वाले अन्य लोगों को भी शरण न दें। अन्यथा, जन-मुक्ति सेना और जन-सरकार उनके खिलाफ कानूनी कार्यवाही करेंगी।

जन-मुक्ति सेना सख्त अनुशासन में बंधी है; वह जो कुछ खरीदती है उसकी ठीक-ठीक कीमत अदा करती है और जो कुछ बेचती है उसकी

ठीक-ठीक कीमत लेनी है, तथा उसे जनता से एक सूई या एक टुकड़ा धागा तक लेने की इजाजत नहीं है। आशा है कि समूचे देश की जनता शान्तिपूर्वक जिन्दगी बिताएगी और कामकाज करती रहेगी, और न तो अफ़वाहों पर कान देगी और न ही झूठमूठ के खतरे का ऐलान करेगी। यह घोषणा पूरी संजीदगी और ईमानदारी के साथ जारी की जा रही है।

माओ त्सेतुङ
अध्यक्ष, चीनी जनता का
क्रान्तिकारी फ़ौजी कमीशन

चू तेह
कमाण्डर-इन-चीफ़,
चीनी जन-मुक्ति सेना

बरतानवी युद्धपोतों द्वारा की गई नृशंसतापूर्ण कार्यवाहों के बारे में चीनी जन-मुक्ति सेना के जनरल हेडक्वार्टर के प्रवक्ता का वक्तव्य*

३० अप्रैल १९४९

जंगबाज चर्चिल के बेहूदा वक्तव्य¹ की हम भर्त्सना करते हैं। २६ अप्रैल को ब्रिटिश हाउस आफ़ कामन्स में चर्चिल ने यह मांग की कि बरतानिया सरकार को अपने दो विमानवाहक पोत सुदूरपूर्व में भेज देने चाहिए, जहां वे "बदला लेने वाली कारगर शक्ति" बन जाएं। चर्चिल साहब, किसलिए "बदला लेने" जा रहे हैं आप? बरतानवी युद्धपोतों ने क्वोमिन्ताङ के युद्धपोतों के साथ मिलकर, चीनी जन-मुक्ति सेना के प्रतिरक्षा क्षेत्र में अतिक्रमण किया तथा चीनी जन-मुक्ति सेना पर गोलाबारी की, और इस प्रकार हमारे २५२ वफ़ादार व बहादुर योद्धाओं को हताहत कर डाला। चूंकि

*यह वक्तव्य कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी जन-मुक्ति सेना के जनरल हेडक्वार्टर के प्रवक्ता के लिए लिखा था। इसमें चीनी जनता का गम्भीर दृष्टिबिन्दु प्रस्तुत किया गया है, जो किसी भी किस्म की धमकियों से हर्गिज नहीं डरती और साम्राज्यवादी आक्रमण का दृढ़ता से विरोध करती है; इसमें उन्होंने नए चीन के लिए, जिसकी स्थापना जल्दी ही होने जा रही थी, विदेश नीति भी निश्चित की है।

अंग्रेजों ने चीन के प्रदेश में अनधिकार प्रवेश किया है और इतना बड़ा अपराध किया है, इसलिए चीनी जन-मुक्ति सेना के सामने इस बात का समुचित कारण मौजूद है कि वह इस बात की मांग करे कि बरतानिया सरकार अपनी गलतियों को कबूल कर ले, माफी मांगे और हरजाना दे। क्या तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, बजाय इसके कि चीनी जन-मुक्ति सेना से "बदला लेने" के लिए तुम अपनी फौजें चीन भेजो ? प्रधान मंत्री एटली का वक्तव्य भी गलत है।[1] उन्होंने कहा है कि बरतानिया को चीन की याङत्सी नदी में अपने युद्धपोत भेजने का हक हासिल है। याङत्सी नदी चीन का एक अन्तर्देशीय जलमार्ग है। उसमें अपने युद्धपोत भेजने का हक भला तुम अंग्रेजों को कैसे हासिल हो सकता है ? तुम्हें ऐसा कोई हक हासिल नहीं है। चीनी जनता जरूर अपनी प्रादेशिक भूमि और प्रभुसत्ता की रक्षा करेगी तथा विदेशी सरकारों को अतिक्रमण करने की इजाजत हरगिज नहीं देगी। एटली ने कहा है कि जन-मुक्ति सेना "इस जहाज [एमेथिस्ट] को नानकिङ जाने की इजाजत देने को तैयार है, सिर्फ इस शर्त पर कि वह याङत्सी नदी पार करने में जन-मुक्ति सेना की सहायता करे"। एटली ने झूठ बोला है। जन-मुक्ति सेना ने "एमेथिस्ट" को नानकिङ जाने की इजाजत नहीं दी है। जन-मुक्ति सेना यह नहीं चाहती कि किसी दूसरे मुल्क की सशस्त्र शक्तियां याङत्सी नदी पार करने अथवा कोई और काम करने में उसकी मदद करें। इसके विपरीत, जन-मुक्ति सेना यह मांग करती है कि बरतानिया, अमरीका और फ्रांस अपनी सशस्त्र शक्तियां – याङत्सी नदी और ह्वाङफू नदी तथा चीन के अन्य भागों में स्थित अपने युद्धपोत, फौजी विमान और

मैरीन-सैनिक – चीन के प्रादेशिक अन्तर्देशीय जल-स्रोतों, समुद्रों, भू-भागों और आकाश से तुरन्त हटा लें तथा वे चीनी जनता के दुश्मन को गृहयुद्ध चलाने में मदद करने से बाज आ जाएं। चीनी जनता के क्रान्तिकारी फौजी कमीशन और जन-सरकार ने अभी तक किसी भी विदेशी सरकार के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित नहीं किए। चीनी जनता का क्रान्तिकारी फौजी कमीशन और जन-सरकार चीन स्थित उन विदेशी नागरिकों की रक्षा करेंगे जो कानूनी व्यवसायों में लगे हुए हैं। वे दूसरे देशों के साथ राजनयिक सम्बन्धों की स्थापना करने पर विचार करने को तैयार हैं ; इस प्रकार के सम्बन्ध समानता, आपसी लाभ, एक दूसरे की प्रभुसत्ता और प्रादेशिक अखण्डता के सम्मान, तथा सबसे पहले क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों को कोई सहायता न देने पर आधारित होने चाहिए। वे किसी भी विदेशी सरकार की डराने-धमकाने की कार्यवाही को बरदाश्त नहीं करेंगे। जो कोई विदेशी सरकार हमारे साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करने पर विचार करना चाहती है, उसे क्वोमिन्ताङ की बचीखुची शक्तियों से अपना नाता तोड़ लेना चाहिए और चीन से अपनी सशस्त्र शक्तियों को हटा लेना चाहिए। एटली ने शिकायत की है कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, जिसका दूसरे देशों के साथ कोई राजनयिक सम्बन्ध नहीं है, विदेशी सरकारों के पुराने राजनयिक कर्मचारियों (क्वोमिन्ताङ से मान्यताप्राप्त कान्सुलों) के साथ सम्पर्क कायम करने को तैयार नहीं है। ऐसी शिकायतें बिलकुल बेतुकी हैं। पिछले कुछ वर्षों में अमरीका, बरतानिया, कनाडा इत्यादि देशों की सरकारों ने हमारा विरोध करने में क्वोमिन्ताङ की मदद दी है। क्या एटली साहब यह

भूल गए हैं? क्या एटली साहब यह भी नहीं जानते कि क्वोमिन्ताङ को भारी क्रूजर जहाज "छुङकिङ",[४] जिसे हाल ही में डुबो दिया गया, आखिर किस देश ने दिया?

नोट

[१] २०-२१ अप्रैल १९४९ को, जब जन-मुक्ति सेना याङत्सी नदी पार करने की मुहिम चला रही थी, तो "एमेथिस्ट" और तीन अन्य बरतानवी युद्धपोतों ने इस नदी में, जो चीन का एक अन्तर्देशीय जलमार्ग है, अतिक्रमण कर दिया तथा क्वोमिन्ताङ के युद्धपोतों के साथ मिलकर हमारी सेना पर गोलाबारी की, जिससे हमारे २५२ सैनिक हताहत हो गए। जन-मुक्ति सेना ने इसके जवाब में गोला-बारी की; "एमेथिस्ट" को नाकारा बना दिया गया और चन-च्याङ के नजदीक लंगर डालने के लिए मजबूर कर दिया गया; बाकी तीन बरतानवी युद्धपोत भाग खड़े हुए। बरतानवी अधिकारियों ने निवेदन किया कि "एमेथिस्ट" को छोड़ दिया जाए, तथा उसके कप्तान ने बरतानवी दूरपूर्वी नौबेड़े के कमाण्डर-इन-चीफ ब्रिण्ड के आदेश का पालन करते हुए, हमारी सेना के प्रतिनिधि के साथ कई बार समझौता-वार्ता की। इस समझौता-वार्ता के दौरान बरतानवी पक्ष ने लगातार छल-कपट से काम लिया और अपनी मुजरिमाना हमलावर कार्रवाइयों को कबूल करने से इनकार कर दिया। जब समझौता-वार्ता चल ही रही थी, उस समय ३० जुलाई की रात को "एमेथिस्ट" ने "मुक्त च्याङलिङ" नामक एक यात्री-जहाज के साथ चलते हुए, जो चनच्याङ से नदी के बहाव के साथ-साथ नीचे की तरफ जा रहा था, अपना रास्ता बना लिया तथा वह उक्त जहाज की आड़ लेकर भाग खड़ा हुआ। जब हमारी सेना ने "एमेथिस्ट" को रुकने की चेतावनी दी, तो उसने गोला-बारी शुरू कर दी, लकड़ी के अनेक जहाजों को टक्कर मारकर डुबो दिया, और अन्त में वह याङत्सी नदी से भाग निकला।

[२] २६ अप्रैल १९४९ को ब्रिटिश हाउस आफ कामन्स में भाषण देते हुए ब्रिटिश

अनुदार पार्टी के सरगना चर्चिल ने चीनी जन-मुक्ति सेना द्वारा बरतानिया के युद्धपोतों पर, जिन्होंने हमारी सेना पर गोलाबारी की थी, किए गए जवाबी हमले को "नृशंसतापूर्ण कार्रवाई" कहकर हम पर लांछन लगाया, तथा यह मांग की कि बरतानिया सरकार "चीन के प्रादेशिक जल-क्षेत्र में दो नहीं तो कम से कम एक विमानवाहक पोत अवश्य भेज दे, जो ... बदला लेने वाली कारगर शक्ति से लैस हो"।

[३] २६ अप्रैल १९४९ को बरतानिया के प्रधान मंत्री एटली ने हाउस आफ कामन्स में ऐलान किया : "बरतानवी युद्धपोतों का शान्तिपूर्ण मिशन पर याङत्सी नदी में प्रवेश करना उनके अधिकार-क्षेत्र के अनुरूप है, क्योंकि उन्हें चीन की क्वोमिन्ताङ सरकार से इजाजत मिली हुई है।" साथ ही, जब एटली ने बरतानवी प्रतिनिधि द्वारा चीनी जन-मुक्ति सेना के प्रतिनिधि के साथ की जाने वाली समझौता-वार्ता की चर्चा की, तो उसने झूठ बोला और कहा कि चीनी जन-मुक्ति सेना "इस जहाज [एमेथिस्ट] को नानकिङ जाने की इजाजत देने को तैयार है, सिर्फ इस शर्त पर कि वह याङत्सी नदी पार करने में जन-मुक्ति सेना की सहायता करे"।

[४] यह बरतानिया सरकार ही थी जिसने फरवरी १९४८ में "छुङकिङ" नामक भारी क्रूजर जहाज क्वोमिन्ताङ को दिया, जो क्वोमिन्ताङ सेना का सबसे बड़ा क्रूजर जहाज था। २५ फरवरी १९४९ को इस क्रूजर जहाज के अफसरों व सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया, प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार का साथ छोड़ दिया और वे चीनी जन नौसेना में शामिल हो गए। उसी साल १९ मार्च को अमरीकी साम्राज्यवादियों और क्वोमिन्ताङ डाकुओं ने अनेक भारी बमवर्षक विमान भेजकर, उत्तर-पूर्वी चीन की ल्याओतुङ खाड़ी में हूलूताओ के निकटवर्ती समुद्र में "छुङकिङ" पर बम बरसाए और उसे डुबो दिया।

नए राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की तैयारी कमेटी में भाषण

१५ जून १६४६

प्रतिनिधि साथियो,

आज हमारे नए राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की तैयारी कमेटी[1] का उद्घाटन-अधिवेशन है। इस कमेटी का कार्य है समस्त आवश्यक तैयारी पूरी करके यथाशीघ्र एक नया राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाना और एक जनवादी मिलीजुली सरकार बनाना, ताकि जल्दी से जल्दी क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों की बचीखुची शक्तियों को नेस्तनाबूद करने व समूचे चीन का एकीकरण करने में तथा राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों और राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के क्षेत्र में व्यवस्थित रूप से और कदम-ब-कदम देशव्यापी निर्माण करने में, समूचे देश की जनता का नेतृत्व किया जा सके। समूचे देश की जनता हमसे यही उम्मीद करती है और हमें ऐसा ही करना चाहिए।

नया राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाने का प्रस्ताव समूचे देश की जनता के सामने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने १ मई १६४८ को रखा था।[2] इस प्रस्ताव को तुरन्त समूचे चीन में जनवादी पार्टियों, जन-संगठनों, सभी व्यवसायों के गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों, देश

की अल्पसंख्यक जातियों और प्रवासी चीनियों का समर्थन प्राप्त हो गया। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, जनवादी पार्टियों, जन-संगठनों, सभी व्यवसायों के गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों, अल्पसंख्यक जातियों और प्रवासी चीनियों, सभी का मत है कि हमें साम्राज्यवाद, सामन्तवाद, नौकरशाही-पूंजीवाद और क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के शासन को उखाड़ फेंकना चाहिए, एक राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाना चाहिए जिसमें सभी जनवादी पार्टियों, जन-संगठनों, सभी व्यवसायों के गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों, अल्पसंख्यक जातियों और प्रवासी चीनियों के प्रतिनिधि भी शामिल हों, चीन लोक गणराज्य की स्थापना की घोषणा करनी चाहिए तथा इस लोक गणराज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक जनवादी मिलीजुली सरकार चुन लेनी चाहिए। केवल इसी तरह हमारी महान मातृभूमि अपने अर्ध-औपनिवेशिक व अर्ध-सामन्ती भाग्य से छुटकारा पा सकती है तथा स्वाधीनता, आजादी, शान्ति, एकीकरण, शक्तिशालिता और समृद्धि का रास्ता अपना सकती है। यह एक मुश्तरका राजनीतिक आधार है। यह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, जनवादी पार्टियों, जन-संगठनों, सभी व्यवसायों के गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों, अल्पसंख्यक जातियों और प्रवासी चीनियों के एकताबद्ध संघर्ष का मुश्तरका राजनीतिक आधार है; यह समूची जनता के एकताबद्ध संघर्ष का मुश्तरका राजनीतिक आधार भी है। यह राजनीतिक आधार इतना मजबूत है कि किसी भी संजीदा जनवादी पार्टी, जन-संगठन अथवा गण्यमान्य जनवादी व्यक्ति ने कोई मतभेद जाहिर नहीं किया, तथा इन सभी का यह मत है कि चीन की तमाम समस्याओं को हल करने के लिए केवल यही रास्ता सही दिशा में ले जाता है।

समूचे देश की जनता ने अपनी जन-मुक्ति सेना का समर्थन करके युद्ध में विजय प्राप्त कर ली है। महान जन-मुक्ति युद्ध, जुलाई १९४६ से शुरू होकर आज तक, तीन साल से चल रहा है। यह युद्ध क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने विदेशी साम्राज्यवादियों की सहायता से छेड़ा था। क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने विश्वासघात के साथ जनवरी १९४६ के युद्ध-विराम समझौते और राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावों को फाड़ डाला और जनता के खिलाफ यह गृहयुद्ध छेड़ दिया। लेकिन तीन वर्ष के छोटे से अरसे में वीर जन-मुक्ति सेना ने उन्हें पछाड़ दिया है। कुछ समय पहले, क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के शान्ति षड्यंत्र की कलई खुल जाने के बाद, जन-मुक्ति सेना ने बड़ी बहादुरी के साथ आगे बढ़कर याङत्सी नदी पार कर ली। क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों की राजधानी नानकिङ अब हमारे कब्जे में है। शांघाई, हाङचओ, नानछाङ, ऊहान और शीआन मुक्त हो चुके हैं। इस समय चीनी जन-मुक्ति सेना की रणांगन-सेनाएं दक्षिणी व उत्तर-पश्चिमी प्रान्तों के अन्दर एक ऐसा महान अभियान कर रही हैं जो चीन के इतिहास में अभूतपूर्व है। तीन वर्ष के अन्दर जन-मुक्ति सेना ने प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ फौजों में से कुल ५५,९०,००० सैनिकों का सफाया कर दिया है। इस समय क्वोमिन्ताङ की सैन्य-शक्ति के बचेखुचे अंशों की कुल तादाद केवल लगभग १५,००,००० रह गई है, जिसमें नियमित और अनियमित सेना के तथा पृष्ठभागीय फौजी संस्थानों व विद्यालयों के सैनिक भी शामिल हैं। दुश्मन के इन बचेखुचे अंशों का सफाया करने में अब भी कुछ समय अवश्य लगेगा, लेकिन ज्यादा समय नहीं लगेगा।

यह समूचे चीन की जनता की विजय है, तथा साथ ही समूची दुनिया की जनता की भी विजय है। साम्राज्यवादियों और विभिन्न देशों के प्रतिक्रियावादियों को छोड़कर समूची दुनिया चीनी जनता की इस महान विजय से उल्लसित और प्रेरित हुई है। चीनी जनता द्वारा अपने दुश्मनों के खिलाफ चलाए जाने वाले संघर्ष और दुनिया की जनता द्वारा अपने दुश्मनों के खिलाफ चलाए जाने वाले संघर्षों का महत्व एक ही है। समूचे चीन की जनता और समूची दुनिया की जनता, इन सभी ने इस तथ्य को देख लिया है कि साम्राज्यवादियों ने एक प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध के जरिए चीनी जनता का नृशंसतापूर्वक विरोध करने में चीन के प्रतिक्रियावादियों का निर्देशन किया है तथा चीनी जनता ने एक क्रान्तिकारी युद्ध के जरिए विजयपूर्वक प्रतिक्रियावादियों का तख्ता उलट दिया है।

यहां मेरे विचार में लोगों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना जरूरी है कि साम्राज्यवादी और उनके पालतू कुत्ते – चीनी प्रतिक्रियावादी – चीन की भूमि पर अपनी हार नहीं मानेंगे। वे एक दूसरे से सांठगांठ करके हर सम्भव तरीके से चीनी जनता का विरोध करते रहेंगे। मिसाल के लिए, वे फूट डालने और गड़बड़ी पैदा करने के लिए अपने एजेन्ट चीन में भेजेंगे। यह बिलकुल निश्चित है; वे अपनी इन हरकतों से हरगिज बाज नहीं आएंगे। इसकी दूसरी मिसाल यह है कि चीन के बन्दरगाहों की नाकेबन्दी करने के लिए चीनी प्रतिक्रियावादियों को साम्राज्यवादी उकसाएंगे, यहां तक कि वे अपनी खुद की शक्तियों को भी उसमें झोंक देंगे। वे जब तक सम्भव हो तब तक ऐसा करते रहेंगे। इतना ही नहीं, अगर उनमें और अधिक जोखिम उठाने की ख्वाहिश जागी, तो वे चीन की सीमाओं पर हमला करने और हैरान-परेशान करने के लिए अपने कुछ सैनिक भी भेज देंगे; यह भी असम्भव नहीं है। इन सब बातों को हमें पूरी तरह ध्यान में रखना चाहिए। सिर्फ यह सोचकर कि हमने विजय प्राप्त कर ली है, हमें साम्राज्यवादियों व उनके पालतू कुत्तों द्वारा बदला लेने के लिए रचे जाने वाले उन्मादपूर्ण षड्यन्त्रों के प्रति अपनी सतर्कता में हरगिज ढील नहीं आने देनी चाहिए। जो कोई भी अपनी सतर्कता में ढील आने देगा, वह राजनीतिक दृष्टि से निहत्था हो जाएगा तथा निष्क्रियता की हालत में फंस जाएगा। इन हालात को देखते हुए समूचे देश की जनता को चाहिए कि वह चीनी जनता के खिलाफ साम्राज्यवादियों और उनके पालतू कुत्तों – चीनी प्रतिक्रियावादियों – के सभी षड्यन्त्रों को दृढ़ता से, सर्वांगीण रूप से, समग्र रूप से और सम्पूर्ण रूप से चकनाचूर करने के लिए एकताबद्ध हो जाए। चीन को एक स्वाधीन देश बन जाना चाहिए, चीन को एक मुक्त देश बन जाना चाहिए, चीन के मामलों का निर्णय व संचालन चीनी जनता द्वारा खुद ही किया जाना चाहिए, तथा किसी भी साम्राज्यवादी देश द्वारा किए जाने वाले किसी भी हस्तक्षेप को, चाहे वह कितना ही थोड़ा क्यों न हो, हरगिज बरदाश्त नहीं किया जाएगा।

चीनी क्रान्ति समूचे राष्ट्र के व्यापक जन-समुदाय की क्रान्ति है। साम्राज्यवादियों, सामन्तवादियों और नौकरशाह-पूंजीपतियों, क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों तथा उनके सह-अपराधियों को छोड़कर बाकी सब हमारे मित्र हैं। हमारे पास एक व्यापक और सुदृढ़ क्रान्तिकारी संयुक्त मोर्चा मौजूद है। यह संयुक्त मोर्चा इतना ज्यादा व्यापक है कि इसमें मजदूर वर्ग, किसान वर्ग, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग शामिल हैं। यह संयुक्त मोर्चा इतना

ज्यादा मुदृढ़ है कि इसके अन्दर हर दुश्मन को पछाड़ देने और हर मुश्किल पर काबू पाने का दृढ़ संकल्प और असीमित क्षमता मौजूद है। जिस युग में हम लोग रह रहे हैं वह एक ऐसा युग है जिसमें साम्राज्यवादी व्यवस्था पूर्ण विनाश की ओर बढ़ रही है, साम्राज्यवादी दुर्निवार संकट में फंस गए हैं तथा वे चाहे जैसे भी चीनी जनता का लगातार विरोध करते रहें, चीनी जनता अन्तिम विजय प्राप्त करने का कोई न कोई उपाय अवश्य निकाल लेगी।

साथ ही हम समूची दुनिया के सामने ऐलान करते है कि जिसका हम विरोध करते है वह है केवल साम्राज्यवादी व्यवस्था और चीनी जनता के खिलाफ उसके षड्यंत्र। हम समानता, आपसी लाभ तथा एक दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता व प्रभुसत्ता के प्रति सम्मान के उसूलों के आधार पर किसी भी विदेशी सरकार के साथ अपने राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए बातचीत करने को तैयार है, बशर्ते कि वह चीनी प्रतिक्रियावादियों के साथ नाता तोड़ने के लिए तैयार हो, उनके साथ मिलकर साजिशें रचना अथवा उन्हें मदद देना बन्द कर दे, तथा जनता के चीन के प्रति सच्ची, न कि पाखण्डपूर्ण, मैत्री का रुख अपनाए। चीनी जनता सभी देशों की जनता के साथ मैत्रीपूर्ण सहयोग कायम करना चाहती है तथा अन्तरराष्ट्रीय व्यापार को फिर से शुरू करना और बढ़ाना चाहती है, ताकि उत्पादन का विकास हो और आर्थिक समृद्धि बढ़े।

प्रतिनिधि साथियो, एक नया राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाने और एक जनवादी मिलीजुली सरकार कायम करने के लिए हमारे सामने एक परिपक्व स्थिति मौजूद है। समूचे देश की जनता बड़ी उत्सुकता से यह उम्मीद कर रही है कि हम उक्त सम्मेलन बुलाएंगे और सरकार बनाएंगे। मुझे विश्वास है कि जो काम हमने अब शुरू किया है उससे जनता की यह उम्मीद पूरी हो जाएगी, और ज्यादा समय बीतने से पहले ही पूरी हो जाएगी।

चीन की जनवादी मिलीजुली सरकार की स्थापना हो जाने के बाद उसका मुख्य कार्य यह होगा : (१) प्रतिक्रियावादियों के बचेखुचे अंशों का सफाया करना और उनके द्वारा की जाने वाली गड़बड़ी का दमन करना ; तथा (२) जनता की अर्थव्यवस्था को पुनर्स्थापित और विकसित करने तथा साथ ही जनता की संस्कृति व शिक्षा को पुनर्स्थापित और विकसित करने के लिए हर मुमकिन कोशिश और भरपूर प्रयत्न करना।

चीनी जनता यह देख लेगी कि जहां एक बार चीनी जनता अपने देश के भाग्य की बागडोर अपने हाथ में ले लेगी, तो चीन पूरब में उगने वाले सूरज की तरह अपनी शानदार किरणों से धरती के कोने-कोने में प्रकाश फैला देगा, प्रतिक्रियावादी सरकार द्वारा छोड़े गए कूड़े-कचरे की तेजी से सफाई कर देगा, युद्ध के घाव भर देगा, तथा एक ऐसे नए, शक्तिशाली और समृद्ध लोक गणराज्य का निर्माण करेगा जो अपने नाम को सार्थक कर सकेगा।

चीन लोक गणराज्य अमर रहे !

जनवादी मिलीजुली सरकार अमर रहे !

समूचे देश की जनता की महान एकता अमर रहे !

नोट

[१] इस कमेटी का अधिवेशन पेकिङ में १५ से १९ जून १९४९ तक आयोजित किया गया। इसमें १३४ सदस्य थे जो चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, विभिन्न जनवादी पार्टियों, जन-संगठनों, सभी व्यवसायों के गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों, देश की अल्पसंख्यक जातियों और प्रवासी चीनियों समेत तेईस संगठनों व ग्रुपों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। इस अधिवेशन ने "नए राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की तैयारी कमेटी के संगठनात्मक नियमों" तथा "नए राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन में भाग लेने वाले संगठनों व ग्रुपों तथा उनके प्रतिनिधिमण्डलों के आकार से सम्बन्धित व्यवस्था" को स्वीकार किया, तथा एक स्थाई समिति को चुना, जिसके रहनुमा अध्यक्ष माओ त्सेतुङ थे। इस सम्मेलन को "नया राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन" का नाम दिया गया, ताकि इसे १० जनवरी १९४६ को चुङकिङ में आयोजित "राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन" से अलग समझा जा सके। २१ सितम्बर १९४९ को इस सम्मेलन के प्रथम पूर्ण अधिवेशन में इसका नाम बदलकर "चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन" कर दिया गया।

[२] देखिए इसी ग्रन्थ में "सितम्बर मीटिंग के बारे में – चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का सरकुलर" शीर्षक रचना का नोट ४।

जनता के जनवादी अधिनायकत्व के बारे में

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की अट्ठाईसवीं जयन्ती के उपलक्ष में

३० जून १९४९

१ जुलाई १९४९ का दिन इस बात का संकेत है कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी पूरे अट्ठाईस वर्ष की हो जाएगी। एक आदमी की जिन्दगी की ही तरह एक राजनीतिक पार्टी की जिन्दगी भी बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था से गुजरती है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अब न तो बाल्यावस्था में है और न किशोरावस्था में, वह बालिग बन चुकी है। जब आदमी बूढ़ा हो जाता है तो वह मर जाता है; यह बात पार्टियों पर भी लागू होती है। जब वर्ग खत्म हो जाएंगे, तो इसके परिणामस्वरूप वर्ग-संघर्ष के तमाम हथियारों – राजनीतिक पार्टियों और राज्य-मशीनरी – का काम भी खत्म हो जाएगा, वे आवश्यक नहीं रहेंगे, इसलिए उनका क्रमशः विलय होता जाएगा तथा वे अपना ऐतिहासिक मिशन पूरा कर लेंगे; और मानव-समाज एक और ऊंची मंजिल में प्रवेश करेगा। हमारी पार्टी पूंजीपति वर्ग की राजनीतिक पार्टियों से एकदम भिन्न है। उन्हें वर्गों, राजसत्ता और पार्टियों के विलय की बातें करते हुए डर लगता है। इसके विपरीत हम खुलेआम ऐलान करते हैं कि हम ऐसी परिस्थितियां पैदा करने के

लिए ही कड़ा संघर्ष कर रहे हैं जिनसे इन चीजों का अन्त हो जाएगा। कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व और जनता के अधिनायकत्व वाली राजसत्ता ही ऐसी परिस्थितियां है। जो लोग इस सच्चाई को नहीं मानते, वे कम्युनिस्ट नहीं है। जो नौजवान कामरेड हाल ही में पार्टी में शामिल हुए है और जिन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन अभी नहीं किया है, वे शायद इस सच्चाई को अभी न समझ पाएं। उन्हें इसे जरूर समझ लेना चाहिए – सिर्फ तभी उनके अन्दर सही विश्व-दृष्टिकोण पैदा हो सकेगा। उन्हे समझना होगा कि समस्त मानव जाति को वर्गों, राजसत्ता और पार्टियों के विलय के रास्ते पर अवश्य चलना है ; सवाल केवल समय और परिस्थितियों का है। कम्युनिस्ट सारी दुनिया में पूंजीपति वर्ग से ज्यादा बुद्धिमान होते है, वे वस्तुओं के अस्तित्व और विकास के नियमों को समझते है, द्वन्द्ववाद को समझते है और दूर तक देख सकते है। पूंजीपति वर्ग इस सच्चाई को पसन्द नहीं करता, क्योंकि वह नहीं चाहता कि उसका तख्ता उलट दिया जाए। जिनका तख्ता उलटा जाता है उनके लिए तख्ता उलट दिया जाना एक दुखदायी प्रसंग है और यह एक असहनीय बात है, जैसे क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के लिए, जिनका तख्ता हम आज उलट रहे है, और जापानी साम्राज्यवाद के लिए, जिसका तख्ता हम अन्य देशों की जनता के साथ मिलकर कुछ समय पहले उलट चुके है। लेकिन मजदूर वर्ग, मेहनतकश जनता और कम्युनिस्ट पार्टी के सामने यह सवाल नहीं है कि उनका तख्ता उलट दिया जाएगा, बल्कि यह है कि वे मेहनत से काम करके ऐसी परिस्थितियां पैदा करें जिनमें वर्गों, राजसत्ता व राजनीतिक पार्टियों का स्वाभाविक रूप से विलय हो जाए, ताकि मानव जाति असीम सुख-शान्ति वाले विश्व[१] में प्रवेश

कर सके। यहां हमने मानव जाति के विकास की दूरवर्ती सम्भावनाओं का सरसरी तौर पर जिक्र किया है, ताकि उन समस्याओं की स्पष्ट व्याख्या की जा सके जिनकी चर्चा हम यहां करने जा रहे है।

जैसा कि हर कोई जानता है, हमारी पार्टी को अब अट्ठाईस वर्ष पूरे हो चुके है ; ये वर्ष मुश्किलों के थे, शान्ति के नहीं, क्योंकि हमें घर के दुश्मनों से और बाहर के दुश्मनों से, पार्टी के भीतर और उसकी पांतों के बाहर के दुश्मनों से लड़ना पड़ा है। हम मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के शुक्र-गुजार है जिन्होंने हमें लड़ने के लिए हथियार दिया। यह हथियार मशीनगन नहीं, बल्कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद है।

लेनिन ने १९२० में लिखी अपनी पुस्तक " 'वामपंथी' कम्युनिज्म, एक बचकाना मर्ज" में बताया है कि रूसियों ने क्रान्तिकारी सिद्धान्त की खोज किस तरह की।[२] कई दशाब्दियों की मुश्किलों और परीक्षाओं के बाद ही उन्होंने अन्त में मार्क्सवाद को खोज निकाला। चीन की परिस्थिति में और अक्तूबर क्रान्ति से पहले के रूस की परिस्थिति में बहुत सी बातें समान थी या एक जैसी थी। दोनों ही समान रूप से सामन्ती उत्पीड़न के शिकार थे। दोनों ही देशों में आर्थिक व सांस्कृतिक पिछड़ापन एक सरीखा था। दोनों ही देश पिछड़े हुए थे ; चीन रूस से भी ज्यादा पिछड़ा हुआ था। दोनों ही देशों के प्रगतिशील व्यक्तियों ने राष्ट्र का कायाकल्प करने के उद्देश्य से क्रान्तिकारी सच्चाई की खोज में कठोर संघर्ष किया।

१८४० के अफीम-युद्ध में चीन की हार होने के बाद से चीन के प्रगतिशील व्यक्तियों ने पश्चिमी देशों से सच्चाई प्राप्त करने के लिए अनगिनत मुसीबतें उठाईं। हुङ श्यू-छ्वेन, खाङ यओ-वेइ,[३] येन फू[४] और सुन यात-सेन उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे, जिन्होंने चीनी

कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म होने से पहले पश्चिम से सच्चाई प्राप्त करने की कोशिश की। उस समय प्रगति की आकांक्षा रखने वाले चीनियों ने ऐसी तमाम किताबें पढ़ डालीं जिनमें पश्चिम का नया ज्ञान मौजूद था। विद्यार्थियों की एक बहुत बड़ी संख्या अध्ययन करने के लिए जापान, बरतानिया, अमरीका, फ्रांस और जर्मनी भेजी गई। देश में शाही परीक्षाओं का पुराना तरीका खत्म कर दिया गया और आधुनिक स्कूलों[1] की संख्या बसन्त की वर्षा के बाद फूटने वाले बांस के अंकुरों की तरह बढ़ गई; पश्चिम से सीखने की हर तरह से कोशिश की गई। मैं भी अपनी युवावस्था में ऐसे ही अध्ययन में लग गया था। यह शिक्षा पश्चिम की पूंजीवादी जनवाद की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती थी, जिसमें उस समय के सामाजिक सिद्धान्त और प्राकृतिक विज्ञान शामिल थे, और यह "नया ज्ञान" कहलाता था, तथा यह चीन की सामन्ती संस्कृति, जो "पुराना ज्ञान" कहलाता था, के विपरीत थी। नए ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने वाले लोगों को काफी लम्बे अरसे तक यह विश्वास रहा कि उससे चीन का उद्धार किया जा सकेगा, और उनमें बहुत कम लोग ऐसे थे जिन्हें पुराने ज्ञान-विज्ञान का पक्षपोषण करने वालों की तरह इस सम्बन्ध में जरा भी सन्देह था। उनके विचार में देश को बचाने का एकमात्र उपाय था आधुनिकीकरण करना, और चीन के आधुनिकीकरण का एकमात्र उपाय था विदेशों से सीखना। उस समय दूसरे देशों में सिर्फ पश्चिम के पूंजीवादी देश ही प्रगतिशील थे, क्योंकि इन देशों ने सफलतापूर्वक आधुनिक पूंजीवादी राज्यों का निर्माण किया था। जापानियों ने पश्चिम से सीखने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की थी तथा चीन के लोग भी जापानियों से सीखना चाहते थे। उस समय चीनियों की नजर

में रूस एक पिछड़ा हुआ देश था और बहुत ही कम लोग उससे सीखना चाहते थे। यही वह स्थिति थी जिसमें उन्नीसवीं शताब्दी के पांचवें दशक से बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल तक चीनियों ने दूसरे देशों से सीखना चाहा।

पश्चिम से सीखने के चीनियों के पुरउम्मीद सपनों को साम्राज्यवादी आक्रमण ने धूल में मिला दिया। यह एक अजीब बात थी – गुरु हमेशा अपने शिष्यों पर हमला क्यों करते थे? चीनियों ने पश्चिम से काफी कुछ सीखा, लेकिन उन सब बातों को वे अमल में नहीं ला सके और वे अपने आदर्शों तक कभी न पहुंच सके। उनके द्वारा बार-बार किए गए संघर्षों को – जिनमें १९११ की क्रान्ति जैसा राष्ट्रव्यापी आन्दोलन भी शामिल था – पराजय का मुंह देखना पड़ा। देश की हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती गई, और लोगों के लिए जिन्दा तक रह सकना दुश्वार हो गया। उनके मन में सन्देह पैदा हुआ, बढ़ता गया और मजबूत होता गया। प्रथम विश्वयुद्ध ने सारी दुनिया को हिला दिया। रूसियों ने अक्तूबर क्रान्ति सम्पन्न की और संसार में पहले समाजवादी राज्य की स्थापना की। रूस के महान सर्वहारा वर्ग और मेहनतकश जनता की क्रान्तिकारी शक्ति, जो अभी तक छिपी हुई थी और जिसे दूसरे देशों के लोग नहीं देख पाए थे, लेनिन और स्तालिन के नेतृत्व में यकायक ज्वालामुखी की तरह फूट पड़ी, और चीनी लोग तथा सारी मानव जाति रूसियों की तरफ बिलकुल दूसरी नजरों से देखने लगे। तभी और केवल तभी चीनियों ने विचारधारा व जीवन के क्षेत्र में एक बिलकुल नए युग में प्रवेश किया। उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को, इस विश्वव्यापी सच्चाई को प्राप्त कर लिया जो हर जगह लागू होती है, और इस तरह चीन का रूप बदलने लगा।

रूसियों के जरिए ही चीनियों ने मार्क्सवाद को प्राप्त किया। अक्तूबर क्रान्ति से पहले चीनी जनता सिर्फ लेनिन और स्तालिन को ही नहीं, बल्कि मार्क्स और एंगेल्स को भी नहीं जानती थी। अक्तूबर क्रान्ति की तोपों की गूंज के साथ मार्क्सवाद-लेनिनवाद हमारे देश में पहुंचा। अक्तूबर क्रान्ति ने संसार के अन्य भागों की ही तरह चीन के प्रगतिशील तत्वों को भी अपने देश के भविष्य का अध्ययन करने और अपनी समस्याओं पर नए सिरे से विचार करने के लिए सर्वहारा विश्व-दृष्टिकोण लागू करने में मदद दी। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे – रूसियों के रास्ते पर चलो। १९१९ में चीन में ४ मई आन्दोलन हुआ। १९२१ में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हो गई। अक्तूबर क्रान्ति का होना और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का बनना एक ऐसे समय में हुआ जब सुन यात-सेन निराश हो चुके थे। उन्होंने अक्तूबर क्रान्ति का स्वागत किया, चीनियों के लिए रूसी सहायता का स्वागत किया और अपने साथ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सहयोग का स्वागत किया। तभी सुन यात-सेन की मृत्यु हो गई और ताकत च्यांङ काई-शेक के हाथ में आ गई। बाईस वर्ष के लम्बे अरसे में च्यांङ काई-शेक ने चीन को एक बिलकुल निराशाजनक स्थिति में डाल दिया। इसी दौरान फासिस्ट-विरोधी दूसरे विश्वयुद्ध में, जिसकी मुख्य शक्ति सोवियत संघ था, तीन बड़ी साम्राज्यवादी ताकतें खत्म हो गई और अन्य दो बड़ी साम्राज्यवादी ताकतें कमजोर हो गई। सारी दुनिया में केवल एक बड़े साम्राज्यवादी देश संयुक्त राज्य अमरीका को नुकसान नहीं हुआ। लेकिन अमरीका में भी घरेलू संकट बहुत गम्भीर हो गया था। अमरीका सारी दुनिया को गुलाम बनाना चाहता था; उसने च्यांङ काई-शेक के पास हथियार भेजकर दसियों लाख चीनियों

का कत्लेआम करने में मदद दी। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चीनी जनता ने जापानी साम्राज्यवाद को मार भगाने के बाद तीन वर्षों तक जन-मुक्ति युद्ध लड़ा और बुनियादी महत्व की विजय प्राप्त की।

इस तरह पश्चिम की पूंजीवादी सभ्यता, पूंजीवादी जनवाद और पूंजीवादी लोकतंत्र की योजना, ये सब चीनी जनता की नजरों में दिवालिया साबित हो चुकी हैं। पूंजीवादी जनवाद की जगह मजदूर वर्ग के नेतृत्व में जनता के जनवाद ने ले ली है और पूंजीवादी लोकतंत्र की जगह जनता के लोकतंत्र ने ले ली है। इस तरह जनता के लोकतंत्र के जरिए समाजवाद और कम्युनिज्म हासिल करना, वर्गों को खत्म करना और असीम सुख-शान्ति वाले विश्व में प्रवेश करना सम्भव हो सकेगा। खाङ यओ-वेइ ने "ता थुङ शू" [असीम सुख-शान्ति ग्रन्थ] नामक एक किताब लिखी, मगर असीम सुख-शान्ति तक पहुंचने का रास्ता वह न तो खोज सका और न खोज सकता था। दूसरे देशों में पूंजीवादी लोकतंत्र कायम हुए हैं, मगर चीन में ऐसा लोकतंत्र कायम नहीं हो सकता, क्योंकि चीन साम्राज्यवाद के उत्पीड़न में पिस रहा है। उसके लिए एकमात्र रास्ता है मजदूर वर्ग के नेतृत्व में लोक गणराज्य की स्थापना करना।

दूसरे तमाम तरीके आजमाए जा चुके हैं और सबके सब नाकाम रहे हैं। जो लोग इन तरीकों को अपनाने में मग्न थे, उनमें से कुछ तो शिकस्त खा चुके हैं, कुछ ने अपनी गलती समझ ली है और कुछ अपने विचारों को सुधार रहे हैं। घटनाओं का इतनी तेजी से विकास हो रहा है कि अनेक लोग इस परिवर्तन की आकस्मिकता और नए सिरे से सीखने की आवश्यकता को अनुभव करने लगे हैं। उनकी यह

मनोदशा समझ में आती है और नए सिरे से सीखने के इस नेक इरादे का हम स्वागत करते हैं।

चीनी सर्वहारा वर्ग के हिरावल दस्ते ने अक्तूबर क्रान्ति के बाद मार्क्सवाद-लेनिनवाद सीखा और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की। उसके बाद उसने राजनीतिक संघर्ष शुरू कर दिया और अट्ठाईस वर्ष तक टेढ़े-मेढ़े रास्ते तय करने के बाद अब कहीं बुनियादी महत्व की विजय प्राप्त की है। अट्ठाईस वर्ष के अपने अनुभवों से हमने जो निष्कर्ष निकाले हैं, वे भी वैसे ही हैं जैसे सुन यात-सेन ने "चालीस वर्ष के अनुभवों" के आधार पर अपने वसीयतनामे में निकाले थे ; अर्थात हमें पक्का विश्वास है कि विजय प्राप्त करने के लिए "हमें व्यापक जन-समुदाय को जागृत करना चाहिए और दुनिया के हर ऐसे राष्ट्र के साथ, जो हमारे साथ समानता का बरताव करे, एकता कायम करके मुस्तरका संघर्ष करना चाहिए।" सुन यात-सेन का विश्व-दृष्टिकोण हमसे भिन्न था और समस्याओं को समझने और हल करने में वे हमसे भिन्न वर्ग-दृष्टिबिन्दु को लेकर आगे बढ़े थे ; लेकिन बीसवीं सदी के तीसरे दशक में साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष की समस्या के बारे में जिस निष्कर्ष पर वे पहुंचे, वह बुनियादी तौर पर हमारे निष्कर्ष से मेल खाता है।

सुन यात-सेन की मृत्यु के बाद चौबीस वर्ष बीत चुके हैं और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चीनी क्रान्ति ने सिद्धान्त के क्षेत्र में और अमल में बहुत प्रगति कर ली है तथा चीन के रूप को बुनियादी तौर पर बदल दिया है। अब तक चीनी जनता ने दो मुख्य और बुनियादी अनुभव प्राप्त किए हैं :

(१) देश के भीतर व्यापक जन-समुदाय को जागृत करो। इसका मतलब है मजदूर वर्ग, किसान वर्ग, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को एकताबद्ध करो, मजदूर वर्ग के नेतृत्व में अपने देश में एक संयुक्त मोर्चा कायम करो, तथा इससे आगे बढ़कर मजदूर वर्ग के नेतृत्व में और मजदूर-किसान संश्रय के आधार पर जनता के जनवादी अधिनायकत्व वाला राज्य कायम करो।

(२) देश के बाहर, दुनिया के हर ऐसे राष्ट्र के साथ, जो हमारे साथ समानता का बरताव करे, और सभी देशों की जनता के साथ एकता कायम करके मुस्तरका संघर्ष करो। अर्थात सोवियत संघ के साथ, जनता के लोकशाही वाले देशों के साथ और दूसरे देशों के सर्वहारा वर्ग और व्यापक जनता के साथ एकता कायम करो, तथा एक अन्तरराष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा कायम करो।

"तुम एक तरफ झुकते हो।" यह ठीक है। सुन यात-सेन के चालीस वर्ष के अनुभवों ने और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अट्ठाईस वर्ष के अनुभवों ने हमें यही सिखाया है कि हम एक तरफ झुक जाएं, तथा हमें पक्का विश्वास है कि विजय प्राप्त करने और उसे सुदृढ़ बनाने के लिए हमें एक तरफ झुक जाना होगा। चालीस वर्ष और अट्ठाईस वर्ष के अनुभवों ने हमें सिखा दिया है कि चीनियों को निरपवाद रूप से या तो साम्राज्यवाद की तरफ झुकना होगा या समाजवाद की तरफ। किसी तरफ झुके बिना महज मेंड़ पर खड़े रहने से काम नहीं चलेगा, न कोई तीसरा रास्ता है। हम च्याङ काई-शेक के प्रतिक्रियावादी

गुट का विरोध करते हैं, जो साम्राज्यवाद की तरफ झुका हुआ है, और हम तीसरे रास्ते के भ्रम का भी विरोध करते हैं।

"तुम बहुत ज्यादा परेशान करते हो।" हम चीनी व विदेशी प्रतिक्रियावादियों अर्थात साम्राज्यवादियों व उनके पालतू कुत्तों से निपटने की बात कहते हैं, न कि दूसरों से निपटने की। इस प्रकार के प्रतिक्रियावादियों को परेशान करने अथवा न करने का सवाल ही नहीं उठता। उन्हें परेशान किया जाए अथवा न किया जाए, वे सदा एक जैसे ही रहेंगे, क्योंकि वे प्रतिक्रियावादी हैं। प्रतिक्रियावादियों को सिर्फ तभी अलगाव में डाला जा सकता है, उन्हें सिर्फ तभी हराया जा सकता है या उन पर सिर्फ तभी हावी हुआ जा सकता है, जब प्रतिक्रियावादियों और क्रान्तिकारियों के बीच स्पष्ट भेद किया जाए, प्रतिक्रियावादियों के हथकण्डों व षड्यंत्रों का भण्डाफोड़ किया जाए, क्रान्तिकारी पांतों के बीच जागरूकता और सतर्कता को बढ़ाया जाए, अपने संघर्ष के संकल्प को बढ़ाया जाए, और दुश्मन की हेकड़ी को चकनाचूर कर दिया जाए। एक खूंखार जानवर का सामना होने पर जरा भी कायरता नहीं दिखाई जा सकती। हमें चिङयाङ पहाड़ के ऊ सुङ[1] से सीखना चाहिए। ऊ सुङ जानता था कि चिङयाङ पहाड़ का बाघ हर हालत में आदमी को खाएगा, चाहे उसे परेशान किया जाए अथवा न किया जाए। या तो बाघ को मार डालें या खुद उसके शिकार बन जाएं – इन दोनों में से एक रास्ता चुनना होगा।

"हम व्यापार करना चाहते हैं।" बिलकुल ठीक है, व्यापार किया जाएगा। हम सिर्फ अपने देश के और दूसरे देशों के प्रतिक्रियावादियों को छोड़कर, जो हमारे व्यापार में बाधा डालते है, और किसी के खिलाफ नहीं है। यह समझ लेना चाहिए कि ये साम्राज्यवादी और

उनके पालतू कुत्ते च्याङ काई-शेक प्रतिक्रियावादी ही हैं जो दूसरे देशों से हमारे व्यापार में बाधा डालते है और दूसरे देशों के साथ राजनयिक सम्बन्ध कायम करने में हमें रोकते हैं। अपने देश की और बाहर की तमाम शक्तियों का एका कायम करके जब हम चीनी और विदेशी प्रतिक्रियावादियों को परास्त कर देंगे, सिर्फ तभी हम व्यापार कर सकेंगे तथा समानता, आपसी लाभ और एक दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता व प्रभुसत्ता के सम्मान के आधार पर सभी अन्य देशों के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित कर सकेंगे।

"अन्तरराष्ट्रीय सहायता के बिना भी विजय सम्भव है।" यह एक गलत विचार है। साम्राज्यवाद की मौजूदगी के युग में किसी भी देश में जनता की सच्ची क्रान्ति तब तक विजयी नहीं हो सकती जब तक कि उसे अन्तरराष्ट्रीय क्रान्तिकारी शक्तियों से विभिन्न रूपों में मदद न मिले। और अगर विजय प्राप्त हो भी गई, तो उसे सुदृढ़ बनाना असम्भव हो जाएगा। यह बात महान अक्तूबर क्रान्ति की विजय और सुदृढ़ीकरण के बारे में लागू होती है, जैसा कि लेनिन और स्तालिन हमें बहुत पहले ही बता चुके हैं। ठीक इसी प्रकार दूसरे विश्वयुद्ध में तीन साम्राज्यवादी ताकतों का तख्ता उलट दिया गया था और कुछ देशों में जनता की लोकशाहियां कायम की गई थीं। जनता के चीन के वर्तमान और भविष्य पर भी ठीक यही बात लागू होती है। जरा सोचिए तो! अगर सोवियत संघ मौजूद न होता, अगर फासिस्ट-विरोधी दूसरे विश्वयुद्ध में विजय प्राप्त न हुई होती, अगर जापानी साम्राज्यवाद की हार न हुई होती, अगर जनता की लोकशाहियां कायम न हुई होतीं, अगर पूर्व के उत्पीड़ित राष्ट्र संघर्ष के लिए न उठ खड़े होते, अगर अमरीका, बरतानिया, फ्रांस, जर्मनी,

इटली, जापान और दूसरे पूंजीवादी देशों में शासन करने वाले प्रतिक्रियावादी गुटों के खिलाफ वहां की आम जनता के संघर्षों का अस्तित्व न होता – अगर ये सब एक साथ मौजूद न होते – तो अन्तरराष्ट्रीय प्रतिक्रियावादी शक्तियों का दबाव निश्चय ही आज की तुलना में कई गुना भारी होता। उन परिस्थितियों में क्या हम विजय प्राप्त करने में समर्थ हो सकते थे? जाहिर है, नहीं। अगर विजय प्राप्त हो भी जाती, तो उसे सुदृढ़ बनाना असम्भव हो जाता। चीनी जनता को इस बात के बारे में काफी अनुभव हो चुका है। सुन यात-सेन ने अपनी मृत्युशय्या में अन्तरराष्ट्रीय क्रान्तिकारी शक्तियों के साथ एकता कायम करने की जो बात कही थी, उसमें यही अनुभव काफी समय पहले प्रतिबिम्बित हुआ था।

"हमें बरतानवी और अमरीकी सरकारों की सहायता की जरूरत है।" आज की स्थिति में यह भी एक बचकाना विचार है। क्या बरतानिया और अमरीका के वर्तमान शासक, जो साम्राज्यवादी हैं, एक जनता के राज्य को मदद देंगे? ये देश हमारे साथ व्यापार क्यों करते हैं, और अगर यह भी मान लिया जाए कि ये देश आपसी लाभ की शर्तों पर भविष्य में हमें रुपया भी उधार देने को तैयार हो जाएंगे तो इसका कारण क्या होगा? कारण यह होगा कि अपने खुद के संकट से जान छुड़ाने के लिए इन देशों के पूंजीपति पैसा कमाना चाहते हैं तथा इनके बैंकर सूद बटोरना चाहते हैं, न कि वे चीनी जनता की मदद करना चाहते हैं। इन देशों की कम्युनिस्ट पार्टियां और प्रगतिशील पार्टियां व ग्रुप भी आज अपनी सरकारों को इस बात के लिए प्रेरित कर रहे हैं कि वे हमारे साथ व्यापारिक सम्बन्ध कायम करें और राजनयिक सम्बन्ध भी कायम करें। यह हमारे प्रति सद्भाव

प्रकट करना है, हमें सहायता देना है, और ऐसी कार्यवाहियों को उन देशों के पूंजीपति वर्ग की कार्यवाहियों के साथ नहीं रखा जाना चाहिए। अपने जीवन-काल में सुन यात-सेन ने अनेक बार पूंजीवादी देशों से सहायता की अपील की थी, मगर सहायता पाने के बदले उन्हें निर्मम प्रहारों का सामना करना पड़ा। अपनी सारी जिन्दगी में सुन यात-सेन को सिर्फ एक बार ही अन्तरराष्ट्रीय सहायता मिली और वह सोवियत संघ से ही मिली। पाठक जरा डा० सुन यात-सेन के वसीयतनामे पर नजर डालें, जिसमें उन्होंने हार्दिक सलाह दी है कि सहायता के लिए साम्राज्यवादी देशों का मुंह नहीं ताकना चाहिए, तथा "दुनिया के हर ऐसे राष्ट्र के साथ, जो हमारे साथ समानता का बरताव करे, एकता कायम करनी चाहिए।" सुन यात-सेन को अनुभव हो चुका था; वे तकलीफें झेल चुके थे, धोखा खा चुके थे। हमें उनके शब्द याद रखने चाहिए और फिर से धोखा नहीं खाना चाहिए। अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में, हम सोवियत संघ की अगुवाई में साम्राज्यवाद-विरोधी मोर्चे के अंश हैं, इसलिए सच्ची मित्रतापूर्ण सहायता के लिए हमें केवल इसी मोर्चे की तरफ देखना चाहिए, साम्राज्यवादी मोर्चे की तरफ नहीं।

"तुम एकतंत्रवाद कायम कर रहे हो।" जनाब, आप ठीक फरमा रहे हैं! हम सचमुच यही कर रहे हैं। चीनी जनता द्वारा अनेक दशकों में प्राप्त किए गए सभी अनुभवों ने सिखाया है कि हमें जनता का जनवादी अधिनायकत्व, जिसे जनता का जनवादी एकतंत्रवाद भी कहा जा सकता है, कायम करना चाहिए, या दूसरे शब्दों में, प्रतिक्रियावादियों को अपनी राय जाहिर करने के हक से वंचित कर देना

चाहिए और सिर्फ जनता को ही अपनी राय जाहिर करने का हक होना चाहिए।

जनता कौन है? चीन की आज की स्थिति में जनता में ये लोग हैं – मजदूर वर्ग, किसान वर्ग, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग। मजदूर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में, ये वर्ग एकताबद्ध होकर अपने राज्य की स्थापना करते हैं, अपनी सरकार चुनते हैं, साम्राज्यवाद के पालतू कुत्तों पर – जमींदार वर्ग, नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग, और इन वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों और उनके सह-अपराधियों पर – अधिनायकत्व लागू करते हैं अथवा एकतंत्रवाद लागू करते हैं, उनका दमन करते हैं, उन्हें सिर्फ कुछ सीमाओं के भीतर काम करने देते हैं और कथनी या करनी में मनमाने ढंग से पेश नहीं आने देते। अगर वे अपनी कथनी या करनी में मनमाने ढंग से पेश आने की कोशिश करेंगे, तो उन्हें फौरन ऐसा करने से रोका जाएगा और सजा दी जाएगी। जनवादी तौर-तरीके जनता की पांतों के बीच ही लागू किए जाते हैं; जनता को भाषण देने, सभा बुलाने, संगठन कायम करने इत्यादि की आजादी का हक हासिल है। वोट देने का अधिकार सिर्फ जनता को ही होगा, प्रतिक्रियावादियों को नहीं। इन दोनों बातों का मेल – यानी जनता के लिए जनवाद और प्रतिक्रियावादियों के ऊपर अधिनायकत्व – ही जनता का जनवादी अधिनायकत्व है।

काम का रूप ठीक ऐसा ही क्यों हो? बात एकदम साफ है। अगर ऐसा नहीं किया गया, तो क्रान्ति असफल हो जाएगी, जनता मुसीबतों का शिकार बनेगी और देश पराजित हो जाएगा।

"क्या यह नहीं है कि तुम राजसत्ता को मिटाना चाहते हो?"

हां, हम राजसत्ता को मिटाना चाहते हैं, मगर इस समय नहीं; हम राजसत्ता को अभी नहीं मिटा सकते। क्यों? इसलिए कि साम्राज्यवाद अभी मौजूद है, इसलिए कि चीनी प्रतिक्रियावादी अभी मौजूद हैं और इसलिए कि देश के भीतर वर्ग अभी मौजूद हैं। आज हमारा काम है जनता की राज्य-मशीनरी को – जिसके अन्तर्गत मुख्यतया जनता की सेना, जनता की पुलिस और जनता की अदालतें आती हैं – मजबूत बनाना, ताकि राष्ट्रीय प्रतिरक्षा को मजबूत बनाया जा सके और जनता के हितों की रक्षा की जा सके। यदि ऐसा कर लिया गया, तो मजदूर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में, चीन लगातार एक कृषि-प्रधान देश से विकसित होकर एक औद्योगिक देश बनता जाएगा और एक नव-जनवादी समाज से आगे बढ़कर एक समाजवादी और कम्युनिस्ट समाज का निर्माण कर सकेगा, तथा वर्गों का खात्मा कर सकेगा और असीम सुख-शान्ति की स्थिति प्राप्त कर सकेगा। राज्य-मशीनरी, जिसमें सेना, पुलिस और अदालतें शामिल हैं, एक ऐसा हथियार है जिसके जरिए एक वर्ग दूसरे वर्ग का दमन करता है। यह एक ऐसा हथियार है जिसके जरिए शत्रु-वर्गों का दमन किया जाता है; यह हिंसा का हथियार है, कोई "दया" की चीज नहीं। "तुम दयालु नहीं हो।" यह सच है! प्रतिक्रियावादियों और प्रतिक्रियावादी वर्गों की प्रतिक्रियावादी कार्यवाहियों के प्रति हम निश्चित रूप से दयालुता नहीं बरतते। हम सिर्फ जनता के बीच ही दयालुता की नीति लागू करते हैं, जनता के बाहर के प्रतिक्रियावादियों और प्रतिक्रियावादी वर्गों की प्रतिक्रियावादी कार्यवाहियों के प्रति नहीं।

जनता का राज्य जनता की रक्षा करता है। सिर्फ जनता का अपना

राज्य कायम होने पर ही जनता अपनी समस्त प्रांतों में और देशभर में जनवादी तरीका लागू करके अपने को शिक्षित कर सकती है और अपना पुनःसंस्कार कर सकती है तथा घरेलू व विदेशी प्रतिक्रियावादियों के असर से (यह असर अब भी बहुत गहरा है, यह आगे एक लम्बे अरसे तक बना रहेगा और इसे जल्दी ही मिटाया नहीं जा सकता) अपना पिण्ड छुड़ा सकती है, पुराने समाज की विरासत – बुरी आदतों और बुरे विचारों – से छुटकारा प्राप्त कर सकती है, प्रतिक्रियावादियों द्वारा बताए गए गलत रास्ते पर चलने से इनकार कर सकती है तथा प्रगति करना – समाजवादी समाज और कम्युनिस्ट समाज की ओर प्रगति करना – जारी रख सकती है।

यहां हम जो तरीके इस्तेमाल करते हैं वे जनवादी हैं ; यानी हम जोर-जबरदस्ती के नहीं, बल्कि समझाने-बुझाने के तरीके इस्तेमाल करते हैं। अगर जनता में से कोई कानून तोड़ता है तो उसे भी सजा मिलेगी, जेल भेजा जाएगा या मौत तक की सजा दी जा सकती है ; मगर ये तो इक्के-दुक्के व्यक्तिगत मामले होंगे, तथा ये मामले प्रतिक्रियावादी वर्ग के खिलाफ एक वर्ग के रूप में अधिनायकत्व लागू किए जाने के मामलों से उसूली तौर पर भिन्न होंगे।

जहां तक प्रतिक्रियावादी वर्गों के सदस्यों और व्यक्तिगत प्रतिक्रियावादियों का ताल्लुक है, उनके राजनीतिक शासन का तख्ता उलट दिए जाने के बाद अगर वे बगावत, तोड़फोड़ या गड़बड़ी नहीं करते, तो उन्हें भी जमीन तथा काम प्राप्त हो सकेंगे ताकि उन्हें अपनी जीविका चलाने तथा श्रम के जरिए एक नए मानव के रूप में अपने को ढाल लेने का मौका मिल सके। अगर वे श्रम करने से इनकार करेंगे, तो जनता का राज्य उन्हें श्रम करने के लिए मजबूर

करेगा। उनके बीच राजनीतिक प्रचार और शिक्षा का काम भी किया जाएगा – उतनी ही सावधानी से और उतने ही मुकम्मिल तौर पर जैसे उन फौजी अफसरों के बीच किया गया था जिन्हें हमने अतीत काल में कैद किया था। इसे भी अगर आप चाहें तो "दयालुता बरतने की नीति" कह सकते हैं, लेकिन शत्रु-वर्गों के सदस्यों पर इसे आग्रहपूर्वक लागू किया जाता है और इसे क्रान्तिकारी जनता की पांतों के बीच आत्म-शिक्षा के कार्य के समकक्ष नहीं रखा जा सकता।

प्रतिक्रियावादी वर्गों के सदस्यों का इस प्रकार का पुनःसंस्कार कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में जनता के जनवादी अधिनायकत्व वाले राज्य में ही किया जा सकता है। अगर यह काम ठीक तरह से किया गया, तो चीन के मुख्य शोषक वर्ग – जमींदार वर्ग और नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग (इजारेदार पूंजीपति वर्ग) – हमेशा के लिए खत्म कर दिए जाएंगे। अब राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग का सवाल रह जाता है ; मौजूदा दौर में इस वर्ग के बहुत से व्यक्तियों के अन्दर काफी मात्रा में समुचित शिक्षा-कार्य किया जा सकता है। जब समाजवाद हासिल करने का वक्त आएगा या दूसरे शब्दों में जब निजी कारोबारों के राष्ट्रीयकरण का वक्त आएगा, तो हम उन्हें शिक्षित करने तथा उनका पुनःसंस्कार करने के कार्य को एक कदम और आगे बढ़ा देंगे। जनता के हाथ में शक्तिशाली राज्य-मशीनरी है, राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग द्वारा विद्रोह किए जाने से डरने की आवश्यकता नहीं है।

किसानों को शिक्षित करने का सवाल एक गम्भीर सवाल है। कृषक-अर्थव्यवस्था एक बिखरी हुई अर्थव्यवस्था है, और सोवियत संघ के अनुभव से देखा जाए तो खेती का समाजीकरण करने के लिए काफी समय और काफी मेहनत की जरूरत होगी। खेती का समाजी-

करण किए बिना मुकम्मिल और सुदृढ़ समाजवाद कायम नहीं हो सकता। खेती के समाजीकरण के लिए उठाए गए कदमों को शक्तिशाली उद्योग, जिसकी धुरी राजकीय धन्धे होंगे, के विकास के अनुरूप बनाना जरूरी है।* जनता के जनवादी अधिनायकत्व वाले राज्य को कदम-ब-कदम देश का औद्योगीकरण करने की समस्या को हल करना चाहिए। चूंकि इस लेख का विषय आर्थिक समस्या का विवेचन नहीं है, इसलिए यहां उसे विस्तार से नहीं बताया जाएगा।

१९२४ में क्वोमिन्ताङ की पहली राष्ट्रीय कांग्रेस ने, जो सुन यात-सेन के व्यक्तिगत नेतृत्व में हुई थी और जिसमें कम्युनिस्ट भी शरीक हुए थे, एक प्रसिद्ध घोषणापत्र जारी किया था। घोषणापत्र में कहा गया था :

> आधुनिक राज्यों की तथाकथित जनवादी व्यवस्था पर सामान्यतः पूंजीपति वर्ग का एकाधिकार है और यह महज आम लोगों का उत्पीड़न करने का साधन बन गई है। इसके विपरीत क्वोमिन्ताङ के जनवाद के सिद्धान्त का मतलब है वह जनवाद, जिसमें सभी आम लोगों का हिस्सा हो और जो चन्द लोगों की निजी मिलकियत न हो।

उपरोक्त जनवाद को अगर एक सामान्य राजनीतिक कार्यक्रम की दृष्टि से देखा जाए और इस सवाल को छोड़ दिया जाए कि कौन नेता होगा और किसका नेतृत्व किया जाएगा, तो यह जनवाद जनता की लोकशाही या नई लोकशाही से मेल खाता है जिसका हम जिक्र कर रहे हैं। एक ऐसी राज्य-व्यवस्था में, जिसमें सभी आम लोगों का हिस्सा हो और जहां पूंजीपति वर्ग को इस बात की इजाजत न हो

कि उसे अपनी निजी मिलकियत बना ले, अगर मजदूर वर्ग का नेतृत्व भी जोड़ दिया जाए, तो वह राज्य-व्यवस्था जनता का जनवादी अधिनायकत्व बन जाएगी।

च्याङ काई-शेक ने सुन यात-सेन के साथ विश्वासघात किया और उसने चीन के आम लोगों का उत्पीड़न करने के लिए नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग तथा जमींदार वर्ग के अधिनायकत्व को एक साधन के तौर पर इस्तेमाल किया। यह प्रतिक्रान्तिकारी अधिनायकत्व बाईस बरस तक चलता रहा और अब जाकर हमारे नेतृत्व में चीन के आम लोगों ने उसका तख्ता उलटा है।

वे विदेशी प्रतिक्रियावादी, जो हमारे ऊपर आरोप लगाते हैं कि हम "एकतंत्रवाद" या "एकदलीय-सत्तावाद" पर अमल कर रहे हैं, ठीक ऐसे ही लोग हैं जो एकतन्त्रवाद या एकदलीय-सत्तावाद लागू करते हैं। वे सर्वहारा वर्ग और दूसरी जनता के ऊपर एक वर्ग का, पूंजीपति वर्ग का एकतन्त्रवाद या एकदलीय-सत्तावाद लागू करते हैं। ये वही लोग हैं जिनके बारे में सुन यात-सेन ने कहा था कि ये आधुनिक राज्यों के उस पूंजीपति वर्ग के लोग हैं जो आम लोगों का उत्पीड़न करता है। और इन्हीं प्रतिक्रियावादी शोहदों की नकल करके च्याङ काई-शेक ने अपना प्रतिक्रान्तिकारी एकतंत्रवाद कायम किया है।

सुङ वंश के एक दार्शनिक चू शी ने बहुत सी किताबें लिखी थीं और बहुत सी बातें कही थीं जिन्हें हम भूल चुके हैं, लेकिन एक वाक्य ऐसा है जो हमें हमेशा याद रहता है : "दूसरों के साथ वैसा ही बरताव करो जैसा वे तुम्हारे साथ करते हैं।"* आज हम ठीक यही कर रहे हैं ; हम साम्राज्यवादियों और उनके पालतू कुत्तों – च्याङ काई-शेक प्रतिक्रियावादियों – के साथ वैसा ही बरताव करते हैं जैसा वे

हमारे साथ करते है। बात वास्तव में सिर्फ इतनी ही है, और कुछ नही !

क्रान्तिकारी अधिनायकत्व और प्रतिक्रान्तिकारी अधिनायकत्व स्वरूप में एक दूसरे के विरुद्ध है, और पहली चीज दूसरी चीज से सीख कर ही बनी है। इस तरह का सीखना एक बड़ी महत्वपूर्ण बात है। अगर क्रान्तिकारी जनता प्रतिक्रान्तिकारी वर्गों पर अपना शासन कायम करने के इस तरीके में माहिर नही हो जाती, तो फिर वह अपनी राजसत्ता कायम नही रख सकेगी, चीनी तथा विदेशी प्रतिक्रियावादी उसको उलटकर चीन पर अपना शासन फिर से स्थापित कर लेंगे, और क्रान्तिकारी जनता पर मुसीबतें ढा देंगे।

जनता का जनवादी अधिनायकत्व मजदूर वर्ग, किसान वर्ग और शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग के संश्रय पर आधारित है, तथा मुख्य रूप से वह मजदूरों और किसानों के संश्रय पर आधारित है, क्योंकि इन दोनों वर्गों की संख्या मिलकर चीन की आबादी का ८० से ९० फीसदी तक है। ये दो वर्ग ही वह मुख्य शक्ति हैं जिसके सहारे साम्राज्यवाद और क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों का तख्ता उलटा जा सका है। नव-जनवाद से समाजवाद की तरफ संक्रमण भी मुख्य रूप से इन्हीं दो वर्गों के संश्रय पर निर्भर करता है।

जनता के जनवादी अधिनायकत्व को मजदूर वर्ग के नेतृत्व की जरूरत है। कारण, सिर्फ मजदूर वर्ग ही सबसे अधिक दूरदर्शी, सबसे अधिक स्वार्थरहित तथा मुकम्मिल तौर पर क्रान्तिकारी वर्ग है। क्रान्ति का सारा का सारा इतिहास इस बात का साक्षी है कि मजदूर वर्ग के नेतृत्व के बिना क्रान्ति असफल हो जाती है, और मजदूर वर्ग के नेतृत्व में ही क्रान्ति विजयी होती है। साम्राज्यवाद के युग में किसी

भी देश में कोई भी दूसरा वर्ग एक सच्ची क्रान्ति को विजय तक नहीं ले जा सकता। यह बात इस तथ्य से अच्छी तरह साबित हो जाती है कि अनेकों क्रान्तियां, जिनका नेतृत्व चीन के निम्न-पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग ने किया था, असफल हो गई।

मौजूदा दौर में राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग का भारी महत्व है। साम्राज्यवाद, जो एक अत्यन्त खूंखार दुश्मन है, अब भी हमारे बगल में खड़ा है। चीन की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में आधुनिक उद्योगों का अनुपात अभी भी बहुत कम है। अधिकृत आंकड़े अभी उपलब्ध नहीं है, लेकिन कुछ आंकड़ों के अनुसार यह अनुमान लगाया गया है कि जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के पहले चीन के आधुनिक उद्योगों का उत्पादन-मूल्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन-मूल्य का लगभग १० फीसदी मात्र था। साम्राज्यवादी उत्पीड़न का मुकाबला करने के लिए और पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए चीन को ऐसे हर शहरी और देहाती पूंजीवादी तत्वों का इस्तेमाल करना चाहिए जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए और जनता की जीविका के लिए हानिकारक नही बल्कि फायदेमन्द हो; और हमें अपने मुश्तरका संघर्ष में राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ एकता स्थापित करनी चाहिए। हमारी वर्तमान नीति पूंजीवाद को नियंत्रित करने की है, उसे खत्म करने की नहीं। लेकिन राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग क्रान्ति का नेता नही हो सकता और न ही वह राज्य में प्रमुख स्थान का अधिकारी हो सकता है। वह क्रान्ति का नेता और राज्य में प्रमुख स्थान का अधिकारी इसलिए नही हो सकता कि अपनी सामाजिक व आर्थिक स्थिति के कारण वह कमजोर है; उसमें दूरदर्शिता तथा

आवश्यक साहस का अभाव होता है और उसके बहुत से सदस्य जन-समुदाय से खौफ खाते हैं।

सुन यात-सेन ने "व्यापक जन-समुदाय को जागृत करने" या "किसानों और मजदूरों को सहायता देने" का आवाहन किया था। प्रश्न यह है कि कौन उन्हें "जागृत करे" अथवा उन्हें "सहायता दे"? सुन यात-सेन का खयाल था कि यह काम निम्न-पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग का है। लेकिन सच बात तो यह है कि वे लोग यह काम नहीं कर सकते। सुन यात-सेन के चालीस बरस के क्रान्तिकारी काम का अन्त आखिरकार असफलता में क्यों हुआ? कारण यही है कि साम्राज्यवाद के युग में निम्न-पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग किसी भी सच्ची क्रान्ति को विजय तक नहीं ले जा सकता।

हमारे ये अट्ठाईस बरस एकदम भिन्न हैं। हमने बहुमूल्य अनुभव प्राप्त किए हैं। एक अनुशासनबद्ध पार्टी, जो मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों से लैस हो, आत्म-आलोचना के तरीके का इस्तेमाल करती हो और जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्पर्क रखती हो; इस तरह की पार्टी के नेतृत्व में काम करने वाली एक सेना; और इस तरह की पार्टी के नेतृत्व में तमाम क्रान्तिकारी वर्गों तथा तमाम क्रान्तिकारी ग्रुपों का एक संयुक्त मोर्चा – ये तीन मुख्य हथियार हैं जिनके सहारे हमने दुश्मन को शिकस्त दी है। इन्होंने हमारे और हमारे पूर्वगामियों के बीच फर्क कर दिया है। इन्हीं पर भरोसा करके हमने बुनियादी महत्व की विजय हासिल की है। हमने एक टेढ़ामेढ़ा रास्ता तय किया है। हमने पार्टी के भीतर दक्षिणपंथी तथा "वामपंथी" अवसरवादी भटकावों के खिलाफ संघर्ष किया है। इन तीन बातों में हमने जब भी भारी गलतियां कीं, तो क्रान्ति को धक्का लगा। गलतियों और असफलताओं से सबक लेकर हम पहले से अधिक समझदार बन गए हैं और अपना काम पहले से ज्यादा अच्छी तरह करने लगे हैं। कोई भी राजनीतिक पार्टी या व्यक्ति ऐसा नहीं जो गलती नहीं करता, मगर हमारी मांग है कि कम से कम गलतियां की जाएं। अगर गलती हो जाए, तो उसे सुधार लेना चाहिए, और जितनी जल्दी और जितने मुकम्मिल तौर पर यह किया जाए उतना अच्छा।

अगर हम अपने अनुभवों का निचोड़ निकालें और उसे सूत्र रूप में प्रस्तुत करें, तो उसे इस प्रकार कहा जा सकता है: जनता का जनवादी अधिनायकत्व, जिसका नेतृत्व मजदूर वर्ग (कम्युनिस्ट पार्टी के जरिए) करता है और जो मजदूरों व किसानों के संश्रय पर आधारित है। इस अधिनायकत्व को अन्तरराष्ट्रीय क्रान्तिकारी शक्तियों के साथ एकता स्थापित करके एकदिल हो जाना चाहिए। यही हमारा फार्मूला है, यही हमारा मुख्य अनुभव है और यही हमारा मुख्य कार्यक्रम है।

हमारी पार्टी के अट्ठाईस बरस एक लम्बी अवधि है, इस अवधि में हमने महज एक काम किया है – हमने क्रान्तिकारी युद्ध में बुनियादी महत्व की विजय हासिल कर ली है। यह एक अभिनन्दन के योग्य बात है, क्योंकि यह जनता की विजय है, क्योंकि यह एक ऐसी विजय है जो चीन जैसे विशाल देश में प्राप्त की गई है। लेकिन हमें अभी भी बहुत से काम करने बाकी हैं; अगर इसे एक सफर मान लें, तो अतीत काल में हमने जो कुछ काम किया वह हमारे दस हजार ली लम्बे अभियान का महज पहला कदम है। अभी हमारे सामने दुश्मन

के बचेखुचे हिस्सों को खत्म करने का कार्य बाकी है। आर्थिक निर्माण का जबरदस्त काम भी हमारे सामने है। कुछ ऐसे कामों को जिनसे हम अच्छी तरह परिचित हैं हमें जल्दी ही एक किनारे रख देना होगा, और ऐसे कामों को जिनके बारे में हमें जानकारी नहीं है हमें हाथ में लेना पड़ेगा। इसका मतलब है कि हमें मुश्किलों से जूझना पड़ेगा। साम्राज्यवादी सोचते हैं कि हम अपने आर्थिक काम का अच्छी तरह प्रबन्ध करने के अयोग्य हैं; वे एक तरफ खड़े होकर देख रहे हैं और इस बात का इन्तजार कर रहे हैं कि हम किसी तरह असफल हो जाएं।

हमको मुश्किलों पर विजय पाना है, जो काम हमें नहीं आता, उसे सीख लेना है। आर्थिक क्षेत्र में हमें उन तमाम लोगों से, जो अपने काम में माहिर हैं, काम करना सीख लेना चाहिए, चाहे वे कोई भी क्यों न हों। हमें उनको अपना शिक्षक मानना चाहिए तथा बड़े आदर के साथ और सच्चे दिल से उनसे सीख लेना चाहिए। जो बात हम नहीं जानते, उसके बारे में हमें अपनी अज्ञानता को स्वीकार करना चाहिए और यह दिखावा हरगिज नहीं करना चाहिए कि हम उसे जानते हैं। हमें नौकरशाहाना रोब-दाब से काम नहीं लेना चाहिए। अगर हम किसी काम पर जुट जाएं और कई महीनों तक, साल दो साल तक अथवा तीन या पांच साल तक जमे रहें, तो अन्त में हम उस पर अवश्य काबू पा लेंगे। सोवियत संघ में भी शुरू में कुछ कम्युनिस्ट यह नहीं जानते थे कि आर्थिक क्षेत्र में काम कैसे किया जाए, और उस समय भी साम्राज्यवादियों ने उम्मीदें बांधी थीं कि वे असफल हो जाएंगे। लेकिन सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी विजयी बनकर निकली तथा लेनिन और स्तालिन के नेतृत्व में उसने न सिर्फ यह सीखा कि क्रान्ति कैसे की जाए बल्कि यह भी सीखा कि निर्माण-कार्य कैसे किया जाए। उसने एक महान और शानदार समाजवादी राज्य का निर्माण कर लिया है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी हमारी सबसे अच्छी शिक्षक है और हमें उससे अवश्य सीखना चाहिए। अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति और घरेलू परिस्थिति दोनों ही हमारे अनुकूल हैं, जनता के जनवादी अधिनायकत्व के हथियार पर भरोसा करके, प्रतिक्रियावादियों को छोड़कर देशभर के तमाम लोगों को एकताबद्ध करके हम अवश्य ही अपने लक्ष्य की ओर दृढ़ता के साथ आगे बढ़ सकते हैं।

नोट

१ असीम सुख-शान्ति वाला विश्व एक ऐसा उच्च आदर्श है, जिसे चीनी जनता दीर्घकाल से सजोए हुए है। यहां उसका तात्पर्य कम्युनिस्ट समाज से है। – अनु०

२ देखिए वी० आई० लेनिन, "'वामपंथी' कम्युनिज्म, एक बचकाना मर्ज", अध्याय २। उसमें लेनिन ने कहा था : "लगभग आधी शताब्दी तक – कोई पांचवें दशक से अन्तिम दशक तक – रूस के प्रगतिशील विचारकों ने अत्यन्त क्रूर, बर्बरतापूर्ण और प्रतिक्रियावादी जारशाही उत्पीड़न के नीचे बड़ी उत्सुकता के साथ सही क्रान्तिकारी सिद्धान्तों की खोज की तथा इस क्षेत्र में योरप व अमरीका में कहे गए एक-एक 'नए शब्द' का अद्भुत परिश्रम और गहराई के साथ अनुसरण किया। रूस में मार्क्सवाद को, जो एकमात्र सही क्रान्तिकारी सिद्धान्त है, निश्चय ही भारी कष्ट झेलकर, आधी शताब्दी तक अभूतपूर्व उथल-पुथल से गुजरने और बलिदान करने, अभूतपूर्व क्रान्तिकारी वीरता दिखाने और आश्चर्यजनक शक्ति लगाने, लगन के साथ खोज करने, अध्ययन करने, अमल के जरिए परखने, निराशा का मुंह देखने, जांच करने और योरप के अनुभवों से तुलना करने के बाद प्राप्त किया गया।"

* काङ यओ-वेइ (१८५८-१९२७) क्वाङतुङ प्रान्त की नानहाए काउन्टी का निवासी था। १८९५ में, जिसके एक वर्ष पहले चीन को जापानी साम्राज्यवाद से हार खानी पड़ी थी, उसने पेकिङ में तीसरी श्रेणी की शाही परीक्षाओं के तेरह सौ परीक्षार्थियों का नेतृत्व करके सम्राट क्वाङ श्वी को "दस हजार शब्दों का प्रतिवेदन" दिया, जिसमें यह अनुरोध किया गया था कि "वैधानिक सुधार और आधुनिकीकरण को लागू किया जाए", और यह भी अनुरोध किया गया था कि एकतन्त्रवादी राजतन्त्र को वैधानिक राजतंत्र में बदल दिया जाए। १८९८ में सुधार लागू करने का प्रयत्न करते हुए सम्राट ने काङ यओ-वेइ और थान स-थुङ, ल्याङ छी-छाओ तथा अन्य लोगों को सरकार के महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त कर दिया। बाद में महारानी डोवागर छशी ने, जो कट्टरपंथियों का प्रतिनिधित्व करती थी, फिर से सत्ता हथिया ली और सुधार आन्दोलन असफल रहा। काङ यओ-वेइ और ल्याङ छी-छाओ विदेश भाग गए, जहां उन्होंने सम्राट-रक्षा सोसाइटी बनाई। यह एक प्रतिक्रियावादी राजनीतिक गुट था, जिसने उन पूंजीवादी और निम्न-पूंजीवादी क्रान्तिकारियों का विरोध किया जिनका प्रतिनिधित्व सुन यात-सेन करते थे। काङ की रचनाओं में "कनफ्यूशियस के धर्मग्रन्थों में क्षेपक", "कनफ्यूशियस एक सुधारक के रूप में" और "ता थुङ शू" (असीम सुख-शान्ति ग्रन्थ) शामिल हैं।

* फूच्येन प्रान्त के फूचओ निवासी येन फू (१८५३-१९२१) ने ब्रिटानिया की एक नौसैनिक अकादमी में शिक्षा प्राप्त की थी। १८९४ के चीन-जापान युद्ध के बाद उसने चीन का आधुनिकीकरण करने के लिए वैधानिक राजतन्त्र कायम करने और सुधार लागू करने का पक्षपोषण किया। उसने टी० एच० हक्सले की रचना "इवाल्यूशन एण्ड ईथिक्स" (विकासवाद और आचार-शास्त्र), ऐडम स्मिथ की रचना "दि वेल्थ आफ नेशन्स" (राष्ट्रों की सम्पत्ति), जे० एस० मिल की रचना "सिस्टम आफ लाजिक" (तर्क-पद्धति), मांतेस्क्यू की रचना "ल स्पिरिट द लुइ" (कानूनों का स्वरूप) तथा अन्य रचनाओं का अनुवाद किया, जिन्होंने चीन में योरप के पूंजीवादी विचारों का प्रचार-प्रसार करने में एक माध्यम की भूमिका अदा की।

* देखिए : "नव-जनवाद के बारे में", नोट १६, ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ २)।

* "श्वेइ हू च्वान" (कछार के वीर) नामक उपन्यास का एक वीर, जिसने

चिङ्याङ पहाड़ पर निहत्थे ही एक बाघ को मार डाला। यह उक्त प्रसिद्ध उपन्यास का सबसे अधिक लोकप्रिय प्रसंग है।

* खेती के समाजीकरण और देश के औद्योगीकरण का आपस में क्या सम्बन्ध है, इसकी विस्तृत जानकारी के लिए देखिए "कृषि-सहकारिता के सवाल के बारे में" (भाग ७ और ८)। यह एक रिपोर्ट है जिसे कामरेड माओ त्सेतुङ ने ३१ जुलाई १९५५ को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की प्रान्तीय कमेटियों, म्युनिसिपल कमेटियों और स्वायत्त प्रादेशिक कमेटियों के सचिवों के एक सम्मेलन में प्रस्तुत किया था। इस रिपोर्ट में कामरेड माओ त्सेतुङ ने सोवियत अनुभवों और हमारे अपने देश के अमल के आधार पर इस स्थापना का भरपूर विकास किया कि खेती के समाजीकरण को समाजवादी औद्योगीकरण के साथ कदम मिलाते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

* यह वाक्य चू शी द्वारा लिखी गई "कनफ्यूशियस का मध्यस्थता का सिद्धान्त" नामक रचना के तेरहवें अध्याय की एक टीका से लिया गया है।

भ्रमजाल को त्याग दो और संघर्ष के लिए तैयार हो जाओ*

१४ अगस्त १९४९

यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है कि चीन-अमरीका सम्बन्धों के बारे में अमरीकी विदेश विभाग का श्वेतपत्र और प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन के नाम विदेश मंत्री एचेसन का पत्र¹ इसी समय प्रकाशित हुए हैं। इन दस्तावेजों का प्रकाशन चीनी जनता की विजय तथा साम्राज्यवाद की पराजय को प्रतिबिम्बित करता है और साम्राज्यवाद की समूची विश्व-व्यवस्था के पतन को प्रतिबिम्बित करता है। साम्राज्यवादी व्यवस्था अन्दरूनी अन्तर्विरोधों से बुरी तरह ग्रस्त है, जिनके हल का कोई उपाय नहीं है और इसलिए साम्राज्यवादी अत्यन्त गहरे विषाद में डूबे हुए हैं।

साम्राज्यवाद ने अपने सर्वनाश की परिस्थिति स्वयं तैयार कर रखी है। उपनिवेशों व अर्ध-उपनिवेशों के विशाल जन-समुदाय तथा स्वयं साम्राज्यवादी देशों के विशाल जन-समुदाय का जागरण ही इस तरह की परिस्थिति है। साम्राज्यवाद ने सारे संसार के विशाल

*यह लेख और इसके आगे के चार लेख – "अलविदा, लीटन स्टुअर्ट!", "श्वेतपत्र पर बहस करना क्यों आवश्यक है", "'मैत्री' या आक्रमण?" तथा "इतिहास की आदर्शवादी धारणा का दिवालियापन" – कामरेड माओ त्सेतुङ

जन-समुदाय को साम्राज्यवाद के उन्मूलन के महान संघर्ष के ऐतिहासिक युग में धकेल दिया है।

साम्राज्यवाद ने इस विशाल जन-समुदाय के संघर्ष के लिए भौतिक तथा मानसिक परिस्थितियां तैयार कर दी हैं।

भौतिक परिस्थिति है कारखाने, रेलवे, बन्दूकें और तोपें आदि। चीनी जन-मुक्ति सेना की शक्तिशाली युद्ध-सामग्री का अधिकांश भाग अमरीकी साम्राज्यवाद से प्राप्त हुआ है, कुछ जापानी साम्राज्यवाद से प्राप्त हुआ है तथा कुछ को हमने स्वयं बनाया है।

चीन पर १८४० के बरतानवी आक्रमण के बाद चीन को आंग्ल-फ्रांसीसी संयुक्त सेनाओं के, फिर फ्रांस के, उसके बाद जापान के तथा फिर बरतानिया, फ्रांस, जापान, जारशाही रूस, जर्मनी, अमरीका, इटली तथा आस्ट्रिया इन आठ देशों की संयुक्त सेनाओं के आक्रमणकारी युद्धों का सामना करना पड़ा। फिर चीन की प्रादेशिक भूमि पर जापान तथा जारशाही रूस के बीच युद्ध हुआ।[२] उसके बाद १९३१ में जापान ने उत्तर-पूर्वी चीन में आक्रमणकारी युद्ध शुरू कर दिया। इसके बाद १९३७ में जापान ने समूचे चीन के खिलाफ आक्रमणकारी युद्ध शुरू कर दिया, जो आठ वर्ष के लम्बे समय तक जारी रहा। और अन्त में, पिछले तीन साल से चीनी जनता के विरुद्ध जो आक्रमणकारी युद्ध जारी है वह ऊपर से देखने पर तो च्याङ काई-शेक द्वारा चलाया जा रहा प्रतीत होता है पर वास्तव में अमरीका ही

ने अमरीकी विदेश विभाग के श्वेतपत्र और डीन अचेसन के पत्र पर टिप्पणियों के रूप में शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के लिए लिखे थे। इन लेखों में अमरीका की चीन सम्बन्धी नीति के साम्राज्यवादी स्वरूप का पर्दाफाश किया गया है, चीन

उसे चला रहा है। अचेसन के पत्र में कहा गया है कि इस अन्तिम युद्ध में अमरीका ने क्वोमिन्ताङ सरकार को जो भौतिक सहायता दी है वह क्वोमिन्ताङ सरकार के "मुद्रा-व्यय का ५० फीसदी से ज्यादा" है और "अमरीका ने चीनी सेनाओं (अर्थात क्वोमिन्ताङ सेनाओं) को युद्ध के साज-सामान से लैस किया है"। यह एक ऐसा युद्ध है जिसमें अमरीका अपना धन और बन्दूकें झोंक रहा है तथा च्याङ काई-शेक अमरीका की ओर से लड़ने और चीनियों का वध करने के लिए भाड़े के टट्टू जुटा रहा है। इन सारे आक्रमणकारी युद्धों ने और इनके साथ ही राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आक्रमणों और उत्पीड़नों ने चीनियों के अन्दर साम्राज्यवाद के प्रति नफरत पैदा कर दी है, उन्हें यह सोचने पर विवश कर दिया है कि आखिर यह सब कुछ किस लिए है, और इस प्रकार उन्हें अपनी क्रान्तिकारी भावना को विकसित करने और संघर्ष के द्वारा एकताबद्ध होने को बाध्य कर दिया है। उन्होंने संघर्ष किए पर वे असफल हुए, उन्होंने फिर संघर्ष किए, वे फिर असफल हुए और उन्होंने फिर संघर्ष किए और इस तरह उन्होंने १०९ वर्षों के अनुभवों का संचय किया, सैकड़ों छोटे-बड़े सैनिक और राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक, रक्त-रंजित और रक्तहीन संघर्षों के अनुभवों का संचय किया, और तब कहीं आज की यह बुनियादी सफलता प्राप्त की। यही वह मानसिक परिस्थिति है जिसके बिना क्रान्ति विजयी नहीं हो सकती थी।

के पूंजीवादी बुद्धिजीवियों के एक हिस्से में अमरीकी साम्राज्यवाद के प्रति मौजूद भ्रमजाल की आलोचना की गई है तथा चीनी क्रान्ति के उत्थान तथा उसकी विजय के कारणों की सैद्धान्तिक व्याख्या की गई है।

अपने आक्रमण की जरूरतें पूरी करने के लिए साम्राज्यवाद ने चीन में दलाल-व्यवस्था तथा नौकरशाही-पूंजी की सृष्टि की। साम्राज्यवादी आक्रमण ने चीन की सामाजिक अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित किया, उसमें परिवर्तन किए और चीन के राष्ट्रीय उद्योग व राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के रूप में, और विशेषकर साम्राज्यवादियों द्वारा सीधे संचालित उद्योगों में तथा नौकरशाही-पूंजी और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग द्वारा संचालित उद्योगों में श्रम करने वाले चीन के सर्वहारा वर्ग के रूप में अपने विपरीत तत्वों को जन्म दिया। अपने आक्रमण की जरूरतें पूरी करने के लिए साम्राज्यवाद ने असमान मूल्य-विनिमय के जरिए चीनी किसानों का शोषण करके उन्हें तबाह कर दिया और इस प्रकार चीन में दसियों करोड़ गरीब किसानों के एक विशाल जन-समुदाय की सृष्टि की, जो ग्रामीण जनसंख्या का ७० प्रतिशत भाग है। अपने आक्रमण की जरूरतों को पूरा करने के लिए साम्राज्यवाद ने नए प्रकार के दसियों लाख छोटे-बड़े चीनी बुद्धिजीवी तैयार किए, जो पुराने प्रकार के शिक्षित नवकों या शिक्षित-नौकरशाहों से भिन्न थे। लेकिन साम्राज्यवाद तथा उसकी दुमछल्ला चीनी प्रतिक्रियावादी सरकार, इन बुद्धिजीवियों के केवल एक भाग को और अन्ततोगत्वा हू श, फू स-न्येन और छ्येन मू जैसे मुट्ठीभर बुद्धिजीवियों को ही अपने वश में करने में कामयाब हो सके; शेष सभी उनके चंगुल से निकल गए और उनके विरोधी बन गए। विद्यार्थी, अध्यापक, प्रोफेसर, तकनीशियन, इंजीनियर, डाक्टर, वैज्ञानिक, साहित्यकार, कलाकार तथा सरकारी कर्मचारी सब के सब क्वोमिन्ताङ के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हैं या उसका साथ छोड़ रहे हैं। कम्युनिस्ट पार्टी गरीबों की पार्टी है और क्वोमिन्ताङ अपने व्यापक व छलपूर्ण प्रचार में यह कहती है कि कम्युनिस्ट पार्टी तो ऐसे लोगों का गिरोह है जो हत्या, आगजनी, बलात्कार और लूट-मार करते हैं, इतिहास और संस्कृति का बहिष्कार करते हैं, मातृभूमि से कोई लगाव नहीं रखते, माता-पिता के आज्ञाकारी नहीं होते, गुरु का मान नहीं करते, जिन पर किसी भी प्रकार की युक्ति या तर्क का कोई असर नहीं होता, जिनकी जायदाद और स्त्रियां सब साझे में होती हैं, जो "जन-सागर" के फौजी दावपेंच अपनाते हैं, मतलब यह कि कम्युनिस्ट भयंकर दानवों के दल की तरह होते हैं जो हर कल्पनीय अपराध करते हैं और जिन्हें कभी माफ नहीं किया जाना चाहिए। परन्तु अचम्भे की बात यह है कि ऐसे दल ने दसियों करोड़ लोगों का समर्थन प्राप्त किया है, जिनमें बुद्धिजीवियों का अधिकांश भाग और खासकर युवा विद्यार्थी शामिल हैं।

बुद्धिजीवियों का एक भाग अब भी हवा का रुख भांपने में लगा हुआ है। वे सोचते हैं कि क्वोमिन्ताङ तो अच्छी नहीं है पर जरूरी नहीं कि कम्युनिस्ट पार्टी ही अच्छी हो, इसलिए बेहतर यही है कि अभी कुछ देर और हवा का रुख देखा जाए। उनमें से कुछ लोग कम्युनिस्ट पार्टी का मौखिक रूप से समर्थन करते हैं, परन्तु हृदय में वे भी हवा का रुख देख रहे हैं। यही वे लोग हैं जिनके मन में अमरीका के प्रति भ्रम मौजूद है। वे अमरीकी साम्राज्यवादियों, जो सत्तारूढ़ हैं, और अमरीकी जनता, जो सत्तारूढ़ नहीं है, के बीच भेद नहीं करना चाहते। अमरीकी साम्राज्यवादियों की मधुर शब्दावली उन्हें सहज ही धोखे में डाल देती है, मानो ये साम्राज्यवादी एक गम्भीर, दीर्घकालीन संघर्ष के बिना ही जनता के चीन के साथ समानता और आपसी लाभ का व्यवहार करने लगेंगे। आज भी उन लोगों के मन

में बहुत सी प्रतिक्रियावादी यानी जन-विरोधी धारणाएं मौजूद हैं, फिर भी वे लोग क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी नहीं हैं। वे लोग जनता के चीन के मध्यममार्गी या दक्षिणपंथी हैं। वे उस चीज के समर्थक हैं जिसे अचेसन ने "जनवादी व्यक्तिवाद" कहा है। अचेसन के माया-जाल के लिए एक झीनी सी सामाजिक बुनियाद चीन में अब भी मौजूद है।

अचेसन के श्वेतपत्र में यह बात जाहिर हो जाती है कि चीन की वर्तमान परिस्थिति से निपटने के लिए अमरीकी साम्राज्यवादियों के पास अब कोई भी उपाय नहीं रह गया है। क्वोमिन्ताङ की हालत इतनी बिगड़ चुकी है कि उसे कोई भी सहायता उसके अनिवार्य सर्वनाश से बचा नहीं सकती; हालात पर अमरीकी साम्राज्यवादियों की पकड़ ढीली पड़ गई है और वे विवशता का अनुभव कर रहे हैं। अचेसन ने अपने पत्र में लिखा है:

> दुर्भाग्यपूर्ण परन्तु अनिवार्य बात यह है कि चीन के गृहयुद्ध के अशुभ परिणाम पर अमरीका सरकार का कोई वश नहीं था। अपनी क्षमताओं की युक्तियुक्त सीमाओं के भीतर रहकर इस देश ने जो कुछ भी किया और वह जो कुछ भी कर सकता था, उसके द्वारा इस परिणाम को बदला नहीं जा सकता था; और इस देश ने जो कुछ बिना किए छोड़ दिया, उसका कोई योगदान इस परिणाम के लाने में नहीं था। यह परिणाम चीन की आन्तरिक शक्तियों की उपज था। उन शक्तियों पर इस देश ने प्रभाव डालना तो चाहा, किन्तु वह ऐसा कर नहीं सका।

तर्क के अनुसार तो अचेसन का निष्कर्ष वैसा ही होना चाहिए,

जैसा कि कुछ उलझे दिमाग वाले चीनी बुद्धिजीवी सोचते या कहते हैं, अर्थात उसे "अपना छुरा छोड़कर उसी दम भगवान बुद्ध बन जाने वाले कसाई" की तरह का अथवा "हृदय-परिवर्तन के कारण धर्मात्मा बन जाने वाले डाकू" की तरह का आचरण करना चाहिए, यानी अचेसन को अब जनता के चीन के साथ समानता तथा आपसी लाभ का व्यवहार करने लगना चाहिए और गड़बड़ी करना बन्द कर देना चाहिए। मगर नहीं, अचेसन कहता है कि गड़बड़ी करना तो जारी रहेगा और निश्चय ही जारी रहेगा। क्या इसका कोई परिणाम भी होगा? उसका कहना है कि हां होगा। भरोसा किन लोगों पर किया जाएगा? भरोसा किया जाएगा "जनवादी व्यक्तिवाद" के समर्थकों पर। अचेसन कहता है:

> . . . अन्त में चीन की सभ्यता, जिसकी जड़ें बहुत गहरी हैं, और उसका जनवादी व्यक्तिवाद फिर अपना सिक्का जमा लेंगे और चीन विदेशी जुए को उतार फेंकेगा। मेरा विचार है कि हमें चीन में इस लक्ष्य की ओर आज या भविष्य में ले जाने वाले परिस्थिति-विकास को प्रोत्साहन देना चाहिए।

साम्राज्यवादियों का तर्क जनता के तर्क से कितना भिन्न है! गड़बड़ी करना, असफल होना, फिर गड़बड़ी करना, फिर असफल होना . . . जब तक सर्वनाश न हो जाए; यह साम्राज्यवादियों और दुनिया के तमाम प्रतिक्रियावादियों द्वारा जनता के कार्य से निपटते समय अपनाया जाने वाला तर्क है, तथा वे इस तर्क के खिलाफ हरगिज नहीं जाएंगे। यह एक मार्क्सवादी नियम है। जब हम यह कहते हैं कि "साम्राज्यवाद बहुत क्रूर है", तो इसका मतलब यह होता है कि

उसकी प्रकृति कभी नहीं बदल सकती, तथा साम्राज्यवादी अपने सर्वनाश से पहले न तो कभी अपने हाथ से कसाई का छुरा ही छोड़ेंगे और न भगवान बुद्ध ही बनेंगे।

संघर्ष करना, असफल होना, फिर संघर्ष करना, फिर असफल होना, फिर संघर्ष करना . . . जब तक विजय प्राप्त न हो जाए ; यह जनता का तर्क है, तथा वह भी इस तर्क के खिलाफ हरगिज नहीं जाएगी। यह दूसरा मार्क्सवादी नियम है। रूसी जनता की क्रान्ति ने इसी नियम का अनुसरण किया, और चीनी जनता की क्रान्ति ने भी इसी नियम का अनुसरण किया है।

वर्गों के बीच संघर्ष होता है, कुछ वर्ग विजयी होते हैं तथा कुछ अन्य वर्ग नष्ट हो जाते हैं। ऐसा ही इतिहास है, ऐसा ही हजारों साल की सभ्यता का इतिहास है। इस दृष्टिकोण के अनुसार इतिहास की व्याख्या करना ऐतिहासिक भौतिकवाद कहलाता है, और इसके विपरीत दृष्टिकोण अपनाना ऐतिहासिक आदर्शवाद कहलाता है।

आत्म-आलोचना करने का तरीका केवल जनता की पांतों में ही अपनाया जा सकता है ; साम्राज्यवादियों तथा चीनी प्रतिक्रियावादियों को यह बात समझाना असम्भव है कि वे अपने अन्तर की करुणा प्रदर्शित करें और अपनी बुराइयों से मुंह मोड़ लें। हमारे लिए तो बस यही एक उपाय है कि हम शक्तियों को संगठित करके उनके विरुद्ध संघर्ष करें, जैसा कि हमारे जन-मुक्ति युद्ध और भूमि-क्रान्ति में किया गया, साम्राज्यवादियों का पर्दाफाश कर दें, उन्हें "परेशान" करें, उनका तख्ता उलट दें, कानून के विरुद्ध उनके द्वारा किए गए अपराधों का उन्हें दण्ड दें और "उन्हें सिर्फ कुछ सीमाओं के भीतर काम करने दें, और कथनी या करनी में मनमाने ढंग से पेश

न आने दें"। केवल तभी यह आशा की जा सकेगी कि साम्राज्यवादी देशों से समानता तथा आपसी लाभ की शर्तों पर व्यवहार किया जाएगा। केवल तभी यह आशा की जा सकेगी कि जिन जमींदार वर्ग के तत्वों, नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग के तत्वों, प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ गिरोह के सदस्यों तथा उनके सह-अपराधियों ने हथियार डाल दिए हैं और आत्मसमर्पण कर दिया है, उनकी बदी को नेकी में बदलने के लिए उन्हें शिक्षा दी जाएगी और उन्हें यथासम्भव नेक बना दिया जाएगा। चीन में अनेक उदारपंथी यानी पुराने ढंग के जनवादी तत्व, यानी "जनवादी व्यक्तिवाद" के समर्थक, जिन पर ट्रूमैन, मार्शल, एचेसन, लीटन स्टुअर्ट आदि आशा लगाए बैठे हैं और जिन्हें अपनी ओर मिलाने की वे कोशिश करते रहे हैं, प्रायः अपने आपको असहाय स्थिति में पाते हैं और समस्याओं के बारे में उनकी समझ अक्सर गलत साबित होती है – अमरीकी शासकों, क्वोमिन्ताङ, सोवियत संघ तथा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में उनकी समझ अक्सर गलत साबित होती है। इसका ठीक-ठीक कारण केवल यही है कि वे लोग या तो ऐतिहासिक भौतिकवाद के दृष्टिकोण से समस्याओं पर विचार करते ही नहीं या ऐसा करना स्वीकार नहीं करते।

कम्युनिस्टों, जनवादी पार्टियों के सदस्यों, जागृत मजदूरों, युवा विद्यार्थियों तथा प्रगतिशील बुद्धिजीवियों जैसे आगे बढ़े हुए लोगों का यह कर्तव्य है कि वे जनता के चीन के अन्दर मध्यवर्ती श्रेणियों, मध्यममार्गी लोगों, भिन्न-भिन्न श्रेणियों के पिछड़े तत्वों और ऐसे तमाम लोगों के साथ एकता कायम करें जो अब भी डांवाडोल हो रहे हैं और हिचकिचा रहे हैं (ये लोग लम्बे समय तक डांवाडोल

होते रहेंगे और स्थिर हो जाने के बाद भी कठिनाइयों का सामना होने पर फिर से डांवांडोल हो जाएंगे)। उनकी सच्चे दिल से सहायता करें, उनकी अस्थिरता की आलोचना करें, उन्हें शिक्षित करें और आम जनता के पक्ष में लाएं, उन्हें साम्राज्यवाद द्वारा अपने पक्ष में किए जाने से रोकें, तथा उनका आवाहन करें कि वे भ्रमजाल को त्याग दें और संघर्ष के लिए तैयार हो जाएं। कोई यह न सोचे कि विजय तो प्राप्त हो ही चुकी है, इसलिए अब कुछ भी करने को नहीं रह गया है। इन लोगों को सचमुच अपनी ओर मिला लेने के लिए हमें अभी भी काम करते रहना है, बड़े धीरज के साथ बहुत काम करना है। जब हम इन्हें अपनी ओर मिला लेंगे, तो साम्राज्यवाद पूरी तरह अकेला पड़ जाएगा और अचेसन अपनी कोई भी चाल नहीं चल सकेगा।

"संघर्ष के लिए तैयार हो जाओ" का नारा उन लोगों के लिए है जिनके मन में आज भी चीन और साम्राज्यवादी देशों के, विशेषकर चीन और अमरीका के आपसी सम्बन्धों के सवाल के बारे में कुछ भ्रम बाकी हैं। इस सवाल के बारे में वे आज भी निष्क्रिय हैं, उन्होंने अभी भी दृढ़ संकल्प नहीं किया, अमरीकी साम्राज्यवाद (और बरतानवी साम्राज्यवाद) के विरुद्ध लम्बे संघर्ष के लिए उन्होंने अभी भी दृढ़ संकल्प नहीं किया, क्योंकि अमरीका के बारे में उनके मन में अब भी भ्रमजाल मौजूद है। इस सवाल के बारे में हमारे और इन लोगों के बीच एक बहुत चौड़ी या काफी चौड़ी खाई मौजूद है।

अमरीकी श्वेतपत्र और अचेसन के पत्र का प्रकाशन एक खुशी मनाने योग्य घटना है, क्योंकि इससे चीन में उन लोगों की आशाओं पर और साथ ही उनकी प्रतिष्ठा पर पानी फिर गया है जो पुराने ढंग के जनवाद, यानी जनवादी व्यक्तिवाद की धारणाओं से चिपके हुए हैं और जनता के जनवाद या जनवादी सामूहिकतावाद, या जनवादी केन्द्रीयता, या सामूहिक वीरता, या अन्तरराष्ट्रवाद पर आधारित देशभक्ति को स्वीकार नहीं करते अथवा पूरी तरह स्वीकार नहीं करते, उससे असन्तुष्ट हैं या कुछ असन्तुष्ट हैं, यहां तक कि उससे नाराज भी हैं, पर जिनमें देशप्रेम की भावना अब भी बनी हुई है और जो क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी नहीं हैं। उन लोगों की आशाओं पर तो इसके प्रकाशन से विशेष रूप से पानी फिर गया है जिनका विश्वास है कि हर अमरीकी वस्तु अच्छी ही होती है और जिन्हें आशा है कि चीन अमरीकी सांचे में ही ढलेगा।

अचेसन खुलेआम घोषणा करता है कि चीन के जनवादी व्यक्तिवादियों को तथाकथित "विदेशी जुआ" उतार फेंकने के लिए "प्रोत्साहन" दिया जाएगा। इसका मतलब है मार्क्सवाद-लेनिनवाद को और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में स्थापित जनता के जनवादी अधिनायकत्व वाली व्यवस्था को उखाड़ फेंकना। कारण, कहा जाता है कि यह वाद और यह व्यवस्था "विदेशी" हैं, इनकी जड़ें चीन में मौजूद नहीं हैं और इनको तो जर्मनी के कार्ल मार्क्स (जिनका छियासठ वर्ष पहले ही देहान्त हो चुका), रूस के लेनिन (जिनका पच्चीस वर्ष पहले देहान्त हो चुका) और स्तालिन (जो अभी जीवित हैं) ने चीनियों पर थोपा है ; साथ ही यह वाद और यह व्यवस्था निहायत ही बुरी चीजें हैं, क्योंकि ये वर्ग-संघर्ष करने और साम्राज्यवाद को नष्ट करने आदि का प्रतिपादन करती हैं, और इसलिए इन्हें अवश्य खत्म करना होगा। इसी सिलसिले में कहा जाता है कि प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन, कठपुतली नचाने वाले कमाण्डर-इन-चीफ मार्शल, विदेश

मंत्री अचेसन (श्वेतपत्र के प्रकाशन के लिए जिम्मेदार एक मनमोहक विदेशी शरीफजादा) और दुम दबाकर भाग खड़े होने वाले राजदूत लीटन स्टुअर्ट के "प्रोत्साहन" से चीन का "जनवादी व्यक्तिवाद फिर अपना सिक्का जमा लेगा"। अचेसन और अचेसन सरीखे लोगों का खयाल है कि वे "प्रोत्साहन" दे रहे हैं, लेकिन चीन के उन जनवादी व्यक्तिवादियों के, जो अमरीका पर विश्वास करने वाले होने पर भी देशप्रेम की भावना रखते हैं, यह महसूस करने की काफी सम्भावना मौजूद है कि इस प्रोत्साहन से उन पर और उनकी प्रतिष्ठा पर पानी फिर गया है ; कारण, चीनी जनता के जनवादी अधिनायकत्व के अधिकारियों के साथ यथोचित बरताव करने के बजाय अचेसन और अचेसन सरीखे लोग यह गन्दा काम करने लगे हैं, और इतना ही नहीं उन्होंने खुल्लमखुल्ला इसे प्रकाशित भी कर डाला है। इससे उनकी प्रतिष्ठा को कितना धक्का लगा है ! सचमुच कितना धक्का लगा है ! देशप्रेम की भावना रखने वाले लोगों के लिए अचेसन का कथन "प्रोत्साहन" नहीं, बल्कि सरासर अपमान है।

चीन एक महान क्रान्ति के दौर से गुजर रहा है। समूचे चीन में उत्साह का सागर हिलोरें ले रहा है। गलत धारणाओं से ग्रस्त होने के बावजूद जिन लोगों के मन में जन-क्रान्ति के कार्य के प्रति गहरी शत्रुता और तीव्र घृणा की भावना नहीं है, उन सभी लोगों को अपने पक्ष में करने और उनके साथ एकता कायम करने के लिए परिस्थिति अनुकूल है। इन तमाम लोगों को समझाने-बुझाने के लिए, आगे बढ़े हुए लोगों को इस श्वेतपत्र का उपयोग करना चाहिए।

नोट

१ यहां अमरीकी श्वेतपत्र से तात्पर्य ५ अगस्त १९४९ को अमरीकी विदेश विभाग की ओर से प्रकाशित "चीन के साथ अमरीका के सम्बन्ध" नामक श्वेतपत्र से है। ट्रूमैन के नाम अचेसन के पत्र से तात्पर्य उस पत्र से है जिसे अमरीकी विदेश विभाग द्वारा श्वेतपत्र तैयार किए जाने के बाद अचेसन ने ३० जुलाई १९४९ को ट्रूमैन को लिखा था। श्वेतपत्र का मूलपाठ आठ अध्यायों में बटा हुआ है, जिसमें "वाङश्या सन्धि" पर हस्ताक्षर करने के लिए चीन को अमरीका द्वारा मजबूर किए जाने के समय यानी १८४४ से लेकर सम्पूर्ण देश में चीनी जन-क्रान्ति की बुनियादी विजय होने यानी १९४९ तक के चीन-अमरीका सम्बन्धों का वर्णन किया गया है। श्वेतपत्र में इस बात का विशेष ब्योरा दिया गया है कि जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के अन्तिम काल से लेकर १९४९ तक के पांच वर्षों में अमरीका ने कम्युनिस्टों के विरुद्ध च्याङ काई-शेक की मदद करने की नीति कैसे अपनाई, हर सम्भव उपाय से चीनी जनता का विरोध कैसे किया और अन्त में मात कैसे खाई। श्वेतपत्र और ट्रूमैन के नाम अचेसन का पत्र, ये दोनों सही को गलत और गलत को सही बताने, तथ्यों को छिपाने व मनगढ़न्त बातों का सहारा लेने के साथ-साथ चीनी जनता के विरुद्ध जहरीले लांछना और गहरी घृणा से भरे पड़े हैं। उस समय चीन के बारे में अमरीकी नीति के सवाल पर अमरीका के प्रतिक्रियावादी खेमे के भीतर आपस में जो झगड़ा उठ खड़ा हुआ, उसमें ट्रूमैन और अचेसन आदि साम्राज्यवादियों ने अपने विरोधियों से अपनी बात मनवाने के प्रयास में विवश होकर श्वेतपत्र के जरिए अपने प्रतिक्रान्तिकारी कारनामों में से कुछ का भेद सार्वजनिक रूप से खोल दिया। इस तरह वस्तुगत रूप से यह श्वेतपत्र अमरीकी साम्राज्यवाद के चीन-विरोधी आक्रमण के अपराधों का इकबालनामा बन गया।

२ यह युद्ध उत्तर-पूर्वी चीन और कोरिया को हड़पने के लिए १९०४-०५ में जापान तथा जारशाही रूस के बीच का एक साम्राज्यवादी युद्ध था। चूंकि यह युद्ध मुख्य रूप से उत्तर-पूर्वी चीन के फङथ्येन (आज का शनयाङ) व ल्याओयाङ के

इलाके में और ल्याओतुङ बन्दरगाह के इर्दगिर्द लड़ाया गया था, इसलिए चीनी जनता को इससे भारी हानि उठानी पड़ी। इस युद्ध का परिणाम यह हुआ कि इसमें जारशाही रूस हार गया और उत्तर-पूर्वी चीन में उसके स्थान पर जापानी साम्राज्यवाद का प्रभुत्व कायम हो गया। इस युद्ध की समाप्ति पर जो शान्ति सन्धि (पोर्ट्समाउथ सन्धि) हुई, उसके अधीन जारशाही रूस को कोरिया पर जापान का पूर्ण नियंत्रण भी स्वीकार करना पड़ा।

अलविदा, लीटन स्टुअर्ट !

१८ अगस्त १६४६

यह बात समझ में आ सकती है कि अमरीकी श्वेतपत्र के प्रकाशन की तिथि ५ अगस्त यानी एक ऐसे समय क्यों चुनी गई जब लीटन स्टुअर्ट नानकिङ से चल पड़ा था, और वह वाशिंगटन पहुंचने वाला तो था पर अभी वहां पहुंचा नहीं था, क्योंकि लीटन स्टुअर्ट अमरीका की आक्रमणकारी नीति की पूर्ण पराजय का प्रतीक है। लीटन स्टुअर्ट चीन में पैदा हुआ एक अमरीकी है ; चीन में उसका सामाजिक सम्पर्क काफी व्यापक है और वह चीन में मिशनरी स्कूलों को चलाने में अनेक वर्ष बिता चुका है ; जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान वह एक बार जापानी जेल की हवा भी खा चुका है ; वह सदैव अमरीका तथा चीन दोनों को समान रूप से प्यार करने का स्वांग रचता आया है और इस प्रकार बहुत से चीनियों की आंखों में धूल झोंक चुका है। यही वजह है कि जार्ज सी० मार्शल ने उसे चुनकर चीन में अमरीकी राजदूत बनाया और वह मार्शल गुट का एक नामी व्यक्ति बन गया। मार्शल गुट की निगाह में लीटन स्टुअर्ट में खोट बस इतना ही था कि जब वह उस गुट की नीति के प्रतिनिधि के रूप में चीन में राजदूत था ठीक उसी दौरान चीनी जनता ने उस नीति को पूरी तरह धूल चटा दी ; यह जवाबदेही कोई छोटी-मोटी न थी। यह

स्वाभाविक ही है कि श्वेतपत्र, जिसका मकसद इस जवाबदेही से बचना है, एक ऐसे समय प्रकाशित किया गया जब लीटन स्टुअर्ट वाशिंगटन की ओर चल तो पड़ा था पर अभी वहां पहुंचा नहीं था।

चीन को अमरीकी उपनिवेश बनाने का युद्ध, जिसमें अमरीका अपना धन तथा बन्दूकें झोंकता है और च्यांग काई-शेक अमरीका की ओर से लड़ने तथा चीनियों का वध करने के लिए भाड़े के टट्टू जुटाता है, दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से ही अमरीकी साम्राज्यवाद की विश्वव्यापी आक्रमण की नीति का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। अमरीका की आक्रमणकारी नीति के अनेक निशाने हैं। योरप, एशिया और अमरीकी महाद्वीप उसके तीन मुख्य निशाने हैं। चीन, जो एशिया का गुरुत्व-केन्द्र है, ४७ करोड़ ५० लाख आबादी वाला एक विशाल देश है ; चीन पर अधिकार जमाकर सारे एशिया पर अमरीका का प्रभुत्व कायम हो जाएगा। एशिया का मोर्चा सुदृढ़ कर लेने के बाद अमरीकी साम्राज्यवाद योरप पर हमला करने के लिए अपनी सारी शक्ति केन्द्रित कर सकेगा। अमरीकी साम्राज्यवाद अमरीकी महाद्वीप के अपने मोर्चे को अपेक्षाकृत मजबूत समझता है। यही है अमरीकी हमलावरों का खुशफहमीभरा सम्पूर्ण अनुमान।

लेकिन पहली बात यह है कि अमरीकी जनता और समूची दुनिया की जनता युद्ध नहीं चाहती। दूसरी बात यह है कि अमरीका का अधिकतर ध्यान योरप की जनता के जागरण और पूर्वी योरप में जनता की लोकशाहियों के उदय ने उलझा रखा है और खास तौर पर अभूतपूर्व शक्तिशाली शान्ति-दुर्ग सोवियत संघ ने उलझा रखा है, जो योरप और एशिया दोनों महाद्वीपों के बीच ऊंचा खड़ा है और जो अमरीका की आक्रमणकारी नीति का दृढ़तापूर्वक प्रतिरोध कर

रहा है। तीसरी, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि चीनी जनता जाग उठी है और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में सशस्त्र शक्तियां और जन-समुदाय की संगठित शक्तियां अब अभूतपूर्व रूप से शक्तिशाली हो गई हैं। परिणाम यह हुआ है कि अमरीकी साम्राज्यवादी सत्ताधारी गुट को चीन पर सीधे बड़े पैमाने का सशस्त्र आक्रमण करने की नीति अपनाने से बाज आना पड़ा है और उसने च्यांग काई-शेक को गृहयुद्ध लड़ने में सहायता देने की नीति अपना ली है।

चीन के युद्ध में अमरीका की जल, थल और वायु सेनाओं ने भी भाग लिया है। छिङताओ, शांघाई और थाइवान में अमरीका के नौसैनिक अड्डे थे। पेकिङ, थ्येनचिन, थाङशान, छिनह्वाङताओ, छिङताओ, शांघाई और नानकिङ में अमरीकी सेनाएं टिकी हुई थीं। चीन का सारा वायु-क्षेत्र अमरीकी वायुसेना के नियंत्रण में था और उस सेना ने सारे चीन के रणनीतिक महत्व के क्षेत्रों के फौजी नक्शे बनाने के लिए हवाई फोटो लिए थे। पेकिङ के पास आनफिङ कस्बे में, छाङछुन के पास च्योथाए में, थाङशान और पूर्वी शानतुङ प्रायद्वीप में अमरीकी सैनिक टुकड़ियों या अन्य सैनिक कर्मचारियों की जन-मुक्ति सेना से मुठभेड़ें हुईं और कई अवसरों पर वे बन्दी भी बनाए गए।[३] चेनाल्ट के हवाई बेड़े ने युद्ध में व्यापक रूप से भाग लिया।[४] च्यांग काई-शेक की सेनाएं लाने व ले जाने के अतिरिक्त अमरीकी वायुसेना ने क्वोमिन्ताङ के विरुद्ध विद्रोह करने वाले क्रूजर "छुङकिङ" पर बमबारी की और उसे डुबो दिया।[५] ये सब युद्ध में प्रत्यक्ष भाग लेने की कार्यवाहियां थीं, हालांकि युद्ध की खुल्लमखुल्ला घोषणा करने की नौबत नहीं आई और न ही ये कार्यवाहियां बड़े पैमाने पर की गईं, तथा अमरीकी आक्रमण का मुख्य तरीका गृहयुद्ध में च्यांग काई-

शेक की मदद करने के लिए उसे धन, बन्दूकें और सलाहकार बड़ी तादाद में मुहय्या करने का तरीका ही रहा।

अमरीका द्वारा इस तरीके का प्रयोग किया जाना चीन की और सारे संसार की वस्तुगत परिस्थिति से निर्धारित हुआ, न कि इस बात से कि अमरीकी साम्राज्यवाद का सत्ताधारी ट्रूमैन-मार्शल गुट चीन पर सीधा आक्रमण नहीं करना चाहता था। गृहयुद्ध में च्याङ काई-शेक को सहायता देने के शुरू के दौर में एक तमाशा रचा गया जिसमें अमरीका ने क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के झगड़ों में मध्यस्थता करने का स्वांग रचा; यह स्वांग चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को नरम बनाने, चीनी जनता को छलने और बिना लड़े ही सारे चीन पर काबू पा लेने की नियत से रचा गया था। शान्ति-वार्ता विफल रही, धोखाधड़ी चल न पाई और युद्ध शुरू हो गया।

अमरीका के बारे में भ्रम रखने वाले और सहज ही भूलने वाले उदारपंथियो, या तथाकथित "जनवादी व्यक्तिवादी" लोगो, कृपया अचेसन के इन शब्दों पर ध्यान दो :

> जब शान्ति कायम हुई, तो चीन में अमरीका के सामने तीन सम्भव विकल्प थे : (१) वह अपना बोरिया-बिस्तरा समेट लेता; (२) वह कम्युनिस्टों को नष्ट करने में क्वोमिन्ताङ की मदद करने के लिए बड़े पैमाने पर फौजी हस्तक्षेप करता; (३) वह चीन के यथासम्भव अधिक से अधिक भाग पर क्वोमिन्ताङ का सिक्का जमाने में उसकी मदद करने के साथ-साथ दोनों पक्षों के बीच समझौता कराने के प्रयत्नों के जरिए गृहयुद्ध टाल देता।

आखिर अमरीका ने पहली नीति क्यों नहीं अपनाई? अचेसन कहता है :

> पहले विकल्प का अर्थ होता, और मेरे विचार में उस समय अमरीकी लोकमत यही महसूस भी करता था, कि हमने सहायक सिद्ध होने की भरपूर कोशिश करने से पहले ही अपनी अन्तर-राष्ट्रीय जिम्मेदारियों से पिण्ड छुड़ा लिया है और चीन के साथ दोस्ती की अपनी परम्परागत नीति का परित्याग कर दिया है।

वास्तविकता यह है : अमरीका की "अन्तरराष्ट्रीय जिम्मेदारियां" और उसकी "चीन के साथ दोस्ती की अपनी परम्परागत नीति" चीन में हस्तक्षेप करने का ही दूसरा नाम है। हस्तक्षेप को ही अन्तर-राष्ट्रीय जिम्मेदारियां निभाना कहा गया है, और हस्तक्षेप को ही चीन के साथ दोस्ती रखना कहा गया है; तब तो हस्तक्षेप किए बिना काम नहीं चल सकता। यहां अचेसन अमरीकी लोकमत के नाम को कलंकित कर रहा है; उसका "लोकमत" अमरीकी जनता का लोकमत नहीं, बल्कि वाल-स्ट्रीट का लोकमत है।

अमरीका ने दूसरी नीति क्यों नहीं अपनाई? अचेसन कहता है :

> दूसरी वैकल्पिक नीति, हालांकि सैद्धान्तिक रूप में और सिंहा-वलोकन करने में अधिक आकर्षक लगती है, पूरी तरह अव्या-वहारिक थी। युद्ध से पहले के दस वर्ष की अवधि में क्वोमिन्ताङ कम्युनिस्टों को कुचलने में असमर्थ रही। अब युद्ध के बाद, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, क्वोमिन्ताङ शक्तिहीन, हतोत्साह और अलोकप्रिय हो चुकी थी। जापानियों से मुक्त किए गए

क्षेत्रों में अपने सैनिक व असैनिक अधिकारियों के आचरण के कारण वह अपने लोक-समर्थन को और अपनी प्रतिष्ठा को तेजी से गंवा बैठी थी। दूसरी ओर कम्युनिस्ट पहले के किसी भी दौर के मुकाबले कहीं अधिक शक्तिशाली हो चुके थे और लगभग पूरा उत्तरी चीन उनके नियंत्रण में हो गया था। क्वोमिन्ताङ सेनाओं का जो निकम्मापन बाद में बड़े ही दर्दनाक रूप में सामने आया, उसकी वजह से शायद केवल अमरीकी सेनाएं ही कम्युनिस्टों को भगा सकती थीं। जाहिर है कि अमरीकी जनता १९४५ या बाद में भी अपनी सेनाओं को इतनी भारी जिम्मेदारी अपने सिर पर लेने की मंजूरी न देती। इसीलिए हमने तीसरी वैकल्पिक नीति अपनाई। . . .

कितना शानदार उपाय है! अमरीका अपना धन और बन्दूकें झोंकता है और च्याङ काई-शेक अमरीका की ओर से लड़ने और चीनियों का वध करने के लिए, "कम्युनिस्टों को नष्ट करने" और चीन को अमरीका का उपनिवेश बनाने के लिए भाड़े के टट्टू जुटाता है, ताकि अमरीका अपनी "अन्तरराष्ट्रीय जिम्मेदारियां" निभा सके और "चीन के साथ दोस्ती की अपनी परम्परागत नीति" को अमली जामा पहना सके।

हालांकि क्वोमिन्ताङ भ्रष्ट, अयोग्य, "हतोत्साह और अलोकप्रिय" थी, फिर भी अमरीका उसे धन और बन्दूकें देता रहा और लड़ाता रहा। सीधा सशस्त्र हस्तक्षेप करना "सैद्धान्तिक रूप से" उचित था। अकेले अमरीकी शासकों के लिए यह "सिंहावलोकन" की दृष्टि से भी उचित था। कारण, सीधा सशस्त्र हस्तक्षेप करना सचमुच अमरीका

को रुचता था तथा "अधिक आकर्षक लगता" था। परन्तु व्यवहार में यह नीति चल नहीं पाती, क्योंकि "जाहिर है कि अमरीकी जनता" इसकी "मंजूरी न देती"। ऐसा नहीं है कि ट्रूमैन, मार्शल, अचेसन आदि लोगों का साम्राज्यवादी गुट इस हस्तक्षेप को चाहता नहीं था। चाहता तो वह इसे बहुत अधिक था, मगर चीन की परिस्थिति, अमरीका की परिस्थिति और सारे संसार की परिस्थिति (इसका उल्लेख अचेसन ने नहीं किया) ही कुछ ऐसी थी कि वह ऐसा करने की इजाजत नहीं देती थी; उन्हें मजबूर होकर अपनी पसन्द को छोड़कर तीसरा रास्ता अपनाना पड़ा।

जिन चीनी लोगों का विचार यह है कि "अन्तरराष्ट्रीय सहायता के बिना भी विजय सम्भव है" वे जरा सुन लें। अचेसन आप लोगों को एक पाठ पढ़ा रहा है। अचेसन एक अच्छा अध्यापक है जो बिना फीस के पढ़ा रहा है तथा अनथक उत्साह और निष्कपटता से पूरी सच्चाई बतला रहा है। चीन पर आक्रमण करने के लिए अमरीका द्वारा विशाल सेनाएं न भेजे जाने का कारण यह नहीं है कि अमरीका सरकार ऐसा करना नहीं चाहती थी, बल्कि यह है कि वह कुछ चिन्ताओं से परेशान थी। उसकी पहली चिन्ता यह थी कि चीनी जनता उसका विरोध करेगी और वह इस बात से डरती थी कि अगर वह दलदल में फंस गई तो निकल नहीं सकेगी। उसकी दूसरी चिन्ता यह थी कि अमरीकी जनता उसका विरोध करेगी और इसीलिए वह लामबन्दी का आदेश देने का साहस न कर सकी। उसकी तीसरी चिन्ता यह थी कि सोवियत संघ व योरप की और अन्य देशों की जनता उसका विरोध करेगी और उसे विश्वव्यापी लानत-मलामत का सामना करना पड़ेगा। अचेसन की मनमोहक साफगोई की भी

अपनी सीमा है, और वह तीसरी चिन्ता का उल्लेख करने से कतराता है। कारण यह कि वह सोवियत संघ के आगे लज्जित होने से डरता है, इस बात से डरता है कि योरप में मार्शल योजना[१] का भट्ठा बैठ जाएगा, जो पहले ही विफल हो चुकी है लेकिन फिर भी यह दम भरती है मानो वह विफल न हुई हो।

अदूरदर्शी, उलझे दिमाग वाले उदारपंथी या जनवादी व्यक्तिवादी चीनी लोगो, जरा सुन लो। अचेसन तुम्हें एक पाठ पढ़ा रहा है; वह तुम्हारे लिए एक बड़ा अच्छा अध्यापक है। उसने तुम्हारी कल्पित अमरीकी दयालुता, न्याय और नैतिकता पर पूरी तरह झाड़ू फेर दिया है। है न यही बात? श्वेतपत्र में या अचेसन के पत्र में क्या तुम्हें दयालुता, न्याय और नैतिकता कहीं लेशमात्र भी दिखाई देती है?

यह सच है कि अमरीका के पास विज्ञान और तकनालाजी मौजूद हैं। परन्तु दुर्भाग्यवश ये पूंजीपतियों की मुट्ठी में हैं, जनता के हाथ में नहीं; तथा इनका इस्तेमाल अमरीका के भीतर की जनता का शोषण और उत्पीड़न करने के लिए और अमरीका के बाहर की जनता पर आक्रमण करने और उसकी हत्या करने के लिए किया जाता है। अमरीका में "जनवाद" भी है। परन्तु दुर्भाग्यवश यह पूंजीपति वर्ग के खुद अपने ही तानाशाह शासन का दूसरा नाम है। अमरीका के पास धन भी प्रचुर मात्रा में है। परन्तु दुर्भाग्यवश वह इसे अत्यन्त सड़े-गले च्याङ काई-शेक प्रतिक्रियावादियों को ही देने को राजी है। कहा जाता है कि अमरीका चीन में अपने पांचवें दस्ते को कुछ धन देने के लिए तो बिलकुल राजी है और सदा राजी रहेगा, मगर उन मामूली उदारपंथियों या जनवादी व्यक्तिवादियों को धन

देने के लिए तैयार नहीं जो जरूरत से ज्यादा किताबी किस्म के होने के कारण एहसान की कद्र करना भी नहीं जानते। और यह स्वाभाविक ही है कि कम्युनिस्टों को धन देना तो वह कतई नहीं चाहता। धन दिया जा सकता है, मगर एक शर्त पर। वह शर्त क्या है? शर्त है अमरीका का अनुसरण करो। अमरीकियों ने पेकिङ, थ्येनचिन और शांघाई में राहत के नाम पर थोड़ा सा आटा छिड़क दिया है, यह देखने के लिए कि इसे बटोरने कौन झुकता है! च्याङ थाए कुङ की माहीगिरी की तरह उसकी बंसी में वही मछलियां आ फंसेंगी जो खुद ही फंसना चाहती हों। परन्तु जो कोई तिरस्कार से दिए गए अन्न को निगलेगा उसके पेट में शूल उठ जाएगा।[१]

हम चीनी लोगों की रीढ़ बड़ी मजबूत होती है। बहुत से लोग जो कभी उदारपंथी या जनवादी व्यक्तिवादी थे, अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा उनके पालतू कुत्तों, क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के आगे तनकर खड़े हो गए। वन ई-त्वो मेज पर घूंसा मारकर उठ खड़ा हुआ और उसने गुस्से से तमतमाकर क्वोमिन्ताङ की पिस्तौलों का सामना किया और गरदन झुकाने के बदले मरना कबूल किया।[२] चू चि-छिङ ने बुरी तरह बीमार होने पर भी अमरीका के "सहायतार्थ अन्न" को स्वीकार करने के बजाय भूख से जान दे दी।[३] थाङ वंश के हान य्वी ने "पो ई की प्रशंसा"[४] नाम का कसीदा लिखा था, जिसमें एक ऐसे व्यक्ति – पो ई का गुणगान किया गया जो अपने देश की जनता के प्रति अपना कर्तव्य निभाने के बजाय अपने पद को छोड़कर भाग खड़ा हुआ था, राजा ऊ के नेतृत्व में लड़े गए उस युग के जन-मुक्ति युद्ध का भी विरोधी था और "जनवादी व्यक्तिवाद" की अनेक धारणाओं से चिपका हुआ था। हान य्वी ने गलत व्यक्ति का

गुणगान किया। हमें अपने राष्ट्र की वीर-भावना प्रदर्शित करने वाले वन ई-त्वो और चू चि-छिङ की प्रशंसा में कसीदे लिखने चाहिए।

हमें अगर कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़े तो क्या हुआ? वे भले ही हमारी नाकाबन्दी करें! वे यह नाकाबन्दी भले ही आठ या दस वर्षों तक किए रहें! उस समय तक चीन की सारी समस्याएं सुलझ चुकी होंगी। मौत से भी न डरने वाले चीनी क्या कठिनाइयों से डर जाएंगे? लाओ चि ने कहा है: "जनता मौत से नहीं डरती, उसे मौत की धमकी देकर क्या होगा?"[१०] अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्तों, च्याङ काई-शेक प्रतिक्रियावादियों ने न सिर्फ हमें "मौत की धमकी" दी है बल्कि हममें से बहुत से लोगों को मार भी डाला है। पिछले तीन वर्षों में वन ई-त्वो जैसे लोगों के अतिरिक्त दसियों लाख दूसरे चीनियों को उन्होंने अमरीकी कारबाइनों, मशीनगनों, मार्टर-गनों, राकेट-तोपों, हाविट्जर तोपों और टैंकों से तथा विमानों द्वारा बरसाए गए बमों से मारा है। अब यह स्थिति समाप्त हो रही है। वे पराजित हो गए हैं। अब उन पर हमले करने के लिए हमी लोग आगे बढ़ रहे हैं, हम पर हमले करने के लिए वे लोग नहीं। उनका खात्मा जल्द ही हो जाएगा। यह सच है कि नाकाबन्दी, बेकारी, अकाल, मुद्रा-स्फीति, बढ़ती हुई महगाई आदि जो कठिन समस्याएं हमारे सामने बच गई हैं, वे सब हमारी कठिनाइयां हैं, लेकिन पिछले तीन वर्षों की तुलना में अब हमने राहत की सांस लेनी शुरू कर दी है। पिछले तीन वर्षों की अग्नि-परीक्षा में हम खरे उतरे हैं, क्या आज की इन कुछ कठिनाइयों पर भी हम काबू नहीं पा सकते? क्या अमरीका के बिना हम सब जिन्दा नहीं रह सकते?

जब जन-मुक्ति सेना ने याङत्सी नदी पार की, तो नानकिङ स्थित अमरीकी औपनिवेशिक सरकार तितर-बितर होकर भाग खड़ी हुई। फिर भी महामहिम राजदूत लीटन स्टुअर्ट अकड़ा बैठा रहा और आंखें फाड़कर ताकते हुए यह आस लगाए रहा कि मौका मिले तो कोई नया साइनबोर्ड लटकाकर अपनी दुकान फिर चालू कर दे और कुछ मुनाफा बटोर ले। मगर उसे क्या दिखाई पड़ा? जन-मुक्ति सेना की पांत पर पांत आगे बढ़ती जा रही थी और मजदूरों, किसानों व विद्यार्थियों के दल के दल उमड़ रहे थे; इसके अलावा महामहिम ने कुछ और भी देखा: चीनी उदारपंथी या जनवादी व्यक्तिवादी बड़ी संख्या में मजदूरों, किसानों, सैनिकों और विद्यार्थियों के साथ नारे लगा रहे थे और क्रान्ति की बातें कर रहे थे। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि उसकी ऐसी उपेक्षा की गई कि बेचारा "बिलकुल अकेला ही खड़ा रह गया, बस उसकी काया और छाया ही एक दूसरी को ढाढ़स बंधाती रहीं"।[११] उसके करने को अब कुछ न बचा था और उसे अपना बस्ता समेटकर रास्ता नापना पड़ा।

चीन में आज भी कुछ बुद्धिजीवी तथा अन्य लोग ऐसे हैं जो उलझे दिमाग के हैं और जिनके मन में अमरीका के बारे में भ्रमजाल मौजूद है। इसलिए हमें चाहिए कि हम उन्हें समझाएं-बुझाएं, प्रयत्नपूर्वक अपने पक्ष में कर लें, शिक्षित करें और उनके साथ एकता कायम करें, ताकि वे जनता के पक्ष में आ मिलें, साम्राज्यवाद द्वारा बिछाए हुए जाल में न फंस जाएं। लेकिन चीनी जनता के बीच अमरीकी साम्राज्यवाद की प्रतिष्ठा का पूरी तरह दिवाला निकल चुका है और श्वेतपत्र उसके दिवालिएपन का रिकार्ड है। आगे बढ़े हुए लोगों को

चाहिए कि वे चीनी जनता को शिक्षित करने में श्वेतपत्र का पूरा-पूरा लाभ उठाएं।

लीटन स्टुअर्ट जा चुका है और श्वेतपत्र आ चुका है। यह बहुत अच्छा हुआ, बहुत ही अच्छा हुआ। दोनों ही बातें खुशी मनाने योग्य हैं।

नोट

[1] जान लीटन स्टुअर्ट, जो १८७६ में चीन में ही पैदा हुआ था, सदा ही चीन पर अमरीकी सांस्कृतिक आक्रमण का वफादार दलाल रहा। उसने १९०५ में चीन में मिशनरी के रूप में कार्य प्रारम्भ किया और १९१९ में वह पेकिङ में येनचिङ विश्वविद्यालय का प्रेसीडेन्ट बना, जिसे चीन में अमरीका ने स्थापित किया था। ११ जुलाई १९४६ को उसे चीन में अमरीकी राजदूत नियुक्त किया गया। उसने जन-विरोधी गृहयुद्ध चलाने में क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों का सक्रिय रूप से समर्थन किया और चीनी जनता के विरुद्ध बहुत सी राजनीतिक साजिशें रचीं। चीनी जनता की क्रान्ति की विजय में रुकावट डालने के सभी प्रयत्नों में अमरीकी साम्राज्यवाद के पूर्ण रूप से विफल हो जाने के परिणामस्वरूप, २ अगस्त १९४९ को लीटन स्टुअर्ट चुपके से चीन से खिसक गया।

[2] १९४५ में जापान द्वारा आत्मसमर्पण किए जाने के बाद चीन की प्रादेशिक भूमि व प्रभुसत्ता पर आक्रमण करने और उसके घरेलू मामलों में हस्तक्षेप करने के इरादे से अमरीकी सेनाएं चीन में उतर आईं और पेकिङ, शांघाई, नानकिङ, थ्येनचिन, थाङशान, काएफिङ, छिनह्वाङताओ, चिङहाए, छिङताओ और दूसरे स्थानों पर जम गईं। साथ ही अमरीकी सेनाओं ने मुक्त क्षेत्रों पर भी बार-बार हमले किए। २९ जुलाई १९४६ को थ्येनचिन स्थित अमरीकी सेनाओं ने च्याङ काई-शेक की डाकू सेनाओं के साथ मिलकर हपे प्रान्त की श्याङहो काउन्टी के आनफिङ कस्बे पर आक्रमण किया; इस लेख के मूल पाठ में आनफिङ घटना का उल्लेख इसी

घटना की ओर संकेत करता है। १ मार्च १९४७ को अमरीकी सैनिकों ने छाङछन और ल्याओथाए के बीच होशीयाओ में स्थित जन-मुक्ति सेना के मोर्चे की फौजी टोह ली, जो ल्याओथाए घटना कहलाती है। १६ जून १९४६ को थाङशान स्थित अमरीकी सेना ने सुङच्याटङ और दूसरे स्थानों पर हमले किए और जुलाई में थाङशान के निकट दो गांवों, ल्वानश्येन काउन्टी के सानहो गांव और छाङली काउन्टी के शीहोनान गांव पर हमले किए। यह थाङशान घटना कहलाती है। अमरीकी सेनाओं द्वारा पूर्वी शानतुङ प्रायद्वीप पर अनेक बार जो अतिक्रमण किए गए उनमें से दो सबसे अधिक कुख्यात हैं : एक था २८ अगस्त १९४७ को मओफिङ काउन्टी के लाङन्वानख्औ और श्याओली द्वीप पर अमरीकी हवाईजहाजों और युद्धपोतों का अतिक्रमण तथा दूसरा था २५ दिसम्बर १९४७ को चीमो काउन्टी के उत्तर में स्थित वाङछिनच्वाङ गांव पर अमरीकी सेनाओं और च्याङ काई-शेक की डाकू सेनाओं का संयुक्त अतिक्रमण। मुक्त क्षेत्रों पर अमरीकी सेनाओं के उपरोक्त अतिक्रमणों का मुकाबला करने के लिए चीनी जन-मुक्ति सेना और स्थानीय जनता के सशस्त्र सैन्य-दलों ने गम्भीरता के साथ रक्षात्मक कार्यवाहियां कीं।

[3] क्लेयर ली शेनाल्ट किसी समय क्वोमिन्ताङ सरकार की वायुसेना का अमरीकी सलाहकार था। जापान के आत्मसमर्पण के बाद उसने अमरीका के चौदहवें हवाई बेड़े के कर्मचारियों के एक भाग को गृहयुद्ध में क्वोमिन्ताङ की मदद करने के लिए हवाई परिवहन कोर के रूप में संगठित किया। उसकी हवाई परिवहन कोर ने मुक्त क्षेत्रों की फौजी टोह लेने और उन पर बमबारी करने के अपराधों में प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया।

[4] देखिए इसी ग्रन्थ में "बरतानवी युद्धपोतों द्वारा की गई नृशंसतापूर्ण कार्यवाही के बारे में चीनी जन-मुक्ति सेना के जनरल हेडक्वार्टर के प्रवक्ता का वक्तव्य" शीर्षक रचना का नोट ४।

[5] ५ जून १९४७ को अमरीकी विदेश मन्त्री जार्ज सी० मार्शल ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय में योरप के पुनरुद्धार के लिए तथाकथित अमरीकी "सहायता" पर भाषण दिया; बाद में इस भाषण के आधार पर अमरीका सरकार ने "योरपीय पुनरुद्धार कार्यक्रम" तैयार किया जो "मार्शल योजना" कहलाता है।

[६] यह एक लोककथा है। कहा जाता है कि चओ वंश के च्याङ ताए कुङ ने एक बार वेइ नदी पर कटिया या चारा लगाए बिना ही बंसी को छोर पानी से गजभर ऊपर रखकर यह कहते हुए माहीगिरी की कि "जिन मछलियों का पकड़ा जाना बदा होगा, वे पानी से ऊपर उछलकर खुद-ब-खुद फंस जाएं।" देखिए "इन वंश के खिलाफ राजा ऊ के अभियान की कहानियां"। "तिरस्कार से दिए गए अन्न" का संकेत अपमानजनक दान की ओर है। ची राज्य के एक भूखे आदमी को भूखों मर जाना मंजूर था, पर तिरस्कार से दिया गया अन्न कबूल न था। इस कहानी के बारे में देखिए "लि-चि-संहिता" नामक पुस्तक के "थानकुङ" शीर्षक लेख का दूसरा भाग।

[७] वन ई-त्वो (१८९९-१९४६) एक प्रसिद्ध चीनी कवि, विद्वान और प्रोफेसर था। १९४३ के बाद च्याङ काई-शेक की प्रतिक्रियावादी और भ्रष्ट सरकार के प्रति तीव्र घृणा पैदा होने के परिणामस्वरूप उसने जनवाद प्राप्त करने के संघर्ष में सक्रिय रूप से भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की समाप्ति पर क्वोमिन्ताङ द्वारा जन-विरोधी गृहयुद्ध छेड़ने की नीयत से अमरीकी साम्राज्यवाद के साथ सांठगांठ किए जाने का भी उसने सक्रियता से विरोध किया। १५ जुलाई १९४६ को कुनमिङ में क्वोमिन्ताङ डाकू गिरोह ने उसकी गुप्त रूप से हत्या कर दी।

[८] चू चि-छिङ (१८९८-१९४८) एक आधुनिक चीनी साहित्यकार और प्रोफेसर था। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की समाप्ति के बाद, उसने च्याङ काई-शेक शासन के विरुद्ध विद्यार्थी आन्दोलन का सक्रिय रूप से समर्थन किया। जून १९४८ में उसने अमरीका द्वारा जापानी सैन्यवाद को पुनर्जीवित करने का विरोध करने वाले और "अमरीकी सहायता" के रूप में आटा ग्रहण करने से इनकार करने वाले एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए। उस समय वह बड़ी ही गरीबी के दिन बिता रहा था। गरीबी और बीमारी से पेइफिङ में १२ अगस्त १९४८ को उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु-शय्या से भी उसने अपने परिवार के लोगों को यही ताकीद की कि राशन में क्वोमिन्ताङ सरकार की ओर से बांटा जाने वाला अमरीकी आटा वे हरगिज न लें।

[९] हान य्वी (७६८-८२४) थाङ वंश का एक प्रसिद्ध लेखक था। "पो ई की

प्रशंसा" नामक कसीदा उसकी एक गद्य-कृति है। पो ई इन वंश के अन्तिम काल का निवासी था। उसने इन वंश के विरुद्ध चओ के राजा ऊ के अभियान का विरोध किया। इन वंश के पतन के बाद चओ का अन्न ग्रहण करने के बजाय वह भागकर शओयाङ पहाड़ पर चला गया और भूख से तड़पकर मर गया।

[१०] देखिए "लाओ त्सि", अध्याय ७४।

[११] देखिए ली स्स की रचना "सम्राट के नाम याचिका"।

श्वेतपत्र पर बहस करना क्यों आवश्यक है

२८ अगस्त १९४९

हमने अमरीकी श्वेतपत्र और अचेसन के पत्र की आलोचना तीन लेखों ("विवशता की स्वीकृति",[1] "भ्रमजाल को त्याग दो और संघर्ष के लिए तैयार हो जाओ" तथा "अलविदा, लीटन स्टुअर्ट !") में की है। हमारी इस आलोचना ने देशभर की सभी जनवादी पार्टियों, जन-संगठनों, प्रेस, विश्वविद्यालयों व स्कूलों तथा विविध व्यवसायों के गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों का ध्यान व्यापक रूप से आकर्षित किया है और उनके बीच व्यापक बहस छिड़ गई है; उन लोगों ने बहुत सी सही और उपयोगी घोषणाओं, वक्तव्यों अथवा टिप्पणियों को जारी किया है। श्वेतपत्र पर बहस करने के लिए बैठकें बुलाई जा रही हैं और पूरी बहस अब भी विकसित हो रही है। बहस के विषय है : चीन-अमरीका सम्बन्ध, चीन-सोवियत सम्बन्ध, पिछले सौ वर्षों में विदेशों के साथ चीन के सम्बन्ध, चीन की क्रान्ति और संसार की क्रान्तिकारी शक्तियों के आपसी सम्बन्ध, क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों और चीनी जनता के सम्बन्ध, साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष में विभिन्न जनवादी पार्टियों व जन-संगठनों और विविध व्यवसायों के गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों को कौन सा रुख अपनाना चाहिए,

देश के सारे आन्तरिक तथा वाह्य सम्बन्धों के विषय में उदारपंथियों या तथाकथित जनवादी व्यक्तिवादियों को कौन सा रुख अपनाना चाहिए, साम्राज्यवादियों के नए षड्यंत्रों से निपटने के उपाय, वगैरह-वगैरह। यह सब कुछ जो हो रहा है, बहुत ही अच्छा है, और बहुत ही शिक्षाप्रद है।

यह कोई आकस्मिक बात नहीं कि आज सारा संसार चीनी क्रान्ति तथा अमरीकी श्वेतपत्र पर बहस कर रहा है। इसने विश्व-इतिहास में चीनी क्रान्ति के भारी महत्व को प्रकट कर दिया है। जहां तक चीनियों का सम्बन्ध है, यद्यपि हमने क्रान्ति में बुनियादी विजय प्राप्त कर ली है, तथापि हमें एक लम्बे अरसे से इस बात का अवसर नहीं मिल सका है कि हम विविध प्रकार की अन्दरूनी और विदेशी शक्तियों के साथ इस क्रान्ति के सम्बन्धों के बारे में पूर्ण रूप से और बारीकी से बहस कर सकें। ऐसी बहस आवश्यक है और अब अमरीका के श्वेतपत्र पर बहस के रूप में हमें इसका अवसर मिल गया है। इस तरह की बहस का अवसर हमें इससे पहले इसलिए नहीं मिल सका कि हमने क्रान्ति में बुनियादी विजय अभी प्राप्त नहीं की थी, चीनी और विदेशी प्रतिक्रियावादियों ने जनता के मुक्त क्षेत्रों से बड़े शहरों के सम्बन्ध काट दिए थे और क्रान्ति के विकास के जरिए अन्तरविरोधों के कुछ पहलू अभी पूर्ण रूप से प्रकट नहीं हुए थे। अब स्थिति दूसरी है। चीन का अधिकतर भाग मुक्त हो चुका है, आन्तरिक तथा वाह्य अन्तरविरोधों के सभी पहलू पूर्ण रूप से प्रकट हो चुके हैं और ठीक इसी समय अमरीका ने अपना श्वेतपत्र प्रकाशित किया है। इस प्रकार इस बहस का अवसर अब मिल गया है।

श्वेतपत्र एक प्रतिक्रान्तिकारी दस्तावेज है, वह चीन में अमरीकी

साम्राज्यवाद के हस्तक्षेप को खुलेआम प्रकट करता है। इस लिहाज से साम्राज्यवाद अपने सामान्य रास्ते से हट गया है। महान व विजयी चीनी क्रान्ति ने अमरीकी साम्राज्यवादी गुट के एक पक्ष या एक धड़े को मजबूर कर दिया है कि वह दूसरे पक्ष या दूसरे धड़े के हमले के जवाब में चीनी जनता के विरुद्ध अपने कारनामों की कुछ सच्ची सामग्री को खुलेआम प्रकाशित कर दे और उस सामग्री से प्रतिक्रियावादी निष्कर्ष निकाले, अन्यथा उसका जिन्दा रहना कठिन हो जाएगा। छिपाव का स्थान सार्वजनिक रहस्योद्घाटन ने ले लिया है, यह इस बात का प्रतिबिम्ब है कि साम्राज्यवाद अपने सामान्य रास्ते से हट गया है। कुछ सप्ताह पूर्व, श्वेतपत्र के प्रकाशन से पहले, साम्राज्यवादी देशों की सरकारें प्रतिदिन प्रतिक्रान्तिकारी सरगरमियों में जुटी रहने पर भी अपने वक्तव्यों और सरकारी दस्तावेजों में सच्ची बात को कभी नहीं बताती थीं, बल्कि सदैव उनमें दयालुता, न्याय व नैतिकता का रंग भर देती थीं या कमोबेश उन पर दयालुता, न्याय व नैतिकता का मुलम्मा चढ़ा देती थीं। यह बात मक्कारी और ढकोसलेबाजी के पुराने उस्ताद बरतानवी साम्राज्यवाद और कुछ अन्य छोटे-मोटे साम्राज्यवादी देशों पर आज भी लागू होती है। ट्रूमैन, मार्शल, अचेसन और लीटन स्टुअर्ट आदि के अकस्मात धनी बने हुए, कमजोर स्नायु वाले नवोदित अमरीकी साम्राज्यवादी गुट ने, जो एक ओर तो अमरीकी जनता के विरोध का और दूसरी ओर खुद अपने ही गुट के किसी और धड़े के विरोध का सामना कर रहा है, इस बात को आवश्यक तथा अमल में उतारने लायक समझा कि वे अपने प्रतिक्रान्तिकारी कारनामों में से कुछ का (सबका नहीं) खुलेआम रहस्योद्घाटन कर डालने का उपाय अपनाएं, ताकि वे

अपने ही गुट के भीतरी विरोधियों के साथ इस बात पर तर्क कर सकें कि आखिर कौन सा प्रतिक्रान्तिकारी तरीका अधिक चतुराईभरा है। इसी के जरिए उन्होंने अपने विरोधियों को समझाने-बुझाने की कोशिश की है, ताकि जिस प्रतिक्रान्तिकारी तरीके को वे अधिक चतुराईभरा समझते हैं उसे जारी रख सकें। प्रतिक्रान्तिकारियों के दो धड़ों के बीच आपस में होड़ चल रही है। एक कहता है, "हमारा तरीका सबसे अच्छा है।" दूसरा कहता है, "हमारा तरीका सबसे अच्छा है।" जब झगड़ा पूरे जोर पर था तो एक धड़े ने अचानक अपने सारे पत्ते दिखा दिए, और पिछले दिनों की अपनी अनेक ऐसी कपट-चालों का भण्डाफोड़ कर दिया जिनके भेद को वह अब तक एक गुप्त निधि के रूप में बड़े जतन से संजोए हुए था – और इस तरह आया उसका श्वेतपत्र !

इस प्रकार यह श्वेतपत्र चीनी जनता के लिए एक शिक्षाप्रद सामग्री बन गया है। अनेक वर्षों तक कुछ चीनी (किसी समय बहुत से चीनी) अनेक सवालों के बारे में और मुख्य रूप से साम्राज्यवाद के स्वरूप और समाजवाद के स्वरूप के बारे में हम कम्युनिस्टों की बातों पर केवल आधे मन से ही विश्वास किया करते थे और सोचा करते थे कि "ऐसा नहीं भी हो सकता !" ५ अगस्त १९४९ के बाद से यह स्थिति बदल गई है। अचेसन ने उन्हें पाठ पढ़ा दिया है और वह अमरीका के विदेश मंत्री की हैसियत से बोला है। उसने कुछ सामग्रियों और कुछ निष्कर्षों के बारे में जो कुछ कहा है, वह बिलकुल वैसा ही है जैसा हम कम्युनिस्ट या दूसरे आगे बढ़े हुए लोग अब तक कहते आए हैं। यह सब होने ही लोग हमारे ऊपर विश्वास किए बिना नहीं रह सके और कितने ही लोगों की तो आंखें खुल गईं और

उसके मुंह से निकल पड़ा – "अच्छा, तो मामला सचमुच ऐसा था !"

अचेसन ने ट्रूमैन के नाम अपने पत्र का आरम्भ इस कहानी से किया है कि उसने श्वेतपत्र का सम्पादन कैसे किया। उसका कहना है कि उसका श्वेतपत्र बाकी सभी श्वेतपत्रों से भिन्न है, इसे बड़े ही वस्तुगत रूप से और बड़ी साफगोई के साथ तैयार किया गया है :

> जिस महान देश के साथ अमरीका अत्यन्त घनिष्ठ मित्रता के सम्बन्ध-सूत्र में काफी लम्बे समय से बंधा रहा, यह श्वेतपत्र उस महान देश के जीवन के एक निहायत उलझनभरे और अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण दौर का साफगोई से भरा रिकार्ड है। कोई भी उपलब्ध सामग्री ऐसी नहीं जिसे इसमें शामिल न किया गया हो, हालांकि इसमें हमारी नीति की आलोचना करने वाले अथवा भावी आलोचना का आधार बन सकने वाले वक्तव्य भी हैं। हमारी व्यवस्था की अन्तर्निहित शक्ति यही है कि हमारी सरकार दूरदर्शी और आलोचनात्मक लोकमत के प्रति संवेदनशील है। ठीक यही दूरदर्शी और आलोचनात्मक लोकमत वह चीज है जिसे एकदलीय-सत्तावादी सरकारें, चाहे वे दक्षिणपंथी हों अथवा कम्युनिस्ट, झेल नहीं सकतीं और बरदाश्त नहीं करतीं।

चीनी जनता तथा अमरीकी जनता के बीच कुछ सम्बन्ध-सूत्र अवश्य मौजूद हैं। दोनों देशों की जनता के प्रयत्नों से ये सम्बन्ध-सूत्र विकसित होकर भविष्य में "अत्यन्त घनिष्ठ मित्रता" के स्तर तक पहुंच सकते हैं। लेकिन चीन तथा अमरीका दोनों देशों के प्रति-क्रियावादियों द्वारा डाली गई रुकावटें इन सम्बन्ध-सूत्रों के लिए अतीत काल में बहुत बड़ी बाधाएं थीं और अब भी हैं। इतना ही नहीं,

चूंकि दोनों देशों के प्रतिक्रियावादियों ने अपनी जनता के सामने बहुत से झूठ बोले हैं और बहुत सी गन्दी कपट-चालें चली हैं, यानी बहुत सा कुप्रचार किया है और बहुत से कुकर्म किए हैं, इसलिए इन दोनों देशों की जनता के सम्बन्ध-सूत्र घनिष्ठता से काफी दूर हैं। अचेसन जिन्हें "अत्यन्त घनिष्ठ मित्रता के सम्बन्ध-सूत्र" कहता है, वे इन दोनों देशों के प्रतिक्रियावादियों के बीच के सम्बन्ध-सूत्र हैं, न कि जनता के बीच के। इस मामले के बारे में अचेसन का कथन न वस्तुगत है और न साफगोई वाला, वह दोनों देशों की जनता के बीच के सम्बन्धों और दोनों देशों के प्रतिक्रियावादियों के बीच के सम्बन्धों को आपस में उलझा रहा है। दोनों देशों की जनता के लिए तो चीनी क्रान्ति की विजय और चीन व अमरीका दोनों देशों के प्रतिक्रियावादियों की हार उनके सम्पूर्ण जीवन की अभूतपूर्व आनन्ददायक घटनाएं हैं, और वर्तमान दौर उनके सम्पूर्ण जीवन का एक अभूतपूर्व सुखदाई दौर है। इसके विपरीत ट्रूमैन, मार्शल, अचेसन, लीटन स्टुअर्ट और अन्य अमरीकी प्रतिक्रियावादियों के लिए तथा च्याङ काई-शेक, एच० एच० खुङ, टी० वी० सुङ, छन ली-फू, ली चुङ-रन, पाए छुङ-शी और अन्य चीनी प्रतिक्रियावादियों के लिए यह दौर सचमुच उनके जीवन का एक "निहायत उलझनभरा और अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण दौर" है।

लोकमत पर विचार करते समय अचेसन और उसके सरीखे लोगों ने प्रतिक्रियावादियों के लोकमत और जनता के लोकमत को आपस में उलझा दिया है। जनता के लोकमत के प्रति तो अचेसन और उसके सरीखे लोग कतई "संवेदनशील" नहीं हैं, उसके सामने तो वे बिलकुल अन्धे और बहरे बन जाते हैं। पिछले कुछ वर्षों में अमरीका,

चीन और शेष समूचे संसार की जनता द्वारा अमरीका सरकार की प्रतिक्रियावादी विदेश-नीति के विरोध की ये लोग सदैव अनसुनी करते आए हैं। "दूरदर्शी और आलोचनात्मक लोकमत" से आखिर अचेसन का अभिप्राय क्या है? इससे उसका अभिप्राय और कुछ नहीं बल्कि अमरीका की दोनों प्रतिक्रियावादी पार्टियां यानी रिपब्लिकन पार्टी और डेमोक्रेटिक पार्टी के नियंत्रण में चल रहे बहुत से समाचारपत्रों, समाचार-एजेन्सियों, पत्रिकाओं, प्रसारण-केन्द्रों आदि प्रचार-संस्थाओं से है, जो केवल झूठे किस्से गढ़ने और जनता को धमकाने में माहिर हैं। अचेसन ठीक ही कहता है कि इन चीजों को कम्युनिस्ट पार्टी (और जनता भी) सचमुच "झेल नहीं सकती और बरदाश्त नहीं करती"। यही कारण है कि हमने साम्राज्यवादियों के सूचना-कार्यालयों को बन्द कर दिया है, उनकी समाचार-एजेन्सियों की ओर से चीनी समाचारपत्रों को समाचार भेजे जाने की मनाही कर दी है और उन्हें चीन में स्वच्छन्दता से चीनी जनता की चेतना में विष घोलने की इजाजत नहीं दी है।

इस कथन में भी केवल आधी सच्चाई ही है कि कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलने वाली सरकार "एकदलीय-सत्तावादी सरकार" होती है। यह सरकार एक ऐसी सरकार होती है जो घरेलू तथा विदेशी प्रतिक्रियावादियों पर अधिनायकत्व अथवा एकतंत्रवाद लागू करती है और उनमें से किसी को भी कोई ऐसा अधिकार नहीं देती जिससे वह स्वच्छन्दता से अपनी प्रतिक्रान्तिकारी कार्यवाहियां जारी रख सके। क्रोध में आकर प्रतिक्रियावादी गाली बकते हैं: "एकदलीय-सत्तावादी सरकार!" वास्तव में जहां तक प्रतिक्रियावादियों को कुचलने के जन-सरकार के अधिकार का सम्बन्ध है, ऐसा कहना

निहायत वाजिब है। यह अधिकार आज हमारे कार्यक्रम में दर्ज है, भविष्य में यह हमारे संविधान में भी दर्ज हो जाएगा। रोटी और कपड़े की ही भांति यह अधिकार भी एक ऐसी चीज है जिसके बिना विजयी जनता एक क्षण के लिए भी जीवित नहीं रह सकती। यह एक बड़ी ही बढ़िया चीज है, हमारी रक्षा करने वाला तिलस्मी ताबीज है, एक ऐसी पैतृक सम्पत्ति है जिसे हमें तब तक किसी भी सूरत में त्यागना नहीं चाहिए जब तक विदेशों में साम्राज्यवाद का और अपने देश में वर्गों का सम्पूर्ण रूप से और समग्र रूप से खात्मा न हो जाए। "एकदलीय-सत्तावादी सरकार" का फतवा देकर प्रतिक्रियावादी जितनी ज्यादा गाली-गलौज करेंगे, उतना ही ज्यादा यह अधिकार हमारी निधि साबित होता जाएगा। लेकिन अचेसन के कथन में आधा झूठ भी है। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलने वाली, जनता के जनवादी अधिनायकत्व वाली सरकार आम जनता पर अधिनायकत्व अथवा एकतंत्रवाद को नहीं बल्कि जनवाद को ही लागू करती है। ऐसी सरकार जनता की अपनी सरकार होती है। इस सरकार के सभी कर्मचारियों के लिए यह आवश्यक है कि वे जनता की आवाज को सम्मान के साथ सुनें। साथ ही ये कर्मचारी जनता के शिक्षक भी होते हैं, जो आत्म-शिक्षण अथवा आत्म-आलोचना के तरीके से जनता को शिक्षित करते हैं।

अचेसन के कथन में जहां तक "दक्षिणपंथी एकदलीय-सत्तावादी सरकार" का सवाल उठाया गया है, जब से जर्मनी, इटली और जापान की तीनों फासिस्ट सरकारों का पतन हुआ, तब से इस दुनिया में अमरीका सरकार का स्थान ऐसी सरकारों में अव्वल नम्बर पर रहा है। जर्मनी, इटली और जापान इन तीन देशों के प्रतिक्रियावादियों

की सरकारों, जिनकी हिफाजत साम्राज्यवाद कर रहा है, के समेत पूंजीपति वर्ग की तमाम सरकारें इसी किस्म की सरकारें हैं। युगोस्लाविया की टीटो सरकार भी अब इसी गिरोह की सह-अपराधी बन गई है। अमरीका और ब्रिटानिया की सरकारें ऐसी सरकारें हैं जिनमें अकेला पूंजीपति वर्ग ही जनता पर अपने अधिनायकत्व का प्रयोग करता है। इस प्रकार की सरकार हर पहलू से जन-सरकार के विपरीत होती है, वह पूंजीपति वर्ग पर तथाकथित जनवाद को लागू करती है, मगर जनता पर अधिनायकत्व को लागू करती है। हिटलर, मुसोलिनी, तोजो, फ्रैंको तथा च्यांग काई-शेक आदि की सरकारों ने पूंजीपति वर्ग के जनवाद का लबादा इसलिए उतार फेंका या उसका जरा भी प्रयोग इसलिए नहीं किया कि उनके देशों में वर्ग-संघर्ष निहायत उग्र रूप धारण कर चुका था और उन्होंने उस लबादे को उतार फेंकना या उसका जरा भी प्रयोग न करना ही अपेक्षाकृत लाभदायक समझा, ताकि कहीं ऐसा न हो कि जनता भी उसका प्रयोग करने लगे। अमरीका सरकार ने अब भी जनवाद का लबादा ओढ़ रखा है, लेकिन अमरीकी प्रतिक्रियावादियों ने इस लबादे को काट-छांट कर महज एक छोटा सा टुकड़ा ही बाकी रख छोड़ा है; साथ ही अब उसका रंग भी फीका पड़ चुका है और उसने वाशिंगटन, जेफरसन और लिंकन के जमाने[1] की तुलना में कहीं ज्यादा गई-गुजरी शक्ल अख्तियार कर ली है। कारण, अब वर्ग-संघर्ष अधिक तीव्र हो गया है। वर्ग-संघर्ष जब और अधिक तीव्र हो जाएगा, तो अमरीकी जनवाद के लबादे के इस टुकड़े की भी अनिवार्य रूप से धज्जियां उड़ जाएंगी।

हर कोई देख सकता है कि अचेसन जब भी अपना मुंह खोलता है

तो ढेर सारी गलतियां करना है। ऐसा होना अनिवार्य भी है, क्योंकि वह एक प्रतिक्रियावादी है। रहा यह सवाल कि श्वेतपत्र कितनी मात्रा में "साफगोई से भरा रिकार्ड" है, हमारे विचार में इसमें साफगोई और साफगोई का अभाव दोनों ही साथ-साथ मौजूद हैं। एचेसन और उसके सरीखे लोग साफगोई का सहारा सिर्फ वहीं लेते हैं जहां वह उनके खयाल के मुताबिक उनकी पार्टी और उनके धंधे के लिए लाभदायक हो। नहीं तो वे साफगोई के पास तक नहीं फटकते। साफगोई का स्वांग रचने का मकसद भी यही होता है।

नोट

[1] सिनहुआ समाचार एजेन्सी के सम्पादकीय विभाग द्वारा लिखी गई टिप्पणी, जिसे १८ अगस्त १९४९ को प्रकाशित किया गया।

[2] जार्ज वाशिंगटन (१७३२-९९), टामस जेफरसन (१७४३-१८२६) और एब्राहम लिंकन (१८०९-६५) अमरीका के प्रारम्भिक दिनों के प्रसिद्ध पूंजीवादी राजनीतिज्ञ थे। वाशिंगटन अमरीकी स्वाधीनता संग्राम (१७७५-८३) में उपनिवेशों की विद्रोही सेनाओं का कमाण्डर-इन-चीफ और अमरीका का पहला प्रेसीडेन्ट था। जेफरसन ने अमरीका के "स्वाधीनता घोषणापत्र" नामक दस्तावेज का मसविदा तैयार किया था तथा वह अमरीका का प्रेसीडेन्ट रहा। लिंकन ने अमरीका में नीग्रो दास-प्रथा के उन्मूलन की हिमायत की और अपने प्रेसीडेन्ट-काल के दौरान अमरीका के दक्षिणी राज्यों के दास-स्वामियों के खिलाफ युद्ध (१८६१-६५) का नेतृत्व किया। १८६२ में उसने "मुक्ति घोषणा" जारी की।

"मैत्री" या आक्रमण?

३० अगस्त १९४९

आक्रमण को उचित सिद्ध करने के लिए डीन एचेसन ने बार-बार "मैत्री" का राग अलापा है और बहुत से "उसूलों" को पेश किया है।

एचेसन कहता है :

चीन के बारे में अमरीकी जनता और अमरीका सरकार की दिलचस्पी का इतिहास बहुत लम्बा है। बावजूद इसके कि चीन और अमरीका दोनों देशों के बीच लम्बा फासला है और दोनों देशों की पृष्ठभूमि में भारी अन्तर है जिससे दोनों देश एक दूसरे से जुदा हो गए हैं, वे धार्मिक, परोपकारी और सांस्कृतिक सम्बन्ध-सूत्र जिन्होंने दोनों देशों की जनता के बीच एकता बनाए रखी है, इस देश के साथ हमारी मैत्री को सदैव अधिकाधिक प्रगाढ़ बनाते रहे हैं। चीनी विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए बॉक्सर-हर्जाने के उपयोग, दूसरे विश्वयुद्ध के समय राज्यक्षेत्रातीत अधिकारों के त्याग, युद्ध के दौरान और युद्धोत्तरकाल में चीन को हमारी विशाल सहायता समेत अनेक वर्षों के दौरान किए गए बहुत से सद्भावनापूर्ण कार्य इस मैत्री के साक्षी हैं। इतिहास का रिकार्ड बतलाता है कि अमरीका चीन के प्रति अपनी विदेश-नीति के

उन सभी बुनियादी उसूलों पर कायम रहा है और अब भी कायम है जिनमें मुक्त-द्वार का उसूल, चीन की प्रशासनिक व प्रादेशिक अखण्डता का सम्मान करने का उसूल और चीन पर किसी भी विदेशी नियंत्रण का विरोध करने का उसूल शामिल है।

आक्रमण को "मैत्री" बताकर अचेसन सरासर झूठ बोल रहा है।

१८४० के अफीम-युद्ध में अंग्रेजों की सहायता करने से लेकर चीनी जनता द्वारा चीन से बाहर खदेड़ दिए जाने तक के अमरीकी साम्राज्यवाद के चीन-विरोधी आक्रमणों का इतिहास चीनी नौजवानों को शिक्षित करने के लिए एक संक्षिप्त पाठ्य-पुस्तक के रूप में लिख दिया जाना चाहिए। अमरीका उन देशों में से था जिन्होंने पहले पहल चीन को राज्यक्षेत्रातीत अधिकार[१] देने पर मजबूर किया। यह बात १८४४ की वाङश्या सन्धि[२] में शामिल है, जो इतिहास में चीन और अमरीका के बीच हुई पहली सन्धि थी और जिसका श्वेतपत्र में भी उल्लेख किया गया है। इसी सन्धि में अमरीका ने व्यापार के लिए पांच बन्दरगाहों को खोलने आदि की शर्तें चीन पर थोपने के अलावा चीन को इस बात के लिए भी मजबूर किया था कि वह अमरीकी मिशनरियों की गतिविधियों को इजाजत देना स्वीकार करे। एक काफी लम्बे समय तक, अमरीकी साम्राज्यवाद ने धार्मिक कार्य से लेकर "परोपकारी" और सांस्कृतिक कार्य तक, मानसिक आक्रमण के क्षेत्र में की जाने वाली तमाम कार्यवाहियों पर अन्य साम्राज्यवादी देशों के मुकाबले अधिक जोर दिया। कुछ आंकड़ों के अनुसार चीन में अमरीकी मिशनरी और "परोपकारी" संस्थाओं ने ४,१६,००,००० अमरीकी डालर की पूंजी लगाई और मिशनरी संस्थाओं की १४.७ प्रतिशत सम्पत्ति चिकित्सा-

सेवा में, ३८.२ प्रतिशत शिक्षा में और ४७.१ प्रतिशत धार्मिक कार्यवाहियों में लगी हुई थी।[३] येनचिङ विश्वविद्यालय, पेकिङ यूनियन मेडिकल कालेज, ह्वेइ वन अकादमियां, सेंट जान विश्वविद्यालय, नानकिङ विश्वविद्यालय, सूचओ विश्वविद्यालय, हाङचओ क्रिश्चियन कालेज, श्याङया मेडिकल स्कूल, पश्चिमी चीन यूनियन विश्वविद्यालय, लिङनान विश्वविद्यालय आदि चीन की बहुत सी प्रसिद्ध शिक्षा-संस्थाओं की स्थापना अमरीकियों ने ही की है।[४] लीटन स्टुअर्ट ने इसी क्षेत्र में कार्य करते हुए नाम कमाया और इसी तरह वह चीन में अमरीकी राजदूत बना। अचेसन और उसके सरीखे व्यक्ति जानते हैं कि वे कह क्या रहे हैं, और उसके इस बयान की पृष्ठभूमि यह है कि "वे धार्मिक, परोपकारी और सांस्कृतिक सम्बन्ध-सूत्र जिन्होंने दोनों देशों की जनता के बीच एकता बनाए रखी है, इस देश के साथ हमारी मैत्री को सदैव अधिकाधिक प्रगाढ़ बनाते रहे हैं।" हमें बतलाया जाता है कि इसी "मैत्री को अधिकाधिक प्रगाढ़ बनाने" के लिए ही अमरीका ने १८४४ की सन्धि पर हस्ताक्षर करने के बाद १०५ वर्षों तक इन संस्थानों को चलाने में अपना सिर खपाया और इतनी सावधानी बरती।

चीन को परास्त करने के लिए आठ ताकतों की संयुक्त सेना के १९०० के अभियान में भाग लेना, "बोक्सर-हरजाने" को जबरिया वसूल करना और फिर मानसिक आक्रमण के उद्देश्य से उस निधि का उपयोग "चीनी विद्यार्थियों की शिक्षा" के लिए करना – इसे भी "मैत्री" गिना जाता है।

राज्यक्षेत्रातीत अधिकारों का "त्याग करने" के बावजूद, शन छिङ पर बलात्कार करने वाले अपराधी को अमरीका लौटने पर

अमरीकी नौसेना मंत्रालय द्वारा निर्दोष घोषित करके रिहा कर दिया गया[६] – इसे भी "मैत्री" गिना जाता है।

"युद्ध के दौरान और युद्धोत्तरकाल में चीन को दी गई सहायता", जो श्वेतपत्र के अनुसार ४५० करोड़ अमरीकी डालर से अधिक थी, मगर हमारे हिसाब से वह ५९१ करोड़ ८० लाख अमरीकी डालर से भी अधिक थी, च्याङ काई-शेक को दसियों लाख चीनियों की हत्या में मदद करने के लिए दी गई – इसे भी "मैत्री" गिना जाता है।

पिछले १०९ वर्षों में (१८४० से लेकर, जब ब्रिटानिया व अमरीका ने सांठगांठ करके अफीम-युद्ध चलाया था, अब तक) अमरीकी साम्राज्यवाद ने चीन के प्रति जो "मैत्री" प्रकट की है और खास तौर पर पिछले कुछ वर्षों में च्याङ काई-शेक के हाथों दसियों लाख चीनियों की हत्या करवाने में उसने जो महान "मैत्री" प्रकट की है, वह महज इसी एक मकसद से प्रकट की गई है कि अमरीका "चीन के प्रति अपनी विदेश-नीति के उन सभी बुनियादी उसूलों पर कायम रहा है और अब भी कायम है जिनमें मुक्त-द्वार का उसूल, चीन की प्रशासनिक और प्रादेशिक अखण्डता का सम्मान करने का उसूल और चीन पर किसी भी विदेशी नियंत्रण का विरोध करने का उसूल शामिल हैं"।

दसियों लाख चीनियों की हत्या किसी दूसरे उद्देश्य से नहीं, बल्कि पहले, मुक्त-द्वार को कायम रखने के लिए, दूसरे, चीन की प्रशासनिक व प्रादेशिक अखण्डता का सम्मान करने के लिए और तीसरे, चीन पर किसी भी विदेशी नियंत्रण का विरोध करने के लिए की गई है।

आज केवल क्वाङचओ, थाइवान आदि छोटे-छोटे स्थलों में ही अचेसन और उसके सरीखे लोगों के लिए द्वार खुले हैं और केवल इन्हीं

स्थानों में इन पवित्र उसूलों में से पहला उसूल "अब भी कायम है"। दूसरे स्थानों में, मिसाल के लिए शांघाई में, मुक्ति के बाद द्वार खुला जरूर है मगर अब कोई अमरीकी युद्धपोतों और उनकी विशाल तोपों के जोर से एक अत्यन्त अपवित्र उसूल यानी अवरुद्ध-द्वार के उसूल को लागू कर रहा है।

आज केवल क्वाङचओ, थाइवान आदि छोटे-छोटे स्थलों में ही अचेसन के दूसरे पवित्र उसूल की कृपा से प्रशासनिक व प्रादेशिक "अखण्डता" "अब भी कायम है"। बाकी सभी स्थानों का प्रशासन और वहां की प्रादेशिक भूमि दुर्भाग्यवश खण्ड-खण्ड हो गई है।

आज केवल क्वाङचओ, थाइवान आदि स्थानों पर से ही अचेसन के तीसरे पवित्र उसूल की कृपा से "विदेशी नियंत्रण" को, जिसमें अमरीकी नियंत्रण भी शामिल है, अचेसन और उसके सरीखे लोगों के "विरोध" के कारण सफलता से समाप्त कर दिया गया है और इसलिए ये स्थान आज भी चीनियों के नियंत्रण में हैं। चीन की शेष धरती, जिसके उल्लेखमात्र से ही रोना आता है, हाथ से निकल गई है, वह सब विदेशियों के नियंत्रण में चली गई है और वहां के सारे के सारे चीनियों को दास बना लिया गया है। परन्तु यहां तक लिखते-लिखते महामहिम डीन अचेसन के पास इस बात को बताने का समय नहीं रहा कि ये विदेशी आखिर किस देश से आए हैं; लेकिन खैर, आगे पढ़ते जाने पर इस सवाल का जवाब खुद-ब-खुद मिल जाता है, इसलिए पूछने की कोई जरूरत नहीं रह जाती।

चीन के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करना भी कोई उसूल है अथवा नहीं, इसके बारे में अचेसन ने कुछ नहीं कहा; शायद इसे कोई उसूल माना ही नहीं जा सकता। अमरीकी शरीफजादों का तर्क

ऐसा ही है। अचेसन के पत्र को अन्त तक पढ़ने पर कोई भी इस असाधारण तर्क का कायल हुए बिना नहीं रहेगा।

नोट

[१] यहां "राज्यक्षेत्रातीत अधिकार" से तात्पर्य है कानसुलर-न्यायाधिकार। साम्राज्यवादी आक्रमणकारी शक्तियों ने चीन में जो विशेषाधिकार ऐंठ रखे थे, यह भी उन्हीं में से एक था। तथाकथित कानसुलर-न्यायाधिकार के अधीन यह व्यवस्था की गई थी कि साम्राज्यवादी देशों के चीन स्थित नागरिकों पर चीनी कानून लागू नहीं होगा; अपराध करने पर या दीवानी मुकदमों में प्रतिवादी होने पर उन्हें केवल उनके अपने देश के चीन स्थित कानसुलर-न्यायालयों में ही पेश किया जा सकता था, चीन सरकार इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकती थी।

[२] "वाङशा सन्धि" चीन और अमरीका के बीच पहली असमान सन्धि थी जिस पर अमरीका द्वारा चीन पर किए गए आक्रमण के फलस्वरूप हस्ताक्षर हुए थे। अफीम-युद्ध में चीन की पराजय से फायदा उठाकर अमरीका ने छिङ वंश को इस सन्धि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया। यह "व्यापार के लिए पांच बन्दरगाहों को खोलने के बारे में चीन-अमरीका नियमावली" भी कहलाती है। सन्धि-पत्र पर जुलाई १८४४ में मकाओ के पास वाङशा गांव में हस्ताक्षर हुए। इसकी चौंतीस धाराओं के अनुसार, अमरीका को कानसुलर-न्यायाधिकार समेत वे सभी विशेषाधिकार प्राप्त हो गए, जिन्हें नानकिङ सन्धि और उसके अनुबन्धों के अधीन बरतानिया ने प्राप्त किया था।

[३] यह सामग्री सी० एफ० रेमर की पुस्तक "चीन में विदेशी पूंजी-विनियोग", अध्याय १५ से ली गई है।

[४] येनचिङ विश्वविद्यालय और पेकिङ यूनियन मेडिकल कालेज पेकिङ में थे। ह्वेइ वन अकादमिया पेकिङ और नानकिङ में, सेंट जान विश्वविद्यालय शांघाई में, नानकिङ विश्वविद्यालय नानकिङ में, हाङचाओ क्रिश्चियन कालेज

हाङचाओ में, सूचाओ विश्वविद्यालय सूचाओ में, श्याङया मेडिकल स्कूल छाङशा में, पश्चिमी चीन यूनियन विश्वविद्यालय छङतू में और लिङनान विश्वविद्यालय क्वाङचाओ में था।

[५] कारपोरल विलियम पियर्सन और दूसरे अमरीकी मेरीन-सैनिकों ने पेकिङ में २४ दिसम्बर १९४६ को पेकिङ विश्वविद्यालय की छात्रा शन छुङ पर बलात्कार किया। इस घटना से सारे देश में अमरीकी सैनिकों के अत्याचारों के विरुद्ध रोष की लहर दौड़ गई। जनवरी १९४७ में क्वोमिन्ताङ सरकार ने जनता के विरोध की अनसुनी करके मुख्य अपराधी पियर्सन को अमरीकियों के हवाले कर दिया, ताकि वे इस मामले को अपनी मरजी के मुताबिक निपटा सकें। उसी साल अगस्त में अमरीका के नौसेना मंत्रालय ने पियर्सन को निर्दोष घोषित करके रिहा कर दिया।

इतिहास की आदर्शवादी धारणा का दिवालियापन

१६ सितम्बर १६४६

चीनियों को अमरीकी पूंजीपति वर्ग के प्रवक्ता अचेसन का शुक्र-गुजार न केवल इसलिए होना चाहिए कि उसने स्पष्ट रूप से यह तथ्य स्वीकार कर लिया है कि अमरीका लड़ाई में अपना धन और बन्दूकें झोंकता है तथा च्याङ काई-शेक अमरीका की ओर से लड़ने और चीनियों का वध करने के लिए भाड़े के टट्टू जुटाता है, और इस तरह उसने चीन के आगे बढ़े हुए तत्वों को एक ऐसा सबूत दे दिया है जिससे वे पिछड़े हुए तत्वों को समझा-बुझा सकते हैं। आपने देखा न, क्या अचेसन ने खुद ही यह स्वीकार नहीं किया कि पिछले कुछ वर्षों के जिस रक्तरंजित महायुद्ध में दसियों लाख चीनियों ने अपने प्राण गंवाए, उसकी योजना तैयार करने और उसे संगठित करने का कार्य अमरीकी साम्राज्यवाद ने ही किया था? फिर चीनियों को अचेसन का शुक्र-गुजार न केवल इसलिए होना चाहिए कि उसने खुलेआम यह ऐलान किया है कि अमरीका चीन में तथाकथित "जनवादी व्यक्ति-वादी" तत्वों को एक साथ बटोरना चाहता है और अमरीकी पांचवें दस्ते को संगठित करना चाहता है तथा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलने वाली जन-सरकार का तख्ता उलट देना चाहता है,

और इस तरह उसने चीनियों को, और खास तौर से उदारतावाद के रंग में रंगे हुए चीनियों को सतर्क कर दिया है, और फलस्वरूप वे सबके सब एक दूसरे को इस बात का वचन दे रहे है कि वे अमरीकियों के जाल में नहीं फंसेंगे, तथा वे हर कहीं अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा गुप्त रूप से की जाने वाली साजिशों के प्रति सचेत होते जा रहे है। चीनियों को अचेसन का शुक्र-गुजार इसलिए भी होना चाहिए कि उसने चीन के आधुनिक इतिहास के बारे में बेसिरपैर की कहानियां गढ़ी है और उसकी इतिहास की धारणा बिल्कुल वही है जो चीनी बुद्धिजीवियों के एक भाग की है, यानी इतिहास की पूंजीवादी आदर्शवादी धारणा। इसलिए अचेसन का खण्डन करने से बहुत से चीनियों को भी अपना दृष्टि-विस्तार करने में फायदा हो सकता है। उसका फायदा उन लोगों को और भी अधिक हो सकता है जिनकी धारणा अचेसन की जैसी अथवा कुछ मामलों में अचेसन की जैसी है।

चीन के आधुनिक इतिहास के बारे में अचेसन की मनगढ़न्त बेसिर-पैर की कहानियां क्या है? सबसे पहले, उसने चीनी क्रान्ति के घटित होने की व्याख्या चीन की आर्थिक व विचारधारात्मक स्थितियों के अनुसार करने की कोशिश की है। इस सिलसिले में उसने बहुत सी काल्पनिक कहानियां गढ़ी हैं।

अचेसन कहता है :

> अठारहवीं और उन्नीसवीं दोनों सदियों में चीन की आबादी दुगनी हो गई, जिससे भूमि पर असहनीय दबाव आ पड़ा। चीन की हर सरकार के सामने सबसे पहली समस्या यह रही कि इस आबादी की खुराक की समस्या को कैसे सुलझाया जाए। इस

> समस्या को सुलझाने में आज तक कोई भी सरकार सफल नहीं हुई। क्वोमिन्ताङ ने अधिनियम ग्रन्थ में भूमि-सुधार पर बहुत से कानून शामिल करके इस समस्या को सुलझाने की कोशिश की। इनमें से कुछ कानून विफल हो गए है और अन्य कानूनों की उपेक्षा की गई है। जिस विकट परिस्थिति में आज की राष्ट्रीय सरकार फंस गई है उसका कारण बहुत बड़ी हद तक यही है कि वह चीन के लिए पर्याप्त अनाज जुटाने में असफल रही है। चीनी कम्युनिस्टों के प्रचार का बहुत बड़ा भाग इन वायदों से ही भरा रहता है कि वे भूमि-समस्या को हल करके रहेंगे।

जो चीनी साफ-साफ तर्क नहीं करते, उन्हें ये बातें सत्य-सी लगती हैं। आबादी बहुत अधिक, अनाज बहुत ही कम, नतीजा : क्रान्ति! क्वोमिन्ताङ तो इस समस्या को सुलझाने में असफल रही, पर ऐसा भी नहीं लगता कि कम्युनिस्ट पार्टी इसे सुलझा सकेगी। "इस समस्या को सुलझाने में आज तक कोई भी सरकार सफल नहीं हुई।"

तो क्या क्रान्तियां आबादी की अत्यन्त अधिकता के कारण ही होती है? प्राचीन काल और आधुनिक काल में चीन और विदेशों में कितनी ही क्रान्तियां हो चुकी है, क्या वे सबकी सब आबादी की अत्यन्त अधिकता के कारण ही हुई? क्या पिछले कई हजार वर्षों में चीन में हुई क्रान्तियां भी आबादी की अत्यन्त अधिकता के कारण ही हुई थी? क्या १७४ वर्ष पहले बरतानिया के विरुद्ध अमरीकी क्रान्ति[1] भी आबादी की अत्यन्त अधिकता के कारण ही हुई थी? इतिहास के बारे में अचेसन का ज्ञान शून्य के बराबर है। उसने तो अमरीका के स्वाधीनता घोषणापत्र को भी नहीं पढ़ा। वाशिंगटन, जेफरसन आदि

ने बरतानिया के विरुद्ध क्रान्ति इसलिए की कि अंग्रेज अमरीकियों का उत्पीड़न तथा शोषण करते थे, न कि इसलिए की कि अमरीका में आबादी अत्यन्त अधिक बढ़ गई थी। हर बार जब भी चीनी जनता ने किसी सामन्ती राजवंश का तख्ता पलटा, तो उसका कारण यही था कि वे सामन्ती राजवंश चीनी जनता का उत्पीड़न तथा शोषण करते थे, न कि इसलिए तख्ता पलटा कि चीन की आबादी अत्यन्त अधिक बढ़ गई थी। रूसियों ने जार और रूसी पूंजीपति वर्ग द्वारा किए गए उत्पीड़न और शोषण के कारण ही फरवरी क्रान्ति और अक्तूबर क्रान्ति की, न कि रूस की आबादी अत्यन्त अधिक बढ़ जाने के कारण, और रूस में आज भी आबादी की तुलना में भूमि कहीं अधिक है। मंगोलिया में, जहां भूमि इतनी विशाल है और आबादी इतनी कम, अचेसन के तर्क के अनुसार क्रान्ति होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती, फिर भी काफी समय पहले वहां क्रान्ति हो चुकी है।[१]

अचेसन के कथनानुसार चीन के निस्तार का कोई रास्ता है ही नहीं, इसकी ४७ करोड़ ५० लाख की आबादी एक प्रकार का "असहनीय दबाव" है, और यहां क्रान्ति हो या न हो, एक शब्द में यह कहा जा सकता है कि स्थिति निराशाजनक है। अचेसन इस पर बहुत बड़ी आस लगाए बैठा है; यद्यपि वह अपनी इस आस को मुंह पर नहीं लाया, फिर भी अनेक अमरीकी पत्रकारों के द्वारा यह बात अक्सर प्रकट की जाती रही है, यानी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अपनी आर्थिक समस्या को सुलझाने में समर्थ नहीं होगी, चीन सदैव गड़बड़ी की ही दशा में पड़ा रहेगा, और उसके निस्तार का बस एकमात्र रास्ता यही

है कि वह अमरीकी आटे पर आश्रित रहे, दूसरे शब्दों में यह कि चीन अमरीका का उपनिवेश बन जाए।

१९११ की क्रान्ति सफल क्यों नहीं हुई और उस क्रान्ति से आबादी की खुराक की समस्या हल क्यों नहीं हुई? कारण, उस क्रान्ति ने केवल छिङ राजवंश की सरकार को ही उखाड़ फेंका, साम्राज्यवादी और सामन्ती उत्पीड़न व शोषण का अन्त नहीं किया।

उत्तरी अभियान सफल क्यों नहीं हुआ और उससे आबादी की खुराक की समस्या क्यों नहीं सुलझी? कारण, च्याङ काई-शेक ने क्रान्ति से विश्वासघात किया, साम्राज्यवाद के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और वह चीनियों का उत्पीड़न व शोषण करने वाला प्रतिक्रान्तिकारी सरगना बन गया।

क्या यह सच है कि "इस समस्या को सुलझाने में आज तक कोई भी सरकार सफल नहीं हुई"? उत्तर-पश्चिमी, उत्तरी, उत्तर-पूर्वी और पूर्वी चीन के पुराने मुक्त क्षेत्रों में, जहां भूमि-समस्या पहले ही हल की जा चुकी है, क्या अचेसन के कथन में उल्लिखित "आबादी की खुराक की समस्या" अब भी पाई जाती है? चीन में अमरीकी गुप्तचरों अथवा तथाकथित पर्यवेक्षकों की काफी बड़ी तादाद मौजूद है। वे लोग आखिर इस तथ्य का सुराग क्यों नहीं लगा पाए? शांघाई जैसे स्थानों में साम्राज्यवाद, सामन्तवाद, नौकरशाही-पूंजीवाद और प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार के क्रूर, निर्मम उत्पीड़न और शोषण के ही परिणामस्वरूप बेकारी यानी आबादी की खुराक की समस्या पैदा हुई। बेकारी, यानी आबादी की खुराक की समस्या, जन-सरकार के अधीन कुछ ही वर्षों में ठीक उसी प्रकार पूरी तरह सुलझ

जाएगी जिस प्रकार उत्तरी चीन, उत्तर-पूर्वी चीन आदि स्थानों में सुलझ चुकी है।

यह एक बहुत अच्छी बात है कि चीन की आबादी बहुत बड़ी है। चीन की आबादी अगर और भी कई गुनी बढ़ जाए, तो भी इस समस्या का हल पूरी तरह निकाला जा सकेगा ; यह हल पैदावार बढ़ाना है। पश्चिम के पूंजीपति वर्ग के माल्थस[1] जैसे अर्थशास्त्रियों की इस बेहूदा दलील का कि खाद्य-सामग्री की वृद्धि जनसंख्या की वृद्धि के बराबर नहीं चल सकती, मार्क्सवादियों द्वारा बहुत समय पहले ही सैद्धान्तिक रूप में पूरे तौर पर खण्डन किया जा चुका है, बल्कि क्रान्ति के बाद सोवियत संघ और चीन के मुक्त क्षेत्रों ने भी अपने तथ्यों के जरिए इसकी धज्जियां उड़ा दी है। इस सत्य को आधार बनाकर कि क्रान्ति और उत्पादन का योग खुराक की समस्या को हल कर सकता है, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने देशभर के पार्टी-संगठनों और जन-मुक्ति सेना को आदेश जारी किए है कि वे भूतपूर्व क्वोमिन्ताङ कर्मचारियों को पदच्युत न करें बल्कि उन्हें अपने पदों पर बराबर बने रहने दें, बशर्ते कि वे लोग खुद अपने को किसी काम करने के योग्य साबित कर सकें और तथ्यों के जरिए प्रतिक्रियावादी अथवा कुख्यात दुष्ट साबित न हो चुके हों। जहां कठिनाइयां बहुत अधिक हों, वहां खुराक और आवास के क्षेत्र में साझा करके काम चलाया जाए। बरखास्त होने के कारण जिन लोगों के पास आजीविका का कोई साधन न रह गया हो, उन्हें फिर से काम पर लगा लिया जाए और इस तरह उनकी आजीविका का साधन जुटा दिया जाए। इसी उसूल के मुताबिक हम क्वोमिन्ताङ के उन सभी सिपाहियों को भी बहाल कर देंगे, जो या तो विद्रोह करके हमारी ओर आ मिले हैं अथवा जिन्हें

हमने बन्दी बना लिया है। प्रमुख प्रतिक्रियावादी तत्वों को छोड़कर बाकी सभी प्रतिक्रियावादियों को आजीविका कमाने का अवसर दिया जाएगा, बशर्ते कि वे पश्चात्ताप करें।

संसार की सभी वस्तुओं में मनुष्य सबसे अधिक मूल्यवान है। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में जब तक मनुष्य-समुदाय बना रहेगा तब तक हर प्रकार का चमत्कार किया जा सकता है। हम अचेसन के प्रतिक्रान्तिकारी सिद्धान्त का खण्डन करने वाले लोग हैं। हमारा विश्वास है कि क्रान्ति हर चीज को बदल सकती है, तथा अधिक समय बीतने से पहले ही एक बहुत बड़ी आबादी वाले और प्रचुर उत्पादन-सम्पदा वाले नए चीन का उदय हो जाएगा, जहां जीवन में समृद्धि छा जाएगी और संस्कृति फले-फूलेगी। सभी निराशावादी विचार बिलकुल बेबुनियाद हैं।

चीन में क्रान्ति के घटित होने का दूसरा कारण अचेसन ने "पश्चिम का प्रभाव" बताया है। अचेसन कहता है :

> तीन हजार वर्ष से भी अधिक समय तक चीनियों ने अपनी उन्नत संस्कृति व सभ्यता का विकास किया, जो बाहरी प्रभाव से काफी हद तक अछूती रही। सामरिक पराजय के शिकार होने पर भी चीनी लोग सदैव आक्रमणकारियों को वशीभूत करके अपने अन्दर विलीन करते रहे। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि चीनी अपने आपको विश्व का केन्द्र तथा सभ्य मानव की उच्चतम अभिव्यक्ति समझते रहे। और तब, उन्नीसवीं सदी के मध्य में चीन के अब तक के अलगाव की दुर्भेद्य दीवार को तोड़कर पश्चिम के लोगों ने उसके भीतर प्रवेश किया। बाहर से आए

> हुए ये लोग अपने साथ उद्यमशीलता लाए, पश्चिमी तकनालाजी का अनुपम विकास लाए और एक उच्च स्तर की संस्कृति लाए, जिसमें इससे पहले के विदेशी आक्रमणकारी चीन में कभी नहीं लाए थे। कुछ तो इन गुणों के कारण और कुछ छिङ वंश के शासन की पतनशीलता के कारण, इन पश्चिम के लोगों ने चीन में घुल-मिलकर विलीन हो जाने के बजाय उसका नए विचारों से परिचय कराया, जिन्होंने हलचल और अशान्ति को उभारने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

जो चीनी साफ-साफ तर्क नहीं करते, उन्हें अचेसन की बातें सत्य मालूम होती हैं। पश्चिम से आने वाले नए विचारों का प्रवेश ही क्रान्ति का कारण बना।

क्रान्ति आखिर किसके विरुद्ध की गई ? चूंकि "छिङ वंश के शासन की पतनशीलता" का बोलबाला था और चूंकि चोट कमजोर स्थान पर ही की जाती है, इसलिए लगता यह है मानो क्रान्ति छिङ वंश के विरुद्ध की गई हो। लेकिन अचेसन की बात कतई ठीक नहीं है। १९११ की क्रान्ति साम्राज्यवाद के विरुद्ध की गई थी। चीनियों ने छिङ वंश के विरुद्ध क्रान्ति इसलिए की कि छिङ वंश साम्राज्यवाद का पालतू कुत्ता बन गया था। बरतानिया के अफीम-आक्रमण के खिलाफ किया गया युद्ध, आंग्ल-फ्रांसीसी संयुक्त सेनाओं के हमले के खिलाफ किया गया युद्ध, साम्राज्यवाद के पालतू कुत्ते छिङ वंश के खिलाफ थाइफिङ स्वर्गिक राज्य द्वारा किया गया युद्ध, फ्रांसीसी हमले के खिलाफ किया गया युद्ध, जापानी हमले के खिलाफ किया गया युद्ध, आठ ताकतों की संयुक्त सेनाओं के हमले के खिलाफ किया गया

युद्ध – ये सभी युद्ध असफल रहे, इसलिए फिर १९११ में साम्राज्यवाद के पालतू कुत्ते छिङ वंश के विरुद्ध क्रान्ति की गई। यही १९११ तक का आधुनिक चीनी इतिहास है। अचेसन जिसे "पश्चिम का प्रभाव" कहता है, वह आखिर क्या चीज है ? जैसा कि मार्क्स और एंगेल्स ने १८४८ के "कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र" में कहा है, यह और कुछ नहीं बल्कि आतंक के जरिए दुनिया को अपने सांचे में ढालने का पश्चिमी पूंजीपति वर्ग का प्रयास मात्र है।* प्रभाव डालने या अपने सांचे में ढालने की इस प्रक्रिया में चूंकि पश्चिम के पूंजीपति वर्ग को अपने दलालों और पाश्चात्य रीति-रिवाजों से परिचित चाकरों की आवश्यकता थी, इसलिए उसे चीन जैसे देशों को स्कूल खोलने और विद्यार्थियों को विदेश भेजने की मंजूरी देनी पड़ी, तथा इस प्रकार उसने चीन का "नए विचारों से परिचय कराया"। इसके साथ ही साथ चीन जैसे देशों में राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग का जन्म हुआ। ठीक इसी समय किसानों को दिवालिया बना दिया गया और एक विशाल अर्ध-सर्वहारा वर्ग पैदा हो गया। इस प्रकार पश्चिम के पूंजीपति वर्ग ने पूर्व के लोगों में दो श्रेणियों की सृष्टि की : एक थी अल्पसंख्यक लोगों की श्रेणी जिसमें साम्राज्यवाद के चाकर थे, तथा दूसरी थी बहुसंख्यक लोगों की श्रेणी जिसमें साम्राज्यवाद-विरोधी मजदूर वर्ग, किसान वर्ग, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग, राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और इन वर्गों से आए बुद्धिजीवी थे। बहुसंख्यक लोगों की श्रेणी के ये सभी लोग साम्राज्यवाद की कब्र खोदने वाले हैं, उनकी सृष्टि साम्राज्यवाद ने खुद की है, और उन्हीं के जरिए क्रान्ति का जन्म होता है। ऐसा नहीं है कि पश्चिम से आने वाले नए विचारों के तथाकथित प्रवेश ने "हलचल और अशान्ति" को उभारा, बल्कि

दरअसल यह एक साम्राज्यवादी आक्रमण था जिसने प्रतिरोध को उभारा।

इस प्रतिरोध आन्दोलन के दौरान लम्बे समय तक, यानी १८४० के अफीम-युद्ध से लेकर १९१९ के ४ मई आन्दोलन की पूर्ववेला तक के सत्तर वर्ष से भी अधिक समय तक, चीनियों के पास साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपनी रक्षा करने के लिए कोई विचारधारात्मक शस्त्र नहीं था। पुराने कट्टरपंथी सामन्तवाद के विचारधारात्मक शस्त्र हार चुके थे, बेकार हो चुके थे और दिवालिया घोषित किए जा चुके थे। और कोई चारा न देखकर चीनी लोगों को विकासवाद के सिद्धान्त, प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धान्त, पूंजीवादी गणराज्य के सिद्धान्त जैसे विचारधारात्मक शस्त्रों तथा राजनीतिक फार्मूलों से अपने आपको लैस करना पड़ा, जो सबके सब साम्राज्यवाद की जन्मभूमि पश्चिम के पूंजीपति वर्ग के क्रान्तिकारी दौर के शस्त्रागार से लिए गए थे। चीनियों ने राजनीतिक पार्टियां संगठित की और क्रान्तियां की, इस विश्वास के साथ कि वे इस प्रकार विदेशी शक्तियों का मुकाबला और गणराज्य का निर्माण कर सकेंगे। मगर सामन्तवाद के विचारधारात्मक शस्त्रों की ही तरह ये तमाम विचारधारात्मक शस्त्र भी बहुत ही कमजोर साबित हुए, बेकार हो गए तथा दिवालिया घोषित कर दिए गए।

१९१७ की रूसी क्रान्ति ने चीनियों को जगा दिया और उन्होंने एक नई चीज सीखी ; वह है मार्क्सवाद-लेनिनवाद। चीन में कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म हो गया, जो एक युगान्तरकारी महान घटना थी। सुन यात-सेन ने भी "रूस से सीखने" तथा "रूस से संश्रय और कम्युनिस्ट पार्टी से सहयोग कायम करने" का पक्षपोषण किया। एक

शब्द में, तब से चीन की दिशा ही बदल गई।

यह स्वाभाविक है कि एक साम्राज्यवादी सरकार का प्रवक्ता होने के नाते अचेसन साम्राज्यवाद के बारे में एक भी शब्द नहीं कहना चाहता। साम्राज्यवादी आक्रमण का वर्णन उसने यों किया है : "बाहर से आए हुए ये लोग अपने साथ उद्यमशीलता लाए।" "उद्यमशीलता" – कितना सुन्दर नाम है यह ! इस "उद्यमशीलता" को सीखकर चीनियों ने ब्रिटानिया या अमरीका में प्रवेश नहीं किया बल्कि केवल चीन के भीतर ही "हलचल और अशान्ति" को उभारा, यानी साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्तों के खिलाफ क्रान्तियां चलाईं। परन्तु दुर्भाग्य से वे एक बार भी सफल न हुए ; हर बार "उद्यमशीलता" के आविष्कारक साम्राज्यवादियों के हाथों परास्त हो गए। इसलिए चीनियों ने अपना मुंह मोड़कर कुछ और सीखना चाहा और आश्चर्य की बात है कि जो कुछ नया उन्होंने सीखा वह फौरन कारगर साबित होने लगा।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी "रूसी क्रान्ति की विचारधारात्मक प्रेरणा से इस सदी के तीसरे दशक के शुरू में संगठित की गई थी"। यहां अचेसन ने ठीक कहा है। यह विचारधारा और कोई नहीं, बल्कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद ही है। यह विचारधारा पश्चिम के पूंजीपति वर्ग की उस विचारधारा की तुलना में कहीं अधिक श्रेष्ठ है जिसे अचेसन "उच्च स्तर की संस्कृति" बताता है और जिसे उसके कथनानुसार "इससे पहले के विदेशी आक्रमणकारी चीन में कभी नहीं लाए थे"। इस विचारधारा के कारगर होने का निश्चित प्रमाण यह है कि चीन की पुरानी सामन्तवादी संस्कृति के मुकाबले पश्चिम के पूंजीपति वर्ग की जिस "उच्च स्तर की संस्कृति" की डींग अचेसन

और उसके सरीखे लोग हांका करते हैं, वह चीनी जनता द्वारा अर्जित की गई नूतन मार्क्सवादी-लेनिनवादी संस्कृति, यानी वैज्ञानिक विश्व-दृष्टिकोण और सामाजिक क्रान्ति के सिद्धान्त के साथ टकराते ही उससे मात खा गई। चीनी जनता द्वारा अर्जित की गई इस नूतन वैज्ञानिक व क्रान्तिकारी संस्कृति ने अपनी पहली ही लड़ाई में साम्राज्यवाद के पालतू कुत्तों, उत्तरी युद्ध-सरदारों को शिकस्त दे दी; दूसरी लड़ाई में उसने साम्राज्यवाद के एक अन्य पालतू कुत्ते च्यांग काई-शेक द्वारा चीनी लाल सेना के २५,००० ली लम्बे अभियान को रोकने के लिए की गई कोशिशों को नाकाम कर डाला; तीसरी लड़ाई में इसने जापानी साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्ते वाङ चिङ-वेइ को परास्त किया और चौथी लड़ाई में इसने चीन पर से अमरीका और अन्य सभी साम्राज्यवादी देशों के प्रभुत्व तथा उनके पालतू कुत्ते च्यांग काई-शेक आदि सभी प्रतिक्रियावादियों के शासन का अन्तिम रूप से सफाया कर दिया।

चीन में प्रवेश के बाद से ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद ने इतनी महान भूमिका अदा की है, इसका कारण यह है कि चीन की सामाजिक स्थितियों में ठीक उसी की जरूरत है, उसे चीनी जन-क्रान्ति के वास्तविक व्यवहार के साथ जोड़ दिया गया है, और चीनी जनता ने उसे आत्मसात कर लिया है। कोई भी विचारधारा – चाहे वह कितनी ही अच्छी क्यों न हो, चाहे वह खुद मार्क्सवाद-लेनिनवाद ही क्यों न हो –वस्तुगत यथार्थ से जुड़े बिना, वस्तुगत आवश्यकताएं पूरी किए बिना और जन-समुदाय में जड़ें जमाए बिना कारगर साबित नहीं होती। हम लोग ऐतिहासिक आदर्शवाद का विरोध करने वाले ऐतिहासिक भौतिकवादी हैं।

आश्चर्य की बात यह है कि "सोवियत सिद्धान्त और व्यवहार का डा० सुन यात-सेन के विचारों और उसूलों पर काफी प्रभाव पड़ा, खास तौर पर अर्थनीति और पार्टी-संगठन के मामलों में"। पश्चिम की जिस "उच्च स्तर की संस्कृति" पर अचेसन और उसके सरीखे लोगों को इतना गर्व है, उसका प्रभाव डा० सुन पर क्या पड़ा? अचेसन ने यह नहीं बताया। तो क्या यह एक आकस्मिक घटना ही थी कि डा० सुन, जिन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग पश्चिम के पूंजीपति वर्ग की संस्कृति में अपने राष्ट्र को बचा सकने वाले सत्य की खोज में लगा दिया था, अन्त में निराश हो गए और फिर "रूस से सीखने" के लिए दूसरी ओर मुड़ गए? जाहिर है कि यह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। बेशक, यह भी कोई आकस्मिक घटना नहीं थी कि डा० सुन और दुख से पीड़ित चीनी जनता, जिसके प्रतिनिधि डा० सुन थे, दोनों ही "पश्चिम के प्रभाव" से क्रोधित हो उठे थे और उन्होंने साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्तों के खिलाफ जीवन-मरण का संघर्ष करने के लिए "रूस से सश्रय और कम्युनिस्ट पार्टी से सहयोग कायम करने" का संकल्प किया। यहां अचेसन को यह कहने का साहस नहीं कि सोवियत लोग साम्राज्यवादी आक्रमणकारी हैं और डा० सुन यात-सेन ने आक्रमणकारियों से सीखा है। जाहिर है कि अगर सुन यात-सेन सोवियत लोगों से सीख सकते थे और सोवियत लोग साम्राज्यवादी आक्रमणकारी नहीं हैं, तो फिर डा० सुन यात-सेन के बाद उनके उत्तराधिकारी चीनी लोग ही भला सोवियत लोगों से क्यों नहीं सीख सकते? तो फिर डा० सुन यात-सेन को छोड़कर उन तमाम बाकी चीनियों को भला "सोवियत संघ का प्रभुत्व मानने वाले", "कोमिन्तर्न का पांचवां दस्ता", "लाल साम्राज्यवाद के चाकर" आदि

क्यों कहा जाता है जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के जरिए वैज्ञानिक विश्व-दृष्टिकोण और सामाजिक क्रान्ति का सिद्धान्त सीखते हैं, उन्हें चीन की विशेषताओं के साथ जोड़ देते हैं, चीनी जन-मुक्ति युद्ध और महान जन-क्रान्ति की शुरूआत करते है और जनता के जनवादी अधिनायकत्व वाले एक गणराज्य की स्थापना करते हैं ? दुनिया में क्या इससे अच्छा तर्क कहीं और मिल सकता है ?

मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद चीनी जनता ने मानसिक निष्क्रियता त्याग दी और पहलकदमी अपने हाथ में ले ली। तभी से आधुनिक विश्व-इतिहास का वह युग जिसमें चीनियों तथा चीनी संस्कृति को हेय दृष्टि से देखा जाता था, समाप्त हो जाना चाहिए। महान, विजयी चीनी जन-मुक्ति युद्ध और महान जन-क्रान्ति चीनी जनता की महान संस्कृति का पुनरुत्थान कर चुके है और कर रहे है। मानसिक क्षेत्र में, चीनी जनता की यह संस्कृति सम्पूर्ण पूंजीवादी संसार की संस्कृति से कहीं अधिक उन्नत है। उदाहरण के लिए अमरीका के विदेश मंत्री अचेसन और उसके सरीखे लोगों को ही लीजिए। आधुनिक चीन और आधुनिक विश्व के विषय में उनकी समझ का स्तर चीनी जन-मुक्ति सेना के किसी मामूली सिपाही की समझ से नीचा है।

यहां तक तो अचेसन ने कोई नीरस पाठ पढ़ाने वाले किसी पूंजीवादी प्रोफेसर की तरह लोगों के सामने चीन में घटित घटनाओं के कारणों और परिणामों के आपसी सम्बन्ध का पता लगाने का प्रयास किया है। चीन में क्रान्ति होने का कारण है, पहले, आबादी की अत्यन्त अधिकता, दूसरे, पश्चिमी विचारों की प्रेरणा। देखा आपने, अचेसन तो कार्य-कारण के सिद्धान्त का उपासक जान पड़ता है। लेकिन इसके

आगे चलकर उसका यह कार्य-कारण का बेहूदा और नकली सिद्धान्त भी लुप्त हो जाता है और हमारे सामने ऊलजलूल घटनाओं का महज एक ढेर बाकी रह जाता है। बिना किसी कारण ही चीनी लोग सत्ता और धन के लिए आपस में लड़ते हैं, एक दूसरे पर सन्देह करते है और एक दूसरे से घृणा करते हैं। आपस में लड़ते हुए दोनो पक्षों, क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी, की मानसिक शक्ति में ऊलजलूल ढंग से परिवर्तन हो जाता है ; एक पक्ष का मनोबल अचानक शून्य से भी नीचे जा गिरता है और दूसरे पक्ष का मनोबल एकदम ऊपर उठता हुआ आवेग की चरम सीमा तक जा पहुंचता है। इसका कारण क्या है ? कोई नहीं जानता। अमरीका की जिस "उच्च स्तर की संस्कृति" का प्रतिनिधित्व डीन अचेसन करता है, उसमें अन्तर्निहित तर्क यही तो है !

नोट

[१] स्वाधीनता-युद्ध के नाम से विख्यात १७७५-८३ की पूंजीवादी क्रान्ति जिसमें उत्तरी अमरीका की जनता ने ब्रितानिया के औपनिवेशिक शासन का विरोध किया।

[२] मंगोलियाई जन-क्रान्तिकारी पार्टी के नेतृत्व में मंगोलिया की जनता ने १९२१-२४ के अपने मुक्ति-संघर्ष में जापानी साम्राज्यवाद द्वारा समर्थित लुटेरी रूसी श्वेत रक्षक सेनाओं और चीन के उत्तरी युद्ध-सरदारों की सशस्त्र सेनाओं को अपने देश से बाहर खदेड़ दिया, मंगोलिया के सामन्ती शासन को उखाड़ फेंका और मंगोलिया लोक गणराज्य की स्थापना की।

[३] टामस राबर्ट माल्थस अठारहवीं सदी के अन्त से उन्नीसवीं सदी के शुरू तक का आंग्लिकन सम्प्रदाय का पादरी और प्रतिक्रियावादी अर्थशास्त्री था। उसने

"जनसंख्या के बारे में निबन्ध" नामक अपनी रचना में, जो पहली बार १७९८ में प्रकाशित हुई, लिखा था कि "यदि जनसंख्या की वृद्धि न रोकी गई . . . तो यह गुणोत्तर अनुपात से बढ़ती है . . . [जबकि] गुजारे के साधन . . . केवल समान्तर अनुपात से ही बढ़ते हैं"। इस मनमाने दावे को आधार बनाकर वह इस परिणाम पर पहुंचा कि मानव-समाज की समस्त निर्धनता और समस्त बुराइयां प्रकृति में विद्यमान चिरन्तन वस्तुएं हैं। उसके कथनानुसार मेहनतकश लोगों की निर्धनता की समस्या को सुलझाने का उपाय केवल यह है कि उनकी आय घटा दी जाए और उनकी जनसंख्या कम कर दी जाए अथवा बढ़ने से रोक दी जाए। अकाल, महामारी और युद्ध को वह जनसंख्या घटाने के साधन मानता था।

* देखिए, "कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र" का पहला अध्याय "पूंजीपति और सर्वहारा"। पूंजीपति वर्ग "सारे राष्ट्रों को विलुप्त कर डालने की धमकी देकर इस बात के लिए मजबूर करता है कि वे पैदावार का पूंजीवादी तरीका अपना लें और उस चीज को अपने यहां प्रचलित करें जिसे यह वर्ग सभ्यता कहता है, यानी वे भी पूंजीपति बन जाएं। संक्षेप में, यह वर्ग अपने ही अनुरूप दुनिया की सृष्टि करता है"।